# अवधी-कोष

जीवन-संगिनी स्वर्गीया सरला की स्मृति में

जिसने

इस कोष की पूर्ति में

बड़ी सहायता दी थी और जिसे

यह संग्रह अत्यंत ही

प्रिय था

# अवधी-कोष

श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण :: २००० :: १९५५
मूल्य ७॥)

मुद्रक—श्री प्रेमचन्द मेहरा, न्यू ईरा प्रेस, इलाहाबाद

# प्रकाशकीय

जनपदीय भाषाओं के महत्व को अब अधिकाधिक समझा जा रहा है। उनके शब्दों को एकत्र करने का काम उन्हें लुप्त हो जाने से बचाने के लिए आवश्यक है। उनका कोष-रूप में संपादन लोक-साहित्य और लोक-भाषा को समझने की दृष्टि से मूल्यवान् है। राष्ट्रभाषा हिंदी की शब्द-निधि को भरने की दृष्टि से भी यह कार्य कम महत्व का नहीं है। जनपदीय भाषाओं में ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके समानार्थी हिंदी में नहीं मिलते और जिनके ग्रहण कर लेने से हिंदी की विचारों को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ेगी। अतएव जनपदीय भाषा-कोषों की उपयोगिता स्पष्ट है।

बड़े हर्ष की बात है कि श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' ने अनेक वर्षों के परिश्रम से यह अवधी-कोष तैयार किया है। इस कार्य की पूर्ति के लिए ये बधाई के पात्र हैं।

हमें यह न भूलना चाहिए कि अपने ढंग का यह प्रारंभिक प्रयास है। हो सकता है कि सभी दृष्टियों से यह पूर्ण न हो। फिर भी जो सामग्री योग्य संपादक ने प्रस्तुत की है वह इतनी प्रचुर, मूल्यवान् तथा रोचक है कि आगे इस क्षेत्र में काम करने वालों को निश्चय ही इस से बहुत सहायता मिलेगी। यही नहीं, अन्य जनपदीय भाषाओं के भावी कोषकारों के लिए भी यह कोष पथ-प्रदर्शक होगा।

प्रस्तुत कोष में मूल-शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनके साथ इनसे बननेवाले संज्ञा, क्रिया तथा विशेषण आदि, एवं विभिन्न ज़िलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिए गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।

व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियां तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोकगीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

हिंदुस्तानी एकेडेमी
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद
१२. ७. ५५

धीरेंद्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

# प्रस्तावना

वृंदावन साहित्य सम्मेलन ( १९२५ ई० ) में मैंने अवधी लोकगीतों पर एक निबंध पढ़ा था। उस समय पंडित रामनरेश त्रिपाठी का ग्रामगीत संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ था। १९३१ ई० में टर्नर के नैपाली-कोष ने मुझे अवधी-कोष के काम की ओर खींचा। टर्नर यों भी काशी में हमारे अध्यापक रहे थे और उनसे बाद को बहुत-सा पत्र-व्यवहार भी हुआ है। तब से आज तक—२५ वर्षों की लंबी अवधि में—प्रतिदिन कुछ न कुछ समय इस कोष को देता रहा हूं। इसे मनोरंजन समझें या व्यसन, पर कोष की पांडुलिपि मेरे साथ-साथ भारत में ही नहीं अफ़ग़ानिस्तान भर में घूमती रही है। एक बार तो यह सारी सामग्री खो भी गई थी और कई महीनों बाद मिली।

अवधी का क्षेत्र यों तो व्यापक है ही, इसके अनेक शब्द मुझे बाहर भी प्रचलित मिले। ग्वाई (गोई) और पहिती इनमें से मुख्य हैं। ये दोनों रूस की दक्षिणी सीमा से लेकर ईरान की पूर्वी एवं पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा तक उसी अर्थ में बोले जाते हैं जिसे हम अवध में समझते हैं। इस पर लखनऊ में हुए प्राच्यभाषा सम्मेलन में मैंने एक लेख पढ़ा था और अवधी के ये दोनों शब्द कूद कर पंजाब तथा पाकिस्तान को छोड़ते हुए इतनी दूर कैसे पहुँचे या उलटे उधर से इधर कैसे आये, यह सब भाषा-विज्ञानियों के कुतूहल तथा जिज्ञासा का विषय है।

शब्दों के इस आवागमन या कूद-फाँद में कितने ही प्रतिदिन गिरते-पड़ते, टूटते-फूटते तथा नष्ट होते जा रहे हैं। इसी कारण उपभाषाओं के कोष जितने ही शीघ्र प्रकाशित हो जायँ उतना ही अच्छा हो क्योंकि इनके बोलनेवाले प्रत्येक बूढ़े-बूढ़ी के देहावसान के साथ सैकड़ों पुराने शब्दों का लोप होता रहता है। हर्ष का विषय है कि लखनऊ विश्वविद्यालय से ब्रजभाषा सूरकोश का प्रकाशित होना प्रारंभ हो गया है और उधर राजस्थानी एवं भोजपुरी कोषों की भी तैयारी हो रही है।

अवधी के इस महत्वपूर्ण कार्य में मुझसे अनेक त्रुटियां बन पड़ी होंगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। एक तो मैं प्रायः अकेला ही यह काम करता रहा हूं, दूसरे मैं पूर्वी अवधी क्षेत्र का निवासी हूं। अतएव इस संग्रह में पूर्वी क्षेत्र का प्राधान्य रहा है यद्यपि परिचमी क्षेत्र के भी शब्दों तथा पूर्वी शब्दों के वैकल्पिक रूप देने का प्रयत्न किया गया है। इस संबंध में सीतापुर के डाक्टर नवल विहारी मिश्र से विशेष सहायता मिली है और मेरे कुछ विद्यार्थियों ने भी काम किया है।

इस कोष का प्रारंभिक कार्य अवधी-अंग्रेजी में टर्नर की प्रणाली पर किया गया था, पर श्री पुरुषोत्तमदास टंडन तथा अन्यान्य शुभचिंतकों के आग्रह पर इसे वर्तमान रूप दिया गया। अंग्रेजीवाले संस्करण के प्रकाशनार्थ डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी, आचार्य नरेंद्रदेव तथा डाक्टर उदयनारायण तिवारी ने विशेष प्रोत्साहन दिया, यद्यपि वह अभी तक पूरा नहीं हो पाया है। हिंदीवाले वर्तमान संस्करण के प्रकाशन में मित्रवर रामचंद्र टंडन और भोलानाथ तिवारी ने मेरा बहुत हाथ बँटाया है। कोष की तैयारी के बीच कुछ नए शब्द मिले तथा कुछ

शब्दों के अर्थ बढ़ाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इन्हें परिशिष्ट में दिया जा रहा है। फिर भी मैं जानता हूं इस कोष के नये संस्करण में ग्रंथ का रूप और ही हो जायगा।

अवधी क्षेत्र से बाहर रहनेवाले पाठकों की सहायतार्थ एक क्रिया (जाब) के भिन्न रूपों को परिशिष्ट के अनंतर दिया गया है, जिससे अन्य क्रियाओं की रूपरेखा का आभास मिलेगा। यत्र-तत्र अवधी के मुख्य कवियों तुलसी, जायसी आदि द्वारा प्रयुक्त अनेक शब्दों के भी उद्धरण भी दिये गये हैं। तथापि ऐसे उद्धरणों का एक समूह इसमें नहीं आ पाया है। यह दूसरे ही संस्करण में संभव हो सकेगा।

इसके साथ अवधी क्षेत्र का एक मानचित्र भी देना चाहता था, पर इस पर मत-भेद होने के कारण इसे अभी रहने दिया है। सहस्रों वर्गमील में करोड़ों जनता द्वारा प्रयुक्त इस महत्वपूर्ण भाषा के कोष का काम कितना कठिन है, इसका ध्यान रखते हुए अंत में मैं भाषाविज्ञान के पंडितों से यही नम्र निवेदन करूँगा कि वे मेरी इस कृति को क्षमा की दृष्टि से देखें। आशा है अवधी महासागर को पार करने के लिए मेरे इस छोटे डोंगे को विद्वान् वैसा ही समझेंगे जैसा कालिदास ने लिखा है—तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।

सत्यनारायण कुटीर,
हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
आषाढ़ शुक्ल ६, २०११

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी "समीर"

# संकेत-सूची

अं० अंग्रेज़ी
अनु० अनुकरणात्मक
अ० अकर्मक
अर० अरबी
अव्य० अव्यय
आ० आदरप्रदर्शक (रूप)
उ० उदाहरणार्थ
उल० उलटा
क० कविता
कच० कचहरी (में प्रयुक्त)
कबी० कबीर
कहा० कहावत
का० काश्मीरी
का० कानूनी या अदालती
क्रि० क्रिया
क्रि० वि० क्रिया-विशेषण
ग० गढ़वाली
गॉ० गॉथिक
गी० केवल या प्रायः गीतों में प्रयुक्त
गों० गोंडा
घृ० घृणात्मक (रूप)
ज० जर्मन
जा० जायसी
जौ० जौनपुर
ड० डच
ता० तामिल
तु० तुलना करें
तुल० तुलसीदास
दे० देखिये
द्वि० द्वित्वात्मक (रूप)
ध्व० ध्वन्यात्मक
नै० नैपाली
पं० केवल या प्रायः पंडितों द्वारा प्रयुक्त
पंज० पंजाबी
प० पश्तो
पहे० पहेली
पा० पाली
पुं० पुंलिङ्ग
पु० पुनर्द्योतक अथवा पुनरात्मक (रूप)
पू० पूर्वकालिक (रूप)
पू० अ० पूर्वी अवधी
प्र० प्रभावात्मक (रूप)
प्रत० प्रतापगढ़
प्रय० प्रयाग
प्रा० प्राकृत
प्रे० प्रेरणार्थक (रूप)
फ़ा० फारसी
फ़ै० फ़ैज़ाबाद
फ्रां० फ्रांसीसी
बँ० बँगला
ब० बहराइच
ब० व० बहुवचन
बाँ० बाँदा
बा० बाराबंकी
ब्र० ब्रजभाषा
भा० भाववाचक (संज्ञा, रूप)
भो० भोजपुरी
म० मराठी
मा० मालवी
मि० मिर्ज़ापुरी
मु० मुहावरा
मुस० मुसलिम (प्रयोग)
मै० मैथिली
यू० यूनानी (ग्रीक)
राँ० राँगड़ी
रा० रायबरेली
ल० लखनऊ
लखी० लखीमपुर-खीरी (लखीमपुरी बोली)
लघु० लघुत्वसूचक (रूप)
लह० लहँदा
लै० लैटिन
वि० सा० विश्राम सागर
वि० बो० विस्मयादि बोधक अव्यय
वै० वैकल्पिक (रूप अथवा उच्चारण)
शा० शायद
सं० संज्ञा, संस्कृत; शब्दों के तुरंत ही बाद सं० संज्ञा का द्योतक है और उनके अंत में यह उनकी संस्कृत-मूलकता लक्षित करता है।
संबो० संबोधन का रूप
स० सकर्मक
सर्व० सर्वनाम
सिं० सिंधी
सी० सीतापुर
सु० सुलतानपुर
स्त्री० स्त्रीलिंग
ह० हरदोई
हा० हास्यात्मक (रूप अथवा उच्चारण)

नोट—प्रायः शब्दों के अंत में जिस भाषा से शब्द विशेष का संबंध है उसका निर्देश यों किया गया है :—फ़ा० फारसी, अर० अरबी, सं० संस्कृत आदि। जहाँ ! चिह्न है वहाँ उस शब्द के मूल आदि में संदेह सूचित होता है। प्रांतों अथवा ज़िलों के नाम का संकेत शब्द के उस क्षेत्र में प्रचलन या विशेष प्रकार के उच्चारण का सूचक है।

# अ

अँकड़ी सं० स्त्री० दे० अँकरी ।

अँकरी सं० स्त्री० (१) छोटी कंकड़ी;-पथरी, छोटी-छोटी कंकड़ियाँ; कूड़ा-करकट (खाद्य के लिए); (२) एक घास; अँकरी+सं० प्रस्तर ।

अँकवारि सं० स्त्री० आलिंगन; दोनों हाथ फैला कर किसी को घेरने या भेंटने की मुद्रा; भर-,-भर;-देब, छाती से लगाना; भेंट-, स्त्रियों का गले मिलना; भेंट-कहब, ऐसा मिलन भाव (दूसरे द्वारा) निवेदन करना । सं० अंक ।

अँकाइब क्रि० सं० दूसरे से अँकवाना; आँकब (दे०) का प्रे०; भा० काई, वै०-उब; सं० अंक ।

अँकुरब क्रि० अ० पनपना, जी उठना, काम योग्य होना; सं० अंकुर ।

अँकोर सं० पुं० रिश्वत;-देब,-लेब,-पाइब; वि०-हा, रिश्वती, स्त्री०-ही; सं० उत्कोच ?

अँखुवा सं० पुं० अंकुर;-निकरब, दे० आँखा; सं० अक्षि ।

अँगरा सं० पुं० अंगारा; यक-आगि, जरा सी आग; जरि-, जो शीघ्र रुष्ट हो जाय या जल के अंगार हो जाय; वै० अङरा; जा०-गार,-रा; सं० अंगार ।

अँगिआ सं० स्त्री० स्त्रियों के पहनने का वह कपड़ा जो छाती तथा पेट पर तना रहता है; प्राय: गीतों में ही यह शब्द प्रयुक्त होता है; वै०-या,-ङिआ; सं० अंग । दे० अङिआ ।

अँगिराब क्रि० अ० अँगड़ाई लेना, मु० अकड़ना, गर्व से बातें करना; वै०-ङि; सं० अंग (शरीर को तान लेना) ।

अँगोछा सं० पुं० वह कपड़ा जो पुरुष प्राय: कंधे पर रखते हैं । स्त्री०-छी, क्रि०-छब, अँगोछे से (शरीर) पोंछना वै०-गौछा,-गउछा,-छी, अङो-; छूरी-(दे० छूरी) सं० अंग ।

अँचइब क्रि० अ० आचमन करना (भोजन के बाद); हाथ मुँह धोना; प्रे०-वाइब,-उब (नौकर या दूसरे द्वारा अतिथि का) हाथमुँह धुलवाना; वै०-उब; सं० आ+चम् ।

अँचर-धरौआ सं० पुं० विवाह का एक रस्म जिसमें वर ससुराल की कुछ स्त्रियों का अंचल पकड़ लेता और तब छोड़ता है जब वे कुछ उपहार देती हैं । सं० अंचल+धृ ।

अँचरा सं० पुं० अंचल; सं० अंचल । "-मोर जूँठा लरिकन लार बही रे बही"-गीत

अँचाब क्रि० अ० गर्म होना, आँच देना (चूल्हे आदि का); प्रे०-चवाइब, वै०-चिआब,-याब ।

अँचार सं० पुं० तेल तथा मसालों में सुरक्षित रखे आम आदि फल;-डारब,-धरब; मु०-डारब, व्यर्थ रक्खे रहना ।

अँजीरी सं० स्त्री० अंजीर; जा०

अँजुरिआइब क्रि० सं० "अँजुरी" से लेना, देना, उठाना, रखना आदि; सं० अंजलि ।

अँजुरी सं० स्त्री० अंजलि; यक-; दुइ-, जितना दोनों हाथों को एक में सटाकर फैलाने पर स्थान बनता है उतने स्थान में आनेवाला सामान; उसका दूना; सं० अंजलि ।

अँजोर सं० पुं० उजाला;-होब, प्रातःकाल हो जाना;-करब, प्रसिद्ध कर देना; व्यं० जलना या जलाना (घर, गाँव आदि) क्रि० वि०-रें, उजाले में, कबी० "यही अँजरोरें बिछाय लेव"; वै० उजिआर,-यार, उँ-,प्र०-जरोर; जा०-रा; सं० उज्वल ।

अँजोरिया सं० स्त्री० चाँदनी, चाँद; वै०-आ,-री;-उअब,-निकरब, चाँदनी निकलना; जा०-री; फ्रै० उँजे; सं० उज्ज्वल ।

अँटइब क्रि० स० पूरा बाँट देना, वै०-वाइब; दे० आँटब ।

अँटिआइब क्रि० स० आँटा (छोटे-छोटे गट्ठर) बनाना; दे० आँटा,-टी ।

अँतरिख सं० पुं० अंतरिक्ष; जा०-क्ख,-रीखा ।

अँदोरा सं० पुं० आंदोलन; जा० (पद्‌० १२, ६३)

अँधकूप सं० पुं० अंधकूप, जा० (पद्‌० २१, ६); तु० भवकूपा (तुल०)

अँधिआर सं० पुं० अंधेरा; जा० (पद्‌० २४, ८०), दे० अन्हिआर; वै०-रा (पद्‌० १०, ४)

अँबराउँ सं० पुं० आम का बाग; दे० अमराई; जा० (पद्‌० २, १८, २४)

अँबिरथा दे० अमिरथा; जा० (पद्‌० १५, २२)

अइँच-पइँच सं० पुं० इधर उधर अथवा व्यर्थ की बात; बाधा;-लगाइब; वै०-चा-चा; गा० पैंछ-पैंछ ।

**अइँचब** क्रि० सं० खींचना; प्रे०-चाइब,-चवाइब,-उब; नै०-नु।

**अइँचाताना** सं० पुं० व्यक्ति जिसकी आँखें तिरछी हों; कभी कभी वि० जैसा भी प्रयुक्त होता है।

**अइँठ** सं० पुं० ऐंठ जाने की प्रवृत्ति; गर्व;-करब,-होब, वै० ऐं-; द्वि०-गवँइठ; दे०-ब।

**अइँठन** सं० पुं० ऐंठने का निशान अथवा रूप;-परब, (रस्सी में) ऐंठ जाने की स्थिति हो जाना।

**अइँठनी** सं० स्त्री० लकड़ी का एक औज़ार जिससे रस्सी ऐंठी जाती है।

**अइँठब** क्रि० अ० व्यर्थ मिजाज़ दिखाना; अकड़ जाना, क्रोध करना; वि०-ठोहर; प्रे०-ठाइब; द्वि०-गोंइँठब, अकड़ दिखाना, व्यर्थ की बात या देर करना; वै० ऐं-।

**अइँठब** क्रि० सं० ऐंठना, (द्रव्य) ले लेना, ज़ोर से दबाना; अनावश्यक प्रभाव डालना; प्रे०-ठवाइब,-ठाइब,-उब; वै० ऐं-।

**अइँठोहर** वि० पुं० अकड़नेवाला; गर्वीला; स्त्री० -रि, भा०-पन,-रई, अठुरई (दे०)।

**अइँड़ी** वि० घमंडी; वै० अयँ-; दोनों लिंगों में यह शब्द एक ही रूप में प्रयुक्त होता है। दे० अयँड़।

**अइगुन** सं० पुं० दुर्गुण, हर्ज, हानि; वि०-नी,-निहा; वै० अय-, ऐ-; सं० अवगुण।

**अइजन** सं० पुं० लिखने में ,, चिह्न; अर० ऐज़न; (२) इंजन; अं०; वै०-हि-, ऐ-; अरबी तथा अं० दोनों शब्दों का विकृत रूप अवधी में एक ही है।

**अइतवार** सं० पुं० रविवार, आदित्यवार; सं० आदित्य-; दे० इतवार, यत-।

**अइनी** सं० स्त्री० वह कलम जिसमें लोहे की निब हो; वै०-य-, फा० आहन (लोहा)+सं० ई।

**अइबी** वि० दुर्गुणी, ऐबवाला; दोनों लिंगों में एक सा प्रयुक्त; अर० ऐब (दुर्गुण)+सं० इन्।

**अइया** सं० स्त्री० पति अथवा पिता की माँ; पितामह की माँ; व्यं० उस पुरुष की स्त्री जिस पर इस शब्द का प्रयुक्त करनेवाला रुष्ट हो; वै०-आ, ऐआ, ऐया; सं० आर्या, भो० ईया।

**अइल-गइल** सं० पुं० पूर्वी बोली जिसमें "अइल" (आइल=आया) और "गइल" (गया) बहुत बोला जाता है। वै०-ली-ली;-बोलब,-लगाइब।

**अइलाहिन** दे० अय-।

**अइस** क्रि० वि० ऐसा; कभी-कभी विशेषण के रूप में भी बोला जाता है; प्र०-न,-सै,-नै,-नौ; जा० "कबहुँ न अइस जुड़ान सरीरू" (सिंहल द्वीप खंड); तइस, ऐसी तैसी, दे० अस।

**अउँकी-बउँकी** सं० स्त्री० बेसिर पैर की बात; इधर उधर की या टालने की बात;-मारब, ऐसी बातें करना; धोका देने की कोशिश करना; वै० औं-।

**अउँघाई** सं० स्त्री० नींद;-लागब,-आइब; क्रि०-घाब, निद्रा में आना; वै० औं-।

**अउँठा** सं० पुं० अँगूठा,-देखाइब (दे० ठेहुना); स्त्री०-ठी; सं० अंगुष्ठ; प्र०-ऊँ-, वै० अङ्-(दे०)।

**अउँठी** सं० स्त्री० किनारा (थाली, गिलास, रोटी आदि का); 'ओंठ' का स्त्री० रूप; सं० ओष्ठ, ग० अँगोठू।

**अउँधी** वि० पुं० उलटा, स्त्री०-धी (जा० पदु० २५, ४६); क्रि०-धाइब,-न्हाइब; वै०-न्ही।

**अउँसा** सं० पुं० नये अन्न का वह अंश जो दान में दिया जाता है; सं० अंश।

**अउअल** वि० पुं० प्रथम, बढ़िया, श्रेष्ठ; स्त्री०-लि; अर० अव्वल।

**अउङब** क्रि० स० बैलगाड़ी या इक्के के पहिये में तेल डालकर धुरे की सफाई करना; प्रे०-ङाइब।

**अउझड़ी** वि० सनकी; कभी-कभी सं० की तरह भी प्रयुक्त; वै० व-, औ-?

**अउटब** क्रि० अ० खौलना; प्रे०-टाइब,-उब; स० खौलाना, वै०-च-।

**अउतार** दे० अवतार; जा० (पदु० १, ४)

**अउधान** दे० अवधान, जा० (पदु० ३, ६)

**अउधारब** क्रि० स० प्रारंभ करना; जा०-रा (पदु० ७, ५०)

**अउर** वि० पुं० और; प्र०-रै,-रौ; वै०-व-,-रा (रा० ब०), स्त्री०-रि,-रिनि, ग० उर, औरै, हौरै।

**अउरा गोंज** सं० पुं० गड़बड़ स्थिति; वि० जो एक में मिला हुआ हो या अलग न किया जा सके (मामला); दे० गोंजब (मिला देना); अउर+गोंजब; वै०-व-।

**अउल** सं० पुं० गर्म गिचपिचा मौसम, जिसमें पसीना हो और हवा न चले;-होब,-रहब; अर० हौल, ग० वौल।

**अउलाई** सं० स्त्री० वमन करने की इच्छा;-आइब, ऐसी इच्छा होना; वै०-व-,औ-।

**अउलि-अउलि** क्रि० वि० बार-बार (कटु स्मृति अथवा पश्चात्ताप के लिए);-आइब, बार-बार किसी खेद-जनक बात की याद आना; उ० मोरे इहै आवत है, मुझे यही बार-बार याद हो आता है; अर० हौल (परेशान)।

**अउलिया** सं० पुं० मस्त मनमौजी पुरुष; कभी-कभी वि० के रूप में भी आता है। अर० [वली का बहुवचन] औलिय:

**अउवल** दे० अउअल।

**अउसब** क्रि० अ० गर्मी एवं पसीने के मारे दुर्गंधमय हो जाना; गर्मी में परेशान हो जाना; प्रे० साइब,-सवाइब; सं० उष्ण।

**अउसाहिन** वि० पसीने में भीगे हुए कपड़े की भाँति दुर्गंधमय;-आइब, ऐसी दुर्गंध देना।

**अउसेवरि** सं० स्त्री० कष्टदायक अवस्था;-करब, कष्ट देना, तंग करना। दे० अव-;अ०-सेर।

**अऊँठा** सं० पुं० अँगूठा;-लागब,-लगाइब, हस्ताक्षर स्वरूप अँगूठे का निशान लगना या

लगाना;-देखाइब, इनकार कर देना (कुछ देने से); सं० अंगुष्ठ।
अकई वि० स्त्री० दूसरी; अकवा (दे०) का स्त्री०; वै० य-, आ०-ऊ (पुं०)
अकक वि० पुं० एक एक; वै० यकक; प्र०-काक; सं० एकाकी।
अकच्छ सं० पुं० अधिकता, अधिक उत्पात अथवा बाधा;-करब,-होब; सं० अ+कच्छ (कक्षा ?)
अकछीं अव्य० छींकने पर जो शब्द कहा जाता या मुँह से स्वयं निकलता है; प्रायः किसी को छेड़ने के लिए भी यह शब्द कह दिया जाता है, क्योंकि किसी कार्य के प्रारम्भ में छींक होना अशुभ माना जाता है। ग०-च्छीं। ब्र० अ-कछीं; सं० छिक्का।
अकजऊँ वि० हानिकारक (अवसर); अकाज (दे०) करानेवाला (मौका); यह शब्द बिना संज्ञा अथवा कर्ता के ही वाक्य में प्रयुक्त होता है; उ० बड़ अकहोय त...यदि बहुत हर्ज होनेवाला हो तो...; सं० अ+कार्य; वै०-काजूँ।
अकजहर वि० हर्ज करानेवाला (व्यक्ति); काम न करनेवाला या धीरे-धीरे करनेवाला; दे० अकाजरासी; सं० अकार्य।
अकट्ट दे० अकाट।
अकठा वि० अकेला; वै०-ठाँ, य-।
अकड़ सं० पुं० गर्वीलापन, घमंड; वि०-ड़ी,-ड़ू,-बाज।
अकड़बाज वि० जिसमें अकड़ जाने की आदत हो; अकड़+फा० बाज़।
अकड़वरि सं० स्त्री० छोटी कंकड़ी; बहुत छोटी-छोटी कंकड़ी; वै० अँ०-, अँकड़ी, अँकरी (दे०); जा० अँकरवरी, भो०-उरी।
अकड़ू वि० अकड़बाज़, गर्वीला; व्यंग्य में-"खाँ" या-"मियाँ" भी कहते हैं। वै०-ड़ी, ग० अकड़ू।
अकतई सं० स्त्री० जल्दी; वै०-कु-।
अकतहर वि० पुं० जल्दबाज़; स्त्री०-रि; वै०-कु-; दे० आकुत; ग० उकुताहर।
अकताब क्रि० अ० जल्दी करना; आवश्यकता से अधिक शीघ्रता करना; प्रे० तवाइब,-उब; वै०-कु-, ग० उक्तावथो; दे० आकुत।
अकथ वि० न कहने योग्य; प्रायः गीतों एवं कविता में; सं० अ+कथ् (कहना)।
अकबाल दे० इकबाल।
अकरकढ़ा सं० पुं० प्रसिद्ध दवा; वै० अँ-,-ड़-।
अकरार सं० पुं० वादा, शर्त;-करब,-होब; वै० इ-; दे० करार। फा०।
अकवा वि० पुं० एक, दूसरा; स्त्री०-ई, वै० य-; आ०-ऊ।
अकस-मकस सं० पुं० हीला-हवाला, टाल-टूल, दीर्घ-सूत्रता;-करब; वै०-पकस; उकुस-पुकुस (दे०), अकुस-पकुस।
अकसरुआ वि० घर का अकेला (व्यक्ति), दोनों लिंगों में यह शब्द एक-सा ही रहता है; वै०-ग-; सं० एक।
अकसा सं० पुं० एक अन्न; वै० अँ-; स्त्री०-सी
अकहत्थी दे० यक-।
अकहरा वि० पुं० जिसमें एक ही पर्त हो (वस्त्र); स्त्री०-री, वै० य-; फा० यकलः; ग० एखारो, नै० यकहोरी।
अकाक वि० एकाध; दोनों लिंगों में एक-सा बोला जाता है, यद्यपि प्र० में स्त्री० कि हो जायगा; प्र०-कै,-ककै वै०, य-; सं० एकाकी।
अकाज सं० पुं० हर्ज (काम का);-करब,-होब;-रासी, वि० व्यर्थ बैठा रहने या हर्ज करनेवाला; वि०-जी,-जूँ; सं० अ+कार्य।
अकाट वि० जो कट न सके या झूठ न हो सके; प्र०-कट्ट; सं०।
अकारथ वि० व्यर्थ, नष्ट;-जाब,-होब,-करब; ग० अखार्त, सं० अकृत।
अकाल सं० पुं० प्रायः "काल" बोला जाता है (दे०); ग० अकाल; सं० अ+काल।
अकास सं० पुं० आकाश;-लागब, बहुत लंबा हो जाना (वृक्ष अथवा फसल का);-पताल यक करब, कुछ उठा न रखना; ग० अगास, आगास; सं० आकाश।
अकिलि सं० स्त्री० बुद्धि;-वंत,-वंद,-वंदा, अक्लमंद; ग० अक्कल, अर० अक्ल।
अकीन सं० पुं० विश्वास;-आइब,-होब,-करब,-परब; दीन-अकीन, नीयत, ईमान; फा० यकीन।
अकुतई सं० स्त्री०, दे० अकतई; इसी प्रकार अकुतहर, अकुताब आदि भी हैं।
अकुलाब क्रि० अ० घबराना, आकुल होना; सं० आकुल।
अकुस-पकुस दे० अकस-मकस।
अकूत दे० अनकूत, कूतब। जा० (पदु० १७,६)
अकेल वि० पुं० अकेला;-दुकेल, वि०, क्रि० वि० एक या दो साथी होने पर, स्त्री०-लि (लिनि भी), प्र०-लै,-लौ, ग० यखुली (दोनों लिंगों में), फा० यकलः, दुला, सं० एकाकी; वै० अँ-।
अकेलिया वि० एक व्यक्ति का, जिसमें साझा न हो। वै० अँ-।
अकोल सं० पुं० एक जंगली पेड़ और उसका फल जो लीची की भाँति गूदे और बीजवाला, पर बाहर से चिकना होता है। वै०-लह। सं० अंकोल।
अकौआ सं० पुं० आक; मदार, उसका फल, पेड़ आदि। सं० आक।
अकौटब क्रि० अ० एक हो जाना (कई दल के लोगों का); बदल जाना; वै० य-।
अख्तिआर सं० पुं० अधिकार, शक्ति; वै०-यार; अर० इख्तियार।
अखज्ज सं० पुं० निकृष्ट खाद्य; प्रायः "अज्ज-खज्ज"

तथा "अज्ज-गज्ज" के रूप में बोला जाता है; सं० अखाद्य।

**अखनी** सं० स्त्री० लकड़ी का एक औज़ार जिसके उँगलीदार सिरे से खलियान में कटी फसल को फैलाते अथवा बटोरते हैं। भो० अखइनि; सं० अक्षयिणी; ब० पँचागुर।

**अखर** वि० असह्य, बुरा, कटु;-लागब,-देब, बुरा लगना;-जानि परब, असह्य जान पड़ना; क्रि०-ब, भार लगना, असह्य हो जाना। सं० अ+खर्।

**अखरा** वि० पुं० कोरा, साफ किया हुआ, सूखा (नाज); "खरा" का दूसरा रूप।

**अखराज** सं० पुं० खेत पर से जोतनेवाले के अधिकार को हटा देने की अदालती कार्रवाई; ऐसा मुकद्दमा; करब,-होब, अर० खिराज (बाहर करना)।

**अखीर** सं० पुं० अंत, ओर;-मँ, अंत में;-दर्जा, अंतिम स्थिति;-कार, क्रि० वि० अंततोगत्वा; वै०-खिरकार; अर० आखिर।

**अखीरी** वि० अंतिम, निश्चित;-बात,-दर्जा; अर० आखिर।

**अखुरा-पखुरा** सं० पुं० अंग-प्रत्यंग; प्रायः घायल होने या टूटने के लिए ही प्रयुक्त; वै० डखुरा- (दे०),-खौरा-पखौरा (बाँ)।

**अखैया** सं० पुं० अनन्त तथा अनुपयोगी वस्तु; केवल "अखैया क बन" (बेरनि) (व्यर्थ का बड़ा जंगल) मुहावरे में ही प्रयुक्त; सं० अक्षय।

**अखोर** वि० निकृष्ट, हेय [केवल व्यक्ति के लिए]; कभी-कभी संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त; सं० अ+ फ़ा० खुर्दन, खाना [न खाने योग्य]

**अगउढ़ी** सं० स्त्री० पहले ली या दी हुई मजदूरी; सं० अग्र।

**अगरहरी** सं० पुं० बनियों की एक उपजाति।

**अगराब** क्रि० अ० गर्व दिखाना, काम न करना; प्रे०-राइब,-उब।

**अगरि-पछरि** क्रि० वि० आगे-पीछे, चाहे जब।

**अगल-बगल** क्रि० वि० दोनों किनारे, दायें-बायें; 'बगल' का द्वित्व; सं० अग्रे (आगे)+फा० बगल; प्र०-लें-लें।

**अगवाँ** क्रि० वि० प्राचीन समय में; प्र०-वैं,-वों; सं० अग्र।

**अगवार** सं० पुं० घर के सामने का हिस्सा;-पिछ-वार; क्रि० वि०-रे-रें, वै०-रा; रा० अगवारी-पिछ-वारी; सं० अग्र।

**अगवारि** सं० स्त्री० खलियान में तैयार नये अन्न का वह भाग जो देवताओं, ब्राह्मणों आदि के लिए पहले ही निकाल कर रख दिया जाता है। वै० अँ-; सं० अग्र (आगे=पहले)।

**अगवासी** सं० स्त्री० हल के फार (दे०) में आगे लगनेवाला एक छोटा पतला लकड़ी का टुकड़ा; सं० अग्र+वासी [रहनेवाला]।

**अगसरब** क्रि० अ० आगे बढ़ जाना; प्रे० सारब,-सराइब,-उब।

**अगहन** सं० पुं० कातिक के बाद का महीना; सं० अग्रहायण।

**अगहनिया** सं० स्त्री० अगहन में होनेवाली फसल; वै०-नी; सं०।

**अगाड़ीं** क्रि० वि० प्राचीन काल में; सं० अग्र।

**अगाड़ी** सं० स्त्री० पशु के आगे लगी हुई रस्सी;-पछाड़ी, घोड़े के अगले तथा पिछले पाँवों में बँधी रस्सी; सं० अग्र, पृष्ठ।

**अगाह** वि० समय से पहले तैयार (फसल, फल आदि); सं० अग्र। उल० पछाह (दे०)

**अगाह** वि० सूचित, विज्ञापित;-करब,-होब; फ़ा० आगाह; भा०-ही, सूचना।

**अगाही** सं० स्त्री० किसी बात के दूसरे द्वारा कही जाने के पहले ही कुछ ऐसी बात कह देने की चालाकी जो पहले का काट अथवा उत्तर हो;-मारब, ऐसी बात कह देना; सं० अग्र।

**अगिआइब** क्रि० स० जला देना; प्रायः स्त्रियों द्वारा शाप रूप में प्रयुक्त; इसी अर्थ में "दढ़िया-इब" भी कहती हैं; दे०-दाढ़ा, डाढ़ा, दढ़िआइब; सं० अग्नि।

**अगिआब** क्रि० अ० (फोड़े अथवा अंग विशेष का) आग की तरह जलना या गर्म रहना; वै-याब; सं० अग्नि।

**अगिनि** सं० स्त्री० आग, प्रायः साधुओं द्वारा या शपथ खाने के लिये प्रयुक्त; दूसरे अर्थ में "-माता" या "-देवता" कहते हैं। पँच-, एक प्रकार की तपस्या जो कुछ साधू लोग गर्मियों में करते हैं और जिसमें धूप में बैठकर अपने चारों ओर पाँच स्थानों पर आग जला लेते हैं। साधु लोग कभी कभी जोर देकर "-नी" भी बोलते हैं;-बान, प्रसिद्ध बाण जिसका वर्णन अनेक कथाओं में है। पँच-लेब,-तापब, पंचाग्नि की तपस्या करना। सं० अग्नि।

**अगिया** सं० पुं०(१) एक रोग जो गेहूँ आदि फसलों में लगता और जिसके कारण अन्न जल सा और काला पड़ जाता है। (२) इस नाम का एक कीड़ा भी होता है जिसके छू जाने पर मनुष्य का चमड़ा जल सा जाता है; (३) एक तृण; वै०-री; सं० अग्नि।

**अगिया-बैताल**-सं०पुं० विक्रमादित्य के दो प्रसिद्ध पार्षद; अति तीव्र एवं बलवान् व्यक्ति;-होब, तत्परता वीरता पूर्वक काम कर डालना।

**अगियारि** सं० होम;-करब; वै०-रि,-बियारी, (बाँ) हुम-; सं० अग्नि।

**अगिला** वि० पुं० आगे वाला; स्त्री०-ली; संज्ञा के रूप में यह शब्द किसी भी व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता है जिसके सम्बन्ध में बात चल रही हो और जिसे वीर, उदार अथवा गर्वीला समझा जाता है।

उ० फेर तौ-बोला, फिर तो बहादुर बोल उठा; जा० "अगिलन्ह कहँ पानी लेइ बाँटा, पछिलन्ह कहँ नहिं काँदौ आँटा।" सं० अग्र। भो०

अगुआ सं० पुं० नेता; भा०-अई, नेतृत्व, क्रि०-ब, आगे बढ़ना, नेतृत्व करना, प्रे०-आइब,-वाइब, आगे कर देना; सं० अग्र।

अगुआनी सं० स्त्री० बारात का स्वागत;-करब,-होब; ग० अग्वानी। भो०; सं० अग्र।

अगुई सं० स्त्री० आगे या पहले कुछ करने की हिम्मत;-कढ़ाइब, पहले कोई नया काम करना;-पछुई, आगे-पीछे; "अगुअई" का सूक्ष्म रूप; सं० अग्र।

अगूढ़ सं० पुं० जटिल प्रश्न, कठिन समस्या;-परब,-काटब; सं० गूढ़।

अगोछब क्रि० स० आगे बढ़ कर रोक लेना; प्रे०-छवाइब; सं० अग्र।

अगोरब क्रि० स० प्रतीक्षा करना; रक्षा करना, रखाना; प्रता० परखब (दे०) तु० तब लगि मोहिं परेखेहु भाई। सं अग्र + ह।

अगोरा सं० स्त्री० प्रतीक्षा, उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा; रक्षा, चौकीदारी;-होब,- करब,-रहब।

अगौढ़ी सं० स्त्री० (मज़दूरी आदि के स्थान में) आगे दी हुई वस्तु, द्रव्य आदि; वै० अगवढ़ि,-गउढ़ी (दे०); सं० अग्र।

अग्गर वि० अलभ्य, गर्वीला;-होब, घमंडी हो जाना; वै०-अ० क्रि०-गराब, घमंड करना, बात न सुनना; सं० अग्र? फा० अगर [यदि]; 'अगर-मगर' करनेवाला व्यक्ति?

अघवाइब क्रि० स० "अघाब" का प्रे० रूप; व्यं० बुरा व्यवहार करना, तंग करना (विशेष कर उस व्यक्ति का जिससे अच्छे व्यवहार की आशा की गई हो)।

अघाउर सं० पुं० पूरा संतोष; भरपेट;-होब,-पाइब, 'अघाब' (दे०) से।

अघाब क्रि० अ० संतुष्ट हो जाना (भोजन से); पेट भर कर खा लेना; व्यं० तंग आ जाना; प्रे०-घवाइब,-उब?

अघोड़-पंथी सं० पुं० अघोड़ पंथ का मानने वाला; वि० घृणोत्पादक; सं० अघोर+पथ्+इन्।

अघोड़ी वि० घिनौना, घृणास्पद। सं० अघोर।

अङइब क्रि० सं० सहना; प्रे०-वाइब; सं० अंग (अर्थात् अपने शरीर पर डाल लेना या झेलना)?

अङऊँ सं० पुं० वह वस्तु जो किसी देवता, ब्राह्मण या पुण्य के लिए निकाल कर अलग रख ली गई हो;-काढ़ब;-निकारब; सं० अन्न,-अ?

अङना सं० पुं० आँगन; स्त्री०-नइया,-नाई (गी०); सं० अंगण।

अङरखा सं० पुं० कोट की तरह का सबसे ऊपर पहनने का कपड़ा; स्त्री०-खी; सं० अंग+रक्ष्।

अङरा दे० अँगरा।

अङार सं० पुं० अंगार;-लागब, जल उठना; सं० अंगार।

अङिआ सं० स्त्री० यह शब्द परतो में स्त्री पुरुषों दोनों के गंजी जैसे कपड़े के लिए आता है; दे० अँगिआ। गी०

अङुठा सं० पुं० अँगूठा; वै०-उँठा (दे०); सं० अंगुष्ठ।

अङुरा सं० पुं० अंगुल, एक अंगुल;-भर, ज़रा सा, थोड़ा सा (कपड़ा, भूमि आदि); सं०।

अङरियाइब क्रि० सं० उँगली डालकर (प्राय: गुदा) खोदना मु० मूर्ख बनाना; वै० उँगली से संकेत करना; सं० अंगुलि।

अङुरी सं० स्त्री० उँगली; क्रि०-रिआइब; सं० अंगुलि। जा०।

अङूर सं० पुं० अंगूर, जा०।

अङोछा दे० अँगोछा।

अचंभव सं० पुं० अचंभा; वै०-भौ; सं० आश्चर्य।

अचक्के क्रि० वि० अचानक; वै०-कें। सं० अ+चक्र?

अचरज सं० पुं० आश्चर्य;करब,-होब; ग० आस्चर्ज, अचरज; सं०।

अचानक क्रि० वि० अकस्मात्, सं० आश्चर्यजनक बात,-सुनब,-कहब।

अचारज सं० पुं० सं० यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार में आचार्य का काम करने वाला व्यक्ति;-बइठब, आचार्य का काम करना; सं० आचार्य।

अचार-बिचार सं० पुं० आचार-विचार;-करब, धार्मिकता-पूर्वक रहना; सं०।

अचारी सं० पुं० व्यक्ति जो विशेष आचार करता हो, जैसे अपने हाथ से भोजन बनाना आदि। आ०-बाबा,-महराज।

अची वि० बो० ज़रा; प्राय: बूढ़ों द्वारा प्रयुक्त; वै० रची; अजी! फ़ ० जौ० सु० प्रत०।

अचूक वि० न चूकनेवाला (औषध आदि)।

अचेत वि० बेहोश; स्त्री०-ति, यद्यपि दोनों लिंगों में यह शब्द प्राय: ज्यों का त्यों बोला जाता है।

अच्छर सं० पुं० अक्षर; मु० करिया-भइँसि बराबर, काला अक्षर भैंस बराबर; सं०।

अच्छा वि० पुं० बढ़िया, स्त्री०-च्छी;-करब,-होब, (बीमार का) ठीक करना, होना; क्रि० वि० हाँ, प्र०-च्छै भा०-ई; सं० अच्छ:।

अच्छें क्रि० वि० अच्छी तरह, भली प्रकार;-रहब, स्वस्थ रहना; सं० अच्छ।

अछन-बिछन क्रि० वि० बहुतायत से;-होब, अधिक मात्रा में होना (फल आदि का); सं० आच्छन्न+विच्छिन्न, अर्थात् ऐसा होना कि सब कुछ ढक (आच्छन्न) कर वह वस्तु इधर उधर बिखर (विच्छिन्न हो) जाय; प्र०-ना-बिछन।

अछनाधार क्रि० वि० निरंतर; केवल रोने के लिए प्रयुक्त;-किहें रोइब, ऐसा रोना। सं० अक्षुण्ण+धारा।

**अछयबर** सं० पुं० अक्षयवट: वि० चिरंजीवि, सुखी, फला-फूला; -भ रहौ, अक्षयवट की भाँति सदा हरे भरे रहो! वै०-छै-, प्र०-च्छै-; सं०।
**अछरा** दे० अछार।
**अछरी** सं० स्त्री० अप्सरा; जा० (पदु० २, ६४, ३, ४८)।
**अछार** सं० पुं० यश के स्थान में अपयश; -धरब, तुहमत लगाना।
**अछार-दुलार** सं० पुं० आदर; -करब, -होब, -रहब; ?
**अजगर** सं० पुं० प्रसिद्ध बड़ा साँप; -यस, मोटा एवं सुस्त, कहा०-को भख राम देवैया।
**अजगुति** सं० स्त्री० अनोखी बात; वै०-जुग्गि; सं० अयुक्ति।
**अजगैबी** वि० विचित्र, फा० अज ग़ैब [भविष्य (के गर्भ में) से]; "मर्दं अज़ ग़ैब बरू मी आयद व कारे च कुनद।" हाफ़िज़।
**अजब** वि० आश्चर्यजनक, द्र०-बै; अर०।
**अजमाइब** वि० स० आज़माना, ग०-मौण; फ़ा० आज़मूदन।
**अजमूजा** सं० पुं० अंदाज़; -लेब, अंदाज़ लगाना; फ़ा० आज़मूदन।
**अजर-अमर** वि० जिसे बुढ़ापा तथा मृत्यु न प्रभावित कर सकें; सं०।
**अजरिहा** वि० पुं० रोगी; स्त्री०-रही, -रिही; -फ़ा० आज़ार; दे० अजार।
**अजलति** सं० स्त्री० बदनामी, अपराध; -लागब, तोहमत लगना; -लगाइब, -देब, लांछन लगाना ?
**अजवा** दे० आजा।
**अजवाइनि** दे० जवाइनि।
**अजहुँ** क्रि० वि० आज भी, अभी; प्र०-हूँ; जा० (पदु० १०, ६१, २२, ४०; ११, ४८); तुल० अजहुँ न बूझ अबूझ (बाल०); सं० अद्य।
**अजाची** वि० तृप्त; -करब, -होब; सं० अ + याची (न माँगनेवाला = संतुष्ट)।
**अजाति** वि० जाति के बाहर; बहिष्कृत; -करब, -होब, -रहब; -क भात, निषिद्ध, अवांछनीय; सं०।
**अजान** सं० पुं० (१) अज्ञात; -म, बिना जाने; वि० अज्ञात; न जाननेवाला (व्यक्ति); सं० अज्ञात-; (२) आजान; -देब, -लगाइब; अर०।
**अजार** सं० पुं० रोग; वि०-री, -जरिहा (दे०), रोगी; फ़ा० आज़ार।
**अजिआउर** सं० पुं० घर या गाँव जहाँ से किसी की आजी (दे०) या दादी ब्याह कर आई हो; वै०-या-; सं० आर्या।
**अजिआ-सासु** सं० स्त्री० सास की सास; पुं०-ससुर, ससुर का बाप; वै०-या-; सं० आर्य + श्वसुर।
**अजीरन** सं० पुं० अजीर्ण; वि० बहुत; सं० जीर्ण।
**अजुऔ** क्रि० वि० आज ही; -औ, आज भी; दे० आजु। वै०-वै सं० अद्य।
**अजुग्गि** सं० स्त्री० अद्भुत बात; दे० अजगुति।
**अजुर** वि० अप्राप्य; जो जुर (दे० जुरब) न सके; सं० अ + युज् ?
**अजूबा** (१) सं० अद्भुत बात; वि० अद्भुत। अर० अजब; (२) एक प्रसिद्ध पत्तीवाला पौदा जो फोड़े फुंसियों के फोड़ने में काम आता है।
**अजोधा** सं० पुं० अयोध्या, -जी, अयोध्या तीर्थ; वै० ध्या, -जुद्धा, -ध्या; सं०; कहा० राम छाँड़ैन-जेहि भावै सो लेय।
**अजौं** क्रि० वि० अब भी, अब तक; तु० "अजौं न बूझ अबूझ"; सं० अद्य।
**अज्ज-खज्ज** सं० पुं०-अनिश्चित भोजन, जो कुछ मिले वही भोजन, -खाब, वै० गज्ज; सं० अखाद्य।
**अटक** सं० पुं० अड़चन, संदेह; -परब, -होब, -क्रि० -ब।
**अटकब** क्रि० अ० रुक जाना, टँग जाना; मु० गटई-, गले पड़ जाना (व्यक्ति का) अथवा गले में (खाद्य का) अटक जाना; वै० अ-, प्रे०-काइब, -उब; उल० सटकब (दे०)।
**अटकर** सं० पुं० अंदाज, पता; -लेब, पाइब, मिलब, पता लेना, पाना या मिलना; वै० अँ-, क्रि०-ब।
**अटकर-पच्चू** वि० अटकल-पच्चू; -मारब, अटकल लगाना।
**अटकरब** क्रि० स० पता लेना या लगाना (छिपकर); भेद लेना; वै० अँ-।
**अटरम-पटरम** सं० पुं० कई प्रकार की वस्तुओं का समूह; वै०-सटरम; ग० सटरम।
**अटारम** सं० पुं० प्रबंध, तैयारी; वै० नटारम (दे०); सं० नटारंभ।
**अटारी** सं० स्त्री० कोठे के ऊपर का कमरा, बैठक आदि; गीत एवं कविता में "-टरिया"; सं० अट्टालिका।
**अटाला** सं० पुं० बहुत सा सामान ?
**अट्ट-पट्ट** सं० पुं० बुरा-भला, बुरा; -कहब, -बोलब; वै०-सट्ट, अड्ड बड्ड, -टर-पटर, -टाँ-टाँ, अंड बंड, -ट्टा-ट्टा, -टायँ-टायँ; ग० अट्ट-पट्ट।
**अट्ठाइस** वि० २० और ८; -वाँ -ईं; सं० अष्टाविंशति।
**अट्ठाइसवाँ** वि० पुं० २८ वाँ; स्त्री०-ईं; सं० अष्टविंशतितम।
**अट्ठानबे** वि० ९८; -वाँ; सं०।
**अट्ठारह** वि० १० और ८; -वाँ, -ईं। वै०-ठा-।
**अट्ठावन** वि० ५० और ८; -वाँ, -ईं।
**अठइआँ** क्रि० वि० प्रति आठवें दिन; दसइआँ, आठवें-दसवें दिन; वि० आठवाँ भाग; वै०-ठैयाँ, -याँ, -यें-दसयें; सं० अष्ट।
**अठईं** सं० स्त्री० आठवाँ भाग; क्रि० वि० यहीं पर, वै० य-, यहि ठाईं; दे० ठाँव।
**अठपहरा** सं० पुं० वह ज्वर जो २४ घण्टे न उतरे; -क जर; सं० अष्ट + प्रहर।

अठपहल वि॰ पुं॰ आठ पहलवाला (आभूषण, तखत आदि); स्त्री॰-लि; सं॰ अष्ट + पृष्ठ ।

अठयें क्रि॰ वि॰ आठवें;-दसयें, आठवें-दसवें दिन; सं॰ अष्टमे ।

अठरहवाँ वि॰ पुं॰ अट्ठारहवाँ; स्त्री॰-ईं; सं॰ अष्टादशम ।

अठवाँ वि॰ पुं॰ आठवाँ, स्त्री॰-ईं, आठवाँ भाग;-बाँटब; सं॰ अष्टम ।

अठसियवाँ वि॰ पु॰ ८८ वाँ; स्त्री॰-यईं; सं॰ ।

अठहत्तरि वि॰ अठहत्तर;-त्राँ-ईं, ७८वाँ, ७८वीं; सं॰ ।

अठिलाब क्रि॰ अ॰ इठलाना; वै॰-ठु-,-ठुराब ।

अठुर वि॰ पुं॰ जो किसी की बात न माने, स्त्री॰-रि, भा॰-ई; सं॰ (नि = अ)-ष्ठुर ।

अठैयाँ दे॰ अठइआँ ।

अठोहब क्रि॰ स॰ पुरानी बात को प्रयत्न से याद करना; सं॰ ओष्ठ (अर्थात् स्मरण करके ओंठ से कहना) ।

अठौनी-पठौनी सं॰ स्त्री॰ लाना या भेजना (स्त्रियों का); शुद्ध शब्द "अनौनी" ("आनब" से) है, पर "पठौनी" (पठइब दे॰) के अनुप्रास की लालच से 'नौ' का 'ठौ' हो गया; सं॰ आ + नी + प्रेषय ।

अडार वि॰ पुं॰ अधिक, स्त्री॰-रि, जा॰ (पदु॰ १०, ३७, २४, १११) ।

अड्डा सं॰ पु॰ ठहरने या रहने का स्थान; जहाँ कोई प्रायः बैठा करे; स्त्री॰-डी, सहारा,-डी देब, सहारा देना, रोकना ।

अड़बंग वि॰ पुं॰ बेढंगा, असुविधा-जनक; स्त्री॰-गि, भा॰-ई; क्रि॰ वि॰-गें, असुविधा में;-गें परब, बुरी तरह फँस जाना । द्वि॰-सड़बंग ।

अड़ब क्रि॰ अ॰ अड़ जाना, रुकना; प्रे॰-ड़ाइब,-उब, आड़ब ।

अड़बी-तड़बी सं॰ स्त्री॰ टेढ़ी-मेढ़ी भाषा; शान से बोली गई भाषा;-बोलब, बूकब,-लगाइब, रोब से बोलना, गर्व करना; अरबी + तरबी (अनु॰ शब्द) ।

अड़सठि वि॰ साठ और सात; वै॰-ठ, अँ-;-वाँ, -ठईं; सं॰ अष्टपष्ठि ।

अड़संब क्रि॰ अ॰ किसी पोले स्थान में दूसरी वस्तु का ठूस उठना और न निकलना; प्रे॰-साइब, -उब, वै॰ अँ-; सं॰ अंतः ।

अड़हुल दे॰ अढ़उल ।

अड़ाइब क्रि॰ स॰ गिरा देना (द्रव का);-, बाधा पहुँचाना; 'अड़ाब' का प्रे॰; वै॰-उब, अड़वाइब,-उब ।

अड़ानि सं॰ स्त्री॰ किसी वस्तु या व्यक्ति के अड़ने का स्थान ।

अड़ाब क्रि॰ अ॰ गिर पड़ना (द्रव पदार्थ का); (पशु का) गर्भ गिरा देना, प्रे॰-इब,-उब, सं॰ अंड (अर्थात् गर्भ के बच्चे का अंडे के ही रूप में रह जाना, पूरा न होना), अंडे की भाँति फूटकर बह जाना ।

अड़ार सं॰ पुं॰ मिट्टी का बड़ा टुकड़ा जो फटकर (विशेषतः नदी अथवा कुएँ के किनारे पर) गिर जाय;-फाटब, ऐसा टुकड़ा गिरना; सं॰ अंड अर्थात् अंडे की भाँति फटना; वै॰ अँ-। दे॰ करार ।

अड़ियल वि॰ अड़नेवाला; वै-अ-; दे॰ अड़ब ।

अड़ियाब क्रि॰ अ॰ गर्व दिखाना, गर्वीली बातें करना; वै॰, अँ-,-आब ।

अड़िल वि॰ बेहूदा ढंग से अड़ जानेवाला (व्यक्ति); अड़ियल का पु॰ रूप; प्र॰-ल्ल ।

अड़ेरि सं॰ स्त्री॰ जानबूझ कर किया हुआ व्यर्थ का झगड़ा,-करब,-मचाइब,-जोतब; वै॰ अँ-; सं॰ अ + रण ?

अड़ेरी वि॰ "अड़ेरि" करने वाला या वाली; वै॰-रिहा, स्त्री॰-ही; नै॰ अटेरि । वै॰ अँ-।

अड़ोरब क्रि॰ सं॰ उँड़ेलना; प्रे॰-रवाइब,-उब; वै॰-लब, उँड़े-; सं॰ उद्वेलय ।

अड़ोस-पड़ोस सं॰ पुं॰ घर के दोनों ओर का स्थान; वै॰-रो-;-सी-सी, पड़ोस में रहने वाले ।

अढ़इब क्रि॰ स॰ आज्ञा देना, प्रे॰-वाइब,-उब;-वैया, आज्ञा देनेवाला; अढ़वा-बिरला, कमाया या दिया हुआ । वै॰-उब; सं॰ आ + देश् ।

अढ़इया सं॰ पुं॰ सेर भर का देहाती तौल जो "पसेरी" (दे॰) का आधा होता है; २½ का पहाड़ा; वै॰-या,-ढ़ैया,-आ ।

अढ़उल सं॰ पुं॰ गुड़हल का फूल जो लाल रंग का और देवी का परम प्रिय होता है; वै॰ अँ-,-ड़हुल,-ढ़ौल ?

अढ़व-अढ़ सं॰ पुं॰ अनावश्यक शीघ्रता;-करब,-मचाइब; 'अढ़इब' से; वै॰ अढ़ौ-,-ढ़ौ ?

अढ़ाई वि॰ ढाई; कहा॰ (१) घरी म घर घर जरै-(सात) घरी भद्दरा, अर्थात् घर तो घड़ी भर में जला जा रहा है, पर (पंडित जी का कहना है) अभी भद्रा वा मुहूर्त २½ घड़ी है और बुझाने का अवसर नहीं है । (२) अपुना क रोई धोई आन क-पोईं, अपने भोजन के लिए तो लाले पड़ रहे हैं, पर दूसरे को २½ रोटी तैयार करके देना चाहता है । सं॰ अर्धद्वय ।

अढ़िआ सं॰ स्त्री॰ छोटी लकड़ी की तश्तरी;-ढोकिया, छोटे-मोटे बर्तन, सारा सामान; वै॰-या; भो॰ हँड़िया-ढोकिया; सी॰ अरघी, सं॰ अर्घ ।

अढ़ुक सं॰ पुं॰ अड़चन;-ढारब, बाधा करना; क्रि॰-ब, रुकना । भो॰-ल,- काइल, रुकना, रोकना ।

अढ़ैया दे॰ अढ़इआ ।

अतना वि॰ पुं॰ इतना; स्त्री॰-नी;-वतना, थोड़ा बहुत ।

अतर सं॰ पुं॰ इत्र;-लगाइब, छिरकब; वै॰ अँ-; अ॰ इत्र ।

**अतरब** वि० अ० अंतर पड़ना, बीच में नागा पड़ना; प्रे०-राइब,-उब; वै० अँ-; सं० अंतर।

**अतरा** सं० पुं० दो चीजों के बीच का तंग स्थान; कोना-; वै० अँ-; सं० अंतर।

**अतरि-खोतरि** क्रि० वि० कभी-कभी; बीच-बीच में अंतर डालकर; वै०-रे-रे; वै० अँ-; सं० अंतर।

**अतरिया** वि० ज्वर का वह प्रकार जो बीच में एक या दो दिन छोड़कर आता है; क्रि० वि० बीच में एक दिन छोड़कर; वै०-आ, अँ-

**अतरी** सं० स्त्री० अँतड़ी; वै० अँ-; सं० अंत्र।

**अतलस** सं० पुं० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जो पहले स्त्रियाँ पहनती थीं; ठाट-बाट की पोशाक;-चुनरी, चुनरी-, दो रंगीन कपड़े जो सधवाओं के मुख्य चिह्न हैं। अर०।

**अताय-पंछी** सं० पुं० निःसहाय व्यक्ति; ?+सं० पक्षी।

**अतिराब** क्रि० अ० गर्व करना, इतराना। सं० अति ?

**अतिसह** वि० अतिशय;-होब,-करब, दुःसह होना, या दुःसह व्यवहार करना; सं० अतिशय।

**अतीरा** दे० वतीरा; अर० वतीरः (तरीका)।

**अतुराई** सं० स्त्री० आतुरता;-करब, जल्दी करना;-परब; सं० आतुर (दे०)।

**अतू** वि० बो० कुत्तों के बुलाने का एक शब्द; "तू" का ध्वन्यात्मक रूप जो दुहराकर "अतू-अतू" करके बोला जाता है। छोटे पिल्ले के लिए "कूत-कूत" कहते हैं।

**अत्ति** सं० स्त्री० चरम सीमा (प्रायः अत्याचार आदि की);-करब,-होब, असह्य व्यवहार करना या होना; सं० अति।

**अथइब** क्रि० अ० डूबना (सूर्य, चंद्र आदि का), दिन-, संध्या होना, उ० साँझ भई दिन अथवन लागे (गीत); सं० अस्त+होब।

**अथक्क** वि० पुं० न थकने वाला; अथक; स्त्री०-क्कि।

**अथाह** वि० पुं० अथाह; स्त्री०-हि। सं० अ+।

**अदग्ग** वि० पुं० बेदाग, नया; स्त्री०-ग्गि; सं० अ+फा० दाग़। दे० निदाग।

**अदति** सं० स्त्री० वस्तु; अर० अदद।

**अददहा** वि० पुं० कमजोर, रोगी; स्त्री०-ही,-दिही; अर० अदद (संख्या) से शायद 'हा' (वाला) लगाकर "गिने" (दिन) वाला अथवा "गिनती" (के दिन) वाला (अल्पायु) अर्थ हुआ हो; वै०-दिहा।

**अदना** वि० पुं० छोटा, नीच; स्त्री०-नी;-नी बात, छोटी बात; पदनी, छोटी-छोटी (दे० पदनी),-आला, छोटा-बड़ा; अर०।

**अदब** सं० पुं० डर, आदर;-करब,-राखब; अर०।

**अदबदाय** क्रि० वि० जान बूझकर, बिना भूले; ख़ामख़्वाह; प्रायः ख़राब काम के ही लिए प्रयुक्त; अद (?)+फा० बद (ख़राब)+सं० आय (चतुर्थी विभक्ति) ?

**अदमी** सं० पुं० आदमी। मर्द-(दे० मर्द); अर०।

**अदराब** क्रि० अ० आदर पाने की इच्छा करना (नीचों या छोटों का); इतराना; प्रे०-रवाइब,-उब; सं० आदर।

**अदल** सं० पुं० न्याय, जा० (पदु० १, ६१, ११३-४-५)

**अदलतिहा** वि० पं० अदालत में प्रायः जाने वाला; मुकदमेबाज़; स्त्री०-ही; दे० अदालति।

**अदल-बदल** सं० पुं० विनिमय;-करब,-होब; वै०-ला-ला; स्त्री०-ली-ली,-लाई-लाई; अर० बदल, परिवर्तन।

**अदहन** सं० पुं० पानी जो चूल्हे पर दाल या भात पकाने के लिए रखा जाय;-देब,-धरब, ऐसा पानी चढ़ाना; मु० बहुत गर्म, देह-न है, शरीर बहुत गर्म है; सं० दह् (जलना)।

**अदाँ** वि० दिया हुआ; चुकता;-करब;-होब, ऋण-मुक्त होना;-होइ जाब, परम त्याग एवं कष्ट करना; फा० अदः।

**अदान** वि० पुं० अज्ञान, नादान; स्त्री० नि; सं० अ+फा० दानः-(दानिश; नादान)।

**अदालति** सं० स्त्री० अदालत, मुकदमेबाजी;-करब,-होब; वि०- दलतिहा (दे०); अर०।

**अदावति** सं० स्त्री० शत्रुता, वैमनस्य;-करब,-होब; अर०-त (अदू=शत्रु), वि०-दवतिहा।

**अदाह** सं० पुं० बड़ी आग;-लागब,-लगाइब; वै०-दहा (जौ०); सं० दाह।

**अदिन** सं० पुं० बुरा दिन, संकट; दे० कुदिन;-घेरब,-आइब; सं० अ+दिन।

**अदेनिया** वि० न देने वाला, दरिद्र; सं० अ+देब (दे०)।

**अदेह** वि० पुं० जिसका शरीर बहुत मोटा हो, जो अपने शरीर को सँभाल न सके; वै०-हँ; सं० अ+देह।

**अद्दरा** सं० पुं० आर्द्रा नक्षत्र, पानी बरसानेवाला प्रसिद्ध १५ दिन का अवसर; सं०।

**अद्धा** सं० पुं० आधी बोतल, शराब की छोटी बोतल; सं० अर्द्ध।

**अद्धी** सं० स्त्री० एक बारीक सफेद मलमल का भेद; सं०।

**अधउखा** सं० पुं० गन्ने का आधा टुकड़ा; स्त्री०-खी; सं० अर्ध+इक्षु (अध+ऊखि) दे० उखुड़ि।

**अधकचरा** वि० पु० आधा कच्चा, आधा पक्का; अधूरा (काम); सं० अर्ध+कचरब (दे०)

**अधकरिया** सं० स्त्री० आधे साल का लगान; वै०-आ; सं० अर्ध+कर।

**अधकी** सं० पुं० अधिक मूल्य या तौल;-माँगब,-लेब,-देब; सं० अधिक।

अधजर वि० पुं० आधा जला हुआ; जा० (पद्ु० २०, ७२; २२, १५); सं० अर्धज्वलित ।

अधन्ना सं० पुं० आध आने का सिक्का; स्त्री०-न्नी; सं० अर्ध + आना ।

अधपई सं० स्त्री० आध पाव का तोल; वै०-वा (पुं०) सं० अर्ध + पाव (दे०) ।

अधबहीं सं० स्त्री० आधी बाँह की गंजी, कमीज़ आदि; वै० हियाँ,-बाहीं; सं० अर्ध + बाँह (दे०) ।

अधबुढ़ वि० पुं० अधेड़, आधा बूढ़ा-; स्त्री०-ढ़ि; सं० अर्ध + वृद्ध ।

अधमई सं० स्त्री० अधमता; वैसे 'अधम' कम बोला जाता है; सं० अधम + ई ।

अधरम सं० पुं० अधर्म;-करब,-होब; वि०- मी; दे० बेधरमी; सं० ।

अधवा वि० आधा; स्त्री०-ई; सं० अर्ध ।

अधवाइब क्रि० सं० आधा कर देना, आधा बाँट या समाप्त कर लेना; सं० अर्ध; वै०-उब,-धिआ;-सं० ।

अधार सं० पुं० आधार, भरोसा; परम प्रिय या अंतिम आधार की वस्तु; जिउ क-, जीवन आधार; प्रान-, प्राणों का आधार; सं० ।

अधिआ सं० पुं० एक प्रणाली जिसके अनुसार खेत, बाग या पशु का मालिक उसे दूसरे को सौंप देता है और उपज में उसे आधा हिस्सा देता है;-पर देब, इस प्रकार गाय, खेत आदि देना; वै०-या; सं० अर्ध ।

अधिआउर सं० पुं० आधा हिस्सा; वै०-या-;सं० अर्ध ।

अधिआब क्रि० अ० आधा हो जाना; आधा समाप्त हो जाना या चुरा जाना; प्रे०-इब,-उब; वै०-याब; सं० ।

अधिआर सं० पुं० आधे का हिस्सेदार; स्त्री०-रि,-रिनि,-न; भा०-री, वै०-यार; सं० अर्ध ।

अधिकई सं० स्त्री० अधिकता; वै०-काई; सं० अधिक + ई ।

अधिकाब क्रि० अ० अधिक हो जाना; सं० ।

अधिकार वि० पुं० बहुत, अधिक; स्त्री०-रि, भा०-री, अधिकता; सं० अधिक + आर ।

अधिकारी सं० स्त्री० बहुतायत, अधिकता,-होब; सं० अधिक + आरी ।

अधिरजी वि० खाने-पीने में उतावला एवं लालची; अधिक खाने वाला; जल्दी खाने वाला; सं० अधीर, अधैर्य + ई ।

अधीन वि० मातहत; अधिकार में, नीचे; सं० ।

अधेड़ वि० पुं० आधी अवस्था वाला; स्त्री०-ड़ि; सं० अर्ध ।

अधेड़ी सं० स्त्री० एक रोग जो बड़े-बड़े गीले दानों के रूप में कमर के एक ओर या कमर से गले तक कहीं भी होता है; कभी-कभी आधी कमर में केवल दाहिनी ओर ही दाने होते हैं;-होब । सं० अर्ध ।

अधेला सं० पुं० आधा पैसा; यक-,-लौ न, कुछ भी नहीं; घृ०-लचा,-ची; सं० अर्ध ।

अधेली सं० स्त्री० आधा रुपया, अठन्नी;-सूका, आठ आना, चार आना, सूका-; दे० सूका; सं० अर्ध ।

अधौखा दे० अधउखा ।

अनकब क्रि० स० कान लगाकर सुनना; दूर से सुनना; जो कठिनता से सुना जा सके उसे सुनना; 'कान' के क एवं न का विपर्यय हुआ है; सं० आ + कर्ण । अकनि राम पगु धारे (तु०) ।

अनकुस सं० पुं० कष्ट;-लागब, बुरा लगना;-मानब; क्रि०-साब, रुष्ट होना; ब्र० अनखाब; सं० अंकुश, दे० आँकुस ।

अनकूत वि० जिसका अनुमान न लग सके; जो कूता न जा सके; दे० कूतब; सं० अन + कूतब ।

अनखाती वि० जो कुछ न खाय; क्रोध में न खाने वालों के लिए प्रायः प्रयुक्त; सं० अन + खाब ।

अनगढ़ वि० जो गढ़ा न हो; खुरदरा; सं० अन + गढ़ब (दे०) ।

अनगनती वि० अनगिनत; वै०-गि-; सं० अन + गनती [जिसकी 'गनती' (दे०) न हो] सं० अगणित ।

अनगब क्रि० स० (खपरैल की छत) मरम्मत करना; प्रे०-गाइब,-गवाइब,-उब;, वै०-ङब ।

अनगयर वि० पुं० दूसरा, अपरिचित; स्त्री०-रि, वै०-गैर; सं० अन + अर० गैर; सं० अन + अ० ग़ैर (दूसरा); सं० का 'अन' निरर्थक है ।

अनचिन्ह वि० अपरिचित;-मनई, अपरिचित व्यक्ति; -मानब; सं० अन + चीन्ह (दे० चीन्हब) ।

अनजउरा सं० पुं० वह घर जहाँ अनाज रखा जाय; अनाज का भण्डार; किसी किसान की खेती में हुए सारे अन्न की राशि; वै० अं-; सं० अन्न + जवर (दे० अवरा) ।

अनजल सं० पुं० रहने का अवसर; होब,-रहब;-पानी, निवास; सं० अन्न + जल (भोजन या जीवन की दो आवश्यकताएँ); दे० दाना-पानी ।

अनजहा वि० पुं० जिसमें अनाज पड़ा हो (भोजन, मिठाई आदि); जिसमें अनाज रखा जाता हो (बर्तन); स्त्री०-ही, वै० अंज-; सं० अन्न ।

अनजही सं० स्त्री० अनाज देने का कारबार; सूद पर अनाज भी उधार दिया जाता है;-चलब; दे० बिसरही, बिसार; सं० ।

अनजाद सं० पुं० अनुमान; फ़ा० 'अन्दाज़' का विपर्यय; वै० अंजाद; क्रि०-दब; दे० अनदाजब ।

अनजान वि० न जाना हुआ;-में, अज्ञान की स्थिति में, बिना जाने; सं० अज्ञान ।

अनजाने क्रि० वि० बिना जाने; सं० अज्ञाने ।

अनटस सं० पुं० मनमुटाव, भीतरी बैर, अज्ञात बैर;-राखब; सं० अंतः ।

अन्टी सं० स्त्री० धोती का वह भाग जो कमर के

चारों ओर लपेटा जाता है;-मँ, पास में;-मँ करब, -धरब, पास में रख लेना।

**अनड्डू** सं० पुं० वह बैल जिसके अंडकोष निकाले न गये हों; सं० अनडुह्।

**अनती** सं० स्त्री० छोटे बच्चों के कान में पहनने की वाली: शायद "अनन्ती" जो किसी समय "अनन्त" की भाँति कान में पहनी जाती रही हो। सं०।

**अनधन** वि० बहुत (द्रव्य): गीतों में (अनधन सोनवाँ) सं० अन+धन (जो धन न समझा जाय अर्थात् बहुत होने पर साधारण माना जाय); अन्न, धन ?

**अनबानी** सं० स्त्री० अनुचित वाणी; जा० (पदु० २५, ७७)।

**अनबोल** वि० पुं० बेहोश; स्त्री०-लि;-ता, जो पशुओं की भाँति बोल न सके; जो मनुष्य की भाषा न बोले या अपना दुःख प्रगट न कर सके; सं० अन+बोलब।

**अनभल** सं० पुं० अहित, हानि;-करब,-ताकब,-होब; तुल० अरिहुँक-कीन न रामा। सं० अन+भल (दे०)।

**अनमन** वि० पुं० जिसकी तबियत ठीक न हो; जिसका मन किसी काम में लगता न हो; स्त्री०-नि; सं० अन्यमनस्क।

**अनमेल** वि० जिसका मेल या जोड़ न हो; सं० अन+मिल।

**अनराजब** क्रि० सं० अन्दाज़ या पता लगाना; फ़ा० अंदाज़।

**अनर-चोटवा** दे० अन्हर-।

**अनवट** सं० पुं० पैरों के अँगूठों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना;-बिछुआ, पैर की उँगलियों के लिए दो गहनों का जोड़ा। सं० अंगुष्ठ।

**अनवासब** दे० अँवासब।

**अनसइत** वि० पुं० अंशवाला, भाग्यवान्; स्त्री०-ति; वै० अंश-; सं० अंश (भाग्य)।

**अनसुहाति** सं० स्त्री० बुराई; अशोभनीय स्थिति, ऐसी बात जो दूसरों को बुरी लगे; वै०-सो-; सं० अन+सोहब (सोहना=अच्छा लगना) दे०।

**अनसोवनि** सं० स्त्री० न सोने देने की स्थिति; नींद में बाधा;-होब,-करब, न सोने देना; सं० अन (न)+सोइब (सोना) दे०।

**अनहड़** वि० पुं० विचित्र; स्त्री०-ड़ि;-खेवा, विचित्र ढंग।

**अनहद** सं० पुं० अनाहत राग; सं०।

**अनहोनी** वि० स्त्री० न होनेवाली; आशातीत; सं० अन (न)+होब (होना); दे० होनी।

**अनाज** सं० पुं० नाज;-पानी, खाने का सामान; वि०-नजहा,-ही; सं० अन्न।

**अनाथ** वि० जिसका कोई सहायक न हो; सं०।

**अनादर** सं० पुं० निरादर,-करब,-होब; सं०।

**अनाप-सनाप** सं० पुं० व्यर्थ के शब्द; मूर्खता-पूर्ण बात:-कहब,-बक्कब; सं० अन+आप (आपे से बाहर की बातें)।

**अनार** सं० पुं० प्रसिद्ध फल:-दाना, इसका दाना जो खटाई बनाने के काम आता है। फ़ा०।

**अनारी** सं० न जाननेवाला व्यक्ति; वि० बेशउर; भा०-पन, अनरपन; सं० अनार्य।

**अनाहूत** क्रि० वि० अकारण, बिना बुलाए, सं० अन+आहूत (निमंत्रित)।

**अनिच्छा** सं० स्त्री० दुःखदायी स्थिति;-करब,-होब; सं० अन+इच्छा (इच्छा के विरुद्ध)।

**अनिरुध** सं० पुं० उषा का प्रेमी कृष्ण का पौत्र, अनिरुद्ध: प्रद्युम्न का पुत्र; जा० (पदु० २०, १३५; २३, १३५; २५, १७१-२)।

**अनी** सं० स्त्री० सेना: जा० (पदु० १०, ४१) सं०।

**अनुहारि** सं० स्त्री० समता (चेहरे की)। सं० अनु+हृ ?

**अनेग** वि० अनेक, बहु०-न, स्त्री०-नि।

**अनेगन** वि० अनेक, बहुतेरे:-परकार (अनेक प्रकार के भोजन),-रकम,-किसिम, नाना भाँति; सं० अनेक।

**अनेति** सं० स्त्री० अत्याचार, अन्याय.-करब,-चलब; दे० कुनेति; सं० अनीति, वि०-ती,-तिहा।

**अनेर** वि० पुं० दूसरे स्थान का (पशु); कभी-कभी अनजान भटके राही के लिए भी आता है; सं० अ+नेर (निकट)=दूर का।

**अनेरै** क्रि० वि० व्यर्थ में, बिना कारण (जौ०)।

**अनेसा** सं० पुं० चिंता, संदेह;-करब;-होब; जा० अँदेस; फ़ा० अंदेशा।

**अनैआ** सं० पुं० लानेवाला,-पठैआ, स्त्रियों को लाने और ले जानेवाला (ससुराल आदि में); वै०-नवैया,-या; सं० आ+नी।

**अनोखेक** वि० विचित्र, अलभ्य; प्रायः वस्तुओं के लिए; वै०-कै, नोखेक; कहा० नोखे क नाउनि बाँसे क नहन्नी।

**अनौनी-पठौनी** सं० स्त्री० स्त्रियों को लाने और भेजने की प्रथा।

**अनौवा** सं० पुं० किसी को लाने के (विशेषतः स्त्रियों के) समय आया हुआ सामान; वै०-आ; सं० आ+नी।

**अन्न** सं० पुं० नाज,-पानी, भोजन का सामान;-प्रासन, छोटे बच्चे को पहले-पहल अन्न खिलाने का संस्कार; सं०।

**अन्नर** अव्य० भीतर, अन्दर; प्र०-रै-, भीतर ही भीतर; फ़ा० अंदर।

**अन्नास** क्रि० वि० बिना किसी कारण के, सं० अनायास।

**अन्नास-बदें** क्रि० वि० बिना छेड़-छाड़ के, अन्नास (दे०)+बद (फ़ा०)=खराब,-क, व्यर्थ, निरर्थक।

**अन्निउँ-पनिउँ** क्रि० वि० प्रत्येक दशा में; चाहे जैसी दशा हो।

अन्हउटी दे॰अन्हवटब।

अन्हर-चोटवा सं॰ पुं॰ बिना देखे या सोचे-समझे किया हुआ काम; अन्हर (अंधा)+चोट, जैसे अंधा बिना देखे चोट करता या मारता है।

अन्हरा सं॰ पुं॰ अंधा मनुष्य; स्त्री॰-री, आ॰-रू, क्रि॰-राब, अंधा हो जाना, मूर्खता करना; सं॰ अंध।

अन्हवटब क्रि॰ स॰ (बैल की) आँखों पर अन्हौटी बाँधना; मु॰ आँखों पर पट्टी बाँधकर या हाथ रखकर (व्यक्ति को) मारना; सं॰ अंध; भो॰।

अन्हवाइब दे॰ नहवाइब; जा॰ अन्हवावा (पदु॰ २०, ७६)।

अन्हिआर सं॰ पुं॰ अंधेरा;-करब,-होब;-पाख, कृष्ण पक्ष;-री, अंधेरी रात; जग (होब), व्यर्थ, शून्य (किसी का भविष्य); भा॰-अरिया; वै॰-यार सं॰ अंधकार।

अन्हेरि सं॰ स्त्री॰ अन्याय, अंधेर;-करब,-होब; वि॰-री, अंधेर करनेवाला।

अन्होरी सं॰ स्त्री॰ गर्मी में शरीर पर होनेवाले छोटे-छोटे दाने; वै॰-न्हौ-,-न्हौ-,न्हउ-; भो॰ अँभौ-सं॰ आम्र (छोटे-छोटे आम के फलों की भाँति के दाने)।

अपंग वि॰ पुं॰ जिसका हाथ या पैर टूटा हो; स्त्री॰-गि; सं॰ पंगु; "तव करि राखु अपंग"-गिरि।

अपच सं॰ पुं॰ भोजन न पचने का रोग;-करब (किसी खाद्य का);-धरब,-होब; सं॰ अ+पच्।

अपजस सं॰ पुं॰ बदनामी; वि॰-हा,-हा कपार, अपयश पा जाने वाला (सिर); ऐसे दुर्भाग्य वाला व्यक्ति; स्त्री॰-ही; तुल॰ हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस बिधि हाथ; सं॰।

अपढ़ वि॰ पुं॰ अनपढ़, अशिक्षित; सं॰ अ+पठ्।

अपनपौ सं॰ पुं॰ आत्मीयता, मेलजोल, घनिष्ठता;-होब, करब,-रहब; सू॰ अपनपौ आपुन ही बिसरयो।

अपनाइब क्रि॰ स॰ अपना कर लेना; (दूसरे की वस्तु) ले लेना।

अपनिहिं वि॰ स्त्री॰ अपनी ही; वै॰-यै।

अपनी-अपना सं॰ पुं॰ स्वार्थ का व्यवहार, स्वार्थांधता;-होब, करब।

अपनै वि॰ अपना ही।

अपनौ वि॰ अपना भी।

अपया वि॰ बिना पैर वाला, असमर्थ; कोढ़ी-, अपाहिज; सं॰ अ+फा॰ पा (पैर) भो॰।

अपरंपार वि॰ जिसके पार का पता न चले, अथाह; प्रायः भगवान् की माया या महिमा के लिए; सं॰।

अपरब क्रि॰ अ॰ पार हो जाना, अंत तक पहुँच जाना; सं॰ अपर (दूसरा) अर्थात् दूसरे किनारे पहुँच जाना।

अपरबल वि॰ सर्वोपरि, प्रबल; सं॰ 'प्रबल' के साथ निरर्थक 'अ' का उदाहरण; भो॰।

अपराध सं॰ पुं॰ कसूर;-करब,-होब; वि॰-धी, पापी; सं॰।

अपलच्छ सं॰ पुं॰ अकर्मण्यता, सुस्ती; वि॰-च्छी, घृणित एवं अकर्मण्य। सं॰ अप+लक्ष् ?

अपवादि सं॰ शरारत;-करब; वि॰-दी; बदमाश।

अपसर सं॰ पुं॰ अफसर; वै॰-पी-; अं॰ आफ़िसर।

अपसा-मँ क्रि॰ वि॰ आपस में; प्र॰-सैं-दे॰ आपुस।

अपहरब क्रि॰ स॰ अन्यायपूर्वक ले लेना; हरब-, दूसरे की वस्तु ले लेना; सं॰ अप+हृ।

*अपाढ़ वि॰ कठिन, दुष्प्राप्य;-होब,-रहब;-करब; क्रि॰ वि॰-ढ़ें, मजबूरी में, निःसहाय अवस्था में।

अपार वि॰ जिसका पार न हो, सं॰।

अपावन वि॰ अपवित्र; हेय "परयो-ठौर में कञ्चन तजत न कोय"।

अपाहिज वि॰ हाथ पैर से लाचार; सं॰ ऐसा व्यक्ति। अ+पद (जिसके हाथ पैर न काम करें)।

अपिलाँट सं॰ पुं॰ अपील करनेवाला (कच॰); अं॰ अपीलांट।

अपीलि सं॰ स्त्री॰ मुकदमे की अपील;-करब,-होब,-दायर करब,-सुनब; अं॰ (कच॰)

अपीसर सं॰ पुं॰ अफसर; भा॰-री, वै॰-पि-; अं॰ आफ़िसर, अर॰ अफ़सर (ताज)।

अपुआ सर्व॰ स्वयं; प्र॰-ऐ,-नै; वै॰-ना, वा।

अपुनइ क्रि॰ वि॰ अपने ही, स्वयं, जा॰ (पदु॰ २१, ३४)......वै॰ आपुहि (जा॰, अख॰, ४७), -इ,-पै।

अपुना सर्व॰ स्वयं; प्र॰ नै, स्वयं ही, वै॰-आ,-वा।

अपुसा सर्व॰ आपस;-क, आपस का; क्रि॰ वि॰ मँ, आपस में, प्र॰-सै म; आपस में ही।

अपूरब वि॰ अपूर्व, "सरसुति के भंडार की बड़ी-बात, ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै बिन खरचे घटि जात"। सं॰।

अपूरी वि॰ स्त्री॰, पूरी, भरपूर, व्याप्त; जा॰ (पदु॰ २, १८२; १६, ४४)

अफनाब क्रि॰ अ॰ घबराना; शा॰ 'उफान' से-उफान खा जाना या आपे से बाहर हो जाना।

अफरादाँ वि॰ व्यर्थ, अधिक,-जाब,-खर्च करब; अर॰ इफ़रात।

अफलातून सं॰ पुं॰ बड़े गर्व एवं मस्तिष्क वाला व्यक्ति;-बनब, गर्वीली बातें करना; अ॰ (अ) फलातूँ (यूनानी दार्शनिक जिसे अंग्रेज़ी में प्लैटो कहते हैं)।

अफायाँ वि॰ व्यर्थ, निरर्थक;-जाब,-होब, सं॰ अ+फ़ा॰ फ़ायदाः ?

अफीमि सं॰ स्त्री॰ अफीम,-मची, अफीम खानेवाला, फ़ा॰ अफ़्यून, अं॰ ओपियम।

अब क्रि॰ वि॰ इस समय; प्र॰-ब्ब,-ब्बै,-ब्बौ; "कालि करै सो आजु कर आजु करै सो अब्ब" (कबीर)।

अबकी क्रि॰ वि॰ इस बार; प्र॰-कियैं,-यौ।

अबख़ोरा सं० पुं० गिलास; फ़ा० आबख़ोरः (आब =पानी + ख़ुरदन, पीना): वै०-प-।

अबगा वि० जिसमें पानी न मिला हो (विशेष कर दूध एवं गन्ने का रस); सं० अ+बगड़ब (दे०), गबड़ब = मिलाना; भो०-गै,-अबै (अधिक)।

अबतर वि० पुं० खराब; और खराब (प्रायः स्थिति के लिए); स्त्री०-रि; फ़ा० अबतर (खराब)।

अबयँ क्रि० वि० अभी; थोड़े समय पूर्व या पश्चात्; वै०-हीं,-बैं,-ब्बै।

अबलै क्रि० वि० अब तक; वै०-लौं।

अबवँ क्रि० वि० अब भी, इस पर भी; प्र० ब्वौं,-ब्बौ।

अबवाब सं० पुं० वह सरकारी टैक्स जो ज़मींदारों से मालगुजारी पर शिक्षा, सड़क आदि के लिए वसूल होता था। अर० अबवाब [ बाब, (द्वार) का बहु० ]

अबसें क्रि० वि० इस समय से; फिर से।

अबहिन क्रि० वि० अभी; वै० हीं।

अबहीं क्रि०; वि० अभी; वै०-हिन,-बैं; प्र०-हिनैं,-ब्बै।

अबाही-तबाही सं० स्त्री० आफ़त;-परब,-बकब, अंड-बंड बकना; फ़ा० तबाह (नष्ट)।

अबीरि सं० स्त्री० अबीर;-लगाइब; अर०-बीर (कई सुगंधों का संग्रह)।

अबेर-सबेर क्रि० वि० समय-कुसमय;-करब; सं० सुवेला; दे० सबेर।

अबेरि सं० स्त्री० विलंब, देर;-कै,-सें;-लै, देर तक, देर से;-करब,-होब; सं० अवेला।

अबै क्रि० वि० अभी, वै०-बहीं, प्र०-ब्बै, बहिनै,-हीं।

अबौ क्रि० वि० अब भी; वै०-बहूँ,-वौं; प्र०-ब्बौ।

अभिरब क्रि० अ० भिड़ जाना; दे० भिड़ब। निरर्थक अ।

अभिलाख सं० पुं० अभिलाषा; हार्दिक इच्छा;-करब,-होब; क्रि०-ब, इच्छा करना (प्रायः अनिष्ट)।

अभेर सं० पुं० संघर्ष; नत-, नातेदारी का सिलसिला।

अभोखन सं० पुं० आभूषण; भोजन या पान का सामान (प्रायः देवी देवता का); यह शब्द स्त्रियाँ देवताओं को कुछ चढ़ाते समय कहती हैं—"लेव महराज, आपन-"। सं० आभूषण, अ+भूख?

अमउआ सं० पुं० एक हरा कपड़ा जो कच्चे आम के रंग का होता है; वै०-मौआ; सं० आम्र।

अमचुर सं० पुं० आम की सूखी खटाई; सं० आम्र-चूर्ण।

अमरस सं० पुं० आम का रस; सं० आम्र-रस।

अमराई सं० स्त्री० आम की नई बगिया; छोटे पेड़ों का बाग; सं० आम्र।

अमल सं० पुं० समय; नशा (जो समय पर लगता है);-करब,-लागब;-दखल, अधिकार; अर०; वि०-ली, नशेबाज़; वै०-लि, क्रि०-लियाब, नशे का वक्त होना या नशे के समय कष्ट पाना; प्र० अमल = समय।

अमला सं० पुं० कर्मचारी गण;-ओहदार,-फइला, दफ़्तर के लोग,-लोग; अर० अमल (कार्य) [आमिल (कार्यकर्ता) का बहु०]।

अमलोनी सं० स्त्री० एक खट्टा साग; सं० आम्ल (खट्टा)।

अमानत सं० स्त्री० रखी हुई या जमा की हुई रकम या वस्तु;-रहब,-धरब; अर०।

अमाब क्रि० अ० अंदर आ सकना (किसी वस्तु का); प्रे०-मवाइब, अँटाना।

अमार सं० पुं० एक फल और उसका पेड़।

अमावट सं० पुं० पके आम के रस की पपड़ी जो धूप में सुखाकर बनती है। सं० आम्र।

अमावस सं० पुं० अमावस्या; वै०-मवसा: सं०।

अमिआ सं० स्त्री० छोटे छोटे कच्चे आम के फल; वै०-या सं० आम्र।

अमिट वि० जो मिट न सके।

अमिनई सं० स्त्री० अमीन का काम, उसकी नौकरी;-करब: दे० अमीन, वै०-मीनी।

अमिरई सं० स्त्री० अमीरी; आराम करने की आदत; वै० अमिरपन अ०।

अमिरऊ वि० अमीर की भाँति;-ठाट बाट,-खान पान; अ० अमीर, सरदार।

अमिरपन सं० पुं० अमीरी: वै०-ई।

अमित सं० पुं० अमृत; वि० बहुत मीठा; सं० अमृत।

अमिर्ती सं० स्त्री० जलेबी की तरह की प्रसिद्ध मिठाई; वै० इमि-: सं० अमृत।

अमिलई सं० स्त्री० खट्टापन, खटाई; सं० अम्ल।

अमिलचुक वि० बहुत खट्टा; प्र०-क सं० अम्ल।

अमिलतास सं० पुं० एक पेड़ और उसका पीला फूल, इसके लंबे फल को "सियर-डंडा" (दे०) कहते हैं और इसके फल का गूदा दस्त कराने के लिए दिया जाता है। वै०-म-।

अमिला सं० पुं० एक प्रकार की बोवाई जो धान के लिए काम में आती है;-मारब, धान खेत में बोने के दो दिन पहले खेत जोत देना जिससे पानी के कारण बीज इकट्ठा बटुर न जाय (सं० अ+मिल, मिलब, न मिलना)।

अमिलाब क्रि० अ० खट्टा हो जाना; प्रे० लवाइब;-म, जो खट्टा हो गया हो; सं० अम्ल (खट्टा)।

अमिली सं० स्त्री० इमली; वै० इ-; सं० अम्ल (खट्टा), क्योंकि इमली खट्टी होती है। दे० आमिल, अमिलाब।

अमीन सं० पुं० भूमि का नाप-जोख करनेवाला अधिकारी; भा०-नी,-मिनई। अर० अमीन (विश्वास-पात्र)।

अमीर वि० धनाढ्य; आराम करनेवाला; भा०-री,-मिरई,-पन, क्रि०-राब, अमीर हो जाना; अर०।
अमेठब दे० उमेठब।
अमेठियाँ क्रि० वि० जिस दिन बाज़ार न हो;-लेब, ऐसे दिन खरीदना; शा० अ + पैठ (बाज़ार) ?
अमोला सं० पुं० आम का छोटा पौदा या पेड़; सं० आम्र।
अमौआ दे० अमउआ।
अयँठ सं० पुं० गर्व से बात करने का ढंग; ऐंठ; वि०-ठोहर (दे० अइँठोहर)।
अयँड़ सं० पुं० घमंड;-मयँड़, व्यर्थ की आपत्ति;-करब; वि०-ड़ी, घमंडी; क्रि०-ब;-इँठब,-ड़ियाब।
अयना सं० पुं० मुँह देखने का शीशा; अर० आईन:।
अयर-गयर वि० पुं० दूसरा, अपरिचित; फ़ा० ग़ैर (दूसरा)।
अयरन सं० पुं० कान में पहनने की बाली; अं० इयर-रिंग; वै० ऐ-,।
अयलाहिन वि० मुँह के स्वाद को खराब करने-वाला;-आइब ऐसा स्वाद देना; वै०-इ-।
अयस सं० पुं० मज़ा, आनंद;-करब, मज़े उड़ाना; अर० ऐश।
अयाची दे० अजाची।
अरइल सं० पुं० एक प्रसिद्ध स्थान जो प्रयाग के पास गंगा-जमुना संगम के दक्षिणी किनारे पर है। जा० (पदु० १०, १२६)
अरई वि० स्त्री० जो उबली न हो;-कोदई (दे०कोदो); पुं० अरवा (दे०) ?; (२)-बिरई, जड़ी-बूटी।
अरक सं० पुं० अर्क;-उतारब; अर० अर्क।
अरगन-परगन सं० पुं० सारा पड़ोस;-न्योतब, सबको बुलाना; दे० परगना; फ़ा० परगन: (टुकड़ा)।
अरगनी सं० स्त्री० कपड़ा टाँगने की लकड़ी या रस्सी; अर० अरगन; वै० अल-(मि०); अलग + नी ? सं० आलग्न।
अरगला सं० पुं० हठ; मचल पड़ने की स्थिति;-करब,-डारब; जा० (पदु० २५, ७४) सं० अर्गला।
अरघ सं० पुं० अर्घ्य;-देब, पूजा स्वरूप जल चढ़ाना; सं० अर्घ्य।
अरघा सं० पुं० पात्र जिसमें शिव, शालग्राम आदि की मूर्ति पर चढ़ाया हुआ जल गिरता है। सं०।
अरज सं० स्त्री० प्रार्थना;-करब;-मारूज, विनती;-मंद, प्रार्थी; वै०-जि; अर० अर्ज़ (पेश करना)।
अरजाल सं० पुं० बोझ, उत्तरदायित्व; व्यर्थ की बदनामी;-आइब (उप्पर, सिरे-); अर०रज़ल (नीच) का बहुवचन।
अरजी सं० स्त्री० प्रार्थनापत्र;-देब,-दावा, मुकदमे की पहली प्रार्थना। अ०-र्ज़।
अरजूमाल वि० कठिनता से सँभलनेवाला (व्यक्ति);-होब, चल फिर न सकना; अर० आरज़ू + फ़ा० मंद (जो दूसरे से प्रार्थना करे) ?
अरतें-बिरतें क्रि० वि० अवसर पड़ने पर; आव-श्यकता होने पर; सं० आर्त + वृत्त।
अरथाइब क्रि० सं० समझाना, समझाकर कहना; वै०-उब; सं० अर्थ।
अरथी सं० स्त्री० मुरदे की सवारी;-निकरब;-निका-रब,-बनाइब। सं० रथ।
अरदास सं० पुं० प्रार्थना;-करब (विशेषकर देवता से) अ० अर्ज़ + फ़ा० दाश्त।
अरधेल सं० पुं० जिसके पिता या माता असली न हों; सं० अर्ध।
अरपब क्रि० स० चढ़ा देना, अर्पण कर देना; ले लेना (दूसरे की वस्तु); अर्पि लेब,-देब; सं० अर्प।
अरबा सं० पुं० विशेषता;-लगाइब; किसी बात को सीधे न कहकर द्राविड़ी प्राणायाम करना; अर० रबः (चौथाई), अरबः (वर्ग का चतुर्भुज) = चार।
अरबी-तरबी दे० अड़बी—।
अररर वि० बो० फागुन में कबीर (दे०) गाते समय यह शब्द राग से और "कबीर अररर" के रूप में गाया जाता है।
अरराब क्रि० अ० टूटकर गिरना (पेड़, दीवार आदि का), अकस्मात् गिर पड़ना; ध्व०'अररर' से।
अरवा वि० पुं० जो बिना धान उबाले हुए कूटा गया हो (चावल);-चाउर; स्त्री०-ई (दे०)।
अरसा सं० पुं० देर,-करब,-होब; वै०-इ-; अर० अर्सः।
अरसी सं० स्त्री० अलसी; दे० तीसी।
अरहरि सं० स्त्री० अरहर का पेड़; उसका दाना; वि०-हा, अरहरवाला (खेत)।
अराम सं० पुं० आराम, सुख;-करब, सुस्ताना,-देब,-रहब; बेराम (दे०); बेराम-, क्रि०वि०-में-बेरामें, सुख दुःख में; फ़ा० आराम।
अरायज-नवीस सं० पुं० कचहरी का वह व्यक्ति जो प्रार्थनापत्र लिखा करता है। अर० अर्ज़, बहु० फ़ा० अरायज + नविश्तन, लिखना; भा०-सी।
अरार सं० पुं० मिट्टी या पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े जो नदी के किनारे, कुएँ या पहाड़ में से फटकर गिरते हैं;-फाटब; वै०-ड़ार।
अरुआ सं० पुं० अरुई या घुइयाँ का बड़ा रूप जिसे बंडा भी कहते हैं;-भमुआ, रद्दी भोजन; चाहे जो कुछ (भोजन के लिए); मु० चाहे जैसे लोग।
अरुआरब क्रि० स० प्रारंभ करना; वै०-वा-; सं० आरंभ।
अरुई सं० स्त्री० घुइयाँ।
अरुठ वि० अरुचिकर, सूना;-लागब, बुरा लगना; सं० अरुचि।
अरूस सं० पुं० अडूसा; प्रसिद्ध औषध का पेड़ जिसे संस्कृत में वासा कहते हैं; वै०-सा,-ड़ू-।

अरे संबो० पुकारने या संबोधित करने का शब्द; सं० रे।
अरोस-परोस सं० पुं० निकटवर्ती स्थान;-सी-सी, पड़ोस के लोग।
अलई-पलवा सं० पुं० इधर-उधर की बातें, असंबद्ध बातें;-बतुआब; सं० अ+लभ (दे० लहब)+पल्लव (सं० पल्लव-ग्राही), वै०-ही-पलही,-बलही।
अलकापुरी सं०स्त्री० सुंदर काल्पनिक स्थान जिसका वर्णन साहित्य में है; इंद्र की नगरी; सं०।
अलख वि० जो लखा या देखा न जा सके;-लीला, अद्भुत व्यवहार; सं० अलक्ष्य।
अलगएट वि० बिलकुल अलग, वै०-ट्ट, क्रि० वि०-टें,-ट्टें, प्र०-ट्टै।
अलग वि० पुं० पृथक्; स्त्री०-गि, क्रि० वि०-गें, क्रि०-गाब,-गाइब,-उब; सं० अ+लग्न।
अलगउआ वि० किसी का अकेला (हिस्सा, घर आदि), वै०-गौआ,-वा।
अलगाइब क्रि० स० अलग कर देना, बाँटना; प्रे०-गवाइब,-उब, वै०-उब।
अलगाव क्रि० अ० अलग हो जाना: प्रे०-गाइब।
अलगी-बिलगी सं० पुं० एक घर के लोगों के अलग हो जाने की क्रिया, प्रथा आदि,-करब,-होब, सं० अ+लग्न, वि+लग्न।
अलगें क्रि० वि० पृथक्, अलग,-रहब,-करब,-होब।
अलङ सं० पुं० किनारा, भाग; स्त्री०-ङि; एक-, एक किनारे, वै०-लँ।
अलफ वि० खड़ा, रुष्ट, अलग,-होब, घोड़े का चलते-चलते खड़ा हो जाना; (व्यक्ति का) नाराज़ हो जाना; अर० अलिफ़ (प्रथम अक्षर) जो सीधा खड़ा रहता है।
अलमारी सं० स्त्री० आलमारी; वै० इ-।
अलयपन सं० पुं० सुस्ती, काहिली;-करब, वै० लै-, दे० अलाई।
अलर-बलर वि० उलटा-सीधा, अस्त-व्यस्त।
अललटप्पू वि० बेसिर पैर का, अंदाज़िया।
अलवान सं० पुं० गर्म चादर; प्र० आ-; अर० अलवान (लौन=रंग) का बहु०।
अलसई सं० स्त्री० आलस;-करब,-लागब; सं० आलस्य।
अलसाब क्रि० अ० आलस करना, नींद में आ जाना; प्रे० (?)-साइब,-उब; सं० आलस्य।
अलाई वि० बहुत सुस्त, काहिल;-क पेड़ अत्यंत काहिल, बेकार; भा०-पन,-लयपन,-लैपन, वै०-लहिया।
अलान वि० अलग;-करब,-होब, रहब; अर० ऐलान (प्रगट)।
अलाप सं० पुं० गाने का राग; क्रि०-ब, टेरना, राग से गाना; सं० आलाप।
अलाय-बलाय सं० पुं० बीमारी, बुराई, कूड़ा-करकट; प्राय: स्त्रियाँ बच्चों के लिये देवताओं से मनौती या प्रार्थना करते समय इस शब्द का प्रयोग यों करती हैं-"दुरगा जी बच्चा क-लइ जायँ"; अर० बला।
अलावाँ अव्य० अतिरिक्त, सिवाय; अर० अलावः।
अलियावन सं० पुं० कूड़ा, कचड़ा।
अलेल वि० बहुत (वस्तुओं के लिए);-होब,-रहब।
अलैपन दे० अलयपन।
अलोन वि० पुं० बिना नमक का; स्त्री०-नि, प्र०-नै;-नै खाब, बिना नमक के ही खाना; सं० अ+लवण।
अलोप वि० गायब, लुप्त,-करब,-होब; सं० अ+लुप्; और कई शब्दों की भाँति इसमें भी 'अ' निरर्थक है।
अल्हइत सं० पुं० आल्हा गानेवाला; दे० आल्हा, आल्हखंड।
अल्हर वि० अल्हड़, कच्चा,-बतिया, बहुत छोटा फल, खाने के अयोग्य; दे० आल्हर; प्र०-ड़०, भा०-ई,-पन।
अवँरा सं० पुं० आमला, उसका पेड़ एवं फल;-भर, ज़रा सा (गुड़ आदि), स्त्री०-री, छोटा आमला; सं० आमलक।
अवगतब क्रि० अ० सूझना, समझ में आना, अवगत होना; वै० अगवाब (विपर्यय-वग,-गाव); सं० अवगत।
अवघड़ सं० पुं० औघड़, भा०-ई,-पन, वि०-ढ़ी (औघड़ी मत, औघड़ों की परम्परा)।
अवङर सं० पुं० अवसर;-परब; सं० अवसर (?)
अवच्चक क्रि० वि० अकस्मात्; वै० औ-, प्र०-चक्कें।
अवचट सं० पुं० आकस्मिक अवसर;-परब।
अवतारी वि० अद्भुत,-मनई, विशेष शक्तिशाली व्यक्ति; वै०-रिक; सं० अवतार।
अवध सं० पुं० अयोध्या; अवध प्रांत जिसमें १२ ज़िले हैं;-पुरी, अयोध्या नगरी (तुल०),-नरेस,-धेस, दशरथ अथवा राम, अयोध्या के राजा।
अवर वि० पुं० और, अन्य; प्र०-रौ, दूसरा भी, स्त्री०-रि,-रिउ; वै०-उर, औ-; तुल० अरु, अवरु; सं० अपर।
अवला-मवला दे० औला-मौला
अवसान-खता सं० पुं० ख़तरा (जिससे कोई बच गया हो); भूल; फा० अवसान (होश)+खता।
अवसि क्रि० वि० अवश्य; तुल० अवसि देखिये देखन जोगू,-कै, अवश्य ही, जान बूझकर; सं० अवश्य।
अवसेवरि सं० स्त्री० छेड़छाड़, कष्ट,-करब, बार बार दुःख देना, छोटी-छोटी बातों में तंग करना; वै०-उ-,शा० अवाहि (दे०)+सेवर (दे०) जो दोनों शब्द जुताई के लिए आते हैं,-अर्थात् कभी कम, कभी अधिक ? अ० सेवरो (जोतना), उल० खाँजो।

अवाँरी सं० स्त्री० पंक्ति; यक-, दुइ-(मकान); सं० अवलि ।

अवाँसब क्रि० सं० (नई वस्तु का) उपयोग प्रारंभ करना [ विशेषकर बर्तन का ] व्यं० नई स्त्री के साथ रमण करना; वै०-चब (फ़ै०)।

अवाई सं० स्त्री० आना;-जवाई, आना-जाना; सं० आ+गम् ।

अवाचब क्रि० अ० मरने के पूर्व अनबोल हो जाना; वि०-चा,-चीं, ऐसी दशा में; सं० अ+वाच् (बोलना)।

अवाज सं० स्त्री० आवाज,-देब;-करब;-जा, ताने की बोल, कटाक्ष;-जा कसब, कटाक्ष करना, बोली बोलना; वै०-जि; फ़ा० आवाज़ ।

अवाट-बवाट सं० पुं० व्यर्थ की बात, गाली-गलौज;-बक्कब, बुराई करना, व्यर्थ की बकवास करना; वै०-वाँट-वाँट, दे० अंड-बंड ।

अवारा वि० बिना पालक या मालिक का; क्रि०वि० होकर;-घूमब,-फिरब; सं० संबंध-हीन व्यक्ति; भा०-वरई,-वरपन; फ़ा० आवारः ।

असंघा-पसंघा दे० पसंघा ।

अस वि० पुं० ऐसा; स्त्री०-सि; क्रि० वि०, इस प्रकार; प्र०-स, यसस,-इसै,-इसनै,-इसौ,-सव (ऐसा ही,-भी),-कुछ, ऐसा कुछ, कुछ तरकीब; कहा० "हमारे मर्द न तोहरे जोय,-कुछ करौ कि लरिका होय।"

असकति सं० स्त्री० आलस, न करने की इच्छा;-करब,-लागब; वै०-कि-,-कु-;क्रि०-ताब, वि०-हा,-ही; सं० अशक्ति ।

असक्ति सं० स्त्री० निर्बलता; दे० सक्ति; सं० शक्ति।

असगंध सं० पुं० एक पेड़ जिसकी छाल औषधि के काम आती है; सं० अश्वगंध ।

असगुन सं० पुं० अपशकुन;-होब,-करब; वि०-नी,-नहा,-ही, जिसके दर्शन या आगमन से काम में बाधा पड़े; सं० अशकुन; फ़ा० शगून।

असढ़िआ सं० पुं० एक बड़ा साँप जो विषैला नहीं होता और असाढ़ में पानी बरसने पर दिखाई देता है; वै०-साँप; सं० आषाढ़ ।

असथिर वि० पुं० स्थिर, निश्चित; स्त्री०-रि, भा०-रई,वै०-हथिर,-ल, क्रि० वि०-रें,-लें, स्थिरता-पूर्वक; सं० स्थिर; दे० अह-।

असनेह सं० पुं० प्रेम, स्नेह;-करब,-राखब,-होब; वि०-ही, स्नेही; सं० स्नेह ।

असबाब सं० पुं० सामान; माल-, संपत्ति, अर० ।

असमंजस सं० पुं० दुविधा;-करब,-म परब; सं० ।

असमान सं० पुं० आकाश, वि० भारी;-होब, भारी होना, न उठ सकना; फ़ा० आसमान ।

असमानी वि० दैवी;-सुलतानी, भगवान् का या राजा का (हुक्म); अपनी शक्ति के बाहर की बात; फ़ा० ।

असम्हौ क्रि० वि० इतना अधिक कि विश्वास न पड़े,-होब, अधिक उत्पन्न होना; वै०-म्है०; सं० असंभव ।

असर सं० पुं० प्रभाव;-परब,-होब,-करब,-रहब;-दार, प्रभावशाली; अर० ।

असरेइब क्रि० स० सेवा करते रहना, पालना, आशा में लगे रहना, आश्रित रहना; सं० आ+श्रि ।

असल वि० पुं० सच्चा, शुद्ध; स्त्री०-लि, वै०-सि--ली, भा०-ई, प्र०-असल,-लै-, सच्चा सच्चा;-कै, अपने बाप का असली बेटा; प्रायः दूसरे को लल-कारने के लिए यह अंतिम प्रयोग आता है। अर०-स्ल ।

असवार सं० पुं० सवार; वि० चढ़ा हुआ, हावी;-होब,-करब,-कराइब, चढ़ाना-री, सवारी; फ़ा०; सं० अश्व ।

असस क्रि० वि० ऐसा, ऐसे ऐसे; वि० इस प्रकार का, स्त्री०-सि, वै० य-, प्र०-सै,-सौ; दे० अस ।

असहि वि० असह्य;-होब, असह्य हो जाना; सं० ।

असाई सं० स्त्री० मक्खी जो सड़ी वस्तुओं या घावों आदि पर हगकर कीड़े पैदा करती है;-हगब, ऐसे कीड़े होना ।

असाढ़ सं० पुं० आषाढ़ का महीना;-लागब, बर-सात आना; सं० आषाढ़ ।

असान वि० आसान; भा०-नी; फ़ा० आसान ।

असामी सं० पुं० प्रजा; व्यक्ति जो दूसरे का खेत जोते; (ई मालदार-अहै, यह व्यक्ति धनवान है) फ़ा० ।

असिल दे० असल ।

असूलब क्रि० स० वसूल करना, लेना; सं० असूल-तहसील, आमदनी जो किराये आदि से प्राप्त हो; अर० वसूल ।

असूली सं० स्त्री० प्राप्ति, लगान;-करब,-होब; अर० वसूल ।

असौं क्रि० वि० इस वर्ष; वै० य-,-सों; प्र० असवैं, यसवैं,-वौं ।

अस्थान सं० पुं० स्थान, देवता का स्थान; वै०-ह-; दे० थान्ह; सं० स्थान ।

अहँजब क्रि० स० (शरीर को) तोड़ देना, निर्बल कर देना;-जि उठब, बीमारी आदि के बाद हाड़ मांस गल जाना;-पहँजब, अच्छी तरह कूट देना; प्रे०-जाइब,-उब,-जवाइब,-उब ।

अहँड़ा सं० पुं० बर्तन (प्रायः मिट्टी के); तौल का पत्थर;-भाँड़ा, बहुत से बर्तन, स्त्री०-ड़ी,-कोहँड़ी, सारा सामान; दे० कोंहड़ी, हाँड़ी, हंडा; सं० भाण्ड ।

अहँड़ोरब क्रि० अ० जी मचलना, उथल पुथल मचाना; जिउ-, कै करने की इच्छा होना; स० (पानी या अन्य द्रव को) मथ डालना; प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब; सं० आंदोल ।

अहक सं० स्त्री० उत्कंठा, हार्दिक इच्छा:-मिटब, मिटाइब क्रि०-ब, किसी बात या व्यक्ति के लिए मरना; [अहकि-अहकि, इच्छा की अपूर्ति सहते-सहते, प्रतीक्षा में निराश होकर]; फ़ा०-क़ (चूना)।

अहका सं० पुं० .जोर की प्यास;-लागब; फ़ा०-क़ (चूना) ?

अहकाइब क्रि० सं० तरसाना; अहक पूरी न होने देना, वै०-उब।

अहतर सं० पुं० अस्तर;-लगाइब,-देब; सं० स्तर।

अहथाप सं० पुं० स्थापना;-करब,-होब; क्रि०-ब; सं० स्था।

अहथापना सं० स्त्री० स्थापना;-करब,-होब; सं० स्थापना। क्रि० पब; सं० स्थापय्।

अहथिर वि० पुं० स्थिर, निश्चिंत, शांत; स्त्री०-रि, वै०-ल, अस्थिल। भा०-ई, क्रि० वि०-रैं, शांति-पूर्वक; जा० "सबै नास्ति वह अहथिर" (पदु० स्तुतिखंड ६); दे० असथिर, सं० स्थिर।

अहदंकब क्रि० अ० डर जाना, घबरा उठना।

अहदियाब क्रि० अ० घबराना; वै०-आब; प्रे०-वाइब,-उब।

अहदी वि० सुस्त: भा०-पन। अर० अहद।

अहनी दे० अहनी।

अहमक वि० पुं० मूर्ख; स्त्री०-कि, भा०-ई; अर०।

अहय क्रि० अ० है; वै०-इ, आटै, बाटै; फै० सु० प्रत०।

अहरब क्रि० सं० काटकर सीधा करना (लकड़ी); व्यं० पीटना (व्यक्ति को), खूब मारना; प्रे०-रवाइब, -उब। सं० आ+हृ।

अहरा सं० पुं० उपलों की आग जिस पर दाल, बाटी आदि पकाते हैं; बिना चूल्हे की आग;-जोरब, -लगाइब; सं० आहार ?

अहरी सं० स्त्री० कुएँ के पास का स्थान जहाँ पशुओं के पीने के लिए पानी भर दिया जाता है; फै० सु० प्रत०; सं० आहार? ऐसे स्थान पर प्राय: जानवर चरने या आहार के बाद आते हैं। भो० अहरी (जंगली बैल)।

अहह वि० बो० ओ हो ! हाय हाय ! तुल० अहह तात दारुन दुख दीना।

अहार सं० पुं० भोजन, .खूराक;-करब,-देब,-पाइब,-मिलब,-लेब; सं० आहार।

अहिजन सं० पुं० (१) इंजन; (२) " " चिन्ह;-देब,-लगाइब, ऐसा चिन्ह लगाना; वै०-इँजन-इ-दे०). पहले अर्थ में अं० एंजिन, दूसरे में अर० ऐज़न (भी)।

अहित सं० पुं० बुराई, हानि;- करब,- होब, सं०।

अहिवात सं० पुं० सधवापन, सौभाग्य; वि०-ती, सधवा; प्र०-तिन: तुल० 'अचल रहै-तुम्हारा'। सं० अहोभाग्य।

अहिर सं० पुं० गाय भैंस पालने वाला: एक हिंदू जाति जिसके लोग उजड्ड, पर सीधे होते हैं। स्त्री०-रिन,-नि०; वै०-हीं-, घृ०-रा,-रवा;-रिनिया; क्रि०-राब अहिर का सा (उजड्ड) व्यवहार करना; कहा० अहिर क पेट गहिर कुरमी क पेट अहार; भा०-ई,-पन. सं० आभीर,-री।

अहिरई सं० स्त्री० अहीरों का सा व्यवहार;-गाइब, अहीरों की सी बातें (मूर्खता-पूर्ण व्यवहार) करना; क्रि०-राब, अहीर का सा व्यवहार करना।

अहुजी सं० स्त्री० एक व्यंजन जिसमें दूध, चावल और ज़ीरे के साथ लौकी के बारीक लच्छे पकाये जाते हैं।-रीन्हब,-बनइब,-खाब। सं० भुर्ज् ?

अहेरिया सं० पुं० शिकारी अहेर करनेवाला; गी० राम लखन दुओ बन कै-; सं० आखेट।

अहो संबो० संबोधन या आश्चर्य करने का शब्द;-भैया,-भाग्य वै०-हौ (दूसरे प्रयोग में)।

अहोगति दे०-धो-।

अहौं क्रि० अ० हूँ; बैठा या खड़ा हूँ; जीवित हूँ; जब लग-,जब तक मैं हूँ; सं० अस्मि।

# आ

आँक सं० पुं० चिह्न, संख्या आदि जो किसी वस्तु या स्थान पर लिखा हो,-लगाइब,-मारब,-देब; सं० अंक।

आँकब क्रि० स० मूल्य लगाना; अंदाज़ से मूल्य निर्धारित करना; प्रे० अँकाइब, अँकवाइब। सं० अंक।

आँकुस सं० पुं० अङ्कुश; रोकथाम, रुकावट; जा० "सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा" (पदु० ६४१)।

आँखब क्रि० स० (आटे को) आँखे से चालना; दे० आँखा।

आँखा सं० पुं० (१) चमड़े या लोहे का बना बड़ा चलना (दे०) जिसमें बहुत बारीक छेद होते हैं और जिससे आटा चाला जाता है; (२) बीज का अँखुआ;-निकरब; सं० अक्ष।

आँखि सं० स्त्री० आँख;-मारब,-लागब,-खोलब,-मूनब (मर जाना),-काढ़ब,-निकारब,-सेंकब-उठब; क्रि० वि०-खीं, आँख से,-देखब, अपनी आँखों देखना; दुइ-करब, पक्षपात करना; सं० अक्षि।

आँगा सं० पुं० अँगरखा; स्त्री०-गी, अँगिया,-आ, अङिआ (दे०); वै०-ङा; सं० अंग।

आँचर सं० पुं० अँचरा; सं० अंचल।

आँचि सं० स्त्री० आँच;-लागव,-देब,- देखाइब; क्रि० अँचाब, अँचियाब (गरम होना)।

आँजन सं० पुं० आँख का अंजन;-देब,-लगाइब; सं०।

आँजब क्रि० स० अंजन या काजल तैयार करना या लगाना; तुल० अंजन-आँजि दृग; सं० अंज।

आँटब क्रि० अ० पूरा पड़ना, खाना-पीना मिलना; उ० यहि सनई क आँटत नायँ, इस व्यक्ति को खाना कपड़ा नहीं मिलता; प्रे० अँटइब,-वाइब,-उब, पूरा करना;-बाँटब "पछिलन्ह कहँ नहिं काँदौ आँटा"-जा०।

आँटा सं० पुं० घास या कटी फसल का बंडल; स्त्री०-टी, क्रि० अँटियाइब, छोटे-छोटे बंडल बनाना।

आँठा सं० पुं० मांस अथवा जमे हुए लोहू का छोटा टुकड़ा।

आँड़ा सं० पुं० डंक; स्त्री०-ड़ी, प्याज़ या लहसुन का पूरा गंठा; यक-, दुइ-;-डोइया, बच्चे-कच्चे, सारा परिवार; सं० अंड।

आँतर सं० पुं०(१) अंतर, दूरी;-परब,-देब; (२) खेत का जोता हुआ भाग, यक-, दुइ-,; क्रि० अँतरब, बीच-बीच में अनुपस्थित होना, काम न करना, आदि; सं० अंतर; दे० अतरब।

आँसु सं० स्त्री० आँसू;-पोंछब, संतोष देना,-ढरकाइब, बहुत रोना;-गिराइब; सं० अश्रु।

आइब क्रि० अ० आना; कामें-, गवनें-;-जाब; भा० अवाई (दे०) वै०-उ-।

आइसु सं० स्त्री० नेवता, भोजन का निमंत्रण;-देब,-लेब,-आइब,-खाब,-पाइब; आयसु (तुल०) (आज्ञा) दे०, अथवा आइब के 'आइसु' (तू आना) रूप से।

आकर क्रि० वि० गहरा (जोतने के लिए); सेव (दे०) का उल०; वै० अवाहि [दे०]।

आकी-बाकी सं० पुं० बचा-खुचा अंश, शेष; ऋण का अंश; दे० बाकी (अर० बाक़ी)।

आखत सं० पुं० अन्न जो नाई, कहार आदि को दिया जाता है; सं० अक्षत = न टूटा हुआ, जैसे जौ, धान आदि।

आखर सं० पुं० अक्षर, शब्द; यक-, एक शब्द;-कहब, एक बार कह देना, सं० अक्षर।

आखिर क्रि० वि० अंत में, अन्ततोगत्वा; वि०-री, अखीरी, अंतिम; प्र०-कार; अर०।

आगर वि० पुं० चतुर; स्त्री०-रि (गीतों में प्रायः "सरब गुन आगरि"); गुन-, गुण से भरपूर; सं० आगार, गुणागार।

आगा सं० पुं० (१) आगे का हिस्सा;-पाछा, (किसी समस्या के) सभी पहलू;-सोचब;-रोकब; हिम्मत अथवा उत्साह कुंठित कर देना;-अन्हियार होब, भविष्य अन्धकारमय होना; सं० अग्र। (२) पठान व्यापारी; फ़ा० आग़ः (-क़ः = मालिक)।

आगि सं० स्त्री० आग,-देब, दाह संस्कार करना;-लागब, तुरन्त क्रुद्ध हो उठना;-होब, गर्म हो जाना (व्यक्ति का);-भउर,-पानी, गरम-गरम गालियाँ, शाप आदि, उ० हमरे मुँह से-भउर (-पानी) निकरी, मेरे मुँह से अभी अपशब्द या शाप निकलेगा; वै०-गी, अगिनि,-नी (साधुओं द्वारा); सं० अग्नि, दे० अगिनि।

आगिल वि० पुं० अगला, आगेवाला; स्त्री०-लि वै० अगिला (दे०), पालकी उठानेवाले कहारों में जो आगे चलनेवाले होते हैं उन्हें-, और पीछेवालों को "पाछिल" कहते हैं। सं० अग्र।

आगें क्रि० वि० पुराने समय में, पहले, सामने; प्र० अगवाँ, वै० आगे;-पाछें, बाद को; सं० अग्रे।

आङ्छ सं० पुं० अङ्ग अथवा शरीर का प्रभाव; व्यक्ति विशेष का प्रभाव; यनकै-यइसनै बाय, इस व्यक्ति के रहने से ऐसा ही होता है। वै०-ङ्छ, आँग-; सं० अङ्ग।

आङ्गा सं० पुं० दे० आँगा; वै०-ङा।

आछी सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ जिसका फूल बहुत सुगंधित और लकड़ी हल्की पीले रङ्ग की होती है।

आजा सं० पुं० पितामह; स्त्री०-जी; सं० आर्य,-र्या; म० आजोबा; दे० अजिआउर।

आजु क्रि० वि० आज; प्र०-इ, आजही;-काल्हि, आजकल, दो एक दिन में;-जौ,-जू, आज भी; सं० अद्य।

आड़ सं० पुं० पर्दा;-करब,-होब,-परब;-बेड़, किसी प्रकार का पर्दा; क्रि०-ब, रोकना; क्रि० वि० आड़ें, छिपकर,-ड़ें-चलते, छिपाकर,-ड़ें-ड़ें, छिप-छिपकर। भा० अड़गर,-ड़।

आड़ब क्रि० स० रोकना; मोहड़ा-, भार सँभालना; अड़ब (दे०) का प्रे०; प्रे० अड़ाइब,-उब।

आड़ें क्रि० वि० पर्दे में, छिपकर; द्वि०-आड़ें, छिपे-छिपे; दे० आड़।

आढ़ति सं० स्त्री० आढ़त, पूँजी, धन;-करब,-होब; वि०-ती, अढ़तिया।

आँती सं० स्त्री० आँतें;-फारब, आँतें निकालना, कष्ट करना;-पोटी, पेट के भीतर का सब कुछ; वि० -फार, जिसके करने में बड़ा परिश्रम हो; सं० अंत्राल। अं० यंट्रेल।

आँती-सार सं० पुं० प्रसिद्ध रोग; वै० आ-।

आतुर वि० पुं० व्याकुल, उत्सुक, जल्दबाज; कहा० आतुर चोर सुहुत बैपारी; भा० अतुरई; स्त्री०-रि; सं०।

आदर सं० पुं० मान;-करब,-होब;-भाव, सत्कार; क्रि० अदराब (दे०); सं०।

आदि सं० स्त्री० इतिहास, ब्योरा, रहस्य;-जानब;-अंत, पूरी बात; सं० ।

आदी सं० स्त्री० अदरक; कहा० बानर का जानै-क सवाद ?

आध वि० पुं० आधा; स्त्री०-धी;-खाँड, थोड़ा सा (अर्ध+खंड); आधो-,आधै-, ठीक आधा २, क्रि० अधिआब,-आइब; दे० अधिआ; सं० अर्ध।

आधा वि० पुं० आधा;-तीहा, थोड़ा सा (तीहा= तीसरा भाग, दे०); स्त्री०-धी; कहा० जौ धन देखी जात आधा देई (लेई) बाँटि; सं० अर्थ ।

आधी वि० स्त्री० आधी; (२) सं० स्त्री० आधी रोटी; कहा० आधी तजि सारी को धावै, आधी रहै न सारी पावै; सं०

आन वि० पुं० दूसरा;-केउ, दूसरा कोई; स्त्री०-नि प्र०-नव,-नै-नउ,-नौ,-केव; आन-, दूसरे २; आनै-दूसरा दूसरा, दूसरे ही दूसरे; सं० अन्य ।

आन सं० स्त्री० शान;-बान । फा०

आनन-फानन क्रि० वि० तुरंत;-मँ, तुरंत ही; फा० आन (क्षण)+फानन ? फा० फौरन् ।

आनब क्रि० स० लाना;-पठइब (बहू बेटी को) लाना और भेजना; प्रे० अनाइब,-नवाइब,-उब; सं० आ+नी ।

आनय वि० दूसरा ही;-केव, दूसरा ही कोई; प्र०-नौ,-नव; दे० आन, वै०-नै; सं० अन्य ।

आन्हर वि० पुं० अन्धा; स्त्री०-रि; क्रि० अन्हराब; भा० अन्हरई; सी० आँधर, दे०अन्हरा; सं० अंध।

आन्ही सं० स्त्री० आँधी;- आइब,-जोतब, ऊधम मचाना;- पानी;- यस, बहुत जल्दी करनेवाला ।

आपइ सर्व० आपही; वै०-य,-पै, पुइ ।

आपउ सर्व० आप भी; वै०-पव,-पौ ।

आपकै सर्व० आपका, आपकी; प्र०-पैक,-पौक ।

आपन सर्व०अपना; स्त्री०-नि; अपनै-, आपना ही अपना; भा० अपनपौ, अपनपव, ममता; सू० अपनपौ आपुन ही बिसर्यो ।

आपस क्रि० वि० लौट कर;-जाब,-देब,-करब,-होब; भा०-सी, वै०-पुस; फ़ा० पस (पीछे);(२) परस्पर;-क,-मँ; भा०-दारी ।

आपा सं० पुं० अपनापन, स्वत्व; घमंड; कबी० ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय ।

आपिस सं० पुं० दफ़्तर, आफिस;-र,-अफसर; अं०; (२) क्रि० वि० वापस; वै०-पुस; फा० वापस ।

आपु सर्व० आप, स्वयं; प्र०-इ,-पइ,-पै,-पउ,-पौ; कहा० बाँदौ आपु गईं चारि हाथ पगहौ लै गईं ।

आपुस क्रि० वि० वापस; (२) परस्पर,-कै, आपस का; वै० दूसरे अर्थ में, अपुसा, प्र०-सै, भा०-सी; दे० आपस,-पिस; फा० वापस ।

आपुस-मँ क्रि० वि० आपस में, प्र० अपुसै मँ, आपस में ही; फ़ा० वापस ।

आपै सर्व० स्वयं; गों० ब० सी०-पुइ ।

आपौ सर्व० आप भी; वै०-पहु (कबी०) ।

आफति सं० स्त्री० आपत्ति, दुःख;-आइब,-परब; सं० आपत्ति, अर० आफ़त (बाधा) ।

आफती वि० आफ़त लाने वाला; उत्पात करने वाला; वै० अफतिहा,-ही, उद्दंड; अर०-त ।

आब सं० पुं० शक्ति, रोब, प्रभाव;-दार, रोब वाला, बहु-मूल्य;-ताब, प्रभुत्व, शक्ति; फ़ा० ।

आबनूस सं० पुं० प्रसिद्ध काली लकड़ी;-यस, बहुत काला;-क कुंदा, बहुत काला व्यक्ति। अर०

आबरूह सं० स्त्री० इज़्ज़त, प्रतिष्ठा;-उतारब,-देब,-लेब; वि०-ही,-दार; फ़ा० आब (पानी)+रू (मुँह); ह निरर्थक लगा है; वै०--हि वै०-रोह (जौ०); इज्जति— ।

आम सं० पुं० आम का पेड़ या फल;-घास रद्दी वस्तु (विशेषतः खाने की); (२) वि० साधारण, रिवाज,-दस्तूर (१) सं० आम्र, (२) अर० आम।

आमा हरदी सं० स्त्री० एक प्रकार की हल्दी जो दवा में काम आती है । पके आम के रंग की होने से ?

आमिल वि० पुं० खट्टा, स्त्री०-लि,-चुक, बहुत खट्टा, क्रि० अमिलाब, खट्टा हो जाना; सं० आम्ल ।

आमी सं० स्त्री० अवध और मगध के बीच की प्रसिद्ध नदी जिसे बौद्ध साहित्य में अनोमा कहा गया है ।

आयलदार वि० पुं० देनदार, ऋणी, बोझ से दबा; स्त्री०-रि, वै०-बंद । फ़ा० अयालदार (गृहस्थ)

आयसु सं० स्त्री० आज्ञा, निमंत्रण (ब्राह्मण को भोजनार्थ);-देब;-लेब,-कहब (निमंत्रण देना),-आइब; क० में प्रायः आज्ञा के ही अर्थ में; तुल० उठे सकल नृप आयसु पाई; दे० आइसु; आइब का तृ० पुरुष का विधिलिङ् का रूप "आइसु" (तू आना) होता है; शा० इससे 'आज्ञा' का अर्थ आ गया हो ।

आरचा सं० स्त्री०(देवता की) पूजा; पूजा,-धार्मिक कृत्य; सं० अर्च् (पूजा करना) ।

आरत वि० प्रायः क० में 'दुखी' के अर्थ में प्रयुक्त; सं० आर्त ।

आरती सं० स्त्री० आरती;-उतारब, आदर करना, व्यं० अपमान करना (-उतरब, अपमान होना); लेब, देवता की आरती के समय उपस्थित रहना;-लाइब, पूजा के स्थान से आरती की थाली बाहर लाना; सं० ।

आर-पार क्रि० वि० इस पार से उस पार; छेदकर; पूरा पूरा; प्र०-रापार ।

आरम पुलिस सं०स्त्री०सशस्त्र पुलिस; अं० आर्म्ड पुलिस ।

आरर वि० पुं० (वृक्ष या डाल) जो जल्दी टूट सके; स्त्री०-रि; ।

आरव सं० पुं० आहट;-पाइब,-मिलब,-लेब; मु० पता लेना, पाना (धीरे या चुपके से); ।

आरा सं० पुं० लकड़ी चीरने का औजार; स्त्री०-री;-चलब,-चलाइब, काट-कूट या चीड़-फाड़ करना; छाती पर-चलब, परम क्लेश होना। फ़ा० आरः
आराकस सं० पुं० आरा चलाने वाला (बढ़ई)। फ़ा० आरः+कशीदन (खींचना)
आरागज सं० पुं० बैलगाड़ी के दोनों पहियों के किनारे की लम्बी लकड़ी।
आराम दे० अराम।
आरी क्रि० वि० किनारे; यक-, एक ओर;-आरीं, चारों ओर;-पासें, पास किनारे; एक पंक्ति में बैठे हुए बच्चे खेल में बार-बार चिल्लाते हैं-"आरीं आरीं कउआ बीच म गुह खउआ" अर्थात् किनारे किनारे (बैठनेवाले) कौए हैं और बीच में (बैठनेवाले) गू खाने वाले हैं।" यही कहकर बच्चे उठ-उठ कर अपने-अपने स्थान बदलते रहते हैं।
आल-गाल सं० पुं० इधर उधर बातें;-मारब, गप मारना; कहा० "चोरवै आल-छिनरवै ढाढ़स" अर्थात् चोर को इधर उधर की बातें बनाना होता है और छिनाला करने वाले में हिम्मत चाहिए। इस कहावत के अतिरिक्त यह शब्द अलग नहीं प्रयुक्त होता; दे० गाला। पं० गल (बात)
आल्हखंड सं० पुं० आल्हा का उपाख्यान;-कहब,-सुनाइब,-गाइब; आल्हा (दे०)+सं० खंड।
आल्हर वि० पुं० नया, दो चार दिन का;-बतिया, दो चार दिनों का फल (न तोड़ने लायक); स्त्री०-रि;-नीन, थोड़ी देर पूर्व लगी हुई निद्रा;- निनिया (गी०); सी०अल्हरा,-री यह शब्द इन्हीं दो प्रयोगों में आता है; दे० अल्हड़ (नवयुवक)?
आल्हा सं० पुं० प्रसिद्ध योद्धा जिसका इतिहास-"आल्हा" नामक वीर गाथा में वर्णित है।-ऊदल (जिसे कभी कभी रूदल भी कहते हैं), दोनों सगे भाई; बच्चे प्रायः गाते हैं-"ढोलि बजाओ आल्हा गाओ, माठा पाओ पी लइ जाव"। आल्हा वर्षा काल में ही प्रायः गाया जाता है और इसके साथ ढोल बजता है।-होब,-गाइब,-कहब, आल्हा का गीत गाना; अल्हइत (दे०) यह गीत गाने वाला।
आला सं० पुं० यंत्र;-लागब,-लगाइब, यंत्र लगाकर देखना या परीक्षा करना। अर०-लः
आला वि० बढ़िया, ऊँचा;-हाकिम, बड़ा अफसर;-मनई, अच्छा व्यक्ति;-बाति, अच्छी बात, ऊँची बात;-अदना, छोटे बड़े लोग। अर०-लअ।
आला-पाला सं० पुं० इधर उधर की बातें, व्यर्थ की गप; ऊँची ऊँची बातें;-उड़ाइब,-बक्कब; दे० अलई-पलई; अर० आलअ। दे० आल-गाल।
आली सं० स्त्री० सखी; वै० अली; क० गी०; वैसे बोलने में अप्रयुक्त; सं० अलि।
आले-आले वि० पुं० बड़े-बड़े, एक से एक बढ़कर;-जगमाँ अहैं, संसार में बड़े-बड़े (एक से एक बढ़कर) लोग पड़े हैं; अर० आलअ का देहाती बहुवचन।
आवँरि-पावँरि सं० स्त्री० वंशज, संतति। वै० ला-; सी० पँवरि, लउँदी पउँदी, सं० अवली।
आवारा दे० अवारा।
आस सं० स्त्री०आशा, भरोसा;-करब,-छोड़ब,-रहब, होब;-भरोस; प्र०-सा; सं० आशा।
आसन सं० पुं०आसन;-मारब,-लगाइब, लेब; कुस-सं० अस् (बैठना)।
आसनी सं० स्त्री० बैठने की छोटी चटाई, दरी आदि।
आसरा सं० पुं० आश्रय, भरोसा, आशा;-करब,-देब -रहब,-होब,-छूटब; क्रि०वि०-रें, भरोसे पर;-रेगीर (किसी के) आश्रय पर निर्भर; सं० आश्रय, +फा० गिरफ्तन, पकड़ना।
आह सं० स्त्री० आह;-भरब, दुःख की साँस लेना,-लेब, दुख देना, उ० गरीब कै-नाहीं लेय क चाही, गरीब की आह न लेना चाहिए; कबी० "कबिरा दीन अनाथ की सबसे मोटी आह (हाय)"; वै०-हि, हाय (किसी के मुँह से 'हाय' निकलना ही आह है।) क्रि० अहकब -काइब (दे०); फा०।

## इ

इ वि० यह; प्र०-है,-हौ-हवै; वै० ई।
इकबाल सं० पुं० स्वीकृति (कचहरी में दी हुई, विशेषतः किसी अपराध की);-करब,-होब; वि०-ली, (अपराध) स्वीकार करनेवाला (मुलजिम, गवाह), वै० अ-; (२) रोब, प्रतिष्ठा; सरकारकै-, हजूर कै-;वै० य-अ-[कच०]; फा०
इच्छा सं०स्त्री० अभिलाषा;-करब,-पूरन होब,-करब; वै० प्र० हि-(दे०)। सं०
इजराय सं० पुं० (किसी हुक्म का) कचहरी से प्रकाशित, विज्ञापित या रवाना होने की क्रिया;-करब,-होब,-कराइब; वै०-रा,-इ; वि०-ई (डिगरी, हुकुम); अर०।
इजलास सं० स्त्री० कचहरी;-करब,-देखब,-होब,-लागब; वै० गिलास; वि०-सी,-लसिहा (इजलास जाने का आदी), अर० इजलास (बैठक); कच०।
इजहार सं० पुं० (कचहरी में दिया) बयान;-देब,-लेब,-होब-कराइब;-पाती, मुकदमे की पूरी कार्रवाई; कच०; अर०-ज़्-।

इजाजति सं० स्त्री० आज्ञा;-देब,-पाइब,-मिलब; कच०, अर०-ज़त।

इजाफति सं० स्त्री० दावत;-करब; दावति,-आव-भगत; वै० जा-, अर० जियाफत।

इजाफा सं० पुं० वृद्धि (विशेषतः लगान की);-करब, लगान या किराये की वृद्धि का दावा करना;-होब; वै० जा-; अर० इजाफः कच०।

इजारबन्द सं० पुं० पाजामा बाँधने का नाड़ा। फा० इज़ार (पाजामा)+बंद।

इजारा सं० पुं० ठेका;-लेब,-होब; अर० इज़ार:।

इज्जति सं०स्त्री० आबरू, प्रतिष्ठा;-करब,-देब,-लेब, अपनी आबरू देना, दूसरे की ले लेना या बेइज्जती करना; वि०-दार, प्रतिष्ठावान्,-हा;-ती, इज्जत संबंधी;-बाहा, मानहानि (का मुकदमा या दावा); कच०। अर०

इटकोह सं० पुं० ईंट का टुकड़ा;-मारब,-फेंकब; वै०-हा, ईं-।

इटारि सं० पुं० पांडेय लोगों का प्रसिद्ध स्थान; पाँड़े, इस स्थान के पांडेय; वै० ई।

इतला सं० स्त्री० सूचना;-देब,-करब,-आइब,-लाइब,-होब; वै०-ई,-त्त-,-त्ति-; अर० इत्तलाअ, (कच०)।

इतबार सं० पुं० विश्वास;-करब,-होब; वि०-री, विश्वास करने योग्य; अर० एतबार।

इतवार दे० यतवार; सं० आदित्य।

इनकार सं० पुं० 'न' करना, अस्वीकार;-करब; क्रि०-ब, नकारब; वि०-री (गवाह), जो (मुकदमे की बात को ) इनकार करे; कच०; अर०।

इनरी सं० स्त्री० नई ब्याई गाय या भैंस के दूध को जमाकर बनाई हुई दही की सी मिठाई जो मित्रों एवं पड़ोसियों को बाँटी जाती है; इसमें छूत मानकर इसे बड़े-बूढ़े प्रायः नहीं खाते। यह कई दिन तक बनती रहती है जब तक दूध साफ और पतला नहीं हो जाता; वै० इँदरी,-जी, ई-,फै०-री, सी० अँड़री प्र० पेवसी।

इनसान सं० पुं० कृतज्ञता;-मानब,-करब; अर० इहसान, उपकार।

इनसाफ सं० पुं० न्याय;-करब,-होब,-चाहब; वि०-फी, न्याय युक्त, न्यायवाली (बात); अर० इंसाफ।

इनाइति सं० स्त्री० कृपा;-करब,-होब, वै०-त; अर० इनायत।

इनाम सं० पुं० पारितोषक;-देब,-पाइब,-लेब;-मी काम, पुरस्कार पानेवाला काम; अर० इनआम।

इनार सं० पुं० कुआँ; स्त्री-री,-नरिया; वै०-रा; कुआँ-धरब, कुआँ-ताकब,-लेब, डूबकर मर जाना।

इफराति सं० स्त्री० अधिकता; वै० अ-; वि० अधिक वै० अफरादाँ (व्यय के लिए), व्यर्थ;-खर्च करब।

इम्तिहान सं० पुं० परीक्षा;-देब,-लेब,-होब; अर० इम्तहान। वै०-न्ति—

इमला सं० पुं० दूसरे को बोलकर लिखाने की क्रिया;-लिखब,-देब,-बोलब; अर० इम्ला:।

इमान सं० पुं० ईमान;-लेब,-देब; वि०-दार,-रि, भा०-दारी; अर० ई—

इमिरती सं० स्त्री० एक मिठाई; वै० अमिरती; सं० अमृत; दे० अमिर्ती, अमिर्त।

इरखहा वि० पुं० ईर्ष्यालु: स्त्री०-ही; सं० ईर्षा।

इरखा सं० स्त्री० ईर्षा;-दोख, ईर्षा-द्वेष;-मानब,-करब; क्रि०-ब, ईर्षा करना; वि०-खहा,-ही; क्रि० वि०-दोखें, ईर्षा द्वेष के कारण; सं०।

इरादा सं० पुं० निश्चय, इच्छा;-करब;-होब; अर०-द:।

इलइची दे० इलायची।

इलजाम सं० पुं० अपराध;-लागब,-लगाइब; मनई के सिरें,-उप्पर-लागब; अर०-ज़ाम।

इलटि सं० स्त्री० मैली चीज, गू;-खाब, गू खाना (एक प्रकार की सौगंध, उ०-खाव जौ ई बाति फिरि करौं; यदि ऐसा फिर करो तो गू खाओ); शा० अर० इल्लत (रोग) से। प्र० ई-,-ल्ल-।

इलमारी सं० स्त्री० आलमारी; वै० अ-; पुं०-रा, बड़ा अलमारा। ?

इलहिदा वि० पुं० अलग;-करब,-होब,-रहब,-खाब; प्र०-ला-,-दें; वै-दाँ, अ-, स्त्री०-दी; अर० अला-हिद:।

इलाका सं० पुं० क्षेत्र, अधिकृत क्षेत्र; जागीर;-केदार, जागीरदार, बड़ा जमींदार;-पाइब,-खरीदब। लेब; अर०।

इलाजि सं० स्त्री० औषधि, दवा;-करब,-होब,-देब,-कराइब;-बारी, दवादारू;-बारी,-करब,-होब;...वि० लजिहा,-ही; इलाज। अर० इलाज

इलावा अव्य० अतिरिक्त; वै० अ-वाँ; अर० अलावः।

इल्लति सं० स्त्री० बुराई, अवगुण, आफत;-म परब, परेशानी में पड़ जाना;, वि०-हा; अर०-त (बीमारी)

इल्लिम सं० पुं० इल्म, ज्ञान, विद्या, हुनर, तरकीब; कुलि-,सभी तरकीबें; कउनिउ-से, किसी भी तरह; वि०-दार, विद्वान्, जाननेवाला; अर० इल्म।

इसकूल सं० पुं० मदरसा, स्कूल; वि०-ली,-कुलिहा, स्कूलवाला; अं०।

इसटाप सं० पुं० दल, दल-बल, दफ्तर के लोग; अं० स्टाफ।

इसटाँप सं० पुं० कचहरी में लगाने का टिकट या टिकटदार कागज़;-लिखब; अं० स्टाँप।

इसपात सं० पुं० फौलाद; वि०-ती, फौलाद का बनाया हुआ।

इसबगोल सं० पुं० एक दवा; इसके बीज पेट के लिए गुणकारी होते हैं; वै०-प-; फा० अस्पगोल।

इसाई सं० पुं० ईसाई; स्त्री०-इन,-नि० प्र० ई-।

इस्क सं० पुं० अनुचित प्रेम; शौक;-बाजी, परस्त्री-गमन;-बाज, स्त्री प्रेमी; वै०-सिक। अर०-श्क

इस्टि सं० स्त्री० सिद्धि;-होब,-करब, किसी देवता का प्रसन्न होना या करना; सं० इष्टि ।
इस्तगासा सं० पुं० दावा, कचहरी में किया गया दावा; फौजदारी मुकदमा;-करब,-देब,-दायर करब; अर० इस्तगासः । कच०
इस्तालक सं० पुं० उत्साह, प्रोत्साहन, जोश, बढ़ावा;-देब,-पाइब, उकसाना, उत्तेजित होना; अर० इस्तश्राल (भड़काना) ।
इस्तिरी सं० स्त्री० कपड़े की कलफ; कलफ करने की मशीन;-करब,-कराइब ।
इस्तिहार सं० पुं० विज्ञापन, इश्तहार;-देब,-करब,-कराइब,-छपाइब; अर० इश्तहार ।
इस्तीफा सं० पुं० त्यागपत्र; किसान का अपने खेत से त्याग-पत्र;-देब,-लेब; वै०-स्थापा,-हतीपा,-स्थीपा,-स्ते-.-पा; अर० इस्तीफ: (क्षमा माँगना) ।
इहाँ क्रि० वि० यहाँ; प्र०-हैं,-हीं; वै०-हवाँ, प्र०-हवैं,-वाँ, ई-;सं० इह ।
इहै वि० यही; वै-०-हवै; प्र० ई-।
इहौ वि० यह भी; वै०-हौ.-हवो, ई-; सं० इयं।
इहौं क्रि० वि०यहाँ भी; वै०-हवौं; सं०इह ।

# ई

ईखि सं० स्त्री० ईख, गन्ना; वै० ऊखि, उखुड़ि,—ड़ी (दे०) सं० इक्षु ।
ईंगुर सं० पुं० सेंदुर की तरह का एक रंग, जिसे स्त्रियाँ लगाती हैं; वै० इंगुर ।
ईन्हन सं० पुं० ईंधन; सं० इन्धन;
ईमान सं० पुं० दे०इमान;-दार,-दारी; अर० ।
ईरघाट-बीरघाट, क्रि० वि० इधर-उधर; उ० केउ-केउ-, कोई यहाँ कोई वहाँ; अर्थात् सब तितर-बितर; अव्यवस्थित ।
ईलटि सं० स्त्री० दे० इलटि
ईसर सं० पुं० भगवान्, परमेश्वर; सं० ईश्वर, देवस्थानी एकादशी (कार्तिक) के दिन स्त्रियाँ रात को सूप को गन्ने के डंडे से पीटती हुई कहती हैं-"ईसर आवैं दलिद्दर जायँ।" अर्थात् दरिद्र (घर में से) भागे और भगवान् (घर में) आवें;-कैगति, भगवान् की लीला; वि०-री, ईसरी माया ।
ईसाई दे० इसाई ।
ईसान वि० उत्तर-पूर्व (का कोण) जिसे मूठीक (दे० मूठि) कोन (दे० कोन) कहते हैं ।
ईहैं क्रि० वि० यहीं; इहैं का प्र० रूप
ईहै, वि० यही; इहै का प्र० रूप
ईहौं क्रि० वि० यहाँ भी; इहौं का प्र० रूप
ईहौ वि० यह भी; इहो का प्र० रूप

# उ

उँचवाइब क्रि० स० ऊँचा करना; उँचाब (दे०) का प्रे०, रूप; वै०-उब, सं० उच्च ।
उँचाई सं० स्त्री० दे० ऊँच ।
उचाब क्रि०अ० ऊँचा हो जाना; प्रे०-चवाइब,-उब; "ऊ च" से क्रि०; वै०-चिश्राब;-इब ।
उचास वि० थोड़ा ऊँचा;-सें, ऊँची भूमि पर; 'आस' प्रत्यय और विशेषणों में भी लगता है, जैसे खटास, मिठास आदि; सं० ।
उँचाह वि० कुछ ऊँचा; सं० उच्च ।
उँचिश्राइब क्रि० स० ऊँचा कर देना; 'उँचाब' का प्रे० रूप; वै०-चवाइब,-उब ।
उँचिश्राब क्रि० अ० ऊँचा हो जाना; 'उँचाब' का वै० रूप; उ० येकर पेट उँचिश्राय गय, इसका पेट (भरकर) ऊंचा हो गया ।
उँजेर सं० पुं० उजेला; प्रकाश;-होब, सबेरा होना; सं० उज्ज्वल ।
उँटहा सं० पुं० ऊँटवाला; ऊँट+हा जैसे मोटहा (दे० मोट) ।
उँटाब क्रि० अ० उँटनी का गर्भिणी होना । प्रे०-टवाइब ।
उँटिनी सं० स्त्री०, माँदा ऊँट; वै०-टनी; सं० उष्ट्र ।
उँड़ेलब क्रि० स० उँडेलना; सं० उद्वेल; प्रे०-डेलवाइब;-उब;-वै०-रब,-श्रँडेरब ।
उ वि० सर्व० वह; ग० सुँ, सं० सः ।
उश्रब क्रि० अ० (तारों, चंद्र तथा सूर्य का) निकलना; मु० मन में आना; जा० "नजवौं आजु कहाँ दहुँ उश्रा" (सिंहलद्वीप खंड १) उ० आजु कहाँ उश्रा कि तू आयो, आज यह कैसे हुआ कि तुम इधर आ गये? प्रकाशित होना; ग्रामगीत की एक सुंदर पंक्ति है-धना मोरी उई श्रहैं जैसे जुन्हैया, अर्थात् मेरी सखी चाँदनी की भाँति प्रकाशित हो रही है । वै० उवब; प्र० ऊ-।

**उआइब** क्रि० स० उठाना (तलवार, डंडे आदि का); उठब का प्रे० रूप जिसमें 'ठ' का 'अ' हो गया है ; वै०-वा-।

**उआरब** क्रि० स० मनौती अथवा पूजा के लिए अलग निकालकर रखना ( रुपये पैसे आदि ); प्रायः बीमारी आदि की दशा में ऐसा किया जाता है, जिसमें 'उआरी' वस्तु को हाथ में लेकर बीमार के ऊपर से घुमा देते हैं; ब्र० वारना (वारी जाऊँ); दे० बलि, बलि-बलि; वै०-वा-

**उआरा न्योछा** वि० किसी देवता अथवा ब्राह्मण को देने के लिए रखा हुआ; उआरा + न्योछा (दे० न्योछब); न्योछावरि अथवा नेवछावरि भी इसी 'न्योछब' से बनते हैं ।

**उइ** सर्व० वि० वह (पुं० स्त्री०) लखी०-ठावँ, उसी जगह, जौ० वह, प्र०-ई,-है (फै० व०) ।

**उकठब** क्रि० अ० सूख जाना (पेड़ का); वै०-कुठब; सं० 'काष्ठ' (लकड़ी हो जाना) ।

**उकवति** सं०स्त्री० दाद की तरह का एक रोग जिसमें से पंछा (दे०) निकलता रहता है; वै० उँ,-कौत ।

**उकसब** क्रि० अ० (रस्सी का खाट आदि में से) निकल जाना; सं० केश (बँधे हुए बालों की तरह खुल जाना), प्रे० उकेसब; कसब (दे०) से भी संबंध हो सकता है ।

**उकाई** सं० स्त्री० कै करने की इच्छा;-आइब; वै० व-, वकलाई ।

**उकील** सं० पुं० वकील; भा०-ली, वकालत; करब, वकील या वकालत करना; अर० वकील ।

**उकुर** सं० पुं० हक; अवसर विशेष पर जो कुछ किसी को मिले, जैसे संबंधियों, नौकरों आदि को;-लेब,-मारब;-भर पाइब ।

**उकुरूँ** क्रि० वि० चूतड़ों को भूमि से बिना छुआये केवल पैरों पर (बैठना); वै०-क;-सी० रुवा

**उकेलब** क्रि० स० छिलका उतारना; वै० निकोलब; शा० 'केला' से (केले की भाँति छिलका उतार देना) उ + केल, जैसे उ + केस (दे० उकेसब); प्रे०-वाइब,-उब ।

**उकेसब** क्रि० स० खोल डालना (खाट आदि की रस्सी); प्रे० सवाइब; सी०-कासब, सं० 'केश' से; दे० उकसब; शा० सं० 'कर्ष' (खींचना) का उलटा ?

**उखमज** सं० पुं० दुष्ट; भा०-ई; सं० उष्मज, जो अकस्मात् आ जाय ।

**उखरहर** वि० पुं० उखाड़ देनेवाला (कथन);-बोलब, ऐसा बोलना जिससे बना काम बिगड़े; स्त्री०-रि; वै०-ड़-।

**उखर-बेंट** सं०पुं० व्यक्ति जिसके संबंध में कुछ ज्ञात न हो; जिसका ठिकाना न हो; दे० बेंट ।

**उखारब** क्रि० स० उखाड़ना;-सँपारब, बिगाड़ने की कोशिश करना: धमकी के रूप में यह बोला जाता है; उ० उखारि सँपारि लिहो, जो कुछ करना होगा कर लेना ।

**उखाव** सं० पुं० जो खेत ईख की खेती के लिए रखा गया हो; दे० ऊखि; सं० इक्षु ।

**उखुड़ि** सं० स्त्री० ईख; वै०-ड़ी; सं० इक्षु ।

**उखुनुक** सं० पुं० झगड़ा करने का थोड़ा सा बहाना, साधारण झगड़े का कारण;-काढ़ब,-मिलब,-पाइब; वै० उस-।

**उगहनी** सं० स्त्री० चंदा करने की क्रिया;-करब, लगाइब, चंदा एकत्र करना । सं० गृह्, लेना । वै०-गाही ।

**उगहब** क्रि० स० कई लोगों से माँगकर एकत्र करना; चंदा करना; सं० गृह्; प्रे०-हाइब,-हवाइब,-उब ।

**उगालदान** सं० पुं० वह बर्तन जिसमें थूका या कुल्ला किया जाता है; दे० उगिलब ।

**उघरब** क्रि० अ० खुल जाना; प्रे०-घारब,-घरवाइब; तु० उघरे अंत न होइ निबाहू ।

**उघरवाइब** क्रि० स० खुलवाना ।

**उघार** वि० पुं० खुला; स्त्री०-रि;-मु०-होब, खुल जाना; दिल की या असली बात कहना । ग० उघड्यूँ

**उघारै** क्रि० वि० नंगे ही (पैर, सिर या सारे शरीर से), बिना कपड़े पहने; उघारे मूँड़, नंगे सिर;-गोड़ें, नंगे पैर ।

**उचकब** क्रि० अ० कूदना, उछलना; चौकन्ना हो जाना; प्रे०-काइब,-उब; सं० उत् + चक्र (चक्र अथवा सीमा के बाहर) ।

**उचकहर** वि० पुं० उचक जानेवाला; जो शीघ्र बात न माने; स्त्री०-रि ।

**उचकुन** सं० पुं० वह वस्तु जो किसी दूसरी को ऊँची करने के लिए नीचे रखी जाय;-देब,-लगाइब; स्त्री०-नी; वै०-ना;-चु-; ऊँच + फा० कुन (करो); सी०-करका ।

**उचक्का** वि० पुं० जिसका पता-ठिकाना न हो; स्त्री०-क्की; सं० उत् + चक्र ।

**उचटब** क्रि० अ० न लगना, उचट जाना (मन, हृदय, जी); प्रे०- टाइब,-उब-चाटब; सं० उच्चाट ।

**उचरब** क्रि० अ० (चिपकी हुई वस्तु का) अलग हो जाना; प्रे०-चारब,-चरवाइब,-उब ।

**उचाट** सं० पुं० स्थिति जिसमें मन न लगे; किसी बात में जी न लगना;-होब,-करब,-लागब; सं० उच्चाटन, श० उच्चाट ।

**उचारब** क्रि० स० उच्चारण करना; (चिपकी हुई वस्तु को) उधेड़ लेना (कागज, पट्टी आदि); प्रे०-चरवाइब,-उब; वै० उचेरब सं० उच्चर (उत् + चर) ।

**उचुकुन** सं० पुं० दे० उचकुन ।

**उचेरब** क्रि० स० उधेड़ लेना (वि० चमड़ा); चाम-, बहुत मारना, सी०-ध्यालब ।

**उछरब** क्रि० अ० निशान पड़ना; दिखाई देना; बुरा दिखना (रंग आदि का); दर्द, घबराहट आदि से कूदना;-पटकब, छटपटाना; प्रे०-छारब ।

**उछार** सं०पुं० वमन;-होब,-करब, कै होना, करना ।

उछाह सं० पुं० उत्साह; वि०-हिल, उत्साहपूर्ण; सं०
उछिद्दिर वि० मुक्त, ऋणमुक्त;-होब,-करब, मुक्त होना; करना; सं० उच्छिद्र (छिद्रहीन); ऋण एक छिद्र माना गया है।
उछिन्न वि० नष्ट;-करब,-होब, नष्ट करना, होना; सं० उच्छिन्न (कटा हुआ);-के जाव, नष्ट हो जाओ (शाप)।
उजड्ड वि० अशिष्ट, उद्दण्ड; भा०-ई, उद्दण्डता;-पन सं० उद्दण्ड; ग० उज्जड़।
उजबक वि० अशिक्षित; गँवार; भा०-ई;-करब, गँवरपन करना; ग० उजबक।
उजरउटी सं० स्त्री० सफेदी (चाँदी, वर्षा आदि की);-होब, सफेद ही सफेद हो जाना;-करब, (पक्के मकान, सफेद कपड़े अथवा रुपयों से) सफेदी ला देना; सं० उज्ज्वल।
उजरति सं० स्त्री० मजदूरी, फीस (लिखने आदि की) फा०।
उजरब क्रि० अ० उजड़ जाना, नष्ट होना; गाँव से चला जाना, भागना; प्रे०-जारब,-जरवाइब,-उब।
उजराब क्रि० अ० गोरा होना; सफेद हो जाना।
उजवास सं० पुं० प्रबंध;-करब;-होब; क्रि०-सब।
उजहब क्रि० अ० लुप्त हो जाना; जा० "उजहि चली जनु भा पछिताऊ" (पद्० ४८४);।
उजागर वि० पुं० प्रसिद्ध; प्रकाशित; स्त्री०-रि; वै०-गिर;-करब,-होब, नाँव-होब, करब, नाम प्रसिद्ध करना, होना; उ+सं० जाग्रत।
उजार वि० पुं० उजड़ा हुआ; वीरान; क्रि०-ब;-लागब, सूना लगना; गीत-"हमै लागत उजारी हम न अवध माँ रहबै।"
उजारब क्रि० स० उजाड़ देना; प्रे०-रवाइब,-उब।
उजिआर सं० पुं० उजाला, प्रकाश;-करब, प्रकाशित करना; मुँह-होब, करब, पुराना अपयश मिट जाना या मिटाना। सं० उज्ज्वल; वि० के रूप में भी प्रयुक्त। वै०-यार; भा०-री; ग० उज्यालु।
उजीर सं० पुं० मंत्री; शतरंज का फ़र्जी; फा० वज़ीर; भा०-जिरई;-री।
उजुर सं० पुं० आपत्ति; प्रार्थना;-करब; अर० उज्र;-दारी, (कचहरी में की हुई) आपत्ति (अपने विपक्षी के विरुद्ध);-माजरा, कहना सुनना, प्रार्थी का विवरण;-दार, आपत्ति उठानेवाला विपक्षी।
उझकब क्रि० अ० बड़बड़ाना; जोश में आकर निरर्थक बातें कहना; 'झक' से संबद्ध।
उझिलब क्रि० स० किसी बर्तन में से निकालकर बाहर डालना; प्रे०-लवाइब,-उब।
उझिला सं० पुं० उबटन का सुगंधित सामान जिसमें तिल, सरसों, नागरमोथा आदि पड़ता है।
उठक-बैठक सं० पुं० उठने-बैठने की क्रिया; ग० उठक-बैठक; वै०-बइठक।
उठनि सं० स्त्री० रिवाज; वै०-ठानि, अर्थात् उठने अथवा प्रचलित होने की क्रिया; प्रचलन, प्रचार।
उठब क्रि० अ० उठना; खड़ा होना (लिंग का); तैयार होना (मकान का); दुखना (आँख का); भैंस वा गाय का भैंसाने या बरदाने के लिए उत्सुक होना; चौके पर जाकर भोजन करना; सोकर जगना; प्रे०-ठाइब,-ठवाइब,-उब; सं० उत्तिष्ठ;-बैठब, उठना-बैठना; उठक-बैठक, आना-जाना, मिलना जुलना;-करब, उठने-बैठने की कसरत करना।
उठवाई सं० स्त्री० उठाने की क्रिया; उठाने की मज़दूरी; उठने की रीति।
उठाइब क्रि० स० उठने में मदद करना; भोजन के लिए ले जाना; तैयार कराना (इमारत); ले लेना (दूसरे की वस्तु); प्रे०-ठवाइब। सं० उत्थापय; वै०-उब।
उठाईगीर सं० पुं० जो दूसरे की वस्तु लेकर चल दें; उठाई (उठाकर) गीर (फा० गीरद, लेना) ले जानेवाला, जैसे राहगीर आदि।
उठाट सं० पुं० उजाड़ने का कम;-करब;-होब, उजाड़ देना, उजड़ जाना (व्यक्ति का)।
उठैआ सं० स्त्री० सौरी (दे०) की शुद्धि जो बच्चा पैदा होने के कई दिन बाद तक कई बार होती है। इसमें चमारिन और धोबिन सौर के वस्त्रादि "उठाकर" ले जाती हैं, इसी से इसको 'उठैआ' कहते हैं। वै० उठइआ,-या;-होब,-परब;-डाँड़ होब, व्यर्थ जन्म होना [जिसके जन्म पर 'उठैआ' में जो कुछ व्यय हुआ हो वह भी माता-पिता पर दंड (डाँड़) स्वरूप हो]।
उठौआ सं० पुं० उठाया हुआ (भोजन); उठने की बारी (भोजनादि के लिए), जो भोजन चौके में से बाहर उठा लाया गया हो अर्थात् छुआ हो; वै० परसौआ (दे०)-खाब, ऐसा भोजन करना; वै० उ०-वा।
उड़नखटोला सं० पुं० उड़नेवाला खटोला (दे०); बच्चों की कहानियों में प्रायः वर्णित खटोला, जो हवा में उड़ता है।
उड़नछू वि० जो छूते ही उड़ जाय; जो देखते ही देखते ग़ायब हो जाय।
उड़ब क्रि० अ० उड़ना; ऐसी बात कहना जो धोखा देनेवाली हो; इधर-उधर की उड़ाना. समाप्त हो जाना (धन आदि का); जल्दी से चल देना; प्रे०-ड़ाइब,-उब,-वाइब,-पड़ब, खूब खर्च होना; सं० उड्डीय।
उड़ाइब क्रि० स० उड़ाना, व्यय करना; चुरा लेना;-पड़ाइब, उदारतापूर्वक व्यय करना; शीघ्र रवाना कर देना, प्रे०-ड़वाइब।
उड़ासब क्रि० स० (खाट को) खड़ी कर देना; बिस्तर हटा देना; प्रे०-ड़सवाइब; 'डासब' (दे०) का उलटा।
उड़ाही सं० स्त्री० वह चोरी जो छप्पर को एक ओर से उठाकर की गई हो;-देब,-मारब; 'उठाइब' से अर्थात् उठाकर चोरी करना।

उड़ुस सं॰पुं॰ खटमल; वि॰-हा,-ही, जिसमें खटमल हों।

उढ़रबक्रि॰ अ॰ भाग जाना (स्त्री का); फुर्ती; प्रे॰ -ढारब,भगाना; उढ़री, भगी हुई; उढ़ारी, भगाई हुई; उढ़री-उढ़रा, भगे हुए स्त्री-पुरुष (एक साथ)।

उतइली सं॰ स्त्री॰ शीघ्रता;-करब,-परब; वै॰-हि-, ते-, वि॰-लिहा, जल्दबाज़।

उतपात सं॰ पुं॰ दूसरों को दुःख देना; व्यर्थ का कष्ट;-करब,-मचाइब,-होब; सं॰ उत्पात; वै॰ प्र॰-तापात।

उतरब क्रि॰ अ॰ नीचे आना, स॰ पार करना; घाट-; वै॰-तारब,-तरवाइब,-उब; सं॰ उत्तर।

उतरब क्रि॰ अ॰ उतरना; प्रे॰-तारब;-तरवाइब; कहा॰ जेकरी छाती नाहीं बार, तेकरे साथ न उतरी पार, अर्थात् जिस पुरुष की छाती में बाल न हों वह बहुत अविश्वसनीय होता है।

उतराई सं॰ स्त्री॰ (नदी में) उतार देने की मजदूरी; वै॰ उतरौना;-नी; तु॰ "नहिं नाथ उतराई चहौं"।

उतान वि॰ पुं॰ छाती ऊपर किये हुए; जो ऐसा हो, स्त्री॰-नि, क्रि॰ वि॰ छाती तानकर।

उतार सं॰ पुं॰ (नदी में से) उतर सकने की स्थिति; पानी कम होना,-होब, चढ़ा-, गावदुम, क्रि॰-ब, इज्जति उतारब, पानी उतारब, अपमान करना।

उतारा सं॰ पुं समता,-देब, समता देना, बराबरी की बात कहना, उदाहरण देना।

उतीरा सं॰ पुं॰ तरीका, वै॰ वतीरा (दे॰), फा॰।

उथल वि॰पुं॰ जहाँ कम पानी हो(नदी आदि में), क्रि॰ वि॰-लें,सं॰ स्थल;-पुथल, ऊपर से नीचे तक परिवर्तन;-होब,-करब।

उदंत वि॰ पुं॰ जिस (पशु) के दाँत पूरे न निकले हों, कम अवस्था का, स्त्री॰-ति, उ+सं॰ दंत, दे॰ दाँतब, प्र॰-न्तै, यू॰ ओडंट (दाँत) सी॰-दत

उद्‌बस सं॰ पुं॰ सुख से बैठे रहने में विघ्न,-करब, विघ्न डालना, छेड़ना; सं॰उत्+बस (रहना)=न रहने देना [उप+विश=बैठना]।

उद्‌म सं॰पुं॰ परिश्रम, काम,-करब, वै॰-द्दिम,-द्दुम, ऊद्‌म, वि॰-मी; सं॰ उद्यम।

उदय सं॰ पुं॰ प्रारंभ, निकलना (सूर्य, चंद्र आदि का),-होब, सं॰, वै॰-दै, भाग्य चमकना। उदया-तिथि, वह तिथि जो सूर्योदय के समय लगी हो।

उदहब क्रि॰स॰ हाथ से पानी निकाल देना (तालाब नाँद आदि से), दे॰ दहाइब, दह सं॰उत्+ह्रद। मुं॰ अपनै-,दूसरे की बात न सुनना।

उतराई सं॰ स्त्री॰ उतारने का कर; दे॰ उतरौना; तुल॰ "नहिं नाथ उतराई चहौं" (रामा॰२।१००); सं॰ उत्+तर।

उताइल सं॰ पुं॰ शीघ्रता; वि॰-हिल; वै॰ उतइली; जा॰ "पवन चाहि मन बहुत उताइल" (अख॰ १२); दे॰ उतइली।

उतिराब क्रि॰ अ॰ (पानी के) ऊपर आना; जा॰ "सुक्ष्म सुक्ष्म सब उतिराई, सुक्षहिं महँ सब रहै समाई" (अख॰ ३०); सी॰-तराब सं॰ उत्तर।

उद्‌गरब क्रि॰ अ॰ जोश में आना, सीमा के बाहर आ जाना, प्रे॰-गारब।

उदास वि॰ पुं॰ प्रसन्नताहीन, भा॰-सी, स्त्री॰-सि। उ+दशा, अच्छी दशा न होना अथवा उत्+आशा, निराशा की अवस्था?

उदासी सं॰ पुं॰ एक प्रकार के साधु जिनका अखाड़ा अयोध्या में है।

उदित वि॰ खिला हुआ, प्रसन्न;-होब,-चेहरा; सं॰ मुदित अथवा उदित (नक्षत्र की भाँति निकला तथा चमकता हुआ); तुल॰ "उदित अगस्त पंथ जल सोखा"।

उधध वि॰पुं॰ जिसका रंग फीका पड़ गया हो,-होब,-परब, (रंग) हलका या फीका हो जाना। स्त्री॰-धि।

उधम सं॰पुं॰ शरारत, गड़बड़,-करब,-मचाइब,-मचब, वि॰-मी, वै॰ ऊ-;-ढकेल, उधुम-ढकेच, बहुत काम करनेवाला, रात दिन काम में लगा रहनेवाला।

उधरहा वि॰ पुं॰ उधारवाला, स्त्री॰-ही, हथ-उधरा ऐसा उधार जिसका उल्लेख लिखा पढ़ी में न हो, लिखित ऋण, हाथ का लिया हुआ उधार।

उधार सं॰ पुं॰ कुछ समय के लिए दूसरे से माँगी हुई वस्तु, क्रि॰ वि॰-रें, माँगकर, नकद दाम न देकर,-देब,-लेब,-काढ़ब,-माँगब,-करब, सं॰ उ+घ (लेना),-बाढ़ी, हथ-उधरा, हाथ से दिया हुआ, जिसकी लिखा-पढ़ी न हो।

उधिराब क्रि॰ अ॰ छेड़-छाड़ करना, दूसरों को तंग करके स्वयं दुःख उठाना, अपनी शामत लाना।

उधुआँ वि॰ व्यर्थ;-जाय, होब,-करब; शा॰ धुएँ की भाँति गायब होना, या किसी काम न आना= उ+धुआँ?

उनइब क्रि॰ अ॰ नीचे झुकना (डाल अथवा बादल का); घटा उनइब, वारिश होने की संभावना होना, प्रायः कविता में प्रयुक्त, वै॰ व—

उनइस वि॰ उन्नीस, कुछ घटकर या कम,-बीस, थोड़ा अंतर, वै॰ व-;सं॰ एकोनविंश।

उनरब क्रि॰ अ॰ (फल, कच्चे अनाज आदि का) बढ़कर मोटा होना और पकना, दे॰ उलरब।

उपचार सं॰ पुं॰ दवा उपाय,-करब, सं॰।

उपछब क्रि॰ स॰ पटक-पटककर साफ करना, मु॰ मसलना, पटककर मारना, प्रे॰-छाइब,-उब,-छवा-इब,-उब, वै॰-पि-,-पु-; दे॰ फीचब।

उपजब क्रि॰ अ॰ पैदा होना (अनाज, बुद्धि, धन आदि), प्रे॰-पजाइब,-उब,-जयाइब, सं॰ उत्पाद्।

उपधिआ सं॰ पुं॰ ब्राह्मणों की एक उपजाति, स्त्री॰-धाइन,-नि, वै॰-या, सं॰ उपाध्याय, ध्र॰-अवा, हा॰-यऊ।

उपर-फट्ट वि॰ व्यर्थ का, आवश्यकता से अधिक, अनिमंत्रित आया हुआ (व्यक्ति), उपर (ऊपर से) फट्ट (फटकर) आया हुआ।

**उपराब** क्रि० अ० ऊपर आना उल० तराब; (दे०) प्रे०-राइब,-उब; जा० "सुन्नहिं सात सरग उपराहीं, सुन्नहिं सातौ धरति तराहीं" (अख० ३०) सं० उपरि, अं० अप, अपर ।

**उपराजब** क्रि० स० उत्पन्न करना; जा० "प्रथम जोति बिधि तेहि कै साजी, ओरेहि प्रीति सिष्टि उपराजी" (पद्० ११); सं० उपार्ज (उप + अर्ज) ।

**उपरी** सं० स्त्री० गोबर की बनी सुखाई हुई मोटी-मोटी खपटियाँ जो जलाने के काम आती हैं। -पाथब, ऐसी-बनाना; सं० उपल ।

**उपल्ला** सं० पुं० कपड़े का वह भाग जो ऊपर हो या जिसे ऊपर होना चाहिए; इसका उलटा "तरल्ला" (दे०) है ।

**उपसहा** वि० पुं० न खाया हुआ, व्रत रखनेवाला; स्त्री०-ही, सं० उपवास ।

**उपाय** सं० पुं० तरकीब,-करब,-होब, वै०-व; सं० ।

**उपारब** क्रि० स० उखाड़ना (बाल, घास आदि), प्रे०-रवाइब,-उब; हमार काव उपारि लेहैं ? मेरा क्या कर सकेंगे ? सं० उत्पाट ।

**उपास** सं० पुं० व्रत; भोजन न करने का दिन; वि० उपसहा,-ही; सं० उपवास ।

**उप्पर** क्रि० वि० ऊपर, प्र० उपरैं,-रौं; सं० उपरि ।

**उफनब** क्रि० अ० उबाल खाना; उबलकर बर्तन के बाहर गिरने लगना ।

**उफरब** क्रि० अ० अकस्मात् मर जाना; नष्ट हो जाना; उफरि परब (मनुष्य या जानवर का) झटपट मर जाना; सं० उत्+फर (किसी फल की भाँति) टूटकर गिर जाना । शाप के रूप में प्रयुक्त; तूँ उफरि परौ, तू मर जा ।

**उबकन** सं० पुं० बर्तन में बँधी रस्सी जिससे उसे टाँगा या उठाया जाय; वै०-का,-कनी;-बान्हब, -लगाइब ।

**उबरन** सं० पुं० बचा हुआ अंश; वै० उबारन, बचाया हुआ भाग ।

**उबरब** क्रि० अ० बचना, शेष रहना, जीवित रह जाना (बीमारी अथवा युद्ध आदि के बाद); प्रे० -बारब,-राइब,-उब ।

**उबहनि** सं० स्त्री० मोटी रस्सी जिसमें बाँधकर बड़े बर्तनों से पानी खींचा जाता है; सं० उत्+वह् (ले जाना) ।

**उबांत** सं० पुं० वमन;-करब,-होब,-कराइब ।

**उबारन** सं० पुं० बचाया हुआ भाग ।

**उबारब** क्रि० स० बचाना, रक्षा करना; 'उबरब' का प्रे०रूप; प्रे०-बरवाइब ।

**उबारा** सं० पुं० बचत;-होब;-करब ।

**उबिआब** क्रि० अ० घबराना (व्यक्ति का), न लगना (मन, जिउ); ऊबना (दे० ऊबब) प्रे०-आइब,-उब,-वाइब; वै०-याब; शा० 'ओबा' (दे०) से संबद्ध (जैसे ओबा की बीमारी में मनुष्य घबराता है) ।

**उभरब** क्रि० अ० उठना; भरकर ऊपर आना (फोड़ा आदि); हिम्मत करना; जोश में आना; चलना (बात, चर्चा); प्रे०-भारब,-भरवाइब; दे० भरब । सं० उत्+भृ ।

**उमकब** क्रि० अ० जोश में आकर कुछ कहना; व्यर्थ की बात करना; प्रे०-काइब,-उब ।

**उमचब** क्रि० अ० उछलना, कूदना; ऊँची-ऊँची बातें करना; बहकना; प्रे०-चाइब,-उब ।

**उमड़ब** क्रि० अ० (तालाब, नदी आदि का) भरकर ऊपर से बहना; (हृदय का) भर आना (प्रेम, सहानुभूति आदि से); प्रे०-ड़ाइब; उ + मेड़ (मेड़ से बाहर होना); दे० मेड़, मेड़ी ।

**उमथब** क्रि० स० मथकर बाहर निकालना (पानी आदि); अ० (जिउ) मचलाना (जिउ बहुत उमथत बाय, कै करने की इच्छा हो रही है); सं० उत्+मंथ; प्रे०-थाइब,-उब ।

**उमदा** वि० पुं० बहुत अच्छा, बढ़िया; स्त्री०-दी; अर० उम्दः ।

**उमस** सं० पुं० बिना हवा की गर्मी,-होब; ऐसी गर्मी होना;-करब (चारि रोज से बहुत-किहे बाय, चार दिन से (मौसम या भगवान् ने) बड़ा उमस कर रखा है । सं० उष्म, पं० उबस; ग० उम्यस ।

**उमहब** क्रि० स० बार-बार मथना; दुहराना; अपनी ही बात कहते रहना, सं० उन्मंथ; 'थ' का 'ह' में परिवर्तन । "एकहि को उमहै गहै" (रहीम); बूड़ै बहै उमहै जहँ बाल (बेनी) ।

**उमिरि** सं० स्त्री० अवस्था; जीवन;-बीतब,-गहत (फ़ा० गश्त) होब, जीवन भर कट जाना;-गहता, बुड्ढा; क०-या; अर० उम्र; ग० उामर ।

**उमेठब** क्रि० स० पकड़कर ऐंठना; मल देना किसी अंग को); क० नैन करैं तकसीर पै उरज उमेठे जायँ; प्रे०-ठवाइब,-उब ।

**उमेद** सं० पुं० आशा;-करब,-होब,-पाय जाब (पाया जाना); फ़ा० उम्मीद, ग० उमेद ।

**उरगह** सं० पुं० मुक्ति (सूर्य अथवा चंद्रमा की);-होब, ग्रहण से मुक्ति होना, ग्रहण समाप्त होना; उ+ग्रह का विपर्यय ।

**उरझब** क्रि० अ० उलझना; फँस जाना (व्यक्ति, बात, खेल, मामला); वै०-ल-; प्रे०-झाइब,-उब; उ + सं० ऋजु (सीधे से उलटा कर देना) ।

**उरठ** वि० पुं० सूखा, नीरस;-लागब, अच्छा न लगना (आजु बहुत-लागत है, आज बहुत बुरा लग रहा है); उ + सं० रस (स का ठ में परिवर्तन) ।

**उरिन** वि० ऋण-मुक्त;-होब,-करब; ग० उरिण ।

**उरेहब** क्रि० स० खींचना (चित्र); चित्रित करना; प्रे०-हवाइब,-हाइब; जा० "मसि केसन्हि मसि भौंह उरेही" (पदु० ४६८); सं० उत्+लिख्, रेख् ।

**उर्द** सं० पुं० उड़द, माष, स्त्री०-र्दी, एक छोटे प्रकार का उड़द; वि० -हा, उड़दवाला (खेत), उड़द से

भरा, मिला अथवा जिसमें उड़द पकाया गया हो; स्त्री०-ही ।

उर्दी सं० स्त्री० वरदी;-पहिरब,-लेब,-पाइब; फा० वर्दी (घुड़सवार); शायद घुड़सवारी के लिए सारे ईरान में एक निश्चित पोशाक रही हो ।

उलइब क्रि० स० उदाहरण देना, ताना मारना, व्यंग्य रूप से कहना; उ+लय (राग) अर्थात् बुरा मानने के लिए अथवा दुःख देने के लिए किसी बात का कहना, याद दिलाना आदि; वै०-उब ।

उलका-पत्तर सं०पुं० उत्पात, गड़बड़;-करब;-नाधब, ऊधम मचाना; सं० उल्कापात, अर० उल्का (आसमानी वस्तु) ।

उलचब क्रि० स० (पानी) उलचना; एक स्थान से दूसरे स्थान पर फेंकना; प्रे०-चवाइब,-उब ।

उलझा सं० पुं० पीछे को डाला हुआ मिट्टी का ढेर;-मारब, खेत में से मेड़ की ओर मिट्टी डालकर मेड़ ऊँचा करना या खाई खोदना ।

उलझारब क्रि० स० पीछे की ओर झटक देना; ज़ोर से पीछे को धक्का देना ।

उलटब क्रि० अ० स० उलट जाना; उलट देना; -पलटब, इधर-उधर करना; प्रे०-टाइब,-टवाइब; वै०-पुलट,-सुलटब,-उल्टब इत्यादि ।

उलटवाह त्रि० उलटी (बात); जिससे सुलझी बात भी उलझ जाय; वै०-ल्ट-;उ+लट (लट से विपरीत या अलग); दे० लट,-टि, लटब ।

उलदब क्रि० स० (बर्तन में रखी चीज को) उलट देना, जैसे पानी, दूध, अनाज आदि ।

उलदब-बलदब क्रि० स० इधर से उधर करना, बदलते रहना; उलटब+बदलब (दूसरे शब्द में 'बदलब' का विपर्यय होकर 'बलदब' बन गया है ) वै०-ल्द; भा० उल्द-बल्द,-ल्दा-बल्द ।

उलदाबल्द सं० पुं० उलट-फेर, इधर-उधर;-होब, -करब । वै० उल्द-बल्द (विपर्यय क्रिया से संज्ञा में आ गया है), अल्द बल्द (अदल-बदल) ।

उलरब क्रि० अ० उछलना; प्रे०-लारब ।

उल्टबाँसी सं० स्त्री० सीधी बात न करने की आदत;-चलब,-कहब; उलटी+बाँसुरी, अर्थात् उलटी बाँसुरी (बजाना) अथवा उलटा राग ।

उल्ल वि० पु० (सवारी) जो पीछे दबी हो; उल० दबाहुर,-बाऊ (सी०) ।

।उल्ला सं० पुं० बुरे काम के लिए प्रोत्साहन;-देब, -पाइब ।

उल्लू वि० मूर्ख; सं० उलूक, ग० उल्लू ;-करब,-बनइब,-होब ।

उवब क्रि० अ० दे० उअब; दिन-उवामीं, क्रि० वि०, दिन निकलते-निकलते; सूर्योदय होते-होते ।

उवाइब क्रि० स० दे० उआइब ।

उवादा सं० पुं० वादा;-करब;-लेब, रुपया देने के लिए वचन देना और दिन निश्चित करना;-क काम, टालने का काम; कहा० गवा काम जब भवा उवादा; वै०-आदा; फ़ा० वादः ।

उवारब क्रि० स० दे० उआरब ।

उसकब क्रि० अ० उठना; हटना; ज़रा सा कष्ट करना; प्रे०-काइब,-उब; सं० शक् (सकना) ।

उसकिना सं० पुं० घास का मुट्ठा (दे०) जिससे बर्तन माजा जाय; क्रि०-इब ।

उसताद सं० पुं० गुरु; वि० चतुर; वै० वस्ताद, वहताद; अर० उस्ताद; भा०-दी, वस्ता-।

उसवाङ सं० पुं० स्वाँग; वै०-ङी,-वाँगी;-करब,-लाइब; व्यं० हँसी; वि०-ङहा,-वाली ।

उसरहा वि० पुं० ऊसरवाला; स्त्री०-ही ।

उसराव क्रि० अ० ऊसर हो जाना ।

उसार सं० पं० घर का सारा सामान; सब सामान लेकर चले जाना;-करब,-धरब,-पसार, बिदाई, भगदड़; सं० उ ! सृ (चलना) ।

उसिआर सं० पुं० कूड़ा; कूड़ा-करकट;-करब; वै०-यार ।

उसिजब क्रि० अ० उबल जाना; मु० गर्मी में परेशान हो जाना; प्रे०-जाइब,-जवाइब;-उब; सं० उष्ण अथवा सृज (तैयार होना, उबलकर) शा० सिच् से भी (भाप से भीगना) ?

उसिनब क्रि० स० उबालना (चावल, आलू आदि) प्रे०-नवाइब,-नाइब,-उब; सं० उष्ण; व्यं० जल्दी में या बुरी तरह पका देना । प० ईशवल (उबालना), ईशपवल (उबलना) ।

उसीका सं० पुं० लिखित ठेका या अन्य कार्रवाई; -लिखब,-करब; अर० वसीक़ः ।

उसीयति सं० स्त्री० उत्तराधिकार;-करब, दे देना, -अपना उत्तराधिकारी कर देना (संपत्ति पर); -नामा, कचहरी में लिखित पत्र जिसमें किसी को उत्तराधिकार दिया जाय; वै० व-; अर० वसीयत ।

उसीला सं० पं० ठौर, सिलसिला, संबंध, मित्रता; फा० वसील:; अर० में भी यह शब्द इसी अर्थ में आता है यद्यपि हिज्जे भिन्न है ।

उहाँ क्रि० वि० वहाँ; प्र०-हैं,-हवैं ।

उहै वि० सर्व० वही; सभी लिंगों में यह शब्द एक सा रहता है;-मनई,-मेहरारू; वै०-हवै, आ० वहै (केवल व्यक्तियों के लिए) ।

उहौ वि० सर्व० वह भी; आ० वऊ,-नहू (केवल व्यक्तियों के लिए); दे०वय ।

## ऊ

ऊँच वि० पुं० ऊँचा; स्त्री०-चि;-नीच, छोटा-बड़ा (व्यक्ति), उचित-अनुचित (बात, पक्ष); क्रि०उँचाब, उँचियाब, प्रे० उँचवाइब-याइब, । क्रि० वि० ऊँचें, ऊँचे स्थान पर;-सुनब, कम सुनना; सं० उच्चैः तुल०-निवास नीच करतूती । ग० उच्चु ।

ऊँट सं० पुं० लंबी गर्दन का प्रसिद्ध जानवर, स्त्री० उँटिनी; कहा० ऊँट चरावै निहुरे निहुरे, जब ऊँट ऐसे लंबे-ऊँचे जानवर को चराना है तो छिपकर चरवाहा कब तक रह सकता है? अर्थात् बड़ी-बड़ी बातें करनेवाला छिपा नहीं रह सकता । क्रि० उँटाब (उँटिनी का गर्भ धारण करना); सं० उष्ट्र ।

ऊ वि० सर्व० वह; आ० वय (दे०) ।

ऊअब क्रि० अ० उअब का प्र० रूप-जिसका प्रे० नहीं बनता ।

ऊकड़-बाकड़ सं० पुं० अंड-बंड; अपशब्द;-बक्कब, अपशब्द कहना; वै० ऊगड़-बागड़ ।

ऊकबीक वि० परेशान; घबराया;-होब ।

ऊखा-हरन सं० पुं० लंबी-चौड़ी कथा; निरर्थक बात;-गाइब, व्यर्थ की बातें कहना; बाणासुर की कन्या ऊषा के अनिरुद्ध द्वारा हर ले जाने पर कई वर्ष तक संग्राम हुआ था, उसी का उल्लेख इस शब्द में है । सं० ऊषाहरण ।

ऊखि सं०स्त्री०ईख; गन्ना; वै० उखुड़ि,-ड़ी;सं०इक्षु ।

ऊढ़ सं० पुं० बे नाम का मनुष्य (काम न करनेवाला);वि० जपाट मूर्ख; निकम्मा; स्त्री०-ढ़ि; सं० मूढ़ ।

ऊत सं० पुं० एक प्रकार का भूत; विचित्र पुरुष; असाधारण कार्य करनेवाला पुरुष; शा० भूत का बिगड़ा रूप ।

ऊद्‌म सं० पुं० 'उद्‌म' का प्र० रूप; परिश्रम; सं० उद्यम; वै०उद्दम,-द्दिम ।

ऊधम सं० पुं० उधम;-करब,-मचाइब ।

ऊधौ सं० पुं० कृष्ण के सखा उद्धव जी; वै० ऊधव; -माधौ, कोई भी; कहा० न ऊधौ क लेब न माधौ क देब, (किसी से कुछ काम नहीं ।) सं० उद्धव ।

ऊबब क्रि० अ० ऊबना, वै० उबिआब; प्रे० उबिआइब,-उब । शा० 'ओबा' से संबद्ध अर्थात् वैसे ही घबराना जैसे 'ओबा' की बीमारी में लोग घबराते हैं ।

ऊमी सं० स्त्री० गेहूँ की अधपकी बाल का आग में भूना हुआ गर्म गर्म चबेना जो प्रायः देहात में खाया जाता है । ग०-मि; सी० ऊँबी ।

ऊहि सं० स्त्री० याद, स्मृति (बचपन की);-आइब, -होब, पुरानी बचपन की बात याद रहना । सं० ऊह्य, ऊह (वितर्क) ।

## ए

एँड़ा सं० पुं० पैर या जूते का पिछला भाग;-लगाइब,-मारब,-देब, एँड़ी से किसी को ज़ोर से मारना, स्त्री०-ड़ी; ह० सी० याँ-,-ड़ी, यँड़उरा ।

ए संबो० हे, ऐ; ए भाई, ऐ भाई ।

एई वि० यही; यह शब्द दोनों ही लिंगों में एक सा प्रयुक्त होता है; वै० यई ।

एऊ वि० यह भी; दे० 'एई' ।

एक वि० एक;-जने, एक पुरुष,-जनी, एक स्त्री; वै० यक;; प्र० एकइ,-उ; सी० ह० याक ।

एकइ वि० एक ही; वै० यक्कै, यकइ,-व एक का प्र० रूप; कविता में 'एकहु' सी० ह० या-।

एकउ वि० एक भी; वै० एकौ, यक्कौ, यक्कव, याकौ ।

एकर सर्व०पुं० इसका; स्त्री०-रि; वै० एकै, यहिका ।

एका सं० स्त्री० एकता; एकत्र रहने और काम करने की शक्ति;-होब,-करब; सं० ।

एगारह वि० ग्यारह; सं० एकादश ।

एजाँ क्रि० वि० इस स्थान पर; फ़ा० ईंजा; प्र० एईंजाँ (जौ०) ।

एठाइर क्रि० वि० इस स्थान पर; वै०-हिर; इन सभी शब्दों में 'स्थ' का परिवर्तन 'ठ' में हुआ है और अंत में कहीं य और कहीं र लग गया है ।

एठाईं क्रि० वि० इसी स्थान पर; दे० ठाँव; ए+ सं० स्थान; वै० एईठाँ, एई ठायँ,-वँ; प्र० एठइनँ, -हीं; सी० ह० यहि ठउर ।

एठियाँ क्रि० वि० इसी जगह; प्र०-यैं ।

एती वि० इतना; ग० यति; सी० ह० यत्ता,-त्ती ।

एवज सं० पुं० बदला; एक व्यक्ति की जगह दूसरा; वै० य-,-जी, दे०; अर० एवज़; दे०औजी ।

एवमस्त अव्य० अच्छा, यही सही । यह पूरा वाक्य है और सं०एवमस्तु (ऐसा ही हो) का बिगड़ा रूप है जो गाँववाले बड़ी मस्ती से बोलते हैं । वह प्रायः यह समझते हैं कि इसका अर्थ है—"अच्छा

हम इसी में मस्त (प्रसन्न) रहेंगे" ( ठीक है) ।
एसवँ क्रि० वि० इसी वर्ष; प्र०-वैं०; वै० य-,श्रा- (सी० ह०) ।
एसस वि० पुं० ऐसे ऐसे (बहु वचन में); स्त्री० -सि; वै० य-(दे०) अ-; सी० ह० अइस अइस ।
एहर क्रि० वि० इधर, वै० य-; दे० यहर;-वोहर,यहर-वहर,इधर-उधर; सी०ह० इंघे उंघे, ग० यख, यत्त ।
एहीं क्रि० वि० यहीं; ग० यखी, यथ्थें ।

## ऐ

ऐआ सं० स्त्री० दे० अइया ।
ऐगुन सं० पुं० अवगुण; दे० अइगुन ।
ऐरन सं० पुं० कानों में पहनने का गहना जो नीचे लटकता है (ऊपर पहने जानेवाले का नाम 'उतरूा' है । दे०); अं० इयर-रिंग ।
ऐसन वि०, क्रि० वि० ऐसा; इस तरह; प्र०-नै,-नौ; दे० अइस ।
ऐहैं क्रि० अ० आवेंगे; एक वचन तृ० पु० में भी यह आ० रूप है । वै० अइहैं ।
ऐहै क्रि० अ० आवेगा; 'आइब' का यह रूप प्रायः मुसलमानों द्वारा बोला जाता है; नहीं तो साधारण तृतीय पु० भविष्य रूप 'आई' होता है; वै० अइ-।
ऐहों क्रि० अ० आऊँगा; मुसलिम प्रयोग; हिंदू 'आइब' और 'अइबै' ( हम ) तथा 'अइबों' एवं 'अइबूँ'(मैं) बोलते हैं । मुसलमान इसी प्रकार सब क्रियाओं के कुछ भिन्न रूप बोलते हैं । वै०-हौं
ऐहो क्रि० अ० आओगे; यह भी मुसलिम प्रयोग है; हिंदू 'अइबो'-बौ बोलते हैं; वै०-हौ, अइ-।

## ओ

ओंका-बोंका सं० पुं० एक खेल जिसमें बच्चे हाथ की मुट्ठियां बाँधकर ऊपर नीचे रखकर कहते हैं —ओंका-बोंका तीन तिलोका लैया लाती चंदन काती...।
ओंठ सं० पुं० होंठ; स्त्री० अउँठी (दे०); कहा० पहिलेह चुम्मा-टेढ़, अर्थात पहले ही चुंबन पर होंठ टेढ़ा हो गया ?
ओंड़ब क्रि० स० हाथ, पैर या थूथुन (दे०) से गोड़ना (जैसे सूअर करता है); खराब कर देना (खेत आदि को); प्रे०-ड़ाइब,-वाइब,-उब; 'गोड़ब' का दूसरा रूप; दे० गोड़ एवं गोड़ब ।
ओंड़ा सं० पुं० वह बड़ी कौड़ी जिससे खेल में 'ढाही' मारी जाती है और जिसमें प्रायः लड़के 'राँग' भरते हैं जिससे वह भारी होकर यथास्थान फेंकी जा सके । दे० ढाही तथा राँग ।
ओई वि०, सर्व० वही; वई (दे०) का प्र० रूप; पुं० एवं स्त्री० दोनों के ही लिए एक रूप है । नपुं० लिंग में 'उहवै' होता है जो निरादर में नौकरों आदि के लिए भी प्रयुक्त होता है ।
ओऊ वि० सर्व० वह भी; वऊ (दे०) का प्र० रूप जो दोनों लिंगों में एक सा रहता है; नपुं० के लिए 'उहौ' जो निरादर सूचक है । रामायण में ये दोनों शब्द 'सोई' तथा 'सोऊ' रूप में आये हैं ।
ओकर सर्व० उसका; स्त्री०-रि; प्र० ओहकर, वहकर; वहिकै; वहीकै । आ० ओनकर, वनकर, वनकैः मुस०-कै ।
ओकलाई सं० स्त्री० उलटी करने की इच्छा;-आइब; नै० वाक, वै० वकि-।
ओकाँ सर्व० उसको; वै० वहिकाँ, वहकाँ; प्र०वहीकँ; आ० वनकाँ, ओनकाँ; प्र० वनहीकँ; मुस० वहिकाँ ।
ओखरी सं० स्त्री० दे० वखरी ।
ओछर वि०पुं० नीच, ओछा; स्त्री०-रि; क्रि०-राब दे० वछराब (केवल चोट आदि के लिए) ।
ओजन सं० पुं० भार, तौल;-करब, तौलना;-पाइब, पता या सूचना पाना, जानना; फ़ा० वज़न ।
ओजह सं० पुं० कारण; अर० वजह।
ओजा सं० पुं० वटवढ़;-करब,-देब, मुजरा करना, देना; अर० वज़अ ।
ओझन क्रि० अ० फँस जाना (वि० कीचड़ या दलदल में); प्रे०-झाइब; मु० किसी हिसाब या मामले में फँसा रहना; भा०-झास (दे० वझास) ।
ओझा सं० पुं० भूत-प्रेत उतारनेवाला; मंत्र-यंत्र करनेवाला; ब्राह्मणों की एक उपजाति; सं० उपाध्याय का प्रा० रूप; भा०-ई, वझाई ।
ओझाई सं०स्त्री० भूत उतारने की क्रिया;-करब; मु०

किसी समस्या पर बहुत देर तक विचार करते रहना, पर कुछ निश्चित न कर पाना;-करब,-कराइब-होब। वै० व-।

**ओट** सं० पुं० आड़, परदा; कभी-कभी 'वोट' के अर्थ में भी प्रयुक्त;-करब,-देब; दे० 'वोट'।

**ओढ़ना** दे० वढ़ना।

**ओढ़ब** क्रि०स० ओढ़ना;-बिछाइब, (किसी बात में) लगा रहना; वही काम करना; मु०सिर पर रखना, स्वीकार कर लेना; प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब,-उब।

**ओढ़र** सं० पुं० बहाना;-पाइब,-मिलब,-करब।

**ओत** सं० स्त्री० बहाना;-करब; वि०-ती (प्रत०जौ०)

**ओद** वि० पुं० आर्द्र, नम; स्त्री०-दि; क्रि०-दाब; -होब; मु० गाँड़ि-होब; चूतर-होब, डर जाना, डरके मारे पेशाब या टट्टी करना। सं०आर्द्र।

**ओदारब** क्रि० स० दे० वदारब; सं० विद्र।

**ओदी** सं० स्त्री० क़लम (पेड़, पौदों आदि की); -लगाइब,-धरब,-लागब; सं०आर्द्र से क्योंकि गीली मिट्टी लगाकर ओदी रखी जाती है।

**ओनइब** क्रि० अ० दे० वनइब; प्रे० ओनाइब, वनाइब,-उब,-नवाइब,-उब; जा० "ओनई घटा आइ चहुँ फेरी।"

**ओनकर** सर्व० उनका; स्त्री०-रि; दे० वनकर।

**ओनान** सं० पुं० हुक्म; -देब, आज्ञा मानना। दे० वनान।

**ओन्हन** सर्व० दे० वन्हन।

**ओन्हब** क्रि० स० रस्सी से बाँधकर नीचा कर देना (छप्पर आदि); प्रे०-वाइब,-हाइब,-उब, सं०उन्नम्।

**ओफाँ** सं० पुं० लाभ, उन्नति (स्वास्थ्य में);-देब, -करब,-होब, लाभ करना (औषधि का);अर० वफ़ा (इसी अर्थ में दवा के लिए प्रयुक्त)।

**ओबरि** सं० स्त्री० सुंदर बैठक का स्थान; यह शब्द प्रायः ग्रामगीतों में ही आता है। वै०-री; उ० बड़े रे सजन कै बिटियवा दिहेउ गज ओबरि।

**ओबरी** सं०स्त्री० घर के भीतर का भाग; गीतों में प्रायः प्रयुक्त; जा० खनि गड़ ओबरी महँ लै मेला (पदु० ६४२); वै०-रि, व-।

**ओबा** सं० स्त्री० घोर संक्रामक बीमारी जैसे हैज़ा आदि; इसे दैव प्रकोप समझकर देहाती कभी-कभी 'ओबा माई' (जैसे माता, शीतला माता, काली-माई आदि) कहते हैं। उ० तुहैं ओबा (अथवा ओबा माई) लै जायँ,-धरैं अर्थात् तुम्हें ओबा हो जाय।

**ओय** संबो० बच्चों द्वारा प्रयुक्त; आपस में खिलवाड़ करने का शब्द जो कभी-कभी बड़े भी बच्चों के साथ कहते हैं; प्रायः दो बार "ओय-ओय" रूप में बोला जाता है। दे० लोय-लाय। वै०-होय।

**ओर** सं०पुं० किनारा, तरफ़; अंत, पक्ष;-होब, नाश होना;-करब, नष्ट कर देना; तु० चितै तेहि ओरा; क्रि०-राब; वै०-री; शाप—तोहार ओर होय, तेरा वंश नष्ट हो, दे० वराब।

**ओरउनी** सं० स्त्री० छत का वह किनारा जो भूमि की ओर झुका रहता है और जहाँ से वर्षा का पानी गिरता है;-चुअब, इतना पानी बरसना कि छत के किनारे से टपके; वै० वर-,ओरी; जा० मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी; कहा० ओरिक पानी बँड़ेरी जाय। दे० वरउत।

**ओरखब** क्रि० अ०, स० ध्यान देना, बात सुनना; आज्ञा मानना; वै० वर–।

**ओरमब** क्रि० अ० एक ओर लटकना; प्रे०-माइब, लटकाना, एक ओर झुकाना; वै० वर–।

**ओरवत** सं० पुं० किनारे का भाग (छप्पर या छत का); वै० वर-,-उत।

**ओरा** सं० पुं० कमी; क्रि०-ब, वराब, कम होना, समाप्त हो जाना; नष्ट हो जाना (वंश का); 'ओर' से; स्त्री० में भी बोला जाता है;-परब,-होब,-करब (बचाना); भा०-ई; प्रे०-रवाइब,-उब, वरइब, -उब।

**ओरा** सं० पुं०, ओला;-परब,-गिरब,-बरसब; अं० होर।

**ओरियाँ** सं० स्त्री० तरफ़, ओर; क० गी० में ओरा 'ओरी' और बोलचाल में 'ओरियाँ'; उ०यहू ओरियाँ बाँटव, इधर भी बाँटों। ओर (दे०) का विकृत रूप।

**ओसरि** सं० स्त्री० भैंस जो गाभिन होने लायक हो गई हो। सी० ह० वा-।

**ओसरी** सं० स्त्री० बारी;-ओसरीं, एक-एक करके; बारी-बारी से;-लगाइब,-बान्हब, बारी निश्चित कर लेना। वै० व-।

**ओसहन** सं० पुं० वह अनाज जो ओसाया जाय; (दे० वसाइब) जैसे धान, गेहूँ; वै० वस-।

**ओसार** सं० पुं० बरामदा; वै० व-,-रा, स्त्री०-री।

**ओहर** क्रि०वि० उधर; वै० व-; यहर-,इधर-उधर; प्र०-रै, उधर ही,-रौ, उधर भी। सी० ह० उंघे।

**ओहार** सं० पुं० पीनस (दे०) या पालकी के ऊपर ढकने का रंगीन कपड़ा; वै० व-; ओढ़ाइब (ढकना) से।

**ओहि** सर्व० उसको; जा० "जना न काहु, न कोइ ओहि जना।" (पदु० स्तुति खंड)।

**ओहि** वि० उसी;-ठाँ, उसी जगह; दे० ठाँव; जा० 'फिरि फिरि पानि ओहि ठाँ भरई" (पदु० ३६४); "ओहि ठाँव महिरावन मारा।" (वही)

**ओहीं** क्रि० वि० वहीं; 'वहीं' का प्र० रूप; प्र०-हूँ, वहाँ या उधर भी। दे० वहीं।

# औ

औंकी-बौंकी दे० अउँकी–।

औंगब क्रि०सं०पहियों में तेल डालकर साफ़ करना (गाड़ी); प्रे०-गाइब,-उब; वै०-ङ्ब, अउङ्ब (दे०)

औंघाई सं० स्त्री० नींद,-लागब,-आइब; क्रि० -घाब; वै० अउँ।

औंघाब क्रि० अ० सोने की इच्छा करना; सोने लगना; वै० अउँ-(दे०)।

औ संयो० और; वै० अउ, अउर, अवर।

औघड़ सं० पुं० वाममार्ग का अनुयायी;-पंथी, ऐसे पंथ का माननेवाला; भा०-ई,-पन, वै० अघ-; सं० अघोर। दे० अवघड़।

औचट सं० पुं० दे० अवचट।

औजार सं० पुं० काम करने के सामान, यंत्र आदि; अर० औज़ार।

औजी सं०स्त्री० किसी एक आदमी के स्थान में दूसरे के काम करने की पद्धति;-करब,-लेब,-देब; ऐसा काम करना; वै० अउ-, यव-; अर० एवज़; दे० एवज।

औझड़ी वि० सनकी; मौज में आकर कुछ भी कर डालनेवाला; वै० अव-, अउ-(दे०)।

औटब क्रि० स० औटना; प्रे०-टाइब,-उब,-टवाइब, -उब।

औढरदानी वि० ऐसा दानी जो चाहे कुछ दे डाले; मौज में आकर सब कुछ दान कर देने वाला; प्रायः यह वि० शिवजी के लिए आता है।

औरउ वि० पुं० और भी;-केउ, कोई दूसरा भी; स्त्री०-रिउ; वै० अव-, औरव, अउ-।

औरति सं० स्त्री० पत्नी, स्त्री; औरत;-हा, औरत के संबंध का; उ०-माजरा, स्त्री-संबंधी बात।

औरा सं० पुं० आँवला; वै० अवँरा (दे०) सं० आमलक।

औरा-गौंज जिसमें और भी बातें या वस्तुएँ मिली हों। दे० अउरागौंज; और+गौंजब (दे०)

औला-मौला वि० पुं० मस्त, उदार; मनजौकी (दे०); औला (औलिया, साधु)+मौला, मालिक; अर०।

औवल वि० पुं० प्रथम, श्रेष्ठ; स्त्री०-लि; वै० अउ-,-अल: अर० अव्वल। दे० अउअल।

औसाहिन दे० अउसाहिन।

# क

कंकड़ सं० पुं० दे० काँकर;-पत्थर; स्त्री०-ड़ी; वै०-र; मु०-पियब, सूखा तम्बाकू पीना;-स्नान, केवल शरीर पोंछने की क्रिया।

कँकरहा वि० पुं० कंकड़ वाला; कंकड़ भरा हुआ; स्त्री०-ही।

कंकाली सं० पुं० एक घुमक्कड़ जाति के लोग जो शिकार करते, भीख माँगते और गाते फिरते हैं; स्त्री०-लिनि;-यस, चिल्लानेवाला, मँगता; सं० कंकाल (शायद ये लोग किसी समय शिव के उपासक और कंकाल-पूजक थे)।

कँगना सं० पुं० कंकण; यह शब्द प्रायः गीतों में प्रयुक्त होता है। बोलचाल का रूप 'ककना' है। वै० कङ्ना, ककना; सं० कंकण।

कँगला सं० पुं० अनिमंत्रित दरिद्र लोग जो खाने के लिए विवाह अथवा तेरहवीं आदि अवसरों पर यों ही पहुँच जाते हैं। 'कंगाल' का घृ० रूप; क्रि० -ब, दरिद्र हो जाना। भा० कँगलपन, कँगलई,-लाई। वै० कङ्ला।

कंगा सं० पुं० बिना बुलाये खाने के अवसर पर पहुँच जानेवाला व्यक्ति;-खवाइब,-खाब; वै०-ङ्गा।

कंगाल वि० पुं० दरिद्र; स्त्री०-लि, भा०-गलई,-पन। वै०-ङ्गाल।

कंचन सं० पुं० सोना; वि० हरा-भरा; हरियर-, खूब फूला-फला, सुहावना;-बरसब, धनधान्य की अधिकता होना; तु० तुलसी तहाँ न जाइये कंचन बरसै मेह। सं०।

कंचित क्रि० वि० शायद; सं० कदाचित; दे० कनचित; मै०। प्र०-तै, शायद ही।

कंटोल सं० पुं० नियंत्रण; अं० कंट्रोल, वै०-टउल, -टौल।

कंठ सं० पुं० गला;-फूटब, आवाज़ निकलना;-करब, याद कर लेना, कंठस्थ करना, क्रि० वि० कंठे (दे०), कंठ में, जीभ पर; सं० कंठ।

कंठा सं० पुं० गले में पहनने का आभूषण;-स्त्री० -ठी, भगवान के स्मरणार्थ केवल एक दाने की माला जो इस बात का भी द्योतक है कि इसका धारण करनेवाला निरामिषभोजी है;-ठी बान्हब,-पहिरब, -लेब, त्याग का व्रत लेना, त्याग देना; सं० कंठ।

कंठिहा वि० पुं० कंठी धारण करनेवाला; वैष्णव; स्त्री०-ही सं० कंठ।

कंठें क्रि॰ वि॰ कंठ में, कंठ पर; यनके-सूरसती बैठी अहैं, इसकी जिह्वा पर सरस्वती बैठी है (जो कहता है सत्य हो जाता है); सं॰ कंठे।

कंडउरा सं॰ पुं॰ वह घर जिसमें कंडा रखा जाय; कंडे का भंडार;-क घर, ऐसा घर; वै॰-डौरा; कंडा + अउरा या औरा, संग्रह।

कंडा सं॰ पुं॰ गोबर के सूखे टुकड़े; उपला; स्त्री॰ -डी,ऐसा छोटा टुकड़ा;-होब; सूख जाना, ऐंठ जाना; मर जाना (ठंड के मारे); प्रायः बिच्छू को देखकर लोग "कंडा कंडा" कहने लगते हैं; विश्वास यह है कि ऐसा कहने से वह किसी को काटेगा नहीं, भाग जायगा।-परब, पेट मँ-परब, आँतों में मल सूख (कर कंडा हो) जाना,टट्टी न होना।

कंडील सं॰ पुं॰ पतले और प्रायः रंगीन काग़ज़ के बने पिंजड़े जिसमें दिया जलाकर विशेष अवसरों पर टाँगा जाता है; अं॰ कैण्डिल (मोमबत्ती); वै॰-दील,-डैल।

कंडैल सं॰ पुं॰ एक पीला और लाल फूल जिसका पेड़ बड़ा सा होता है। दे॰ कनैल, कनइल; वै॰-डइल।

कँड़जि सं॰ स्त्री॰ एक जंगली पौदा जिसकी दातून बनाते हैं और जिसमें फली लगती है। इसमें कड़वी गंध होती है, जिससे दाँत के कीड़े मरते हैं।

कँड़िआ सं॰ स्त्री॰ पत्थर या कंकड़ों की बनी भूमि में गड़ी वस्तु जिसमें मूसल से चावल, दाल आदि छाँटते (दे॰ छाँटब) या कूटते हैं। वै॰-या, काँड़ी।

कंता सं॰ पुं॰ पति; प्रेमी; कहा॰ जैसे कंता घर रहें वैसे रहे बिदेस; वै॰-था, कंत,-थ; कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं॰ कांत।

कंतूतुरि सं॰ स्त्री॰ अँधेरे में रहनेवाला मेढक की भाँति का एक रेंगनेवाला जंतु, मु॰ फूहड़ और इधर उधर बेकार घूमने वाली स्त्री या व्यक्ति।

कंथ सं॰ पुं॰ दे॰ कंता।

कंद सं॰ पुं॰ कई पौदों की प्रायः मीठी जड़ें जो फलाहार के रूप में खाई जाती हैं; वै॰-मूल।

कँपइब क्रि॰ सं॰ कँपाना; प्रे॰-पाइब,-वाइब; वै॰-उब; काँपब का प्रे॰ रूप; सं॰ कम्प।

कँपकँपी सं॰ स्त्री॰ बार बार काँपने की क्रिया;-धरब,-लागब,-होब।

कंपा सं॰ पुं॰ तिकोनी लकड़ी जिस पर बुलबुल पकड़ने के लिए लासा लगा दिया जाता है; मु॰ तरकीब;-लगाइब, उपाय करना; वै॰ काँ-;वै॰ प्र॰ -फा।

कंबर सं॰पुं॰कंबल; वै॰-मर, कम्मर, कमरा; स्त्री॰ कमरी;सं॰ कंबल; दे॰ कमरा।

कंस सं॰ पुं॰ द्वेष, ईर्ष्या;-राखब,-करब,-होब; वै॰ कुंस, खुंस, कुनुस, खु;-वि॰-हा,-ही; सी॰ मकस।

कँसहा वि॰ पुं॰ काँसा मिला हुआ; स्त्री॰-ही।

क संबो॰ क्यों, कहो; उ॰ क भैया; क रे, क्यों रे; क बाबा! कहो बाबाजी! वै॰का; (२)संबंध कारक का सूचक, जो 'कै', का अथवा 'कर' का रूप है; उ॰ रामराज क माई, रामराज की माँ (दे॰कर, कै); कभी-कभी 'को' के अर्थ में कर्म कारक का चिह्न; उ॰वन क मारब, उनको मारूँगा, जिसमें 'क' वास्तव में 'का' 'काँ' अथवा 'कह' का सूक्ष्म रूप है।

कइँची सं॰ स्त्री॰ कैंची;-काढ़ब, मीन-मेख निकालना।

कइँजड़ सं॰ पुं॰ दे॰ कनजड़।

कइअउ, वि॰ कई;-जने, कई लोग,-जनी, कितनी ही स्त्रियाँ; 'कइउ' (दे॰); का प्र॰ रूप वै॰-वो, -ओ,-औ।

कइअहा वि॰ पुं॰ काई लगा; स्त्री॰-ही।

कइआब क्रि॰ अ॰ काई (दे॰) से ढक जाना; काई लगना। 'काई' से क्रि॰; वै॰-याब।

कइउ वि॰ कई;-मनई, कई मनुष्य,-मेहरारू, कई स्त्रियाँ; प्र॰-अउ,-औ।

कइठूँ वि॰ कितने, वै॰-ठें; स्त्री॰-ठीं; कहीं-कहीं "कइठीं"; दोनों लिंगों में बोला जाता है; प्र॰-इठूँ, -अउठूँ,-ठें,-ठीं, कितने ही, कई।

कइति सं॰ स्त्री॰ एक जंगली पेड़ और उसका फल जो गोल, सफेद और पकने पर खटमिठा होता है; पुं॰-था; वै॰-थि; सं॰ कपित्थ।

कइतीं सं॰ स्त्री॰ ओर, तरफ़; यहिं-,इस तरफ़; कउनी-,किस ओर, जौ॰ प्रत॰ प्रय॰।

कइथऊ वि॰ कायस्थों का; वै॰ कय-।

कइथा सं॰ पुं॰ कइति (दे॰) का बड़ा फल और पेड़; सं॰ कपित्थ।

कइथिनि सं॰ स्त्री॰ कायस्थ की स्त्री;-क डोला, बड़े विलंब की तैयारी; शादी के समय कायस्थों के यहाँ से दुलहिन का डोला (दे॰) बहुत देर में निकलता है;-डोला करब, देर लगाना। सं॰ कायस्थ (कायथ, दे॰ + इनि)। सं॰;

कइथी सं॰ स्त्री॰ वह भाषा जिसमें कायस्थ लोग प्रायः लिखते हैं। इसमें अक्षरों के ऊपर पाई नहीं लगती और यह शीघ्रता से लिखी जाती है। वै॰ -यथी, कै-। सं॰ कायस्थ।

कइदि सं॰ स्त्री॰ क़ैद, जेल;-होब,-करब,-जाब; अर॰ क़ैद।

कइदी सं॰ पुं॰ बंदी; क़ैद गया हुआ व्यक्ति; पकड़ा हुआ पुरुष या स्त्री; अर॰ क़ैद + सं॰ इन्।

कइनारा सं॰ पुं॰ शाखा;-फूटब, शाखा निकलना; वि॰-नार,-इनियार, शाखोंवाला। स्त्री॰-नि।

कइनि सं॰ स्त्री॰ बाँस की पतली टहनी;-अस, दुबला-पतला; 'कइनारा' का स्त्री॰।

कइयाब क्रि॰ अ॰ काई से भर जाना; काई लग जाना; वै॰-आब, कै-; दे॰ काई।

कइरी वि० स्त्री० कयर रंग की; दे० कयर; कयरा का स्त्री० ।

कइस वि० पुं० कैसा ; स्त्री०-सि०; वै०-सन,-नि;-कइस,-सन,-कइसन, कैसे-कैसे, किस-किस प्रकार के ।

कइसे क्रि०वि० कैसे, किस प्रकार; प्र०-सैं;-कइसे, कैसे-कैसे;-सौं, किसी भी प्रकार; वै०-सय,-सो, -सौ ।

कइहा क्रि० वि० कब, किस दिन; वै० कहिया,-आ (दे०); प्र०-हैं,-हौं, कभी;-है न, बहुत दिन पूर्व ।

कउआ सं० पुं० कौआ;-हँकनी, कौओं को उड़ानेवाली (एक स्त्री जिसकी कथा प्राय: देहात में कही जाती है); हँकनी, हाँकनेवाली । वै० कौआ,-वा सं० काक ।

कउआकमामा सं० पुं० एक जंगली लता और उसका फल जो पकने पर लाल हो जाता है; शायद यह नाम इसलिए है कि पकने पर इसे कौए बहुत खाते हैं । सी० ह०-बोदी ।

कउआब क्रि० अ० सोते हुए व्यक्ति का बड़बड़ाना; अंडबंड या निरर्थक बातें कहना ।

कउआरी सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जो ज़हरीला होता है ।

कउआरोर सं० पुं० बड़ा शोर (जैसे कौए एकत्र होकर मचाते हैं); कौआ + रोर (पं० रोला, शोर-गुल);-मचाइब,-करब; अं० रोर, गर्जन ।

कउआली सं० स्त्री० एक प्रकार का गाना; इसके गानेवालों को कउआल कहते हैं और यह प्राय: कई गवैयों द्वारा एक साथ ज़ोर-ज़ोर से गाई जाती है । फ़ा० क़ौवाली ।

कउकिआब क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाना; बंदर की भाँति बोलना; काँवकाँव करना; क्रोध करना; वै०-उँ-,-याब ।

कउँची सं०स्त्री० पतली टहनी, विशेष कर अरहर के पेड़ की जिसका टोकरी बनाने में उपयोग करते हैं ।

कउड़ी सं० स्त्री० कौड़ी जो पहले सिक्के की भाँति चलती थी;-काम कै नाहीं, किसी भी काम का नहीं, व्यर्थ; दुइ-क, किसी महत्त्व का नहीं; दुइ-क मनई, हलका मनुष्य, क्षुद्र पुरुष; कउड़ी, थोड़ा-थोड़ा बचा करके, कठिनतापूर्वक (धन एकत्र करना);-क तीन, बेकार, निरर्थक, सस्ता, वै० कौड़ी ।

कउथाँ क्रि० वि० कौन सा बार, (जानवरों के ब्याने के लिए); स्त्री०-थीं, किस कक्षा में, कौन सी ?

कउनि वि०स्त्री० किस, कौन-सी; प्र०-उ,-नी; तुल० कउनिउँ जतनि देइ नहिं जाना ।

कउनीं क्रि० वि० किस मार्ग से, किधर, वि० किस; -ओर, किस ओर;-राहीं, किधर ?

कउने वि० पुं० किस, प्र०-उ, किसी भी ।

कउरब क्रि० स० 'खपरी' (दे०) में किसी अन्न को धीरे-धीरे भूनना (बिना घी तेल के);प्रे०-राइब,-उब,-वाइब,-उब; व्यं० जलाना, नष्ट करना, दु:ख देना ।

कउरा सं० पुं० जाड़ों में तापने के लिए जलाई आग, अलाव;-करब,-बारब,-जराइब; मु०-लागब, बहुत गर्म हो जाना (ज्वर से शरीर का);-होब, गर्म हो जाना (क्रोध से); क्रि०-रब । सी० कुइरा ।

कउल सं० पुं० प्रतिज्ञा, वादा;-करब, वादा करना; -लेब, प्रतिज्ञा ले लेना,-क मनई,-क पक्का, अपनी बात का पक्का;-करार, शर्तें; फ़ा० क़ौल ।

कउलहा वि० पुं० देखने में निकृष्ट; स्त्री०-ही ।

कउली सं० स्त्री० दोनों बाहों को दोनों ओर से फैलाकर जितना घेरा बन जाता है उसके भीतर का स्थान;-भरब, हाथों से घेरकर पकड़ लेना; बँ० कोल (अंक); दे० कोरा, कोर; पं० कोल (पास); सी० -रयाव ।

कउस वि० पुं० गोरा पर देखने में बुरा; स्त्री०-सि, -सी; वै०-हा,-ही ।

ककई सं० स्त्री० राब की तरह की पतली मीठी द्रव वस्तु जो गन्ने के रससे तैयार की जाती है ।

ककऊ सं० पुं० 'काका' का व्यं० रूप; संबो० का भी रूप यही है । 'ऊ' लगाकर अनेक संज्ञाओं से घृणात्मक, दयाप्रदर्शक, व्यंग्यात्मक आदि रूप बनते हैं; प्राय: ऐसा किसी वर्णन में ही किया जाता है ।

ककना सं० पुं० कंगन; लोहे के कोल्हू की चूड़ियाँ जो 'मूड़ी' (दे०) के मत्थे पर होती हैं । दे०कोल्हू ।

ककनिआइब क्रि० स० हाथ से बहते हुए पानी के 'बरहे' (दे० बरहा) के दोनों ओर नीचे से गीली मिट्टी निकालकर ऊपर रखते जाना जिससे किनारों से पानी बहे नहीं और बरहा पुष्ट हो जाय । वै०-उब,-या-; प्रे०-वा , ककनियाने में सहायता देना ।

ककहरा सं०पुं०'क' से 'ह' तक के अक्षर; हिंदी वर्णमाला पढ़ब,-घोखब, सारे अक्षर पढ़ना या याद करना । वै० के-,सी० ह० ओनामासीं ।

ककहा सं० पुं० कंघा; स्त्री०-ही; वै० कँ-;-करब, कंघा करना ।

ककही सं० स्त्री० एक घास जिसका फूल कंघी के आकार का होता है और जिसके पत्तों में लबाब होता है । रानी-, रानी कैकेयी; सं० कैकेयी का अपभ्रष्ट रूप ।

कक्का सं० पुं० काका, चाचा; प्राय: कविता में प्रयुक्त; उ० 'करति कक्का की सौंह'' । स्त्री० ककिआ; प्र०-क्का; । काका, काकी ।

ककिआ सं० स्त्री० काकी; यह पुकारने के ही लिए प्राय: कहा जाता है; उ० कहो ककिआ, खाब तैयार भा, कहो चाची, खाना तैयार हुआ ?-ससुर,-सासु, स्त्री या पति का काका या काकी ।

कक्कन सं० पुं० दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में फँसाकर ज़ोर से चाहे अपने ही दोनों हाथों या किसी दूसरे के हाथ को पकड़े रहने की मुद्रा; -बोहब, ऐसी मुद्रा करना; सं० कंकण (क्योंकि इस प्रकार की स्थिति में कंकण की सी शक्ल बन जाती है); दे० ककनिआइब ।

कक्कू सं०पुं० काका या 'कक्का' का प्यार वाला रूप; ऐ प्यारे काका! कभी कभी काका के लिए परोक्ष में प्रयुक्त; उ० हमरे-आजु नाहीं-आये, हमारे काकाजी आज नहीं आये।

कखउरी सं० स्त्री० काँख; वै०-खौरी, कँ-;-मु०काँख के बाल, उ०-बनाइब,-बनवाइब, काँख के बाल बनाना या बनवाना।

कखरवारि सं० स्त्री० कखौरी में होनेवाली फुड़िया।

कगार सं०पुं० नदी या पहाड़ी का किनारा जो एकदम पानी या गड्ढे के पास ही हो। वै०-रा-।

कचकच सं० पुं० चिड़ियों के बोलने का शब्द; व्यं० कटु अथवा झगड़े वाले शब्द; वि० कुछ कुछ कच्चा; मु० अनुभवहीन।

कचकचाब क्रि० अ० किसी के ऊपर रुष्ट होकर या चिल्लाकर बोलना; डाँटना; 'कचकच' से।

कचकाइब क्रि० स० डंक मार देना; मु० मारना; वै० कु-; यह शब्द प्राय: बिच्छू के लिए बच्चों के संबंध में प्रयुक्त होता है।

कचड़वा सं० पुं० लड़ाई-झगड़ा; अशांति; वै० चकड़वा।

कचड़ा सं० पुं० कूड़ा-करकट; वि० गंदा, उ०-मनई, नीच प्रकृति का पुरुष; वै०-रा; सं० कच्चर(गंदगी)।

कचनार सं० पुं० एक पेड़ और उसका फूल जिसकी तरकारी बनती है। मु०-होब, हरा भरा होना।

कचपचिआ सं० स्त्री० सूक्ष्म तारों का एक समूह जो ठीक गिने नहीं जा सकते; वै०-ची; जा० "औ सो चंद कचपची गरासा"।

कचर सं० पुं० थोड़ा अपच; अधिक खाने के पश्चात् की दशा;-धरब,-थाम्हब, अपच हो जाना।

कचरब क्रि० अ० बहुत खाना या मुफ़्त का खाना; स० खूब खाना; हाथों, पैरों या गंभीर वस्तुओं से ज़ोर-ज़ोर दबाना; मु० बहुत मारना; प्रे०-वाइब,-उब,-राइब; भा०-राई,-रवाई।

कचाब क्रि० अ० हिम्मत न करना; शब्दत: इसका अर्थ है कच्चा सिद्ध होना; प्रे०-चवाइब, हिम्मत हारने में सहायता देना।

कचाहिन सं०स्त्री० अशांति; दु:ख, निरंतर अशांति;-होब; वै०-नि,-इन,-इनि, कि-, दे० किचा-; शायद 'कीच' से (अर्थात् कीचड़ की भाँति दु:खद)।

कचिआब क्रि० अ० दे० कचाब; इन दोनों क्रियाओं का भूतवाला रूप प्राय: बोला जाता है; उ० 'कचान' अथवा 'कचिआन' बाटैं, वे हिम्मत हार गये हैं; वै०-याब, कचु-।

कचूर सं० पुं० एक पौधा जिसकी जड़ सुगंधित और दवा के काम की होती है; हरियर-, खूब हरा (जैसे कचूर का पत्ता या उसकी जड़); इसकी जड़ सूखती नहीं और वहीं लगा दी जाती है।

कचेठ वि० पुं० कुछ-कुछ पका; पकने के निकट; स्त्री०-ठि।

कचेहरी सं० स्त्री० अदालत; बैठक; सभा;-लागब,-करब,-जाब। वि०-रिहा, कचेहरी करनेवाला (व्यक्ति) या,-संबंधी (कार्य)।

कचोरा सं० पुं० कटोरा; यह उच्चारण प्राय: स्त्रियों द्वारा किया जाता है; स्त्री०-री।

कचौड़ी सं० स्त्री० दाल भरी हुई पूड़ी (दे०); वह पूड़ी जिसमें आलू या और कुछ भरा हो।

कच्च सं० पुं० गिरने या टूटने की आवाज़;-सें,-धें, ऐसी आवाज़ के साथ।

कच्च-पच्च सं० पुं० भीड़; शोरगुल; 'कच्च' और 'पच्च' की अथवा जल्दी जल्दी बच्चों के बोलने की-सी आवाज; बच्चों की बहुतायत; वै०-बच्च।

कच्चा वि० पुं० जो पका न हो (फल आदि); अपूर्ण (काम); अनुभवहीन (व्यक्ति);-पक्का, जैसा ही तैयार हो; जल्दी में तैयार की हुई वस्तु।

कच्ची वि० स्त्री० न पकी हुई; घी में न पकाई हुई (रसोई); अशिष्ट (बात); सं० पानी में पकाई रसोई; उ० हम यनके हाथे क कच्ची न खाब, मैं इसके हाथ की कच्ची (रसोई) न खाऊँगा; पूरी कचौरी आदि को पक्की कहते हैं।

कच्चै क्रि० वि० बिना पके या उबाले ही; मु०-खाब, देखकर जलना, देख न सकना; उ० मोकाँ देखिकै ऊ-खात है, मुझे देखकर वह बहुत जलता है। प्र०-कुच्चै, जैसा मिला वैसा ही।

कछनी सं० स्त्री० कमर से नीचे पहनने का कपड़ा; -काछब, ऐसा कपड़ा पहनना; तुल० "कछनी काछे" जा० (अलंकार-भूषित), पदु० १०, १२६।

कछार सं० पुं० नदी या झील का किनारा, ऐसे स्थान की भूमि या आबादी।

कछू सं० पुं० कुछ भी; वि० कुछ भी, कोई भी; 'कुछु' का प्र० रूप; प्र० कुच्छुइ, कुच्छ, कुच्छौ, वै० कुछू, कुछु।

कज सं० पुं० ऐब, दुर्गुण; वि०-जी; फ़ा०, रक्स कर-दन खुद न दानद सहन रा गोयद कजस्त।

कजकई सं० स्त्री० चालाकी, 'कज़ाक' (दे०) होने का गुण या भाव, कज्ज़ाक़ का भा०, वै०-पन,-जाकी।

कजकपन सं० पुं० 'कजाक' से भा० सं० प्राय: 'कजकई' बोलते हैं।

कजरवटा सं० पुं० काजल रखने की ढक्कनदार डिब्बी जो टाँगी जा सकती है; स्त्री०-टी, वै० रौ-,-टी; सं० कज्जल।

कजरहा वि० पुं० काजलवाला, काजल लगा हुआ, स्त्री०-ही, काजर+हा, ही; सं० कज्जल।

कजरार वि० पुं० काला, काजल की भाँति; स्त्री०-रि, काजर+आर (जैसे मटियार, बढ़वार), [illegible]।

कजरी सं० स्त्री० दीपक से निकला हुआ कालिख; कालिमा, बादलों की घनी काली घटा;-बन, एक घना जंगल जिसका वर्णन कहानियों में आता है; -लागब, काली घटा छाना; सं० कज्जल।

कजरौटा सं० पुं० कजरवटा (दे०)।

कजा सं० स्त्री० अंत, मृत्यु;-आइब,-करब, मृत्यु आना, मर जाना;-होब; अर० कज़ः, मौत ।

कजाक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि; भा० कजकई,-पन,-की; फ़ा० 'कज़ाक़' जो एक जंगली जाति का नाम है, ये बड़े चालाक तथा बेरहम होते हैं ।

कजिआयँ सं० स्त्री० झिकझिक, मीन-मेष, 'क़ाज़ी' की भाँति बाल की खाल निकालने की क्रिया, -करब,-होब, छोटी छोटी बातों पर अड़ना । वै०-यावँ, अर० 'क़ाज़ी' ।

कजों वि० दुर्गुणवाला या वाली, ऐबी; फ़ा० कज, टेढ़ापन ।

कटक सं० स्त्री० लड़ाई, सं० कटक (फ़ौज), तुल० मरतिहु बार कटक संहारा ।

कटकटाब क्रि० अ० चिल्लाना, रुष्ट होना ।

कटघरा सं० पुं० लकड़ी का घर या घेरा, थोड़ी देर के लिए बनाया हुआ घर, वै०-र; कठ-; काठ + घर ।

कटच्छर सं०पुं०कटा अक्षर (लिखावट में), अशुद्धि ।

कटनी सं० स्त्री० घूमकर चलने या भागने की क्रिया;-कटाइब, पकड़ न जाने के लिए दूसरी ओर से निकल जाना ।

कटनवार सं० पुं० कटा हुआ टुकड़ा, बचा हुआ भाग; वै०-वर ।

कटब क्रि० अ० कटना; मरना; मरब-, लड़ना, मरना,-कुटब, कट जाना, प्रे० काटब, कटाइब,-वाइब,-उब ।

कटर-कटर सं० तथा क्रि० वि० किसी कड़ी चीज़ को दाँतों के नीचे काटने या दबाने की आवाज़; ऐसी आवाज़ के साथ; उ०-चबाय लिहिस, उसने जल्दी-जल्दी चबा लिया; वै०कट्ट-कट्ट ।

कटरा सं० पुं० काठ का घेरा; मैदान; जिस मैदान से कोई चीज काटकर साफ कर दी गई हो; जंगल साफ करके अधिकार किया हुआ भाग ।

कटलहा वि० पुं० कटा हुआ; स्त्री०-ही; 'लहा' लगाकर क्रियाओं से 'भाग' का अर्थ देनेवाले शब्द बनते हैं; उ० फटलहा, फुटलहा; घृणा का भी भाव इससे प्रकट होता है ।

कटवाइब क्रि० स० कटाना; मरवा देना; काटने में सहायता देना; वै०-उब ।

कटवासी सं० स्त्री० कटे हुए बाँस का एक टुकड़ा; छोटा टुकड़ा; वै०-वाँ-; कट + बाँस । सं० वंश ।

कटहर सं० पुं० एक फल और उसका पेड़ जो गर्मियों में फलता है; पनस जिसे मालवा तथा महाराष्ट्र में फनस कहते हैं ।-हरी चंपा, एक चंपा जिसका फूल बड़ा होता है और जिसकी गंध पके कटहल की भाँति होती है ।

कटहरब क्रि० स० पीटना; खूब मारना; प्रे०-राइब, -वाइब,-उब ।

कटहा वि० पुं० काटनेवाला; स्त्री०-ही; सं० महाब्राह्मण जो मृत्यु-कार्य के दान लेता है ।

कटाँ वि० तन्मय; सब कुछ त्याग या कर देने वाला;-होब, किसी काम के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाना ।

कटाइब क्रि० स० कटाना; कटवाना; काटने के लिए आज्ञा देना, सहायता देना आदि ।

कटाई सं० स्त्री० काटने की क्रिया, मज़दूरी आदि;-करब,-लागब,-देब; प्रे०-वाई ।

कटा-कट्ट वि० बिना अन्न जल के, निराहार; क्रि० वि०बिना भोजन किये हुए, उ०कालही से-परा बाय, कल से ही निराहार पड़ा है ।

कटानि सं० स्त्री० काटने का दाँव; काटने की जगह। 'आनि' लगाकर 'दाँव' या 'समय' का निर्देश होता है, जैसे 'पहुँचानि' (दे०)=पहुँचाने या पहुँचने का अवसर, समय अथवा मौक़ा ।

कटार वि०पुं० काँटेवाला; स्त्री०-रि; वै० कँ-, सं० कंटक; छूरी-मारब,-मारि लेब, आत्मघात करना ।

कटारी सं० स्त्री० एक हथियार ।

कटासि सं० स्त्री० काटने की इच्छा; 'सि' लगाकर इच्छा प्रगट की जाती है; उ० हगासि, लिखासि, पियासि ।

कटिआ सं० स्त्री० (फसल के) काटने का मौसम, काटने की क्रिया;-परब,-होब,-करब; वै०-या;-बिनिया, काटकर तथा बीनकर (अनाज बटोरना) ।

कटील वि० पुं० काँटेवाला; स्त्री०-लि; अपत कँटीली डार (बिहारी); तेज धारवाला, काटनेवाला;-आँखि, पैनी आँख, काँटे की भाँति चुभनेवाली आँख ।

कटुआ वि० पुं०जिसके किनारे कटे हुए हों (गहना); स्त्री०-ई ।

कटुक वि० पुं० ज़रा सा भी अप्रिय;-बचन, तनिक अप्रिय शब्द; यह वि० केवल बात या शब्द के ही लिए आता है, उ०मैं तो वनकों-बचन नाहीं कह्यों, मैंने तो उन्हें कुछ भी अप्रिय नहीं कहा ।

कटूसी सं० स्त्री० बचाने की कोशिश; कंजूसी; -करब, दबा लेना, आवश्यकता से अधिक बचा लेना; काट लेना (मजदूरी, इनाम आदि); वि० कटुसिहा,-ही ।

कटेरा सं० पुं० काटनेवाला ।

कटैयाँ सं० पुं० स्त्री० काटने की इच्छा रखनेवाला या वाली; वै०-वैयाँ,-वइयाँ आदि; यह शब्द क्रिया के साथ ही प्रयुक्त होता है; उ०-चाहो,-होब,-चाहिन,-रहिन,-रहीं, काटनेवाले हो, काटना चाहा, काटनेवाले थे,-थी इत्यादि ।

कटैया सं० पुं० काटनेवाला; वै०-वैया,-इया,-वइया,-आ ।

कटोरा सं० पुं० कटोरा; स्त्री०-री,-रिया,-आ;-यस आँखि; कटोरा जैसी (बड़ी चौड़ी) आँखें;-यस मुँह बायें, कटोरे की तरह मुँह फैलाये ।

कटौती, सं० स्त्री० कमी; कम करने की बात; वै०-उती;-होब,-करब, कम होना, कम कर देना(वेतन, मज़दूरी अथवा मज़दूरों की संख्या) ।

कट्ट-कट्ट क्रि० वि० दे० कटर-कटर।
कट्ट-कुट्ट सं० पुं० काट-कूट (प्रायः लिखने में), इसी से क्रि० 'काटब-कूटब' भी बनती है।
कट्टू सं० पुं० (काल्पनिक) जन्तु जो काट ले; बच्चों को डराने के लिए प्रायः यह शब्द प्रयुक्त होता है, वि० भयावह; डरावना, [दोनों ही लिंगों में यह शब्द एक सा रहता है], वै० काटू।
कट्ठा सं० पुं० भूमि के माप का एक अंश जो ५ हाथ होता है; मु०-देब, हटना, चलना, स्थान छोड़ना (अर्थात् एक कट्ठा भी चलना), प्रायः यह मु० नकार के साथ बोलते हैं, वै०-न देहैं, वह चलेंगे ही नहीं।
कठई सं० स्त्री० मिट्टी का बरतन जिसमें गाय या भैंस दुही जाती है; यह नाम शायद इससे पड़ा हो कि प्रारंभ में यह बर्तन संभवतः काठ का रहता होगा। काठ+ई ? वै० (ल० सी० इ० आदि में) 'कछुई'; 'कच्छप' से ? सं० काष्ठ।
कठउता सं० पुं० काठ का बना थाल; स्त्री०-ती, कठवति वै०-ठौता,-ती।
कठऊ वि० काठ का बना; यह शब्द दोनों लिंगों में इसी प्रकार रहता है।-कोल्हू, लकड़ी का कोल्हू (जो पहले गन्ना पेरने के लिए प्रयुक्त होता था)।
कठकरेजी वि० बड़े दिलवाला; काठ+करेज (जिसका कलेजा लकड़ी का हो); दोनों लिंगों में यही रूप रहता है; भा० का रूप भी यही है। -करब, हिम्मत करना; सं० काष्ठ।
कठघर सं० पुं० दे० कटघरा; वै०-रा; काठ+घर (सं० काष्ठ+गृह)।
कठपुतरी सं० स्त्री० कठपुतली;-क नाचि, काठ की बनी पुतलियों का नाच;-होब, खूब काम करते रहना; सं० काष्ठ+पुत्तलिका।
कठबपवा सं० पुं० वह बाप जिसने किसी की विधवा माँ से ब्याह किया हो; प्रायः ऐसे ब्याह नीचे की जातियों में होते हैं और ऐसी अवस्था में पहले पति से उत्पन्न बच्चे माँ के साथ अपने 'कठबपवा' के घर आ जाते हैं। काठ+बाप (काठ का बाप, पिता जिसमें सच्चे पिता की भावनाएँ न हों); सं० काष्ठ।
कठमचवा सं० पुं०दे०खटमचवा; सं०काष्ठ+मंच।
कठाइन वि० जिसमें काठ की सी गंध या स्वाद हो; वै०-हिन;-आइब,-लागब। काठ+आइन (हिन); सं० काष्ठ।
कठिन वि० जो किसी की बात न समझे या न माने; मुश्किल; भा०-ई,-ता; सं०।
कठुआब क्रि० अ० (मिट्टी या दूसरे गीले पदार्थ का) कड़ा हो जाना; 'काठ' से (लकड़ी की भाँति कड़ा होना); सं० काष्ठ।
कठुला सं० पुं० कंठ में पहना जानेवाला गहना; सं० कंठ।
कठेठ वि० पुं० कड़ा; स्त्री०-ठि; सं० काष्ठ (लकड़ी की तरह);-होब,-करब (प्रायः गीली वस्तुओं का);
कठोर वि० पुं० कड़ा (शब्द, पुरुष); स्त्री०-रि; भा० -ई,-ता; सं०।
कठोली सं० स्त्री० लकड़ी की कटोरी; मु०-गढ़ब, देर तक निरर्थक बातें करते रहना; सं० 'काष्ठ'।
कठौता सं० पुं०काठ का बड़ा थाल जिसकी बारियाँ ऊँची होती हैं जिससे इसमें अधिक वस्तु रखी जा सके। सं० 'काष्ठ' स्त्री०-ती, कठवति। तुल० कठौता भरि लै आवा; वै०-उता (दे०)।
कठौवा वि० पुं० कठऊ (दे०); वै०-आ।
कड़कड़ाब क्रि० अ० 'कड़कड़' का शब्द करना; ज़ोर-ज़ोर से बोलना।
कड़कड़ाब क्रि० अ० घबराना; घबराकर चिल्लाना; प्रे०-ड़ाइब,-उब; भा० बड़ी;-बड़ी होब,-परब, घबराहट हो जाना।
कड़वाइब क्रि० स० काँड़ने (दे० काँड़ब) में सहायता करना, पिटवाना; भा०-ई; वै० कँड़ाइब,-उब।
कड़ा सं० पुं० पैर में पहनने का गहना;-छड़ा, दो चाँदी के गहने जो एक दूसरे के ऊपर पाँव में स्त्रियाँ पहनती हैं।
कड़ा वि० कठिन, कठोर, बहुत अधिक (दुःख या बीमारी);-होब; भा० -ई; स्त्री०-ड़ी; असंभव, उ०वनकै बचब-है, उसका बचना असंभव है।
कड़ाई सं० स्त्री० कड़ा होने का भाव; सख्ती;-करब,-होब।
कड़ाकुलि सं० स्त्री० एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया जो जाड़ों में मैदान की ओर सैकड़ों की संख्या में एकत्र उड़ती और बोलती हुई आती हैं। यह बहुत ऊँची उड़ती हैं और ज़ोर-ज़ोर से बोलती हैं; इसी से,-यस, शोर करनेवाला, मुहा० है।
कड़ाही सं० स्त्री० दे० कराही।
कड़ी सं० स्त्री० ज़ंजीर का एक भाग; लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो मकान में लगता है; गाने का एक भाग; लकड़ीवाले अर्थ में वै०-री।
कड़ु वि० कड़वा या कडुई; वै०करू; सं० कटु।
कड़े-कड़े ध्व० कौवों को उड़ाने के लिए यह शब्द कहा जाता है; जैसे कुत्तों को बुलाने के लिए 'तूतू' (दे०) इत्यादि।
कड़ौं-कड़ौं ध्व०ज़ोर-ज़ोर से बोले या कर्णकटु शब्द; चिल्लाहट;-करब, शोर करना; शा० 'कर्ण' से संबद्ध (अर्थात् ऐसे शब्द जो कानों पर आक्रमण करें)।
कढ़ब क्रि० अ० निकलना; प्रे० काढ़ब, कढ़ाइब,-वाइब,-उब; पं०।
कढ़ा सं० पुं० काढ़ा (दे०);-बनइब,-पियब।
कढ़ाइब क्रि० स० निकलवाना; ज़बरदस्ती करके निकालना; ज़ोर से निकालना; निकालने में सहा-

यता करना (कड़ा, पहना गहना आदि)। वै०-उब; काढ़ा।

कढ़ाई सं० स्त्री० कड़ाही; दे० कराही।

कढ़ी सं० स्त्री० बेसन या अन्य आटे की बनी भोजन की सामग्री, जिसमें मसाले, गुड़ आदि पड़ते हैं और जो रोटी तथा भात दोनों के साथ खाई जाती है। महाराष्ट्रवाले इसमें और दाल में भी गुड़ डालते हैं।-चट्ट, मराठों का एक घृणात्मक नाम क्योंकि वे कढ़ी बहुत खाते हैं।

कढ़ुआ सं० पुं० ज़बरदस्ती किसी की कन्या का डोला (दे०) निकलवा कर उससे ब्याह कर लेने का रिवाज;-कढ़ाइब, ऐसा ब्याह कर लेना; 'काढ़ब' (निकालना) से। वि० पुं० निकाला हुआ; फेंका हुआ; घर से बाहर किया हुआ; निरर्थक; स्त्री० -ई।

कढ़ैआ सं० पुं० निकालनेवाला; नक्काशी करनेवाला, काढ़नेवाला या वाली। प्रे० कढ़वैआ; वै०-या।

कणजि सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसकी छाल कड़वी होती है।

कत वि० पुं० कितने, कितना; वै०-रा,-तिक,-ना; स्त्री०-ति, प्र०-त्ती, केत्ती; कविता में 'केते' 'केती' प्रयुक्त होता है। प्र०-त्ता, केत्ता।

कतना वि० कितना, स्त्री०-नी; वै० के-,-रा,-री।

कतरन सं० पुं० कपड़े से कटे हुए छोटे-छोटे टुकड़े।

कतरनी सं० स्त्री० कैंची;-यस० जल्दी-जल्दी (जीभ चलना)।

कतरब क्रि० स० कतर लेना, काट लेना; मु० बात बनाना; वै० कु-, कुतु-(धीरे से); प्रे०-राइब,-वाइब,-उब; भा० -राई,-वाई।

कतर-ब्योंत सं० पुं० कठिनतापूर्वक प्रबन्ध; किसी प्रकार प्रबंध;-करब, किसी प्रकार पूरा करना या जुटाना; दे० ब्योंत, बेवँत; कतर (काट कूट) + ब्योंत (प्रबंध)।

कतराब क्रि० अ० किनारे चला जाना, अलग हो जाना; घबराना, डरना (किसी बात या व्यक्ति से)।

कतल सं० पुं० हत्या;-करब,-होब;-क राति, महत्त्वपूर्ण अवसर (मुहर्रम की कथा से); फ़ा० क़त्ल।

कतहुँ क्रि० वि० कहीं; किसी स्थान पर; सं० कुत्र; वै०-तौं; प्र०-हूँ,-तौं,-त्त-; चाहे-, चाहे कहीं;-न, कहीं नहीं।

कतवार सं० पुं० कूड़ा-करकट; खर-(दे० खर); वै० कताउर।

कताइब क्रि० स० कतवाना, कातने में मदद करना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब; भा० -ई,-वाई; कताई-बिनाई।

कताई सं० स्त्री० कातने की क्रिया, मज़दूरी आदि; -बिनाई, कातने और बुनने की कला।

कतिक वि० कितना, कितने, (यह शब्द संख्या तथा तौल आदि सब के लिए प्रयुक्त होता है)।

कतिकहा वि० कातिकवाला; कातिक में मस्त (कुत्ता); सं० कार्तिक।

कतौं क्रि० वि० कहीं: प्र०-त्तौं, कहीं भी; वै०-तहुँ,-त्तहुँ,-तहूँ; चाहे कहीं; चाहे जहाँ;-न, कहीं नहीं।

कतो अव्य० या तो; वै० कि-।

कत्तई वि० निश्चित, पक्का; क्रि० वि० निश्चयपूर्वक (कहना, करना आदि); अर० क़तई।

कत्ती सं० स्त्री० एक प्रकार की बधी-बँधाई पगड़ी जिसे सिर पर हाथ से फिर बाँधने की आवश्यकता नहीं पड़ती।-दार, कत्ती समेत,-वाला।

कत्थू वि० किसी भी: प्राय: यह शब्द निरर्थकता प्रगट करने के लिए प्रयुक्त होता है;-लायक नाहीं, किसी काम का नहीं;-काम कै न, निरर्थक।

कथक सं० पुं० नाचने और गाने का पेशा करनेवाला पुरुष; वै०-थि-,-त्थ-; सं० कथा (कथा गाकर सुनाने और नाटक करनेवाला); भा० -थिकई, कत्थकपन,-ई।

कथरा सं० पुं० बड़ी मोटी कथरी (दे०); घृ० प्रयोग।

कथरी सं० स्त्री० फटी हुई बिछाने की (कई कपड़ों को एकत्र सीकर बनाई) वस्तु; पके कटहल का छिलका जिसका भीतरी भाग ग़रीब लोग खाते हैं;-गुदरी, फटा पुराना कपड़ा; प्र० कत्थर-गुद्दर; सं० कन्था; कहा० कत्थर गुद्दर सोवैं मरजादू बइठि रोवैं।

कथहा वि० कथा कहनेवाला (पंडित या ब्राह्मण); घृ० क्योंकि यह उन्हीं ब्राह्मणों के लिए आता है जो कथा कहकर ही अपना निर्वाह करते हैं।

कथा सं० स्त्री० सत्यनारायण की कथा; श्रीमद्भागवत की कथा; प्रथम अर्थ में पुंल्लिङ्ग भी बोलते हैं; पर दूसरे अर्थ में सदा स्त्री०;-कहब,-बैठब,-कहाइब,-बैठाइब, ऐसी कथा होना, या इसका कराना; -वार्ता, धार्मिक सम्मेलन या सत्संग; सं०।

कथिक दे० कथक, प्र०-त्थि।

कदम सं० पुं० पग, पैर, चरण;-उठाइब, चलने का कष्ट करना,-धरब, चलना, यक-, चारि-, थोड़ी दूर, फा० क़दम।

कदम सं० पुं० एक पेड़ और उसका फूल जो गोल पीले रंग का होता है और फल में परिवर्तित हो जाता है; साहित्य तथा गीतों में इसका विशेष वर्णन है, प्रायः कृष्ण संबंधी कथाओं में; सं० कदंब; वै०-म्ि, कभी-कभी स्त्री० में भी बोलते हैं, जैसे-मियाँ के तरें, कदम के नीचे।

कदर सं० स्त्री० मूल्य, आदर;-करब,-होब, बे-, नकद्दर, निकृष्ट (वि०), वै०-रि, वि०-री, कद्र करनेवाला; फा० क़द्र।

कदरई सं० स्त्री० दे० कादर, वै०-पन।

कदराब क्रि० अ० हिम्मत हारना, डरपोक हो

जाना, किसी काम में हिचक करना, कार्य प्रारंभ करके पीछे हटना; कादर (दे०) से।
कधवँ क्रि० वि० कौन जाने, शायद; वै०-धौं, -दहुँ,-धौं।
कन सं० पुं० कण; चावल, गेहूँ आदि अन्न के छोटे टुकड़े, अन्न का मैल;-खूदी, अन्न का फेंक देनेवाला भाग, निकृष्ट भाग या भोजन, वै०कना, स्त्री०-नी, सं० कण।
कनइल सं० पुं० एक फूल जो लाल तथा पीला होता है और जिसका पेड़ बड़ा होता है; कनेर, जिसका दूध आक के दूध की भाँति विषैला होता है। सं० कणेरु।
कनई सं० स्त्री० कीचड़,-होब, ठंडा हो जाना।
कनउज सं० पुं० कन्नौज जिसका आल्हा (दे०) में बहुत वर्णन है;-जिआ, कन्नौज का,-बाभन, कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
कनऊ सं० पुं० काना व्यक्ति, 'काना' या 'कनवा' का आदरप्रदर्शक या व्यंग्यात्मक रूप, स्त्री० कानौ।
कनखिआ सं० पुं० आँख का कोना, क्रि० वि० तिरछे (देखना, ताकना), वै०-आँ,-या, कोन+आँखि (आँख का कोना);-ताकब,-देखब;-अन, चुपके से या जल्दी (देखना)।
कन्चन वि०हरा-भरा,-होब; हरिअर-, खूब हरा-भरा (पेड़, बाग आदि); सोना,- बरसब, संपत्ति होना, सं० कंचन।
कन्चित क्रि० वि० शायद, सं० कदाचित् से।
कनचोदा वि० पुं० बदमाश, हरामी; कन (काना)+चोदा=काने (पिता) का जन्माया हुआ, स्त्री०-दी।
कन्छट सं० पुं० स्त्रियों का कोई गुप्तांग; यह शब्द केवल गाली में प्रयुक्त होता है; उ० तोरे-में, तेरे···, जैसे "तोरी गाँड़ी में···।"
कनछेदन सं० पुं० कान छेदने का संस्कार; वै०-नि, स्त्री०।
कनटोप सं० पुं० जाड़ों में पहनने की टोपी जिससे कान ढके रहते हैं; कन (कान)+टोप (टोपी) या तोप (दे० तोपब, ढकना); वै०-पा।
कनटाइन सं० स्त्री० झगड़ालू स्त्री; वि० लड़ाका (स्त्री); वै०-नि।
कनपटी सं० स्त्री० कान के पास का मत्थे का भाग; वै०-टा; कन (कान)+पटी (पटी=टुकड़ा)।
कँनफटा सं० पुं० वह साधू जिसके कान फाड़ दिये गये हों; ऐसे साधू कुछ कबीरपंथी और कुछ गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं।
कनफोर सं० पुं० ज़ोर का कर्णकटु शब्द जो बराबर होता रहे;-करब,-होब; कन (कान)+फोर फोरब=फोड़ना; दे० फोरब।
कनबोजा सं० पुं० कान के दोनों किनारे का भाग कान+बोजा।
कनमइलिया सं० पुं० कान से मैल निकालनेवाला व्यक्ति, जिसका यही पेशा होता है। ऐसे लोग अपने औज़ार आदि लिये घूमा करते हैं। कन (कान)+मइलि (दे०), मैल।
कनमनाब क्रि० अ० सोते से जग जाना; बुरा मानना; बड़बड़ाना; किसी बात को बुरा मानकर कुछ कहना या दौड़-धूप करना। कन (कान)+मन; कान से सुनकर मन में (किसी बात को) लाना।
कनरब क्रि० अ० किनारे से कटता जाना (फल, पत्ता अथवा पेड़, पशु या व्यक्ति का अंग); किनारा (दे०) से, यद्यपि 'किनराब' (दे०) एक दूसरी क्रिया भी है।
कँनवा सं० पुं० काना पुरुष; यह घृ० रूप है और आदरप्रदर्शक रूप है 'कनऊ'। सं० काणः; यह शब्द वि० के रूप में भी प्रयुक्त होता है।
कनाब क्रि० अ० काना हो जाना; काने की भाँति व्यवहार करना; न देख सकना। सं०काणः (व्यं०)।
कनिआ सं० स्त्री० गोद; वै०-या,-आँ;-म, गोद में;-लेब, गोद में लेना; कभी कभी यह शब्द पुं० में भी बोला जाता है।
कनिआर वि० पुं० योग्य; दूसरों के लिए कुछ करनेवाला; स्त्री०-रि; वै०-न्हि-;-होब; सं० स्कंध (कंधेवाला); संस्कृत में पुरुषों के बड़े कंधों को समर्थता का सूचक कहा गया है-"व्यूढोरस्कः वृषस्कंधः शालप्रांशुः महाभुजः" (कालिदास); अथवा 'कनी' (दे०) से, जिसमें बहुमूल्य टुकड़े हों या होसकें।
कनी सं० स्त्री० छोटा टुकड़ा; प्रायः हीरे या अन्य बहुमूल्य रत्नों के टुकड़ों के लिए प्रयुक्त।
कनुआब क्रि० अ० गंदा हो जाना (पानी का); बरसात के बाद अथवा सफाई होने पर (कुएँ या तालाब के पानी का) गदला रहना; प्रे०-इब, मु० जिउ-, तबियत हट जाना, ऊब जाना।
कनुई वि० स्त्री० दे० कानी (उँगली, स्त्री)।
कनेठी सं० स्त्री० कान पकड़ने की क्रिया, या दंड;-लगाइब,-देब, कान एंठना; इस प्रकार दंड देना; सं० कर्ण+एंठब (दे०)
कनौजिया वि० पुं० कन्नौज का; दे० कनउज; अवध की कई जातियों में कनौजिया तथा अन्यान्य भेद होते हैं; सं० कान्यकुब्ज।
कन्जड़ सं० पुं० एक नीच जाति जिसके पुरुष गीदड़ आदि का शिकार करते हैं। ये लोग बहुत लड़ाके और प्रायः जंगली होते हैं। इसी से शोरगुल एवं झगड़ों के लिए इनका उदाहरण दिया जाता है; का-यस लड़त हौ, क्या कंजड़ों की भाँति लड़ते हो?
कन्जहा वि० पुं० जिसकी आँखें कंजे (दे०-जा) की भाँति भूरी हों; स्त्री०-ही; अ०-हऊ, घृ०-हवा,-हिया; वै०-जा,-जी; कहा० करिया बाभन गोरिया सूद, कंजा तुरुक भुवर रजपूत।

कन्ज़ा सं० पुं० एक कटीला जंगली पेड़ जिसमें काँटे होते हैं। इसकी झाड़ी होती है और इसके फल भूरे रंग के होते हैं जो कई औषधियों में काम आते हैं।

कन्ना वि० पुं० कीड़ा लगा हुआ (फल, गन्ना आदि) स्त्री०-न्नी; क्रि०-ब, कीड़े से खराब हो जाना।

कन्नादान सं० पुं० कन्यादान;-देब,-लेब,-होब।

कन्नी सं० स्त्री० औज़ार जिससे राज काम करते हैं;-बँसुली, दोनों औज़ार।

कन्हावरि सं० स्त्री० वह कपड़ा जो वर की ओर से वधू के भाई (प्रायः छोटे) के लिए ब्याह में आता है; इसी को कंधे पर रखकर वह विवाह संस्कार में भाग लेता है; सं० स्कंध (कन्धे पर रखने के कारण)।

कन्हैया सं० पुं० श्रीकृष्ण जी;-होब,-बनब मौज करना; सं०।

कपछई सं० स्त्री० विपत्ति; कष्ट;-करब,-होब; सं० कफक्षय (जो रोगों का राजा कहा जाता है); वै०-पु,-फ-।

कपट सं० पुं० धोखा, छल,-करब;-राखब; छल-; वि०-टी, कपट करनेवाला, सं०; मु० काट-कपट, अस्पष्ट व्यवहार।

कपटब क्रि० स० काट लेना; बचा लेना; काटब-चुराना; वै० कुपु-; प्रे०-टवाइब, कुपु-।

कपड़-छान सं० पुं० कपड़े से छानने की क्रिया या नियम;-करब, जैसे दवा आदि को करते हैं; कपड़ (कपड़ा) + छान (दे० छानब)।

कपड़ा सं० पुं० वस्त्र; लत्ता;-से रहब,-होब, ऋतुमती होना;-ही, कपड़े की दूकान या व्यापार;-ड़हा, कपड़ेवाला;-ड़ही करब, कपड़े की दूकान करना; कपड़ाही और कपड़ही दोनों रूप प्रचलित हैं।

कपार सं० पुं० सिर; तोहार-, तुम्हारा सिर (अस्वीकृति प्रकट करने का प्रबल रूप) अर्थात् तुम मूर्ख हो, तुम्हारी बात ग़लत है। सं० कपाल, कर्पर;-फोरब,-पीटब,-खाब, परेशान करना।

कपास सं० स्त्री० रुई; सं० कार्पास।

कपिला वि० स्त्री० काले और लाल के बीच के रंग की; प्रायः गाय के लिए ही यह वि० आता है; सं०।

कपूत सं० पुं० नालायक पुत्र; योग्य पिता का अयोग्य पुत्र; सं० कुपुत्र;-होब,-जनमब,-जनमाइब।

कपूर सं० पुं० कपूर; सं० कर्पूर।

कपूरा सं० पुं० बकरे का अंडकोष; स्त्री०-री; एक सुगंधमय जंगली बूटी;-जमाइब।

कपूरी सं० स्त्री० एक बूटी जिसके जड़ में कपूर सी सुगंध होती है। इसकी पत्ती साँप की दवा के काम आती है।

कफ सं० पुं० खाँसने पर भीतर से निकलनेवाला सफेद मैल;-करब;-धरब,-होब; सं०।

कब क्रि० वि० किस समय, प्र०-ब्बै,-ब्बौं,-हुँ,-हूँ,-बों;-ब्बै न, बहुत देर पहले;-ब्बौं त, कभी तो;-ब्बौं न, कभी नहीं।

कब न क्रि० वि० बहुत पहले; प्र० कब्बै न, कबय न; कब्बौं न (कभी नहीं)।

कबरा वि० पुं० काले और लाल रंग का; स्त्री० -री; चित-, काले और सफेद धब्बों वाला;-री; वै० काबर, चित-।

कबलै क्रि० वि० कब तक; वै०-लौं।

कवाइति सं० स्त्री० नियमानुकूल चलने, उठने बैठने आदि की क्रिया,-करब,-होब,-लेब,-देब; मु० नियमों का अत्यधिक पालन; कष्ट; वै०-वा-; अर० क़वायद (क़ायदः का बहुवचन)।

कबाब सं० पुं० भुना हुआ मांस का छोटा टुकड़ा जिसमें मसाला मिला होता है और जिसे लोहे के सिकचे पर रखकर सेंकते हैं;-होब, भुन जाना, बहुत अप्रसन्न होना; भीतर ही भीतर रुष्ट होना। अर०।

कबाला सं० पुं० लिखित बिक्री-पत्र;-करब,-लिखब, -होब; अर० क़बाल:।

कबाहति सं० स्त्री० परेशानी; झंझट;-करब,-होब; वै०-ट,-टि।

कबिताई सं० स्त्री० कविता;-करब; मु० तरकीब, प्रयत्न;-लागब,-न लागब, तरकीब सफल होना या न होना। उ० "कवि कहँ देन न चहै बिदाई, पूछै केसव की कविताई।"

कबित्त सं० पुं० छंद का एक भेद जिसे प्रायः पढ़े-लिखे देहाती भी याद रखते और गाते हैं। सं० कवित्व।

कबिरा सं० पुं० कबीर का नाम जो प्रायः इनकी बानियों में आया है। उ० "खरी-खरी कबिरा कही और कह्यो सब झूठ।"

कबिराज सं० पुं० अच्छा कवि; कविता सुना कर भीख माँगनेवालों की एक मुसमान जाति का व्यक्ति।

कबीं वि० राज़ी;-होब,-रहब,-करब।

कबीर सं० स्त्री० एक प्रकार का गीत जो देहाती फागुन में गाया करते हैं और जिसमें प्रायः गाली-गलौज होता है। इसके अंत में "कबीर अररर..." होता है; वै०-रि;-बोलब,-गाइब, ऐसा गीत गाना। अर० कबीर (बड़ा)।

कबीसन सं० पुं० कमीशन;-देब,-लेब,-खाब; अं० कमिशन।

कबुज सं० पुं० अपच; कब्ज़;-होब,-धरब,-थाम्हब -करब; वि०-जी,-जिहा, जिसे कब्ज़ हो, अपच करने-वाला (पदार्थ); अर० क़ब्ज़।

कबुजा सं० पुं० क़ब्जा, अधिकार; यह शब्द दर-वाज़े में लगनेवाले उस लोहे के पेंच के लिए भी आता है जो लकड़ी में ठोंक दिया जाता है;-लगाइब; दे० क़ब्जा।

कबुर सं० स्त्री० कब्र; वै०-रि; अर० क़ब्र।

कबुलवाइब क्रि० स० स्वीकार कराना,कबूल कराना "कबूलब" से प्रे०; वै०-उब,-लाइब,-लाउब ।
कबुली सं० स्त्री० एक प्रकार की सफेद मटर; दे० काबुली; इस प्रकार की मटर को "कबुली केराव" भी कहते हैं । दे० केराव ।
कबूतर सं० पुं० प्रसिद्ध चिड़िया; फ़ा० ।
कबूल वि० स्वीकृत;-करब,-होब; फ़ा० मक़बूल; क्रि०-ब, मानना, अर० कबूल ।
कबेलू सं० पुं० एक रंग; खपरैल ।
कबोधनि सं० स्त्री० व्यर्थ की बात;-गढ़ब,-करब, बकवास करना; सं० बोधय (बतलाना, वर्णन करना) ।
कबों क्रि० वि० कभी; प्र०-ब्बौं; दे० कब; वै०-बौं ।
कब्जा सं० पुं० अधिकार;-करब,-होब,-लेब, -पाइब,-देब; वै० कब-,-बुजा;-दखल, पूरा अधिकार, वास्तविक अधिकार, दे०-बुजा ।
कम वि० थोड़ा; अधिक नहीं यह शब्द संख्या तथा परिमाणवाचक दोनों है; भा०-मी,-ती फ़ा० कम;-तर, कुछ कम ।
कमकर सं० पुं० नीची जाति का व्यक्ति; वि० नीच जिसके माँ बाप का ठीक पता न हो; शूद्र; कम (काम)+कर (करनेवाला) अर्थात् खेती बाड़ी या मज़दूरी का काम करनेवाला । भा०-ई ।
कमगर वि० पुं० काम का; लाभदायक; स्त्री०-रि; फ़ा० 'कारगर' का अनुकरण करके यह शब्द बना लिया गया है । दे० कामगीर ।
कमजोर वि० पुं० निर्बल; वै०-इ; भा० -री; पं० नाजोड़,-ड़ी, फ़ा० कमज़ोर ।
कमती सं० स्त्री० कमी, आवश्यकता, टोटा; वि०, कुछ कम; फ़ा० कम ।
कमबुझ वि० पुं० कम बुद्धिवाला; बेसमझ; स्त्री०-झि; कम+बूझ (बुद्धि का बूझ हो गया है); सं० का ध प्राकृत में झ हो जाता है । भा०-ई, बुद्धि-हीनता ।
कमरा सं० पुं० कंबल; स्त्री०-री, छोटा कंबल; वै० कम्मर; कहा० कम्मर पर जब परै पिछौरी जाइ बेचारा करै चिरौरी । (दे०)
कमवाइब क्रि० स० काम लेना; मज़दूरी कराना; भा० -ई; वै०-उब; सं० कर्म ।
कमहगि सं० स्त्री० काम करने की अवधि; मज़दूरी; परिश्रम;-करब,-होब; सं० कर्म ।
कमाई सं० स्त्री० उत्पन्न की हुई वस्तु; आमदनी; -खाब,-करब,-होब; सं०कर्म; फा०कमाईगर ।
कमाऊ वि० कमाई करनेवाला या वाली; मेहनती,-पूत, परिश्रमी पुरुष, सं० कर्म, फ़ा० कमाईगर ।
कमान वि० पैदा किया हुआ, उपार्जित,-खाब, निर्भर रहना; सं० कर्म ।
कमानी सं० स्त्री० लचनेवाली लोहे या अन्य धातु की स्प्रिंग; फा० कमान ।
कमाव क्रि० अ० काम करना, मज़दूरी करना, स० परिश्रम करके ठीक करना (खेत आदि), प्रे०-वाइब, -उब; सं० कर्म ।
कमासुत सं० पुं० काम करके दूसरों को खिलाने वाला व्यक्ति; कमा (कमाकर सहायता करनेवाला)=कमाऊ + सुत (पुत्र); वि० योग्य, श्रमी ।
कमिश्रागिरी सं० स्त्री० तरकीब या चालाकी से कुछ बचा लेने की आदत, कम कर देने की चाल, कमी + फ़ा० गीरी (ले लेना)=कमी करके (स्वयं) ले लेना, वै०-यागीरी; अर० कीमिया (रसायन) ।
कमी सं० स्त्री० न्यूनता;-करब,-होब ।
कमीचि सं० स्त्री० छोटा नये ढंग का कुर्ता, कमीज; अर० कमीज़, लै० केमीसिया ।
कमीना वि० पुं० नीच, दुष्ट, स्त्री०-नी, भा०-पन, -मिनई,-मिनपन; अर० कमीनः ।
कमीसन दे० कबीसन ।
कमेटी सं० स्त्री० सलाह, कई व्यक्तियों की बैठक, -करब,-होब, वै० कु-, अं० कमिटी ।
कमेरा वि० पुं० कमानेवाला ।
कमोरा सं० पुं० बड़ा घड़ा, मटका, स्त्री०-री ।
कम्मर दे० कमरा, कंबर ।
कय वि० कितने,-दूँ,-ठें, संख्या में कितने, वै०-इदूँ, -ठें,-ठौं, कै;-जने, कितने पुरुष,-जनी, कितनी स्त्रियाँ । प्र० कइउ, कइयउ,-अउ, कई । सं० कत
कर सं० पुं० कल;-पुर्जा; घाँट, तरकीब ।
कर संबोध-सूचक शब्द, का, की, उ० यन-,वन-, जेकर बिटिया, जिसकी बेटी, स्त्री० कभी-कभी -रि ।
करइल सं० पुं० बाँस का कोपल, बाँस की नई डाल,-यस, ख़ूब लंबा ।
करक सं० पुं० पेट का दर्द;-थाम्हब,-पकरब,पेशाब रुकने के कारण दर्द होना, सं० कर्क ।
करकच सं० पुं० बार बार का झगड़ा,-करब,-होब वि०-हा,-ही,-करनेवाला,-ली, झगड़ालू ।
करकट सं० पुं० कूड़ा, कचड़ा, कूरा- ।
करकब क्रि० अ० दर्द करना (काँटा आदि) ।
करकस वि० पुं० सख्त काम लेने में कड़ा, स्त्री०-सि, भा०-ई; सं० कर्कश ।
करछ सं० पुं० नमकीन एवं कटु स्वाद,-मारब, वै०-छँ, क्रि०-छाब, ऐसा लगना ।
करछुलि सं० स्त्री० कलछी, पुं०-ला, वै० कल- ।
करजा सं० पुं० ऋण,-देब,-लेब, वै०-जि, अर० क़र्ज़; वि०-जी, ऋणी,-जिहा, ऋण लेनेवाला ।
करनी सं० स्त्री० बुरा काम, वै० कनी; कुल-करब, -होब, सब कुछ करना या होना (बुराभला सब) ।
करब क्रि० स० करना, प्रे०-राइब,-वाइब,-उब ।
कराइब क्रि० स० करवाना, करब का प्रे०, वै०-उब, प्रे० करवाइब,-उब; सं० क्रि ।

**करा** सं० पुं० सन (दे०) या मूँज (दे०) का टुकड़ा; दो करे मिलाकर रस्सी बटी जाती है। उ० यक करा पेटुआ (दे०), एक टुकड़ा सन, मूँजि, यह शब्द पुं० और स्त्री० में तथा बहुवचन में भी एक सा ही रहता है, चारि करा इत्यादि।

**करायल** सं० पुं० एक प्रकार का गोंद या लासा जिसमें खुशबू होती है। इसे देहाती स्त्रियाँ माँग सँवारने में लगाती हैं।

**करार** सं० पुं० समझौता, वादा, किनारा (दे० करारा);-करब,-दोव,-मदार, एक दूसरे से किया हुआ निश्चय; फा० करारदाद।

**करारा** वि० पुं० सख्त, बलवान, स्त्री०-री, सं० पुं० किनारा (नदी या ताल का); वै०-र, "माँगत नाव करार पै ठाढ़े"-तुल०।

**करारी** क्रि० वि० अवश्य, निःसन्देह, करार के अनुसार।

**कराल** वि० कठोर, निर्दय; सं०।

**कराह** सं० पुं० लोहे का बड़ा बर्तन, जिसमें गन्ने का रस आदि पकता है; कड़ाह; स्त्री०-ही; सं० कटाह।

**कराही** सं० स्त्री० कड़ाही;-मानब,-देब,-चढ़ाइब, देवी देवताओं के स्थान पर (कड़ाही में) पकवान बनाकर अर्पित करना; सं० कटाह।

**करवँट** सं० पुं० करवट,-लेब,-करब,-बदलब।

**करिंगा** सं० पुं० आल्हा में वर्णित प्रसिद्ध पुरुष जिसे करिया, करिंगाराय आदि भी कहते हैं।

**करिआ** वि० काला या काली, यह शब्द भी दोनों लिंगों में एक सा रहता है, उ०-मरद,-मेहरारू (दे०); कहा०-अच्छर भइँस बराबर; करिआ बाभन गोरिया सूत;-करिंगन, खूब काला (जामुन)।

**करिआइब** क्रि० स० भीतर कर देना, बंद कर देना (पशु, मनुष्य आदि को); बंदी करना; प्रे०-वाइब; करिआब का प्रे०। सं० कारा।

**करिआब** क्रि० अ० भीतर बंद होना, क़ैद हो जाना, प्रे०-आइब,-उब, सं० कारा से, भू० करिआन। (भीतर बंद या घुसा हुआ)।

**करिआरी** सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसमें विष होता है।

**करिक्का** वि० पुं० काला; स्त्री०-क्की।

**करिखहा** वि० पुं० कालिख लगा हुआ; काला; शर्मिंदा; वेशर्म, स्त्री०-ही।

**करिखा** सं० पुं० कालिख;-देब,-लागब,-लगाइब, मुँह काला कर लेना, (शर्म अथवा बदनामी के कारण)।

**करिगह** सं० पुं० जुलाहे का औज़ार जिससे बुनाई होती है, कहा० करिगह छाँड़ि तमासे जाय, नाहक चोट जोलाहा खाय।

**करिना** सं० स्त्री० कन्या; अविवाहित लड़की;-दान,-देब;-खवाइब, कन्याओं को भोजन कराना (प्रायः नवरात्रों में या मानता में);-कुँआरि, कुँआरी कन्या।

**करिया** वि० दे०-आ;-भुजंग, साँप जैसा काला;-बादर होब, बादलों की भाँति एकत्र हो जाना।

**करियाइब** क्रि० स० बंद करना, क़ैद कर देना; वै० करिआ-; प्रे०-वाइब,-उब; सं० कारा।

**करिवाइब** क्रि० स० जेल करा देना, बंद करने में सहायता करना (पशुओं को); वै०-उब; सं० कारा।

**करिहावँ** सं० स्त्री० कमर;-भर (पानी), कमर तक गहरा; प्र०-हाइँ भर; सं० कटि।

**करी** सं० स्त्री० दे० कड़ी; यह शब्द प्रायः लकड़ी वाले अर्थ में ही आता है; जंजीर और गानेवाले अर्थ में 'ड़ी' रहता है। दे० कड़ी।

**करीना** सं० पुं० तरीक़ा, आदत, व्यवहार; अर० क़रीन:।

**करीब** वि० निकट;-बी, निकट का (नातेदार); अर० करीब।

**करील** सं० पुं० एक जंगली पेड़ जो ब्रज में बहुत होता है और जिसका ब्रज-काव्य में प्रायः वर्णन है।

**करुअई** सं० स्त्री० कड़आपन; वै०-आई; सं० कटु।

**करुआर** सं० पुं० लोहे का काँटा,-लगाइब,-लागब।

**करुआब** क्रि० अ० कड़आ लगना, कड़ुआ हो जाना, सं० कटु।

**करुई** वि० स्त्री० थोड़ी देर पूर्व लगी हुई (नींद); इसका अर्थ शायद यों हो गया कि ऐसी नींद का टूटना बहुत बुरा लगता है। सं० कटु।

**करुख** वि० कटु (शब्द),-बोलब,-कहब, कड़ा शब्द कह देना; वै० कु-; सं० कटु, करुष, कर्कश; फ़ा० करख्त।

**करेंठा** वि० पुं० काला; काला (व्यक्ति); घृ०, स्त्री० -ठी, बदमाश काली स्त्री।

**करेज** सं० पुं० कलेजा; हिम्मत; दिल;-करब,-होब; बड़ा-, बहुत हिम्मत; कठ-जी, हिम्मतवाला (जिसका कलेजा लकड़ी का सा हो);प्र०-जा,स्त्री०-जी।

**करेजी** सं० स्त्री० बकरे आदि के कलेजे का नरम भाग जो खाया जाता है; कठ-,दे० करेज।

**करेर** वि० पुं० सख्त; कड़ा; अधिक अवस्था का (जवान); स्त्री०-रि; सु० पुष्ट, बलवान;-करब,-परब, सख्ती से व्यवहार करना; भा० -री,-रई।

**करैआ** सं० पुं० करनेवाला; वै०-या;-धरैआ, परिश्रम करनेवाला; सहायक।

**करैला** सं० पुं० करेला; स्त्री०-ली; वै० करइ-; कहा० यकतौ-दुसरे नीम चढ़ा।

**करैया** सं० पुं० करनेवाला; "करैआ" का प्र० रूप।

**करोइब** क्रि० स० नीचे से पोंछ या खुरच लेना; अच्छी तरह पोंछना।

**करोनी** सं० स्त्री० जिस मिट्टी के बर्तन में दूध खौलाया जाय उसके भीतर से खुर्ची हुई मलाई जो सोंधी

होती है और प्राय: छोटे-छोटे बच्चों को दी जाती है। स्त्री० ह०-रवावनि,-वनी,-वनि।
करोर सं० पुं० करोड़; सं० कोटि; वै० कि-।
करोरब क्रि० स० खुरचना; प्रे०-रवाइब,-उब।
करौनी सं० स्त्री० कुछ करने की मजदूरी।
करब क्रि अ० शाप देते रहना, दाँत-,ईर्ष्या करना, बुरा चाहना।
कलँगी सं० स्त्री० पगड़ी के ऊपर निकला हुआ अंश; चिड़ियों के सिर पर उठा हुआ भाग, जुल्फी।
कल सं० पुं० कुशल, ठीक हालत;-कुसल, अच्छा समाचार;-से;-परब;-पाइब; आराम पाना।
कलई सं० स्त्री० क़लई;-करब,-होब; फ़ा० क़लई।
कलऊ सं० पुं कलियुग; सं० कलि।
कलक सं० पुं० हृदय की अपूर्ण इच्छा;-होब,-रहब, -मिटब,-मिटाइब; अर० क़िल्क़।
कलकलाब क्रि० अ० (खौलते घी या तेल की) 'कलकल' आवाज़ करना; प्रे०-इब,-उब, खौलाना।
कल-कुसल सं० पुं० आनंद, मंगल, कल्याण।
कलजुग सं० पुं० कलियुग;-हा, कलियुग की (बुरी) बातें जानने या करनेवाला; स्त्री०-ही, वि०-गी, कलियुग का; सं०।
कलझब क्रि० अ० दु:ख या वियोग से तड़पना; प्रे०-झाइब,-उब,-वाइब,-उब।
कलपब क्रि० अ० हार्दिक इच्छा करना; तरसना; प्रे०-पाइब,-उब; सं० कल्प।
कलवली सं० स्त्री० खुजली की एक उपजाति; -होब।
कलम सं० स्त्री० लेखनी; प्राय:-मि; सं० कलम, फ़ा० क़लम; लै० कैलमस।
कलसा सं० पुं० पानी का घड़ा; स्त्री० सी; सं० कलश; स्त्री० ह०-सु।
कलह सं० पुं० झगड़ा;-ही, झगड़ालू; कभी-कभी स्त्री० में भी बोला जाता है। वै० कल्ला, झगरा-कल्ला;-होब,-करब; सं०।
कलाँ वि० उम्दा, बढ़िया,-रासि, बहुत बढ़िया (वस्तु, जानवर); प० कलारास, स्वागत; फ़ा० कलान (बड़ा)।
कला सं० स्त्री० चाल, चतुरता, चालाकी;-करब, -आइब,-पढ़ब;-वंत, चालाक।
कलाई सं० स्त्री० हाथ की कलाई;-घड़ी, हाथ पर बाँधने की घड़ी।
कलाक सं० पुं० घंटा; यह शब्द प्राय: बम्बई, कलकत्ते आदि से नौकरी करके लौटे हुए देहाती बोलते हैं; अं० क्लाक, ओ'क्लाक (बजे)।
कलाबाजी सं० स्त्री० ऐसे खेल जिसमें शरीर को मोड़ने का अवसर आता हो;-करब,-देखाइब; सं० कला+फ़ा० बाज़ी।
कलाम सं० पुं० शब्द, बात; ज़रा सी बात; यक-, ज़रा सी बात; अर०कलाम।



कलि सं० स्त्री० आराम, सुख, छुटकारा, (बीमारी से) फ़ुरसत;-होब,-पाइब; वै०-ल।
कलिआ सं० स्त्री० मांस;-खाब,-बनइब (दे०); अर० क़लियः (मांस-खंड); "हाज़िर है जो कुछ दाल दलिया, समझिये उसको पुलाव क़लिया" -अकबर।
कली सं० स्त्री० बंद फूल; खटाई का टुकड़ा (एक-खटाई); मिरजई (दे०) या कुरते के किनारे का तिकोना भाग, जिसे कल्ली भी कहते हैं।
कलील वि० थोड़ा, कम; अर० क़लील।
कलेवा सं० पुं० सबेरे का पहला भोजन; विवाह का एक रस्म; वै०-ऊ; -करब।
कलेस सं० पुं० कष्ट, दु:ख; सं० क्लेश;-होब,-देब, -करब, दु:ख उठाना;-सित, दुखित, दु:ख में।
कलोरि सं० स्त्री० वह गाय जिसके बच्चा न हुआ हो; वि० के रूप में भी प्रयुक्त।
कलोल सं० पुं० खेल, आनंद, स्त्री-प्रसंग;-करब; वै० कि-; सं० कल्लोल।
कल्ला सं० पुं० पेड़ का नया अंग; मनुष्य की कलाई,-फूटब,-पकरब; झगरा-,लड़ाई-झगड़ा। स्त्री० -ल्ली (दे० कली)। दे० गट्टा।
कल्लाब क्रि० अ० घिसने के कारण दर्द करना (जैसे चलते-चलते पैर का)।
कल्हारब क्रि० स० घी या तेल में खूब भूनना; मु० जलाना, तंग करना, दु:ख देना; प्रे०-ल्हरवाइब, -उब।
कवर सं० पुं० नेवाला, ग्रास; वै० कौर; सं० कवल।
कवरा सं० पुं० रोटी का टुकड़ा जो प्राय: कुत्ते को दिया जाता है; वै० कौ-;-देब;-माँगब, भीख में भोजन माँगना,-पाइब; सं० कवल।
कवल सं० पुं० कमल, कमल का फूल; वै० के-, कँ-,-ला; सं० कमल।
कवलहा वि० पुं० दे० कउलहा।
कवही सं० स्त्री० दरवाज़े के पीछे का भाग जहाँ से बाहर की बात सुनाई दे।-लागब, चुपके से सुनना।
कवाइति सं० स्त्री० दे० कवाइति।
कस वि० पुं० कैसा; स्त्री०-सि; कस, कैसे-कैसे; प्र०-स, किस प्रकार; वै० क्यस, केसस, केस-केस; सं० क:।
कसक सं० स्त्री० अपूर्ण इच्छा; हार्दिक इच्छा; वै०-कि;-मिटाइब,-रहब।
कसकुट सं० पुं० काँसा और पीतल मिला हुआ; वि०-हा, ऐसे मिलावट का बना हुआ (बर्तन); कस (काँसा)+कुट (कुटा हुआ); सं० कांस्य।
कसद सं० पुं० इच्छा, निश्चय;-करब,-होब; वि० -दी; अर० क़स्द।
कसनि सं० स्त्री० कस देने की क्रिया; कसने की बात; कसने का तरीका।
कसब क्रि० स० कसना; मज़बूत करना; कस

देना; मु० ताकीद कर देना; डाँट देना; प्रे०-साइब, -वाइब,-उब ।

कसब सं० भा० वेश्या वृत्ति;-करब,-कराइब, ऐसी वृत्ति करना या कराना । अर० ।

क़सबा सं० पुं० छोटा नगर; बड़ा गाँव । फ़ा० ।

कसबी सं० स्त्री० वेश्या ।

क़सम सं० स्त्री० शपथ;-खाब,-धराइब; वै०-मि; अर० क़सम ।

कसयपन सं० पुं० कसाई का काम; निर्दयता;-करब, निर्दयी होना; अर० क़स्साबी: वै०-सै-।

कसरि सं० स्त्री० कमी;-रहब,-करब,-होब,-पाइब, -देखब; भोजन की कमी, इच्छित काम की अपूर्ति, -काढ़ब,-लेब,-निसारब, बदला लेना,-निकालना; अर० कसर ।

क़सा वि० पुं० कड़ा किया हुआ, सख्त बँधा हुआ, मजबूत फँसा हुआ, स्त्री०-सी ।

कसाई सं० पुं० पशुओं की हत्या करनेवाला, मु० वि० निर्दय, कठोर (पुरुष);-क काम, निर्दयता; कसयपन, कसाई की वृत्ति, कठोरता;-करब, अर० क़स्साब ।

कसाब क्रि० अ० (किसी पदार्थ का स्वाद) खराब हो जाना, काँसे का सा स्वाद हो जाना, पीतल के बर्तन में रखी हुई (दही आदि की तरह की) वस्तु का स्वाद-भ्रष्ट हो जाना; "काँसा" से; प्रे० कसवाइब,-उब । सं० कांस्य ।

कसाला सं० पुं० कष्ट; बहुत परिश्रम;-करब,-होब; सं० कष्ट ।

कसि वि० स्त्री० कैसी, किस प्रकार की; 'कस' का स्त्री०; दे० 'कस' ।

क़सूर सं० पुं० अपराध;-करब,-होब,-पाइब, -देखब,-रहब;-दार,-वार, अपराधी (पुं०),-रि (स्त्री०), अर० क़ुसूर ।

कसेर सं० पुं काँसे (और पीतल) का काम करनेवाला, कँसेरा;-पन,-ई, कसेर का काम या व्यापार, सं० कांस्य ।

क़सैपन सं० पुं० कसाई का काम या उसका सा व्यवहार, निर्दयता; दे० कसयपन ।

कस्तूरी सं० स्त्री० कस्तूरी; वि० चालाक; चलता हुआ;-होब, चतुर हो जाना; वै०-इ- सं० ।

कहँ क्रि० वि० कहाँ, कविता में प्रयुक्त, प्र०-वाँ ।

कहँरई सं० स्त्री० कहार का काम या उसका सा व्यवहार, वै०-पन ।

कहँरब क्रि० अ० कहरना, कराहना, दुःख के मारे धीरे-धीरे चिल्लाना; वै०-रहब,-लहब (सी० ह०) प्रे० -रवाइब ।

कहँरवा सं० पुं० कहारों द्वारा गाया जानेवाला एक गीत और उसका राग ।

कहकहा सं० पुं० ज़ोर की हँसी,-मारब,-लगाइब, अर० क़हक़ह: (सं०-क्ये- क़हक़ह:) ।

कहकुति सं० स्त्री० जनश्रुति, व्यर्थ की बात, -सुनब,-होब, सं० कथ् ।

कहनी सं० स्त्री० कहानी, वै० कि-, किहि-,-हि-, -कहब,-सुनब,-सुनाइब; सं० कथ् ।

कहब क्रि० स० कहना, सूचना देना, प्रे०-हाइब,-उब,-हवाइब,-उब, सं० कथ् ।

कहवाँ क्रि० वि० किस स्थान पर; 'कहाँ' का प्र० रूप ।

कहवाइब क्रि० स० कहलाना, सूचना भेजना; वै० -उब ।

कहाँ क्रि० वि० किस स्थान पर,-कहाँ, किस-किस स्थान पर, जहाँ-, यत्र तत्र, थोड़ा-बहुत;-है; क्या बात करते हो,-कहब ।

कहाउति सं० स्त्री० मृत्यु की सूचना,-देब,-जाब; लाइब,-कहब,-आइब, वै०-वति ।

कहानी दे० कहनी ।

कहार सं० पुं० एक उपजाति जो पानी भरने, बर्तन माँजने आदि का सेवा-कार्य करती है, तुल० भरि-भरि भार कहारन आना;-री, पालकी उठाने की कहारों की मज़दूरी; भा०-हरई,-पन, वै०-हाँर ।

कहावति दे० कहाउति ।

कहालि सं० स्त्री० कहने की अनावश्यक इच्छा या आदत,-लागब,-होब: 'कहब' से ।

कहिआ क्रि० वि० किस दिन, कितने दिन पर, वै०-वा, प्र०-औ, जहिआ-, कभी-कभी, यदा-कदा, कहिओ न, कभी भी नहीं; सं० कदा ।

कहुँ क्रि० वि० कहीं; वै० प्र० कहूँ; जहँ-,जहाँ कहीं, कहुँ-कहुँ, कहीं-कहीं (तुल० कहुँ-कहुँ वृष्टि सारदी थोरी), कहुँ न, कहूँ न, कहीं नहीं;-नाहीं, कहीं भी नहीं ।

कहें क्रि० वि० कहने पर, धोबी गदहा प नाहीं चढ़त, कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता । सं० कथ् ।

कहैआ सं० पुं० कहनेवाला, बोलनेवाला, टोकने या रोकनेवाला, प्र०-वैया, वै०-या, कहइआ,-या । सं० कथ् ।

कहो संबो० क्यों; कहिये, उ०-भैया, क्यों भाई, कहो, बाति ठीक है न, कहिये, यह बात ठीक है न ? वै०-हौ; सं० कथ् ।

काँकर सं० पुं० कंकड़, पाथर, कूड़ा-करकट (भोजन का रद्दी सामान) ।

काँकरि सं० स्त्री० ककड़ी; अं० कुकुम्बर ।

काँखब क्रि० अ० काँखना, दर्द के कारण धीरे-धीरे कराहना;-पादब, दुःख के कारण धीरे-धीरे चलना-फिरना मु० बहाना करना, हिचकिचाना ।

काँखा-साँती क्रि० वि० एक काँख के नीचे से ले जाकर दूसरे कंधे के ऊपर से, जैसे दुपट्टा बाँधा जाता है । तुल० ।

काँखि सं० स्त्री० काँख, कँखौरी ।

काँच सं० पुं० शीशा ।

काँजी सं० स्त्री० खटाई; पानी में डालकर कुछ फलों या गाजर आदि के टुकड़ों से बनी खटाई

जो पाचक रूप से पी जाती है। "दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय।"

काँटा सं० पुं० काँटा, लोहे का एक औज़ार जिससे कुएँ में गिरे हुए बर्तन फँसाकर निकाले जाते हैं; कुछ देहाती लोग (प्रता०, सु० आदि में) 'काँट' भी बोलते हैं। राहि क-,बाधा;-काढ़ब,-रून्हब (दे०);-होब, बहुत दुबला हो जाना, सूख जाना (व्यक्ति का); सं० कंटक।

काँड़ब क्रि० स० पैर से दबाना; खूब मारना; पीटना; प्रे० कँड़ाइब,-उब,-वाइब,-उब।

काँड़ी सं० स्त्री० दे० कँड़िया।

काँपब क्रि० अ० काँपना; डरना, बहुत भय खाना; प्रे० कँपाइब,-उब,-कँपवाइब,-उब; सं० कम्प।

काँपी सं० स्त्री० लिखने के लिए कई पन्नों की एक बही जो किताबनुमा हो; अं० कापी बुक।

काँवरि सं० स्त्री० बहँगी, जिसके दोनों ओर मनुष्य बैठाये जायँ जैसा श्रवण ने किया था;-खेइब,-बहब, पार करना; कष्ट उठाना।

काँसा सं० पुं० पीतल और ताँबे की मिलावट।

का सर्व० क्या, वै० काव, द्वि० का-का, क्या-क्या, काव-काव, कौन-कौन सी वस्तु या बात, सं० का (वार्त्ता); संबो० क्यों, क्यों जी, कहिये; इसके आगे संबोधित व्यक्ति का नाम जोड़ देते हैं; पश्चिम में "कै, कै हो" बोलते हैं। दे० कै।

काई सं० स्त्री० काई;-लाग.;-होब, वि० कइआन (काई लगा हुआ), कइअहा,-ही।

काउँ-काउँ सं० पुं० कावँ-कावँ;-करब,-होब, व्यर्थ की बातें करना,-होना; वैं०-वँ।

काकजंघा सं० पुं० एक घास जो दवा में काम आती है। इसके छोटे पौदे की शाखायें कौए की टाँगों की भाँति होती हैं, इसी से इसका यह नाम पड़ा है। वै० ग-, सं०।

काका सं० पुं० चाचा, पिता का छोटा भाई; स्त्री०-की;-लागब,-कहब, सं०।

काकुनि सं० स्त्री० एक अन्न जिसके दाने गोल-गोल सुनहले रंग के होते हैं। माल-, एक जंगली लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है जो ओषधि के काम आता है।

काची-कूची सं० कचड़ा; प्राय: मातायें छोटे बच्चों का मुँह धोते समय कहती हैं-"काची-कूची कौआ खाय; दूध भात मोर (बतासा) भैया खाय।"

काछब क्रि० स० बर्तन या द्रव वस्तु को पोंछ लेना, साफ़ करना, प्रे० कछवाइब,-उब;कछनी,-विशेष प्रकार से धोती पहनना, तुल०।

काज सं० पुं० काम;-काम-,सं० कार्य;-करब,-होब,-आइब,-जें आइब, समय पर सहायक होना,-जें कामें, अवसर विशेष के समय, राज-, संपत्ति, काम-काजी; परिश्रमी; काम में लगा रहने वाला।

काजर सं० पुं० काजल;-पारब, काजल तैयार करना, आँखि क-काढ़ब, चतुरतापूर्वक ले लेना; -आँजब, करना;-देब, विवाह की एक रस्म जिसमें बहिन या बुआ दूल्हे की आँख में काजल लगाती है। सं० कज्जल।

काजी सं० पुं० मुसलमानों के धार्मिक व्यवस्था-दाता; वि० काम करनेवाला; काम-, परिश्रमी; अर० क़ाज़ी।

काट सं० पुं० तरकीब; किसी चाल या कठिनाई के विरोध में दूसरी चाल या तरकीब; प्रभाव; -करब,-निकारब; कूट,-छाँट।

काटब क्रि० स० काट देना, मिटाना (दुःख आदि); विरोध करना, न मानना (बात), बीच में बोल देना (दूसरे की बात में); प्रे० कटवाइब, कटाइब, -उब; छाँटब,-कूटब, राह-, शुभ काम के लिए जाते समय, लोमड़ी, गीदड़ आदि का मार्ग में आ जाना। मु० पीटना, मुफ़्त में खूब खाना।

काटि सं० स्त्री० तेल, घी आदि द्रव पदार्थों की मैल; वै०-टु (सु०, फ़ै०)।

काटू सं० पुं० डरावना जीव; कोई डराने की बात; डरानेवाला व्यक्ति; हौवा; । काटनेवाला (पशु, व्यक्ति)।

काठ सं० पुं० लकड़ी;-क उल्लू, अकर्मण्य, मूर्ख; काठे क जगरूप, नाम के लिए मालिक; काठें मारब, एक प्रकार का दंड जिसमें नैपालवाले अपराधी के एक या दोनों पैर एक लकड़ी में फँसा देते हैं; सं० काष्ठ।

काठी सं० स्त्री० घोड़े या ऊँट के ऊपर रखने की गद्दी; मनुष्य की बनावट या ढाँचा; सं० काष्ठ से (शायद पहले काठियाँ लकड़ी की बनती थीं)।

काढ़ब क्रि० स० निकालना; उतारना; कपड़े पर चित्रादि बनाना;-बीनब, सीयब-, कढ़ाई-बुनाई या सिलाई आदि करना; आँखि-;(नदी का) बहुत बढ़ना; रुष्ट होना। प्रे० कढ़ाइब,-ढ़वाइब,-उब; सं० कर्ष।

काढ़ा सं० पुं० किसी दवा को पानी में उबालने के बाद जो क्वाथ बनता है; (सत) निकाला हुआ; वास्तव में इस शब्द का अर्थ ही "निकाला हुआ" है; 'काढ़ब' से; सं० कर्ष।

कातब क्रि० स० कातना;-बिनाइब, सब कुछ करना; झंझट करना; प्रे० कतवाइब, कताइब, -उब। सं० कात

कातरि सं० स्त्री० लकड़ीवाले तेल पेरने या गन्ने के कोल्हू में लगी एक पटरी; सन-,वि० अधपगली; पुं० सनकातर (दे०), सी० ह० कतरी।

कातिक सं० पुं० क्वार के पीछे आनेवाला मास;-लागब, (कुत्तों के) मैथुन का समय होना; क्रि० कतिकाब, (कुत्तों का) मस्त होना।

कातिब सं० पुं० दस्तावेज़ या दूसरा क़ानूनी क़ाग़ज़ लिखनेवाला, अर०।

कातिल सं० पुं० हत्यारा; वि० परेशान करनेवाला; सख़्त, निर्दय; अर० क़ातिल।

कादर वि० पुं० डरपोक, निकम्मा, सुस्त; वै० खादर (सी० ह०),गादर (दे०); क्रि०कदराब; भा०कदरई; कदरपन; सं० कायर ।

कादहुँ क्रि० वि० क्या सचमुच ; शायद; का (क्या ?)+दहुँ (दे०)=धौं; वै० काधौं, कधौं ।

कान सं० स्त्री० सूरन ।

कान सं० पुं० कान;-देब,-करब,-लगाइब;कानौं-कान;ज़रा भी, उ० खबर न मिली; सुनना, ध्यान-पूर्वक सुनना; सं० कर्ण ।

काना सं० पुं० जिसकी एक आँख न हो; स्त्री०-नी । भा०-राम, कनऊ,-नउनू, स्त्री० कानौ,-नो, कनुई ।

कानि सं० स्त्री० लज्जा; अपने व्यक्तित्व अथवा मर्यादा आदि का ध्यान;-करब,-होब, ध्यान और लज्जापूर्वक सोचना; कुल-,अपने कुल की लज्जा ।

कानू सं० पुं० बनियों की एक उपजाति ।

कानौ सं० स्त्री०कानी स्त्री; "कानी" कनुई (सी०) का भा०रूप,जैसे 'काना' से कनऊ (दे०)। वै०-नो ।

कान्ह सं० पुं० कंधा; डेहरी (दे०) के ऊपर का किनारा;-देब, शव की टिकठी (दे०) में कंधा लगाना; वै० काँधु (सी०ह०) सं० स्कंध ।

कान्हा सं० पुं० कृष्णजी;वै० कान्ह, कन्हाई, कन्हैया (प्रायः गीतों में प्रयुक्त); सं० कृष्ण ।

काफी वि० पर्याप्त;-होब,-रहब; फ़ा० काफ़ी ।

काबर वि० पुं० कबरा (दे०) स्त्री०-रि; चित, काला और सफ़ेद बूटीवाला; पं० चित्ता (सफेद)+काबर। सं० कर्बुर ।

कावा सं० पुं० टेढ़ा मार्ग;-काटब, इधर उधर घूमना; फ़ा० कावः खुदाई; इस नाम का ईरानी इतिहास में एक लुहार है जो ज़ुहाक राजा को मारता है ।-काटि जाब, टाल देना ।

काबिल वि० योग्य, उपयुक्त; सं०-लियत;-होब,-रहब; फ़ा० क़ाबिल ।

काबुली सं० पुं० काबुल का निवासी;-चना,-केराव, बड़े-बड़े सफेद चने और मटर के दाने; इस प्रकार की मटर को प्रायः 'कबुली' कहते हैं। कहा० "काबुल गये मोगल बनि आये बोलै मोगली बानी, आब आब करि मरि गये मुड़वारी धरा पानी ।"

काम सं० पुं० कार्य, आवश्यकता; मरने के बाद का मृत्यु-भोज;-काज, काज-;-में आइब,-में-काजें; दे० काज;-काजी, व्यस्त । सं० कर्म, पं ज० कम ।

कामिल वि० पुं० अच्छा, बढ़िया; भा० कमिलई,-पन; फा० कामिल, पूरा ।

कायर वि० डरपोक, निकम्मा; भा० कयरई, कयर-पन; सं० ।

काया सं० स्त्री० शरीर; इच्छा, पेट;-भरब, इच्छा-पूर्ति होना; सं० ।

कार सं० पुं० काम, आवश्यकता; फ़ा० कार, सं० कार्य;-बार, व्यापार, स्थिति ।

कारन सं० पुं० कारण, झगड़ा;-करब, रोना, किसी के मर जाने पर रोना, बुरी तरह रोना या चिल्लाना। सं० कारण; वि०-नी, झगड़ा करानेवाला ।

कारपरदाज़ सं० पुं० जो किसी दूसरे का काम करे; नौकर; फ़ा० ।

कारबारी वि० परिश्रमी; कुछ करनेवाला; व्यापार-वाला । फ़ा० कार+ बार ।

कारारति सं० स्त्री० कालीरात; प्रायः यह शब्द स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है या सौगंध खाने के लिए;उ०-वेधी अहै, मैं कुछु नाहीं जानत हौं, रात का समय है, सचमुच मैं कुछ भी नहीं जानता ।

कारीगर सं० पुं० बारीक काम करनेवाला व्यक्ति; भा०-री; फ़ा० ।

काल सं० पुं० समय; मृत्यु; अंत-,मृत्यु का समय; अकाल;-परब, अकाल होना; सु-,अच्छा समय, फसल आदि; सं०;प० कल: (हर कला=रासे=जो प्रति क्षण स्वागत पावे) ।

कालिका सं० स्त्री० काली का छोटा रूप; छोटी काली; -देवी,-माई; सं० ।

काली सं० स्त्री० देवी;-माई, कालीमाता,-चौरा, देवी का स्थान; सं० ।

कावँ-कावँ दे० काउँ-काउँ ।

काव सर्व० क्या; सं० किं ।

कासि सं० स्त्री० एक जंगली और लंबी घास जो बरसात में होती है; तुल० फूली कासि सकल महि छाई; वै० काँ-,काँस । सं० काश ।

कासी सं० स्त्री० काशी;-पुरी,-धाम,-करवट; सं० काशी ।

काह सर्व० क्या; प्रायः कविता में प्रयुक्त; दे० का ।

काही सं० स्त्री० हरा लिए हुए काला रंग; फ़ा० काह, घास, भूसा ।

काहू सर्व० किसी; वै० केउ, केहु, प्र०-हू,केऊ; -मनई,-जगहा,-चीजि,-बाति ।

किंगिरी सं० स्त्री० एक बाजा, जिसे प्रायः भिख-मंगे बजाते हैं;-रिहा, ऐसा बाजा बजानेवाला; वै०-ङ्गिरी,-ङ्गिरि- ।

किचकिच सं० स्त्री० कीचड़ की अधिकता; कहा-सुनी, व्यर्थ की बातें, बहस; वै०-पिच;खिच-खिच ।

किचाहिन सं० स्त्री० दे० कचाहिन; 'कीच' (कीचड़) से ।

किचिर-किचिर सं० पुं० थूकने या बेमतलब की बात की आवाज़;-होब,-करब; वै०-पिचिर, चिचिर- ।

किछु वि० सर्व० कुछ; जा०, दे० कुछु ।

किटकिटाब क्रि० अ० छोटे छोटे पत्थर या कंकड़ के टुकड़ों की भाँति दाँत में गड़ना; 'किट-किट' आवाज़ से ध्व० ।

किटाब क्रि० अ० किसी बात पर बुरी तरह तुल

जाना, अनावश्यक हठ करना; जान बूझकर झगड़ा करने पर तैयार होना।
कित क्रि० वि० कहाँ, किधर; कविता में प्रयुक्त; सं० कुत्र।
कितना दे० केतना।
किताबि सं० स्त्री० पुस्तक; फा० किताब।
कितारा दे० केतारा।
कितौ या तो, कहाँ तो।
कियाँ सं० पुं० कीड़ा;-परब,-लागब, क्रि०-ब; -कियाँ क,-यस,-भरे क, छोटे-छोटे, बहुत छोटे (बच्चे); सं० कृमि, फा० किर्म।
कियाब क्रि० अ० कीड़ा पड़ना (फल आदि में); सं० कृमि। वै० कि-,-आ-।
किरतन सं० पुं० कीर्तन;-करब,-होब; सं० कीर्तन; वि०-निहा।
किरपा सं० स्त्री० कृपा;-करब,-होब;-निधान सं० कृपा।
किराब क्रि० अ० कीड़ा पड़ जाना; वै० कियाब।
किरोध सं० पुं० क्रोध;-करब; वि०-धी,-धिहा; सं०।
किलकब क्रि० अ० खिलखिला कर हँसना; प्रे०-काइब,-उब।
किलकारी सं० स्त्री० हर्ष की हँसी;-मारब।
किलना सं० पुं० गोल मोटे कीड़े जो प्रायः जानवरों के बदन पर चिपके रहते हैं; स्त्री०-नी।
किला सं० पुं० दुर्ग, अर० क़लअ।
किल्ली सं० स्त्री० दरवाज़ों को भीतर से बंद करने के लिए लकड़ी की छोटी चीज़,-मारब,-देब;- प० कीली (चाभी); सं० कीलक।
किसनई सं० स्त्री० किसान का काम; परिश्रम; तरकीब;- करब,-लागब; 'किसान' से भा०; सं० कृषक।
किहनी सं० स्त्री० कहानी, छोटा सा किस्सा,-कहब, -सुनाइब,-सुनब,वै०-हि-,सं० कथा, कथानक।
कीच सं० स्त्री० कीचड़; वै०चु-,-चि; "मीचु है भली पै न कीचु लखनऊ की"।
कीचर सं० पुं० आँख से निकलनेवाला मैल; -लागब,-निकरब; वि० किचरहा,-कुचरहा, गंदा।
कीटि सं० स्त्री० दाँत या दूसरे अंगों पर जमी मैल; प्र०-टी।
कीना सं० पुं० लज्जा, शर्म, पछतावा;-करब,-होब, -आइब;-दार, शर्मदार, फा० कीनः (द्वेष)।
कीरति सं० स्त्री० कीर्ति, यश;-करब,-होब सं० कीर्ति।
कीरा सं० पुं० कीड़ा; साँप;-परब,-लागब,-काटब, -मारब,-निकारब,-झारब; वै० ड़ा, किरवा; क्रि० किराब; सं० कीट।
कीरी सं० स्त्री० छोटे-छोटे कीड़े (प्रायः पानी के); चींटी; कबी० साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय। सं० कीट; कृमि।
कीलब क्रि० स० बंद करना; (देवता भूत आदि) स्थापित कर देना (कील गाड़ कर); प्रे० किलाइब, -वाइब,-उब।
कीला सं० पुं० चक्कियों अथवा जाँत के बीच में लगा लकड़ी का खूँटा, स्त्री०-ली, प० कीली अं० की (चाभी); प्र० किल्ला।
कुँअना सं० पुं० कुआँ, छोटा कुआँ; इस शब्द में छुटाई के अतिरिक्त स्मृति तथा स्नेह भी सन्निहित हैं; कवि० तथा गीतों में प्रयुक्त; सं० कूप।
कुँआर वि० पुं० क्वाँरा, अविवाहित,स्त्री०-रि, सं० कुमार,-री। भा०-अरई,-अरपन।
कुँचवाइब क्रि० स० (पशुओं के) अंडकोश निकलवाना; 'कूँचब' (दे०) का प्रे०रूप; वै०-चाइब,-उब, मु० पिटवाना या दंड दिलाना, पशुओं के अंडकोश निकालनेवालों को 'कुँचबन्हिया' कहते हैं।
कुचाइब क्रि० स० पिटवाना, दे०-वाइब।
कुँड़िआइब क्रि० अ० 'कूँड़ि' बोना (दे० कूँड़ि); स० (खेत) इस प्रकार बोना; प्रे०-वाइब,-उब।
कुंड सं० पुं० नदी या तालाब का गहरा स्थल; सं०।
कुंडल सं० पुं० कान में पहनने का आभूषण, जिसे मर्द भी पहनते हैं।
कुंडलिया सं० स्त्री० प्रसिद्ध छंद;-कहब,-पढ़ब,-लिखब। सं० कुंडली।
कुंडली सं० स्त्री० जन्मपत्री;-बनाइब,-देखब, -बिचारब; पुरानी पद्धति से यह पत्री कुंडलित करके रखी जाती है, इसी से इसका यह नाम पड़ा है। सं०।
कुंजा सं० पुं० एक रोग जिसमें शरीर भर में दाने पड़कर खुजली होने लगती है।
कुंजी सं० स्त्री० चाभी; असली उपाय, रहस्य;-देब,-भरब,-अइँटब, उकसाना; किसी झगड़े आदि के लिए उकसाना।
कुंदा सं० पुं० मोटी लकड़ी का भारी भाग;-यस, बहुत मोटा; स्त्री०-दी; फा० कुंद, मोटा, मुड़ा हुआ, तेजहीन।
कुंभ सं० पुं० एक राशि; महत्वपूर्ण पर्व जिसमें प्रयाग, हरद्वार आदि स्थानों पर मेला होता है; स्त्री०-भी, छोटा कुंभ जो ६ वर्ष पर लगता है; बड़ा प्रति १२ वर्ष पर;-लागब;-नहाब; सं०।
कुंभी सं० स्त्री० छोटा कुंभ, जो ६ वर्ष पर आता है;-पाक, एक प्रकार का नरक।
कुआँ सं० पुं० कुवाँ,-इनारा लेब,-ताकब;-धरब,-डूब मरना,-क बियाह, देहात में दो कुओं का ब्याह भी होता है; दे० बियाह। सं० कूप।
कुआर सं० पुं० क्वार का महीना,-री, क्वार में होनेवाली फसल;-रा, क्वार का, उ०-घाम, क्वार की कड़ी धूप।
कुइआँ सं० स्त्री० छोटा सा कुआँ, वै० कुई-, -याँ।

कुकरम सं० पुं० बुरा काम,-करब,-होब, सं० कुकर्म; वि०-मी।

कुकुर-छिनार सं० पुं० बुरी तरह फँस जाने की स्थिति, क्योंकि कुत्तों के मैथुन में दोनों बहुत देर तक फँसे रहते हैं, कुकुर (कूकुर दे०)+छिनारा (दे०) सं० कुक्कुर।

कुकुरदंता वि० (वह व्यक्ति) जिसके दाँतों के ऊपर दाँत हों, कुकुर (कूकुर)+दंता (दाँतवाला), सं० कुक्कुर+दंत।

कुकुर-निनिया सं० स्त्री० कुत्ते की नींद, बीच-बीच में टूट जानेवाली नींद, जल्द टूट जानेवाली निद्रा; सं० कुक्कुर+निद्रा; सोइब, जागब, ऐसा सोना या जगना।

कुकुर-मुत्ता सं० पुं० एक सफेद छतरीदार घास जो प्रायः वर्षा में होती है। विश्वास यह है कि जहाँ कुत्ते मूतते हैं वहीं यह होती है। सं० कुक्कुर+मूत्र।

कुकुरहौ सं० स्त्री० कुत्तों के बार-बार भूँकते रहने की क्रिया,-होब; सं० कुक्कुर।

कुकुराब क्रि० अ० कुतिये का गाभिन होना, उसका कुत्ते से संगम कराना; सं० कुक्कुर।

कुकुसब क्रि० अ० (फल या अनाज के दाने अथवा फली आदि का) बिना पके सूखकर खराब होना, वै०-सु-,प्रे०-साइब,-उब।

कुकुही सं० स्त्री० रोने की क्रिया;-कढ़ाइब, कूँ कूँ करके रोना प्रारंभ करना; ही अथवा हौ लगाकर तांता सूचित करनेवाले शब्द प्रायः अवधी में बनते हैं।

कुचकुचवा सं० पुं० उल्लू; इस नाम का एक इतिहास है। कहते हैं कि जब लक्ष्मणजी को शक्ति लगी और हनुमान दवा के लिए पर्वत ही उठा लाये तो बहुत विलंब हो गया और सारी रात बीत गई। उल्लू पक्षी बोला—"कुच-कुच कुच-कुच" अर्थात् जल्दी 'कुच-कुचा' (दे०-इब) कर दवा लगाओ। तभी से इस पक्षी का यह नाम पड़ा।

कुचकुचाइब क्रि० स० पत्थर से छोटे-छोटे टुकड़े करके कुचल देना (पीसना नहीं), ध्व० 'कुच-कुच' से।

कुचरा सं० पुं० बड़ा झाड़ू, स्त्री० री, कुचरी-बढ़नी, बुहारी; प्रायः कुचरा अरहर के सूखे पेड़ों से बनता है; सं० कूर्चिका।

कुचाब क्रि० अ० (महुए का) फूलना; दे० कूच,-चा।

कुचाल सं० स्त्री बदचलनी, बुरा व्यवहार, वै०-लि, सं० कु+चाल (चल्, चलना)।

कुचिला सं० पुं० एक विष; जहर-खाब, विष खा-ना।

कुचुर-कुचुर क्रि० वि० बेशरमी से या दूसरों की भावना का ध्यान किये बिना (ताकना); आँख फैलाकर, [illegible]

कुचुरा वि० पुं० जिसकी आँखे बंद सी हों, जो ठीक देख न सके; जिसकी आँखें साफ़ न हों, स्त्री०-री, वै० कुचुर।

कुचुराइब क्रि० स० कुछ मूँद लेना (आँख), जल्दी-जल्दी बंद करना; दर्द के मारे बंद करना।

कुच्छ वि० कुछ का प्र० रूप प्र०-च्छुइ।

कुछ-कुछ वि० क्रि० वि० थोड़ा सा, थोड़ा-थोड़ा; कुछ न कुछ, कोई न कोई वस्तु या बात। प्र० कुच्छ, कुच्छुइ,कुछ।

कुछु वि० कुछ; प्र०-इ,-च्छुइ,-छु। वै० कि-।

कुजगहाँ क्रि० वि० बुरे स्थान पर; शरीर के ऐसे स्थान पर जहाँ पर चोट, फोड़ा आदि शीघ्र ठीक न हो सके। सं० कु+जगह (दे०), फा० जाय, गाह, वँ० जायगा, स्थान।

कुजुगुति सं० स्त्री० निंदा, चुपके-चुपके की हुई विरोध या समालोचना की बातें; सं० कु+युक्ति अथवा उक्ति; वै०-जु-, दे० जुगुति; क० "कुजुगुति करत रहनियाँ"-समीर।

कुजाति सं० स्त्री० नीच जाति; जाति-, अनजान लोग, कोई भी, चाहे जो। सं० कु+जाति; मु० कुजाती क (अजाती) भात, गर्हित वस्तु।

कुजूनि सं० स्त्री० कुबेला, विलंब (भोजन, स्नान आदि के लिए)-होब,-करब; जूनि-, समय पर, चाहे जिस समय; सं० कु+जूनि (दे०), क्रि० वि०-नीं,विलंब से।

कुटइआ सं० पुं० कूटनेवाला; वै०-या,-टैया; भा० कूटने का पेशा, कूटने की मजदूरी।

कुटना-पिसना, सं० पुं० कूटना-पीसना; घर का काम; गृहस्थी।

कुटनी सं० स्त्री० दूती, स्त्रियों को पराये पुरुषों के लिए बहकानेवाली स्त्री; पुं०-ना।

कुटम्मस सं० पुं० बुरी तरह की मार; घोर दण्ड; कुटाई: 'कूटब' से;-होब,-करब; व्यं०।

कुटवइआ दे० कुटइआ।

कुटवाइब क्रि० स० कुटवाना, पिटवाना, मरवाना; भा०-ई; वै०-उब।

कुटाइब क्रि० स० कुटाना, कूटने में मदद देना; भा०-ई, कूटने की मजदूरी; वै०-उब।

कुटानि सं० स्त्री० कूटने की मिहनत या आवश्यकता।

कुटासि सं० स्त्री० कूटने की इच्छा।

कुटिआइब क्रि० अ० हँसी करना; योंही कहना; स० छेड़ना; दे० कुटि; वै०-याइब,-उब।

कुटिहा वि० पुं० मज़ाकिया; हँसी करनेवाला; स्त्री०-ही; कुटि+हा।

कुटी सं० स्त्री० कुटिया; प्र०-ही; सं०।

कुटुक वि० पुं० ज़रा भी कठोर नहीं; तनिक भी कटु नहीं; शब्दों अथवा वाक्यों के लिए ही प्रयुक्त; सं० 'कटु'।

कुटुम सं० पुं० परिवार, बालबच्चे, परिवार, खान्दान; सं० कुटुंब।

कुदुर-कुदुर क्रि०वि० धीरे-धीरे (चबाना, काटना या खाना); ध्व० ।

कुदुराइब क्रि० स० धीरे-धीरे और आराम से खाना; बिना परिश्रम किये खाना; अ० मौज करना; "कुदुर-कुदुर" से (अर्थात् 'कुदुर-कुदुर' की आवाज़ करते रहना) ।

कुटेम सं० पु० अतिकाल; बिलंब;-करब,-होब; सं० कु + टेम (अं० टाइम) समय ।

कुटेव सं० पुं० बुरी आदत;-परब,-होव; सं० कु + टेव (दे०) ।

कुट्ट वि० समाप्त (बात-चीत, समझौता आदि);-करब,-होब; प्रायः बच्चे अपने खेल में प्रयुक्त करते हैं । प्र०-ट्टै ।

कुट्टी सं० स्त्री० कटा हुआ चारा;-काटब ।

कुठाँव सं० पुं० बुरा स्थान; शरीर का ऐसा भाग जहाँ, घाव, फोड़ा आदि अधिक दुःख दे; ठाँव-क्रि० वि० किसी भी स्थान पर । सं० कु + ठाँव ।

कुठार सं० पु० कुल्हाड़ी; तुल० धरहु दंत तृन कंठ कुठारा; सं० ।

कुठिला दे० कोठिला ।

कुड़क दे० कुरुक ।

कुड़की दे० कुरकी (दे०)=स्थान ।

कुड़िया सं० स्त्री० छोटी कूँड़ी (दे०); वै०-आ; सं० कुंड ।

कुढंग सं० पुं० बुरा ढंग, बुरी स्थिति; वि०-गी, -गा, बेशऊर, मूर्ख ।

कुढ़ब क्रि० अ० भीतर ही भीतर रुष्ट होना (किसी के ऊपर); (हृदय का) निराश हो जाना; प्रे०-ढ़ाइब,-उब ।

कुण्ानी सं० स्त्री० छोटा कूँड़ा (दे०); बड़ा मिट्टी का बर्तन; वै० कुँड़नी; सं० कुंड ।

कुतरक सं० पु० कुसमय अथवा अव्यवस्थित भोजन स्नान आदि;-होब;-करब; सं० कुतर्क; दे० तड़क, ताव-तड़क ।

कुतवाइब क्रि० स० कूतब का प्रे० रूप; वै०-उब; भा०-ई, कूतने की क्रिया या उसकी मज़दूरी ।

कुतुआ वि० पु० अंदाज से निश्चित; बिना गिना या तोला, स्त्री०-ई; दे० कूतब; वै०-वा ।

कुदराब क्रि० अ० कूदकर चला जाना (वि० बच्चों का); कूदब, से; प्रे०-रवाइब,,-उब (?)

कुतुनब क्रि० स० काट लेना, थोड़ा सा कतर लेना; वै०-रब; प्रे०-नाइब,-राइब ।

कुदानि सं०स्त्री० कूदने लायक स्थिति;-होब; कूदने की क्रिया, चतुरता आदि ।

कुदाइब क्रि० स० कुदाना; कूदने में सहायता करना; प्रे०-दवाइब,-उब; 'कूदब' का प्रे०; भा० -ई ।

कुदारि सं० स्त्री० कुदाल; कुल कै-,बड़ा कपूत; पुं० -दरा,-दारा; सं० ।

कुनकुनाब क्रि० अ० कुछ कड़ुवा लगना; बुरा मानना, कुछ कहना (बुरा-भला); चेतना, उत्ते-जित होना ।

कुदासि सं० स्त्री० कूदने की प्रबल इच्छा;-लागब;

कुनह सं० पुं० ईर्ष्या, द्वेष,-करब,-राखब; वि०-ही, -दार; वै० कुंस; फा० कीनः ।

कुंस सं० पुं० ईर्ष्या, द्वेष;-राखब; वै० कुनह खुंस; वि०-सी,-हा,-ही, दे० कस,-नही ।

कुनाई सं० स्त्री० सूखी पत्तियों का चूरा; भूसे का बारीक भाग ।

कुनीति दे० कुनेति; सं० 'कुनीति' को 'कुनेति' समझ लिया गया है; देहातियों को इन दोनों का भेद नहीं ज्ञात होता ।

कुनेति सं० स्त्री० बुरी नीयत;-होब,-बसब (मन माँ, जिउ माँ); सं० कु + अर० नीयत; वि०-ती, -तिहा,-ही बुरी नीयतवाला या वाली ।

कुपित वि० अप्रसन्न; प्रायः पण्डित लोग ही इसे बोलते हैं; या व्यं० अथवा प्र० में साधारण लोग; वै० को-; सं० ।

कुपुटब क्रि० स० थोड़ा सा काट लेना; ऊपर से ज़रा सा काटना; मु० बीच में बात काट लेना; वै०-पटब; प्रे०-टाइब,-वाइब,-उब ।

कुपूत दे० कपूत ।

कुपेंच सं० पुं० बुरा दाँव, ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर गड़बड़ हो;-चें परब, पशोपेश में पड़ जाना; सं० कु + पेंच (दे०) ।

कुप्पा सं० पुं० बड़ी पीपी; पीपा; चमड़े का बर्तन; -होब, रुष्ट होकर मुँह फुला लेना; स्त्री०-पी; सं० कूपक, कूप ।

कुफार सं० पुं० व्यंग्य; कटु वाक्य; सं० कु + फार (दे०) ऐसी बात जो फार की भांति चुभे या हृदय को फाड़ दे;-कहब, बोलब ।

कुफुति सं० स्त्री० आंतरिक वेदना;-करब,-होब; फा० कोफत ।

कुफुर सं० पुं० भीषण परिवर्तन; घोर तथा अवां-छनीय स्थिति;-करब,-होब अर० कुफ्र (धार्मिक अविश्वास) ।

कुबजा सं० स्त्री० प्रसिद्ध कुबड़ी स्त्री जिससे कृष्ण जी का प्रेम था । सं०-ब्जा ।

कुबरहा वि० पु० जिसके कूबड़ हो; स्त्री०-ही; घृ०-हवा,-हिया ।

कुबरी सं० स्त्री० कुबजा का दूसरा नाम; टेढ़ी लकड़ी जो छड़ी की जगह प्रयुक्त हो ।

कुबाच सं० पु० बुरा बचन;-कहब,-बोलब; वै० -च्य; सं० कुवाच्य ।

कुमसब क्रि० अ० (फल का) पकने के स्थान में सूख जाना; मु० (व्यक्ति का) सूख जाना; प्रे०-सवाइब, -साइब,-उब; सं० 'उष्म' से = (गर्मी के कारण) बुरी तरह (कु) पकना । वै०-मु- ।

कुमारग सं० पुं० बुरा मार्ग; वि०-गी,-र्गिहा,-ही, तुल०-गामी; सं० कुमार्ग ।

कुमेटी सं० स्त्री० सलाह;-करब, षड्यंत्र करना; अं० कमिटी ।

कुरंग सं० पुं० बुरा रंग, बुरी स्थिति;-होब,-देखब; सं० कु + रंग; क्रि० वि०-गें, बुरी स्थिति में ।

कुरइब क्रि० स० (द्रव, अनाज आदि को) बरतन से बाहर गिरा देना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब ।

कुरउनी सं० स्त्री० ढेरी; पृथ्वी पर रखी हुई राशि (अन्न, फल आदि की);-लागब,-लगाइब, ढेर हो जाना, लगाना; पं० कूरा (दे०) वै०-रौ-।

कुरक-अमीन सं० पुं० कुर्की करनेवाला अफसर; वै०-रुक,-र्क-, अर० कुर्क-अमीन ।

कुरकी सं० स्त्री० कुर्क करने की आज्ञा या क्रिया; -आइब,-होब,-करब; वै०-रु-,-र्क-प्र०-कुर्की ।

कुरता सं० पुं० लंबी कमीज़ की तरह का कपड़ा जिसकी बाहों में प्राय: बटन नहीं होतीं और दोनों ओर जेबें होती हैं; स्त्री०-ती, बंगाली-, जिसकी बाहों में बटन लगती हैं । फ़ा० कुर्तः ।

कुरबान सं० पुं० चढ़ावा;-करब,-होब;-नी, भेंट, त्याग;-नी देब,-करब, चढ़ा देना, मार डालना; फ़ा० कुर्बान ।

कुरमियाना सं० पुं० कुर्मियों का मुहल्ला; उनकी बस्ती; वै०-आ-।

कुरमी सं० पुं० खेती करनेवाली जाति का हिंदू; स्त्री०-मिनि, क्रि०-मियाब, कुर्मी सा व्यवहार करना ।

कुरसी सं० स्त्री० बैठने की चौकी, जिसमें कभी-कभी बेत की बुनाई होती है; अफसर की जगह; -पाइब,-देब,-लेब, आदर पाना, देना, लेना, ।

कुरान सं० पुं० मुसलिमों की धार्मिक पुस्तक; -कसम, कुरान की सौगंध; अर० क़ुरआन ।

कुरिआ सं० स्त्री० झोंपड़ी;-धरब; वै०-या; अर० क़रिया (गाँव) ।

कुरिआइब क्रि० स० कूरी (दे०) लगाना; छोटी-छोटी ढेरी लगाना; एकत्र करना; वै०-उब;-याइब।

कुरिआब क्रि० अ० एकत्र होना, ढेर हो जाना; प्रे०-आइब,-वाइब ।

कुरी सं० स्त्री० डुडुआ (दे०) और कबड्डी के खेलों में खिलाड़ियों की पारी;-बदलब,-बान्हब,-बनइब ।

कुरील सं० पुं० एक शूद्र जाति ।

कुरुई सं० स्त्री० छोटी हल्की टोकरी या मौनी (दे०) ।

कुरुक दे० कुर्क;-करब,-होब । दे० कुरकी ।

कुरुख वि० पुं० कठोर (शब्द);-कहब,-बोलब; वै० कुरु-; सं० कटु, करुष ।

कुरुब सं० पुं० पड़ोस;-जवार, आस-पास के गाँव; अर० क़ुर्ब, निकटता; वै० क़ुरब-; अर० जवार, पड़ोस ।

कुरुर-कुरुर क्रि० वि० कुरुर-मुरुर आवाज़ करते हुए (चबाना या खाना); ध्व०; वै०-मुरुर; क्रि०-राइब ।

कुरूप वि० बदसूरत; सं०; भा०-ता ।

कुरौनी. सं० स्त्री० दे० कुरउनी; प० क़ुर:; वै० -ना (फै० सु०) ।

कुल सं० पुं० वंश;-कै कुदारि, नालायक;-मरजाद, कुल की मर्यादा;-बोरन,-नी, कुल को डुबाने-वाला या वाली; क० चर्ली-नौ गंगा नहाय; सं०।

कुलफा सं० प० एक साग जो गर्मियों में होता है; फ़ा० ख़ुर्फ़ा ।

कुलफी सं० स्त्री० मीठा बरफ जिसमें दूध आदि मिला हो।

कुलबोरन दे० कुल ।

कुलही सं० स्त्री० बच्चों की टोपी जिससे कान भी ढका रहता है; फा० कुलाह (टोपी) ।

कुलाँच सं० स्त्री० छलाँग; वै०-चि;-मारब,-मरब; तुर० कुलाच (कुदान) ।

कुलामनाय सं० स्त्री० वह बात जो किसी के कुल भर में मना (निषिद्ध) हो; सं० कुल + अर० मनअ;-होब,-करब ।

कुलिआना सं० पुं० कुली की मजदूरी; तुर० कुल (नौकर) ।

कुली सं० पुं० सामान ढोनेवाला;-गीरी, कुली का काम; तुर० कुल (नौकर) ।

कुलीन वि० पुं० अच्छे कुल का; श्रेष्ठ; स्त्री०-नि; सं० ।

कुलुफ सं० पुं० ताला;-लगाइब,-मारब; क़ुफ़्ल ।

कुल्थी सं० स्त्री० एक अन्न, जिसके पत्तों का साग और बीज की दाल बनाते हैं । सं० कुलत्थ:, नै० कुर्थि ।

कुल्ला सं० पुं० कुल्ली;-करब,-कराइब, हाथ धुलाना; सं० चुलक ।

कुस सं० पुं० कुश;-पहित्ती, तर्पण करने का सामान; लव-, राम के दोनों प्रसिद्ध पुत्र; वै० -सा; वि०-हा,-ही; सं० कुश ।

कुसल सं० स्त्री० कल्याण;-करब,-होब;-पूछब;-छेम, कल-;-मनाइब; सं० कुशल; क० कुसलाई,-लात (ता) तुल० ।

कुहीकाल वि० पुं० स्त्री० तेज, चतुर, चालाक;-होब ।

कुहुक सं० पुं० दे० कूक; क्रि-ब, मीठे स्वर से गाना; दोनों शब्द एक ही जान पड़ते हैं, पर एक गाने के लिए, दूसरा सुरीले रोने के लिए भी आता है; दोनों में कभी-कभी अंतर भी कम होता है यदि आवाज़ मीठी हो ।

कुहेसा सं० पुं० कुहरा;-परब; वै०-ही-,-हिरा, ।

कूँच सं० पुं० यात्रा, सफ़र का प्रारंभ;-करब,-होब; मु०-कइ जाब, मर जाना ।

कूँचब क्रि० स० तोड़कर छोटे-छोटे टुकड़े कर देना; किसी वस्तु को दूसरी वस्तु या पैर आदि से पिचल देना; चबाना; पान-, आराम करना; मु० खूब पीटना, मारना; प्रे० कुँचाइब,-वाइब,-उब ।

कूँचा सं० पुं० गली, मुहल्ला; गली-; प्राय: बहुत

कम प्रयुक्त; फा० कूच:; बड़ा झाड़ू; झाड़ू का अग्र भाग; कुछ वृक्षों के फूल, जैसे महुए का।

कूँची सं० स्त्री० चित्र बनाने का छोटा ब्रुश; दातून का अगला भाग जिससे दाँत साफ होते हैं; पुं०-चा।

कूँटा सं० पुं० डंठल के टुकड़े जो अन्न तैयार हो जाने पर खलियान में पड़े रहते हैं; स्त्री०-टी, छोटे-छोटे ऐसे टुकड़े जो जानवरों को खिलाये जाते हैं; वि० कुँटहा।

कूँटी सं० स्त्री० तंबाकू के छोटे निकम्मे टुकड़े या नाज के डंठलों के छोटे-छोटे टुकड़े जो दँवाई के बाद बचते हैं।

कूँड़ा सं० पुं० मिट्टी का बड़ा घड़ा; स्त्री० कुँड़नी; सं० कुंड।

कूँड़ि सं० स्त्री० खेत की जुती हुई गहरी पंक्ति; पानी चलाने का खुले मुँह का लोहे या मिट्टी का बर्तन जिसे 'बरेत' में बाँध कर सिंचाई के लिए काम में लाते हैं;-बरेत (दे०);-बोइब, पंक्ति में बीज बोना, 'छिटुआ' (दे०) नहीं; सं० कुंड; 'कूँड़ा' का स्त्री०।

कूँड़ी सं० स्त्री० एक खुले मुँह का मिट्टी या पत्थर का बर्तन;-सोंटा, भाँग घोंटने का सामान; सं० कुंड।

कूँथब क्रि० अ० ठहर ठहर कर दर्द करना (पेट का)।

कूआँ सं० पु० कुआँ का प्र० रूप। सं० कूप।

कूरु सं० स्त्री० रोने की आवाज; स्त्रियों के भेंटने की उतनी आवाज जो एक साँस में रोने पर हो; एक-, दुइ-रोइब; "कुहुरु" का वै० रूप।

कूरुब क्रि० स० (घड़ी में) कूरु देना; प्रे० कुरुा-इब,-वाइब,-उब।

कूकुर सं० पुं० कुत्ता; स्त्री०-रि; सं० कुक्कुर:।

कूच सं० पुं० (महुए का) फूल;-लेब, फूल लेना; वै०-चा; क्रि० कुचाब (दे०)।

कूचुर वि० पुं० जिसकी आँख मुलमुलाती हो; दे० कुचुरा; स्त्री०-रि; क्रि० कुचुराब; प्र०-रहा।

कूटब क्रि० स० कूटना, मारना; प्रे० कुटवाइब,-उब; काटब-, कम करना, काट-, काट-छाँट।

कूटि सं० स्त्री० हँसी, मज़ाक़;-करब,-होब; वि० कुटिहा; क्रि० कुटिआइब (दे०)।

कूटू सं० पुं० एक अनाज का सा दाना जो फला-हार के काम आता है।

कूत सं० पुं० अनुमान, अंदाज़;-होब,-करब,-लगा-इब; अन-, असंख्य; क्रि०-ब, अनुमान लगाना; वि० कुतुआ।

कूत-कूत ध्व० छोटे कुत्तों को बुलाने का शब्द; 'कुत्ता' से लघु० रूप।

कूतब क्रि० स० (संख्या अथवा तौल आदि का) अनुमान लगाना; प्रे० कुताइब,-तवाइब,-उब।

कूद-काद सं० पुं० कूद-फाँद;-करब,-होब; पू० -दि-दि।

कूदब क्रि० अ० कूदना; प्रे० कुदाइब,- दवाइब, -उब; मु० जल्दी करना, घबरा जाना, बेसमझी करना, राज़ी न होना;-फानब, उछरब-।

कूवति सं० स्त्री० शक्ति;-होब,-करब,-देखब; अर० कूवत; प्र० कुव्वति; वि० कुव्वती,-दार।

कूबर सं० पु० कूबड़;-निकरब,-होब; वि० कुबरहा, -ही।

कूबा सं० पुं० जिसकी पीठ टेढ़ी हो; स्त्री०-बी।

कूरा सं० पुं० ढेर, हिस्सा;-लगाइब,-करब,-देब, -लागब; स्त्री०-री; क्रि० कुरिआइब; लघु० कुरौनी, -रउनी; अर०कूर: (पजावा दे०)।

कूरी सं० स्त्री० छोटी ढेरी;-चलाइब, साँप या अन्य विषैले जंतुओं के विष उतारने के लिए सरसों की "कूरी" पर मंत्र पढ़कर फूँक मारने की क्रिया करना जिससे रोगी के रखे हुए हाथ जंतु विशेष की कूरी पर रेंगते-रेंगते स्वयं पहुँच जाते हैं। इसी से विष के प्रकार की सूचना मिल जाती है और वही पीले सरसों पीस कर विष-व्याप्त अंग पर मले जाते हैं। क्रि० कुरिआइब; जूरी-, अव-शेष वंश, नाम व निशान; वै० प्र०-ढी।

कूला सं० पुं० दिल के नीचे का भाग, पीठ के पीछे कमर के दोनों ओर का निचला भाग; वै० -ल्हा।

कूवाँ सं० पुं० 'कुआँ' का प्र० रूप; सं० कूप।

केंचुआ सं० पुं० प्रसिद्ध कीड़ा; मु० बहुत अस-हाय और निर्बल;-परब, पेट में रोग के कारण केंचुए पड़ना।

केंचुलि सं० स्त्री० साँप की केंचुल;-छोड़ब।

केउ सर्व० कोई; प्र०-ऊ,-हू; वै०-व, को-,क्यउ; केउ-कोई कोई,-न, कोई नहीं; सं० कोऽपि।

केकर सर्व० किसका; स्त्री०-रि,-रे, किसके; वै० -हकर; प्र०-हि-,-हुकै (नायँ); मुस०-का,-की।

केकरहा सं० पुं० केकड़ा; वै० कें—।

केकहरा दे० ककहरा।

केकई सं० स्त्री० कैकेयी; रानी-, महारानी कैकेयी; वै० क-,-ई; सं० कैकेयी।

केकाँ सर्व० किसको; ल० सी० ह० हिकाँ।

केठईं क्रि० वि० किस स्थान पर। वै० क-,-ठाईं; -ठाँवँ,-ठाहर,-हिर,-ठाहर, सं० किं स्थानं,-ने।

केतत वि० पुं० कितना बड़ा; स्त्री०-ति, प्र०-हत।

केतना वि० पु० कितना; स्त्री०-नी; वै०-रा,-री, क-, कतिक, केतिक; सं० कत।

केतव क्रि० वि० या तो; वै० कितौ, के-, कतव; प्र०-त्त-, कित्तौ।

केतहँत क्रि० वि० कहाँ तक; दे० यतहँत, वत-।

केतहाँ क्रि० वि० कहाँ; वै०-हँ; सं० कुत्र।

केताड़ा सं० पुं० मोटा गन्ना; स्त्री०-ड़ी, छोटा या कम मोटा गन्ना; वै०-रा।

केतिक दे० केतना; प्र०-त्ति-, कत्तिक, कतेक।

केतौ दे० केतव।

**केथा** सं० पुं० किस (वस्तु); स्त्री-थी; वै०-थुआ; प्र०-त्थू,-त्थौ, कित्थौ; सं० कः ।

**केथू** वि० किसी, किसी भी: प्र०-त्थू,-त्थौ,-थौ ।

**केदहुँ** दे० किदहुँ; क० किधौं ।

**केर** कारक चिन्ह का, की-वै० का; स्त्री०-रि ।

**केरमुआ** सं० पुं० पानी में होनेवाला एक साग; लघु०-ई; वै०-वा; फ़ा० करम; तु० करम-कल्ला वै० के- ।

**केररुआ** सं० पुं० एक जंगली फल जो काँटेदार झाड़ी पर होता है; इसका साग विशेषत. जेठ, दशहरे के दिन खाया जाता है ।

**केरा** सं० पुं० केला; स्त्री० लघु०-री, सं०कदली ।

**केराना** सं० पुं० किराना, अनाज:-करब, नाज की दूकान रखना; दे० केराइब क्रि० स० ।

**केराया** सं० पुं० किराया; वै०-वा; भारा-,-भारा; अर० किरायः ।

**केराव** सं० स्त्री० मटर; संबंधकारक के साथ इसका रूप 'केराई,-ये' हो जाता है;-ई,-ये क खेत; -क दालि क्रि० इब, सूप में अनाज अलग करना ।

**[illegible]री** सं० स्त्री० छोटे-छोटे जंगली केले; सं०कदली ।

**केलि** सं० स्त्री० खिलवाड़, मज़ेदारी;-करब; सं० ।

**केवला** दे० कवल ।

**केव** वि० सर्व० कोई;-केव, कोई कोई; वै०-उ, कोई; सं० कोऽपि ।

**केवट** सं० पुं० एक जाति जिसके लोग मछली मारने, नाव चलाने आदि का काम करते हैं; स्त्री० -टिन,-नि; तुल०;-हिया, केवटों का मुहल्ला ।

**केवटी** सं० स्त्री० कई अन्नों की मिली दाल; वै० केउटी, क्य- ।

**केवाँचि** सं० स्त्री० एक जंगली पेड़ जिसकी फलियों की सुंदर तरकारी होती है, पर उनके ऊपर के बालों से खुजली उठती है; इन्हें एक दूसरे पर फेंककर स्त्रियाँ एक दूसरे से हँसी करती हैं; "छतीसी के छेद केंवाच करावती"-समीर; वै० कवाँचि,-च ।

**केवाँर** सं० पुं० किवाड़; स्त्री०-री; वै०-रा;-देब, -मारब,-चढँगाइब (दे०) ।

**केस** वि० क्रि० वि० कैसा; वि० स्त्री०-सि;-केस, कैसे-कैसे;-स, कैसे, किस प्रकार; वै० क्यस, क्यसस, कस, कसस ।

**केसरि** सं० स्त्री० केसर, ज़ाफ़रान; बहुमूल्य पदार्थ, अलभ्य वस्तु; मु०-फरब,-होब, अद्भुत वस्तु देना (किसी व्यक्ति या वस्तु का); वै०-र; सं०; वि० -या,-आ ।

**केहर** क्रि० वि० किधर, वै० क्य- ।

**केहाँ-केहाँ** ध्व० छोटे बच्चे के चिल्लाने या रोने की आवाज़;-करब; क्रि० केहाँब; वै० क्यहाँ-; भो०, मै० क्य-,च्य — ।

**केहि** सर्व० किस? इसमें कारक लग जाते हैं, उ० -कर,-पर,-से,-कौं; सं० कः ।

**केहू** सर्व० किसी भी; इसमें भी ऊपर की भाँति सभी कारक संयुक्त कर दिये जाते हैं; के या केहि का प्र० रूप ।

**कै** संबो० क्यों जी, क्यों भाई,-हो, इसके आगे प्रायः संबोधित व्यक्ति का नाम जोड़ दिया जाता है; सी० लखी, ल० ह०; पू० अ० में 'का' ।

**कै** सर्व० कितना, कितने;-ठूँ,-ठीं,-ठें, कितने,-जने, -जनी, कितने व्यक्ति;-ठू,-ठें लगाकर सख्या की स्पष्टता की जाती है; प्र०-यो,-यौ,कई, कितने ही ।

**कैर** वि० पुं० सफेदी लिए हुए; स्त्री०-रि; वै०कैरा, -रहा, कयर; अं० फ़ेयर ।

**कैसन** वि० पुं० कैसा, स्त्री०-नि; वै० कइ-, कइस; प्र०-नौ, चाहे जैसा ।

**कैसे** क्रि० वि० कैसे; वै० कइ-, कइसय;-कैसै, कैसे-कैसे; प्र०-सेव,-स्यो, चाहे जैसे ।

**कैहा** क्रि० वि० कब, किस दिन, वै० कहिआ (दे०) यह शब्द वास्तव में 'ह' और 'अ' के विपर्यय से बना है । प्र०-है, बहुत दिन पूर्व; सं० कदा ।

**कोंखि** सं० स्त्री० गर्भ, पेट;-में, गर्भ से (उत्पन्न), -खीं, पेट से; सं० कुक्षि; वै० को-; मै०भो० ।

**कोंचब** क्रि० स० कोंचना, छेद करना; प्रे०-चाइब, -चवाइब,-उब; सं० कुच् ।

**कोंछ** सं० पुं० (स्त्रियों का) अंचल; वै०-छा;-पूजब, एक संस्कार जिसमें नई बहुओं और सधवाओं के विदाई के अवसरों पर उनके आँचल चावल गुड़ आदि से भरे जाते हैं;-छे क चाउर, ऐसा दिया हुआ चावल, गुड़ आदि । सं० कुक्षि, मै०, भो० खोइँछा ।

**कोंछि** सं० स्त्री० फलों का गुच्छा जो पेड़ पर हो; सं० कुक्षि ।

**कोंछी** सं० स्त्री० ऊँचे पेड़ों से फल तोड़ने के लिए लंबी लग्गी में लगी हुई एक जाली जिससे फल साबित मिल सकें ।

**कोंड़िलाचब** क्रि० अ० आनन्द के मारे नाचना; कोंढ़ (दे०)+नाचब ?

**कोंड़** सं० पुं० आनंद; हँसी;-करब, मज़ाक करना, आनंद लेना, हँसी करना; सं० क्रीड़ा ?

**को** सर्व० कौन; वै० के, कवन,-नि (स्त्री०); सं० कः; ल० सी० ह० ।

**कोइना** सं० पुं० महुए का फल; वै०-या (जौ० प्रत०); स्त्री०-नी, भो० ।

**कोइरी** सं० पुं० एक हिन्दू जाति के लोग जो कंठी पहनते और मांसादि नहीं खाते; स्त्री०-रिनि; वै०-यरी, क-; ये लोग शाक पैदा करते और बेचते हैं; दे० कोयर ।

**कोइल** सं० स्त्री० कोयल; वह पका आम जो किनारे सूख कर विशेष सुगंध देता हो । कहते हैं ऐसे फल पर कोयल पाद देती है तभी यह ऐसा हो जाता है; वै०-लि, कैलि । क्वैलिया, क्वहलरि;-ली, काली स्त्री (स्त्रियों द्वारा गाली में प्रयुक्त) ।

कोइला सं॰ पुं॰ कोयला;-होब, जल जाना, क्रोध करना, जल कर राख हो जाना; वै॰ क०-; क्रि॰ -ब, जलती लकड़ी का-होना या बनना।

कोई सर्व॰ कोई; वै॰-उ, केव,-उ; प्र॰-ई;-ऊ, केऊ; सं॰ कोऽपि।

कोई सं॰ स्त्री॰ (पशु के) पेट के दोनों किनारे जो खाने पर भर जाते हैं;-उपराब।

कोउ सर्व॰ कोई;-कोउ, कोई कोई; तुल॰ कोउ कोउ पाव भक्ति जिमि मोरी; सं॰ कोऽपि; प्र॰ -ऊ।

कोकसास्त्र सं॰ पुं॰ कामशास्त्र;-पढ़ब; सं॰ कोकशास्त्र।

कोका वि॰ मूर्ख, उल्लू;-बाई, बेढंगा;-दास, निरा उल्लू; वै॰ को-।

कोट सं॰ पुं॰ पहनने का कोट; अं॰; स्त्री॰महल; बड़े आदमी का मकान;-टें, राजदरबार में; मालिक के घर, दूसरे अर्थ में; वै॰-टि।

कोटर सं॰ पुं॰ रहने का स्थान; अं॰ क्वार्टर; वै॰ का-।

कोटि सं॰ स्त्री॰ करोड़ों यत्न।

कोठरी सं॰ स्त्री॰ छोटा कमरा; सं॰ कोष्ठ।

कोठा सं॰ पुं॰ मकान के ऊपर का तल्ला; छत के नीचे बना हुआ वह स्थान जिसमें वस्तुएँ सुरक्षित रखी रहें; सं॰ कोष्ठ;-रि, भंडार का रक्षक।

कोठी सं॰ स्त्री॰ माल रखने या बेचने का बड़ा स्थान; महाजन का घर; नये प्रकार का बँगला; -चलब, कारबार होना; सं॰ कोष्ठ।

कोड़ा सं॰ पुं॰ चाबुक;-मारब,-लगाइब।

कोड़ी सं॰ स्त्री॰ बीस की राशि; दुइ-,चालीस;

कोढ़ सं॰ पुं॰ कुष्ट, कोढ़ी का रोग; क्रि॰-ढ़ियाब, -आब, कोढ़ी हो जाना; सं॰ कुष्ठ।

कोढ़िकस सं॰ पुं॰ कोढ़ का प्रारंभ; कुष्ठ का फैलाव; वि॰-हा,-ही।

कोढ़ी सं॰ पुं॰ (व्यक्ति) जिसे कोढ़ हो; वि॰ घृणित; बुरी आदतों वाला; सं॰ कुष्ठी; क्रि॰ -ढ़िआब,-याब।

कोतल वि॰ पुं॰ खाली (सवारी), मु॰ खाली हाथ; क्रि॰ वि॰ बिना कार्य सिद्ध किये; फ़ा॰।

कोतवाल सं॰ पुं॰ पुलीस का अफ़सर जो एक नगर की शांति का उत्तरदायी होता है; वै॰ कु-; भा॰-ली; गी॰ सैयाँ भये-अब डर काहे कै?

कोतहगरदनिआ वि॰ जिसकी गर्दन छोटी हो; फा॰कोताह + गर्दन; ऐसे लोग चालाक और दीर्घ-जीवी माने जाते हैं।

कोताह वि॰ कम, तंग; भा॰-ही, कमी;-ही करब, बचाना, कंजूसी करना; फा॰ कोताह; कुताही (कमी); भो॰।

कोतिआ वि॰ दुबला-पतला और ऐसे बैठक का जो शीघ्र बूढ़ा न हो (बैल, व्यक्ति); वै॰-या,-ती; मै॰ काँत।

कोदई सं॰ स्त्री॰ कोदो का चावल या भात; सं॰ कोद्रु; वै॰ क-।

कोदव सं॰ पुं॰ कोदो का पेड़, चावल या बीज आदि; वै॰-दो,-दौ; भो॰; सं॰ कोद्रु।

कोन सं॰ पुं॰ कोना, कोण;-आरी, खेत का कोना और किनारा;-गोड़ब, जुताई के बाद खेत के किनारे, कोन आदि के बचे हुए भागों को गोड़ना; स्त्री॰-निया, मकान की छत का कोना,-का घर, कोनेवाला कमरा; स-, कोने की ओर; वै॰-ना क्रि॰-नाब, कोने में जाना;-नियाब,-निआइब, कोने में छिपना; छिपाना;-कस, वि॰ कोने की ओर; -सै, प्र॰।

कोप सं॰ पुं॰ क्रोध;-करब; क्रि॰ब; राम क-, भगवान की कुदृष्टि (यह किसी बुरे अवसर का वर्णन करते समय प्रारंभ में कहा जाता है);-भवन, वह स्थान जहाँ क्रोध करनेवाला व्यक्ति जाकर बैठे।

कोमर सं॰ पुं॰ नदी के कटाव का वह कोना जहाँ घास आदि बहुतायत से हो।

कोमल वि॰पुं॰ नरम,आराम-तलब; भा॰-ई; सं॰।

कोय सर्व॰ कोई; कविता में प्रयुक्त; "जाको राखै साइयाँ मारि न सकिहै कोय"; सं॰ कोऽपि।

कोयर सं॰ पुं॰ जानवरों के खाने का चारा;-राही, चारे की कटाई, उसकी कमी आदि।

कोयरी सं॰ पुं॰ यह जाति शायद साग-भाजी की खेती करने के कारण ही (कोयर की) ऐसा कहलाती है। वै॰-इरी, क्इ-;दे॰; स्त्री॰-रिनि; कोयर-वाली।

कोरचा सं॰ पुं॰ छिपा हुआ धन, चुराकर बचाया हुआ पैसा;-करब,ऐसी बचत करना; वै॰ क्व-,वि॰ -चहा,-ही, इस प्रकार पैसा जोड़नेवाला या वाली। मै॰ कोंसल, भो॰ कोसिला?

कोरट सं॰ पुं॰ रियासत की सरकार द्वारा देख-रेख; कोर्ट (ऑव वार्ड);-होब, (किसी के इलाक़े की) सरकार द्वारा देख रेख होना,-करब; अं॰ कोर्ट।

कोरमब क्रि॰ अ॰ लटक कर मर जाना; रस्सी से लटककर आत्मघात करना; मु॰किसी के यहाँ खाने के लिए पड़े या लटके रहना; प्रे॰-माइब दे॰ वर-मब,-माइब।

कोरव सं॰ पुं॰ छत में लगनेवाला लकड़ी या बाँस का टुकड़ा; वै॰-रौ,-रो; मु॰-गनब, भूखा रहना; रात को भूखा रहने पर यदि नींद न आवे तो छत के नीचे लेटा व्यक्ति लकड़ियाँ गिनकर ही समय काट सकता है।

कोरवर वि॰ पुं॰ सूखा (पकौड़ा), गीले को भिज-वर (दे॰) कहते हैं; मु॰-करब,-होब, भूखा रह जाना; कोरा ही रहना, दे॰ कोरै।

कोरा सं॰ पुं॰ गाढ़े का थान; वि॰ न धुला हुआ (नया कपड़ा); उपयोग में न आया हुआ; स्त्री॰ -रि,-री (धोती); प्र॰-रै,-रिहि,-रिनि।

805 325050

**कोरा** सं० पुं० गोद;-लेब, गोद में लेना.-में लुकाब, शरण लेना, मदद माँगना; प्रा० कोल (पास), उ० कौली (भरना): क्रि०-इब, दे०,-राँ, गोद में,-होब, गोद में होना, छोटा होना (बच्चे का)।

**कोराइब** क्रि० अ० (गाय भैंस का) ब्यानेवाली होना; ऊपर के ही शब्द से यह क्रिया बनी जान पड़ती है अर्थात् गोद, अंक या पेट (गर्भ से या बच्चे से) भरा होना। वै०-उब; भो०-इराइब, मै० कुरहरायल।

**कोरान** सं० पुं० कुरान;-कसम, कुरान की सौगंद; वै० कु-;अर०।

**कोरि** सं०स्त्री० किनारा, धार;-मारब, धार को मोड़ देना, छाँट देना;-निकरब, किनारा निकलना या निकला रहना;-कसरि, कमी-बेशी, दुर्गुण;-होब; मै०-र।

**कोरी** सं० पुं० शूद्रों की एक उपजाति; शायद 'कोल' से इस शब्द का संबंध हो।

**कोरै** क्रि० वि० कोरा ही; बिना काम किये हुए ही; -लौटब,-लौटाइब।

**कोरो** दे० कोरव; वै० कोरौ;-बाती, छप्पर छाने का सामान, मै०-बत्ती; भो०।

**कोलवा** सं० पुं० खेत का छोटा टुकड़ा; छोटा सा खेत; यक-, दुइ-;वै० क्व-।

**कोलिआ** सं० स्त्री० छोटी सी गली; वै०-या।

**कोल्हार** सं० पुं० कोल्हू (गन्ने का) का घर; गुड़ पकाने का स्थान; मै० कल्हुआर, भो०कोल्हवाड़ी।

**कोल्हू** सं० पुं० तेल या गन्ना पेलने का पेंच; -चलब,-चलाइब,-पेरब,-हाँकब।

**कोवा** सं० पुं० कटहल के फल के भीतर के मीठे बीज; साँप के छोटे बच्चे; वै०-आ, पो-(प्रत०जौ०) मै०-आ।

**कोसा** सं० पुं० मिट्टी का छोटा कटोरा; स्त्री०-सिआ,-या; सं० कोष।

**कोह** सं० पुं० क्रोध;-करब; क्रि०-हाब, क्रोध करना; वि०-ही (क०) सं० क्रोध। तुल० बाल ब्रह्मचारी अति कोही।

**कोहबर** सं० पुं० विवाह के समय का वह स्थान जहाँ वर-वधू एकत्र बैठाये जाते हैं; तुल०; सं०कोह (क्रोध)+वर, जहाँ वर कभी-कभी क्रोध करे या रूठे; विवाह में कई बार दूल्हा रूटता और मनाया जाता है। मै० कोबरा,-घर।

**कोहँड़ी** सं०स्त्री०बर्तन आदि गृहस्थी के सामान;-करब, सामान लेकर गाँव छोड़ जाना; शा० 'कोहा' (दे०) से-।

**कोहँड़ा** सं० पुं० कुम्हड़ा; सं० कुष्मांड।

**कोहँड़ौरी** सं० स्त्री० सफेद कुम्हड़े से बनी बड़ी।

**कोहाँर** सं० पुं० मिट्टी का बर्तन बनानेवाला; स्त्री०-रिनि,-इनि,-इन; भा०-हँरई,-पन, सं० कुंभकार;-हाँरी; जा० "मोहि का हँसेसि कि कोहँरहि?" मै० कुम्हार, भो० कोहाँर।

**कोहा** सं० पुं० मिट्टी का बड़ा कटोरा; बोये खेत का एक छोटा खंड; सं०कोष, मै० भो०।

**कोहाइन** सं० स्त्री०, कुम्हार की स्त्री; कहा० हौ-हानि-चुतरे प आवाँ, जल्दी-जल्दी में कुम्हार की स्त्री ने आवाँ अपने चूतड़ों पर ही लगा लिया।

**कोहाब** क्रि० अ० मचल जाना, क्रोध करना, रूठ जाना; सं० क्रोध।

**कौंसल** सं० पुं० सलाह, राय;-करब,-होब; अं० काउंसिल।

**कौआ** सं० पुं० दे० कउआ; सं० काक।

**कौआब** दे० कउआब।

# ख

**खँखारब** क्रि०अ० खाँस देना (सूचनार्थ), वै० खें-, दे० खखार।

**खँघारब** क्रि० स० पानी से धोना (बर्तन को); मु० नष्ट कर देना;-घारि उठब, नष्ट हो जाना, झट से नष्ट होना।

**खँचिआ** सं० स्त्री० छोटी टोकरी (घास आदि के लिए);-भर, बहुत से; पुं० खँचवा, खाँचा; इन टोकरों में अनाज नहीं रखा जा सकता, क्योंकि इनमें बड़े-बड़े छेद होते हैं। लघु०-चोली,-ला; वै०-या।

**खँचुहा** सं० पुं० कछुआ; स्त्री०-ही; वै० खें-; सं० कच्छप।

**खँझड़ी** सं० स्त्री० एक छोटा-सा बाजा जो एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से बजाया जाता है;-ड़िहा, ऐसा बाजा बजानेवाला।

**खंझर** वि० पुं० मिला हुआ (अन्न), खालिस नहीं; प्र०-रा; अंझर-, रद्दी।

**खंड** सं० पुं० भाग, (मकान का) पूरा अंश, उ० दुइ खंड कै मकान, सं०;मु०-खै-खंड, टुकड़े-टुकड़े।

**खंडब** क्रि० सं० टुकड़े करना; तोड़ देना; तुल० अजगौ खंडेउ ऊखि जिमि'''; सं० खंड।

**खँड़हर** सं० पुं० खँड़हर;-परब,-होब; सं० खंड।

**खँड़सरी** सं० स्त्री० खाँड बनाने की दूकान; खँड़-साल; वै०-सारि,-र।

**खँड़िआ** सं० स्त्री० टुकड़ा (मछली, मांस का); सं० खंड; क्रि०-इब, टुकड़े करना।

**खँड़ुवा** सं० पुं० हाथ का कड़ा; वै०-आ।

**खँढ़उली** सं० स्त्री० इंट के टुकड़े; वै०-ढौ-, खँड़-; सं०खंड+अवलि (टुकड़ों की पंक्ति)।

खइँचड़ सं० पुं० खच्चर; वि० खराब, भिक-भिक करनेवाला, रद्दी; वै० खैं-, खच्चड़।
खइँचब क्रि० स० खींचना, ले लेना; प्रे०-चाइब, -वाइब,-उब।
खइँतड़ वि० पुं० निकृष्ट (व्यक्ति), झगड़ालू; स्त्री० -ड़ि; वै० खैं-,-यँ-।
खइनी सं० स्त्री० खाने का तंबाकू; पीनेवाला तंबाकू 'पियनी' (दे०) कहलाता है; 'खाब' (दे०) से; सं० खाद्।
खइर सं० स्त्री० कुशल; खैर; होब, अच्छा होना, -मनाइब,-माँगब,-करब; वै०-रि, खैर; अर० ख़ैर; कबी० "कबिरा खड़ा बजार में सब की माँगै खैर"
खइरात सं० स्त्री० दान, मुफ़्त में देना;-करब, दान करना,-लेब; वि०-ती, मुफ़्त, वै०;-ति,-य-; अर० ख़ैरात।
खइरियत सं० स्त्री० कुशल;-करब,-पूछब,-होब; वै०-य-,-ति;
खइरी वि० स्त्री० खैर रङ्ग की; पुं० खयर (दे०)।
खइलरि सं० स्त्री० रई; मट्ठा बनाने की लकड़ी की बनी चीज़; मुड़-, चक्कर में डालनेवाली बात, परेशानी;-करब, तंग करना; मुड़ (मूड़=सिर) +ख-, सिर को मथनेवाली (बात)।
खइहँस सं० पुं० झंझट; (हृदय या मस्तिष्क को) खा डालनेवाला? 'खाब' से (खइ+हँस);-होब, -करब,-रहब, जिउ कै-, परेशानी; अथवा क्षय (क्षय-खइ)+हस (हास-हस) स्थिति जिसमें क्षय तथा ह्रास हो? या जिसमें 'हँसी' (सुख) का क्षय हो।
खउँखिआब क्रि० अ० झुँझलाकर बोलना, जल्दी से चिल्ला उठना; फा० ख़ूँख़्वार से? अर्थात् डरावना होना; दे० कउकिआब।
खउकब क्रि० अ० चिल्लाना; स० डांटना, डराना; प्रे०-कवाइब; वै० घ-।
खउफ सं० पुं० ध्यान, डर, चिंता;-लागब,-होब, -करब,-खाब,-रहब; वै० खौ-,-फि; अर० ख़ौफ़।
खउरा सं० पुं० खुजली (प्रायः पशुओं, विशेषतः कुत्तों की);-होब; क्रि०-ब, खुजली से क्लिष्ट हो जाना; वि०-रहा,-ही; कहा० गाँड़ि-ही मखमले क भगवा! प्रे०-इब, खुजलाना।
खउलब क्रि० अ० खौलना, उबलना, प्रे०-लाइब, -उब।
खउहटि सं० स्त्री० खाने के लिए दी हुई मज़दूरी, अनाज आदि;-लेब,-देब; वि० फूहड़ (स्त्री०)।
खकसी सं० स्त्री० एक जंगली फल जिसकी तरकारी होती है; वै० खे-,-खुसी।
खखरहा वि० पुं० पुराना, बीच-बीच में छेदवाला (टोकरा); स्त्री०-ही, (झउली, दउरी दे०) वै० खाँखर, खँ-।
खखराब क्रि० अ० पुराना होना, छेदवाला हो जाना; 'खाँखर' हो जाना।
खखाव क्रि० अ० जोर से हँसना, प्र०-क्खा-; खखाय क हँसब, ठट्ठा मार के हँसना।
खखार सं० पुं० जमा हुआ थूक, गले के नीचे से निकाला हुआ थूक; वै० खे-,खँ-; क्रि०-ब, आवाज़ करके थूकना; वै० खे-,खँ- (दे०)।
खखुण्डी सं० स्त्री० भुट्टे का डंठल जिसमें से दाना निकल गया हो; वै० खु-।
खग सं० पुं० पक्षी; केवल क० कहावतों आदि में प्रयुक्त;-"खग जानै खग ही की भाषा"; सं०।
खङव क्रि० अ० घटना, कम पड़ना; सं० क्षय से?
खङवा सं० पुं० पशुओं का एक रोग जिसमें खुर सड़ने लगता है; क्रि०-आब, खाइब, ऐसे रोग से ग्रसित होना।
खचाखच क्रि० वि० पूरी तरह (भरा रहना); प्र० -च्च-।
खँचोला दे० खँचिआ।
खजनची सं० पुं० कोषाध्यक्ष; रुपया रखनेवाला।
खजाना सं० पुं० कोष; मु० बहुत सा माल; व्यं० कुछ नहीं;-होब,-धरब,-धरा रहब; अर० ख़ज़ान:; -नची (अर०-नःदार)।
खजुआब क्रि० अ० खुजाना, खुजलाना, प्रे०-इब, -उब,-वाइब; मु० चूतर खजुआइब, पछताना, देखते रह जाना; खाज (दे०) से।
खजुलिहा वि० पुं० जिसे खुजली हुई हो; स्त्री० -ही।
खजुली सं० स्त्री० खुजली, खाज; दे० खाज।
खजूरि सं० स्त्री० खजूर का पेड़ और उसका फल; मु० बहुत लंबा; कहा० सरग से गिरा-मैं अटका। अर्थात् छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवंति।
खटइहा वि० पुं० खटाई का शौक़ीन; जिसमें खटाई रक्खी गई हो (बर्तन); स्त्री०-ही।
खटक सं० पुं० संदेह, चिंता; बे-,नि-; वै०-का, खुटका; प्र० खुटुक,-का;-करब,-होब,-रहब।
खटकीरा सं० पुं० खटमल; कहा० कायथ औ खट-ये का जानैं पराई पीरा; खट+कीरा (दे०) कीड़ा, खाट का कीड़ा।
खटलुस वि०पुं०थोड़ा खट्टा, ज़रा खट्टा; स्त्री०-सि।
खटपट सं० स्त्री० अनबन, मन-मुटाव,-रहब,-होब, कोशिश, दौड़ धूप,-करब, वि०-टी,-टिहा; दौड़-धूपवाला, तिकड़मी।
खटपटी सं० स्त्री० पैर में पहनने की खड़ाऊँ; वि० खटपट करनेवाला, तिकड़मी; वै०-टिहा।
खटमचवा सं० पुं० छोटी-सी चौकी या खाट जिस पर रोगी आदि को उठाकर या बैठाकर ले जायँ; खट (खाट)+मचवा (दे०); वै०-चिआ (दे०)।
खटमल दे० खटकीरा।
खटरस वि०कई रसोंवाला, मज़ेदार; सं० षट्रस।
खटर-पटर सं० पुं० खट-पट की आवाज़; थोड़ा बहुत गड़बड़; अनबन, ठहर-ठहर के लड़ाई झगड़ा;-लाग रहब, झगड़ा लगा रहना।

खटराग सं० पुं० झंझट; -करब,-होब;-रहब; षट्राग (छः राग जिसको जानने में समय तथा परिश्रम चाहिए)।

खटखट सं० पुं० समाज में स्थान, गौरव, मान: -होब; वास्तव में इस शब्द के अर्थ हैं "खट-खट की आवाज़" अर्थात् समाज में नाम-कीर्ति।

खटाई सं० स्त्री० खटाई;-परब,-डारब; -मिठाई अच्छाई-बुराई।

खटाऊ वि० खटानेवाला, बहुत दिन तक रहनेवाला; दे० खटाब।

खटाक सं० पुं० जल्दी:-से, तुरंत, वै० खट से, प्र०-ट्ट-,-का।

खटाब क्रि० अ० चलना (वस्तु का), बहुत दिन तक टिकना या खराब न होना।

खटारा वि० पुराना या पुरानी (गाड़ी, मोटर आदि), बेकार, रद्दी।

खटासि सं०स्त्री० खट्टापन, थोड़ी खटाई, वै०-स।

खटिआ सं० स्त्री० खाट:-निकरब, मर जाना (तोरि-निकरै, तू मर जा, प्रायः यह शाप स्त्रियों के मुँह से सुना जाता है।) वै०-या,-मचिआ, घर का सामान। पुं०-टवा, सं० खट्वा।

खटिक सं० पुं० एक जाति जो सुअर पालते, पत्थर आदि का काम करते हैं, स्त्री०-किन,-नि, भा०-कई,-पन।

खटोला सं० पुं० बच्चों की छोटी खाट, उड़न-, छोटा सा वायुयान; स्त्री०-ली।

खट्टा वि० पुं० खट्टा; स्त्री० ट्टी;-होब,-करब, (हृदय, मन आदि) फिर जाना, उदासीन होना; क्रि० -ट्टाब।

खड़ंजा सं० पुं० टूटी हुई ईंट; वै०-रंजा, स्त्री० -जी।

खड़कब क्रि० अ० खड़ की आवाज़ करना; प्रे० -काइब,-उब।

खड़काइब क्रि० स० खड़खड़ करना, खड़खड़ाना, खोलने के लिए ढकेलना, वै० खु-उब; खड़कब का प्रे० रूप।

खड़खड़िया सं० स्त्री० गाड़ी जिसके पहिये खड़-खड़ करते हों; पुरानी गाड़ी; बच्चों के खेलने की गाड़ी; वै०-या।

खड्ग सं० पुं० तलवार; काव्य या गीत में प्रयुक्त, वै०-गि।

खड़बड़ सं० स्त्री० घबराहट, परेशानी; होब, -मचब,-परब,-मचाइब; वै०-ड़ी:-ड़ी में परब, क्रि० -ड़ाब, खलबली में पड़ना, गिर पड़ना, खराब होना, नष्ट हो जाना।

खड़बड़ाइब क्रि०स०खराब कर देना, (स्थिति आदि) खलबली में डालना, परेशान कर देना।

खड़बिड़हा वि० पुं० टेढ़ा-मेढ़ा; वै०-बीहड़, खिड़-; स्त्री०-ही; सं० पट्+हिं० बीहड़, छः (कोण का) और भारी।

खड़मंडल सं० स्त्री० नाश; गड़बड़;-होब, वै० खर-, -लि; खर (गदहा)+मंडल (मंडली) = मूर्खों का समाज या षट् (छः) (जैसे षड्यंत्र में)+मंडल; अथवा खल (दुष्ट)+मंडल।

खड़ा वि० पुं० उठा हुआ; स्त्री-ड़ी; क्रि०-ड़िआब, खड़ा करना, वै० ठाढ़-आइब (दे०)।

खाढ़िआइब क्रि० स० खड़ा करना; वै० ठ-(दे०), -उब।

खत सं० पुं० पत्र;-पत्र, समाचार;-आइब,-मिलब;-लिखब; फ़ा० ख़त।

खतम वि० समाप्त;-होब,-करब; मु० मृत; फ़ा० ख़त्म।

खतरा सं० पुं० भय, भयानक स्थिति;-खाब, धोका खाना (प्र० आ,-त-);-होब; फ़ा०।

खतहा सं० पुं० गड्ढा, छोटा गढ़ा; करब,-खनब; मु० पेट,-भरब, पेट पालना,-भरना, जीना; स्त्री०-ही।

खता सं० पुं० कसूर, ग़लती, अपराध;-करब,-होब; वै०-ताँ; वि० वार; फ़ा०-त:।

खतिआइब क्रि० स० खतियाना, क्रम से सूची बनाना: खाता बनाना; वै०-या,-उब; खाता (दे०) से।

खतिऔनी सं० स्त्री० रजिस्टर जिसमें खेतों का ब्योरा हो; खेतों का खाता; वै०-अउ-।

खदरब क्रि० अ० खराब हो जाना; प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब; खादर (दे०) से, क्योंकि नदी की बाढ़ के कारण प्रायः खादर की भूमि खराब हो जाती है और फसल भी नष्ट हो जाती है; वै०-राब

खदरबदर सं० पुं० गड़बड़;-होब,-करब; ध्व० खदर (दे० खद्दर)+बदर, निरर्थक; हिं० शब्द. 'खादर' से, जैसे खादर का भाग कभी सूखा कभी जलमय रहा करता है, शायद 'खद्दर' भी इसी से हुआ है।

खदराउर वि० पुं० खादवाला, उपजाऊ; स्त्री०-रि; -रें, उपजाऊ स्थान में; वै०-दि-,-गर,-हा,-गउर।

खदानि सं० स्त्री० खोदने की जगह; खान; वै०-न; सं० खन् (खोदना)।

खदिगर वि० पुं० खादवाला; स्त्री०-रि,-रें, ऐसे स्थान में; खादि+गर (फ़ा० प्रत्यय); प्र०-गौर, -गउर।

खदुका सं० पुं० ऋण लेनेवाला; यही शब्द स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त होता है। शायद सं० खाद् (खाना) से, "खानेवाला" के अर्थ में है।

खदेरब क्रि० स० पीछा करना; हाँकना, भगाना, निकाल देना; प्रे०-वाइब,-उब।

खद्दर सं०पुं० मोटा कपड़ा जो हाथ से कते सूत का बना हो: मोटी और सादी वस्तु।

खनकब क्रि० अ० सिक्कों की भाँति आवाज़ देना या करना, वै० खु-, प्रे०-काइब, मु० रुपयों की अधिकता होना; ध्व०।

खनकाइब क्रि० स० सिक्कों की तरह बजाना, बहुत सा रुपया एकत्र करना, मु० कमाना, जोड़ना।

खनखन सं० पुं० सिक्कों या धातु के बर्तनों की आवाज,-होब,-करब, प्र०-खनन;-नाखन, वै० खनाखन.ध्व०।

खनता सं० पुं० खोदा हुआ स्थान, गड्ढा, स्त्री० -ती, वै० खंता; सं०खन् से।

खनब क्रि० स० खोदना, प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब, -खोदब, हाथ से काम करना, जमीन या खेत में कुछ करना; सं० खन्, मु० जरि-,नाश करने की कोशिश करना; खनि डारब, हठ करना; दुआर खनि डारब, बार-बार (किसी के घर) आकर तंग करना। फा० कंदन।

खनमाँ क्रि० वि० क्षणभर में, तुरंत ही बाद, सं० क्षण+( .ाँ = में);वै-नि-,प्र०-नि खनि,बार-बार,-नै माँ,-मँ; क्षण का यह अपभ्रष्ट रूप दूसरे अर्थ में नहीं बोला जाता।

खनाइब दे० खनब।

खनाखन्न सं० पुं० बहुत से चाँदी सोने की आवाज; दे० खनखन।

खनि क्रि० वि० क्षणभर में, एक बार;-यस,-वस, क्षणभर में ऐसा कि वैसा; सं० क्षण; प्रायः थोड़ी-थोड़ी देर में ही परिवर्तनशील स्थिति के लिए प्रयुक्त। वै०-नु, प्र०-हि,-नै,-नै मँ।

खनिआइब क्रि० स० खाली करना, वै०-न्हि,-हा-, -उब; खाली का 'ल' परिवर्तित होकर 'न' हो गया है; दे०खाली (फा०खाली), यदि 'खलिआइब' बने तो उसका दूसरा ही अर्थ होता है; दे० खलि-।

खनिआब क्रि० अ० खाली हो जाना; प्रे०-इब; 'खाली' से; वै०-न्हि-,-या-,-हा-।

खपइब क्रि० स० खपाना; वै०-पा-,-उ-, प्रे०-वाइब, -उब; 'खपब' का प्रे०।

खपची सं० स्त्री० लकड़ी या पत्थर का पतला टुकड़ा, वै०-च्ची (प्र०), खि-,पुं०-चा,-पीच।

खपटा सं० पुं० मिट्टी के बर्तन का टूटा छोटा हिस्सा, स्त्री०-टी, वै० खि-।

खपड़ा सं० पुं० मकान की छत पर रखने के लिए मिट्टी के पके हुए टुकड़े,-करब,-छाइब,-पाथब।

खपति सं० स्त्री० खपत,-होब,-करब।

खपती वि० खब्ती, अधपागल, वै०-प्ती,-प्ती, अर० ख़ब्त।

खपब क्रि० अ० पूरा पड़ जाना, समाप्त हो जाना, प्रे०-इब,-उब,-पाइब,-उब, दे० खोपब।

खपरी सं० स्त्री० मिट्टी की कड़ाही जिसमें दाना आदि भूना जाता है, मु० काली वस्तु,-लगाइब, मुहें-लागब,-लगाइब, शर्म के मारे मुँह काला करना या होना, त्रि०-रिहा।

खपाइब क्रि० स०पूरा करना, वै०-उब; प्रे०-पवाइब, वै० खि-।

खप्पर सं० पुं० मिट्टी का छोटा बर्तन जिसमें देव-ताओं के लिए दूध, शराब आदि रखा जाता है; -देब,-चढ़ब,-चढ़ाइब।

खफाँ वि० नाराज़, क्रुद्ध;-होब,-रहब,-करब; अर० ख़फ़ः (उदास, क्रुद्ध), सं० खप्प (क्रोध)।

खफ़ीफ वि० कम, थोड़ा (चोट आदि); अर०।

खफीफा सं० पुं० छोटे मामलों को देखने की अदालत; अर० ख़फ़ीफ़ः।

खबरदार वि० होश में, होशियार; सचेत; सँभल कर (रहना); यह शब्द दूसरों को सावधान करने के लिए प्रयुक्त होता है। भा० -री;-करब, सावधान कर देना;-री करब, रक्षा करना, बचाना; अर० ख़बर + फ़ा० दार।

खबरि सं० स्त्री० समाचार, चिंता, पता;-लेब, -करब,-होब,-रहब; मु०गाँड़ी गर्दने क-(नाहीं), कुछ पता या फिक्र (न होना); वै०-र; अर० ख़बर (समाचार)।

खबीस त्रि० बुड्ढा और बदसूरत; अर० ख़बीस, बुरा (दिल और सूरतवाला)।

खबार वि० पुं० खूब खानेवाला (पशु); स्त्री०-रि; 'खाब' से।

खब्बू त्रि० मुफ़्त खानेवाला; जिसे इधर-उधर फिर कर मुफ़्त खाने की लत पड़ गई हो। खाब (दे०) से।

खमिआ सं० स्त्री० छोटा खंभा; वै०-म्हि-,-हा,-या; सं० स्तंभ।

खमीर सं० पुं० ख़मीर;- उठाइब,-उठब; फा०।

खमीरा सं० पुं० एक प्रकार का बढ़िया पीनेवाला तंबाकू; वै०-म्ही-।

खमोस वि० पुं० खामोश, चुप;-करब,-होब,-रहब; स्त्री०-सि, भा०-सी; फ़ा० खामोश।

खयका सं० पुं० भोजन;-करब,-होब; वै० खायक; खाय (खाने) क (का)=खाने का (सामान)।

खयकार वि० नष्ट;-होब,-करब; सं० क्षय या फ़ा० .ख़ाक (मिट्टी); वै० खै-।

खयर सं० पुं० खैर, कत्था; वि० इस रंग का; स्त्री०-रि,-री, खैर रंग की;-राही, कत्था बनाने की क्रिया, उसका व्यापार आदि प्र०-रा (वि० के अर्थ में)।

खयराति दे० खइ-।

खयरिअत दे० खइरि-।

खयानति सं० स्त्री० दूसरे की वस्तु हड़प लेने की क्रिया;-करब,-होब; वै०-त; अर० ख़यानत।

खरंजा सं० पुं० दे० खड़ंजा।

खरइब क्रि०स० गर्म करना (घी या तेल का); आग पर 'खर' करना; प्रे०-वाइब।

खर सं० पुं० जंगली घास;-खूदुर (दे०),-पाती; वि० गर्म, खौला हुआ (घी, तेल);-करब;-राब, सख़्त या अनुदार होना, निर्दयता करना, क्रि०-इब; वै० -उब; प्रे०-वाइब; नाश्ते या खाने में विलंब;-करब, -होब (खाने पीने में,) देर करना; वै० खराई;

-सेवर, कभी देर कभी सबेर (खाने पीने में);-करब, -होब।

खरकब क्रि० अ० 'खर' से होना, खर खर की आवाज़ करना; प्रे०-काइब,-उब; प्र० खु-,-ड़-।

खरखर त्रि० पुं० साफ़ (व्यक्ति), निर्लेप; जो लगाव की बात न करे; भा०-ई,-पन; स्त्री०-रि।

खरखराब क्रि० अ० 'खर खर' करके गिरना (घास आदि का); प्रे०-इब,-उब।

खरचा सं० पुं० खर्च,-चलब,-करब,-होब; वै०-च; स्त्री० ची (दैनिक व्यय), त्रि०-चवाह, खूब खर्च करनेवाला; उदार; क्रि०-चब (काम में लाना); फ़ा० ख़र्च,-पात,-पाती।

खरजुर सं० पुं० ज़ुकाम;-होब,-करब (खाने में विलंब करना); क्रि० राब (ज़ुकाम पाना); दे० खर; खर + ज़ुरब (एकत्र होना) या ज़ुड़ाब (जूड़ = ठंड)

खरदवाइब क्रि० स० खराद कराना; खरादब का प्रे०; वै०-उब; भा०-ई, खरादने की क्रिया या उसकी मज़दूरी; अर० ख़राद, 'ख़रादी' करनेवाला।

खरब सं० पुं० १०० अरब; अरब खरब लौं दरब है उदै अस्त लौं राज-तुल० सं० खर्ब।

खरबराई सं० स्त्री० नाश्ता; खर (दे०) + बराइब (बचाना, रोकना) वह खाना जिससे 'खर' न हो; वै०-राव,-बचाव,-करब,-देब।

खरबूज सं० पुं० खरबूज़ा; प्र०-बुज़ा, जिसे बच्चे प्रयुक्त करते हैं। फ़ा० ख़रबूज़ः।

खरमकरा सं० पुं० एक घास जिसके सिरे पर 'मकरे' (दे० मकरा) के पैरों की भाँति लंबे फैले हुए अंग होते हैं; खर + मकरा।

खरल सं० पुं० दवा कूटने का बर्तन,-करब, कूटना।

खरहरा सं० पुं० घोड़े की पीठ साफ़ करने का ब्रुश; बड़ा झाड़ू;-करब,-होब; कहा० "दाना न घास-दूनौं जून"।

खरहा सं० पुं० खरगोश; स्त्री०-ही।

खरही सं० स्त्री० कटी हुई फ़सल की ढेरी;-करब,-लगाइब; मु० राशि; बहुत (धन) राशि,खर (घास)।

खराई सं० स्त्री० कुसमय जलपान या भोजन के कारण गले या पेट में गड़बड़, सिरदर्द आदि; -करब,-होब।

खराऊँ सं० पुं० खड़ाऊँ;-पहिरब; 'खर' की खुरों की भाँति जिसमें खुर हों (वह पैर में पहनने की वस्तु)।

खराटौं सं० पुं० सोते समय नाक या मुँह से निकलनेवाली आवाज़;-लेब; प्र० खर्राटा; 'खर्र-खर्र' की आवाज़; ध्व०।

खराद सं० पुं० खरादने की मशीन; क्रि०-ब; प्रे० -रदवाइब,-उब; अर० "ख़राद" जो "ख़रादी" करनेवाले के लिए आता है।-पर चढ़ाइब।

खरादब क्रि० स० खरादना; खराद करना।

खराब वि० पुं० रद्दी, बुरा; स्त्री०-बि, भा०-बी; -करब,-होब।

खराब क्रि० अ० सख़्ती करना, रोब दिखाना (राजा या शासक का); 'खर' (गर्म) से।

खरिआ सं० स्त्री० दे० दुद्धी;-मटी; सं० खटिका।

खरिआइब क्रि० स० कमाना; खूब नफ़ा करना; वै०-या-; 'खरा' (अच्छा लाभ) करना।

खरिका सं० पुं० दाँत साफ़ करने की लकड़ी, तिनका;-करब; खर + इक् जैसे तृण से तिनका। वै०-रचा,-रिचा।

खरिदवाइब क्रि० स० ख़रीद कराना; खरीदब का प्रे०; फ़ा० ख़रीद: भा०-ई; फ़ा० ख़रीदन।

ख़रिदआर सं० पुं० गाहक; स्त्री०-रि।

खरिहान सं० पुं० खलिआन;-होब,-करब;-नी, नये अनाज का एक अंश जो नौकरों को मिलता है।

खरी सं० स्त्री० खली; तिल, सरसों आदि की रोटी जो तेल निकलने पर इनसे कोल्हू द्वारा तैयार होती और जानवरों को खिलाई जाती है।-दाना, दाना-,-भूसा।

खरीता सं० पुं० दे० ख़ी-,फ़ा०।

खरीद सं० स्त्री० क्रय;-करब,-होब; वै०-दि;-दारी, क्रय का क्रम, बड़ी ख़रीद;-दार, ख़रीदनेवाला, गाहक; वै० खरीदार; क्रि०-ब, फ़ा०।

खरीदब क्रि० स० खरीदना, मोल लेना; प्रे० -रिदवाइब,-उब; भा०-दि,-द; फ़ा० ख़रीदन।

खरुस वि० सख्त (बात), कठोर (बचन);-कहब, -बोलब,-भा० -ई; क्रि०-साब, खुनसाब (दे०); वै० खुनुस।

खरोच सं० पुं० नोचने या छिलने का चिह्न; वै० -चा,-रौंच,-लागब; क्रि०-ब, नाखून से छिलना, काँटे, चाकू आदि से छिल जाना।

खल वि० पुं० दुष्ट; स्त्री०-लि; भा० -ई;-ई करब; सं०।

खलइब क्रि० स० 'खाल' (दे०) करना; नीचे करना; वै०-ला-,-उब; दे० खलाइब।

खलकति सं० स्त्री० जनता; बहुत से लोग, दुनिया; वै० खि-; अर० ख़िलक़त।

खलखलाब क्रि० अ० खलखल की आवाज़ करना; उबलना, खौलना; प्रे०-इब,-उब; ध्व०।

खलका सं० पुं० खेती को देखने या सँभालने के लिए बना हुआ छोटा मकान (रहने का मुख्य घर नहीं जो अन्यत्र होता है);-करब,-होब; वै० -लँगा; दे० पाही।

खलबली दे० खड़बड़,-बड़ी; इन दोनों में 'ल' बदलकर 'ड़' हो गया है।

खलरा सं० पुं० चमड़ा;-उतारब; स्त्री०-री,-राई; क्रि०-रिआइब,-लिआइब, मरे पशु का चमड़ा उतारना; वै० छ-; सं० छाल; दे० छलरा, खोलराई।

खलल सं० पुं० गड़बड़, बाधा (पेट आदि में); -करब,-होब; अर० ख़लल।

खलाइब क्रि० स० 'खाल' करना; खाल + आइब;

वै० खल-,-उब; उ०पेट-,भूख बतलाने के लिए अपना पेट पचाकर दिखाना ।

खलार वि० पुं० कुछ नीचा; स्त्री०-रि;-रें, नीचें, नीची भूमि में; दे० खाल (इसी में 'आर' लगाकर और 'खा' से 'ख' होकर यह शब्द बना है, जैसे 'ऊँच' से 'उँचास') ।

खलास वि० बंद, खतम;-करब,-होब; अर० ।

खलासी सं० पुं० सामान को साफ करनेवाला नौकर ।

खलिआ वि० खाली; जिस पर कुछ लदा न हो; फ़ुरसत में; दे० खाली; वै०-या; क्रि०-इब, -न्हिआइब ।

खलिआइब क्रि० स० मरे हुए या मारे हुए पशु की खाल उतारना; वै०-लरिआइब,-याइब; सं० छाला से (छ=ख); सी० ह० निकाइब ।

खलिगर वि० पुं० कुछ खाली; फ़ुरसतवाला; स्त्री०-रि; वै०-हर; खाली+गर ।

खलिफा सं० पुं० दे० खलीफा ।

खलिहर वि० पुं० खाली; जिसके पास समय हो; स्त्री०-रि; क्रि० वि०-रें, फ़ुरसत में; खाली+हर ।

खलीता सं० पुं० थैली, जेब; अर० खरीत: (थैला), वै०-रित्ता, सी० ह० ।

खलीफा सं० पुं० दर्जी; दर्जी को संबोधित करने का यह संभ्रांत शब्द है । अर० ख़लीफ़ः (नेता); अफ़गानिस्तान आदि देशों में यह बढ़ई, लुहार आदि के लिए भी आता है; उनके चेले उन्हें ऐसे ही पुकारते हैं--गुरु अथवा नेता मानकर ।

खलुई वि० स्त्री० नीचे वाली (भूमि आदि); 'खाल' से स्त्री०; दे० खाल,-लें ।

खवइआ सं० पुं० खानेवाला; वै०-या,-वैया ।

खवउअलि सं० स्त्री० खूब खाने की आदत, क्रिया आदि;-होब,-परब; वै०-वाई; सं० खाद् ।

खवही सं० स्त्री० (दूल्हे, समधी आदि के) खाने के समय दिया गया नेग (दे०);-देब,-पाइब,-लेब; सं० खाद् ।

खवाइब क्रि० स० खिलाना; 'खाब' का प्रे०; वै० खि-,-उब; खाब-, भोजन करने कराने का संबंध; सं० खाद्य ।

खवाई सं० स्त्री० खाने की क्रिया, व्यवस्था, सुविधा आदि;-करब,-होब ।

खवार सं० पुं० खानेवाला; खूब खानेवाला; स्त्री० -रि ।

खवास सं० पुं० व्यक्तिगत नौकर; जो नौकर पान आदि खिलावे या भोजनादि के समय सेवा करे; पू०; स्त्री०-सिन;-नि अर० ख़वास (भीतर जानेवाले व्यक्तिगत नौकर) ।

खवैआ दे० खवइआ; वै०-वैया,-वइया ।

खस सं० पुं० पानी में होनेवाली घास जिसकी जड़ पानी डालने से सुगंध देती है । फ़ा० ।

खसकब क्रि०अ०धीरे से चल देना; खिसक पड़ना; हट जाना; प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब; वै० खि-।

खसकाइब क्रि० स० हटा देना, भगा देना, चुरा लेना, छिपा देना; प्रे०-कवाइब,-उब; वै०-उब, खि-।

खसखस सं० पुं० खाने में 'खसखस' करने का स्वाद; जीभ में 'खसरखसर'(दे०) लगने का भाव; -होब,-करब,-लागब; वै०-सरखसर; प्र०-साखस, -स्सखस्स; ध्व० ।

खसबू सं० स्त्री० सुगंध;-आइब,-देब,-लेब,-रहब; वै०-बोय, खु-।

खसम सं० पुं० पति; प्रेमी; कभी-कभी स्त्रियाँ यह शब्द एक दूसरे को गाली देने के लिए प्रयुक्त करती हैं;-करब, मर्द कर लेना (विधवा का); फ़ा०।

खसर-खसर दे० खसखस ।

खसरा सं० पुं० एक बीमारी, जिसेमें छोटे-छोटे दाने सारे शरीर पर हो जाते हैं ।

खसरा सं० पुं० पटवारी का एक कागज जो प्रत्येक गाँव के खेतों के संबंध में होता है ।-खतिऔनी, दो महत्वपूर्ण कागज जो प्रत्येक पटवारी बनाता है ।

खसलति सं० स्त्री० आदत; खराब आदत;-परब, -होब; अर० ख़सलत ।

खहराब क्रि० अ० गिर पड़ना (शरीर या किसी अन्य स्थान से कपड़ों आदि का) ।

खहान वि० पुं० हहान-, भूखा-प्यासा, परेशान, घबराया हुआ; स्त्री०-नि-नि; हहाब (दे०) अलग बोला जाता है पर 'खहाब' कोई क्रिया नहीं है ।

खाँखर वि० पुं० (कपड़ा) जिसके आर-पार दिखाई पड़े; स्त्री०-रि; दे० खँखरहा; क्रि० खखराब ।

खाँचब क्रि० स० खींचना (चित्र, अंक आदि); प्रे० खँचाइब,-उब; वै० खीं-,खैं-, घीं-; सं० खच् ।

खाँचा सं० पुं० बड़ा टोकरा (भूसा आदि रखने के लिए); स्त्री०-ची; वै० खँचवा,-चिआ,-या ।

खाँची सं० स्त्री० छोटा खाँचा;-भर, बहुत से (बच्चे आदि); क्रि० खँचिआइब, टोकरों में भरना (पत्तियाँ आदि) ।

खाँड़ सं० स्त्री० देहाती शक्कर; सं० खंड; पं० में इसका उच्चारण "खंड" ही होता है ।

खाई सं० स्त्री० गहरी नाली या खेतों के चारों ओर खुदी भूमि;-खोदब; वै० खाँ-,-ईं,-ही ।

खाऊ वि० खानेवाला, बहुत खानेवाला; रिश्वत खानेवाला; हज़म कर जानेवाला; बेईमान;-वीर, हड़प जाने में निर्भय या बेशर्म ।

खाक सं० स्त्री० मिट्टी, गर्द, धूल;-नाहीं, कुछ भी नहीं;-होब, नष्ट होना,-कइ देब, नष्ट कर देना; -भभूत, साधू का दिया राख का प्रसाद; प्र० खैकार, खयकार (दे०);-में मिलब;-मिलाइब; वि० -की, मटमैले रङ्ग का; एक प्रसिद्ध साधू 'खाकी-बाबा' नाम के थे । फ़ा० ख़ाक ।

खाङ्ब क्रि० अ० 'खङ्वा' रोग से क्लिष्ट होना; दे० खङ्वा ।

खाज सं० स्त्री० खुजली;-होब; वै०-जु (फै० सु० प्रता०),-जि ।

खाजा सं० पुं० खाभा; एक प्रकार की मिठाई ।

खाट सं०स्त्री० खटिया; पुं० खटवा; लघु० खटिआ (दे०); सं० खट्वा ।

खाढ़ा वि० पुं० लंबा और बदसूरत; लंबा-चौड़ा (व्यक्ति); सं० बैलगाड़ी का रास्ता; सिलसिला; मु०-ढ़ें लागब,-लगाइब, किसी रास्ते पर लगना या लगाना; यक-ढ़ें लागब, किसी सिलसिले से लग जाना ।

खाता सं० पुं० हिसाब का पन्ना; हिसाब की किताब या उसका पन्ना विशेष; बही-, हिसाब की बही; बं० बई, पुस्तक; क्रि० खतिआइब, ब्योरेवार हिसाब करना ।

खातिर सं० स्त्री० आदर, मान;-करब,-होब; ···के खातिर, ···के वास्ते;-तवाजा, आवभगत, सम्मान (में दी हुई दावत);-होब,-करब; निसा-, वि० निश्चित, बेफिक्र; निसा-रहब,-होब, अर०; ईशाय-(भगवान की इच्छा) ।

खादर सं० पुं० नदी के किनारे का भाग; क्रि० खदराब, खदरब (दे०); (२) वि०सुस्त (सी०ह०)।

खादि सं० स्त्री० खाद; मु०-होइ जाब, न उठना, पड़ा रहना (सुस्त व्यक्ति के लिए); वि० खदिगर, -गडर,-हा ।

खानजादा सं० पुं० एक प्रकार का उच्च श्रेणी का मुसलमान; खान+ज़ाद:, खान का पुत्र ।

खानदान सं० पुं० वंश, परिवार;-नी, एक ही कुल का, अच्छे घर का फा० ख़ान्दान (घर) ।

खानपान सं० पुं० खाना-पीना; एक साथ का खाना-पीना;-करब,-होब,-रहब; सं० ।

खानसामा सं० पुं० खाना पकानेवाला नौकर; भंडारी; फ़ा० ख़ान: (घर)+सामाँ, सामान, जो घर के सामान की देख-रेख करता हो ।

खाना सं०पुं० भोजन;-पियना, खाना-पीना;-दाना, कुछ भोजन,-करब,-होब ।

खानि सं० स्त्री० किस्म, प्रकार; यक-, दुइ-; दुइ-करब,-होब, (खाने-पीने में) दो प्रकार का व्यवहार करना, पक्षपात करना;-खानि कै, तरह-तरह के ।

खापब क्रि० अ० कोल्हाड़ में गरम रस के खौलते रहने पर उसमें धीरे-धीरे ठंडा रस डालते रहना; मु०-दहाइब, काम चलाना, पूरा करना (दे० दहाइब); 'खपब' से संबद्ध या उसका प्रे० ?

खाब क्रि० स० खाना; प्रे० खवाइब,-उब, सं० भोजन;-करब, भोजन बनाना,-होब, भोजन तैयार होना; सं० खाद् ।

खाम वि० पुं० कम, छोटा; स्त्री०-मि; भा०-मी, कमी, त्रुटि;-होब,-रहब,-करब,-पाइब ।

खार वि० पुं० नमकीन, खारा; स्त्री०-री; वै० खरिआ (दे०),-रि, प्र०-री; सं० क्षार ।

खारुआँ सं० पुं० एक रङ्गीन कपड़ा जो प्रायः पतला होता है और अब बहुत कम आता है; वै०-वाँ ।

खाल सं० स्त्री० चमड़ा; वै०-लि; लघु०खलरा,-री, -उतारब ।

खाल वि० पुं० नीचा, गहरा; क्रि० वि०-लें, नीचे; -लें-ऊँचें, बुरी स्थिति में,-गोड़ परब, धोखा खाना; क्रि० खलाब, गहरा या नीचा हो जाना (प्रायः भूमि का); म० खाली (नीचे), पं० खल्ली ।

खाला सं० स्त्री० बुआ;-क घर, आराम का स्थान; कबीर ने इसे एकाध स्थल पर प्रयुक्त किया है । अर० ख़ाल: ।

खाली वि० रिक्त;-हाथ,-पेट; फ़ा०; वै० खलिआ, -या ।

खावा सं०पुं० खाया हुआ (भाग);-पिआ; स्त्री०-ई ।

खास वि० पुं० विशिष्ट; स्त्री०-सि; फ़ा०

खाँसब क्रि० अ० खाँसना, खाँसी से पीड़ित होना; प्रे० खँसाइब,-वाइब,-उब ।

खासा वि०पुं०अच्छा, ठीक-ठाक; बड़ा; स्त्री०-सी ।

खासिअत सं० स्त्री० विशेषता, गुण; वै०-य-,-ति ।

खाह्मखाह् क्रि० वि० अवश्य, बिना चूके, निःसंदेह; यदि दूसरों की इच्छा न भी हो; कोई चाहे या न चाहे तो भी; फ़ा० ।

खिचवाइब क्रि० स० खिचाना, निकलवाना; वै० -उब; भा०-ई, खिंचाने की क्रिया या उसका पारिश्रमिक, परिश्रम आदि; सं० कर्ष् ।

ख़िचानि सं० स्त्री० खींचने की मिहनत; सं० कर्षण ।

खिचुहा सं० पुं० कछुआ; वै० खें-, खँ-; स्त्री०-ही, दे० खँचुहा, सं० कच्छप ।

खिचाइब क्रि० स० खिचवाना; 'खींचब' का प्रे०; वै०-उब; भा०-ई; सं० कर्षय ।

खिड़रिचि सं० स्त्री० खंजन पक्षी ।

खिआब दे०-याब ।

खिखिआब क्रि० अ० जोर से हँस देना; बिना मतलब हँसना या झट से हँस पड़ना; ध्व० 'खि-खि' करना ।

खिचखिच सं० स्त्री० हठ; दोनों ओर खींचने की क्रिया; आपत्ति;-होब,-करब; वै० चि-।

खिचरी सं० स्त्री० खिचड़ी;-खाब, विवाह के समय का एक कृत्य जिसमें वर तथा उसके साथियों को भोजन के समय उपहार मिलता है;-होब, काले और सफेद की मिलावट हो जाना (बालों में), पुं०-रा, जिसमें उड़द का साबित दाना चावल के साथ पकता है; क्रि०-रिआब; खिचरी नाम का एक त्योहार भी है जो माघ में संक्रांति को पड़ता है और उस दिन उड़द की खिचड़ी खाई और दान दी जाती है ।

खिजमत सं० स्त्री० सेवा;-करब,-होब; वै०-ति, प्र०-जा; फ़ा० ख़िदमत ।

खिजाब सं० पुं० बालों पर लगाने का मसाला; -करब,-लगाइब; अर० ।

खिझरी सं० स्त्री० दूध की वह अवस्था जब वह गर्म होने पर फट जाय;-होब; क्रि०-रिआब, -याब ।

खिझाइब क्रि० स० रुष्ट करना, परेशान करना; खीझब (दे०) का प्रे०; वै०-उब; भा०-नि; इसका विलोम "रुझाइब" और "रिझाइब" है ।

खिटखिट सं० स्त्री० खिटखिट की आवाज; किसी बात पर व्यर्थ की बहस;-करब,-होब; ध्व०, क्रि० -टाब ।

खिड़बिड़हा दे० खड़बिड़हा ।

खिद्मत दे० खिजमत ।

खिदिर-बिदिर वि० पुं० खराब, नष्टप्राय;-होब, -करब; प्र०-द्दि-;सं० छिद्र ? दे०खदरब, खदर-बदर ।

खिन्नी सं० स्त्री० एक बड़ा पेड़ और उसका फल जो मीठा होता है; वै०-रनी; सं० क्षीर (क्योंकि इस फल में दूध भी होता है) ।

खिपचा सं० पुं० दे० खपची; प्र० खपीच;-ठोंकब, कष्ट देना; वै० ख-।

खिपड़ा दे० खपड़ा; वै०-टा,-टी ।

खिपाइब दे० खपाइब ।

खियाब क्रि० अ० घिसना, कम होना; प्रे०-वाइब; वै०-आब; सं० क्षय ।

खियाल सं० पुं० ध्यान, हँसी;-करब,-होब,-रहब, -आइब; फ़ा० ख़्याल ।

खिरकी सं० स्त्री० खिड़की ।

खिरनी दे० खिन्नी ।

खिरपब क्रि० स० किसी काम में लगा देना; प्रे० -पवाइब,-पाइब,-उब ।

खिलकति सं० स्त्री० आदत, तमाशा, भीड़; -करब; फ़ा० ख़िलक़त ।

खिलब क्रि० अ० खिलना, प्रसन्न होना; प्रे० -लाइब,-उब ।

खिलाफ वि० पुं० विरुद्ध; -होब,-रहब,-करब; भा० -ति; स्त्री०-फि; अर० ख़िलाफ़ ।

खिल्ली सं० स्त्री० हँसी;-करब;-उड़ाइब,-होब; हँसी ।

खिवाइब क्रि० स० दे० खवाइब, प्रे० खिउ-।

खिसकढ़ी सं० स्त्री० खीस निकालने की आदत, बात या क्रिया; वै०-ढ़ई; वि०-ढ़ा,-ढ़वा; खीस +काढ़ब (दे०) ।

खिसकब क्रि० अ० खिसकना, धीरे से चल देना; -काइब; वै० ख-।

खिसकाइब दे० खसकाइब ।

खिसखिस सं० स्त्री० दाँतों में बालू की तरह लगने की क्रिया या भावना; क्रि०-साब;-होब,-करब, लागब, प्र०-सिर-खिसिर; ध्व० ।

खिसहटि सं० स्त्री शर्म; खिसिया जाने का भाव, झेंप;-मिटाइब; वै०-सिहट ।

खिसिआब क्रि० अ० शर्माना, ऐसी स्थिति में पड़ना कि मुँह न दिखाने की हिम्मत हो; प्रे० -वाइब,-उब; खीसि (दे०) ।

खिसिहट दे० खिसहटि ।

खिस्सा सं० पुं० कहानी; वै० खीसा;-कहब,-सुनब, -सुनाइब; 'खीसा' का प्र० रूप ।

खिस्सू वि० खीस निकालनेवाला; झेंपू; शर्माने-वाला ।

खींचखाँच सं० पुं० इधर उधर को खींचने की क्रिया;-करब,-होब; वै०- तान, खैंच-।

खींचब क्रि० स० खींचना; प्रे० खिंचवाइब,-उब, खैंचवाइब;प्रे० खैं-, घीं-,घैं ।

खीझब क्रि० अ० रुष्ट हो जाना; प्रे० खिझाइब, -वाइब,-उब; सं० खिद् ।

खीरा सं० पुं० प्रसिद्ध फल ।

खीरि सं० स्त्री० खीर; दूध चावल का बना मीठा पकवान; सं० क्षीर ।

खीलब क्रि० स० खूब बंद कर देना; कील से बंद करना; सं० कील ।

खीलि सं० स्त्री० धान के भीतर का भुना हुआ चावल; फोड़े के भीतर की नुकीली चीज जो उसके पकने पर निकलती है; स्त्रियों की नाक में पहनने की कील; प्र०-ली; सं० कील ।

खीसा सं० पुं० जेब; फा० कीसः (जेब के भीतर का भाग) ।

खीसा सं० पुं० किस्सा, कहानी;-कहब,-सुनब, -सुनाइब; प्र० खिस्सा, फ़ा० क़िस्सः ।

खीसि सं० स्त्री० विनती करते, माँगते अथवा दर्द होने के समय ओठों के खुलने से बनी मुँह की आकृति;-काढ़ब,-निपोरब,-निकारब; वि० खिस्सू, -निकाल देनेवाला (कुछ करनेवाला नहीं); क्रि० खिसिआब; पुं० खीस ।

खुँटिआइब क्रि० स० खूँटी पर रखना या टाँगना, वै०-उब; खूँटी (दे०) से ।

खुइलब क्रि० अ० कूदकर चलना; तेज़ चलना; प्रे०-लाइब,-उब ।

खुड्सट वि० खूसट, रद्दी ।

खुक्का वि० खाली; वै० खो-,-क्खा ।

खुखंडी सं० स्त्री० बिना दाने की "बालि" (जोन्हरी की); दे० 'बालि'; पुं०-डा ।

खुखुई सं० स्त्री० बरसात के दिनों में कुछ वस्तुओं पर जम जानेवाली 'भुकड़ी' (दे०) ऐसी चीज; -लागब ।

खुचुर सं० पुं० दोष, ऐब;-काढ़ब ।

खुटखुटाइब क्रि० अ० 'खुटखुट' करना; ध्व० ।

खुटिहन सं० पुं० वह खेत जिसमें 'खूँटी' वाले नाज बोये जायँ; दे० खूँटी; वै० खुँ-।
खुद क्रि० वि० स्वयं; प्र०-दै;-दौ; फ़ा०।
खुदरा वि० पुं० टूटा, छुटा; दे० खुदुर, खुदुर-बुदुर।
खुनकब क्रि० अ० आवाज़ करना; रुपये या पैसे की भाँति शब्द करना; प्राप्ति होना; प्रे०-काइब, -वाइब,-उब; ध्व० खुन।
खुनहा वि०पुं० खूनवाला, मारनेवाला; स्त्री०-ही, खून+हा; फ़ा० खूँ।
खुनाइब क्रि० स० दौड़ाना; 'खून' गरम करना (दौड़ा कर); प्रे०-वाइब,वै०-उब; यह शब्द केवल घोड़े के लिए आता है।फ़ा० खूँ।
खुनाब क्रि० अ० जोश में आना; खून चढ़ जाना; एक कतल करने के बाद औरों को मारने के लिए तैयार हो जाना; फ़ा० ख़ूँ से।
खुनुस सं० पुं० द्वेष; दे० कुंस; वै० खुनुस।
खुफिआ वि० गुप्त; गुप्त विभाग के कर्मचारी;-रहब, -राखब,-होब; वै०-या;अर० खुफ़ियः।
खुबसूरत वि० पुं० सुंदर; वै० ख-;फ़ा० ख़ूब (अच्छी)+सूरत (शकल); स्त्री०-ति।
खुबै क्रि० वि० बहुत ही; 'खूब' का प्र० रूप; वै० -पै; फ़ा० ख़ूब (अच्छा)।
खुमचब क्रि० स० पकड़ के दबा देना; खूब पीटना, मारना; प्रे०-वाइब,-चाइब,- उब, वै०-मु-।
खुमार सं० पुं० अंतिम प्रभाव (नशे का); वै०-री; फ़ा० खुमार (नशा खाने या पीने की इच्छा)।
खुरकब क्रि० अ० 'खुर' की आवाज़ होना, ऐसी आवाज़ करना; प्रे०-काइब,-वाइब,-उब; वै० -ड़-,-रु-।
खुरखुर सं० पुं० 'खुरखुर' की आवाज; क्रि०-राब, -राइब।
खुरचन सं० पुं० किसी अच्छी चीज़ के खुरचने से जो निकले, जैसे मलाई, दही आदि का-;वै०-नी, जो विशेषतः मक्खन या छाछ के खुरचन के लिए आता है।
खुरचब क्रि० स० दबाकर पोछना; खुरचना; प्रे० -वाइब,-उब,-चाइब; प्र०-चारब; दे० घुरचब; सं० क्षुर।
खुरचारब क्रि० अ० खुर से या नाखून से पृथ्वी को खुरचना; सं० खुर+चारब (चलाना); 'खुरचब' भी 'खुर' से संबद्ध है, क्योंकि पशु अपने नखों या खुरों से पहले पहल पृथ्वी खुरचते देखे गये होंगे जिससे बर्तन या उसमें लगी हुई वस्तु को खुरचने की इच्छा मनुष्य में हुई होगी। वै० -रिहारब; प्र० घुर-।
खुरदी सं० स्त्री० हाथी के दोनों ओर लटकती हुई थैली जिसमें सामान रखा जाता है। वै०-र्दी, -दली; फ़ा० खुर्द (छोटा) हाथी की तुलना में यह थैली बहुत छोटी होती है, शायद इसी से यह नाम दिया गया हो। फ़ा० खुर्जीन (दो भागों वाला वह थैला जो ऊँट, गधे आदि पर रखते हैं)।
खुरदुर वि० खुरदरा; स्त्री०-रि।
खुरपा सं० पुं० घास खोदने का एक लोहे का औज़ार; स्त्री०-पी; क्रि०-पिआइब, खुरपा या खुरपी से (घास) साफ़ करना, खोदना।
खुरपिआइब क्रि० स० खुर्पी से साफ करना; प्रे० -यवाइब,-उब।
खुरमा सं० पुं० खुर्मा, एक मिठाई जिसके टुकड़े छोटे-छोटे छुहारे की भाँति काटे जाते हैं; अर० खुर्मः (छुहारा या खजूर); स्त्री०-मी; उ० "हलवैया की बेटी बड़ी सुनरी काटति है खुरमी-खुरमा"-गीत।
खुरबुर सं पुं० खुड़बुड़ की आवाज़; चूहे की इधर-उधर फिरने की आवाज़, वै०-ड़-ड़; क्रि०-राब, -ड़ाब,-ड़ाइब।
खुराई सं० स्त्री० खुर के चिह्न;-चीन्हब,-देखब; वै० -ही; सं० खुर।
खुराक सं० स्त्री० भोजन; एक समय का खाना; -की, भोजन का पैसा, वि० खूब खानेवाला; वै० खुरकिहा,-ही; वै० खो-;फ़ा० ख़ू-।
खुरासानी सं०स्त्री० एक प्रकार की जवायन; शायद यह पहले खुरासान से आती थी जो ईरान का एक भाग था।
खुरि स्त्री० खुर; क्रि०-आब।
खुरिआब क्रि० अ० गर्भ से निकलनेवाले पशु की खुर दिखाई पड़ना; जन्म होना; 'खुरि' से; सं० खुर।
खुरी सं० स्त्री० खुर रखने का समय, आने का समय (पशु के); खुर; मदन-, खुर का बिचला भाग; सं० खुर।
खुरुर-खुरुर सं० पुं० खुर-खुर की आवाज़; ध्व०; वै०-खुदुर-खुदुर;-बुदुर, गड़बड़; बीमारी या मृत्यु; -होब;-करब।
खुरुस दे० खरुस।
खुलता वि० सुन्दर, जँची हुई;-देब, अच्छा लगना; =खुला हुआ (बंद नहीं)=हँसता हुआ।
खुलब क्रि० अ० खुलना; प्रे० खोलब, खुलाइब, खोलवाइब,-उब; अकिलि-, बुद्धि काम करने लगना; आँखि-, बाति-।
खुलासा वि० साफ़, स्पष्ट;-करब,-होब,-कहब; प्र० -सादि, साफ-साफ;-पेट,-दस्त; वै०-साँ; फ़ा० सः।
खुलाइब क्रि० स०खोलने का प्रबंध करना; आँखि-, बीमारी आदि में बंद हो गई आँख को फिर से दवा द्वारा ठीक कराना।
खुस वि० प्रसन्न, खुश;-करब,-होब,-रहब; फ़ा० खुश (अच्छा),भा०-सी;-हाल, अच्छी हालत में, धनी; फ़ा० ख़ुश।
खुसकी सं० स्त्री० सड़क का रास्ता; सूखा रास्ता; सूखापन; फ़ा० ख़ुश्क।

**खुसामद** सं॰ स्त्री॰ खुशामद;-करब,-होब;-बरामद, खुश करने के अनेक तरीके, फ़ा॰ खुश + आमद (स्वागत); वि॰-दी; खुशामद करने के लिए उत्सुक, -टट्टू, निरा खुशामदी, व्यर्थ का खुशामदी।

**खुसिआली** सं॰ स्त्री॰ खुशी, आनंद का अवसर, आनंद-प्रदर्शन;-करब,-मनाइब,-होब; फ़ा॰ खुश + सं॰ आली (पंक्ति)।

**खुसी-खुसी** क्रि॰ वि॰ प्रसन्नतापूर्वक; बिना कुछ कहे सुने; फ़ा॰ खुशी।

**खूँट** सं॰पुं॰कान का मैल;-काढ़ब,-निकारब;किनारा, अंतिम सीमा, क्रि॰वि॰-रें, कपड़े के कोने में।

**खूँटा** सं॰ पुं॰ लकड़ी या लोहे का मेख;-गाड़ब, डट जाना; स्त्री॰-टी,-यस, छोटा, न बढ़नेवाला।

**खूइ** सं॰ स्त्री॰ आदत; खराब आदत;-होब,-रहब; वै॰-य, खोय, खोइ; फ़ा॰ ख़ूय; दे॰खोइ।

**खूदा** सं॰ पुं॰ अन्न का रद्दी हिस्सा, टूटे भाग (चावल आदि के); स्त्री॰-दी; कन-खूदी, (चावल आदि के) छोटे-छोटे कण और पिसे भाग, सं॰ कण।

**खून** सं॰ पुं॰ लोहू; हत्या;-करब,-होब; वि॰-नी, हत्यारा; फ़ा॰ खून; क्रि॰ खुनाइब,-नाब (दे॰)।

**खूनब** क्रि॰ स॰ कूटना, चोटों से पीस देना; मु॰ खूब मारना, मार-मार कर 'खून' निकाल देना; प्रे॰ खुनाइब,-वाइब,-उब।

**खूप** क्रि॰ वि॰ खूब; प्र॰-पै; फ़ा॰-ब; वै॰ खुपै बं॰ खूप; भा॰-बी।

**खूय** सं॰ दे॰ खूइ।

**खूसट** वि॰ रद्दी, बेकार (व्यक्ति); सूखा और निकम्मा; भा॰ खु-पन,-ई।

**खूहा** सं॰ पुं॰ बुरी बात, अपराध, तुहमत;-लगाइब, -पारब,-लागब; स्त्री॰-ही,-उड़ाइब; प्र॰ हूही।

**खेइब** क्रि॰ स॰ खेना, चलाना; प्रयोग में लाना; मु॰ निभाना; प्रे॰-वाइब,-उब; भा॰-वाई; क॰ -वैया, खेनेवाला, वै॰-वइआ,-या।

**खेकसी** सं॰ स्त्री॰ एक जङ्गली फल जिसका साग बनता है; पुं॰-सा; वै॰ ख-।

**खेखार** सं॰ पुं॰ मुँह से निकला हुआ लबाब, -थूक; क्रि॰-ब, जोर से थूकने या गला साफ करने की आवाज करना; पहेली-"बनमाँ बुढ़वा खेखारै" -कुल्हाड़ा।

**खेढ़ा** सं॰ पुं॰ कठिन स्थिति; बेढंगा काम।

**खेढ़ी** सं॰ स्त्री॰ पशुओं के बच्चे पैदा होने पर योनि से निकली हुई मांस और खून की थैली;-गिरब, -गिराइब; सी॰ ह॰ ल॰ झर।

**खेत** सं॰ पुं॰ खेत;-करब, (चंद्रमा) निकलना(अँजोरी; जुन्हैया खेत किहिस); क्रि॰-तिआइब, मानना, लिहाज करना;-बारी; भा॰-ती, खेती-बारी;-तिहर, खेती-वाला, किसान; सं॰ क्षेत्र।

**खेतारी** सं॰ स्त्री॰ खेतों का पड़ोस; गाँव से दूर स्थान; खेत + आरी (पास); सं॰ क्षेत्र + अवलि।

**खेतिहर** सं॰ पुं॰ किसान, खेती + हर; सं॰ क्षेत्र।

**खेदब** क्रि॰ स॰ हाँकना, निकालना, भगाना; प्रे॰ -दाइब,-दवाइब,-उब; सी॰ह॰ ल॰-दिब।

**खेप** सं॰ पुं॰ बोझ; जितना एक बार में लद सके; वै॰ खें-; क्रि॰-पिआइब,-उब, खेपों में परिवर्तित करना (खाद, फसल आदि को); सं॰ क्षिप् (फेंकना) से अर्थात् जितना एक बार में उठाकर फेंका जा सके।

**खेम** सं॰ पुं॰ कुशल, कल्याण;-कुसल,-पूछब; सं॰ क्षेम; वै॰ छे-।

**खेमा** सं॰ पुं॰ तंबू;-डारब,-परब; फ़ा॰ खेम:।

**खेल** सं॰ स्त्री॰ खिलवाड़, मनोरंजन;-करब-मचाइब, -होब; वै॰-लि;-वार; क्रि॰-ब; सं॰।

**खेलब** क्रि॰ अ॰ खेलना, खेल करना; भूत आदि के आवेश में आकर झूमना, कुछ कहना आदि; प्रे॰ -लाइब,-लवाइब,-उब; वि॰-लार, खेलनेवाला, पटु, पहलवान; सं॰ खेल।

**खेवइया** दे॰ खेइब।

**खेवट** सं॰ पुं॰ पटवारी के कागज जिसमें भूमि के अधिकारियों का विवरण होता है;-लागब, अधिकार होना,-होब-करब;-पट्टी, ऐसे पत्रों में प्रवेश, इनका लेख आदि।

**खेवनहार** सं॰ पुं॰ (नाव) चलानेवाला, खेनेवाला; खेवन (खेइब) + हार; कविता में ही प्रयुक्त।

**खेवा** सं॰ पुं॰ (नाव का) पूरा बोझ या खेप; जितना एक बार में खेया जा सके।

**खेहा** सं॰ पुं॰ (लकड़ी पर लगी) घाव; स्त्री॰-ही; वै॰ छेहा,-ही;-लागब,-मारब,-लगाइब; सं॰छिद्।

**खैंचब** दे॰ खइँचब; इसी प्रकार दे॰खइँतड़-,खइचड़ (खैंतड़, खैंचड़)।

**खैका** सं॰ पुं॰ भोजन; वै॰ खय-;-करब (भोजन बनाना),-होब, भोजन तैयार होना; सं॰ खाद्।

**खैकार** वि॰ नष्ट, नष्टप्राय;-करब,-होब; सं॰ क्षय + कार।

**खैर** सं॰ स्त्री॰ कुशल; वै॰-रि, खइर,-रि; अ॰ ख़ैर; 'कत्था' के अर्थ में इस शब्द का रूप 'खयर' है।

**खैरा** वि॰ पुं॰ कत्थई या भूरे रंग का; स्त्री॰-री; वै॰-य-।

**खैराति** दे॰ खइ-।

**खोंखर** वि॰ पुं॰ भीतर से पोला; प्र॰-रू; स्त्री॰ -रि; दे॰ झोंझर; यह शब्द प्रायः आभूषणों के लिए प्रयुक्त होता है।

**खोंडिल-बाडिल** वि॰ टूटा-फूटा, जैसा-तैसा; दे॰ खोड।

**खोंचब** क्रि॰ स॰ खोंच देना, हाथ या दूसरी चीज से खोद देना; आँख में मार देना; प्रे॰-चाइब, -चाइब,-उब; कहा॰ काना होय खोंचि जाय।

**खोंचा** सं॰ पुं॰ रस्सी का बुना हुआ थैला जो फल तोड़ने के काम में आता है; स्त्री॰-ची।

खोंची सं० स्त्री० नाज, साग भाजी आदि में से निकालकर लिया हुआ टैक्स;-काढ़ब,-लेब।

खोंड़ वि० पुं० कम, खंडित;-करब,-होब; यह प्रायः आय, इनाम आदि के लिए आता है। सं० खंड ?

खोंढ़र सं० पुं० पोल, खाली स्थान;-करब,-रहब, -होब।

खोंढ़ा वि० पुं० जिसका एक या दो दाँत टूट गया हो; स्त्री०-ढ़ी, आ०-ढ़े,-ढ़ई,-ऊ; बच्चे खेल में कहते हैं-"खोंढ़ा दाँत बिजौली क बिया, वह माँ हगै सियारे क धिया।"

खोंपी सं० स्त्री० कलम (हजामत की);-कढ़ाइब, -काढ़ब, कलम कटाना, काटना; पुं०-पा (हास्यात्मक); हल के लोहेवाले फल के नीचे लगनेवाली लकड़ी जिसकी गावदुम शक्ल भी पुराने ठाट के हजामत के कलम की भाँति होती है।

खोंस-खाँस सं० पुं० इधर-उधर; व्यर्थ की बातें; -करब,-लगाइब।

खोंसब क्रि० स० बाहर से लगा देना, जोर से लगाना; मु० (शिकायत) कर देना; प्रे०-वाइब, -साइब,-उब।

खोआ सं० पुं० खोया; वै०-या।

खोइ सं० स्त्री० आदत, बुरी आदत; वै०-य, खूइ।

खोइब क्रि० स० खोना, मिटा देना; प्रे०-वाइब, -उब; वै०-उब; मु० खोय जाब, विधवा हो जाना; (पति के बिना) गुम हो जाना; सं० क्षय।

खोका सं० पुं० लकड़ी का खुला डब्बा; वै० -खा।

खोकला वि० खाली; प्र०-क्खै, वै० खु-।

खोंक सं० पुं० कपड़े का वह भाग जो काँटा, कील आदि लगने से फट गया हो;-लागब; वै० खोंग; वि०-क्लि।

खोज सं० स्त्री० तलाश;-करब,-होब,-पाइब; क्रि० -ब, वि०-जी, छानबीन करनेवाला, उत्सुक; वै० -जि।

खोजब क्रि० स० तलाश करना; खोजना; प्रे० -जाइब,-उब,-जवाइब,-उब।

खोजवार सं० पुं० खोजनेवाला; वै०-जार; स्त्री०-रि।

खोजा सं० पुं० पुरुष जिसके मूँछ दाढ़ी न निकलती हो; वै०-झा।

खोजाई सं० स्त्री० खोज करते रहने की कारंवाई, पद्धति आदि; प्रे०-वाई; वै० ख्न-।

खोजासि सं० स्त्री० खोज करने की अत्यधिक या अनुचित इच्छा;-लागब; 'आसि' लगाकर अतिशयोक्ति अथवा अनौचित्य का प्रदर्शन होता है, जैसे बकवासि।

खोजी वि० खोज का शौकीन।

खोझर सं० पुं० बीच का भाग जिसमें खोखलापन हो;-रहब,-होब; वै० झो-।

खोझा दे०-जा।

खोट वि० पुं० शरारती, तंग करनेवाला; तुल० छोट कुमार खोट अति ··;भा०-पन,-टाई; स्त्री०-टि।

खोता सं० पुं० घोंसला;-बनइब।

खोद्-खाद् सं० पुं० थोड़ा सा काम, खेती का कुछ प्रारंभिक काम;-करब,-होब; क्रि०-ब-ब, खोद्-खाद् करना, खोदना-खादना; सं० खन्।

खोदब क्रि० स० खोदना; प्रे०-दाइब,-दवाइब,-उब; खनब-, कुछ करना, खेती का कुछ काम करना।

खोभार सं० पुं० विकट स्थान, संकट, खतरे की जगह; वै० ख-;-मँ, विपत्ति में (पड़ना, रहना)।

खोय सं० स्त्री० आदत, बुरी आदत; दे०-इ।

खोराँट वि० घाघ, पक्का; प्र०-राँट।

खोरा सं० पुं० कटोरा, गिलास; पूरा शब्द 'आबखोरा' पानी-पीने का बर्तन है; फ़ा० ख़ुर्दन, पीना, खाना; पीने या खाने का बर्तन।

खोराक सं० स्त्री० ख़ूराक; एक व्यक्ति का भोजन; वै० खु-; फ़ा० ख़ूराक; वि०-की, खूब अधिक खानेवाला।

खोरि सं० स्त्री० गली;-खोरि, गली-गली।

खोरिआ सं० स्त्री० कटोरी; वै०-या।

खोल सं० स्त्री० मोटी दुहरी चादर (ओढ़ने के लिए) जिसके चारों ओर मगजी (दे०) लगी होती है; वै०-लि;-ओढ़ब; फा० ख़ोल।

खोलब क्रि० स० खोलना; प्रे०-लाइब-वाइब,-उब।

खोलराई सं० स्त्री० छिलका; व्यं०-खाल;-निकारब; दे० खलरा,-राई; क्रि०-रब,-राइब, मुँह से छिलका निकाल-निकालकर खाना।

खोवा सं० पुं० खोया; वै०-आ।

खोह सं० पुं० निर्जन स्थान; दूर की जगह; फ़ा० कोह ? प्र०-हे, उ० खोहे मँ, बड़ी दूर और सुनसान जगह।

खौकब क्रि० अ० जोर से बोलना, डाँटना; प्र० -किआब,-इब; वै० घौ-।

खौखिआब क्रि० स० डाँटना; ध्वं० खौ खौ करना; प्र०-आइब।

खौफ सं० पुं० डर, भय;-खाब,-लागब,-करब,-होब; वै० खउफ; फ़ा० ख़ौफ़।

— खौफिआ सं० पुं० गुप्तचर,-पुलीस, पुलीस का एक गुप्त विभाग या उसका सदस्य; दे० खु-; वि० गुप्त; वै० खो-; फ़ा० ख़ुफ़ियः।

खौर सं० पुं० राख जो मत्थे में लगाई जाती है।

खौरहा वि० पुं० जिसे (विशेषत: कुत्ते को) खुजली हुई हो; स्त्री०-ही; दे० खउरा; क्रि० खौराब, वै० खउरहा; मु० दरिद्र।

खौरा दे० खउरा।

खौलब क्रि० अ० खौलना; प्रे०-लाइब,-वाइब,-उब; मु० गर्म पड़ना, रुष्ट होना, लोहू-,ताव आना, क्रोध होना; वै० खउ-।

खौहटि दे० खउहटि।

खौहार सं० पुं० झंझट, झगड़ा;-मँ परब, व्यर्थ के झंझट में पड़ जाना; वै० खउँ-।

# ग

गंगा सं० स्त्री० गंगाजी;-उठाइब, गंगा की शपथ खाना;-जाने, गोरैया, शपथ, सं० ।

गंगबरार सं० पुं० वह भूमि जो नदी के पाट के कारण जोत में न आ सके ।

गँछाई सं० स्त्री० गाँछने (दे० गाँछब) की क्रिया, सुंदरता या मजदूरी; गाँछने की मिहनत; प्रे० -वाई ।

गंज सं० पुं० ढेर;-लागब,-करब; क्रि० गाँजब (दे०) प्रे० गँजाइब; फ़ा० गंज ।

गँजब क्रि० अ० एकत्र होना, बहुत होना, अधिक (धन, सामग्री) होना; प्रे० गाँजब, गँजाइब, -वाइब, एकत्र कराना, रखवाना; फ़ा० गंज, ढेर ।

गँजवाइब क्रि० स० इकट्ठा करना करना, वै०-उब ।

गँजहँड़ सं० पुं० बड़ा बर्तन; बड़ा पेट; गज (हाथी)+हंड (हंडी या हंडा =बर्तन), हाथी का बर्तन; वै० गज-,यह शब्द प्राय: पेटू या बहुत खानेवाले के लिए प्रयुक्त होता है । -भरब, (पेटू का) पेट भरना; 'हाँडो' (दे०) या हंडा जिसमें चीजें 'गाँजी' या एकत्र रखी जायँ ।

गँजहा वि० पुं० गाँजा पीनेवाला; स्त्री०-ही, गाँजावाला,-ली, दे० गाँजा ।

गँजाइब क्रि० स० एकत्र कराना, ढेर करके रखवाना, भर देना, अधिक कर देना, प्रे०-वाइब,-उब ।

गँजाई सं० स्त्री० गाँजने की क्रिया, मजदूरी अथवा पद्धति; प्रे०-वाई, वै० गँजानि (केवल पद्धति या विधि के अर्थ में) ।

गँजासि सं० स्त्री० गाँजने की बड़ी इच्छा,-लागब, -होब; क्रियाओं में 'आसि' लगाकर इच्छा या उत्कंठा-सूचक संज्ञाएँ बनती हैं ।

गँजिआ सं० स्त्री० कमर में लपेटकर या लटकाकर रुपया-पैसा रखने की बुनी हुई थैली, वै०-या, ('गाँजब') से जिसमें एकत्र कुछ 'गांजा' या रखा जाय) ।

गंजा वि०पुं० जिसकी खोपड़ी पर बाल न हों ।

गंजी सं० स्त्री० शकरकंद; यह दो प्रकार का होता है, लाल और सफेद; व्यं० मु० कुछ नहीं, केवल लिंग (क्योंकि इसकी शकल लिंग से मिलती है); -निकोलब, व्यर्थ का काम करना, कुछ न करना । -फराक, बनियान; प्राय: बनियान को "गंजी" ही कहते हैं, पर शौकीन नवयुवक-फराक (अं० फ्राक ?) कभी-कभी कहा करते हैं ।

गँजेड़ी वि० पुं० गाँजा का शौकीन, गाँजा के नशे में मस्त, गाँजा का आदी; इसी तरह 'भाँग' से 'भँगेड़ी' बनता है । वै०-री ।

गँजैआ वि० पुं० गाँजनेवाला; प्रे०-वैआ, वै० -या ।

गंठा सं० पुं० प्याज़ का मोटा बड़ा दाना; स्त्री० -ठी; यक-पियाजि, बिना पत्ते का प्याज ।

गँठिआब क्रि० अ० गांठ पड़ जाना; सं० ग्रंथि ।

गँठी वि० स्त्री० जँची, ठीक से तैयार की गई (बारात, बात, महफ़िल आदि); वै० गँ-,पुं०-ठा ।

गँठील वि० पुं० गांठवाला, पुष्ट; हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ; छोटा पर चुस्त (व्यक्ति); स्त्री०-लि; वै-ला ।

गँठुली सं० स्त्री० फल की गुठली;-परब, गुठली पड़ जाना; वै० गे-, ग-; क्रि०-लिआब,-याब, गुठली पड़ना ।

गँठैआ सं० पुं० गांठनेवाला, ले लेनेवाला; प्रे० -ठवैया, वै०-या,-वइआ,-या, गँ- ।

गँठौनी सं० स्त्री० गांठ लगाने या गांठने की मज़दूरी; कम बोला जाता है ।

गंड सं० पुं० गाँड; प्राय: गाली में ही प्रयुक्त, उ० दुत तोरे-में ।

गंडा सं० पुं० (प्राय: हनूमान या भैरव का) प्रसाद स्वरूप रंगीन धागा जिसे भक्त लोग पहनते हैं । चार की संख्या को भी गंडा कहते हैं; उ० यक-(चार) पइसा, दुइ-(आठ) ।

गंडू वि० पुं० गाँडू; यह शब्द यों भी नीच जातियों द्वारा एक दूसरे को फटकारने या डाँटने के लिए प्रयुक्त होता है; उ० दु (या दू)-,दुत गाँडू ।

गँडुआ वि० पुं० गाँड़ मारने या मरानेवाला, अप्राकृतिक व्यभिचार करने और करानेवाला; वै० -हा,-वा; क्रि०-ब, अपनी बात से विचल जाना; साथ न देना ।

गँडुहा वि० पुं० शायद यह "गँडुआ" का प्र० या घृ० रूप है जो फटकारने के ही लिए आता है; स्त्री०-ही ।

गंदा वि० पुं० मैला, अपवित्र; स्त्री०-दी; वै०-ला, -ली; फ़ा० गंद: ।

गंध सं० स्त्री० दुर्गंध, महक;-आइब,-देब; वै० गन्ह,-न्हि ।

गंधाब क्रि० अ० बदबू करना; वै०-न्हाब; सं०गंध ।

गंधि सं० स्त्री० बदबू ,-आइब,-देब; वै०-न्हि; सु-, खुशबू, दुर-, बहुत बदबू ।

गँसनहर सं० पुं० गाँसनेवाला, डाँटनेवाला; स्त्री०-रि ।

गँसना सं० पुं० गाँसनेवाला, यह शब्द यों तो व्याकरण-सिद्ध है पर बहुत कम प्रयुक्त होता है । स्त्री०-नी ।

गँसनि सं० स्त्री० सिकुड़ने या कसने की क्रिया, "गसब" से, जैसे "फँसनि" (फँसब से) ।

गसब क्रि० अ० गँस जाना, प्रे० गाँ;-साइब-सवाइब (दे०) ।

गँसाइब क्रि० स० डँटवाना, "गाँसब" (दे०) का प्रे०-वै०-उब, प्रे०-सवाइब,-उब ।
गइआ सं० स्त्री० गऊ, गाय;-राखब,-दुहब,-माता; दे० गऊ ।
गइबुआ वि० पुं० आवारा, जिसके घर-बार का पता न हो; फ़ा० ग़ायब ।
गइर वि० पुं० अन्य, अपरिचित, बाहरी; वै० गयर; फा० गैर;-करब, संतोष करना, तितीक्षा करना, सहना ।
गई वि० स्त्री० बीती,-गुजरी, पुरानी;-बाति, पुरानी बात ।
गउँखा सं० पुं० ताक; दे० ताख; सं० गवाक्ष, क्योंकि प्राचीन काल में ये ताक गौ के नेत्रों के आकार के बनते थे ।
गउँगीर वि० पुं० चालाक; जो अपनी 'गौं' पर न चूके; गउँ (दे० गौं+गीर (फ़ा०) पकड़ने वाला, वै० गौं-, गवँ-।
गउँछा सं० पुं० नई शाखा; गाँछा;-फूटब,-फोरब; बँ० गाछ (वृक्ष); स्त्री०-छी; वै० गौंछा ।
गउँज सं० पुं० गूँज; धूआँ आदि की घूमती हुई लहर; पद-, पाजामे का वह नाम जो पुराने देहातियों ने इसे बड़े फूहड़पन के साथ दिया है—अर्थ "जिसमें 'पाद' गूँजे (बाहर न निकल सके); क्रि० -ब ।
गउँजब क्रि० अ० गूँजना, हर्षित होना; मनेमन-, भीतर ही भीतर प्रसन्न होना, फूला न समाना; प्रे०-आइब,-उब ।
गउआरासी वि० बहुत ही सीधा; गऊ की भाँति; गऊ+राशि (प्रकार) सं० ।
गउआई सं० स्त्री० अफ़वाह, जनरव, अनिश्चित बात; फ़ा० गुफ़्तन (कहना);-करब,-होब ।
गउकसी सं० स्त्री० गोवध; फा० गाव+कुशी; वै०-व-; फ़ा० कुश्तन (मारना) ।
गउघाती वि० गऊ की हत्या करनेवाला; सं० गो+घात+इन ।
गउचर सं० पुं० गायों के चरने के लिए रखी भूमि; वै० गो-; सं० गोचर; इस नाम का एक स्थान बदरीनाथ के पास है ।
गउदान सं० पुं० गोदान,-देब-करब,-होब; सं० ।
गउधुरिया सं० स्त्री० गोधूली; सं० ।
गउमाता सं० स्त्री० गोमाता; सं०; वै० गव-।
गउर-सं० पुं० तरकीब, पेच;-करब,-लगाइब; वि०-री, चतुर;-गार, कुछ न कुछ राह;-होब; फ़ा० ग़ौर (चिंता) ।
गउरा सं० स्त्री० गौरी,-पार्वती, पार्वती जी;-माता; सं० गौर; वै०-री, तुल० ।
गउहत्या सं० स्त्री० गऊ के मारने का काम, पाप आदि;-करब,-होब,-लागब; सं० गोहत्या ।
गऊ सं० स्त्री० गाय; वि०सीधा-सच्चा,-मनई;-कसम, गाय की शपथ;-माता,-बराम्हन,गो ब्राह्मण,-गोहारि।
गगरा सं० पुं० लोहे, ताँबे आदि धातुओं का घड़ा; स्त्री०-री, मिट्टी का घड़ा ।
गच सं० पुं० चूने की जुड़ाई; फ़ा० गच, चूना ।
गचकब क्रि० स० आराम से खाना, बेकारी में बैठे-बैठे खाते रहना; प्र०-काइब, ध्व० 'गचक' (भोजन के पेट में गिरने की आवाज) से; व्यं० हज़म कर लेना, चुरा लेना, गर्भधारण करना, सहवास में पूरा लिंग भीतर कर लेना ।
गचक्का सं० पुं० निर्द्वन्द भोजन,-मारब, खूब खाना, ध्व०, प्र०-चागच;-च्च (क्रि० वि०), घ-।
गचब क्रि० अ० (कौड़ी या ओंड़े का) ढाही (दे०) के या दूसरे ओंड़े (दे०) के पास पहुँच जाना, स० -चाइब,-उब, पास ।
गचर-गचर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक (खा जाना); क्रि०-राइब; ध्व०; प्र० च-।
गचाका दे० गचक्का, वै०-क,-क से,-धें, दे० कचाक, ध्व० 'गच' ।
गचागच क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और खूब (भोजन या सहवास); प्र०-च्च ।
गछाब क्रि० अ० गाँछा फोड़ना, गँछाना; वै० गँ-; बँ० गाछ (पेड़); वि०-न, नई पत्तियों तथा डालोंवाला; दे० गलछा ।
गज सं० पु० कपड़ा या भूमि की एक नाप; ३ फीट; सु०-करब, नियंत्रित कर लेना, सीधा कर देना (क्योंकि गज़ सीधा होता है), हरा देना; हाथी; फ़ा० गज़ (प्रथम अर्थ में); सं० गज (अंतिम अर्थ में) ।
गजरदम्म सं० पुं० बड़ा सबेरा, प्रातःकाल;-म्मे, बड़े सबेरे, सूर्योदय के बहुत पूर्व ।
गजर-बजर सं० वि० एक में मिला हुआ; अस्पष्ट; -करब,-होब ।
गजरा सं० पुं० फूलों की माला; बड़े-बड़े फूलों का हार;-डारब,-पहिरब,-पहिराइब ।
गजरिहा वि० पुं० गाजर वाला (खेद, बर्तन आदि); स्त्री०-ही ।
गजल सं० पुं० घंटा, घंटे की आवाज; प्रेम की कविता, फ़ारसी या उर्दू का एक छंद; अर० ग़ज़ल (पीछेवाले अर्थों में); अर० में इसका वास्तविक अर्थ है "स्त्री० से वार्तालाप = प्रेम की बात" ।
गजक सं० पुं० एक मिठाई ।
गजट सं० पुं० विज्ञापन पत्र; -करब,-कराइब, प्रकाशित करना या कराना,-होब; अं० गज़ट ।
गजब सं० पुं० आश्चर्यजनक स्थिति; भयानक काम,-करब,-होब,-गुजरब,-गुजारब; अर० ग़ज़ब; क्रोध; वि० अद्भुत ।
गजबाँक सं० पुं० वह बड़ा बाँक या अंकुश जो पीलवान रखता है । सं० गज+बंक; दे० बाँक ।
गजी सं० स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा; मज़बूत

कपड़ा;शा० 'गज' से (हाथी के चमड़े जैसा मोटा या मजबूत)।

गजुआ दे० गेजुआ।

गज्झा सं० पुं० सुख, आनंद;-मारब, आनंद करना, ऐश करना; शा० (गज=हाथी की तरह पानी में आनंद से) डूबा रहना, खाने पीने में डूबा या मस्त रहना; दूध या घी की अधिकता या धार से उसमें जब 'बुल्ले' (दे० बुल्ला) उठते हैं तो उन्हें भी 'गज्झा छूटब' कहते हैं; वै०-झ्झा,-ज्जा (दूसरे अर्थ में)।

गझिन वि० पुं० पास पास (बोया या उगा हुआ); इसका विपरीत शब्द 'बिड़र' (दे०) है; क्रि० -नाब।

गझ्झा दे० गज्झा।

गटई सं० स्त्री० गला; गर्दन,-लै, गले तक, -दबाइब, ज़बरदस्ती करना, मार डालना;-लगाइब, गले मढ़ना; वै०गँ-;-बैठब, गला बैठ जाना,-चलब, गाने में गला अच्छा चलना। (लै० गटर, ड० गल्पन)।

गटकब क्रि० स० जल्दी खा या निगल जाना, अधिक खाना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब; भा० -वाई।

गटकौअलि सं० स्त्री० गटकने की आदत, उसकी पद्धति या निरंतरता; वै०-कउअलि,-वलि।

गटक्का सं० पुं० एक बार में या झट खा जाने का क्रम,-मारब; 'गटक' का प्र० रूप; वै०-क्क।

गट्ट-गट्ट क्रि० वि० बड़े-बड़े कौर करके जल्दी-जल्दी (खाना), प्र० गटा-गट्ट, -गट; वै०-ट।

गट्टा सं० पुं० एक मिठाई जिसमें चीनी के गोल-गोल टुकड़े काटे जाते हैं; 'गिट्टी' (दे०) से संबद्ध; स्त्री०-ट्टी, लै० गटा (बूँद)।

गट्ठर सं० पुं० बड़ी गठरी; स्त्री० गठरी; व्यं० पुं० -ठरा; क्रि० गठरिआइब,-आब,-उब।

गट्ठा सं० पुं० बड़े-बड़े टुकड़े, कई टुकड़े एक में बँधे; गाँठि (दे०) से संबद्ध; क्रि०-ब, ऐंठकर टुकड़े बन जाना या (प्याज के) गट्ठे पड़ना; पियाजिक-,प्याज की एक गाँठ; स्त्री०-ट्ठी।

गठनि सं० स्त्री० बनावट, बनावट की मज़बूती, शरीर या चेहरे की गठन; सं० गठ्।

गठब क्रि० अ० ठीक होना, संगठित हो जाना; प्रे० गाठब, गठाइब,-उब, गठवाइब,-उब, वै० गँ-; सं० गठ्।

गठरी सं० स्त्री० पोटली, बोझ;-बान्हब,-करब, -होब; क्रि०-रिआइब, गठरी की तरह बाँध लेना; सं० गठ्, व्यं० पुं०-रा, बड़ा गट्ठर, बेढङ्गा सा बँधा गट्ठर।

गठा वि० पुं० संगठित, चुस्त, ठीक, अच्छे प्रबंधवाला (घर, परिवार आदि); स्त्री०-ठी, वै० गँ-।

गठाइब क्रि० स० गाँठ लगवाना, ठीक करवाना; मु० प्रसंग कराना; वै० गँ-,-उब; प्रे०-ठवाइब, -उब; भा० गठाई, गाँठने की मज़दूरी, रीति आदि।

गठानि सं० स्त्री० गाँठ, गठान;-परब,-होब।

गठारि वि० स्त्री० गाँठवाली; पु०-र; वै० गँ-; दे० गँठिहा,-ही; यह शब्द बहुत कम प्रयुक्त होता है।

गठिआ सं० स्त्री० वायुविकार का रोग; गँठिआ; वै०-या, गँ-;-होब; सं० ग्रन्थि (गाँठ)।

गठिआइब क्रि० स० गाँठ लगाना, बाँधना, अच्छी तरह रखना; मु० (बात) याद रखना, न भूलना; वै० गँ-,-उब; सं० गठ्; प्रे०-वाइब।

गठिबन्हन सं० पुं० गाँठ बाँधने की क्रिया, पद्धति (जो ब्याह के बाद भी अनेक अवसरों पर होती है जिसमें पति-पत्नी एकत्र बैठकर भाग लेते हैं); ब्याह;-करब,-होब; सं० ग्रन्थिबंधन, वै० गँ—।

गठिवाइब क्रि० स० गाँठ या गठरी बाँधने में सहायता करना; वै०-उब, गँ-;सं० ग्रंथि।

गठिहा वि० पुं० गाँठवाला, मन में द्वेष या ईर्ष्या रखनेवाला, चुप्पा; स्त्री०-ही, सं० ग्रंथि+हा; वै० गँ-।

गड़कब क्रि० अ० डाँटना, चिल्लाना, शोर मचाना; प्रे०-काइब,-उब, धमकाना।

गड़गड़ा सं० पुं० हुक्का (क्योंकि इसमें 'गड़गड़' की आवाज़ आती है); ध्व०; स्त्री०-ड़ी।

गड़गड़ाब क्रि० अ० गड़गड़ की आवाज़ होना या देना; प्रे०-इब,-उब,-वाइब,-उब; अर० ग़रग़रा (गले में से कुल्ला करने का पानी, दवा आदि)।

गड़ड़ सं० पुं० गड़ड़ या गरर की आवाज़; ध्व०; -गड़ड़ होब,-करब; वै०प्र० घ-,घर-।

गड़तरा सं० पुं० कपड़े का टुकड़ा जो छोटे बच्चों की गाँड़ के नीचे रखा जाता है; वै०-ड़ि-, गँ-; गाँड़ि+तर (नीचे)।

गड़पब क्रि० स० खा जाना; चुरा लेना, बेईमानी से ले लेना; प्रे०-पाइब,-उब,-वाइब,-उब।

गड़प्प सं० पुं० डूबने से अधिक पानी; गहराई; -होब, गहरा होना; मु०-करब, हज़म कर लेना, न देना; क्रि०-ब; ध्व०।

गड़ब क्रि० अ० गड़ना, गड़ जाना, दर्द करना (पेट या आँख का); प्रे०-ड़ाइब,-ड़वाइब।

गड़बजई सं० स्त्री० बात काटने की आदत;-करब, उलट या पलट जाना, मुकर जाना; गड़ (गाँड़) +बाज़ी, गाँड़ूपन अर्थात् मर्द की भाँति न व्यवहार करना या होना।

गड़बड़ वि० पुं० खराब, रद्दी, अव्यवस्थित, स्त्री०-ड़ि; क्रि०-ड़ाब, खराब हो जाना; प्र०-ड्ड, -ड्ड,-ड्डी।

गड़बड़ा सं० पुं० जमीन में खोदा हुआ गड्ढा

जिसमें कुछ चीजें-फल आदि-रखी जायँ; -खनब।

गड़बड़ाब क्रि० अ० खराब हो जाना, प्रे०-इब, -उब।

गड़बड़ी सं० स्त्री० ख़राबी;-करब,-होब,-देखब, -पाइब,-रहब।

गड़मरई सं० स्त्री० अप्राकृतिक व्यभिचार; वै० -राई;-रवा, ऐसा व्यभिचार करनेवाला।

गड़म्म वि० गायब, लापता;-करब-,होब; प्र० गुड़ु-।

गड़र-बड़र वि० गड़बड़,-होब,-करब; वै० ल-,अ-।

गड़रा सं० पुं० एक घास जिसकी जड़ बहुत मज़बूत होती है, खस का एक प्रकार जो पानी से दूर भी होता है; वै० गँ-।

गड़रिआ सं० पुं० भेड़ चराने या पालनेवाला; वै० -या,-ड़े-,गँ-; कहा०-क गोजी,-क लाठी, जो छोटा ही होता जाय। स्त्री०-रिनि,-ड़ेरिनि।

गड़ल्लरि सं० स्त्री० एक चिड़िया जो अपनी दुम बार-बार ऊपर नीचे किया करती हैं; गड़ (गाड़ = दुम) + (उ) ल्लरि (उलरब दे०); वै०-ड़ु-,गँड़-; मु० जो व्यक्ति एक स्थान पर देर तक न रहे; आवारा गर्द, परिवर्तनशील।

गड़वा सं० पुं० पानी देने का शानदार बर्तन, हत्थेदार और टोंटीदार लोटा; वै० गँडु-,-आ; स्त्री०-ई, गँ-।

गड़वाइब क्रि०स० गड़वा देना; वै०-उब,-ड़ाइब; भा०-ई।

गड़सा सं० पुं० गँड़ासा, एक लोहे का औजार जिससे चारा काटते हैं; वै०-ड़ास, ड़ासा, गँ-;स्त्री० -सी,-ड़ासी।

गड़हा सं० पुं० गड्ढा; स्त्री०-ही, छोटी तलैया; मु० पेट,-भरब, पेट पालना, खाना;-गुड़हा,-सड़हा, -ही-गुड़हा।

गड़हिआ सं० स्त्री० गड़ही; वै०-या।

गड़ाइब क्रि० स० गड़वाना; प्रे०-ड़वाइब,-उब।

गड़ाक सं० पुं० गिरने की आवाज़;-से, जोर से; दे०-ड़ाका।

गड़ाका सं० पुं० गहरे में गिरने की आवाज़;-होब; वै०-क,-म,-क सें,-सें; प्र०-ड़क्का;-मारब।

गड़ालू सं० पुं० एक कंद जिसकी तरकारी होती है।

गड़ास सं० पुं० चारा काटने का एक लोहे का औज़ार; स्त्री०-सी; वै०-सा, गँ-।

गड़ाही सं० स्त्री० बड़े गड्ढे की स्थिति; खाई; ऊँची-नीची भूमि;-मारब, खोदकर चारों ओर से खाई बना देना;-लगाइब।

गड़िआइब क्रि० स० गड़ा लेना, मूँद लेना (आँख), दर्द के मारे न खोलना; वै०-ड़ाइब,-उब।

गड़िआब क्रि० अ० बात बदल देना, अपनी बात काट देना, पीछे हटना; वै०-ड़ु-,गँ-,-याब; गाँड़ि (दे०) से।

गड़िबजई सं० स्त्री० किसी की बात न मानने की आदत, अपनी ही बात बदल देने की प्रवृत्ति; -करब; वै० गँ-,गाँ-; गाँड़ि + बाजी, नामर्दी की आदत।

गड़िलका सं० पुं० अपनी ही बात पर डटे रहने का हठ;-पादब,-करब; वि०-ल्ल; वै०-कई, गँ-; शायद "अड़िल्ल" के वै० रूप से भा० सं०।

गड़िहा वि० पुं० गड़ुवा; स्त्री०-ही; दु-, दुतकारने या शरमवाने के लिए वाक्यांश; वै०-ड़ु-,गँ-।

गड़ुआई सं० स्त्री० गड़ुआ होने का भाव; ऐसी आदत;-करब,-कराइब; दे०-आ; वै० गँ-।

गड़ुआब क्रि० अ० दे०-ड़ि; प्रे०-वाइब; वै० गँ-।

गड़ुघरा वि० पुं० बेशरम; स्त्री०-री; गड़ + उघरा, जिसकी गाँड़ उघार (खुली) हो; वै०-गँ।

गड़ुर सं० पुं० गरुड़जी; विष्णु का वाहन;-देवता, -महराज; सं० गरुड़।

गड़ुल्लरि सं० स्त्री० एक छोटी चिड़िया जो अपनी दुम उलारा करती है; मु० जल्दी-जल्दी बदल जानेवाला व्यक्ति; भा०-ल्लरई, परिवर्तनशीलता, अनावश्यक रूप से बात या स्थान बदल देने की आदत; गाँड़ि + उलारब; वै० गँ-।

गड़ुली सं० स्त्री० कपड़े या रस्सी की गोल टिकरी जिसे स्त्रियाँ घड़ों के नीचे अपने सिर पर रखती हैं, घड़ों के नीचे या भूमि पर भी रखा जाता है; वै० गे-, गँ-।

गड़ुवा वि० पुं० दे०-आ; वै० गँ-; भा०-अई, -वई,-पन; क्रि०-वाब;सं० दे० गड़ुआ।

गड़ु वि० पुं० वज़नी, भारी-;धरब,-पाइब, प्रभाव पड़ना; प्र० ड़ू, क्रि० ड़ुआब,-ड़ु-,-ड़ु-;वै०-ड़ू; सं० गुरु।

गढ़ सं० पुं० क़िला, दुर्ग; शक्ति का स्थान, केंद्र; -महोबा, महोबा का दुर्ग (आल्हा में प्रसिद्ध), माँडौ-,मांडू का क़िला (जो मध्यभारत में है) जहाँ आल्हा उदल भेस बदल कर गये थे।

गढ़नि सं० स्त्री० बनावट (चेहरे या शरीर की); गढ़ने की क्रिया।

गढ़ब क्रि० स० गढ़ना, लकड़ी या धातु की वस्तु बनाना; मु० पीटना, खूब मारना; कठोली-,बातें बनाना, (बच्चों की) व्यर्थ बातें करना; प्रे०-ढ़ाइब, -उब,-वाइब,-उब (ज़ेवर बनवाना)।

गढ़वाई सं० स्त्री० गढ़ने की मजदूरी, मिहनत आदि।

गढ़ाई सं०स्त्री० गढ़ने की क्रिया, मजदूरी, सुंदरता आदि; मु० मार, पिटाई; गाढ़ापन, बदमाशी, रहस्य न बताने की आदत; दे० गाढ़।

गढ़ानि सं० स्त्री० गढ़ने की मिहनत;-होब, -करब।

गढ़ी सं० स्त्री० छोटा सा गढ़; (अयोध्या की) हनूमान गढ़ी जिसमें प्रसिद्ध मूर्ति है और जो चारों ओर से क़िले की तरह बना है।

गढ़आव क्रि० अ० बोझ से दबना, बोझ अनुभव करना; वै०-हुं-; प्रे०-वाइब; दे० गढ़, गरू ।
गढ़ू वि० वजनदार, भारी,-गँभीर,-होब;-गँभीर, बोझिल; मु० गर्भवती, वै०-हू ।
गढ़ैआ सं० पुं० गढ़नेवाला, बनानेवाला; व्यं० पीटनेवाला, मारनेवाला; वै०-या,-ढ़इया;-वैया ।
गढ़ौआ वि० पुं० गढ़ा हुआ (ढला हुआ नहीं); आभूषणों के लिए प्रयुक्त ।
गण सं० पुं० सहायक, भेदिया;-लागब, भेद देने वाला होना; वै० गन; सं० गण ।
गणपुत्तर सं० पुं० काल्पनिक बच्चा जो (पुरुष के) गाँड़ मारने से हो; वै० गँड़-,-ड़ि-पुत्र; गाँड़ + सं० पुत्र ।
गतका सं० पुं० एक खेल जिसमें चमड़े से ढके हुए डंडों से ढाल पर मारते हैं; फरी-, फरी (दे०) मारना और गतका खेलना; सं० गदा ।
गतागम सं० पुं० तनिक ज्ञान, कुछ भी पता;-होब, -रहब; गत (गया)+आगम (आना)=आना-जाना, आने-जाने तक का पता; सं०; प्र०-म्म, म्य, -म्मि (स्त्री०) ।
गति सं० स्त्री० हालत, अंतिम स्थिति, मरने पर की स्थिति; बुरी हालत, बुढ़ापे की हालत;-होब, -करब, बुरा बर्ताव होना या करना;-सँ परब, काम आना, अंत में काम देना; सं० ।
गदगद वि० पुं० थोड़ा भीगा, पूरा न सूखा;-रहब, -होब; दे० गदु (जिससे यह शब्द संबद्ध जान पड़ता है); मु० प्रसन्न, स्निग्ध, भीगा (प्रेम के मारे) ।
गदर सं० पुं० बलवा;-करब,-होब; अर० ग़दर ।
गदराब क्रि० अ० दानों से भरपूर हो जाना (खड़ी फसल का), पकने के लिए तैयार हो जाना (फल का); वि०-रान; मु० गादर (दे०) हो जाना, डर जाना, सुस्ती करना; प्रे०-वाइब,-राउब; गी० "अमवा बउरि गये महुवा गदराने...।"
गदला वि० पुं० गँदला (पानी); स्त्री०-ली; वै० -न-।
गदहपुन्ना सं० पुं० वह बूटी जिसे आयुर्वेद में पुनर्नवा कहते हैं । इसका साग सुंदर होता है ।
गदहरोइयाँ वि० पुं० जिसके बाल गदहे के रंग के हों (पशु); गदहा+रोवाँ (बाल) दे०; सं० गर्दभ+रोम ।
गदहला सं० पुं० मोटा या पुराना गद्दा; वै० -दाला ।
गदहवा सं० पुं० किसी मूर्ख के संबंध में घृ० प्रयोग; 'गदहा' का घृ० रूप; स्त्री०-हिआ,-या; उ० करे-! क्यों गदहे ?
गदहा सं०पुं० गधा; स्त्री-ही; मु०मूर्ख; सं०गर्दभ ।
गदहिला सं० पुं० एक कीड़ा जो मोटा सा होता है और जाड़ों की फसल में लगता है ।-लागब; वै० गधइ-,-धै-।
गदा सं० पुं० प्राचीन हथियार जो हनूमान आदि योद्धा धारण करते थे ।-मारब,-उठाइब,-फेरब, -भाँजब (दे०) ।
गदागद क्रि० वि० (घूसों के लिए) जल्दी-जल्दी एक के बाद दूसरा;-मारब,-लगाइब,-लागब; ध्व०; वै०-द ।
गदाला सं० पुं० भारी गद्दा या ओढ़ना; दे० गदहला,-देला ।
गदु सं० स्त्री० पेड़ों से निकला हुआ लासा, गोंद आदि जो चिपकाने के काम आता है; वै० गा-।
गदुराब क्रि० अ० गादुर (दे०) की भाँति व्यवहार करना; दोनों ओर रहने की कोशिश करना जैसा पुरानी कथा में गादुर ने किया था ।
गदेला सं० पुं० छोटा पतला गद्दा; बच्चा; दूसरे अर्थ में वै० गेदहरा (दे०) ।
गदोरी सं० स्त्री० हथेली; कहा० जौन पण्डित की पोथी म तौन पण्डिताइन की गदोरी मँ ।
गद्दा सं० पुं० गद्दा; स्त्री०-द्दी, राजा की कुर्सी; गद्दी लेब,-पाइब,-छोड़ब, राजगद्दी छोड़ना ।
गद्दी सं० स्त्री० छोटा गद्दा; राजा का आसन; -होब,-लेब,-देब,-छोड़ब,-पाइब; राज-, राजा को सिंहासन पर बैठाने की पद्धति ।
गधइला दे० गदहिला; शायद मोटा होने और धीरे-धीरे चलने के कारण इस कीड़े को यह नाम मिला है; सं० गर्दभ ।
गन सं० पुं० मुखबिर, भेदिया; सहायक;-लागब, -राखब; सं० गण ।
गनउनी सं०स्त्री० गिनने की मजबूरी, वै०-नौ-;सं० गणना ।
गनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे पर बराबर शब्द करना; प्रे०-काइब, मार देना, वै०-उब; सं० गनक, ऐसा शब्द ।
गनगनाब क्रि० अ० 'गनगन' शब्द होना या करना; ध्व० ।
गनती सं० स्त्री० गणना, गिनती, इज्जत;-करब, -होब वै०-न्ना; सं० गणना ।
गनपति सं० पुं० गणेश जी का एक नाम; सं० गणपति; वै०-त,-जी ।
गनब क्रि० स० गिनना; प्रे०-नाइब,-उब; तरई-, भूखा रहना; सं० गणय ।
गन्ना सं० स्त्री० विवाह के लिए वर वधू की पत्री की देख-रेख;-गनाइब,-करब,-होब ।
गन्ना सं० पुं० ईख;-पेरब,-चुहब (दे०) चूसना, -चुहाइब,-बोइब (दे०) ।
गन्हकि सं० स्त्री० गंधक ।
गन्हकी वि० गंधक का सा; गंधकी;-रंग, ऐसा रंग ।
गन्हाउर सं० पुं० बदबूदार वस्तु; सं० गंध; मु० बदनाम, घृणित; स्त्री०-रि ।

गन्हाब क्रि० अ० बदबू करना; प्रे०-न्हवाइब,-उब; सं० गंध।

गन्हिआ सं० पुं० एक कीड़ा जिसके छूने से बुरी गंध निकलती है; "गन्हाब" से;-लागब, ऐसे कीड़े का फसल में लग जाना जिससे गेहूँ आदि खराब हो जाता है। दे० गान्ही।

गन्हिआब क्रि० अ० "गान्ही" (हींग) लग जाना अकड़ जाना, किसी की बात न मानना।

गन्हौरा सं० पुं० गंदी चीज; स्त्री०-री; वि० बदबूदार; वै०-न्हाउर।

गपकब क्रि० स० जल्दी से खा जाना, सब खा जाना; प्रे०-काइब,-उब।

गपाष्टक सं० स्त्री० लंबी और व्यर्थ की बातें; -करब,-लगाइब; गप+सं० अष्टक; वि०-की,गप्पी।

गपोलिया वि० पुं० गप उड़ानेवाला; झूठा।

गपोली सं० स्त्री० गप; व्यर्थ की बात; व० -लियाँ;-मारब,-उड़ाइब।

गप्प सं० स्त्री० व्यर्थ की बात, झूठ बात;-करब, -मारब; वै० गप, वि०-प्पी, व्यर्थ की बात करनेवाला।

गप्फा सं० पुं० बड़ा कौर या निवाला;-मारब, जल्दी और खूब खाना; वै० गफ़्फा, अं० गल्प, गफ़्फा, उ० गल्पन।

गबगब सं० पुं० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ कहे हुए शब्द;-करब; क्रि०-बाब, बकना, शोर करना।

गबच्चू सं० पुं० मूर्ख; वै०-द्, चप-।

गबड़ब क्रि० स० मिला देना (जल, अन्न आदि), एक में कर देना, खराब कर देना (दूध आदि); प्रे०-ड़ाइब,-ड़वाइब,-उब।

गबद्दा सं० पुं० (स्त्री की) मोटी योनि, जवान स्त्री की योनि; व्यं० तगड़ी युवती; स्त्री०-द्दी,-दी।

गबदू वि० भोंदू, कुछ मूर्ख; सं० व्यक्ति जिसमें विवेक न हो; वह जिसकी बुद्धि मोटी हो; 'गबद्दा' गबदू दोनों मोटापन के द्योतक हैं।

गबन सं० पुं० खयानत; सरकारी या दूसरे का धन बेईमानी से ले लेने का अपराध;-करब,-होब।

गबर-गबर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बोलने के लिए); तु० गप्प; प० ग़प; दे० गब्भा, ध्व०, कभी-कभी खाने के लिए भी प्रयुक्त (भूखे या गरीब के लिए);-खाब।

गबरू दे० गभरू;-जवान, खूब युवावस्था का; केवल पुरुषों के लिए प्रयुक्त। वै०-भडू,-भरू,-भ्रू।

गब्बर वि० पुं० जिसकी जीभ बहुत चलती हो; गुस्ताख, व्यर्थ की, या छोटे मुँह बड़ी बात करनेवाला; स्त्री०-रि;-होब,-करब; भा०-ई।

गब्भा सं० पुं० झूठी बात, छोटे मुँह बड़ी बात; -मारब; वै०-म्भा,-ल्फा,-म्भा; तु० गप (खूब बात) जदन (मारना); प० ग़प।

गब्बे सं० पुं० बातें, लंबी-लंबी पर प्रायः झूठी बातें; यह शब्द बहुवचन के साथ प्रयुक्त होता है और "गब्भा" का बहु० जान पड़ता है।-छाँटब मारब,-उड़ाइब, तु० प० ग़प, वै०-ब्बें।

गभकब क्रि० स० झट से और आसानी से काट देना; मार डालना, मार देना, प्रे०-काइब,-उब।

गभडू वि० पूरा (युवा);-जवान; दे० गबरू।

गभाक सं० पुं० साग, केले का पेड़ आदि काटने की आवाज;-से,-दें, झट से (काटना); ध्व०; प्र० -भाका।

गभिनाइब क्रि० स० गर्भवती कर देना; प्रे०-नवाइब; वै०-उब; प्रायः हँसी या गाली में प्रयुक्त।

गभिनाब क्रि० अ० गर्भवती होना, गर्भ धारण करना (पशुओं के लिए); व्यंग्य में या हँसी में स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त; प्रे०-इब,-उब; सं० 'गर्भ' वि० "गाभिन" (दे०), उससे यह क्रिया बनती है। भूत "गभिनानि" (गाभिन हुई)।

गभुरई सं० भा० गर्व; मुँह फुला कर बोलने की प्रवृत्ति; इस शब्द से अनुमान होता है कि "गभुर" कोई विशेषण होगा, पर ऐसा शब्द बोला नहीं जाता; शायद पहले रहा हो;-सं० गह्वर ? तु० गब्बर।

गभुराब क्रि० अ० मुँह फुला कर बोलना; ऐंठ के बोलना; रुष्ट होना; वै०-आब।

गभ्भ सं० पुं० डूबने या पानी में गिरने का शब्द; -सें,-दें; वै०-ब्भ,-ब्ब; ध्व०।

गभ्भा दे० गब्भा;-छाँटब।

गभ्रू दे० गबरू।

गम सं० पुं० धीरज, शान्ति;-खाब, धीरज धरना, सहना;-करब, कुछ न करना, चुप रहना; अर० ग़म (शोक)।

गमक सं० स्त्री० महक;-देब; क्रि०-ब।

गमकब क्रि० अ० महकना; प्रे०-काइब।

गमगमहटि सं० स्त्री० खुशबू का ताँता; महक; -मचब; 'गमक' का प्र० रूप।

गमछा सं० पुं० अँगोछा; पू० अ०।

गमला सं० पुं० मिट्टी का बर्तन जिसमें फूल लगाया जाता है।

गमाक सं० पुं० गिरने की आवाज; प्र०-का, जोर की आवाज;-धें,-सें, जोर से;-का होब, बड़ी आवाज होना (गिरने की); क्रि०-ब, उ० गोला-; ध्व०; दे० घमाक,-का।

गमागम दे० घमाघम।

गमी सं० स्त्री० शोक का अवसर; मृत्यु; प्र०-म्मी; सादी-, हर्ष एवं शोक के अवसर;-होब,-परब; अर० ग़म।

गम्हीर वि० पुं० भारी, वजनवाला; गंभीर; कम बोलनेवाला; गरू-, आदरणीय, व्यं० गर्भवती; स्त्री०-रि; सं० गंभीर; भा०-म्हिरई; वै० गहूँ-, दे० गरू।

गयतल वि० पुं० बहुत पुराना, बेकार; स्त्री०-लि; गय (गया, गयागा)+तल (तल्ला) जिसका तल्ला

फट गया हो (वह जूता); वै० गै-,-हा,-ही; प्रायः निर्जीव वस्तुओं के लिए प्रयुक्त;-खाता, बेकार वस्तुओं का ढेर।

गयबुआ वि० योंही आया हुआ; जिसका पता न हो; जिसका ठिकाना न हो; स्त्री०-बुई, पर दोनों लिंगों में यों भी एक सा प्रयुक्त होता है। शा० अर० गायब से।

गयर वि० पुं० दूसरा, पराया, बाहरी, स्त्री०-रि; अर० गैर; दे० अनगयर।

गयल सं०स्त्री० राह, गली, प्रायः कविता में प्रयुक्त, जहाँ यह प्रेमियों की गली के लिए या "प्रेम-मार्ग" के लिए आता है। वै० गैल।

गयस सं० पुं० गैस, गैस की रोशनी; अं० गैस; वै० गैस,-जरब,-जराइब।

गया सं० पुं० गयाधाम, प्रसिद्ध तीर्थ;-करब, गया जाकर पितरों का श्राद्ध आदि करना; सं०।

गर सं० पुं० गला;-काटब, (किसी वस्तु का खाने पर) गले में चिरमिराना जैसे जमीकंद आदि; -दबाइब, जबर्दस्ती करना; फ़ा० गुलू, लै० गुल।

गरक वि०डूबा, नष्ट;-करब,-होब, अर० गर्क़; शायद 'गड़प' भी इसी से संबद्ध है (दे०)।

गरगज वि० मोटा, फूला हुआ;-होब, तगड़ा हो जाना; फूलि कै-होब, खा पीकर मोटा होना; प्रसन्न हो जाना; फा० करगस, गिद्ध (जो पतला लंबा होता है पर मुर्दा खाकर मोटा बन जाता है।)

गरगराब क्रि०अ० जोर से और क्रोधपूर्वक बोलना; चिल्लाना; झगड़ा करना, ध्व० 'गरगर'; दे० गुर्र, अर० गर, फा० गुलू (गले पर जोर देकर बोलना); अर० गरगरा, गले में कुल्ली करने की दवा।

गरज सं० स्त्री० स्वार्थ, काम, आवश्यकता;-होब, -रहब;-बावला, स्वार्थांध, अपने काम से पागल, स्वार्थसिद्धि में व्यस्त; वै० गर्जि,-जि, गर्ज; वि०-जू; अर० ग़र्ज़।

गरजब क्रि० अ० गरजना; जोर से बोलना, गर्व या क्रोध से डाँटना, झगड़ना, पहे० तर गरजै उपर चमकै (हुक्का)।

गरजि दे० गरज।

गरजी वि०गर्जवाला; जिसे आवश्यकता हो; अलु-जिसे आवश्यकता न हो या जिसकी बहुत पूछ हो, अलगरजी क सौदा, बिना स्वार्थ का काम, वह काम जिसमें किसी की रुचि न हो; कहा० तीन जाति अलगरजी, नाऊ धोबी दरजी; यह शब्द कम प्रयुक्त होता है, प्रायः "गरजू" या "गरजूँ" बोलते हैं। अर० ग़र्ज़।

गरजू वि० गर्जवाला, जिसे आवश्यकता हो; वै० -जूँ; अर० गर्ज (स्वार्थ) से।

गरब सं० पुं० घमण्ड, वि०-बी,-बिहा; वै०-भ; सं० गर्व;-करब,-होब।

गरभ सं० पुं० गर्भ;-रहब,-गिरब,-गिराइब,-गिरवाइब; सं० गर्भ; तुल० गर्भक के अर्भक दलन'''।

गरभी वि० गर्ववाला, घमंडी; वै०-बी,-बिहा, -भिहा।

गरम वि०गर्म, क्रुद्ध;-करब,-होब, क्रि०-माब,-माइब, -उब; फा० गर्म।

गरमाइब क्रि० स० गर्म करना; वै०-उब, प्रे०-मवाइब; फा० गर्म।

गरमागरम वि० ताजा, गर्मगर्म; फा० गर्म।

गरमागरमी सं०स्त्री० क्रोध से भरी बातें: दो तरफ से गरम-गरम बातें;-होब, वै० गरमीगरमा।

गरमाब क्रि०अ० गर्म होना, क्रुद्ध हो जाना; कामातुर होना; प्रे०-इब,-उब,-मवाइब,-उब।

गरमिहा वि० पुं० जिसे गर्मी या सूजाक आदि रोग हो; स्त्री०-ही।

गरमी सं० स्त्री० गर्म होने का भाव; सूजाक आदि की बीमारी;-होब,-करब; फा०गर्मी;-गरमा, गरमा-; क्रि०-मिआब, गर्म हो जाना (व्यक्ति का), गर्मी में थक या परेशान हो जाना।

गरमें क्रि० वि० गरमी में, गर्मी के समय; धूप में; फा० 'गर्म'।

गरर सं०पुं० 'गर-गर' का शब्द; बार-बार 'गर-गर' की आवाज;-गरर;-होब,-करब; ध्व०; क्रि०-राब।

गरसहा दे० गोरस।

गरसी सं० स्त्री० दे० गोरसी।

गरह सं० पुं० ग्रह, कष्ट;-होब-रहब,-कटब, -काटब;-गोचर, ज्योतिषीय गणना; सं०ग्रह।

गरहन सं० पुं० ग्रहण;-लागब,-क छाया, जन्म-जात चिह्न जो किसी के शरीर पर हो, जिसे गर्भस्थित शिशु पर ग्रहण का प्रभाव बताते हैं।

गरहित वि० ग्रह से प्रभावित; कष्ट में; सं० ग्रहित, गृहीत।

गरही वि० ग्रह द्वारा क्लिष्ट; गरह + ई; सं० ग्रह + इन्।

गराम-सुधार सं० पुं० सरकार का "ग्रामसुधार" विभाग; सं० ग्राम-सुधार।

गरार वि० पुं० तगड़ा, ज़ोरदार; स्त्री०-रि।

गरारा सं० पुं० गले को ठीक करने के लिए दवा, नमक आदि का कुल्ला;-करब, अर० गरगरा।

गरारी सं० स्त्री० पत्थर या ईंट आदि पर रस्सी का चिन्ह;-परब; कुएँ की गरारी जिससे रस्सी लटकाई जाती है।

गरास सं० पुं० ग्रास, कवर; एक-,दुइ-, क्रि०-ब, खाना, थोड़ा सा खाना, सं० ग्रास।

गराह सं० पुं० दे० ग्राह।

गरिआइब क्रि० स० गाली देना; प्रे०-वाइब, वै० -या-,-उब; 'गारी' (दे०) से क्रिया।

गरिबई सं० स्त्री० गरीबी, दरिद्रता; अर० ग़रीब (दरिद्र); वै०-ता।

गरिबऊ वि० दरिद्रयपूर्ण, गरीबीवाला; अर० ग़रीब + ऊ जैसे "[illegible]ऊ" (दे०)।

गरिबता सं० स्त्री०गरीबी, दरिद्रता; अर० गरीब+सं० ता; वै०-री-।

गरिबाब क्रि० अ० गरीब हो जाना, गरीब बन जाना; अर० गरीब से क्रि० ।

गरियाइब दे० गरिआइब ।

गरी सं० स्त्री० गिरी, नारियल का गूदा ।

गरीब वि० पुं० दरिद्र, धनहीन; स्त्री०-बि०, भा० -बी,-रिबई,-रिबता, वि०-रिबऊ दे०; अर० गरीब ।

गरीब-नेवाज सं० जो गरीब का पालन करे; वि० ग़रीब पर दयालु; तुल०-जु; अर० ग़रीब+फा० नवाज़ (कृपालु) ।

गरीब-परवर सं० पुं०जो ग़रीब की सहायता करे; बड़े अफ़सरों या महानुभावों को संबोधन करने का पुराना शब्द; वि०परम दयालु; अर० ग़रीब+फा० परवर (पालक)-परवरदन, पालना ।

गरीबी सं० स्त्री० दरिद्रता;-बूझब,-समझब, गरीबी का ध्यान या ख्याल करना; अर० ग़रीब+ई ।

गरुअई सं० स्त्री० वज़न, बोझ, शांति; वै०-आई; सं० गुरु+अई ।

गरुआब क्रि० अ० बोझ के कारण थकना; असह्य होना; "गरू" से क्रि०; सं० गुरु+आब; प्रे० -वाइब,-उब ।

गरुई दे० गेरुई ।

गरुका वि० पुं० वजनी, भारी; स्त्री०-क्की; "गरू" का प्र० रूप; सं० गुरु+का; दूसरे वि० में भी यह अवधी प्रत्यय 'का' या'क्का'लगता है, उ० 'बड़का''छोटका' आदि ।

गरुड़ सं० पुं० प्रसिद्ध गरुड़ जी जो विष्णु के वाहन हैं; वै०-ड़र,-रुर; सं० गरुड; आ०-महराज, -भगवान ।

गरुहर वि० पुं० गुरुतर, अधिक वज़नी, अधिक प्रभावशाली; सं० गुरुतर=गरु+हर; यह 'हर' प्रत्यय कभी-कभी 'हन' हो जाता है, जैसे 'छोट-हन' बड़हन (दे०); स्त्री०-रि ।

गरू वि० भारी; शांत;-गँभीर, गर्भवती; परम शांत; सं० गुरु+गंभीर; भा०-रुअई ।

गरे क्रि० वि० गले (में);-लगाइब, सिर मढ़ना, ज़बरदस्ती (किसी को कुछ) देना; वै०-रें ('गर' में); फ़ा० गुलू ।

गरेछब क्रि० स०घेरना, तंग करना, फँसाना; प्रे० -छवाइब,-उब; सं०ग्रस्, गृह्; वै०-सब ।

गरेड़ी सं० स्त्री० गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े; वै०-ड़ेरी, गँ— ।

गरैया दे० गौरैया ।

गलइचा सं० पुं० गलीचा, कालीन; वैं०-लैचा; फा० कालींचः (छोटा); कालीन (बड़ा) कालीन; "गुलगुले गिलिम गलीचे हैं गुनीजन हैं··· ।

गलइब क्रि० स० गलाना, वै०-उब, प्रे०-लाइब, -लवाइब,-उब;'गलब' का प्रे० ।

गलका सं० पुं० खट्टे या कच्चे फल का शक्कर तथा मसालों के साथ बनाया हुआ अचार;-बनाइब ।

गलगल वि०नरम, भीगा, पका हुआ; परम प्रसन्न, द्रवीभूत; कहा०"गलगल नेबुआ औ घिउ तात"; -होब,-करब ।

गलचउर सं० पुं० मजे की बातें, लंबी-लंबी बातें, व्यर्थ की बातें;-करब,-होब; गल (गाल)+चाउर (चावल) जैसे नरम चावल धीरे-धीरे आराम से खाये जाते हैं वैसी ही बढ़िया, बेकाम की बातें । प्र०-चभौ (चाभब, दे०)चबा-चबाकर की हुई बातें; वै०-चौर,-चभौ ।

गलछा सं० पुं० नई शाखा,-फूटब,-फोरब; दे० गँछाब ।

गलत वि० पुं० अशुद्ध;-करब,-होब; स्त्री०-ति; वै० -ल्त,-ल्ति; अर० गलत (अशुद्धि); भा०-ती ।

गलता वि० पु० बहुत पुराना, फटा हुआ, गला (दे० गलब) हुआ; दे० गैतल, गयलल ।

गलती सं० स्त्री० अशुद्धि, चूक, भूल;-होब,-करब, -खाब, धोका खाना; अर० ग़लत से 'ई' लगाकर भा० बना यद्यपि अर० में वह शब्द स्वयं भा० है ।

गलफर सं० पुं० गाल के भीतर का भाग; गल (गाल)+फर (फारब ?)=फल; तु० स्वी० गाल, गिल (अं)=पानी के जन्तुओं के श्वास के अंग ।

गलफा सं०पुं० अफवाह, गप, जनरव;-होब;-करब, -उड़ब,-उड़ाइब; शा० गलफर से संबद्ध जैसे पं० गल (बात) दे० गाला ।

गलफुलना वि० पुं० जिसका गाल फूला हो, मोटे मुँह का; स्त्री०-नी; वै०-नहा,-ही; गल (गाल)+फुलना (दे० फूलब) ।

गलब क्रि० अ० गलना, पिघलना; खर्च होना, नीचे जाना (कुएँ की दीवार आदि का); लगना; रुपया-,पैसा-; पसीजना, दयालु हो जाना; प्रे० -लाइब,-वाइब,-उब ।

गलबा सं० पुं० आंदोलन, गड़बड़;-होब; फा०गुल-गुल (शोरगुल);-करब,-होब, शा० यह शब्द और 'गलफा' एक ही हैं ।

गलबाहीं सं० स्त्री० गले में बाँह डालने की क्रिया;-देब, आलिंगन करना; गल+बाँह, क०-हियाँ, वै०-हैं ।

गलसटब क्रि० अ० बातें करना, गप मारना; व्यर्थ की और लंबी बातें करते रहना; पं० गल (बात)+साटब (दे०)=सटहरब (मारना) दे० ।

गलहंस सं०पुं० निःसंतान की संपत्ति का अधिकार ।

गला सं० पुं० गला, कंठ;-चलब,-बैठब; प्रायः 'गटई'; फा० गुलू ।

गलाइब क्रि० स० गलाना; वै-उब, प्रे०-लवाइब, -उब; मु० पइसा-(किसी काम में पहले) द्रव्य खूब खर्च कर देना, भा०-ई,-लवाई ।

गलानि सं० स्त्री० ग्लानि, दुःख, अफ़सोस;-होब, -करब; सं० ग्लानि ।

गलार वि० पुं० बहुत या जोर से बोलनेवाला,

गुस्ताखी से बोलनेवाला; स्त्री०-रि; 'गल' या 'गर' से ।

**गलारा** सं०पुं० पानी बहने का बड़ा रास्ता जो पानी स्वयं काटकर बना लेता है;-होब,-करब; प्र० घ ।

**गलिआइब** क्रि० स० जबरदस्ती मुँह या गले में (भोजन आदि) डाल देना; वै०-उब, प्रे०-वाइब, -उब; 'गर' या'गल' से ।

**गलिआरा** सं०पुं० तंग और दो दीवारों या मकानों के बीच का रास्ता; 'गली' से 'आरा' प्रत्यय लगाकर ।

**गलिआँ** सं० स्त्री० गली; क्रि० वि०-गलिआँ, गली-गली (गी०); वै०-याँ ।

**गली** सं० स्त्री० छोटी तंग सड़क;-गली, बहुत सी गलियों में ।

**गलीज** सं० स्त्री० गंदगी; गंदी वस्तु; वि० गंदा, अपवित्र, अर० ग़लीज़ (जमी हुई वस्तु) ।

**गलुआ** सं० पुं० मोटे या फूले हुए गाल;-निकरब, मोटा हो जाना; 'गाल' से; वै०-वा,-हा ।

**गलुक्का** सं० पुं० छोटा गाल, बच्चे के गाल, जिसे डाँटना या मारना हो उसके गाल;-निकरब, -काढ़ब,-चीरब; 'गाल' (दे०) का घृ० रूप ।

**गलूबंद** दे० गुलु- ।

**गलैया** सं० पुं० गलनेवाला, पसीजनेवाला, दया करनेवाला; प्रे०-लवै-, वै०-आ; भा०गलाई,-करब, -होब ।

**गलोना** दे०घ-;शायद शब्द 'गलब' या 'घुलब' से बना है ।

**गल्ला** सं० पुं० अनाज; दूकान का रुपया (जो एक स्थान पर रखा हो); ऐसे रुपये का स्थान;-पानी, माल; अर०ग़ल्लः (अनाज); प्राचीन काल में अनाज ही मुख्य धन था ।

**गवँखा** सं० पुं० दे० गउँखा; सं० गवाक्ष ।

**गवँगीर** वि० पुं० चालाक; समय का लाभ उठानेवाला; गवँ, दाँव, + फ़ा० गीर (पकड़नेवाला); वै० गौं-, गउँ-(दे०) ।

**गवँरई** सं० स्त्री० सीधापन, मूर्खता;-करब; सं० 'ग्राम' से भा० संज्ञा ।

**गवँरऊ** वि० गाँव का, सीधा, असभ्य; सं० 'ग्राम' से; गवाँर + ऊ ।

**गवँरपन** सं० पुं० सिधाई; मूर्खता; सं० ग्राम ।

**गवमाँस** सं० पुं० गोमांस;-खाब,महापाप करना; वै०-उ-; सं० गोमांस ।

**गवसाला** सं० स्त्री० गोशाला; वै० गउ-; सं० गोशाला ।

**गवहिंआ** सं० पुं० मेहमान, अतिथि ।

**गवहीं** सं० स्त्री० मेहमानी, ससुराल के रिश्ते में पहले-पहल जाने की पद्धति; ऐसे समय का उपहार;-करब ।

**गवइआ** सं० पुं० गानेवाला; वै०-या,-वै-; प्रायः दोनों लिंगों में प्रयुक्त; सं० ।

**गवईं** सं० स्त्री० देहात, गाँव; गाँवों का समूह; "गवइँ गाहक कौन ?"-बिहारी; क्रि० वि० गाँव में; सं० ग्राम ।

**गवकसी** दे० गउ- ।

**गवचर** दे० गउ- ।

**गवन** सं० पुं० विवाह के पश्चात् बहू का पति के घर जाने का रस्म;-करब,-देब,-होब,-लेब,-आनब; सं० गमन (जाना);-ने क दुलहिन, शर्मीली, लजीली, धीरे-धीरे बोलने या चलनेवाली; वै० गौन,-ना ।

**गवतब** क्रि० स० सूझना; दे० अवगतब; विपर्यय से 'वग' का 'गव' होकर प्रारंभिक 'अ' का लोप हो गया है ।

**गवनई** सं० स्त्री० गाने की क्रिया; गीत; सं० गायन ।

**गवनहरि** सं० स्त्री० गानेवाली; कभी पुरुषों के लिए '-हर' प्रयुक्त होता है । सं० गी + हिं० हर ।

**गवाँइब** क्रि० स० खोना, गँवाना; वै०-उब ।

**गवाँर** सं० पुं० गाँव का रहनेवाला, वि० सीधा, शहर के नियम न जाननेवाला; मूर्ख; भा०-वरई, -पन ।

**गवाँरू** वि० गँवारों का सा; देहाती; गँवार + ऊ; सं० ग्राम ।

**गवा** सं० पुं० दो उँगलियों के बीच का चमड़ेवाला भाग; बेल का नया टुकड़ा;-फेंकब, -फूटब ।

**गवाह** सं० पुं० साक्षी; फ़ा० जिसमें यह शब्द 'गवाही' के भी अर्थ में आता है । भा०-ही ।

**गवाही** सं० स्त्री० गवाह होने या बनने का भाव, क्रिया आदि;-देब,-लेब; फ़ा०;-साखी, सबूत, -लागब, सबूत की आवश्यकता होना,-हेरब, सबूत खोजना; यह समास फ़ा० तथा सं० (साक्षी) की मिलावट का सुंदर नमूना है ।

**गवैआ** दे० गवइआ ।

**गस** सं० पुं० बेहोशी; बेहोश होने की क्रिया या स्थिति;-आइब;-अर० ग़शी (बेहोशी) ।

**गसइआ** सं० पुं० डाँटनेवाला; गाँसनेवाला या वाली; दे० गाँसब; वै० गँ-,-वइआ,-वैया ।

**गस्त** सं० पुं० चक्कर, घूमने की क्रिया;-लगाइब, -करब,-घूमब; फ़ा० गश्त, घूमना; वै०-हत, (देहाती लोग); हजार-गस्ता, वह (स्त्री) जो हज़ारों के पास जाय; यह गाली प्राय स्त्रियों द्वारा ही प्रयुक्त होती है ।

**गहकी** सं० पुं० गाहक; सं० ग्रह से (ग्रहण करनेवाला) ।

**गहगह** वि० पुं० प्रसन्न, परम संतुष्ट;-होब, -करब ।

**गहत** सं० पुं० चक्कर;-करब,-घूमब,-लगाइब; फ़ा० गश्त; हजार-गहता (दे०) ।

**गहदाला** सं० पुं० मोटा गद्दा; मोटा कपड़ा ।

गहदिआब क्रि॰ अ॰ (घाव या फोड़े का) सूज जाना, भर कर दर्द करना।

गहदी सं॰ स्त्री॰ नाले के किनारे का भाग; ऊँचा भाग।

गहनिहा वि॰ पुं॰ जिसे गहनी (दे॰) रोग हो गया हो; स्त्री॰-ही।

गहना सं॰ पुं॰ आभूषण;-गढ़ाइब,-देब।

गहनी सं॰ स्त्री॰ जानवरों की जीभ का एक रोग जिसमें दाने या काँटे से हो जाते हैं।-काढब, इस रोग को अच्छा करना जिसमें जीभ पर नमक आदि रगड़ते हैं। वि॰-निहा,-ही, सं॰ गृह।

गहने-क-छाया सं॰ स्त्री॰ किसी बच्चे के शरीर पर वह काला चिह्न जो जन्मजात हो। विश्वास है कि ऐसे बच्चों के गर्भ में होने पर जब ग्रहण लगता है तो ऐसे चिह्न प्रायः हो जाते हैं,-परब, -होब, सं॰ ग्रहण।

गहब क्रि॰ स॰ पकड़ लेना, ग्रहण करना, ज़ोर से पकड़ना, प्रे॰-हाइब,-हवाइब,-उब, "दोषहि को उमहै गहै"।

गहबड़ वि॰ पुं॰ जिसमें रंग गहरा हो; स्त्री॰-ड़ि, वै॰ गहाबड़ि (गीतों में प्रयुक्त)-"चुनरी गहाबड़ि" क्रि॰-बोड़ब,-रब (दे॰) पियरी ······।

गहाइब क्रि॰ सं॰ पकड़ाना; यह शब्द बहुत कम प्रयुक्त होता है। सूरदास ने कविता में "गहाऊँ" ब्रजभाषा का रूप लिखा है, पर अवधी कविता में यह नहीं मिलता। सं॰ गृह।

गहारि दे॰ गोहारि।

गहिआइब क्रि॰ सं॰ गाही लगाकर गिनना, दे॰ गाही।

गहिया दे॰ गोहिया।

गहिर वि॰ पुं॰ गहरा, स्त्री॰-रि, कहा॰ "अहिर क पेट गहिर कुरमी क पेट मड़ार", भा॰-ई,-पन, -राई, क्रि॰-राब,-राइब,-रवाइब।

गाँगासहाई सं॰ पुं॰ कल्पित व्यक्ति जो चारों ओर उदारता प्रदर्शित करे; वै॰ गाँगू-, गंगा + सहाय, जो गंगा की भाँति सर्वत्र सहायतार्थे उदार रहे।

गाँछब क्रि॰ स॰ बटोरकर बाँध देना, प्रे॰ गँछा-इब,-वाइब,-उब, भा॰ गँछाई,-वाई।

गाँछा सं॰ पुं॰ नया कल्ला, पत्ता, आदि.-फोरब, -फूटब, दे॰ गछाब, ब॰ गाछ (पेड़), वै॰-फा।

गाँजड़ सं॰ पुं॰ नदी के किनारे का भूभाग।

गाँजब क्रि॰ स॰ एकत्र करना, ढेर करना, 'गंज' (फ़ा॰) से, प्रे॰ गँजाइब, गँजवाइब।

गाँजा सं॰ पुं॰ एक नशीली पत्ती जो चिलम पर पी जाती है;-भाँग; नशे की सामग्री।

गाँठब क्रि॰ स॰ पक्का करना; अपने चक्कर में फँसाना; मु॰ भोग करना; मतलब-, स्वार्थ सिद्ध करना; प्रे॰ गँठाइब,-उब, गँठवाइब,-उब।

गाँठि सं॰ स्त्री॰ गाँठ; मु॰ बहुत दिन का (पर जो देखने में इतने दिन का न जान पड़े);-परब, मन-मुटाव हो जाना,-डारब, मनमुटाव डाल देना। हरदी क-, थक गाँठि हरदी, हल्दी का एक पूरा टुकड़ा, वि॰ गँठिहा, गाँठवाला;-देब,-जोरब, पति-पत्नी के कपड़ों में गाँठ लगाना (धार्मिक कृत्यों के के लिए),-जोराइब, ऐसा कराना; सं॰ ग्रंथि।

गाँड़ सं॰ पुं॰ गन्ने का टुकड़ा;-बैठाइब, बोये हुए गन्ने के खेत में एक या दो दिन बिखरे हुए टुकड़ों को ठीक-ठीक फिर से रखना;-बैठवाइब,-उब।

गाड़ब क्रि॰ स॰ गाड़ना; प्रे॰ गड़ाइब,-ड़वाइब, -उब।

गाँड़ि सं॰ स्त्री॰ गाँड़;-मारी,-चोदी, स्त्रियों के लिए गाली;-मारब,-मराइब;-मराउब;-खोदब, तंग करना, व्यर्थ कष्ट देना; वि॰। "कबिरा चाक कुम्हार का माँगे दिया न देय। "चहै नांद लै लेय"

गाँड़ू वि॰ पुं॰ जो गाँड़ मारे या मरावे; मु॰ नामर्द, नीच; दु-, हत्तेरे की, दुत; वै॰ गँड़ुआ,-हा (स्त्री॰ -ही,-ई,-ही); कभी-कभी लोग "गँड़िहा" भी बोलते हैं।

गाँव सं॰ पुं॰ ग्राम;-गढ़ी, गाँव के पड़ोस के लोग; -भाई, गाँवा-, एक गाँव के लोग जो भाई सदृश हों। सं॰ ग्राम

गाँस सं॰ पुं॰ नियंत्रण, डर;-राखब; क्रि॰-ब।

गाँसब क्रि॰ स॰ डाँटना, रोकना; प्रे॰ गँसाइब, -सवाइब,-उब।

गाइ सं॰ स्त्री॰ गाय, मु॰ दीन, अनाथ, शरणागत, सं॰ गो, वै॰ गाय, गइया,-आ।

गाइब क्रि॰ स॰ गाना, मु॰ किसी बात को बढ़ा कर और देर तक कहते रहना प्रे॰ गवाइब, बै॰ -उब, -बजाइब, प्रे॰ गवाइब,-उब, मु॰ गायें बजायें जाब, बरबाद होना।

गाऊ-घप्प वि॰ जो शीघ्र न समझे; सुस्त; जो सब कुछ हजमकर जाय; गाऊ (गाय) + घप (गिरने की आवाज अर्थात् जिसे गाय तक के गिरने की आवाज (न पता चले); यह दोनों ही लिंगों में एक प्रकार प्रयुक्त होता है।

गागरि दे॰ गगरी, यह शब्द प्रायः गीतों अथवा कविता में प्रयुक्त होता है।

गाज सं॰ पुं॰ फेना;वज्र;-उठब,-परब, मु॰ गाज परै (वज्र पड़े)!

गाजब क्रि॰ अ॰ हर्ष प्रदर्शित करना, परम प्रसन्न होना, गर्वपूर्वक हर्ष करना, वै॰ गौजब।

गाजरि सं॰ स्त्री॰ गाजर; मुरई-,साधारण वस्तु; सं॰ गृंजन।

गाजा-बाजा सं॰ पुं॰ हर्ष प्रदर्शन; आह्लाद, 'गाजब' से, गाजा + बाजा।

गाजी सं॰ पुं॰ मुसलिम पीर जिसकी पूजा होती है;-मियाँ; अर॰ ग़ाज़ी; इन्हें प्रायः "बालेमियाँ" भी कहा जाता है; कहा॰ एक हाथ के बालेमियाँ, नव हाथ कै पूँछि।

गाट सं॰ पुं॰ गाढ़, अं॰।

गाटर सं० पुं० लोहे का गर्डर; अं० ।

गाटा सं० पुं० मोटा टुकड़ा; चौड़ा छोटा खेत; व्यं० मोटा छोटा सा व्यक्ति; व्यक्ति जो अपना रहस्य दूसरे को न बताये, इस व्यंग्यात्मक अर्थ में यह शब्द स्त्रियों के लिए भी ऐसे ही प्रयुक्त होता है। वै०-ट,-टि ।

गाड़ा सं० पुं० छिपकर हमला करने का ढंग;-परब, इस प्रकार हमला करना ।

गाढ़ त्रि० पुं० गाढ़ा, कठिन; सं० संकट;-अवसान, विपत्ति;-परब; गाढ़ें, संकट के समय; कठिनता से; व्यं० जो अपना भेद शीघ्र न बतावे;-मनई; स्त्री० -ढ़ि, प्र०-ढ़ै,-ढ़ै-गाढ़ ।

गाढ़ा सं० पुं० मोटा कपड़ा; वि० जो अपने हृदय की बात दूसरे को न बतावे; छिपानेवाला; स्त्री०-ढ़ि ।

गाढ़ें क्रि० त्रि० कठिनता से; मजबूरी में;-परब, कष्ट में पड़ना, मजबूरी में फँसना ।

गाती सं० स्त्री० दोनों कंधों पर बँधा हुआ कपड़ा जो कुर्त्ते की भाँति दोनों ओर नीचे तक लटका हो। यह देहात में छोटे-छोटे बच्चों और कभी-कभी साधुओं या बड़ों-बड़ों को भी पहनते देखा है। सं० गात (शरीर), अर्थात् जिससे शरीर ढका रहे; कहा० अपुना क भगवै न बिलारी क गाती अर्थात् स्वयं लँगोटी भी नहीं पाता पर बिल्ली के लिए 'गाती' का प्रबंध करता है (कोई मूर्ख)।

गाथा सं० स्त्री० लंबी कहानी, व्यर्थ की बात; कभी-कभी व्यंग में यह शब्द पुं० भी बोला जाता है। सं० ।

गादर वि० पुं० कम चलनेवाला (हल या गाड़ी आदि का बैल); क्रि० गदराब ।

गादा सं० पुं० कच्ची मटर, चने, मक्का आदि का कूटा हुआ अंश जिसकी दाल, कढ़ी आदि बनती है। अधपके गेहूँ के इसी प्रकार कुटे हुए पदार्थ को पूरब में "हाबुस" कहते हैं।

गादु सं० स्त्री० किसी पेड़ का गोंद या लासा।

गादुर सं० पुं० चमगीदड़; चम-; जो० गेदुर, -री (छोटे-), रा०प्र०चमगीदुर,-गुदरू; सी० चि०।

गाना सं० पुं० गीत; इस अर्थ में प्राय: "गीति" बोला जाता है। सं० गान।

गाफा सं० पुं० यह शब्द कभी-कभी "गाँछा" के लिए बोला जाता है;-फोरब; वै० गाँ-, गों-।

गाभ वि० बहुत (हरा); उ० हरिअर गाभ (खूब हरा)।

गाभिन वि० गर्भिणी; वै०-नि; सं० गर्भ।

गाय सं० स्त्री० गऊ; व्यं० सीधा, गरीब, मूर्ख; सं० गो।

गारब क्रि० स० निचोड़ना, गारना; अच्छी तरह निकालना; प्रे० गराइब,-उब, गरवाइब, -उब।

गारा सं० पुं० मिट्टी का गारा;-माटी,-चूना; फ़ा० गिल।

गारी सं० स्त्री० गाली;-देब,-सुनब,-सुनाइब,-गाइब; क्रि० गरिआइब, प्रे०-वाइब,-उब।

गाल सं० पुं० गाल;-बजाइब, शंकरजी की पूजा में मुँह फुलाकर गालों से शब्द करना; दे० गलफर।

गाला सं० पुं० गप, व्यर्थ की बात;-मारब, लंबी-लंबी बातें करना; पं० गल, बात; दे०।

गाहक सं० पुं० ग्राहक; दे० गहकी; सं० ग्रह।

गाही सं० स्त्री० पाँच की ढेरी; यक-, पाँच; दुइ-, दस; रा० घई, सी० पचकरी।

गिंजना वि० पुं० गींजनेवाला; स्त्री०-नी दे० गींजब।

गिंजवाइब क्रि० स० "गींजब" का प्रे० रूप; वै० -जाइब।

गिंजाइब क्रि० स० गींजने में सहायता करना; गींजने के लिए बाध्य करना; भा०-ई।

गिंजाई सं० स्त्री० गींजने की क्रिया; प्रे० गिंजवाई; वै०-जानि।

गिचपिच वि० एक में मिला हुआ, अस्पष्ट; वै० -चिर-पिचिर; क्रि०-चाब, अस्पष्ट होना, प्रे०-चाइब, -कर देना; द्वि०-गिचपिच।

गिजबिज वि० लिपटा हुआ; वै०-जिर-बिजिर; क्रि०-जाब, प्रे०-जाइब।

गिजिर-बिजिर वि० दे० गिजबिज, वै० जि-बिजिर।

गिटकी सं० स्त्री० ईंट या पत्थर का छोटा टुकड़ा; वै०-ट्टी।

गिटपिट सं० पुं० जल्दबाजी की बात;-गिटपिट, ऐसी बातों की पुनरावृत्ति,-करब,-होब; क्रि०-टाब; वै०-टिर-पिटिर।

गिड़गिड़ाब क्रि० अ० भयपूर्वक याचना की बातें करना; ध्व०।

गितिहा वि० गीतवाला; स्त्री०-ही।

गिदहरा दे० गेदहरा।

गिद्ध सं० पुं० पक्षी विशेष; व्यं० बहुत देखनेवाला, सर्वभक्षी (व्यक्ति); सं० गृद्ध्र।

गिद्ध-गोहारि सं० स्त्री० चिल्लाहट, मारपीट;-होब, -करब; गिद्ध+गोहारि (दे०), गिद्धों की भाँति ऊँची आवाज;-होब,-करब,-मचाइब।

गिथिआब क्रि० अ० हठ करना, अड़ा रहना, चिल्लाना; व्यर्थ का चिल्लाना।

गिनगिनाब क्रि० अ० काँप जाना; थर्रा उठना; प्रे० -नाइब।

गिनती सं० स्त्री० दे० गनती; सं० गण्।

गिन्नी सं० स्त्री० सोने का सिक्का जिसे अंग्रेजी में गिनी कहते हैं; वि०-न्निहा, गिनीवाला; अं०।

गिब-गिब क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बातें करना); प्र०-बिर-बिर;-करब; ध्व०।

गिब्बे सं० पुं० लंबी गप, व्यर्थ की बात;-मारब, -छाँटब; वै० प्र०;-ब्बी।

गिलट सं० पुं० एक धातु जिसका रंग चाँदी की भाँति होता है; वि०-हा,-टिहा; अं० गिल्ट (?)।

गिल्ला सं० पुं० शिकायत;-करब, उलाहना देना; फ़ा० गिलः।

गिहथापन सं० पुं० चतुरता, बुद्धि; सं० गृहस्थ+पन;-लागब,-लगाइब; वै०-स्था-।

गिहथिन सं० स्त्री० गृह कार्य में निपुण स्त्री; वि० कुशल; वै०-हि-,-नि; सं० गृहस्थ+इनि।

गींज-गाँज सं० पुं० एक में मिला देने की क्रिया; -करब,-होब; क्रि० गींजब-गाँजब।

गींजब क्रि० स० एक में मिला देना; प्रे० गिंजाइब, -जवाइब,-उब;-गाँजब; सी० गिंजइब।

गीति सं० स्त्री० गीत;-गाइब; सं०।

गीध सं० पुं० गिद्ध; सं०गृध्र; तुल०"गीध...बाज-पेई" क्रि०-ब, गिद्ध की भाँति हिल जाना (जैसे गिद्ध मांस या मरे पशु के पास हिल जाता है।)

गील वि० पुं० गीला, भीगा; स्त्री०-लि; क्रि० गिलाब, प्र०-लै,-लौ।

गुँजहरा सं० पुं० हाथ में पहनने का छल्ला; -गोड़हरा, हाथ-पैर के छल्ले; सं० गुंजा+हरा (वाला); पहले ऐसे आभूषणों में गुंजा लगा रहता था। दे० गोड़हरा।

गुग्गुल सं० पुं० एक दवा; वै० गूगुर, गुगुल; सं०।

गुचकब क्रि० स० जल्दी से और अधिक खा जाना; प्रे०-कवाइब,-काइब,-उब; वै०-चु-।

गुच्छा सं० पुं० गुच्छा।

गुज-गुज वि० पु० नरम, धीमा, कमजोर, सुस्त। प्र०-हा; स्त्री०-जि,-ही।

गुजर सं० पुं०.कालयापन;-करब,-होब; वै०-जारा, -रान; फ़ा०।

गुजरब क्रि० अ० बीतना, मर जाना; गवाही-साखी देना; प्रे०-जारब,-राइब,-उब,-रवाइब।

गुजराती वि० गुजरात का;-इलायची, सफेद छोटी इलायची; वै०-यती।

गुजरान सं० पुं० गुजारा;-होब,-करब, निर्वाह होना, करना।

गुझिया दे० गोझिया।

गुट सं० पुं० गिरोह;-करब,-होब, एका कर लेना; प्र०-ट्ट,-ट्ट।

गुटुर-गुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और अधिक (खाना); क्रि०-राइब; वै०-टु-।

गुट्टी सं० स्त्री० पत्थर या ईंट आदि का छोटा टुकड़ा;-डारब, बाँटने के लिए प्रबंध करना; वै० गोटी,-ट्टी।

गुड्डा सं० पुं गुड़िया का पति; गुड्डी-, गुड़िया और उसका पति।

गुड़ सं० पु० दे० गुर।

गुड़गुड़ा सं० पुं० छोटा हुक्का; स्त्री०-ड़ी; क्रि० -ब, गुड़-गुड़ शब्द करना; प्रे०-इब, धीरे-धीरे हुक्का पीते रहना।

गुड़हल दे० अड़उल।

गुड़बुड़ सं० पुं० रह-रहकर गुड़गुड़ शब्द; प्र०-डुर-बुडुर, पेट का-शब्द जो अपच से होता है; -होब,-करब।

गुड़िश्रा सं० स्त्री० गुड़िया; वै०गुडुई।

गुड़ी सं० स्त्री० पतंग।

गुढ़ी सं० स्त्री० जौ की लाई; वै० गू-,-ढ़ही; इसे जौ०सु०प्र०आदि में 'बहुरी' कहते हैं। सी०गूरी।

गुत्थी सं० स्त्री० गुत्थी;-निकारब,-सोझवाइब, गुत्थी सुलझाना।

गुदना दे० गोदना।

गुदुरी सं० स्त्री०मटर की फली; फली या छीमी जिसके भीतर दाने हों।

गुन सं० पु० गुण, तरकीब;-नी, चतुर,-निया, जानने वाला;-करब, लाभ करना, काम आना;-गर, गुण या लाभ करनेवाला, स्त्री०-रि; सं०।

गुन-आगर वि० पु० गुणपूर्ण; स्त्री०-रि; सं०गुण+आगार।

गुनब क्रि० स० विचार करना, मनन करना; पढ़ब-,सीखना, अध्ययन करना; प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब; सं० गुण, गुणन करना।

गुपचुप क्रि० वि० छिपे-छिपे; चोरी से; सं० गुप् (छिपाना)+चुप (चुपके); प्र०-प्प-प्प।

गुबुर-गुबुर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक (खा जाना); क्रि०-राइब; प्र०-ब्बु-प्र०-ब्बु।

गुमान सं० पुं० गर्व, घमंड;-करब,-होब; वि०-नी, -मनिहा, घमंडी।

गुमास्ता सं० पु० गुमाश्ता, खबर लेने या देनेवाला; नौकर; वै०-म-।

गुम्म वि० पुं०गुम, गायब;-होब,-करब; फा०;-सुम्म चुप-चाप; क्रि०-माइब, गुमकर देना।

गुम्मा सं० पुं० गूमा, एक जंगली पौदा जिसकी पत्तियां दवा में काम लाते और दाल में डालते हैं।

गुम्मी वि० गुमनाम;-दरखास, गुमनाम प्रार्थनापत्र या शिकायत; फा० गुम।

गुर सं० पुं० गुड़, रहस्य;-पाइब,-लेब, रहस्य समझना;-म्मा, गुड़ में पकाया हुआ आम;-धनिश्रा, गुड़ में पकाया हुआ गेहूँ जो चबाया जाता है; गुड़+धान्य;-चिउ, शुभ।

गुरखुल सं०पु० पैर में काँटा आदि का पुराना घट्ठा। वि०-हा; (२) एक जंगली पौदा; वै०-खुरू।

गुरछार वि० थोड़ा-थोड़ा मीठा; गुर (गुड़)+छार।

गुरजब क्रि० अ० गुर्राना; डाँटना;-भा०-जवाई।

गुरवाई सं० स्त्री० गुड़ बनाने की क्रिया; कहा० बापराज ना देखी पोय ताके घर...होय।

गुरहा वि० पुं० गुड़वाला, गुड़ खाने का शौकीन; स्त्री०-ही।

गुराही सं० स्त्री० जानवरों (विशेषत: भैंसों) के पैर में बाँधने की रस्सी;-लगाइब; वै० छनानी (प्र० जौ०); शायद 'गोड़' से।

गुरिश्रा सं०स्त्री०लकड़ी या काँच की मनिया;-पहिरब,-बान्हब।

गुरुश्रा सं० पुं० व्यक्ति जिसकी वृत्ति गुरु (मंत्र देने आदि) के काम की हो; भा०-ई;-आई ।
गुरू सं० पुं० गुरु; पक्का व्यक्ति; सं० ।
गुरेरब क्रि०स० आँख फाड़कर या क्रोधपूर्वक देखना, धमकाना ।
गुरांब क्रि० अ० गुर्राना ।
गुलंदाज सं० पुं० छोटे-छोटे टुकड़ोंवाला नमक; शायद फ़ा० गुल (फूल) + अंदाज = फूल की भाँति खिला हुआ (दिखने में) ।
गुल सं० पुं० फूल; दिये की टेम द्वारा छोड़ा हुआ कालिख का गोल टुकड़ा;-खिलब, मजा आना;-छर्रा उड़ाइब, मज़ा करना; फ़ा० ।
गुल-गुला सं० पुं० मीठी पकौड़ी ।
गुलाचैन सं० पुं० एक फूल जिसका पेड़ ऊँचा होता है । फ़ा० गुल ।
गुलेचब क्रि० स० लपेट-लपेटकर खाना; मजे से खाना; फ़ा० गुल + ऍचब; वै०-लें-।
गुलेलि सं०स्त्री० धनुष की भाँति पत्थर आदि फेंकने का लकड़ी तथा चमड़े का बना हथियार;-मारब, -चलाइब ।
गुलौरि सं० स्त्री० गुड़ बनाने का स्थान; वै० गुलवरि; सी० ह० ल० गड़ूरि; सं० गुड ।
गुल्ला सं० पुं० गन्ने का वह टुकड़ा जो एक बार में खाया या चूसा जा सके;-करब,-बनइब; वै० घु-, गठरिया (सी०)
गुल्ली सं०स्त्री० लकड़ी की गिल्ली जिससे बच्चे खेलते हैं;-डंडा, प्रसिद्ध खेल "गिल्ली-डंडा" ।
गुस्सइल वि० पुं० गुस्सावाला; स्त्री०-लि ।
गुस्सा सं०पुं० क्रोध;-करब,-होब; अर० गुस्सः ।
गुह सं० पुं० पाखाना, मैला;-निकारब,-काढ़ब, बहुत पीटना;-मूत उठाइब, खूब सेवा करना;-थरि, गंदा स्थान; गुह + स्थली; कहा० बनरे क मारें हाथ भर गुह, गुनाह बेलज़्ज़त ।
गुहब क्रि० स० गुहना, एक में गूथना; प्रे०-हाइब, -हवाइब; सं० ग्रथ् ।
गुहरा सं० पुं० कंडा; दे० गोहरा; स्त्री०-री ।
गुहराइब क्रि० स० बुलाना, पुकारना; प्रे०-रवाइब; वै० गो-,-उब; भा०-हारि, गो- ।
गूँगाँ सं० पुं० अस्पष्ट शब्द;-करब, कुछ बोलना, ध्व० ।
गूँजब क्रि० अ० गूँजना; प्रे० गुँजाइब,-जवाइब; माला की भाँति की मनिया बनाना ।
गूङ वि० पुं० गूँगा; स्त्री०-ङि; क्रि० गुङाब, गूँगा हो जाना; सं० गुंग ।
गूझा सं० पुं० फल के भीतर का गूदा; प्र० गुज्झा ।
गूजर सं० पुं० एक जाति और उसके लोग; स्त्री० -री, गुजरिन; सं० गुर्जर ।
गूजी सं० स्त्री० एक छोटा कीड़ा जो प्रायः कान में घुस जाता है ।
गूढ़ वि० पुं०कठिन, पते का, असली; स्त्री०-ढ़ि; कठिन समस्या; क्रि० गुढ़ाब, कठिन हो जाना; -परब, कठिनता सन्मुख आना,-काटब; सं० ।
गूढ़ी दे० गुढ़ी ।
गूथब क्रि० स० गूँथना; गनब-,हिसाब लगाना, पढ़ता लगाना; प्रे०गुँथाइब,-वाइब,-उब ।
गूदर सं० पुं गुदड़ा, कचड़ा; प्र० गुद्दर; कत्थर-, पुराने कपड़े; स्त्री० गुदरी ।
गूदा सं० पुं० गूदा; प्र० गुद्दा; स्त्री०-दी, रेंडी आदि की नरम मींगी;-काढ़ब, .खूब पीटना ।
गूलब क्रि०स० मारना, पीटना; प्रे० गुलाइब,-उब ।
गूलरि सं० स्त्री० गूलर;-क फूल, अलभ्य अथवा अदृश्य पदार्थ ।
गूला सं० पुं० जमीन में खोदा हुआ बड़ा चूल्हा; -बनाइब,-खोदब,-खनब।
गूवा सं० पुं० फाँक, टुकड़ा; वै० गुआ,-वा ।
गेंगें सं० पुं० प्रार्थना पूर्ण शब्द; बिनती;-करब; प्र० घेंघें; ध्व० ।
गेंड़ सं० पुं० गन्ने का सबसे ऊपर का भाग जिसमें पत्ते लगे हों ।
गेंड़ा सं० पुं० खेत का बड़ा टुकड़ा ।
गेंड़ी सं० स्त्री० गन्ने का कटा छोटा टुकड़ा; क्रि० -ड़िआइब, छोटे-छोटे टुकड़े करना; मु० मार डालना ।
गेंडुरी सं० स्त्री० रस्सी या कपड़े की गोल वस्तु जो घड़े के नीचे टिकने के लिए रखते हैं । सी० यँ-।
गेंडुआ सं० पुं० टोंटीदार लोटा; ग्रा० झँझरे गें-गंगाजल पानी; स्त्री०-ई,-री; वै० गड़का; सं०गडुक ।
गेजुआ सं० पुं० घोंघे के भीतर रहनेवाला पानी का कीड़ा जिसके अंडों से केकड़े होते हैं ।
गेताढ़ी सं० स्त्री० जुआठे में लगनेवाली रस्सी; दे० जुआठा, जोंठा ।
गेद सं० पुं० छोटा बच्चा; वै०-हरा; यद्यपि यह शब्द पुं० है पर यह आता है लड़के और लड़की दोनों के लिए ।
गेन सं० पुं० गेंद; ग्रा० फुलगेनवा (फूल की गेंद); -खेलब ।
गेनवरि सं० स्त्री० एक घास जिसके डंठल से कलम बनाते हैं; सं० में इसे मुष्क और फ़ा० में मुश्कबेत कहते हैं । इसके डंठल में गाँठें और भीतर पोला होता है । वै० ग्य- ।
गेना सं० पुं० गेंदा का फूल या पेड़; स्त्री०-नी, छोटा गेंदा; बच्चे गाते हैं-"गेना क फूल केऊ छुयेव उयेव न,गेना मरिजैहैं केउ रोयेव वोयेव न ।"
गेरावँ सं० स्त्री० पशुओं के "पगहे" का वह भाग जो उनके गले के चारों ओर बँधता है; दे० पगहा; सं० ग्रीव (गर्दन); वै० राईं ।
गेरुआ सं० पुं० गेरू; वि० इस रंग का; वै०-रू ।
गेरुई सं० स्त्री० एक रोग जो गेहूँ के पौदे में लगता है और जिसके लगने से सारा पेड़ गेरू की भाँति लाल हो जाता है । यह संक्रामक होता है और

इसके संबंध में यह पहेली है:-"हाथ न गोड़ नहीं मुँह बकरे, खात है अनाज चलत भुइँ पकरे"।

गेह् सं० पुं० परवाह, रक्षा, चिंता;-करब,-होब।

गेहुँअन सं० पुं० एक प्रकार का साँप जिसका रंग गेहूँ की भाँति और जो विषैला होता है; वै० गो-दे०; सं०।

गैया सं० स्त्री० गाय।

गैर वि०पुं० दूसरा; स्त्री०-रि; वै० गयर; अर० ग़ैर; दे० अनगयर, गयर; सं० स्त्री० संतोष, तितीक्षा; -करब; वि० री।

गैल सं० स्त्री० रास्ता; दे० गयल।

गैस दे० गयस।

गोंइठा सं० पुं० सूखे गोबर का टुकड़ा; स्त्री०-ठी; वै० ग्व-।

गोंजब क्रि० स० एक में मिला देना; पशुओं का सानी पानी करना, चारा देना; प्रे०-जाइब,-जवाइब,-उब; भा०-जाई।

गोंठब क्रि० स० किसी वस्तु या अंग को उँगली या गोबर आदि से छूकर हाथ फेर देना; प्रे०-ठाइब, -वाइब,-उब।

गोगा वि० पुं० मूर्ख;-बाई, महामूर्ख।

गोचर सं० पुं० दे० गरह-।

गोई सं० स्त्री० दो बैल; बैल की जोड़ी; प० ग्वाई।

गोजर सं० पुं० बहुत पैरोंवाला विषैला कीड़ा, कनखजूरा; वि० धीरे-धीरे काम करनेवाला।

गोजी सं० स्त्री० सोंटी, छोटी लाठी; पुं०-जा, नया मोटा कल्ला; वै०-दी (जौ० प्र० सु०)।

गोझनवट सं० स्त्री० स्त्रियों के अंचल का वह भाग जो बायें ओर नीचे किसी वस्तु के छिपाने या चुराने के लिए प्रयुक्त होता है। सं० गुह्, छिपाना?

गोझिआ सं० स्त्री० गुझिया;-सोहारी, सं० गुह्? क्योंकि इसके भीतर मसाला, शकर आदि भरा रहता है।

गोट सं० पुं० कपड़े का किनारा, मग़ज़ी;-लगाइब।

गोटी सं० स्त्री० खेलने के लिए मिट्टी लकड़ी आदि का टुकड़ा; प्र०-ट्टी, गु-;-डारब, बाँटने के लिए गोटी डालना, दे० गुट्टी।

गोड़ सं० पुं० पैर;-धरब, पैर छूना या पकड़ना, -लागब,-मूड़ धरब, हाथ-जोरब, प्रार्थना करना, -हाथ, हाथ,-सर्वांग।

गोड़ना वि० पुं० नष्ट करनेवाला, भाग्यहीन, स्त्री०-नी, गोड़नेवाली; वै० ग्व-।

गोड़नि सं० स्त्री० गोड़ने के योग्य होने की (भूमि की) स्थिति।

गोड़ब क्रि० स० गोड़ना, प्रे०-ड़ाइब,-डब।

गोड़हरा सं० पुं० पैर में पहनने का कड़ा,-गुँजहरा, पैर तथा हाथ में पहनने के कड़े, गोड़+हर।

गोड़ा सं० पुं० बर्तन के नीचे का वह भाग जो 'गोड़' (पैर) की भाँति हो, जिस पर वह खड़ा रहे; पौदे की रक्षा के लिए उसके चारों ओर खोदा घेरा;-मारब,-लगाइब।

गोड़ी सं० आगमन का प्रभाव, 'गोड़' से; यह प्रायः नवागत वधू या अतिथि के लिए प्रयुक्त होता है।

गोत सं० पुं० गोत्र;-ती, गोत्रवाला, बिरादरी का व्यक्ति, सं०।

गोदनहरि सं० स्त्री० स्त्री० जो दूसरी स्त्रियों के हाथ, ठोड़ी आदि पर चित्र, चिह्न आदि गोदती है, वै०-रीं; गोदब+ हर।

गोदना सं०पुं० एक घास जिसके दूध से काले दाग पड़ जाते हैं, इसके कई प्रकार होते हैं, स्त्री०-नी; (२) अंगों पर गोदा हुआ चिह्न;-गोदब; वै० ग्व-।

गोदब क्रि० स० टेढ़ा-मेढ़ा लिखना, चिह्न बनाना, प्रे०-दाइब,-दवाइब,-उब, भा०-दाई,-दवाई।

गोदा सं० पुं० पीपल या बरगद के फल।

गोदाम सं० पुं० गोदाम; अं० गोडाउन।

गोदामिल वि० कुछ खट्टा;-लागब; शायद 'गोदा' से;-दे०गोदा; (गोदा+आमिल=गोदे की भाँति खट्टा)।

गोदाही सं० स्त्री० टेढ़ा मेढ़ा छोटा डण्डा; ताज़ा तोड़ा हुआ डंडा;-मारब; शायद गो+डाह (गऊ का डाह करनेवाला)।

गोधन सं० पुं० खटकिनों द्वारा क्वार-कातिक में गाया जानेवाला लंबा गीत जिसमें दुःख पूर्ण गाथा है; मु० लंबी दुख भरी कहानी;-गाइब; इस गीत की गानेवाली स्त्रियाँ गोबर की मूर्ति बनाकर हाथ में लिए घर घर गाती फिरती थीं, पर अब खटिक पञ्चायत ने ऐसा करना बंद कर दिया है।

गोन सं पुं० गोंद।

गोनरा सं० पुं० बहुत बड़ी चटाई जो बैलगाड़ी में फर्श की भाँति बिछायी जाती है।

गोनरी सं० स्त्री० छोटी चटाई;-पूरब, ऐसी चटाई बनाना; क्रि०-रियाइब, चटाई की भाँति लपेट लेना।

गोनी सं० स्त्री० एक घास जिसे साग के रूप में खाते हैं।

गोंफब क्रि० स० डाँटना, रोकना; होंफब-,नियंत्रण में रखना, फटकारना।

गोंफा सं० पुं० नया पत्ता;-फूटब,-फोरब।

गोबर सं० पुं० गाय भैंस का गू; क्रि०-रिआइब; वि०-हा,-ही;-री, गोबर का बना लेप;-री करब, ऐसा लेप (दीवार आदि पर) करना;सं० गोमल।

गोभब क्रि० स० किसी फल या अन्य वस्तु में धीरे-धीरे और ऊपर ही ऊपर छेद करना; मु० शब्दों या व्यंग्यों से दुख पहुँचाना; प्रे०-वाइब, -भाइब,-उब; भा०-भाई,-वाई।

गोभवार वि० पुं० गर्भ का (बाल)।

गोभी सं० स्त्री० गोभी का पेड़ या फूल।

गोमती सं० स्त्री० प्रसिद्ध नदी;-माता।

गोयाई दे० गोवाई।

गोर वि० पुं० गोरा; स्त्री०-रि,-री;-हर, ख़ूब गोरा; गीतों में "गोरिया" एवं "गोरी" प्रयुक्त। भा० -राई,-हरई; भो०-हर; घृ०-ऊ, आ०-हरकू।

गोरखधंधा सं० पुं० तरह-तरह के झंझट; खट-राग;-करब,-म परब; प्रसिद्ध गोरखनाथ के नाम पर प्रचलित।

गोरखमुंडी सं० स्त्री० एक प्रकार की मुंडी जिसका अर्क बनता है।

गोरस सं०पुं० दही और मट्ठा; वि०-हा,-ही; व्यं० से "गोरसहा" गाँहू के लिए प्रयुक्त होता है। कहा० "सदा क-ही झामबहु"।

गोरा सं० पुं० अंग्रेज़; प्र-रै;-रौ।

गोरि सं० स्त्री० क़ब्र; ग़ोर।

गोरू सं० पुं० पशु; व्यं० पशु की भाँति का व्यक्ति; मूर्ख, भा०-अई; वि०-रुहा।

गोल वि० पुं० गोल; स्त्री०-लि;-गोल; भा०-लाई; क्रि०-लाब,-लाइब,-लिआइब;-हथी, रोटी जो हाथ से ही गोल की जाय, जिसमें चकले बेलन की मदद न हो। सं०।

गोला सं० पुं० गोला;-बरूद; बम-; स्त्री०-ली।

गोलि सं० स्त्री० गोल, गिरोह;-बान्हब; क्रि०-आब, -याइब, एकत्र करना।

गोली सं० स्त्री० गोली;-चलब,-चलाइब,-मारब, -खाब,-दागब,-लीलब।

गोवा सं० पुं० चालाक जो अपनी बात छिपा रखे; "गोइब" से, यद्यपि यह क्रिया अवधी में नहीं है; रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखौ गोय; भा०-ई; फ़ा० गुफ़्तन (बोलना), गोया (बोलने-वाला=चालाक)।

गोस सं० पुं० गोश्त, मांस; वि०-हा, मांसभक्षी; -मच्छी, मांस-मछली।

गोसा सं० पुं० कोना; फ़ा० गोशः।

गोसाई सं० पुं० एक जाति जिसके लोग महादेव के पुजारी होते हैं; सं० गोस्वामी।

गोसैयाँ सं० पुं० भगवान्।

गोह सं० पुं० एक जंगली जानवर; कहा० "गोह क बच्चे सब कलबले"।

गोहना सं० पुं० (स्त्रियों के) बाल बाँधने का रंगीन धागा; वै० गु-; 'गुहब' से।

गोहनें क्रि० वि० साथ साथ; क्रि०-निआइब, साथ-साथ हो लेना या ले लेना।

गोहराइब क्रि० स० पुकारना; प्रे०-रवाइब।

गोहारि सं० स्त्री० दु:ख के समय की पुकार;-करब-लगा-इब,-लागब; गऊ-,दु:खी की सहायता,पुकार आदि।

गोहिआ सं० स्त्री० मार का चिह्न (व्यक्ति के शरीर पर);-परब; वै०-या।

गोहुँअन सं० पुं० एक प्रकार का साँप जो गेहूँ के रंग का होता है। वै० गे-।

गोहूँ सं० पुं० गेहूँ; सं० गोधूम।

गौ दे० गऊ।

# घ

घँघरा सं० पुं० बड़ा लहँगा; स्त्री०-री; प्र० घा-; वै०-ङ-।

घंट सं० पुं० किसी के मरने पर हिंदुओं द्वारा बाँधा जानेवाला मिट्टी का घड़ा जिसे बाहर किसी पेड़ पर लटकाकर उसमें प्रतिदिन पानी भरते हैं; -बान्हब,-फोरब; इसे १०वें दिन फोड़ते हैं; सं० घट।

घंटा सं० पुं० घंटा; स्त्री०-टी; घरी-; व्यं० कुछ नहीं, -लेब,-पाइब,-देब।

घंता-मंता सं० पुं० एक खेल जिसमें छोटे बच्चे को घुटने पर बैठाकर झुलाते और "घंता-मंता···" कहते हैं;-लेब।

घइँचब क्रि० स० खींचना; प्रे०-चवाइब; वै० खइँ-, घैं-।

घइला सं० पुं० घड़ा; प्राय: गीतों में; वै०-ल,-यल।

घइहल वि० पुं० घायल, चोट लगा हुआ; स्त्री० -लि;-करब,-होब; वै०-य-,-हिअल, क्रि०-हाइब, घायल कर देना।

घउकब क्रि० स० डाँट लेना; ज़ोर से डाँटना, डराना; वै० ठ-।

घउधियाब क्रि० स० डपटना, चिल्लाकर कहना, वै०-आब।

घउलर सं० पुं० मोटा व्यक्ति; प्र०-रा; यह शब्द दोनों लिंगों में बोला जाता है; कभी-कभी "-रि" स्त्री० प्रयुक्त होता है।

घघेंचब क्रि० स० डाँट देना; रोब में लेना; शा० घेंच से अर्थात् घेंच (दे०) दबा देना।

घच्चर-घच्चर क्रि० वि० रुक-रुककर और इधर-उधर हिलते हुए।

घट सं० पुं० शरीर, देह; "जब लौं घट में प्रान" इसी कविता खंड में प्रयुक्त; स्थान ("घट-घट व्यापी राम")।

घटइब क्रि० स० कम करना; वै०-टा-; प्रे०-वाइब,-उब।

घटका सं० पुं० प्राण निकलने के समय की स्थिति; -लागब, मरणासन्न होना।

घट-घट क्रि० वि० स्थान-स्थान पर; प्रति प्राणी में; प्राय: धार्मिक एवं दार्शनिक काव्य में प्रयुक्त।

घटवार सं० पुं० घाटवाला; भा०-री।

घटाना सं० पुं० घटाने का प्रश्न;-लगाइब, ऐसा प्रश्न लगाना।

घटिआही सं० स्त्री० पर-स्त्री-प्रसंग;-करब;-लागब, -लगाइब, ऐसे अपराध का लगना या लगाना।

घटिहा वि० पुं० पर-स्त्री से मैथुन करनेवाला;-ही, पर-पुरुष से प्रसंग करनेवाली।

घट्टी सं० स्त्री० हानि, घाटा;-आइब,-लागब;-देब (किसी सौदे का) नुकसान देना।

घट्टा सं० पुं० शरीर के किसी भाग पर पड़ा चिह्न जिसमें चमड़ा मोटा हो जाता है;-परब; क्रि०-ब।

घड़घड़ाब क्रि० अ० घड़घड़ की आवाज़ देना; वै० -र-राब; ध्व०।

घड़र-घड़र सं० पुं० "घड़र-घड़र" का शब्द;-होब, -करब; वै०-रर; ध्व०।

घड़ा सं० पुं० दे० गगरा,-री।

घत सं०स्त्री० मौका, दाँव;-पाइब,-लागब,-लगाइब- वै० घाति, वि०-गर,-तिगर।

घन वि० पुं० घना, स्त्री०-नि।

घन्नी सं०स्त्री० यातना, मु०-घसब, कष्ट उठाना, झेलना, भुगतना; वै० घिसनी, घसनी।

घप सं०पुं० भारी वस्तु के गिरने की आवाज;-दे०, -सें; प्र०-प्प,-पाक, घपा-(पु०); घपर-घपर (क्रि० वि०) खूब ज़ोर से (पीटना)।

घपकब क्रि० स० जोर से और झट से मार देना; प्रे०-काइब,-उब।

घपच्चिआब क्रि० अ० घबरा जाना, अज्ञान में पड़ जाना, कुछ कर न सकना, प्रे०-आइब,-वाइब।

घपच्चू सं० पुं० मूर्ख; वि० के रूप में भी, ऐसे ही स्त्री० में प्रयुक्त।

घपाक दे० घप, प्र०-का।

घबड़ाब क्रि० अ० घबरा जाना; प्रे०-ड़वाइब,-उब।

घमंजा सं० पुं० मिलावट, गड़बड़,-करब,-होब।

घमंड सं०पुं० गर्व, वि०-डी;-करब,-होब,-निकारब, गर्व छुड़ाना (दंड देकर)।

घम सं० पुं० गिरने का शब्द;प्र०-म्म;-से; पु० घमाघम; घम्मा-घम्मी, मार-पीट।

घमउनी सं०स्त्री० धूप में बैठकर गर्म होने की क्रिया, -करब, वै०-मौनी।

घमकब दे० घपकब।

घमघम वि० घामवाला, कुछ गर्म (मौसम),-होब, -करब, सं० घर्म।

घमछाहीं सं० स्त्री० मौसम जिसमें घाम और छाँह दोनों हों, ऐसा स्थान, सं० घर्म+छाया।

घमाक सं० पुं० ज़ोर से गिरने का शब्द, प्र०-का, -से; ध्व०।

घमाघम सं० पुं० ज़ोर-ज़ोर से गिरने या मारने का शब्द,-होब,-करब, प्र०-म्मा-म्मी; ध्व०।

घमाब क्रि० अ० घाम में बैठना, घाम का आनन्द लेना, सं० घर्म।

घमौनी दे० घमउनी।

घम्मड़-घम्मड़ क्रि० वि० जोर-जोर से (बाजे के बजने के लिए)।

घर सं० पुं० रहने का स्थान; किसी यंत्र या उसके अंग-विशेष के रुकने का स्थान,-करब, (स्त्री का) पुरुष के यहाँ जाना या बैठ जाना,-बार;-विधि,-घर की भाँति प्रबंध,-घुसना, घर में ही पड़ा रहनेवाला, स्त्री०-नी।

घरइया सं पुं० दे०-रैया।

घरजानी वि० बिना लिखा-पढ़ी के, गुपचुप (दिया गया उधार),-मरजानी, व्यक्तिगत (व्यवहार जिसे दूसरे न जानें)।

घरबारी वि०पुं० जिसके परिवार हो, घरबार वाला, -होब।

घरर सं० पुं० रगड़ने का शब्द,-घरर करब,-होब।

घरवना सं०पुं०छोटा घर जो बच्चे खेल में बनाते हैं; घर-,खिलवाड़, वै०-रौना।

घराना सं० पुं० कुल, 'घर' से, सं० गृह।

घराय सं० स्त्री० घर का सा व्यवहार, मा०-रोपा।

घरिआ सं० स्त्री० छोटा सा मिट्टी का प्याला, वै० -या।

घरिआर सं० पुं० घड़ियाल,-यस, लंबा चौड़ा (व्यक्ति), वै०-यार।

घरिआरी सं० स्त्री० बजाने की गोल घंटी, घंटा-, घरी-घंटा, सूचना देने की व्यवस्था।

घरी सं०स्त्री० घड़ी, समय का एक अंश,यक-,दुइ-, -घरीं, बार-बार,-पहर, थोड़ी थोड़ी देर।

घरुक सं०पुं० एक नीची जाति और उसके व्यक्ति।

घरुही सं० स्त्री० घर का खँडहर या चिह्न, सं० गृह।

घरू वि० घर का सा, मैत्रीपूर्ण, निजी; दोनों लिंगों में एक सा रूप।

घरैया सं० घर का व्यक्ति (बारात का न हो), कभी-कभी "घराती" (और बाहरी को बराती) कहते हैं।

घलघलाइब क्रि० स० ज़ोर से गिराना (पानी), पेशाब करना, वै०-उब; ध्व०।

घलघलाब क्रि० अ० बिना रुकावट के बहना, घल-घल शब्द करना, प्रे०-इब; ध्व०।

घलर-घलर क्रि० वि० घल-घल करके, प्र० घुलुर-घुलुर, वै०-ल-ल; ध्व०।

घलाइब क्रि० स० लगा देना, फँसा देना; प्रे०-लवा-इब,-उब।

घलारा सं० पुं० पानी बहने का मार्ग; ज़ोर से बहता हुआ पानी;-फूटब।

घलुआ सं० पुं० घाला (दे०); सौदे में दिया हुआ वह अंश जो तोल के अतिरिक्त यों ही दिया जाय; -देब,-लेब; वै०-वा।

घलौना सं० पुं० लाल पका हुआ फल; प्राय: बच्चे इस शब्द का प्रयोग करते हैं। वै०-लौ-,-लव-।

घवदि सं० पुं० केले के फलों का गुच्छा; यक-, दुइ- (केरा); वै० घवै-।

घसनी सं० स्त्री० तुच्छ काम; कठिन परिश्रम; -घसब, ऐसा काम करना; वै० घि-।

घसर-पसर क्रि० वि० किसी प्रकार; यों ही; बुरी तरह; वै०-मसर।
घसरब क्रि०स० (कोई गंदी वस्तु दूसरे साफ वस्तु में) लगा देना, पोत देना; प्रे०-राइब,-उब।
घसाई सं० स्त्री० माजने या घिसने की क्रिया।
घसिआरा सं० प० घास काटने या बेचनेवाला; स्त्री०-रिन, भा०-री; वै०-अरा,-सेरा।
घसिहा वि० पुं० घासवाला (खेत); घास से भरा; स्त्री०-ही।
घसीट सं० पुं० जल्दी-जल्दी लिखा हुआ अक्षर; घसीटी हुई लिखावट;-लिखब,-पढ़ब।
घसीटब क्रि० स० पृथ्वी पर खींचना; ज़ोर से खींचना; प्रे०-सिटवाइब,-उब; मु० जल्दी-जल्दी लिख देना।
घहराब क्रि० अ० घिर कर आवाज़ करना; ज़ोर से गिर पड़ना। "गगन घटा घहरानी"-कबीर।
घहिअल दे०-इहल; वै०-यल।
घाँटी सं० स्त्री० गले के बीच का भाग;-के तरें, गले में; मिट्टी की घंटी जो बच्चे खेलते हैं।
घाइ सं० स्त्री० घाव।
घाघ सं० पुं० प्रसिद्ध लोकोक्तिकार; घुटा हुआ अनुभवी व्यक्ति; वि० प्रभावशाली।
घाघरा सं० पुं० लंबा-चौड़ा लहँगा; वै०-घरा; स्त्री० घँघरी।
घाट सं० पुं० नदी या तालाब के किनारे बना हुआ स्नान योग्य स्थान; यक-टें, एक किनारे, थोड़ा बहुत पूरा; घटवार, घाटवाला, पार उतारनेवाला; सं० घट्ट।
घाटा सं० पुं० हानि;-होब,-लागब; स्त्री०-टी, घट्टी।
घाटि सं० स्त्री० पर-स्त्री गमन,-करब; वि० घटिहा; -ही (पर-पुरुष-गामिनी); धोका (फै० जौ०); सं० घात।
घात सं० पुं० दावँ;-लागब,-करब,-पाइब,-ताकब, -देखब; वै०-ति।
घातक वि० मारनेवाला, हानिकारक; वै०-ति-; -होब।
घान सं० पुं० (नाज, तिल आदि का) वह भाग जो एक बार में भूना या पेला जा सके; यक-, दुइ-;स्त्री०-नी (दे०)।
घानी सं० स्त्री० कोल्हू में पेलने के लिए उतना तिल, सरसों आदि जितना एक बार में पेला जा सके।
घाबड़ा सं० पुं० घबराहट।
घाम सं० पुं० धूप; क्रि० घमाब (दे०); सं० घर्म।
घामड़ वि० सुस्त, मूर्ख; भा० घमड़ई,-पन।
घाय सं० स्त्री० घाव (दे०)।
घारी सं० स्त्री० पशुओं के रहने का घर; क्रि० घरिआइब,-उब, घारी में कर देना; शा०'घर' का स्त्री० रूप?

घालब क्रि० डालना; यह दूसरी क्रि० के साथ ही लगाकर अर्थ देता है; उ० कै-, दै-, कर डालना, दे डालना आदि।
घाला सं० पुं० सौदे के साथ अंत में दिया हुआ उपहार;-देब,-लेब; वै०घलुआ,-वा, घेलवा (जौ०)।
घाव सं० स्त्री० जख़्म;-करब,-लागब,-होब; वि० घइहल,-य-, घै-।
घासि सं० स्त्री० घास; वि० घसिअरा,-सेरा,-आरा (दे०), घसिहा;-पात, घासपात, रद्दी वस्तुओं की मिलावट।
घिंचवाइब क्रि० स० खिचवाना; वै०-उब; 'घींचब, का प्रे० रूप।
घिंचाइब क्रि० स० खिंचवाना; वै०-उब; प्रे० -वाइब।
घिंचानि सं० स्त्री० खींचने की मिहनत।
घिअना सं० पुं० घी; यह शब्द 'दिअना' (दे०) की भाँति केवल प्रयाग, जौनपुर आदि कुछ प्रांतों में ही बोला जाता है; नहीं तो प्रायः इसका रूप 'घिउ' है (दे०); सं० घृत।
घिआर वि० पुं० घी वाला; स्त्री०-रि, बहुत घी देनेवाली (गाय, भैंस आदि) या जिसके दूध में बहुत घी होता हो।
घिउ सं० पुं० घी; घाघ-"गलगल नेबुआ औ घिउ तात"; सं० घृत; गुर-होब, शुभ होना, उ० तोहरे मुँह माँ-होय, तुम्हारे शब्द शुभ अथवा सत्य हों; वै०-व; वि०-यहा,-ही,-आर।
घिउ-कुँआरि सं० स्त्री० ग्वारपाठा जिसके भीतर से घी सा गूदा निकलता है। यह कई दवाओं में पड़ता है और पेट ठीक करने के लिए इसकी तरकारी भी खाई जाती है।
घिघिआब क्रि० अ० ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना; प्रे० -वाइब,-उब; 'घी-घी' शब्द से; ध्व०।
घिचघिच सं० स्त्री० आपत्ति, विघ्न, अड़चन;-करब, -होब।
घिन सं० स्त्री० घृणा;-लागब; क्रि०-नाब (दे०); वै०-ना,-नि; सं० घृणा।
घिनवना वि० पुं० घृणा उत्पन्न करनेवाला; स्त्री० -नी।
घिना सं० स्त्री० घृणा; -करब,-लागब; क्रि०-ब; वि०-नवना,-नी, सं०।
घिनाब क्रि० अ० घृणा करना; सं०।
घियहा वि० पुं० घीवाला; स्त्री०-ही, घी की बनी हुई; जिसमें घी रखा गया हो।
घिरॉइब क्रि० स० घसीटना; प्रे०-रँवाइब,-उब।
घिव दे० घिउ।
घिसकब क्रि० अ० खिसकना; प्रे० घुसकाइब, वै० घु-,खि-।
घिसनी दे० घसनी; अ०-सु-।
घींचब क्रि० स० खींचना, घसीटना; प्रे० घिंचाइब, -चवाइब,-उब।

घुइरब क्रि० अ० घूरना; आँख जमाकर देखते रहना, क्रोध से देखना, ताकना।

घुइस सं० पुं० एक छोटा जङ्गली जानवर; मूस-, रात को चुराकर खानेवाले जानवर;-लागब।

घुइहाइब क्रि० स० लकड़ी या कलछी आदि डाल कर (बर्तन में रखी हुई वस्तु को) चलाना; "मारी रोटी,-हाई दालि"।

घुघुआब क्रि० अ० घू घू शब्द करना; स० डाँटना; क्रुद्ध होना; ध्व०।

घुघुटारि वि० स्त्री० घूँघटवाली; हा०आ०-रौ; घूघुट+आरि; दे० घूघुट।

घुघुरी सं० स्त्री० भिगोकर उबाला या छौंका हुआ खड़ा अन्न;-चबाब,-डारब (तैयार करना)।

घुच्च-घुच्च क्रि० वि० बार-बार बिना ज़ोर लगाये और बिना कुछ असर के (मारना, लगाना आदि); प्र०-चुर-चुर।

घुच्ची सं० स्त्री० लग्गी में लगी हुई लकड़ी जिससे दूसरी लकड़ी आदि खींची या तोड़ी जाती है। -घुच्ची, वि० छोटी-छोटी भीतर घुसी हुई (आँख); दे० लग्गी,-ग्गा।

घुटुर-घुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे बिना शब्द किये (पी लेना); ध्व०।

घुट्ट सं० पुं० किसी पदार्थ को पीने की आवाज़; -से,-घुट्ट,-घुटुर-घुटुर, धीरे से (पी लेना), ध्व०।

घुट्टी दे० घूँटी;-देब, (बच्चों को) घुट्टी देना या दवा पिलाना; व्यं० ज़हर देना।

घुड़कब क्रि० स० घुड़कना, डाँटना; प्रे०-कवाइब, -काइब,-उब।

घुन सं० पुं० नाज में लगनेवाला छोटा कीड़ा; -लागब, रोगी हो जाना; क्रि० घुनब, घुनों द्वारा नष्ट होना।

घुन-घुना सं० पुं० छोटे बच्चों के खेलने का खिलौना जिसमें से "घुनघुन" आवाज़ होती है; ध्व०; स्त्री०-नी।

घुमना वि० घूमनेवाला; घर-,जो दूसरों के घर घूमता रहे; आवारा, सुस्त; स्त्री०-नी।

घुमरब क्रि० अ० लौटना; प्रे०-राइब, लौटाना; मु० बदला लेना, लौटकर आक्रमण करना।

घुमरी सं० स्त्री० चक्कर (सिर में);-आइब, ऐसे चक्कर आना;-परैया, एक खेल जिसमें बच्चे "घु...परैया-रैया..." कहते और एक दूसरे को पकड़कर घूम-घूम नाचते हैं; व्यं० व्यर्थ के चक्कर।

घुरकब क्रि० स० ज़ोर से डाँटना; वै०-ड़-;भा० -की,-कवाई।

घुरकी सं० स्त्री० घुड़की;-धमकी, डाँट-फटकार; -देब; वै०-ड़-।

घुरघुराब क्रि० अ० 'घुर-घुर' शब्द करना; ध्व०।

घुरचब क्रि० अ० निर्बलता अथवा बीमारी के कारण उठ न सकना; कष्टमय जीवन बिताना; प्रे० -चाइब,-चवाइब।

घुरचारब दे० खुरचारब।

घुरमुसहा वि० पुं० कम बोलनेवाला पर भीतर ही भीतर द्वेष रखनेवाला; चुप्पा; स्त्री०-ही; घूर+मूस (घूर पर के मूस की भाँति चुपके से खोदने या नुकसान करनेवाला)+हा; क्रि०-साब।

घुरमुसाब क्रि० अ० भीतर ही भीतर बुरा मानना; बिना कुछ कहे नापसंद करना।

घुरसारि सं० स्त्री० घुड़साल; वै० घो-।

घुरहू-कतवारू सं० पुं० कोई भी, तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति; घुरहू तथा कतवारू प्रायः नीची श्रेणी के लोगों के नाम होते हैं। पहले का अर्थ है—घूर पर पड़ा हुआ, दूसरे का 'कतवार' (दे०) बटोरनेवाला।

घुरुर-घुरुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और घुर-घुर की आवाज़ करते हुए (जाँत या चक्की); ध्व०।

घुरेसब क्रि० स० घुसेड़ना; प्रे०-सवाइब; वै०-सेरब; इन दोनों में वर्ण-विपर्यय का ही भेद है।

घुलघुलाब क्रि० अ० 'घुलघुल' की आवाज़ करना; प्रे०-इब, पेशाब कर देना (प्रायः बच्चों के लिए); ध्व०।

घुलब क्रि० अ० घुलना, बीमारी से धीरे-धीरे मृतप्राय होना; प्रे०-लाइब,-उब।

घुल्ला सं० पुं० लकड़ी या गन्ने का छोटा टुकड़ा; स्त्री०-ल्ली;-करब, (बच्चों के लिए) गन्ने का छोटा टुकड़ा छील देना।

घुसरब क्रि० अ० घुस जाना; प्रे०-से-,-सेरवाइब, -उब।

घुहिआइब दे० घुइहाइब।

घूँट सं० पुं० पानी, शर्बत आदि का उतना अंश जो एक बार में पिया जाय; क्रि०-ब, धीरे-धीरे या कठिनता से पीना; एक-,दुइ-।

घूँटी सं० स्त्री० बच्चों की दवा;-देब, ऐसी दवा पिलाना; व्यं० विष देना।

घूघुट सं० पुं० घूँघट;-काढ़ब।

घूघुर सं० पुं० घुँघरू।

घूमब क्रि० अ० घूमना, लौटना, (समय का) फिर आना; प्रे० घुमाइब,-वाइब,-उब; वै० प्र० घुमरब।

घूर सं० पुं० कूड़ा-करकट का ढेर;-करब,-लागब; -लगाइब;-थस, लंबा चौड़ा पर सुस्त और बेकार।

घूस सं० पुं० रिश्वत;-देब,-लेब; वि० घुसहा, घूस लेनेवाला।

घेघा सं० पुं० गर्दन, गला; गले की बीमारी जिसमें सूजन हो जाती है; स्त्री०-घी (व्यं० प्र०)।

घेंच सं० पुं० लंबी पतली-गर्दन; प्र०-चा; वै०-चु, -चि; प्रायः चिड़ियों या पशुओं के लिए; घृ० रूप में कभी कभी व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त।

घेंटा सं० पुं० सूअर का बड़ा मोटा बच्चा; वै० घयँटा, घेंटा।

घेर सं०पुं०घेरा;-घार; बादलों का उमड़ना; क्रि०-ब।

घेरब क्रि० स० घेरना, चारों ओर से रोकना; प्रभाव डालना; प्रे०-राइब,-वाइब;-उब; भा० -वाई, घेरा, घेर-घार ।
घेरा सं० पुं० चारों ओर से बनाई हुई दीवार या लकड़ी, काँटे आदि की रोक-थाम;-डारब, सिपाहियों या रक्षकों द्वारा घेर लेना; भा०-ई;-खोई ।
घेवँड़ा सं० पुं० एक फल जिसकी बेल चलती है और जिसका साग बनता है ।
घैंचब दे० घइँ- ।
घैंटा दे० घेंटा ।
घैहल दे० घइहल ।
घोंइटब क्रि० स० खूब घोंटना, डाँटना; दे० घोंटब जिसका यह प्र० रूप है; प्रे०-टाइब,-टवाइब,-उब ।
घोंघा सं० पुं० पानी में होनेवाले 'गेजुआ' (दे०) का घर जिसे सूखने पर अंजन आदि रखने के काम में लाते हैं; वि० मूर्ख; स्त्री०-घी, छोटा -घा ।
घोंचू वि० उल्लू, मूर्ख; जिसे ठीक बात समय पर न सूझे; भा० घोंचवाफेर,-मँ परब, भूलभुलैयाँ या विकट स्थिति में पड़ जाना ।
घोंट-घाँट सं० पुं० जल्दी-जल्दी तथा बार-बार घोंटने का क्रम;-करब ।
घोंटब क्रि० स० घोंटना, डाँटना; प्रे०-टाइब,-उब, -वाइब,-उब; व्यं० रट लेना; भा०-टाई ।
घोंटारब क्रि० स० लिखने की तख्ती या पट्टी को कालिख लगाने के बाद शीशे के टुकड़े से घोंटकर चमकाना; ऐसे शीशे के टुकड़े को "घोंटारा" कहते हैं । प्रे०-टरवाइब, दूसरे से घोंटारा लगवाना; विद्यार्थी तख्ती की ऐसी तैयारी को "घोंटारा-पोतारा" कहते हैं । दे० पोतारब ।
घोंटू वि० घोंटनेवाला, किसी बात को रट लेनेवाला; बुद्धि का कम उपयोग करनेवाला ।
घोखब क्रि० स० रटना, प्रे०-खाइब,-उब,-खवाइब, -उब; सं० घोष (शोर) अर्थात् चिल्लाकर या ज़ोर-ज़ोर से रटना या स्मरण करना ।
घोघर सं०पुं० एक काल्पनिक व्यक्ति जिसको बुलाकर या जिसका नाम लेकर छोटे बच्चों को डराया जाता है; दे० हौआ ।
घोघी सं० स्त्री० किसी कपड़े का, विशेषतः कंबल का, लपेटकर सिर पर ऐसा बाँधा हुआ रूप जिससे वर्षा से बचाव हो सके;-बान्हब,-करब ।
घोड़न वि० पाजी, बदमाश ।
घोड़ा सं० पुं० पशु विशेष; स्त्री०-ड़ी; क्रि०-ब, घोड़ी का गर्भिणी होना; वै०-ड़वना; सं० घोटक ।
घोर वि० बहुत, बड़ा, अधिक ।
घोरब क्रि० स० घोलना; प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब, -उब; अ० बहुत विलंब करना ।
घोलर वि० बहुत मोटा; प्र० घौ-; दे० घउलर ।
घोला सं०पुं० गहरा गड्ढा या पतला नाला ।
घोसी सं० पुं० दूध का काम करनेवाली एक जाति का व्यक्ति; सं० घोष ।
घौघियाब दे० घउ- ।
घौलर दे० घउल-तथा घो- ।

# च

चंग सं० पुं० पतंग;-चढ़ब, महँगा हो जाना ।
चंगा वि० पुं० अच्छा; स्त्री०-गी; वै०-ङ्गा ।
चंगुल सं० पुं० पंजा;-मँ, पंजे में; वै०-ङ्गुल ।
चंगेरा सं० पुं० हलकी सुंदर डलिया; स्त्री०-री; वै०-ङेरा,-री ।
चंचल वि० पुं० जल्दी-जल्दी चलने या बदलने वाला; स्त्री०-लि ।
चंचल वि० पुं० चंचल; स्त्री०-लि; "चंचलि जोय चनैनी ओंठवन बुधि उपराजै" (चनैनी); भा०-ई ।
चंट वि० पुं० चालाक; स्त्री०-टि, प्र०-ठ, भा० -ई,-पन ।
चंठ वि० पुं० चालाक; स्त्री०-ठि, भा०-ई ।
चंडाल सं० वि० दुष्ट व्यक्ति; भा०-डलई,-पन ।
चंडी सं०स्त्री० दुर्गा, झगड़ालू स्त्री;-पाठ, दुर्गा-पाठ; वै०-ढिका; सं० ।
चँडुला वि० पुं० जिसके सिर में बाल न हों; स्त्री० -ली; वै०-डु-,-ड-,चण्डु- ।
चंडू सं० पुं० एक नशे की वस्तु जो पी जाती है; -खाना, ऐसा स्थान जहाँ चिलम पर लोग एकत्र बैठकर पीते हैं; काहिलों और गप्पियों का घर;-क गप्प, बे सिर पैर की बात ।
चंडूल दे० चँडुला ।
चँडुला वि० पुं० जिसके सिर में बाल न हों; वै० -ण्डु-,-डु-; स्त्री०-ली ।
चंदा सं०पुं० चंदा; चंद्रमा;-माँगब,-उगाहब;-मामा, चंद्रमा जिसे बच्चे मामा कहते हैं । वै०-न्ना ।
चंनन सं० पुं० चंदन; वै० चन्नन ।
चंपत वि० गायब, अदृश्य;-होब,-करब ।
चँपवाइब क्रि० स० चाँपब (दे०) का प्रे० वै० -पाइब ।
चंपा सं० पुं० प्रसिद्ध फूल ।
चंपू वि० सुंदर, विचित्र; सं० ।
चंसुर दे० चमसुर ।
चइत सं० पुं० चैत; सं० चैत्र;-कुआर, दोनों फसलों का समय; क्रि० वि० साल में दो बार;-हरा,-रें, चैत के मास या बसंत ऋतु में ।

चइता सं० पुं० एक गाना जो प्राय: चैत में गाया जाता है।

चइती सं० स्त्री० चैत में होनेवाली फसल।

चइला सं० पुं० चिरी हुई लकड़ी का मोटा टुकड़ा; -यस, हट्टा-कट्टा; स्त्री०-ली, पतला और छोटा लकड़ी का टुकड़ा।

चइली सं० स्त्री० पतली सूखी फाँफी जो नाक के भीतर मैल या खुश्की से जम जाती है;-परब; क्रि० -लिआब।

चउँक सं० पुं० चौंक; तेज़ी; वि०-हर, स्त्री०-रि; -होब,-रहब।

चउँकब क्रि० अ० चौंकना; प्रे०-काइब,-कवाइब।

चउँचिआब क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाते रहना; किसी पर रुष्ट होकर बोलना, ध्व० 'चेउँ (दे०) चेउँ' से।

चउँसठि वि० स्त्री० चौंसठ; वै०-वँ-,-ठ; सं० चतुः-षष्ठि।

चउआ सं० पुं० चार अंगुल की चौड़ाई; ताश की चौकी; पशु; सं० चतुष्पाद; वै०-वा; दे० चावा।

चउआई सं० स्त्री० ऐसी हवा जो चारों ओर से चले; चउ (चौ)=चार; सं० चतु:।

चउआल सं० पुं० चारों ओर की बातें; व्यर्थ की बात;-आइब,-करब,-बतुआब; वि०-ली।

चउआलिस वि० चालीस और चार।

चउक सं० पुं० चौक;-पूरब, धार्मिक कृत्यों में आटे आदि से चौक बनाना;-के क राँड़ि, विधवा जिसने पति से संयोग न किया हो।

चउकड़ी सं० स्त्री० छलाँग;-भरब, छलाँगें मारना।

चउकस वि०पुं० होशियार, तैयार; भा०-ई; चउ+कस, जिसके चारों (अंग या कोने) कसे हों अर्थात् दोनों आँखें और दोनों कान सचेत हों। स्त्री०-सि।

चउका सं०पुं० चौका;-बेलना, रोटी बनाने के दोनों सामान;-देब,-लगाइब।

चउकिआ सं० पुं० एक प्रकार का सुहागा जिसे -सोहागा कहते हैं।

चउकी सं० स्त्री० चौकी; पहरा देने का स्थान; -पहरा, पहरा-,-लागब,-देब।

चउकोना वि० पुं० चौकन्ना;-होब,-करब,-रहब; स्त्री०-नी; चउ+कोन, जिसके चारों कोने (दो आँखें, दोनों कान, चार अंग) खड़े या तैयार हों।

चउकोर वि० पुं० चौकोर, स्त्री०-रि।

चउखट सं० पुं० चौखट; वै०-टा;-नाघब, घर के बाहर या भीतर जाना।

चउखुंटा वि० पुं० चार कोनेवाला; स्त्री०-टी; चउ (चार)+खूँट, कोने, जिसमें चार कोने हों; वै० -कुंठा, दे० खूँट।

चउगड़ा सं० पुं० खरगोश, चउ+गोड़, जो सभी पैरों से अर्थात् बहुत तेज़ भागे।

चउगान सं० पुं० गेंद का पुराना खेल जिसका उल्लेख कविता में प्राय: है।

चउगिर्द क्रि० वि० चारों ओर; प्र०-र्दा,-र्दें, चउ+फ़ा० गिर्द; वै० चव-।

चउगुना क्रि० वि० चौगुना; स्त्री०-नी।

चउगोड़िया सं० स्त्री० किलनी (दे०) की तरह का एक छोटा जीव जिसके चार पैर होते हैं और जिसके मनुष्य के बालों में पड़ने से भावी आपत्ति की सूचना मिलती है; चउ (चार)+गोड़ (पैर)।

चउतरफा क्रि०वि० चारों ओर, चउ+फ़ा० तरफ़।

चउतरा सं० पुं० चबूतरा; स्त्री०-रिजा।

चउताल दे० चौताल।

चउथा वि० पुं० चौथा; स्त्री०-थी;-थाँ, चौथी बार (जानवरों के ब्याने के लिए प्रयुक्त); उ०-बियानि अहै,-बंत गाभिनि बाय, चौथी बार ब्याई या गाभिन है।

चउथिआर सं० पुं० चौथाई का मालिक; स्त्री० -रि।

चउथी सं०पुं० चौथा भाग; वै०-था,-थाई,-थिआई।

चउदह वि० चौदह,-वाँ,-ई, चौदहवाँ,-वीं।

चउधराना सं० पुं० चौधरी का स्वत्व, हिस्सा आदि।

चउधरी सं० पुं० चौधरी, स्त्री०-राइन।

चउन्हिआब क्रि०अ० घबरा जाना, चौंधिया जाना, प्रे०-आइब,-वाइब,-उब, दे० चवन्हा।

चउपट वि०पुं० चौपट, नष्ट,-होब,-करब, क्रि०-टाब, भा०-टाचार।

चउपया सं० पुं० चौपाया, वै० चौपया।

चउपहल वि० पुं० चौपहल, चार किनारेवाला, स्त्री०-लि, प्र०-ला, वै०-फाल, चव-।

चउपाई सं० स्त्री० चौपाई, दोहा-।

चउपाल दे० चौपाल।

चउफेर क्रि० वि० चारों ओर, प्र०-रिआँ,-रीं।

चउबरदिआ वि० पुं० जिसमें चार बैल लगते हों, चउ+बरद (बैल), केवल 'हेंगे' (दे० हेंगा) के लिए प्रयुक्त।

चउबाइन सं० स्त्री० चौबे की स्त्री, वै०-नि।

चउबिस वि० चौबीस;-वाँ,-ईं, चौबीसवाँ,-वीं, सं० चतुर्विंशति।

चउबे सं० पुं० चौबे, सं० चतुर्वेदी।

चउबोला सं० पुं० एक प्रकार का छंद।

चउभरि सं०स्त्री० दाढ़ के दाँत, चउ (चार)+भरि (भरनेवाला) अर्थात् चार स्थानों के दाँत।

चउमहला सं० पुं० चार महल (जो एकत्र हों)।

चउमासा सं० पुं० बरसात का समय, एक प्रकार का गीत जिसे चौमासे में गाते हैं। सं० चतुर्मास।

चउमुहानी सं० स्त्री० वह स्थान जहाँ चार सड़कें मिलें या चार नदियों का संगम हो।

चउरब क्रि० स० चारों ओर से कसकर बाँध देना, प्रे०-राइब,-वाइब,-उब।

चउरहा वि०पुं० चावल वाला; स्त्री०-ही; चाउर+हा; दे० चाउर; (२) सं० पुं० चौराहा।

चउसझा सं०पुं० खेती या अन्य काम जिसमें कई लोगों का साझा हो;-करब,-रहब,-होब ।

चउहान दे० चव-।

चकई सं० स्त्री० प्रसिद्ध पक्षी;-चकवा, चकवा-, इस पक्षी का जोड़ा जो रात को बिछुड़ जाता है ।

चकचोन्ही सं० स्त्री० चकाचौंध;-लागब ।

चकड़बा सं० पुं० कलह, शोरगुल;-मचब,-मचाइब ।

चकती सं०स्त्री० कपड़े का टुकड़ा जो फटे हुए भाग पर पैबंद की भाँति लगाया जाय;-लगाइब,-लागब; बदरे मँ-लगाइब, दुनिया से ऊपर काम करना ।

चकत्ता सं०पुं० शरीर पर उभरा हुआ 'ददोरा' दे०; -परब ।

चकब क्रि० अ० चौंक जाना, सतर्क हो जाना; प्रे० -काइब ।

चकमा सं० पुं० धोका;-देब ।

चकरई सं० स्त्री० चौड़ाई; 'चाकर' का भा०; वै० -पन ।

चकरार वि० कुछ अधिक चौड़ा; 'चाकर' (दे०) का तु० रूप ।

चकरी सं०स्त्री० नौकरी;-करब,-देब; वै० चा-; वि० -रिहा ।

चकरिहा सं० पुं० चाकरी करनेवाला, नौकरी-पेशा ।

चकरेंठ वि० पुं० तगड़ा और चौड़ा (व्यक्ति); स्त्री०-ठि; सं०-ठा, ऐसा व्यक्ति ।

चकल्लस सं० पुं० मजा, हँसी;-करब,-होब,-रहब ।

चकला सं० पुं० रंडियों के रहने का स्थान ।

चकवड़ सं० पुं० प्रसिद्ध पौदा, सं० चक्रमर्द ।

चकवा सं० पुं० पक्षी-विशेष;-चकई, इस पक्षी का जोड़ा; रोटी के लिए बना आटे का गोला;-करब; सं० चक्रवाक ।

चकाचक सं० पुं० मज़ा, खाने का आनंद; ध्व० घी की अधिकता का मजा तथा उसकी ध्वनि; -रहब ।

चकाबूह सं० पुं० चक्रव्यूह, झगड़ा;-मचब,-मचाइब,-होब; सं० ।

चकार सं० पुं० 'च' का अक्षर, उसका उच्चारण ।

चकिआ सं०स्त्री० चक्की (जिसे हाथ से चलाते हैं); -चलब,-चलाइब;-यस, मोटी और चौड़ी (स्त्री); वै०-या ।

चकित वि० घबराया हुआ, आश्चर्य में पड़ा;-होब, -करब; प्र० छकित; सं० चक से (चकित) ।

चकोर सं० पुं० प्रसिद्ध पक्षी; स्त्री०-री; सं० ।

चकौआ सं० पुं० चकवा का घृ० तथा स्नेहात्मक रूप; स्त्री०-कैया; गीतों में प्रयुक्त।

चक्कर सं० पुं० चक्कर;-करब,-काटब,-मारब,-लगाइब ।

चक्का सं० पुं० बड़ा पहिया ।

चक्की सं० स्त्री० चक्की; वै०-किआ ।

चक्कू सं० पुं० चाकू;-मारब,-चलब,-चलाइब ।

चखनब क्रि०स० पोत देना; प्रे०-वाइब,-उब,-नवाइब,-उब ।

चखनाचूर सं० वि० छोटे छोटे टुकड़े; टूटा;-होब, -करब; वै०-क-।

चखब दे० चीखब ।

चगड़ वि० पुं० चालाक; प्र०-ग्गड़,-घड़,-ग्घड़; भा०-ई,-पन ।

चङ्गुल सं० पुं० चंगुल ।

चङेरा सं० पुं० मूँज का बना सुंदर छोटा टोकरा; स्त्री०-री,-रिआ ।

चचरा सं० पुं० पानी सूखने के बाद मिट्टी पर फटा हुआ दरारा;-परब;-फाटब, क्रि०-रिआब; वै० चँ-।

चचा सं० पुं० चाचा; दे० काका; स्त्री०-ची; फ़ा० ।

चचिआ-ससुर सं० पुं० स्त्री का चाचा; स्त्री० -सासु ।

चटकन सं० पुं० चपत; वै०-ना; क्रि०-निआइब ।

चटकब क्रि० अ० चटकना (व्यक्ति का); सूख जाना (खेत का); प्रे०-काइब,-कवाइब, सिंचाई करके गोड़ने के पहले सूखने देना (प्रायः गन्ने के खेत को) ।

चटाइब क्रि० स० चटाना; प्रे०-टवाइब, वै०-उब; भा०-ई ।

चटाई दे० गोनरी ।

चटोर वि० जो बार-बार खाता रहे, लालची; जिभ-, जिसकी जीभ सब कुछ खाना चाहती हो; भा०-पन,-ई ।

चट्टपट्ट सं०पुं० क्षण;-मँ, तुरंत; प्र०-ट्टा-पट्टा मँ;-ट्टे, -ट्टेहँ, तुरंत ही; दे० पट्टे; क्रि० वि० जैसा प्रयुक्त ।

चट्टी सं० स्त्री० चप्पल ।

चट्टू वि० चाटनेवाला या वाली; दूसरे के यहाँ मुफ्त खाने का आदी व्यक्ति ।

चट्टें क्रि० वि० तुरंत; प्र०-हँ,-हि ।

चढ़ब क्रि० स० चढ़ना; प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब; भा० -ढ़ाई,-ढ़ावा (पूजा में आया सामान, द्रव्य आदि) ।

चणानी सं० स्त्री० नये कुएँ की दीवार को नीचे गलाने की क्रिया;-होब,-करब; दे० चाणब ।

चणुला दे०-ढुला ।

चतुर वि० पुं० होशियार; स्त्री०-रि, भा०-पन,-ई, प्र०-त्तुर; सं० ।

चत्तुर वि० पुं० चालाक; स्त्री०-रि, भा०-ई; सं० चतुर जिससे अर्थपरिवर्तन हुआ है ।

चथरा सं० पुं० टुकड़ा; किसी फल आदि का फूटा भाग;-होब,-करब;-क्रि०-ब, चि-रिआब, फूट जाना (पके फल आदि का); शा० 'छितराब' का एक रूप ।

चथरिआइब क्रि० स० फोड़ देना, टुकड़े कर देना ।

चद्दर सं० पुं० स्त्री० चादर; प्र०-द्दरा; वै०-रि, चादरि, चादरा (बहुत बड़ा चद्दर); कबीर-"झीनी-झीनी बीनी चादरिया ।"

चनगा सं० पुं० एक प्रकार की मछली ।

**चनरमा** सं० पुं० चंद्रमा; चाँदी या सोने का छोटा चंद्राकार गहना जो ग्रह-शांति के लिए पहना जाता है। सं०।

**चनवा** सं०पुं० स्त्रियों का एक आभूषण जो चंद्राकार रत्नजटित होता है और मत्थे के ऊपर पहना जाता है। सं० चंद्र+वा (अवा प्रत्यय जो प्रायः पुं० शब्दों में लगता है)।

**चना** सं० पुं० प्रसिद्ध अन्न;-भर, थोड़ा सा; सं० चणक।

**चनिआ** सं० स्त्री० छोटी सी झील जिसमें कभी-कभी खेती की जाती है। वै०-या।

**चनिहा** वि० पुं० चाँदीवाला; चाँदी मिला हुआ; स्त्री०-ही।

**चनुला** वि० पुं० चंडूल; दे० चँडुला।

**चन्नर** सं० पुं० मृत्यु के समय की अवस्था;-लागब, मृत्यु संनिकट होना; सं० चंद्र।

**चन्ना-माई** स्त्री० चंद्रमा; छोटे-छोटे बच्चे या माताएँ चंद्रमा को इसी तरह संबोधित करते हैं। लोरी-"चन्ना माई चन्ना माई, धाय आव धपाय आव।"

**चन्नू-चेहरा** सं० पुं० छोटी-छोटी चिड़ियाँ जो बहुत शोर करती हैं।

**चपटब** क्रि० अ० दे० छपटब।

**चपर-चट्ट** वि० निर्जन, सूना; लंबा-चौड़ा (मैदान); -हें, निर्जन स्थान में।

**चपरहा** वि० पुं० अभागा; स्त्री०-ही।

**चप्पर** वि० पुं० चपल; स्त्री०-रि; दीदा कगुस्ताख; भा०-ई; सं०।

**चफइल** वि० पुं० लंबा-चौड़ा (मैदान); शा० 'फइल' (दे०) का विकृत रूप।

**चबइनी** सं० स्त्री० 'चबैना' के स्थान में दिया हुआ नकद;-देब,-लेब; दे० चबयना; वै०-बयनी, -बै-; सं० चर्व (चबाना)।

**चबयना** सं० पुं० चबाने का अन्न; भुना चना, चावल आदि; सं० चर्व; दे० चेबाब; वै०-बैना।

**चबरा** सं० पुं० चपत, तमाचा; क्रि०-रिआइब; -मारब।

**चबरिआइब** क्रि० स० तमाचे लगाना; खूब मारना; वै०-उब।

**चबवाइब** क्रि० स० चबाने को देना; (कोल्हू में गन्ना) लगाना; पेरने को देना; वै०-उब; भा०-ई।

**चबाव** क्रि० स० चबाना; काट लेना; सं० चर्व।

**चबुआव** क्रि० अ० डाँटना, घुड़कना; स० फटकारना।

**चबुरी** सं० स्त्री० क्रोध की मुद्रा, मुँह को ज़ोर से बंद करने की मुद्रा;-बान्हब, ऐसी मुद्रा बनाना।

**चभकब** क्रि० स० चभकना; प्रे०-काइब,-उब, -कवाइब।

**चभक्का** सं० पुं० चभकने की क्रिया;-मारब; मज़ा लेना, खूब खाना या चभकना।

**चभोरब** क्रि० स० (घी, पानी तथा तेल में) भली भाँति भिगो देना, प्रे०-वाइब,-उब।

**चभ्भ** सं० पुं० पानी या कीचड़ में गिरने का शब्द; -सें,-दें; ध्व०।

**चमइनिहा** वि० पुं० चमाइन रखनेवाला; स्त्री० -ही; चमाइन (दे०)+हा।

**चमउधा** दे० मौधा।

**चमकटिया** सं० पुं० चमार; चमड़ा काटनेवाला चम+कटिया; सं० चर्म; व्यं० एवं गाली, नीच, दुष्ट।

**चमकन** वि० पुं० शौकीन; जो अपने कपड़े लत्तों को बहुत झाड़-पोंछकर रखे; स्त्री०-नि; '-ब' से (चमकनेवाला)।

**चमकब** क्रि० अ० चमकना; मुँह बनाकर किसी को छेड़ना; प्रे०-काइब,-उब।

**चमगादुर** सं० पुं० चमगीदड़; वि० जो दोनों ओर रहे; जौ० गेदुर, बा० चमगी-।

**चमचम** क्रि० वि० चमक के साथ; प्र०-मा-,-म्म; क्रि०-माब, प्रे०-माइब।

**चमचा** दे० चि-।

**चमड़ा** सं० पुं० चर्म;-उतारब, खूब पीटना; स्त्री० -ड़ी; सं० चर्म, फ़ा० चरम।

**चमतकार** सं०पुं० अद्भुत कार्य; वि०-री, अद्भुत, विचित्र कार्य करनेवाला; सं०-त्कार।

**चमन** वि० साफ सुथरा; फ़ा० चमन, उपवन।

**चम्म** सं० पुं० झट,-सें, तुरंत।

**चमरई** सं० स्त्री० नीचता, दुष्टता;-करब; 'चमार' (दे०) का भा०; चमार+ई; सं० चर्म+कार (चमार)।

**चमरउधा** वि० चमारोंवाला (जूता); जिसमें नर्मी न हो, कड़ा, देहाती; चमार+धा (बीच में 'चमरऊ' का ऊ ह्रस्व हो गया है)।

**चमरउटी** सं० स्त्री० चमारों के रहने का मुहल्ला; गाँव का पिछला भाग।

**चमरऊ** वि० चमारों का सा; चमारोंवाला; चमार +ऊ; प्र०-उआ।

**चमरकट** वि० दुष्ट; प्र०-ट्ट, प्रायः गाली या डाँट-फटकार में प्रयुक्त-"दु-या हत-", भा०-ई।

**चमरटोला** सं० पुं० चमारों का मुहल्ला, स्त्री० -ली,-लिया।

**चमरपन** सं० पु० चमार सा व्यवहार,-करब,होब।

**चमरसउँच** सं० पु० झमेला,-होब, चमार+सउँच (दे०, शौच) अर्थात् चमारों के शुद्ध होने की (विलंबवाली) क्रिया।

**चमसुर** सं० पुं० एक बीज जो बच्चों को दूध में घोंटकर पिलाया जाता है।

**चमाइनि** सं० स्त्री० चमार की स्त्री, फूहड़ और गंदी स्त्री; वि० चमइनिहा (दे०)।

**चमाचम** वि० पुं० चमकनेवाला, क्रि० वि० चमक के साथ, प्र०-म्म।

चमार सं० पुं० निम्न श्रेणी का व्यक्ति, वि० नीच, भा०-री, चमरई, चमरपन, स्त्री०-इन,-नि ।
चमूना वि० बना-ठना, शौक़ीन ।
चमेली सं० स्त्री० एक प्रकार का फूल; उसका पेड़, यह प्रायः स्त्रियों का नाम भी होता है ।
चमोटब क्रि० स० उँगलियों से चमड़े को पकड़कर नोच लेना, भा०-टा, सं० चर्म ।
चमौधा सं० पुं० चमड़े का थैला, वि० देशी चमड़े का या बिना सीझे चमड़े का (जूता), वै०-उधा; सं० चर्म ।
चय संबो० हाथी को आगे बढ़ाने के लिए कहा गया शब्द जो महावत प्रायः प्रयोग करता है। दूसरे शब्द हैं "धत" "मलि" (दे०) वै० चै, चइ ।
चरकट वि० पु० दुष्ट, नीच; चर (चारा)+कट (काटनेवाला), आवारा, भा०-ई, वै०-हा, चोर ।
चरकहा वि० पुं० चरका देनेवाला, स्त्री०-री ।
चरका सं० पु० धोखा,-देब, वि०-कहा ।
चरखा सं० पु० कातने का पुराना औज़ार,-कातब, -कताइब ।
चरखी सं० स्त्री० लकड़ी या लोहे की बनी कुएँ में लगी पानी भरने की मशीन; आतशबाज़ी में चक्कर करनेवाली चीज, शा० फा० चर्ख़ (आकाश) से (गोल या चलनेवाला के अर्थ में) ।
चरचा सं० स्त्री० उल्लेख, बात,-करब,-चलब, -चलाइब,-होब ।
चरनी सं० जानवरों के खाने का स्थान जिसमें हौदी (दे०) आदि लगी हो; वै०-नी, 'चरब' से (चरने या खाने का स्थान) ।
चरफर वि० पु० तेज़, स्त्री०-रि, भा०-ई ।
चरब क्रि० अ० स० चरना, घास खाना; प्रे०-राइब, -उब, भा०-राई, चरहा ।
चरबाँक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि; शा० सं० 'चार्वाक' से ।
चरबियाब क्रि० अ० मोटा हो जाना, गर्व करना; 'चरबी' (दे०) से०; वै०-आब ।
चरबी सं० स्त्री० चर्बी;-चढ़ब, गर्व होना; क्रि० -बियाब,-आब; वि०-बिहा,-ही ।
चरमर सं० पुं० 'चरमर' का शब्द; प्र०-रँ-रँ; क्रि० -राब, ऐसा शब्द करना; पु०-रर-रर; ध्व० ।
चरर सं० पुं० 'चरँ-चरँ' शब्द; प्राय: 'चरर-चरर' अथवा 'चरर-मरर' रूप में ।
चराइब क्रि० स० चराना; प्रे०-रवाइब,-उब; भा० -ई,-रवाई ।
चरवाह सं० पुं० चरानेवाला; चरवाहा; भा०-ही, चराने की मज़दूरी, क्रिया आदि ।
चरसा सं०पुं०पानी निकालने का चमड़े का बर्तन ।
चरहा सं० पुं० चरने की घास की अधिकता;-लागब; 'चरब' से ।
चराई सं० स्त्री० चराने की क्रिया, मज़दूरी आदि; दे० चरवाही ।
चरी सं० स्त्री० एक नाज, उसका पेड़, दाना आदि जिसे प्रायः जानवरों को खिलाते हैं और कहीं-कहीं 'जोन्हरी' कहते हैं। वि०-रिहा, (खेत) जिसमें चरी बोई हो ।
चर्राब क्रि० अ० बिना पानी या तेल के बाल अथवा खाल का खुरखुरा हो जाना ।
चलइआ वि० चलनेवाला, चलने (दे० चलब) वाला; वै०-वै-, लै-।
चलकई सं० स्त्री० चालाकी;-करब; दे० चलाँक; वै०-लँ-।
चलचलूँ वि० चलने के लिए तैयार ।
चलता वि०पुं० चलनेवाला, निभानेवाला; किसी प्रकार काम चलानेवाला; चालाक; स्त्री० ती; कबीर- "चलती चक्की देखिकै दीन कबीरा रोय" ।
चलनी सं० स्त्री० (आटा आदि) चालने की छेद-वाली डलिया; पुं०-ना ।
चलब क्रि० अ० चलना; प्रे०-लाइब,-उब,-वाइब, -उब; प्र०-बै; सं० चल ।
चलाँक वि० पुं० चालाक; स्त्री०-कि, भा०-की, -लकई,-लँ-।
चलाइब क्रि० स० चलाना; डालना (पशुओं का 'कोयर' दे०); प्रे०-लवाइब ।
चलाई सं० स्त्री० चलने की क्रिया या मिहनत; -करब, चलने में परिश्रम करना; चालने की क्रिया, मज़दूरी आदि ।
चलाउब क्रि० स० दे० चलब ।
चलान सं० स्त्री० माल या रुपये की आमदनी; -आइब,-जाब; वै०-नि;-करब,-होब, पुलिस द्वारा पकड़े जाने की कार्रवाई करना या होना। वि०-नी, चलनिहा ।
चलावा सं० पुं० व्यवहार, आचरण, बर्ताव; 'चलब' क्रिया से ।
चलिसवाँ वि० पुं० चालीसवाँ; स्त्री०-ईं ।
चली-चला सं० स्त्री० चलने की तैयारी, जल्दी आदि; व्यं०मृत्यु की निकटता; वै० चला-चली ।
चलौनी सं० स्त्री० चबेना भूनते समय उसे चलाने के लिए पतली लकड़ियों का एक समूह; पुं०-ना; वै०-लउनी ।
चवँरि सं० स्त्री० चँवरी;-डोलाइब, चवँरी हाँकना, -ढुरब, चवँरी चलना; सं० चामर ।
चवँसठि वि० चौंसठ; वै० चउँ-; सं० चतुःषष्ठि ।
चवहान सं० पुं० चौहान राजपूत; वै० चउ-; भा० -हनई,-पन ।
चवकसई सं० स्त्री० चौकसी; वै०-उ-।
चवखट दे० चउखट; अनेक शब्द जिनका उच्चारण "चउ···" होता है विकल्प में "चव···" बोले जाते हैं ।
चवगिद् दे० चउ- ।

चवन्नी सं० स्त्री० चार आने का सिक्का या मूल्य; वि०-न्निहा,-ही ।
चवपरतब क्रि० स० चार परत करना; प्रे०-ताइब, -तवाइब; वै०-उ''',चौ'''; चउ+परत ।
चवफाल वि० पुं० जिसके चार किनारे हों; वै० -उ-; स्त्री०-लि; चव (चार)+फाल (फल दे०); दे० चउपहल ।
चवफेर क्रि० वि० चारों ओर; वै०-उ-दे० ।
चवमासा दे० चउ- ।
चवरंगी वि० अनेक रंगवाला; जिसका कुछ पता न चले; चव (चार)+रंग+इन् प्रत्यय; भा० -रंग, षड्यंत्र,-करब ।
चवराई सं० स्त्री० एक प्रकार का साग; चवलाई; वै०-वँ- ।
चवरानबे वि० चौरानबे ।
चवरासी वि० चौरासी; लख-, ८४ लाख योनि ।
चवाई वि० चुगुलख़ोर, बातूनी, झूठा ।
चसका सं० पुं० शौक, व्यसन;-परब,-होब ।
चसपा वि० चिपका हुआ;-करब,-होब; प्रायः समन के लिए प्रयुक्त; वै०-पाँ ।
चसम सं० स्त्री० आँख,-सें, स्वयं अपनी आँखों से; अपनी-, स्वयं; फ़ा० चश्म, आँख ।
चसमा सं० पुं० चश्मा;-देब,-लगाइब ।
चहँटा सं० पुं० कीचड़;-करब,-लागब; क्रि०-टिआइब, कीचड़ में चलना; गिराकर मार देना ।
चहँटब क्रि० स० दबा देना; पटककर मारना; ख़ूब मारना ।
चह सं० पुं० लकड़ी का बना पुल ।
चहक वि० पुं०चमकीले रंग का; स्त्री०-कि ।
चहकब क्रि० अ० खूब बातें करना; गर्व भरी बातें करना; प्रे०-काइब, वि०-कन, ऐसी बातें करनेवाला; स्त्री०-नि; प्रे०-काइब,-उब ।
चहचहाब क्रि० अ० चिड़ियों की भाँति बोलना; 'चहचह' करना; बहुत और जल्दी-जल्दी बोलना ।
चहबच्चा सं० पुं० छोटा सा कुँआ या तहखाना; भण्डार; फा० चाह (कुँआ)+बच्चा, कुएँ का बच्चा या छोटा कुँआ ।
चहरी दे० चेहरी ।
चहला सं० पुं० गहरा कीचड़;-करब,-होब ।
चहलुम सं० पुं० प्रसिद्ध मुसलिम त्योहार; अर० चेहलुम (चालीसवाँ) ।
चहारुम सं० पुं० चौथा या चौथाई भाग; ज़मींदार का वह अधिकार जो आसामी द्वारा लगाये पेड़ों, उनके फलों आदि पर होता था । फ़ा० ।
चहुआ सं० पुं० हिम्मत, उपाय, षड्यंत्र;-चलब, सफलता मिलना ।
चहेंटब क्रि० स० घेर कर दबा लेना; पराजित कर लेना; प्रे०-टवाइब,-उब ।
चाँड़ब दे० चाणब, चणनी ।
चाँपब क्रि० स० दंब देना, पटक देना; व्यं० खूब खाना; प्रे० चँपाइब, चँपवाइब,-उब; सं० 'चाप' से ।
चाइनि सं० स्त्री० चाई की स्त्री ।
चाई सं० पुं० मछली पकड़ने और नाव चलानेवाली एक जाति के पुरुष; स्त्री०-इनि ।
चाउर सं० पुं० चावल; वि० चउरहा,-ही ।
चाक सं० पुं० मिट्टी का गोल बड़ा थाल जिस पर गर्म गुड़ फैलाकर भेली बनाते हैं;कुम्हार का चाक ।
चाकर सं० पुं० नौकर; भा०-री, चकरी; नोकर-, भृत्यवर्ग; नोकरी-चाकरी, कोई काम ।
चाकर वि० पुं० चौड़ा; स्त्री०-रि; भा० चकराई, -रई,-पन; वै०-ल ।
चाकी सं० स्त्री० बिजली;-परै, बिजली गिरे,-मारै, शाप देने के शब्द; चकिया ।
चाकू सं०पुं० चक्कू ।
चाखब क्रि० स० चखना; प्रे० चखाइब, चखवाइब, -उब ।
चाट सं० स्त्री० आदत, व्यसन;-परब,-लागब ।
चाटब क्रि० स० चाटना; इधर-उधर खाते रहना, प्रे० चटाइब, चटवाइब,-उब ।
चाटा सं० पुं तमाचा; वै० चाँ- ।
चाढ़ सं० पुं० इमारत बनाते समय काम करने के लिए लकड़ी का मचान;-बान्हब ।
चाणब क्रि० स० कुएँ की दीवार को गलाना; मु० खूब खाना, मुफ़्त खाना; दे० चणनी; प्रे० चणाइब,-उब ।
चादरि सं० स्त्री० चद्दर; क०-"झीनी-झीनी बीनी चादरिया", पुं० चादरा ।
चानमारी सं० स्त्री० चाँदमारी;-करब,-होब ।
चाना वि० पुं० जिसके मत्थे पर सफ़ेद बाल हों (प्राय: भैंसा); स्त्री०-नी ।
चानी सं० स्त्री० चाँदी;-होब, मज़ा होना;-सोना, सोना-;सं० चन्द्रिका ।
चाप सं० पुं० धनुष;-चढ़ाइब, निर्दयता करना, कठोर होना; यह शब्द इसी मुहावरे में बोला जाता है, अलग नहीं; सं०, वै० चाँप ।
चापर वि० पुं० नष्ट; स्त्री०-रि;-करब,-होब; दे० चपरहा ।
चाबस वि० बो० शाबास ! वै०-सि ।
चाबुक सं० पुं० कोड़ा; फ़ा० ।
चाभब क्रि० स० चाभना; ख़ूब खाना, मुफ़्त खाना; प्रे० चभवाइब,-उब ।
चाभी सं० स्त्री० कुंजी;-लगाइब,-देब; मु० भेद, रहस्य, प्रभाव, अधिकार ।
चाम सं० पुं० चमड़ा; सं० चर्म, फ़ा० चरम ।
चाय दे० चाह ।
चारा सं० पुं० पशुओं का भोजन; दाना-, कुछ भोजन;-करब,-होब ।
चारि वि० चार, प्र०-उ,-रहु,-रउ,-रिहि,-रिउ; सं० चत्वारि; दुइ-,-पाँच,-छ, थोड़े से ।

चारौ वि० चारों; चारि का प्र० रूप 'चारउ'।
चाल सं० स्त्री० चाल; वै०-लि;कु-चलब,-चूल (करब), चालाकी (करना)।
चालब क्रि०स० चालना (आटा आदि); दीवार या भूमि आदि में छेद करना; प्रे० चलवाइब,-उब।
चालिस वि० चालीस; सं० चत्वारिंश; प्र० चलिसौ, -सै।
चालु दे० चाल।
चाव सं० पुं०-शौक़।
चावा सं० पुं० चार अंगुल का नाप; यक-, दुइ-।
चिआँ सं० पुं० इमली का बीज;-यस; छोटा, वै० -याँ, प्र० ची-।
चासनी सं० स्त्री० चाशनी;-उठाइब,-लेब।
चाह सं० स्त्री० चाय।
चाहब क्रि० स० चाहना।
चाहुति सं० स्त्री० आवश्यकता, प्रेम;-होब,-रहब, -करब।
चिउरा सं०पुं० चिवड़ा,-दहिउ, दही एवं चूड़ा जो एक में मिलाकर प्रायः पूरब में खाया जाता है; दहिउ-।
चिक्चिक सं० पुं० चिक-चिक का शब्द,-करब, व्यर्थ बकना।
चिकना वि० पुं० जो सुंदर कपड़े लत्ते या भोजन पसंद करता हो, स्त्री०-नी।
चिकवा सं० पुं० चीक, बकरा काटनेवाला, स्त्री० -इन,-नि।
चिकारा सं० पुं० सारंगी की भांति का एक छोटा बाजा, तु०ज़ोर की आवाज़-"परेउ भूमि करि घोर चिकारा", सं० चीत्कार।
चिकन सं० पुं० एक सुंदर कपड़ा जो पुराने लोग बहुत व्यवहार में लाते थे।
चिकिन सं० स्त्री० जाँच पड़ताल,-होब,-करब, अं० चेकिंग।
चिकिर-पिकिर सं० पुं० आपत्ति,-करब।
चिकोटब क्रि० अ० चिकोटी (दे०) काटना, दो उँगलियों से पकड़कर नोचना।
चिकोटी सं० स्त्री० दो उँगलियों से पकड़कर नोचने की क्रिया,-काटब; पुं०-टा।
चिक्क सं० पुं० चेक, परदेवाला चिक; अं०।
चिक्कन वि० पुं० चिकना, साफ़;-करब,-होब, नष्ट करना या होना, भा० चिकनई,-पन,-वट; सं०।
चिखना सं० पुं० चीखने या स्वाद लेने की क्रिया, दे० चीखब, वै० चि-,-चीखब, स्वाद लेना, चिखाइब।
चिखाई सं० स्त्री० चीखने की पद्धति, परम्परा या निरंतर क्रिया।
चिखुरब क्रि० स० एक-एक करके उखाड़ना (घास आदि), प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब,-उब।
चिखुरवाई सं० स्त्री० चिखुरने की क्रिया या उसकी मज़दूरी आदि।
चिगना दे० चिक्ना।
चिंगुरा सं० पुं० किसी अंग की नस के अकड़ने की क्रिया,-लागब, क्रि०-रब (बहुत कम प्रयुक्त); वै०-डुरा।
चिघरब क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ का शोर करना, प्रे०-रवाइब,-उब; भा०-राई, सं० चीत्कार।
चिक्ना संबो० छोटे-छोटे बच्चों या प्रेम पूर्वक अपने से छोटों को संबोधित करने का शब्द जिसे प्रायः वृद्ध लोग प्रयुक्त करते हैं और उनमें भी अधिकतर स्त्रियाँ। उ० अरे…,नाहीं…,मोर…, फ़ा० चिगनान (?), सिरके बालों का समूह, अं० चिकाबिडी, बच्चों के लिए स्नेह का शब्द।
चिचिआब क्रि० अ० चिल्लाना, 'ची-ची' करना, प्रे०-वाइब; ध्व०।
चिचोरब क्रि० स० (किसी सूखी वस्तु को) दाँत से काटना; परिश्रमपूर्वक अथवा निरर्थक काटना; प्रे०-रवाइब।
चिजुनि सं०स्त्री० बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द जो 'चीज़' के स्थान में आता है; उन्हें खुश करने के लिए इसे बड़े लोग भी बोलते हैं; प्र०-ज्जुनि, ची-।
चिटकन वि० पुं० जो शीघ्र रुष्ट हो जाय; स्त्री० -नि; दे० चिटकब।
चिटकब क्रि० अ० चिटकना, फटना (बीज आदि का); रुष्ट होना; प्रे०-काइब,-उब; पूर्व० में 'चिटिकि' हो जाता है।
चिट्टा सं० पुं० उत्तेजना;-देब,-झारब, झगड़ा लगाना।
चिट्ठा सं० पुं० रसद पानेवालों की सूची जो बारात आदि में तैयार होती है;-देब,-बाँटब; अं० चिट।
चिट्ठी सं०स्त्री० पत्र;-पत्री, रुक्का, तु० अं० चिट।
चित सं० पुं० चित्त;-लगाइब,-देब मन-, पूरा मन; -से उतरब,-पर चढ़ब।
चितइब क्रि० अ० देखना, ताकना; वै०-उब; प्रे० -वाइब।
चितकाबर वि० पुं० चितकबरा; स्त्री०-रि।
चित्त वि० जिसका मुँह ऊपर हो और जो पीठ के बल पड़ा हो; प्र०-त्तै; इसका उलटा 'पुट्ट' है।
चित्ती सं० स्त्री० गोल-गोल दाग़ या निशान; -परब; पं० चिट्टा (सफ़ेद)।
चिथरा सं० पुं० चीथड़ा; क्रि०-ब, फट जाना, चिथड़े-चिथड़े हो जाना।
चिदुरब क्रि०अ०फैल जाना; प्रे०-दोरब (मुँह आदि अंगों का); सं० दर, फ़ा० दराज़ (चौड़ा)।
चिदोरब क्रि० स० फैलाना (लाचारी अथवा लज्जा से मुँह का); मुँह, ओंठ-।
चिनकब क्रि० अ० ज़रा सा शोर करना;-मिनकब, आहट करना।
चिनगा सं० स्त्री० खराब भेली या गुड़ जो चिप-चिप करे; क्रि०-गाब, गुड़ का ऐसा हो जाना; सं० छिन्न ?

चिनिआब क्रि० अ० किसी काम के करने में नखरे करना; वै० चीनी होब; चीनी की भाँति दुष्प्राप्य होने की कोशिश करना ?

चिनिहा वि० पुं० चीनीवाला; स्त्री०-ही; यह शब्द चीनीवाले बर्त्तन, बोरे अथवा चीनी के शौक़ीन व्यक्तियों के लिए आता है।

चिन्हाइब क्रि० स० परिचय कराना, अपने दुर्गुणों का परिचय देना; वै०-उब।

चिन्हार सं० पुं० परिचित; स्त्री०-रि; भा०-न्हरई, -पन।

चिपरी सं० स्त्री० गोबर की पतली उपरी (दे०); -होब, दब जाना।

चिप्पड़ सं० पुं० बड़ा सा चीपा (दे०)।

चिबिलपन सं०पुं० चिबिल्ले का स्वभाव; वै०-ल्लई,-ल्ल-।

चिबिल्ला वि० पुं० जिसका व्यवहार बच्चों सा हो; स्त्री०-ल्ली।

चिमचा सं० पुं० चम्मच।

चिमरई सं० स्त्री० मज़बूती; चीमर (दे०) होने का गुण; वै०-पन।

चिमराब क्रि० अ० चीमर हो जाना; पुष्ट होना।

चिरई सं० स्त्री० चिड़िया; प्रिया; उ० अरे मोरि चिरई !

चिरुआ सं० पुं० चुल्लू; यक-,दुइ-,वै० च-।

चिरकुट सं० पुं० चीथड़ा; छोटा फटा कपड़ा।

चिरउरी सं० स्त्री० प्रार्थना;-मिनती, अभ्यर्थना; -करब।

चिराहिन वि० बाल के जलने की सी (बू); -आइब।

चिरुआ वि० पुं० चीरा हुआ (लकड़ी का टुकड़ा); विशेषकर यह 'कोरो' (दे०) के लिए आता है।

चिलबिल सं० पुं० एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हल्की होती है।

चिलमि सं० स्त्री० चिलम; कहा० धन नाते हुक्का पोसाक नाते चिलमि।

चिलरहा वि० पुं० जिसमें चीलर (दे०) हों; स्त्री० -ही।

चिल्लहटि सं० स्त्री० बराबर चिल्लाते रहने की क्रिया;-परब।

चिल्लाब क्रि० अ० चिल्लाना; प्रे०-ल्लवाइब,-उब।

चिहराब क्रि० अ० जरा सा फट जाना (ठोस वस्तु का); बीच से कुछ फटना; प्रे०-वराइब; तु० चिथराब।

चीक सं० पुं० बकरा काटने व उसका मांस बेचनेवाला; वै० चिकवा; स्त्री०-किनि।

चीकट वि० पुं० बहुत मैला; स्त्री०-टि; क्रि० चिकटाब।

चीखब क्रि० स० स्वाद लेना; प्रे० चिखाइब, -उब।

चीजु सं० स्त्री० चीज; वै०-जि; दे० चिजुनि; प्र० तूनि, चिज्जुनि; बच्चों द्वारा प्रयुक्त।

चीठी सं० स्त्री० चिट्ठी।

चीतरि सं० स्त्री० पतला विषैला साँप जो चितकबरा होता है; 'चित्ती' से (जिस पर चित्ती हो)।

चीनी सं० स्त्री० शक्कर; मु०-होब, अकड़ना; क्रि० चिनिआब (चीनी होब के अर्थ में)।

चीन्ह सं० पुं० चिन्ह, उपहार;-परिचै, जान-पहचान;-करब,-होब; वि० चिन्हार (दे०)।

चीन्हब क्रि० स० पहिचानना; प्रे० चिन्हाइब,-उब, -न्हवाइब,-उब; सं० चि।

चीन्हा सं० पुं० रेखा, निशान;-करब,-पारब, -खींचब; सं० चिह्न।

चीपा सं० पुं० मिट्टी आदि का बड़ा ढला; तु० अं० चिप (छोटा टुकड़ा), हिं० चिप्पी; सं० चिप् (जो फेंका जाय)।

चीपी सं० स्त्री० महुए के भीतर की गुठली।

चीमर वि० पुं० पुष्ट; दुबला-पतला पर न टूटने, -फूटनेवाला; स्त्री०-रि, भा० चिमरई,-पन।

चीरब क्रि० स० चीड़ना;-फारब; प्रे० चिराइब, -उब,-रवाइब,-उब; भा० चिराई।

चीरा सं० पुं० चीड़ने का निशान;-देब, चीड़ देना; दे० छीरा।

चीरौ क्रि० चीड़ो;-त रकत नाहीं, यह मु० उस समय प्रयुक्त होता है जब किसी की अधिक घबराहट का वर्णन करते हैं।

चीलर सं० पुं० सफेद मोटे-मोटे जूँ जो प्रायः कपड़ों या गंदे बालों में पड़ते हैं।

चील्हि सं० स्त्री० चील; यह शब्द प्रायः देहात में छोटी लड़कियों के लिए भी प्रयुक्त होता है। नीची जाति की स्त्रियों के नाम भी 'चील्हा' आदि होते हैं।

चुँगुल सं० पुं० जो चुँगली या पीठ पीछे बुराई करे; भा०-ली; वै०-ङुल;-लागब।

चुअब क्रि० अ० चूना, गिरना, प्रे०-आइब, -वाइब।

चुकब क्रि० अ० चुकना, समाप्त होना; प्रे०-काइब।

चुकाइब क्रि० स० चुकाना; प्रे०-कवाइब, -उब।

चुक्क वि० बहुत खट्टा; प्रायः "अमिल (दे०) चुक्क" बोलते हैं; सं० चुष् से (अर्थात् जो चूसने में खट्टा हो)।

चुका-पुक्का वि० समाप्त;-होब; प्रायः यह शब्द छोटे बच्चे किसी वस्तु को खा चुकने पर हथेली बजाकर कहते हैं। 'चुकब' से।

चुचकब क्रि० अ० (हरे फल का) पिचककर सूखना; प्रे०-काइब; सं०-काली, सुसकाली, ऐसा सूखा आम।

चुचकारब क्रि० स० पुचकारना।

चुचकाली सं० स्त्री० आम जो डाल में ही सूख गया हो; दे० 'चुचकब'।

चुटकी सं० स्त्री० दो उँगलियों के बीच की पकड़; -भर, थोड़ा सा ।

चुतरी सं० स्त्री० चूतरों पर पड़ी चर्बी या मुटाई; -परब ।

चुनउटी सं० स्त्री० चूना रखने की डिबिया ।

चुनचुनाब क्रि० अ० चींटी काटने या मिर्च लगने का सा अनुभव होना ।

चुनब क्रि० स० चुनना; प्रे०-नाइब,-उब,-वाइब, -उब ।

चुनरी सं० स्त्री० ब्याह में पहननेवाली रंगीन साड़ी जो दुलहिन धारण करती है । कबी० "बैहरे म धुमिल भई मोरि...।"

चुनहा वि० पुं० चूनेवाला; स्त्री०-ही ।

चुनाई सं० स्त्री० चुनने की क्रिया, मज़दूरी आदि; प्रे०-वाई; सं० ची ।

चुनाव सं० पुं० चुनने का ढङ्ग, क्रम आदि; सं० ची ।

चुनौटी सं० स्त्री० चूना रखने की डिबिया ।

चुन्नट सं० पुं० चुना हुआ भाग (कपड़े आदि का)।

चुप वि० शांत; क्रि०-पाब, प्रे०-वाइब, चुप होना या करना । प्र०-प्पै,-प्प ।

चुप्पा वि० पुं० जो कम बोले और अपने विचारों को छिपावे; स्त्री०-प्पी ।

चुप्पी सं० स्त्री० चुप रहने का क्रम;-साधब ।

चुप्पें क्रि० वि० बिना किसी को बतलाये; गुप्त रूप से ।

चुबुराब क्रि० स० मुँह में रखकर धीरे-धीरे चाभते रहना; प्रे०-राइब ।

चुभुर-चुभुर क्रि० वि० मुँह में किसी द्रव पदार्थ के "चुभुर-चुभुर" शब्द करके पीने के लिए यह क्रि० वि० आता है ।

चुमकारब क्रि० स० प्यार से बुलाना; सं० चुंब + कृ ।

चुम्मब क्रि० स० चूमना;-चाटब, प्यार करना; प्रे० -माइब,-उब; सं० चुंब ।

चुम्मा सं० पुं० चुंबन; स्त्री०-म्मी;-देब,-लेब; सं० चुंबन ।

चुरइब क्रि० स० पकाना; प्रे०-वाइब,-उब; वै० -उब ।

चुरइलि सं० स्त्री० चुड़ैल; झगरालू स्त्री ।

चुरकी सं० स्त्री० चोटी (पुरुष की);-राखब,-रखाइब,-बान्हब; सं० चूडिका ।

चुरखुनी सं० स्त्री० छोटे-छोटे टुकड़े;-करब,-होब; दे० चूर+खूनब; पुं०-ना (खूने हुए छोटे टुकड़े)।

चुर-चुर वि० खस्ता; जो खाने में "चुर-चुर" शब्द करे; क्रि०-राब; स्त्री०-रि ।

चुरब क्रि० अ० पकना; प्रे०-इब (दे०) ।

चुराई सं० स्त्री० चुरने या पकने की क्रिया; प्रे० -वाई ।

चुरिआब क्रि० अ० ऊपर तक भर जाना; प्रे०-इब, -उब; सं० चूडा (सिर) से ।

चुरिया सं० स्त्री० चूड़ी;-क धोवन, स्त्री का बनाया भोजन; घर का खाना;-फोरब,-उतारब, -पहिरब ।

चुरिला सं० पुं० चूड़ी, खँडुवा, कंकण; इस नाम का एक गीत जो देहातों में गाते हैं ।

चुरिहार सं० पुं० चूड़ी बेचनेवाला; स्त्री०-रिन, -नि; चूरी+हार ।

चुरुआ दे० चिरुआ ।

चुरुट सं० पुं० बड़ा सिगरेट; ता० "शुरुत्तु" ।

चुल्ला सं० पुं० छल्ला;-पहिरब,-लगाइब ।

चुल्हका सं० पुं० एक व्यक्ति या बच्चे का भोजन जो जल्दी में बिना चूल्हे के, कंडे की आँच पर बने;-डारब, ऐसा भोजन तैयार करना; 'चूल्हा' से ।

चुल्हिआ-दुआर सं० पुं० चूल्हे का द्वार; घर का भीतरी काम; कहा० वई मियाँ दर दरबार वई मियाँ चु-।

चुल्हि-पोतना वि० पुं० (पुरुष) जो घर के भीतर ही रहा करे; चूल्हा पोतनेवाला; बाहर के काम के लिए अयोग्य ।

चुवब क्रि० अ० चूना; प्रे०-वाइब,-आइब; वै० -अब; सं० च्यव् ।

चुसवाइब क्रि० स० चुसाना; 'चूसब' का प्रे० रूप ।

चुहकब क्रि० स० चूस लेना; वै०-हु-; सं० चुष्; प्रे०-काइब,-उब ।

चुहब क्रि० स० चुहना; प्रे०-हाइब,-वाइब, -उब ।

चुहाइब क्रि० स० कोल्हू में गन्ना देना; चूसने के लिए देना; प्रे०-वाइब,-उब ।

चुहुट वि० पुं० चालाक, मक्खीचूस; स्त्री०-टि, -टिनि; फ़ा० चुस्त ।

चूँची सं० स्त्री० स्तन; पुं०-चा, व्यंग एवं घृणा में बड़े स्तनों के लिए । -पियब, कुछ न जानना, बच्चे सा व्यवहार करना ।

चूक सं० स्त्री० ग़लती, धोका;-होब,-करब; भूल-, अपराध ।

चूकब क्रि० अ० चूकना, रह जाना, न कर सकना; प्रे० चुकवाइब ।

चूङब क्रि० स० एक एक करके उठाना या खाना; चुँगना; प्रे० चुङाइब; दे० टूङब ।

चूतर सं० पुं० चूतड़; दे० चुतरी ।

चूति सं० स्त्री० स्त्री का गुप्तांग; तोरि-माँ, गाली देने के शब्द (स्त्रियों के लिए) ।

चूतिआ वि० पुं० मूर्ख; भा०-पन,-ई ।

चून सं० पुं० चूना;-ताख, अत्युक्ति,-लगाइब, बढ़ाकर कहना, इधर-उधर लगाना; सं० चूर्ण ।

चूनी सं० स्त्री० दाल आदि का टूटा या निकृष्ट भाग;-खूदी,-मिरखुनी, निकृष्ट भोजन।
चूर सं० पुं० खाट के कोने का भाग; सं० चूड़ा; -मिलाइब,-उखारब।
चूर सं० पुं० चूरा, टूटा हुआ बारीक भाग (अन्नादि का); वि० थका हुआ;-चूर होब, बिलकुल थक जाना।
चूरन सं० पुं० चूर्ण; सं०;-क लटका, चूरन बेचने का गीत।
चूरा सं० पुं० टूटा हुआ भाग;-होब, टूट जाना।
चूरी सं० स्त्री० चूड़ी;-पहिरब,-उतारब,-फोरब (विधवा के लिए); दे० चुरिआ।
चूल्हा सं० पुं० चूल्हा; स्त्री०-हि; कहा० आठ कनौजिया नौ चूल्हा।
चूसब क्रि० स० चूसना; प्रे० चुसाइब,-वाइब,-उब; सं० चुष्।
चेंचा सं० पुं० गर्दन; दे० घेंचा;-पकरब; क्रि० -चिआइब, गर्दन पकड़ कर दबाना, बाध्य करना।
चेंचि सं० स्त्री० गेहूँ के साथ होनेवाला एक जंगली पौदा जिसके दानों से देहात की स्त्रियाँ सिर साफ करती हैं; वै०-चु।
चेंड़ा वि०पुं० लंबा चौड़ा पर सुस्त; बहुत खानेवाला पर निकम्मा; दे० चइला।
चेका सं० पुं० बड़ा टुकड़ा (मिट्टी पत्थर या गुड़ का); वै० चीं-।
चेत सं० स्त्री० होश, स्मृति;-होब,-करब;-क्रि०-ताब, -ब; वै०-ति; सं० चित्।
चेतब क्रि० अ० स० ध्यान देना; होश करना; सँभालना; प्रे०-ताइब; वै०-ताब; सं० चित्त।
चेतवाही सं० स्त्री० चिंता, परवाह;-राखब; चेत+वाही।
चेना सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो दो महीने में तैयार होता है।
चेफ सं० पुं० गन्ने का छिलका जो चूसते समय पहले उतार देते हैं। वै०-फि,-फु।
चेरिआ सं० स्त्री० नौकरानी; लौंडी-, परिचारिकाएँ; वै०-या; सं० चारिका; 'चेरा' का स्त्री०, यद्यपि यह शब्द पुं० में प्रायः बोला नहीं जाता; तुल० ने लिखा है "सदा हरि चेरा" (चेला के अर्थ में)।
चेला सं० पं० शिष्य; स्त्री०-लिनि; भा०-ही।
चेलाही सं० स्त्री० चेलों का निवास; गुरु का चेत्र जिसमें वह निरंतर घूमता रहता है।
चेल्हवा सं० पुं० एक प्रकार की सफ़ेद सुंदर मछली; -यस, चपल एवं सुंदर।
चेहरा सं० पुं० मुखड़ा।
चेहरी सं० स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो प्रायः बाजरे आदि के खेत में चुँगती है;-लागब; -करब, मजदूरों या गरीबों का कटे खेत में से पड़ा हुआ अन्न बीनना।
चैत दे० चइत।
चैन सं० पुं० आराम;-लेब,-करब,-पाइब; वै० चयन।
चोंकब क्रि० स० किसी नुकीली वस्तु से कुरेदना; प्रे०-काइब।
चोंकरब क्रि० अ० ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना; प्रे० -वाइब।
चोंगा सं० पुं० गोल लपेटा हुआ पुलिंदा; क्रि० -गिआइब।
चोंघट वि० पुं० मूर्ख, उल्लू।
चोंचि सं० स्त्री० चोंच; क्रि०-आइब, चोंच से पकड़ना या नोंचना।
चोंड़ा सं० पुं० कच्चा कुआँ जो सिंचाई के लिए तैयार कर लिया जाता है।
चोइँटा सं० पुं० गुड़ जो गीला और बेमज़ा हो जाता है; गुड़ की पाग (दे०) निकाल लेने पर कड़ाह में पानी डालकर जो गुड़ का पानीदार भाग बच रहता है उसे भी-कहते हैं। क्रि०-ब, ऐसा हो जाना।
चोकर सं० पुं० आटे का मोटा भाग; चूनी-, निकृष्ट अन्न; वि०-हा।
चोख वि० पुं० नुकीला, तेज़, पैना; स्त्री०-खि; भा० -खाई; क्रि०-खाब, तेज़ होना,-खवाइब, तेज़ करना।
चोट सं० स्त्री० आक्रमण;-करब।
चोटा सं० पुं० राब से बना पतला द्रव जिसे तंबाकू आदि में डालते हैं।
चोटाब क्रि० अ० चोट लग जाना; प्रे०-वाइब।
चोटि सं० स्त्री० चोट।
चोटी सं० स्त्री० वेणी।
चोदब क्रि० स० मैथुन करना; प्रे०-दाइब,-उब, -दवाइब,-उब।
चोन्हर वि० पुं० जिसे दीख न पड़े; स्त्री०-रि; घृ० -रा, री; क्रि०-राब।
चोन्ही सं० स्त्री० आवश्यकता से अधिक रोशनी; चक-,-लागब; पुं०-न्हा (?)।
चोपी सं० स्त्री० आम का विषैला पानी; वि०-पिहा।
चोबदार सं० पुं० दरबार का वह नौकर जो 'चोब' (प्रा० डंडा) उठाता है।
चोर सं० पुं० जो चोरी करे; क्रि०-राइब, प्रे० -वाइब,-उब;-कट, जो छोटी-छोटी चोरी किया करे;-टई, ऐसी आदत; सं०।
चोला सं० पुं० शरीर;-छूटब, मरना; कवन-, कौन जाति।
चोलिआ सं० स्त्री० चोली।
चोवा सं० पुं० तेल-फुलेल;-चंदन, शृंगार;-लगाइब।
चौक सं० पुं० दे० चउक।
चौड़ा त्रि० पुं० इसके लिए ठेठ अवधी शब्द 'चाकर' है; भा०-ई।
चौहान दे० चवहान।

# छ

छँटनी सं॰ स्त्री॰ छाँटने या अलग करने की क्रिया; -होब,-करब ।

छँटब क्रि॰ अ॰ छँट जाना, अलग हो जाना; प्रे॰ -टाइब, छाँटब ।

छँटा वि॰ पुं॰ विशिष्ट, सर्वोच्च; स्त्री॰-टी ।

छंटा वि॰ पुं॰ (घोड़ा) जो छाना या बँधा हुआ चरता हो; स्त्री॰-टी; 'छनब, छानब' से ।

छँटाइ सं॰ स्त्री॰ छाँटने की क्रिया, मजदूरी अथवा मिहनत; दे॰ छाँटब ।

छंडब क्रि॰ अ॰ टूटने योग्य हो जाना (मूँज आदि का); सं॰ 'खंड' से (टुकड़ों में टूटने योग्य होना)।

छँहाब क्रि॰ अ॰ धूप से आकर छाँह में बैठना या थकान मिटाना ।

छई सं॰स्त्री॰ क्षयरोग; सं॰; कप-,कफ,-करब,-होब, दुर्दशा करना या होना, तंग करना या होना ।

छउँकटई सं॰ स्त्री॰ विश्वासघात;-करब; छउ (क्षय)+कंठ=गला काटना ।

छउँकटहा वि॰ पुं॰ विश्वासघाती; स्त्री॰-ही; वै॰ -टिहा ।

छकड़ा सं॰ पुं॰ भारी बैलगाड़ी; वि॰ पुराना, रद्दी ।

छकनी सं॰ स्त्री॰ घास पीटने की लकड़ी की बनी झाड़ू के प्रकार की एक चीज़ ।

छकब क्रि॰ अ॰ छकना, ख़ूब खाना या पीना आश्चर्यान्वित होना; प्रे॰-काइब,-उब ।

छकलिया वि॰ जिसमें छः कली हों (कुर्त्ता, छाता आदि); वै॰-आ ।

छगड़ाब क्रि॰ अ॰ बकरी का गर्भ धारण करना; वै॰ छे- ।

छगड़ी सं॰ स्त्री॰ बकरी; दे॰ छेरी; वै॰ छे-; बँ॰ छागल ।

छच्छाकाल वि॰ पुं॰ क्रुद्ध;-होब।

छच्छाब क्रि॰ अ॰ (घास आदि का) फैलकर बढ़ते रहना ।

छजब दे॰ छाजब ।

छज्जा सं॰ पुं॰ छत; लंबी छत ।

छटकब क्रि॰ अ॰ अलग हो जाना, कूदना, फिसलना; प्रे॰-काइब,-कवाइब,-उब ।

छटकहरि वि॰ स्त्री॰ जो (गाय या भैंस) दुहते समय कूद जाय; वै॰-कहलि ।

छटाँक सं॰ पुं॰ पाव का चौथाई;-भर कै, दुबला-पतला (व्यक्ति) ।

छट्ठी सं॰ स्त्री॰ जन्म के छठवें दिन का उत्सव; -बरही, हर्ष के अवसर; सं॰ षष्ठ ।

छठिआँतर सं॰ पुं॰ भेद, मनोमालिन्य;-होब, -रहब; बच्चों की छठी में बिच्छू के डंक आदि डाले जाते हैं जिससे उन्हें बिच्छू काटने आदि का डर नहीं रहता; इसी से यह शब्द (छठी का अंतर) बना है ।

छठिआब क्रि॰ अ॰ हठ करना (प्रायः बच्चों का), आग्रह करना ।

छड़ सं॰ पुं॰ पतला डंडा (प्रायः लोहे का); स्त्री॰ -ड़ी; सं॰स्थ ।

छड़ा सं॰ पुं॰ स्त्रियों के पैर में पहनने का आभूषण; कड़ा-,दोनों साथ पहने जानेवाले चाँदी के गहने ।

छड़ी सं॰ स्त्री॰ हाथ की लकड़ी; सं॰ स्थ ।

छड़ुआ वि॰ पुं॰ छोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ (साँड़ आदि);-छोड़ब,-छोड़ाइब; बकरे, भैंसे आदि जानवर मानता (दे॰) के रूप में इस प्रकार छोड़ दिये जाते हैं। उन्हें देवताओं के नाम पर कोई मारता नहीं और वे खूब खाते फिरते हैं ।

छत सं॰ स्त्री॰ मकान की छत ।

छतनार वि॰ पुं॰ जिसका ऊपर का भाग छत या छतरी की भाँति हो; छायादार; वै॰ छो-, स्त्री॰ -रि; सं॰ छत्र+नार ।

छतिआइब क्रि॰ स॰ छाती की उँचाई तक उठा लेना; छाती के बल उठाना ।

छतीसा वि॰ पुं॰ दुष्ट, चालाक; स्त्री॰-सी, प्र॰ -त्ती-; भा॰-तिसपन,-सई ।

छत्ता सं॰ पुं॰ (शहद आदि का) छाता; सं॰ छत्र।

छत्तिस वि॰ छत्तीस;-वाँ,-ईं ।

छन सं॰ पुं॰ क्षण;-भर,-नै भर; वै॰ छि-;सं॰ क्षण; दे॰ छिन ।

छनकब क्रि॰ अ॰ झट से रुष्ट हो जाना; प्रे॰-काइब; सं॰ 'क्षण' से (क्षण भर में), वि॰ छनकहर, जो छन भर में रुष्ट हो जाय; स्त्री॰ -रि ।

छनछनाब क्रि॰ अ॰ आग पर झट गर्म हो जाना (घी या तेल की भाँति); गर्म होकर आवाज़ करना; नाराज़ होकर बोलने लगना; अनु॰; वै॰ छि-।

छनटा वि॰ पुं॰ जो छना या बँधा रहे (घोड़ा या टट्टू); जो खुला न छूटा हो; स्त्री॰-टी; वै॰ छंटा, -टी,-नुआ,-ई ।

छनना सं॰ पुं॰ कपड़े या धातु का टुकड़ा जिससे द्रव वस्तु छानी जाती है; स्त्री॰-नी ।

छनब क्रि॰ अ॰ छन जाना; प्रे॰ छानब, छनाइब, छनवाइब,-उब ।

छनुआ वि॰ छाना हुआ; बँधा; स्त्री॰-ई; ये दोनों शब्द घोड़े-घोड़ियों के लिए आते हैं ।

छन्नी सं॰ स्त्री॰ स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक चाँदी का आभूषण; वै॰-निआ,-या ।

छपइब क्रि॰ स॰ छिपाना; वै॰-पाइब ।

छपकब क्रि० स० पतली छड़ी से मारना; जल्दी-जल्दी मारना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब ।

छपका सं० पुं० पतली, प्राय: हरी तोड़ी हुई छड़ी; स्त्री०-की ।

छपछप क्रि० वि० ऊपर तक (बर्तन के लिए), मुँह तक; पूरा-पूरा; प्र०-पाछप,-प्प ।

छपटब क्रि० अ० चिपकना, छाती लगना; प्रे० -टाइब,-उब; वै० छि-।

छपब क्रि० अ० छपना; छिपना, गुप्त रहना; प्रे० -पाइब,-उब,-पवाइब,-उब ।

छपया सं० पुं० जानवरों की एक संक्रामक बीमारी; -धरब, छपया हो जाना; यह पेट में सूजन के साथ प्रारंभ होती है ।

छपरा सं० पुं० छप्पर;-छाइब,-धरब; वि०-रहा (छप्पर का) ।

छपहार सं० पुं० छापनेवाला; टीका लगानेवाला ।

छपाइब क्रि० स० छपाना; छिपाना; वै०-उब; प्रे० -पवाइब,-उब ।

छपाई सं० स्त्री० छापने की मज़दूरी या मिहनत; -करब,-होब ।

छप्पन वि० पचास और छः।

छबनी सं० स्त्री० टोकरी ।

छबि सं० स्त्री० शोभा;-लागब,-देखबं (छबि देखत बनत है); सं० छवि ।

छबीला वि० पुं० सुंदर; छैल-,देखने में सुंदर; स्त्री०-लि,-ली; सं० छवि + ल, ली ।

छब्बिस वि० बीस और छः;-वाँ,-ईं; सं० षड्विंश ।

छब्बे वि० कहावत में प्रयुक्त ९० के आगे की एक काल्पनिक संख्या; कहा० जइसै नब्बे वइसै छब्बे, अर्थात् थोड़ी और अधिक आपत्ति में भेद ही क्या ?

छमब क्रि० स० क्षमा करना; वै० छि-; सं० क्षम्; दे० छिमा ।

छम्म सं० पुं० गहनों या अन्य वस्तुओं के गिरने की सुरीली आवाज़;-से, छमा-,ऐसी आवाज़ के साथ; ध्व० ।

छय सं० स्त्री० नाश;-मानें, नष्ट;-होब,-करब; सं० क्षय ।

छरकब क्रि० अ० (अन्न का) कड़ा हो जाना; वि० -कहा, ऐसा चना, मटर आदि; स्त्री०-ही ।

छरछरहटि क्रि० वि० निरंतर छरछर आवाज़ के साथ; ध्व० ।

छरछराब क्रि०अ० घाव पर नमक के लगने का सा दर्द होना ।

छरर-छरर क्रि० छरर-छरर आवाज़ के साथ; ध्व० ।

छरहर वि० पुं० लंबा एवं पतला (व्यक्ति); स्त्री० -रि; 'छर' (छड़ी) की भाँति; विशेषणों में 'हन' लगाकर "लगभग" का अर्थ प्रदर्शित किया जाता है; उसी 'हन' का यह 'हर' दूसरा रूप है जो 'गोरहर' (दे०) आदि वि० में लगता है । मोट मोटहन, छोट से छोटहन आदि बनते हैं ।

छराछर क्रि० वि० तेज़ी के साथ; निरंतर; प्र०-रं ।

छर्रा सं० पुं० छोटी गोली; स्त्री०-र्री ।

छल सं० पुं० धोका; कपट; वि०-ली,-लिआ,-या; वै०-ई ।

छलकब क्रि० अ० बाहर निकल पड़ना (द्रव या उसके पात्र का); प्रे०-काइब,-उब ।

छलरा सं० पुं० चमड़ा; स्त्री०-री, पतला या छोटा चमड़ा; क्रि० खलरिआइब; दे० खलिआइब, खलरा ।

छलिआ वि० पुं० छल करनेवाला; स्त्री०-नि ।

छली वि० पुं० छलवाला; स्त्री०-नि ।

छल्ला सं० पुं० बड़ी अँगूठी; कच्ची दीवार के ऊपर लगी पक्की ईंट की तह; स्त्री०-ल्ली;-ल्ली जोरब, -जोराइब ।

छवँकटई सं०स्त्री० विश्वासघात;-करब; वै०छौं-।

छवँकटहा वि० पुं० विश्वासघाती, छली; स्त्री० -ही; छवँ (क्षय?) + कंठ या कटहा (काटनेवाला); दे० छउँ-; वै० छौं-।

छवँछियाब क्रि० अ० परेशान होना; वै०-उँ-।

छहरब क्रि० अ० शोभित होना; प्रे०-राइब; छबि + हरब ।

छाँट सं० पुं० उलटी; कै;-करब,-होब, उलटी करना, होना ।

छाँटब क्रि० स० छाँटना, काट देना; साफ करना; प्रे० छँटाइब,-टवाइब,-उब; भा० छँटाई, छँटनी ।

छाँड़ब क्रि० स० छोड़ना, त्याग देना; प्रे० छोड़ाइब,-ड़वाइब ।

छाइब क्रि० स० (छप्पर आदि) छाना; प्रे० छवाइब, -उब; वै०-उ-;-छोंपब, रक्षा करना; प्रबंध करना ।

छाकब क्रि० स० खाना या पीना; खूब डटकर खाना या पीना; पं० छकना; वै० छ-।

छाजब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना; सं० सज् ।

छाता सं० पुं० छतरी;-देब,-लगाइब; सं० छत्र; स्त्री० छतुरी ।

छाती सं० स्त्री० सीना;-फुलाइब,-उँचवाइब;-फारब, -फाटब, दु:ख देना,-होना;-जुड़ाब, शान्ति मिलना; क्रि० छतिआइबें ।

छानब क्रि० स० छानना, पता लगाना, ढूँढ़ना; प्रे० छनवाइब,-उब; भा० छनाई,-चट; रस-, शर्बत-, घोड़ी-, घोड़ी के पैर बाँध देना ।

छान्हि सं० स्त्री० फूस की बनी छत;-छप्पर, फूस का मकान ।

छापखाना सं०पुं० छापाखाना; प्रेस; हिं० छाप + फा० खाना, घर ।

छापब क्रि० स० छापना; घेर लेना; प्रे० छपाइब, -पवाइब,-उब ।

छाया सं० स्त्री० छाँह; वि०-दार;-करब,-देब,-रहब ।

छार सं० पुं० राख, धूल;-होब,-करब; सं० क्षार, दे० जच्छार (जा० रही छार सिर मेलि) ।

छाला सं० पुं० चमड़ा; दे० छलरा, खलरा; मु० -निकोलब (दे०),-उधेरब ।

छाली सं० स्त्री० छाल, सुपाड़ी ।

छावा वि० पुं० छाया हुआ,-छोपा, तैयार (मकान)।

छाहँ सं० पुं० छाया, रक्षा, बचाव, सहायता, -करब,-देब, सं० छाया, फ़ा० सायः, अं० शेड ।

छिकनी सं० स्त्री० दे० नकछिकनी ।

छिंगुरी सं० स्त्री० कानी उँगली, कनिष्ठिका ।

छिआ विस्म० छीः;-छिआ, छीः-छीः;-थुआ, फजीता;-होब; क्रि० छिछिआइब, दोष निकालना; वै०-या ।

छिंकरब क्रि० अ० नाक साफ करना; दे० छींकि, छींकब; वै०-नकब ।

छिछिआइब क्रि० स० बुरा कहना, दोष निकालना; छिद्रान्वेषण करना; शब्द "छिः-छिः" कहना ।

छिछिला वि० जो गहरा या गंभीर न हो ।

छिटकब क्रि० अ० छिटक जाना, तितर-बितर हो जाना, प्रे०-काइब,-उब ।

छिटकवाह वि० पुं० दूर-दूर पड़ा हुआ; पृथक्;-क्रि० वि० दूर-दूर (बीज बोने के लिए) ।

छिटकाइब क्रि० स० अलग करना, दूर-दूर कर देना ।

छिटकी सं० स्त्री० बूँद का छोटा टुकड़ा जो उड़-कर पड़े; आँख में हुआ मोतियाबिंद;-परब; वै० -ट्टी;-ट्टा, छीटा ।

छिट्टा सं० पुं० बड़ा बूँद जो भूमि से उछलकर ऊपर आवे, स्त्री०-ट्टी;-परब; वै० छीटा ।

छिटाइब क्रि० स० बिखेरना; जल्दी-जल्दी बोवा देना; वै०-उब; छीटब (दे०); प्रे०-टवाइब, भा०-ई ।

छिटिकि-बिटिकि क्रि० वि० पृथक्-पृथक्; दूर-दूर ।

छिटुआ वि० बिखेरी हुई (बुवाई); क्रि० वि०बीजों को छीटकर (बोना) ।

छितनी सं० स्त्री० छोटी छिछली टोकरी (मिट्टी ढोने के लिए) ।

छितराइब क्रि० स० बिखेर देना; तितर-बितर कर देना; वै०-उब ।

छितराब क्रि० अ० बिखर जाना ।

छिन सं० पुं० थोड़ी देर;-भर, क्षण भर; सं० क्षण।

छिनकब दे० छिंकरब ।

छिनगाइब क्रि० स० छोटी-छोटी डालों को काट-कर साफ करना; प्रे०-गवाइब; सं० छिन्न से ।

छिनब क्रि० स० (सिल या जाँत) छिनना; रुखानी से खुरदरा करना; वै० छी-, प्रे०-नाइब,-उब ।

छिनरई सं० स्त्री० पर-पुरुष अथवा पर स्त्री गमन करने की आदत; वै०-पन; दे०-रा ।

छिनरहटि वि० स्त्री० छिनाला कराने की आदत वै०-ट ।

छिनरा वि० पुं० पर-स्त्री-गामी; स्त्री०-री, -नारि ।

छिनहा वि० पुं० जिसके मुँह पर माता के दाग हों; स्त्री०-ही ।

छिनाइब क्रि० स० छिनवाना; दे०-नब, प्रे० -नवाइब ।

छिनाई सं० स्त्री० छिनने की मजदूरी, पद्धति अथवा परिश्रम;-करब ।

छिनारि वि० स्त्री० पर-पुरुषगामिनी; दे०-नरा; वै०-नरी ।

छिनैआ सं० पुं० छिननेवाला; वै०-नवैआ ।

छिपब दे० छपच ।

छिबुलकी सं० स्त्री० छोटी सी चालाक स्त्री, धूर्त लड़की; यह घृ० प्रयोग में ही आता है ।

छिमा सं० स्त्री० क्षमा;-करब,-होब; यह शब्द कभी कभी पुं० में भी प्रयुक्त होता है । क्रि०-मब, छमब; वै० छ-; सं० ।

छिया सं० स्त्री० गंदी वस्तु; मैला;-थुआ, थुक्का-फ़जीता,-होब, निंदा होना;-करब ।

छिरकब क्रि० स० छिरकना; प्रे०-काइब,-कवाइब, -उब ।

छिलब क्रि० स० छिलना; दे० छोलब; प्रे०-लाइब, -लवाइब ।

छिहाइब क्रि० स० भरकर ठूँसना; खूब भरना; ऊपर तक भरना ।

छिहुली सं० स्त्री० छोटा सा पेड़; कभी-कभी "-ला" भी बोला जाता है; पलाश का पेड़; प्रायः गीतों में प्रयुक्त ।

छींकब क्रि० अ० छींकना;-पादब, किसी प्रकार पूरा करना; सं० छिक्का ।

छींकि सं० स्त्री० छींक;-आइब,-होब ।

छी वि० बो० छीः; वै० छिः,-या ।

छीछ सं० पुं० छिद्रान्वेषण;-पारब, दुरालोचना करना; ध्व० "छी-छी" करना ।

छीछालेदरि सं० स्त्री० दुर्गति;-होब,-करब ।

छीछिल वि० पुं० छिछला; स्त्री०-लि ।

छीजब क्रि० अ० कम हो जाना (वस्तु का) ।

छीटब क्रि० स० इधर-उधर फेंकना;-बोइब, बिखराना; मु० खूब बाँटना (रुपये का); प्रे० छिटाइब,-टवाइब ।

छीटा सं० पुं० दे० छिट्टा ।

छीनब दे० छिनब ।

छीया सं० पुं० गू; वै० छि-; प्रायः मातायें बच्चों को चेतावनी के लिए प्रयुक्त करती हैं ।

छीरा सं० पुं० कपड़े में फटने का चिन्ह;-परब, -होब; वै०-र ।

छीलब क्रि० स० छीलना; वै० छि-, प्रे० छिलाइब, -वाइब,-उब ।

छुअब क्रि० स० छूना; दान देना;-संकलपब, संकल्प करके दान देना; प्रे०-आइब,-वाइब ।

छुई-मुई सं० स्त्री० एक बूटी जिसे लाजवंती भी कहते हैं।
छुट्टा वि० अकेला; सादा (जैसे छुट्टा पान)।
छुट्टी सं० स्त्री० छुट्टी;-देब,-पाइब,-लेब,-होब।
छुतमिंतार सं० पुं० छूत का संदेह या भ्रम।
छुतिहर सं० पुं० वह घड़ा जिसका पानी पीने के काम न आवे; मु० भ्रष्ट व्यक्ति; छूति+हर।
छुतिहा वि० पुं० गंदा, छूतवाला, जूठा; स्त्री०-ही; छूति + हा
छुधा सं० स्त्री० भूख (पं०), ज़ोर की भूख; -व्यापब, ऐसी भूख लगना।
छुल्ल सं० पुं० किसी द्रव के तेजी से गिरने, उल-चने आदि की आवाज;-से।
छुहारा दे० छोहारा।
छूँछ वि० पुं० खाली; स्त्री०-छि, प्र०-छै, तुल० बोली अशुभ भरी शुभ छूँछी।
छूट सं० स्त्री० स्वतंत्रता, मुआफी (कर आदि से); -पाइब,-मिलब, बै०-टि।
छूटब क्रि० अ० छूटना; प्रे० छोड़ाइब।
छूति सं० स्त्री० छूत।
छूमंतर सं० पुं० झटपट चंगा कर देनेवाला मंत्र; छूकर ठीक कर देनेवाला रहस्य।
छूरा सं० पुं० छुरा; स्त्री०-री, चाकू।
छेंकब क्रि० स० रोकना; रोंकब-, अड़ंगा लगाना; प्रे०-काइब।
छेइहाइब क्रि० स० घायल करना; छेही (दे०) मारना; बै० छेहिआइब।
छेगड़ाब क्रि० अ० छेगड़ी (दे०) का गर्भिणी होना; सं० छाग।
छेगड़ी सं० स्त्री० बकरी; सं० छागी।
छेद सं० पुं० छिद्र; वि०-हा,-ही, छेदवाला; सं० छिद्र।
छेदनी सं० पुं० मौनी (दे०) बिनने का वह औज़ार जिससे छेद करके सींक पिरोया जाता है।
छेदब क्रि० स० छेद करना; मु० व्यंग बोलना; प्रे०-दाइब,-दवाइब।
छेपक सं० पुं० बाधा; किसी कथा के बीच में योंही जोड़ा हुआ प्रकरण;-मिटब, बाधा दूर होना; सं० क्षेपक।
छेम सं० पुं० कल्याण;-कुसल, कुसल-कहब,-पूछब; सं० क्षेम।
छेरी सं० स्त्री० बकरी।
छेहिआइब क्रि० स० काटना, कई जगह थोड़ा-थोड़ा काट देना; छेही लगाना।
छेही सं० स्त्री० पेड़ पर काटा या लगाया हुआ चिह्न;-मारब,-लगाइब; क्रि०-हिआइब,-इहाइब।
छैला सं० पुं० शौकीन, दिखावटी पुरुष; बै० छयल, -ल।
छोकड़ा सं० पुं० लड़का; स्त्री०-ड़ी।
छोट वि० पुं० छोटा; स्त्री०-टि;-हन, कुछ छोटा, -ट, छोटे-छोटे; भा०-टाई,-पन; बै०-का,-की।
छोड़ब क्रि० स० छोड़ना; प्रे०-ड़ाइब,-ड़वाइब, -उब।
छोत सं० पुं० गू या गोबर का उतना ढेर जो एक मनुष्य या पशु का हगा हो।
छोपब क्रि० स० कोई गीली वस्तु चारों ओर से लेपना; मु० रक्षा करना, पक्ष करना;प्रे०-पाइब, -पवाइब,-उब; सं० क्षेप्।
छोभ सं० पुं० दुःख पूर्ण क्रोध;-होब,-करब; सं० क्षोभ।
छोर सं० पुं० किनारा।
छोरब क्रि० स० छीनना; खोलना (बँधा हुआ गट्ठर; गाँठ आदि); प्रे०-राइब,-वाइब,-उब।
छोलन सं० पुं० वह अंश जो छीलने पर गिरे; व्यर्थ गया हुआ भाग; वि० नालायक, नीच।
छोलब क्रि० स० ऊपर का खोल उतारना; प्रे० -लाइब,-लवाइब।
छोह सं० पुं० ममता, प्रगाढ़ प्रेम;-करब; क्रि० -हाब।
छौंकटई दे० छउँ-, छवँ-,वि०-टहा।
छौंकब क्रि० स० बघारना;-बघारब, तरह तरह के पकवान तैयार करना; प्रे०-काइब,-उब।
छौना सं० पुं० सूअर का छोटा बच्चा।

# ज

जइस क्रि० वि० जैसा; बै०-सन; प्र०-सै,-सनै।
जइहा दे० जहिआ।
जई सं० स्त्री० जंगली जौ, छोटा पतला जौ।
जउ क्रि० वि० जो, यदि; बै० जौ
जकसन सं० पुं० जंकशन, आनंद का स्थान; रौनक की जगह; अं०।
जक्क सं० पुं० थोड़ा-सा पागलपन; झक्क; वि० -क्की, क्रि०-काब;-क्काब; हिं० झक्क।
जगब क्रि० अ० जगना; प्रे०-गाइब,-गवाइब, -उब; बै० जा-; सं० जागृ।
जगरनाथ सं० पुं० जगन्नाथ;-सामी,-स्वामी।
जगरूप सं० पुं० विवाहों में प्रयुक्त एक खंभ; काठे क-, जिसे कहीं-कहीं "मानिक खंभ" भी कहते हैं और जो ब्याह के मंडप में खड़ा किया जाता

है। मु॰ निर्जीव नेता, दीपक रखने का लकड़ी का।
जगहा सं॰ स्त्री॰ जगह, स्थान; संपत्ति; चौका; -देब, चौका लगाना; लघु॰-ही; फ़ा॰ जाय, बं॰ जायगा; यू॰ गगई।
जगाइब क्रि॰ स॰ जगाना; अमावश-,दिवाली के दिन मंत्रादि जगाना, भा॰-ई, जागने की क्रिया।
जगीर सं॰ स्त्री॰ जागीर;-दार।
जगैआ सं॰ पु॰ जगनेवाला; वै॰-या,-गवैआ।
जग्गि सं॰ स्त्री॰ यज्ञ;-करब,-ठानब; सं॰।
जङरइत वि॰ पु॰ ताकतवाला; दे॰ जाङर; वै॰ -रैत; जाङर + ऐत।
जङला सं॰ पुं॰ छोटी खिड़की; जँगला।
जचब क्रि॰ अ॰ देखने में सुंदर लगना; वै॰ जँ-; प्रे॰-चाँ-,-वाइब।
जच्छार वि॰ पु॰ रुष्ट; अत्यंत क्रुद्ध;-होब; यह शब्द "जरि छार" (जल कर राख) का बिगड़ा रूप है।
जजाति सं॰ स्त्री॰ सम्पत्ति; फ़ा॰ जायदाद; वि॰ -ती,-तिहा, जायदादवाला।
जज्ज सं॰ पुं॰ जज, न्यायाधीश; भा॰-जी; अं॰।
जटब क्रि॰ अ॰ ठगना, ठगा जाना; शायद 'जाट' से।
जटा सं॰ स्त्री॰ जटा;-रखाइब,-राखब।
जट्ट वि॰ पुं॰ उजड्ड; जाट की भाँति असभ्य; प्र॰-ट्टा।
जट्टी सं॰ स्त्री॰ स्टीमर से उतरने का स्थान जो लकड़ी रखकर बनाया जाता है; अं॰ जेटी, लै॰ जोसिओ, फेंकना।
जट्टाहिन वि॰ पुं॰ जले हुए गुड़ के स्वाद सा स्वाद-वाला;-आइब, ऐसा स्वाद या सुगंध देना।
जठानि दे॰ जेठ।
जड़काला सं॰ पुं॰ जाड़े की ऋतु;-वै॰-ड़ि-; जा॰ विरहकाल भयउ जड़काला; जाड़ +काल।
जड़इब क्रि॰ अ॰ जाड़ा लगना, ठंड पड़ना; प्रे॰ -वाइब।
जड़हन सं॰ पुं॰ अधिक पानी में होनेवाला अच्छा धान;-निआ, वह खेत जिसमें यह धान होता हो। वि॰-नाउ, जड़हनवाला (खेत)।
जड़ाऊ वि॰ जिसमें कुछ ऊपर से जड़ा हो।
जड़ाव क्रि॰ अ॰ ठंड या जाड़ा लगना; प्रे॰-ड़वाइब; जाड़ (दे॰) से; जड़ान, पुं॰ जिसे जाड़ा लगा हो; स्त्री॰-नि।
जड़ावरि सं॰ स्त्री॰ जाड़े के कपड़े।
जड़ि सं॰ स्त्री॰ दे॰ जरि।
जढ़ी वि॰ ज़िद करनेवाला; जो दूसरे की न माने; सं॰ जड़; वै॰ जि-; शायद 'जिरही' का विकृत रूप; दे॰ जिरह।
जतन सं॰ पुं॰ यत्न, तरकीब;-करब,-होब।
जतिगर वि॰ पुं॰ अच्छे प्रकार का (बीज, पौदा आदि); सं॰ जाति + गर।
जतिहा वि॰ पुं॰ जातिवाला; अच्छी जाति का; सं॰ जाति + हा।
जती सं॰ पु॰ यती; जोगी-, संन्यस्त व्यक्ति;-सती, अच्छे लोग।
जथा उचित क्रि॰ वि॰ यथोचित।
जद्-बद् वि॰ बुरा-भला (शब्द);-कहब,-बोलब, -बक्कब; फ़ा॰ बद्।
जन सं॰ पु॰ व्यक्ति; यह शब्द संख्यावाचक शब्दों या दूसरों के साथ प्रायः बोला जाता है; यक-, दुइ-, मेहरारू-, स्त्री-; बहुवचन में रूपांतर "जने" हो जाता है। स्त्री॰-नी; बहुवचन "जने" (दे॰)।
जनखा सं॰ पु॰ नपुंसक; भा॰-खई।
जनम सं॰ पु॰ जन्म;-करम, सारा जीवन,-देब, -होब;-भर, सारा जीवन;-जनम, कई जन्म तक; सं॰; वै॰-लम।
जनमब क्रि॰ अ॰ जन्म लेना; प्रे॰-माइब,-उब, उत्पन्न करना।
जनाइब क्रि॰ स॰ बतलाना, घोषित करना; प्रे॰ -नवाइब,-उब।
जनारव सं॰ पुं॰ जानवर, जीव; पहेली-"हाथ न गोड़ पहाड़ चढ़ा जात है, देखो त बरखंडी बाबा कौन जनारव जात है" (धुँआ); फ़ा॰ 'जानवर' का विपर्यय।
जनाही सं॰ स्त्री॰ व्यक्ति के हिसाब से चंदा;-लेब, -उगहब (दे॰); सं॰ जन + आही।
जनुका सं॰ पु॰ ज्ञाता, जाननेवाला (प्रायः मंत्र तंत्र का); वि॰ होशियार, भा॰-कई, प्र॰ जा-।
जने सं॰ पु॰ जन का बहुबचन अथवा आदर-प्रदर्शक रूप; कै-, कितने व्यक्ति ?;-जने, प्रत्येक व्यक्ति; दे॰ जन।
जनेव सं॰ पु॰ जनेऊ;-पहिरब;-कातब; सं॰ यज्ञोपवीत।
जनेवा सं॰ पुं॰ एक घास।
जनैया सं॰ पु॰ जाननेवाला; प्रे॰-नवैया।
जनौं क्रि॰ वि॰ शायद; जहाँ तक ज्ञात है या होता है; वै॰ जा-, म-; सं॰ ज्ञा (जानामि)।
जप सं॰ पु॰ जपने का क्रम; वै॰ जाप;-तप।
जपब क्रि॰ स॰ जपना; मु॰ नष्ट कर देना; प्रे॰ जापब (दे॰)-पाइब,-पवाइब,-उब; भा॰-पाई।
जपाट वि॰ बिलकुल;-मूर्ख,-बहिर।
जपान सं॰ पु॰ जापान; वि॰-नी, जापान का बना हुआ।
जपैया सं॰ पु॰ जपनेवाला; वै॰-आ,-पवैया।
जब क्रि॰ वि॰ जब;-जब, जब कभी; प्र॰-ब्बै, -ब्बौ;-बै;-कबौं,-कभौं, चाहे जब।
जबजब वि॰ पु॰ संदेहपूर्ण; मुँह-अस्पष्ट।
जबर वि॰ पु॰ हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली; स्त्री॰-रि;

प्र०-रा, भा०-ई;-नीबर, बड़ा छोटा, अर० जब्र, अत्याचार, क्रि० वि०-न, ज़बरदस्ती से; वै० जबुरन।
जबरदस्त वि० पुं० मज़बूत; भा०-स्ती,-करब, शक्ति का दुरुपयोग करना; फ़ा०
जबरा सं० पुं० छोटा पर चौड़ा डेहरा (दे० डेहरी) जिसमें नाज रखा जाता है और जो कच्ची मिट्टी का बना होता है।
जबराब क्रि० अ० मोटा या मज़बूत होना।
जबहा सं०पुं० शक्ति, अधिकार; अर० जबी (मुँह), जह्ब (सोना)।
जबान सं० स्त्री० जीभ, भाषा; यक-,एक शब्द, सूक्ष्म कथन; वि०-नी, मौखिक;...की-, अमुक के मुख से; फ़ा०।
जबाना सं० पुं० ज़माना, स्थिति;.फ़ा० ज़मानः।
जबाब सं० पुं० उत्तर;-देब,-करब;-लगाइब, कचहरी में किसी पक्ष का लिखित उत्तर देना; वि० -बी;-देह, उत्तरदायी,-देही, उत्तरदायित्व; फ़ा० -वाब।
जबुर वि० बुरा, भारस्वरूप;-लागब; क्रि० वि०-रन, दबाव में पड़कर; अर० ज़ब्र।
जबून वि० ख़राब।
जबै क्रि० वि० चाहे जब; प्र०-ब्बै।
जम सं० पुं० यम;-राज; प्र०-म्म;-दूत, यम के दूत,-पुरी,-दुतिआ, यमद्वितीया; सं० यम।
जमइका सं० जमाइका द्वीप जहाँ भारतीय मजदूर भेजे जाते थे।
जमइब क्रि० स० जमाना; दे०-माइब।
जमकब क्रि० अ० भली-भाँति स्थापित हो जाना; प्रे०-काइब,-उब।
जमघट सं० पुं० भीड़;-लागब,-करब; प्र०-टा सं० यम (यमराज के यहाँ की की भाँति होनेवाली भीड़)।
जमपर सं० पुं० स्त्रियों के पहनने का जंपर; वै० -फर।
जमब क्रि० अ० जम जाना, डटना; घोड़े का सीधा खड़ा हो जाना।
जमवड़ा सं० पुं० भीड़;-होब,-करब।
जमा सं० स्त्री० थाती; सुरक्षित आय; वि०-करब, -होब; फ़ा० जम्अ।
जमाइब क्रि० स० जमाना; प्रे०-मवाइब,-उब।
जमादार सं० पुं० पुलीस आदि विभागों में एक छोटा पद; भा०-री,-दराई; फ़ा जमअ+दार (एकत्र करनेवाला)।
जमाबंदी सं० स्त्री० कर या लगान की सूची; फ़ा०।
जमामर्द वि० पुं० मुस्तैद; फा० जवाँ+मर्द; भा० -र्दी,-र्दई।
जमालगोटा सं० पुं० एक दवा।
जमाव सं० पुं० भीड़; वै०-बा।
जमीकंद सं० पुं० सूरन; दे० कान; फ़ा० ज़मीं +कंद (मूल), भूमि के भीतर होनेवाला कंद।
जमीदार सं० पुं० भूमि का स्वामी; भा०-री, प्र०-रा।
जमीन सं० स्त्री० पृथ्वी, भूमि; फ़ा०।
जमुआ सं० पुं० जामुन का एक भेद; उसका छोटा पेड़;-रि,-रि, जमुए के पेड़ों का समूह या जंगल।
जम्म वि० पुं० स्थायी; न हटनेवाला;-होब, डटा रहना।
जय सं० स्त्री० जीत;-हो,-होय, ब्राह्मणों द्वारा दिया आशीर्वाद; वै० जै;-जयकार, जय जय की ध्वनि।
जयफर दे० जाय-।
जययद वि० बहुत बड़ा; शक्तिशाली व्यक्ति; अर० जैयद (अच्छा)।
जयरामजी सं० ब्राह्मणेतर जातियों का नमस्कार करने का शब्द; इसका संक्षेप रूप "राम राम" हो जाता है।
जरई सं० स्त्री० धान बोने की एक विधि;-करब, -होब, इसमें धान भिगोकर किसी बर्तन, बोरे आदि से ढक दिया जाता है और उसमें अंकुर निकल आते हैं।
जरखुराही सं० स्त्री० जड़ खोदने की क्रिया;-करब, ईर्ष्या करना; जरि + खुर (खुर से खोदना) + आही; वै०-रि-।
जरजर वि० पुं० निर्बल; सं० जर्जर।
जरतै वि० पुं० गर्मागर्म;-जर्त (जलता हुआ); दे० जरब।
जरदा सं० स्त्री० बढ़िया सुर्ती; फ़ा० ज़र्द (पीला) से, क्योंकि इसमें रंग डाला जाता है।
जरदी सं० स्त्री० पीलापन; फ़ा०।
जरनि सं० स्त्री० जलने की क्रिया; मानसिक कष्ट; -होब,-करब, ऐसा कष्ट देना; 'जरब' से।
जरब क्रि० अ० जलना; प्रे०-राइब,-उब,-वाइब।
जरबन सं० पुं० इजारबंद; फ़ा०।
जरबनी सं० पुं० जर्मनी; अं०; वि०-क,-बन कै।
जरलहा वि० पुं० जला हुआ; स्त्री०-ही; वै०-ल्ह-; -लाहिन, जिसमें जल जाने की सी दुर्गंध आती हो।
जरवना सं० पुं० जलाने के लिए लकड़ी, कंडा आदि; वै०-रौ-।
जरवनी वि०स्त्री० जलानेवाली (लकड़ी); वै०-रौ-।
जराइब क्रि० स० जलाना; प्रे०-रवाइब, वै०-उब।
जरामपेसा सं० पुं० अपराधशील जाति; फ़ा० जरायमपेशः।
जरि सं० स्त्री० जड़; मु० बात, मुख्य प्रश्न;-करब, -धरब; वि०-दार,-वार।
जरिआब क्रि०अ० (फल का) गुठलीदार हो जाना (विशेष कर आम का); वै०-लि-।

जरिकरा सं० पुं० जड़ के पास का भाग (गन्ने आदि का); जरि+कर (का); बै०-का-।
जरी वि० पुं० सोने का, सुनहला; फ़ा० ज़र (सोना)।
जरीब सं० स्त्री० नाप का एक प्रसिद्ध पैमाना।
जरीबाना सं० पुं० जुर्माना।
जरूर क्रि० वि० अवश्य; वि०-री, आवश्यक, सं० -ति, आवश्यकता; फ़ा०।
जरैआ सं० पुं० जलनेवाला; प्रे०-रवैआ।
जरौनी वि० स्त्री० जलाने की (लकड़ी); दे० जर-वनी,-ना (सं०)।
जर्राह् सं० पुं० हकीम जो चीड़फाड़ करे;-ही, ऐसा पेशा;-करब।
जल सं० पुं० पानी; गंगा-,-पान।
जलकर सं० पुं० पानीवाला भाग (गाँव का); -बनकर, तालाब, जंगल आदि; ये दोनों शब्द कचहरी के कागज़ों में प्रयुक्त होते हैं।
जलखरि सं० स्त्री० जाल की बनी थैली जिसमें पेड़ पर से फल तोड़े जाते हैं; जाल+खर।
जलजल वि० पुं० कमज़ोर, पुराना; सं० जर्जर; प्र० जुलजुल।
जलथल सं० पुं० पानी से भरा हुआ लंबा चौड़ा पृथ्वी का भाग; सं०-स्थल।
जलम सं० पुं० जन्म;-भर,-लेब,-देब,-होब; क्रि० -ब (जन्म लेना); सं०; दे० जनम।
जलमय वि० पानी से भरा हुआ; स्त्री०-यी।
जलूस सं० पुं० जुलूस;-निकरब,-निकारब; अर० जुलूस।
जल्द सं० पुं० गर्मी;-करब (पेट आदि में खाद्य का गर्म करना);-बाजी,-बजई, शीघ्रता।
जल्दी सं० स्त्री० शीघ्रता; क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक; -जल्दी, बहुत शीघ्र।
जल्लहा वि० पुं० दे० जरलहा।
जल्लाद वि० निर्दय, सख्त; भा०-द्रदई,-पन।
जव सं० पुं० जौ;-केराई, जौ और मटर मिला हुआ;-जव आगर, एक एक से बढ़कर चतुर;-भर, तनिक सा।
जवन वि० पु० जो; स्त्री०-नि; दे० जौन।
जवनार सं० पुं० किसी देवता को चढ़ाया हुआ दूध चावल;-देब,-चढ़ाइब; दे० जेव-।
जवरा सं० पुं० नाज जो नाई, लुहार आदि को प्रतिवर्ष दिया जाता है; सं० 'यव' से;-देब,-पाइब, -लेब।
जवरिहा वि० पुं० जवार (दे०) का, पड़ोसी; फ़ा० जवार+इहा;-भाई,-मनई।
जवलाई सं०पुं० जूलाई; बै० जौ-।
जवहर सं० पुं० गुण, भेद;-खुलब, भेद ज्ञात होना,-खोलब; प्र०-इ; बै० जौ-।
जवाई सं० स्त्री० जाने की क्रिया, पद्धति आदि; अवाई-, आना-जाना।
जवान सं० पुं० युवक, सिपाही; वि० युवा, स्त्री० -नि; भा०-नी; फ़ा० जवाँ, सं० युवान्; दे० जुआन।
जवार सं०पुं० गाँव का पड़ोस; कुरुब-, आसपास; अर०; फा० कुर्ब; वि०-री।
जवासा सं० पुं० एक जंगली पौदा जो वर्षा में सूख जाता है; तुल० अर्क जवास पात बिनु भयऊ।
जस सं० पुं० नाम; वि०-सी, यशस्वी; अप-,बद-नामी; सं०।
जस वि० पुं० जैसा, स्त्री०-सि; वै० ज्य-, जइस, जे-; प्र०-जस, जैसा-जैसा,-तस, जैसे-तैसे।
जसस क्रि० वि० जैसे जैसे, ज्यों ज्यों।
जसूस सं० पुं० जासूस;-लागब; भा०-सी,-करब; बै०-सुसई,-सुसपन; अर० जासूस।
जसोदा सं० स्त्री० यशोदा; बै०-द्रा,-जी; सं० यशोदा।
जसोमति सं० स्त्री० यशोदा;-माता; प्राय: गीतों में प्रयुक्त।
जहँतहँ क्रि० वि० कहीं-कहीं, जहाँ-तहाँ।
जहँड़ाइब क्रि० स० खतरे में डालना, नष्ट करना, खो देना।
जहकब क्रि० अ० ज़ोर ज़ोर से बकना, व्यर्थ की बातें करना।
जहन्नुम सं० पुं० नरक; नाश;-म जाब, नष्ट हो जाना; अर०।
जहमति सं०स्त्री० आफत, परेशानी; ज़हमत; वि० -हा, झगड़ालू,-ती, जिसमें आफ़त हो सके। -करब,-होब।
जहर सं० पुं० विष;-देब,-खाब;-करब, शब्दों द्वारा विषमय बना देना;-उगिलब,-बोलब।
जहलि सं० स्त्री० जेल; वि०-ली, जेल काटा हुआ, अं० जेल।
जहाँ क्रि० वि० जहाँ; प्र०-हैं।
जहिआ क्रि० वि० जब।
जहुआ वि० मूर्ख, अज्ञान; क्रि०-ब, भूल जाना।
जाँच सं० स्त्री० जाँच करने की क्रिया;-परताल, पूरी पूछताछ;-करब; क्रि०-ब।
जाँचब क्रि० स० पता लगाना, निश्चय करना; प्रे० जँचाइब,-वाइब।
जाँत सं०पुं० पीसने का जाँता; स्त्री० जँतिया,-ती; बै०-ता।
जाउरि सं० स्त्री० खीर।
जाकड़ वि० पुं० अधिक; निश्चित मूल्य से अधिक; -परब,-देब,-लेब।
जाकर दे० जेकर।
जाखि सं० स्त्री० यक्षिणी; कुश की बनी छोटी सी यक्षिणी की गुड़िया जो अनाज की डेहरी (दे०) में डाल दी जाती है। विश्वास यह है कि जहाँ यह होगी अनाज घटेगा नहीं।

जाग सं० पुं० जगने का क्रम; जागरण।
जागब क्रि० अ० जगना, चेतना; प्रे० जगाइब, -वाइब; सं० जाग्र।
जाजिम सं० पुं० कपड़े का लंबा-चौड़ा बिछौना।
जाट सं० पुं० पश्चिम की एक जाति के लोग।
जाड़ सं० पुं० जाड़ा, ठंडक;-होब,-लागब।
जाड़ी वि० जारी;-करब,-होब; होलिया-,हुलिया-, विज्ञापन।
जाति सं० स्त्री० जाति;-पाँति,-बिरादरी; वि० जतिहा, जतिगर, अच्छी जातिवाला; सं०।
जाद वि० अधिक; वै०-दा,-दें; फा० ज्याद:।
जादू सं०पुं० जादू;-टोना,-मंतर;-करब; वि० जदुहा, -ही; फा० (जादू करनेवाला व्यक्ति)।
जान सं० स्त्री० प्राण;-वर, प्राणी; फा०।
जानकार वि० पुं० चतुर, विज्ञ; स्त्री०-रि; भा० -री; वै०-नु-।
जानब क्रि० स० जानना; प्रे० जनाइब,-नवाइब, -उब, कहलाना, बतलाना; सं० ज्ञा।
जाना सं० पुं० जान जाने की क्रिया, विशेषत: रात को चोरों के आने के संबंध में;-परब।
जानी सं० स्त्री० प्रिया, प्रेमिका; प्राय: गीतों में प्रयुक्त; फा० 'जान' से (जिसमें प्रेमी का हृदय अथवा प्राण लगा हो) या 'जानात:' से।
जानुका दे० जतुका।
जानौं क्रि० वि० शायद; मैं जानता हूँ, मेरा अनुमान है; सं० ज्ञा; दे० जनौं।
जाप सं० पुं० मंत्र का पाठ;-करब,-होब; कि०-ब, किसी का भूत, पिशाच आदि जाप द्वारा दूसरे पर डाल देना।
जाफ सं० पुं० बेहोशी का क्षणिक रूप;-आइब; फ़ा० ज़ोफ़।
जाब क्रि० अ० जाना, भीतर घुसना; आइब-, -आइब।
जाबा सं० पुं० जानवरों के मुँह पर बाँधने का रस्सी का जाल;-देब,-लगाइब; मु० मुँह माँ-देब, बोलना बंद कर देना।
जाबिर वि० पुं० प्रभावशाली, शक्तिवाला; भा० जबिरई; अर०।
जाम सं० पुं० भीड़, रुकावट;-होब,-धरब; अं० जैम।
जामब क्रि० अ० जमना, प्रे० जमाइब,-मवाइब, -उब।
जामा सं० पुं० ब्याह में दुलहे के पहनने का ऊपर का विशेष कपड़ा; जोड़ा-; अर० जाम: (कपड़ा)।
जामिन सं० पुं० जमानत लेनेवाला; भा० जमिनई।
जामुनि सं० स्त्री० जामुन।
जायँ वि० उचित, बे-, बेजा, अनुचित; फ़ा० जा; वै० जाहँ,-हिं।
जायज वि० पुं० उचित;-होब; जायज़।
जायफर सं० पुं० जायफल; वै०जय-, जै-।
जायल वि० नष्ट, समाप्त (अधिकार आदि के लिए); यह कानूनी शब्द है। अर०।
जायस सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जहाँ महाकवि जायसी जन्मे थे और जो रायबरेली जिले में है।
जायाँ वि० नष्ट, बरबाद;-करब,-होब; ज़ाय:।
जारन सं० पुं० जला हुआ भाग।
जारब क्रि० स० जलाना; प्रे० जराइब,-रवाइब, -उब; सं० ज्वालय।
जाल सं० पुं० जाल;-करब,-फैलाइब; वि०-लिया, -ली, नकली;-फडरेब; अर० जअल।
जाला सं० पुं० (मकड़ी का) जाला; पेड़ों की छाल में पड़ा जाला; आँख का एक रोग;-होब, -परब।
जालिआ वि० पुं० जाल करनेवाला।
जालिम वि० पुं० अत्याचारी; भा० जलिमई; अर०।
जाली सं० स्त्री० झँझरी;-दार,-काटब।
जावत वि० चाहे जितना; सं० यावत।
जावन सं० पुं० दूध में डालने के लिए थोड़ा दही जो जमाने के वास्ते डाला जाता है; वै०-मन; -डारब,-छोड़ब,-देब।
जासूस दे० जसूस।
जाहिर वि०प्रगट, स्पष्ट; फा०;-होब,-करब; प्र०-री।
जाहिल वि० मूर्ख;-जपट्ट, महामूर्ख; अर०।
जिंदा वि० पुं० जीवित; स्त्री०-दी;-करब,-रहब; -होब; फ़ा० ज़िंद:।
जिअब क्रि० अ० जीना; प्रे०-आइब,-उब; मरब -,-खाब, किसी प्रकार जीवन व्यतीत करना। वै० -य-, प्र० जी-।
जिअरा सं० पुं० प्राण, जी; वै०-उ; प्राय: कविता एवं गीत में प्रयुक्त।
जिउ सं० पुं० प्राण; शक्ति;-जाब,-देब,-लेब,-लागब -लैकै भागब; कच्चे अन्न की तौल से उसके भुन जाने के बाद उसी की कम तौल का अंतर जिसे अन्न के प्राण की तौल कहते हैं। भुनने पर उतना "जिउ" चला जाता है। सं० जीवितं; दुइ-सें, गर्भिणी, वै० दोजिया।
जिउका सं०स्त्री० रोजी, जीविका; सं०;-लेब।
जिउकिआ सं० पुं० जीवित प्राणियों को पकड़ने या शिकार करनेवाला।
जिउतिआ सं० स्त्री० क्वार के नवरात्रों में पुत्रवती स्त्रियों द्वारा पहना एक धागा जो साल भर सुरक्षित रखा जाता है।
जिउधर सं० पुं० जीवधारी; वै०-धारी।
जिकिर सं० स्त्री० उल्लेख, जिक्र;-करब,-होब; प्र०-रा।
जिजिआ सं० स्त्री० बहिन।
जिठउत दे० जेठउत।
जिठानि दे० जे-।

जितवाइब क्रि० स० जिताना; 'जीतब' का प्रे० रूप; वै०-उब।

जिद्दि सं० स्त्री० ज़िद, हठ;-करब,-ठानब; वि०-द्दी, हठी; क्रि०-द्दाब;-दिआब, हठ करना।

जिनगी सं० स्त्री० जीवन;-भर; प्र०-न्न-; ज़िंदगी; वै०-गानी।

जिन्न सं० पुं० प्रेत;-लागब; वै०-न्द।

जिब्भा सं० स्त्री० जीभ; "खाली-कौने काम?" सं० जिह्वा; दे० जीभि।

जिब्भी सं० स्त्री० जीभ साफ करने का धातु का बना एक धनुषाकार औज़ार; वै० जीभी।

जिमि क्रि० वि० जैसे; ज्यों।

जिम्मा सं० पुं० उत्तरदायित्व;-लेब,-उठाइब; वि० -म्मेदार; अर० ज़िम्मः।

जियत क्रि० वि० जीते हुए; अपने-, वनके-, तोहरे-हमरे-।

जियब दे० जिअब।

जियरा सं० पुं० हृदय; जी; प्राय: गीतों में प्रयुक्त; वै० हि-।

जिरवानी सं० स्त्री० चावल और दही का एक पकवान जिसमें ज़ीरा डाला जाता है।

जिरह सं० स्त्री० तर्क-वितर्क;-करब,-लेब (अदालत का),-होब; अर० जिर्ह; वि०-ही।

जिराब क्रि० अ० (मक्के आदि का) ज़ीरा लेना, फूल लेना, दे० जीरा।

जिलेबी सं० स्त्री० जलेबी; पुं०-बा (हास्यात्मक एवं घृ० रूप)।

जिव दे० जिउ।

जिवरी दे० जेवरी।

जिवहत्या सं० स्त्री० जीवहत्या;-करब,-होब; सं०; वै०-उ-।

जिहिन सं० स्त्री० बुद्धि, समझ; वै०-इन, जेह-; ज़ेह्न;-म आइब,-बैठब,-समाब; वि०-दार।

जीअब दे० जिअब।

जीजा सं० पुं० बहनोई; स्त्री०-जी, बहिन।

जीतब क्रि० अ० बढ़ जाना (रोग का), जीतना; स०जीत लेना; प्रे०जिताइब,-उब,-तवाइब; सं०जी।

जीता वि० पुं० (वह ब्याह) जिसमें पहली विवाहिता स्त्री जीवित हो; वै० जियता।

जीभि सं० स्त्री० जीभ;-सवादब, स्वाद के लिए खाना,-दागब, चीख लेना (भोजन, मिठाई आदि); सं० जिह्वा; हास्य या घृ० व्यवहार में "जीभादाई" (लालची की बड़ी जीभ) कहते हैं।

जीरा सं० पुं० ज़ीरा; फूल; स्त्री०-री; काली जीरी, एक जंगली जीरा जो काला होता और फोड़ों पर दवा के काम आता है।-लेब, फूलना।

जीव सं० पुं० आत्मा, प्राण; पं०;-हत्या।

जुअठा दे० जुआठा।

जुआँ सं० पुं० सिर में पड़ जानेवाले छोटे-छोटे जीव;-परब; दे० ढीलौ।

जुआ सं० पुं० जूआ;-खेलब,-होब; वि०-री,-ड़ी; प्र० जू- सं० द्यूत।

जुआठा सं० पुं० लकड़ी का ढाँचा जिसमें दो बैल नधते हैं; वै०-अ-, जोठा; सं० युज्।

जुआन वि० पुं० युवक, हट्टा-कट्टा; स्त्री०-नि, भा० -नी; वै०-वा।

जुआर सं० स्त्री० मक्का, ज्वार; वै०-री (ज्वार की फसल)।

जुइ संबो० गाय एवं भैंस को खड़ा करने या पुचकारने का शब्द; प्राय: प्रत्येक जानवर के लिए इस प्रकार के अलग-अलग शब्द हैं।

जुइना सं० पुं० पुआल, मूजा आदि की बनी लंबी पतली चटाई जो पानी रोकने या बोझ बाँधने आदि में सहायक होती है;-बनइब, बान्हब; सं० युज (जोड़ना, बाँधना)।

जुइनि सं० स्त्री० योनि (प्राय: पशुओं के लिए); सं०।

जुकुती सं० स्त्री० युक्ति, तरकीब; वै०-गुति,-क्ती, सं०।

जुग सं० पुं० युग, विलंब;-लगाइब,-बिताइब; प्र० -ग्ग,-ग्गि; सं०।

जुगइब दे० जोगइब।

जुगुनी सं० स्त्री० जुगनू।

जुग्ग-जुग्ग क्रि० वि० धीरे-धीरे (चमकना, जलना); -करब,-होब; प्राय: दीये के लिए; अनु०; प्र० -गुर-गुर।

जुजबी वि० बिरला, कोई;-मनई; वै०-जु-।

जुझवाइब क्रि० स० लड़ा देना, जुझाना; दे० 'जूझब' जिसका प्रे० रूप यह है; वै०-उब; सं० युध् (योधय)।

जुटब क्रि० अ० जुटना, एकत्र होना; प्रे०-टाइब, -उब; भा०-टानि, एकत्र होने की क्रिया, जमाव (व्यक्तियों का)।

जुट्टा सं० पुं० छोटा समूह (घास आदि का); स्त्री० -टी, कान (दे०) की जूरी (दे०)।

जुठहा दे०-ठिहा।

जुठारब क्रि० स० जूठा करना; मुँह-, थोड़ा सा खा लेना; प्रे०-ठरवाइब,-उब।

जुठिहा वि० पुं० जूठा; स्त्री०-ही,-ठही; वै०-ठहा; जूठ+हा।

जुड़वाइब क्रि० स० ठंडा करना, सुख देना; वै-उब।

जुड़ाब क्रि० अ० ठंडा होना, शांति पाना; दे० जूड़।

जुड़िहा वि० पुं० जिसे जूड़ी (दे०) आती हो; स्त्री० -ही।

जुतिआइब क्रि० स० जूते से मारना; प्रे०-वाइब, -उब।

जुदा वि० पुं० अलग;-करब,-होब; स्त्री०-दी; वै० -दाँ; फ़ा० जुदः।

जुद्ध सं० पुं० झगड़ा, ज़ोर की लड़ाई;-करब,-होब; वै०-द्धि (स्त्री०); सं०।

जुनवधब क्रि० अ० अपने (खाने, पीने आदि के) समय पर भूख, प्यास आदि का अनुभव करना; दे० जूनि ।

जुन्हरी सं० स्त्री० मक्का; वै० जो-, ज्व-; वि० -रिहा, जिसमें मक्का बोई जाय या जहाँ वह फसल हो ।

जुन्हाई सं० स्त्री० चाँदनी; कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; वै० जो-;सं० ज्योत्स्ना ।

जुबली दे० जिबुली ।

जुमिला वि० सारा, कुल; मिन-, सब मिलाकर; अ० जुम्ल: ।

जुरका सं० पुं० घास या मूजा (दे०) का एक मुट्ठी भर टुकड़ा ।

जुरतै क्रि० वि० तुरंत ही; वै०-तैं,-तं; सं० त्वरितं ।

जुरब क्रि० अ० जुटना, अँटना, प्राप्त होना ।

जुरवाना सं० पुं० जुर्माना, दंड;-करब,-देब,-होब; वै० जरी-,-ल-; फ़ा० जुर्मान: ।

जुरति सं० स्त्री० हिम्मत, जुरअत;-होब,-करब; वै० जो- ।

जुर्राब सं० पुं० मोजा ।

जुलाब सं० पुं० दस्त होने की दवा;-लेब,-देब; प्र० -ल्ला- ।

जुलुम सं०पुं० जुर्म, अपराध, अत्याचार; अर० जुर्म; इस शब्द में "जुल्म"(निर्दय व्यवहार) भी सम्मिलित है ।-होब,-करब ।

जुवा सं० पुं० जुआठा (दे०) ।

जुवान दे०-आन; भा०-वनई ।

जुसगर वि० पुं० रसेदार; जूस (दे०)+गर ।

जुहवाइब क्रि० स० एकत्र करना, बटोरना (वस्तुओं का); वै०-उब ।

जुहाब क्रि० अ० इकट्ठा हो पाना, जुटना, अँटना; प्रे०-हाइब,-हवाइब,-उब ।

जुहार सं० पुं० नमस्कार; सलाम; क्रि०-ब; केवल कविता में प्रयुक्त ।

जूँठ सं० पुं० जूठा; वि० स्त्री०-ठि; क्रि० जुठारब; वै०-न ।

जूझब क्रि० अ० लड़ना; लड़ कर मर जाना; प्रे० जुझाइब; सं० युध् ।

जूड़ वि०पुं० ठंडा, तृप्त;स्त्री०-ड़ि; क्रि०-जुड़ाब; क्रि० वि०-ड़े, ठंडे में, छाया में, ठंडा होने पर ।

जूड़ी सं० स्त्री० ठंड देकर आनेवाला ज्वर;-आइब, -होब ।

जूता सं० पुं० जूता; स्त्री० जूती, क्रि० जुतिआइब (जूते से मारना) ।

जूनि सं० स्त्री० समय, निश्चित समय (खाने-पीने आदि का);-होब; क्रि० जुनवधब (दे०) ।

जूरा सं० पुं० सिर के बालों का बँधा जूड़ा;-बान्हब, -खोलब ।

जूरी सं० स्त्री० कान (दे०) के बँधे नये पत्तों की पकौड़ी; 'जुरब' से ।

जूवा दे० जुआठा ।

जूस सं० पुं० वह संख्या जो २ से विभाजित हो जाय; 'ताख' का उलटा; जूस-ताख (दे० ताख); सं० युग ।

जूस सं० पुं० रस; वि० जुसगर; अं० जुइस ।

जेंइब क्रि० अ० भोजन करना; प्रे०-वाँइब,-उब ।

जे स० जो;-केय, जो कोई,-केऊ, कोई भी; सं० यः ।

जेई स० जो भी; सं० यः ।

जेई वि० सर्व० जोही; चहै-, चाहे जो;-केव, जो कोई; सं० यः ।

जेकर सर्व० जिसका; स्त्री-रि; प्र०-हि-,-का ।

जेठ वि० बड़ा; सं० पति का बड़ा भाई; वैशाख के बाद का महीना; असाढ़ी, जेठ एवं असाढ़ का समय;-उत, जेठ का पुत्र.-ठानि, जेठ की स्त्री ।

जेठीमधु सं० स्त्री० मुलेठी; यह नाम इसलिए दिया गया जान पड़ता है कि मुलेठी जेठ के महीने में होती है ।

जेतना वि० पुं० जितना; स्त्री०-नी; वै०-रा,-री, ज्य- ।

जेतिक वि० चाहे जितना; दे० केतिक; वै० ज्य- ।

जेथुआ स० जिस (वस्तु); वै०-थिआ,-थी ।

जेब सं० पुं० थैली; वै०-बा,-बि; त्रि०-बी, छोटा जो जेब में रखा जा सके ।

जेल सं० स्त्री० कैदखाना; दे० जेहलि; अं० ।

जेवनार सं० पुं० सुन्दर भोजन; भोजन का स्थान; 'जेंइब' (दे०) से ।

जेवर सं० स्त्री० आभूषण; वै०-रि; ज़े- ।

जेवरी सं० स्त्री० रस्सी; वै० ज्यो-, ज्य-, जि- ।

जेस वि० पुं० जैसा; स्त्री०-सि;-कुछ,-तेस; वै० ज्य-, जइ-; प्र० जइसन, जेसस (जैसे-जैसे) ।

जेह स० जिस, जो; वै०-हि;-का,-कर; 'जे' (दे०) का प्र० रूप ।

जेहनि दे० जिहिन; वै०-न ।

जेहलि सं० स्त्री० जेल; वि०-ली, जो कई बार जेल गया हो; अं० जेल ।

जै वि० जितने, जितनी;-ठूँ,-ठें,-ठउर,-ठवर; संख्यावाचक वि०में 'ठवर' लगाकर निश्चित संख्या प्रकट की जाती है ।

जोंकि सं० स्त्री० जोंक;-लागब,-लगाइब ।

जोइ सं० स्त्री० पत्नी; वै०-य; सं० युग्म (दो) ।

जोखब क्रि० स० तौलना; प्रे०-खाइब,-उब,-खवाइब; नापब-, नाप-जोख करब ।

जोखरब क्रि० स० (बैल) नाधना; प्रे०-राइब, -उब,-रवाइब,-उब; वै० ज्व-; सं० युज् (योज्) ।

जोखिम सं० पुं० खतरा;-होब,-रहब; वै०-खम ।

जोग सं० पुं० टोटका (स्त्रियों का);-करब,-कराइब; मौका, संयोग;-बैठब,-लागब,-लगाइब;-जुगुति, तरकीब ।

जोगइब क्रि० स० बचाना, सुरक्षित रखना; प्रे० -गवाइब; तुल० दीप बाति जस''' ।

जोगिन सं० स्त्री० महिला योगी;-होब,-बनब; वै० -नि;-नी, मुहूर्त विशेष जिसमें "जोगिनी दाहिने" रहती है।

जोगी सं० पुं० योगी; एक जाति और उसके व्यक्ति जो गेरुआ वस्त्र पहनकर और गीत गाते सारंगी बजाते भीख माँगते हैं।

जोगीड़ा सं० पुं० एक प्रकार का नाच जिसमें कई लोग भाग लेते हैं; वै० ज्व-।

जोट सं० पुं० जोड़ा, जोड़ी; वै०-टा,-टी; यक-टा, दुइ-, एक जोड़ा, दो-; सं० युग।

जोठा सं० पुं० दे० जुआठा।

जोड़ सं० पुं० जोड़ा; बराबरी का व्यक्ति;-मिलब, -मिलाइब;-खाब, उपयुक्त जोड़ा (संभोग के लिए) पाना; जोड़ने का क्रम; स्त्री०-ड़ी।

जोत सं० स्त्री० (किसान के) जोते हुए खेत का परिमाण; यक हर कै-,दुइ...; वि०-तारा, जोतनेवाला; वै०-ति।

जोतब क्रि० स० जोतना, दुहराते रहना (बात); प्रे०-ताइब,-तवाइब,-उब।

जोतानि सं० स्त्री० जोते जाने की योग्यता (खेत या भूमि की); वै०-तनी,-नि, ज्व-।

जोति सं० स्त्री० ज्योति; सं०।

जोतिस सं० पुं० ज्योतिष; सं०;-सी।

जोती सं० स्त्री० पतली रस्सी जिससे तराजू के पलड़े लटकते हैं।

जोधा सं० पुं० योद्धा; बहादुर व्यक्ति; सं०।

जोध्धाजी सं० पुं० अयोध्याजी; वै० जुध्याजी, -ध्धाजी; सं०।

जोन्हरी सं० स्त्री० मक्का, भुट्टा;-क बालि, भुट्टे की बाली।

जोबन सं० पुं० कुच, छाती; जवानी; गीतों में '-नां' हो जाता है; सं० यौवन।

जोम सं० पुं० जोश, रोब;-से,-मँ।

जोय सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी; प्रायः गीतों में प्रयुक्त, जिनमें कभी-कभी रूप "जोइया, ज्वइया तथा जोइ" हो जाता है। सं० योषित्; कहा० "न तोहरे मर्द न हमरे जोय, अस कुछ करौ कि लरिका होय।"

जोर सं० पुं० शक्ति, बल;-लागब,-लगाइब,-पाइब, -देब,-मारब; क्रि० वि०-रें; वि०-गर;-जुलुम, प्रभाव; फ़ा०।

जोरब क्रि० स० जोड़ना, परवा करना; प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब; सं० योज्।

जोलहटिया सं० स्त्री० जुलाहों के रहने का भाग; वै० ज्व-; दे०-हा।

जोलहपन सं० पुं० जुलाहे का व्यवहार, स्वभाव आदि;-करब।

जोलहा सं० पुं० जुलाहा; स्त्री०-हिनि।

जोवा सं० पुं० बारी (पानी चलाने आदि की); -लागब, अपनी पारी पर काम करने आ जाना; -री, जोवा का साथी; सं० योज्।

जोस सं० पुं० उत्साह;-आइब; क्रि०-साब, जोश में आना; वि०-हा,-सीला,-इल; फ़ा०-श (गर्मी), सं० उष्ण।

जौ सं० पुं० अन्न विशेष;-केराई, जौ तथा मटर मिला हुआ;-जौ आगर (दे० जव); क्रि० वि० जो, यदि।

जौन वि० सर्व० जो;-जौन, जो-जो; प्र०-नै, जो ही, सं० यः।

जौलाई दे० जवलाई।

जौहर दे० जवहर।

# झ

झँकोर सं० पुं० झोका; वै०-रा; जा० फागुन पवन झकोरा बहा।

झँझरी सं० स्त्री० लकड़ी अथवा पत्थर में कटी बेल आदि;-काटब; वि०-दार।

झँटिहा वि० पुं० झिकझिक करनेवाला, बदमाश; स्त्री०-ही।

झँडुल्ली वि० छोटा, छोटी।

झँटोर वि० पुं० वही अर्थ जो "झँटिहा" का है; "झाँटि" से; ऐसे बालों की तरह उलझा हुआ; स्त्री०-रि; भा०-ई,-पन।

झँडूल सं० पुं० बालक जिसके सिर पर बड़े-बड़े बाल हों (प्यार का शब्द); स्त्री०-ली, प्र०-ल्ला, -ल्ली; गीतों में प्रयुक्त।

झँसाई सं० स्त्री० नीचता; दे० झास।

झउँझउँ दे० झवँ-।

झउँसब क्रि० स० सीधे आग में भूनना; खड़े भूनना; मु० फटकारना, मुँह पर गाली देना; प्रे०-साइब,-उब; वि०-हा (दे०)।

झउँसहा वि० पुं० निंदनीय; स्त्री०-ही; यह प्रायः स्त्रियों द्वारा गाली देने के काम आता है।

झउआ सं० पुं० टोकरा; स्त्री०-ली; वै०-वा, झौ-।

झकझक सं० पुं० व्यर्थ शब्दों का विनिमय; बकवाद (दो ओर से);-करब,-होब; प्र०-का।

झकसा सं० पुं० झंझट;-करब,-उठब,-होब।

झकड़ी सं० स्त्री० निरंतर और धीरे-धीरे होनेवाली वर्षा;-करब,-होब।

झकाब दे० झाक।

झख सं० पुं० मछली; मु०-मारब, पछताना; कुछ न कर सकना, मुँह ताकते रहना ( निराशा में ); क्रि० झंखब (दे०)।

झगरा सं० पुं० झगड़ा;-करब,-लगाइब,-मोल लेब; वि०-ऊ;-कल्ला, तरह-तरह के झगड़े।

झझक सं० स्त्री० थोड़ा-सा पागलपन; क्रि०-ब, पागलपन की-सी बातें करना, व्यर्थ बकना; प्रे० -काइब; वि०-हा,-ही।

झझकोरब दे० झिझकोरब।

झटपट क्रि० वि० बहुत जल्द; प्र०-ट्ट-ट्ट, झटा-पट।

झट्टैं क्रि० वि० तुरंत ही; प्र०-ट्टै।

झड़ी सं० स्त्री० वर्षा का ताँता;-लागब।

झनक सं० स्त्री० दर्द का शेषांश, धीमी आवाज़, मिज़ाज की थोड़ी तेज़ी या गर्मी; क्रि०-ब, दर्द करना, आवाज़ करना।

झनकाइब क्रि० स० नाराज़ कर देना; वै० -उब।

झन्ना सं० पुं० नाज झारने (दे० झारब) की बड़ी चलनी।

झपकी सं० स्त्री० हल्की नींद;-लागब,-लेब।

झपसा दे० झापस।

झबिआ सं० स्त्री० छोटा झाबा; वै०-या।

झब्बा सं० पुं० फूलदार आभूषण;-लागब,-लगाइब।

झमाझम सं० पुं० पानी में कूदने या पानी भरने की निरंतर आवाज़; क्रि० वि० ऐसी आवाज़ के साथ।

झम्मू सं० पु० पानी में गिरने या जल्दी कूद पड़ने की आवाज़;-से,-दें (कूदब)।

झरखर वि० पुं० (मौसम) जिसमें पानी बरसना बंद हो जाय;-होब,-करब।

झरङ्हा वि० पुं० (अन्न) जो कच्चा ही सूख गया हो और बीज के काम का न हो, विशेषकर चना।

झरन सं० पुं० झरा हुआ टुकड़ा;-झुरन, बचा-खुचा भाग।

झरब क्रि० अ० झड़ना, गिर जाना; प्रे० झारब, झराइब,-उब,-रवाइब; जा० तरिवर झरहिं, झरहिं बन ढाखा।

झरबइरि सं० स्त्री० छोटी-छोटी जंगली बेर; वै० -री,-रिया।

झरवता सं० पुं० (फसल का) अंतिम समय या अंश;-होब; 'झरब' से; वै०-रौता।

झरसब क्रि० अ० लपट से थोड़ा जल जना; प्रे० -साइब,-उब।

झरहा वि० पुं० झार (दे०) वाला, शीघ्र रुष्ट हो जानेवाला; स्त्री०-ही।

झरा-झुरा वि० पुं० बचा हुआ, गिरा पड़ा (भोजन आदि)।

झराहिन वि० पुं० मिर्च की-सी जिसमें झाँक हो; -आइब; दे० झाँक, झार; झार+हिन।

झरोखा सं० पुं० छोटी खिड़की।

झरौता दे० झरवता।

झलकब क्रि० अ० झलकना, चमकना; प्रे०-काइब, मल या माँजकर चमका देना।

झलका सं० पुं० फफोला;-परब, फफोला हो जाना; मु०-बोलब, बहुत लगनेवाली बात बोलना।

झलकारब क्रि० स० थोड़े से घी या तेल में सेंक लेना; प्रे०-कराइब,-करवाइब।

झलकुट्टी सं० स्त्री काँटेदार झाड़ियों का समूह; दे० झालि; झालि+कुटी।

झल-झल क्रि० वि० चमक के साथ; प्र० -लाझल्ल।

झलमल क्रि० वि० भूमि पर घसिटता हुआ (कपड़ा); प्र०-लामल्ल।

झलरा सं० पुं० मूली एवं सरसों के पत्तों को एक साथ कूटकर लहसुन आदि डालकर बनाई हुई चटनी;-करब,-होब, थका डालना या थक जाना (चिंताओं के कारण)।

झलुआ सं० पुं० झूला;-झूलब; मु०-होब, (व्यक्ति का) परेशान हो जाना, दुबला-पतला होना।

झलूसा सं० पुं० दिखावा, तमाशा; अर० जुलूस।

झल्लाब क्रि० अ० बहुत क्रोध करना, क्रुद्ध होना।

झवँ-झवँ सं० पुं० झगड़े की आवाज़;-करब, चिल्लाना; वै० झाँ-।

झवँब क्रि० अ० कम हो जाना, नष्ट होते जाना; वै०-वाब।

झवाँझार वि० परेशान;-होब।

झहरब क्रि० अ० ऊपर उठकर उड़ते या हिलते रहना; प्रे०-राइब,-उब।

झहराइब क्रि० स० ऊपर उठाकर झाड़ देना; वै० -उब।

झाँ सं० बच्चों के खेलते समय एक दूसरे को बुलाने का शब्द; इसे कहते समय मुँह टेढ़ा करके दूसरे की ओर झाँकते हैं। "झाँकब" से।

झाँक सं० स्त्री० विशेष प्रकार की गंध;-आइब; वै०-कि, क्रि० झँकाब, ऐसी गंध देना।

झाँकब क्रि० अ० झाँकना;-झूँकब, चुपके से देखना; प्रे०-झँकाइब,-उब।

झाँकी सं० स्त्री० सुंदर दृश्य; देवता की सजी मूर्ति;-देखब।

झाँखर सं० पुं० काँटेदार पतली-पतली झाड़ी; झंझट।

झाँझ सं० पुं० एक छोटा बाजा; वै०-झि,-करताल, जो दोनों साथ बजाये जाते हैं।

झाँटि सं० स्त्री० गुप्त स्थान के बाल;-उखारब, कुछ न कर सकना,-न देब, कुछ भी न देना;-जरब, बहुत ही बुरा लगना;-यस, ज़रा सा, बहुत छोटा।

झाँटू वि० पुं० झंझटी; दे० झँटिहा; स्त्री० में भी यह इसी रूप में प्रयुक्त होता है।

झाँप सं० पुं० ऊपर से ढकने का कपड़ा; क्रि०-ब, ढक देना; दे० ढाँपब।

झाँवरि सं० स्त्री० बेहोशी का झोंका;-आइब; क्रि० झँवरियाब, बेहोश सा हो जाना।

झाँस वि० पुं० हल्का, बुरा, नीच; स्त्री०-सि; भा० झँसाई।

झाँसा सं० पुं० धोखा;-देब;-पट्टी,-पढ़ाइब।

झाईं सं० स्त्री० हल्की परछाईं;-परब।

झाऊ सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ जो नदियों के किनारे बालू में होता है; कहा० "जहाँ बाभन तहाँ नाऊ, जहाँ गंगा तहाँ झाऊ"।

झाग सं० पुं० फेना, मुँह का सफेद पानी; साबुन आदि का गाज;-निकरब,-देब।

झाड़न सं० पुं० कपड़ा जिससे कुछ झाड़ा जाय।

झाड़-फन्नूस सं० पुं० दिखावटी रोशनी के सामान; अर०फ़ानूस।

झाड़ा सं० पुं० टट्टी,-फिरब; वै०-ड़े।

झाबा सं० पुं० बड़ा टोकरा; स्त्री० झबिया, -आ।

झाम सं० पुं० कुआँ साफ़ करने की लोहे की मशीन;-लगाइब।

झायँ-झायँ क्रि० वि० व्यर्थ (बकना);-करब; वै० -वँ-वँ।

झार सं० पुं० द्वेषपूर्ण क्रोध; झुँझलाहट; कड़ुआहट की बू; वि० झरहा,-ही; क्रि० वि०-न-रें, दूसरे की ईर्ष्या से।

झारब क्रि०स० झाड़ना; कुआँ, तालाब आदि साफ़ करना; मु० चुरा लेना, खूब डटकर खाना; प्रे० झरवाइब,-उब।

झारा सं० पुं० तलाशी;-लेब,-देब।

झालरि सं० स्त्री० झालर।

झालि सं० स्त्री० घने जंगल का टुकड़ा; काँटेदार झाड़ी; मु० फँसा हुआ मामला, झंझट; हिं० झाड़ी।

झावाँ सं० पुं० ईंट जो पककर काली हो गई हो; क्रि० झँवाब।

झिंगवा सं० पुं० झींगा; एक प्रकार की मछली; वै०-इ-।

झिकझिक सं०पुं० ज़िद, बकवास, व्यर्थ का विवाद; -करब,-होब।

झिझकब क्रि० अ० संकोच करना, हिचकना।

झिझकारब क्रि० स० झटक देना; हटा देना; वै० -ट-।

झिझकोरब क्रि० स० हाथ से पकड़कर हिलाना; भा०-रा।

झिटकब क्रि० स० झिटकना; मु० चुरा लेना; प्रे० -काइब,-कवाइब,-उब; भा०-कवाई।

झिटकारब दे०-झ-।

झिड़कब क्रि० स० थोड़ा सा डाँटना; भा०-की।

झिनकई वि० स्त्री० छोटी; वै०-की; दे० झीन; प्र० -नी।

झिनकऊ वि० पुं० छोटा (चाचा बेटा आदि); 'झिनका' का आदर प्रदर्शक रूप; यह शब्द केवल व्यक्तियों के लिए ही प्रयुक्त होता है। प्र०-नू, वै०-कू।

झिनझिनाइब क्रि० स० दाँतों से पकड़कर इधर उधर करना; काटने की कोशिश करना।

झिनवाँ सं० पुं० महीन चावल; छोटे-छोटे चावल।

झिमिर-झिमिर क्रि०वि० निरंतर (बरसते रहना); वै० झिम-झिम।

झिलँगा सं० पुं० खाट जिसकी बिनावट पुरानी हो गई हो।

झिसिआब क्रि० अ० छोटी-छोटी बूँदें पड़ना; दे० झीसी; वै०-याब।

झींक सं० पुं० अनाज जो एक मूठी में चक्की या जाँत में डाला जाय; वै०-का।

झींकब दे० झंखब; शायद इसका संबंध "झींक" से हो, अर्थात् थोड़ा-थोड़ा पीसते रहना, थकना आदि।

झींगुर सं० पुं० छोटा कीड़ा जो कपड़ों में छेद कर देता है।

झीटब क्रि० स० चुरा लेना; दे० झिटकब।

झीन वि० पुं० बारीक, छोटा; स्त्री०-नि; कबीर -"झीनी झीनी बीनी चादरिया"।

झीरी सं० स्त्री० बारीक चूरा।

झीलि सं० स्त्री० झील।

झीसा सं० पुं० छोटी-छोटी पतली बूँदों का ताँता; -परब; क्रि० झिसियाब,-आब; स्त्री०-सी।

झुँकब क्रि० अ० झुकना; प्रे०-काइब,-उब।

झुँट्ठा वि० बड़ा झूठा; स्त्री०-ट्ठी।

झुठना वि० पुं० झूठा (व्यक्ति); स्त्री०-नी, भा०-नई,-नाई।

झुन्ना सं० पुं० बहुत पतला कपड़ा।

झुरंडा वि० पुं० सूखा हुआ; बहुत दुबला-पतला; स्त्री०-ठी; 'झुराब' से।

झुरकब क्रि० अ० (हवा का) धीरे-धीरे चलना या बहना।

झुरगर वि० पुं० कुछ सूखा हुआ; अधिक सूखा; स्त्री०-रि; झूर+गर; वै०-खर।

झुरझुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (वायु के बहने के लिए); कविता में 'झुरिझुरि'; प्र०-रुर-रुर।

झुरवाइब क्रि० स० सुखाना।

झुरान वि० पुं० सूखा; स्त्री०-नि;-लकड़ी, बहुत दुबला पतला (व्यक्ति)।

झुराब क्रि० अ० सूखना; मु० बिना खाये-पिये पड़ा रहना; प्रे०-रवाइब,-उब; "झूर" से [जा० हौं झुराँव बिछुरी मोरि जोरी।]

झुरिझुरि दे० झुरझुर (झुरिझुरि बहति बयरिया पवन रस बोलै हो...गीत)।

झुलनी सं० स्त्री० नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण जो झूलता है। 'झूलब' से।

झुलफुलार सं० पुं० सूर्योदय के पूर्व का समय; -होब,-रहब; प्र०-रै; वै० झल-।

झुलवा सं० पुं० स्त्रियों का अँगिया;-पहिरब; स्त्री० -लिआ, छोटी बच्ची का झुलवा।

झुलसब क्रि० अ० गर्मी से जल जाना; प्रे० -साइब,-सवाइब,-उब।

झुलाइब क्रि० स० झुलाना, लटकाना; मु० (दूसरे का) काम न करना, तंग करना; वै०-उब।

झुलिया दे० झुलवा।

झुल्ल सं० पुं० हाथी के ऊपर से लटकनेवाली रंगीन नक्काशीदार चद्दर।

झूँखी सं० स्त्री० पतली-पतली लकड़ी; मु०-यस, बहुत दुबला-पतला; स्त्री०-यसि।

झूँखा सं० पुं० पतली काँटेदार झाड़ियों का ढेर; स्त्री०-खी।

झूँठ सं०पुं० झूठ; वि० असत्य; प्र०- ठै,-ट्ठे (क्रि० वि०) भा०झुँठाई।

झूमब क्रि० अ० झूमब; प्रे० झुमाइब,-उब।

झूर वि० पुं० सूखा; स्त्री०-रि, प्र०-रै; क्रि० झुराब; -झार, बिना भोजन या वस्त्र का वेतन; क्रि०वि० -रें-रें, सूखे मार्ग से;-रै झूर,बिना पैसे के;-रै जवाब, सूखा उत्तर।

झूरा सं० पुं० सूखा; समय जब पानी न बरसे; -परब,-रेहनि, निरंतर सूखा ही सूखा स्थान अथवा समय।

झूलब क्रि०अ०झूलना; प्रे०झुलाइब,-लवाइब,-उब।

झूला सं०पुं० झूला;-परब,-झूलब,-झुलाइब,-डारब।

झेंप सं० पुं० लज्जा;-मिटाइब; क्रि०-ब, झेंपना, शर्म करना; वि०-पू, लजानेवाला।

झेलब क्रि० स० झेलना, सहना; प्रे०-लाइब,-उब।

झोंक सं० पुं० झोंका; देवी को चढ़ाने के लिए लाल धागे का बना छोटा झूला; कहारों द्वारा भार ढोने का रस्सी और बाँस का बना।

झोंकब क्रि० स० झोंकना; मु० बोलते या खाते जाना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब।

झोंझ सं० स्त्री० घोंसला; वै०-झि।

झोंझर सं० पुं० पोल, खाली स्थान (रजाई, गद्दे आदि में); क्रि०-राब; वै०-झि।

झोंटा सं० पुं० सिर के बड़े-बड़े बाल (प्राय: स्त्रियों के); बुरी तरह रखे हुए बाल; स्त्री०-टी, थोड़े से बड़े बालों का समूह (घृ०); क्रि०-टिआइब, एकत्र पकड़ कर उखाड़ना (बालों की भाँति)।

झोरब क्रि० स० डंडे या ढेले से फल तोड़ना; प्रे० -राइब,-रवाइब,-उब; भा०-राई।

झोरा सं० पुं० झोला; स्त्री०-री; क्रि०-रिआइब, झोले में रख लेना, ले जाना आदि।

झोला सं० पुं० ठंड से उत्पन्न लकवा;-मारब, ऐसा लकवा लगना; जा० विरह पवन मोहिं मारै झोला।

झोहर वि० पुं० आवश्यकता से बड़ा या लंबा (कपड़ा); झक-, खूब लंबा-चौड़ा; क्रि०-राब, सीने में बड़ा या चौड़ा हो जाना।

झौं-झौं सं० स्त्री० झगड़े की आवाज -करब,-होब; क्रि०-झिआब, चिल्लाना, व्यर्थ बोलना।

झौंसब दे० झउँसब।

झौवा दे० झउआ।

# ट

टंक सं० पुं० तोला;-भर, तोला भर।

टंकार सं० पुं० टनकार, ज़ोर की आवाज़।

टंकी सं० स्त्री० (तेल या पानी का) हौज़; अं० टैंक।

टंच वि० पुं० तैयार;-रहब,-होब,-करब।

टंट-घंट सं० पुं० (पूजा पाठ का) दिखावा;-करब; टंट = टन टन + घंट = घंटा बजाना।

टंटनाब क्रि० अ० टन-टन बजना; (शरीर) ठीक हो जाना; प्रे०-नाइब।

टंटा सं०पुं० झगड़ा, झंझट;-बखेड़ा, झगरा-;-करब, -होब; वि०-टहा।

टँड़ाब क्रि० अ० टाँड़ा (दे०) लगकर खराब होना।

टँड़िआ सं० स्त्री० हाथ के ऊपरी भाग में पहनने का गहना;-पछेला; कलाई पर पहने जानेवाले आभूषण को पछेला कहते हैं।

टइनी सं० स्त्री० टहनी; वै०-टै-,-न्नि।

टकटोरब क्रि० स० तलाश करना, अँधेरे में ढूँढ़ना; हाथ पसारकर ढूँढ़ना।

टकसार सं० स्त्री० टकसाल, ख़ज़ाना।

टका सं० पुं० दो पैसा; पैसा, द्रव्य; वि०-यस, कोरा (जवाब)।

टकुआ दे० टे-; सं० तर्कुः।

टक्कर सं० पुं० टक्कर,-लागब, क्रि० टकराब, -राइब।

टघरब क्रि० अ० पिघलना; प्रे०-रवाइब,-राइब, वै० टे-।

टक्री सं० स्त्री० टाँग; क्रि०-रिआइब, टाँग पकड़

कर उठा लेना; वै० टे-, पुं० टक्करा (घृ०);-पसारब, अनधिकार चेष्टा करना।

टक्वाइब क्रि० स० टँगवाना, फाँसी दिलाना; वै० -उब,-ङाइब।

टच्च सं० पुं० कसर, ऐब;-परब, ऐब निकलना; वै० त-।

टट सं० पुं० तट; सं० तट।

टटकै वि० ताजा ही; दे० टाटक।

टढ़ुआब दे० टेढ़आब।

टढ़ुई दे० टेढ़ुई।

टनकब क्रि० अ० दर्द करना, थोड़ा-थोड़ा दर्द होना (सिर में); प्रे०-काइब; वै० ठ-।

टपंखा वि० पुं० जिसकी आँख में टेढ़ापन हो; स्त्री० -खी।

टपकब क्रि० अ० टपकना; प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब।

टपका सं० पुं० पककर गिरा हुआ आम; वि० डाल का पका (आम)।

टपटप क्रि० वि० निरंतर, बूँद बूँद (चूना); प्र० -पाटप्प।

टपर-टपर क्रि० वि० गुस्ताखी से और जल्दी-जल्दी (बोलना); दे० टेपर।

टपवाइब क्रि० स० 'टापब' का प्रे० रूप; वै० -पाइब।

टम-टम सं० स्त्री० छोटी घोड़ागाड़ी।

टमाटर सं० पुं० प्रसिद्ध फल; अं० टोमैटो; वै० टि-।

टयरा सं० पुं० हाथी के खाने के लिए पत्ते समेत पीपल, बरगद आदि की डालें;-काटब,-लाइब, -लादब; वै० टै-।

टयरी सं० स्त्री० छोटी-छोटी डालें; वै०-इ-,टै-।

टरकब क्रि० अ० हट जाना, चल देना, चुपके से भागना; प्रे०-काइब,-उब, टालना, हटाना।

टरब क्रि० अ० हट जाना; टलना; चुरा जाना, प्रे० टारब,-वाइब।

टर-टर क्रि० वि० ज़ोर-ज़ोर से और गुस्ताखी के साथ (बोलना); क्रि०-राँब।

टर्रा वि० अकड़कर गुस्ताखी से बोलनेवाला; क्रि० -ब, अकड़ जाना, बेहूदा बातें करना; स्त्री०-र्री, यद्यपि मूल शब्द दोनों लिंगों में बोला जाता है। "टर्र-टर्र" से।

टसकब क्रि० अ० खिसकना, थोड़ा सा भी हटना; प्रे०-काइब,-उब; 'टस्स' (दे०) से।

टसाइब क्रि० स० बर्तन के छेद को बंद कराना; वै०-सवाइब, टँ-।

टस्स सं० पुं० कल्पित स्थान;-होब, हटना;-से मस होब, जरा सा हिलना।

टहकब क्रि० अ० पिघलना, प्रे०-काइब,-उब, -कवाइब,-उब।

टहरब क्रि० अ० टहलना; प्रे०-राइब,-उब, हटाना, इधर-उधर करना, चुरा लेना;-वाइब, -उब।

टहल सं० स्त्री० सेवा, काम, परिश्रम;-करब।

टहलुआ सं० पुं० नौकर; वै०-लू; स्त्री०-लुई।

टाँकब क्रि० स० टाँका लगाना; सीना; प्रे०टँकाइब, -कवाइब,-उब; भा० टँकाई।

टाँका सं० पुं० टाँका;-लागब,-मारब,-लगाइब; स्त्री० -की, हल्का टाँका; लिखावट; बरम्हा क-, ब्रह्मा का लिखा (भाग्य)।

टाँगब क्रि० स० टाँगना, लटकाना; जिउ-, हृदय में चिंता उत्पन्न करना; प्रे० टँगाइब,-उब,-वाइब, -उब; वै० टाङब।

टाँगा सं० पुं० ताँगा।

टाँगुन सं० स्त्री० एक अन्न जिसका भात बनता है; वै०-नि,-ङु-।

टाँच सं० पुं० नस का तन जाना;-लागब, ऐसा तनना; नि०-ब, चुरा लेना।

टाँड़ सं० पुं० डंडे से गुल्ली (दे०) पर की हुई चोट;-मारब।

टाँड़ना सं० स्त्री० ताड़ना, दुःख, निरंतर यातना; -करब,-देब,-होब; सं० ताड् (मारना)।

टाँड़ा सं० पुं० लकड़ी में छेद करके रहनेवाला सफ़ेद मोटा कीड़ा;-लागब; क्रि० टँड़ाब (दे०)।

टाँय-टाँय सं० स्त्री० व्यर्थ की और बार-बार कही हुई बात;-करब,-होब।

टाँस सं० स्त्री० नस का तनाव;-लागब।

टाँसब क्रि० स० बर्तन का छेद बंद करना; धातु के बर्तनों की मरम्मत करना; प्रे० टँसाइब,-वाइब, -उब, भा० टँसाई।

टाघन सं० पुं० छोटा सा जवान घोड़ा।

टाट सं० पुं० टाट।

टाटी सं० स्त्री० टट्टी (जो फूस आदि की बनती है);-बान्हब,-देब, द्वार बंद करना।

टाठी सं० स्त्री० थाली; सं० स्थाली।

टाप सं० पुं० टाप; क्रि० टापब;-सहब, बातें सुनना, सहन करना, रोब मानना।

टापब क्रि० अ० टापना, फिरते रहना; प्रे० टपाइब, -पवाइब,-उब।

टापू सं० पुं० द्वीप; मु०-मेँ, बहुत दूर।

टार-टूर सं० पुं० स्थगित करने की इच्छा;-करब, -होब; वै०-मटूर,-मटोर।

टारब क्रि० स० टालना, हटाना, स्थगित करना; प्रे० टरवाइब,-उब।

टिउआ सं० पुं० स्त्रियों की बिदाई का निश्चित दिन;-जाब,-आइब,-धरब।

टिउका दे० टेउका।

टिकइत वि० पुं० टीकाधारी, मालिक; स्त्री०-तिनि; वै०-कैत।

टिकठ सं० पुं० टिकट;-लेब;-लागब,-लगाइब; वै० टी-, टिकस, टिक्कस, टैक्स।

टिकठी सं० स्त्री० मुर्दा ले जाने की अर्थी;-निकरब, श्मशान जाना, स्त्रियों द्वारा कहा शाप । उ० तोर टिकठी निकरै ! तू श्मशान जा !

टिकब क्रि० अ० टिकना, ठहरना, रहना; प्रे० -कइब -काइब,-उब,-कवाइब,-उब ।

टिकरी सं० स्त्री० छोटी सी रोटी; पुं०-करा,-कर, मोटी रोटी ।

टिकानि सं० स्त्री० टिकने की आदत, परम्परा; -करब,-परब; वै०-ई; दे० टिकब ।

टिकिआ सं० स्त्री० टिकिया ।

टिकुई सं० स्त्री० सूत कातने की तकली;-कढ़ाइब, प्रारंभ करना; सं० तर्कुः ।

टिकुरई सं० भा० समतल होने का गुण; दे० टीकुर ।

टिकुली सं० स्त्री० टिकली; पुं०-ला,-ल्ला (घृ०); वि०-लिहा,-ही; सं० त्रिकुटी ।

टिकोरा सं० पुं० छोटे-छोटे आम के फल;-यस (आँखि) सुंदर, स्वच्छ; स्त्री०-री ।

टिचन वि० ठीक, तैयार;-होब,-करब ।

टिटकोरब क्रि० अ० मज़ा करना, हर्ष मनाना ।

टिटिहिरी सं० स्त्री० एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है; पुं०-रा,-हा; मु०-यस,-क टाँगि, दुबला पतला;-होब, दुबला हो जाना; सं० टिटिभ ।

टिड़िकब क्रि० अ० व्यंग बोलना, कटाक्ष करना ।

टिनुकब क्रि अ० रूठ जाना (प्रायः बच्चों का); प्रे०-काइब,-उब, वै० टिन्नाब ।

टिपना सं० पुं० टिप्पणी, नोट; जन्म, विवाह आदि के संबंध के विवरण; स्त्री०-नी; क्रि० टीपब; सं० ।

टिपवाँस सं० स्त्री० आडंबर;-करब,-लगाइब ।

टिप्पा सं० पुं० लिंग;-लेब, कुछ न पाना ।

टिमटिमाब क्रि० अ० धीरे-धीरे जलना, बुझने के लगभग होना ।

टिमाटर दे० टमाटर ।

टिर-टिर सं० पुं० व्यर्थ के शब्द;-करब; वै०-रिर-रिर ।

टिहटब क्रि० अ० ठहरना, स्थायी होना; सं० तिष्ठ ।

टिहुँकब क्रि० अ० चिल्लाना, रोना ।

टिहुँका सं० पुं० चिल्लाने या रोने की आवाज; -होब,-बाजब ।

टीं टीं सं० स्त्री० टींटीं की आवाज़; धीरे-धीरे की हुई दुःख की आवाज;-करब,-होब ।

टीकठ सं० पुं० टिकट; दे० टिकठ ।

टीकब क्रि० स० टीका (तिलक) लगाना (व्यक्ति को), चिह्न करना (बर्तनों पर); प्रे० टिकाइब, -कवाइब,-उब ।

टीकमटीक सं० पुं० अनावश्यक आडंबर, टीम-टाम आदि ।

टीकस सं० पुं० टैक्स;-देब,-लागब,-लगाइब ।

टीका सं० पुं० (माथे में लगा) टीका; (प्लेग आदि का) टीका;-देब,-लगाइब,-लेब,-लगवाइब ।

टीकाधारी सं० पुं० टीकावाला; वि० जिसे टीका लगाया गया हो;-राजा, जिसका तिलक किया गया हो; बिन-क राजा, अत्यंत धनाढ्य एवं प्रभावशाली ।

टीकुर वि० पुं० सूखा मैदान; टिकुरें क्रि० वि० सूखी भूमि पर ।

टीपब क्रि० स० उड़ा देना; चुरा लेना; प्रे० टिपाइब,-पवाइब; नोट करना, लिख लेना ।

टीस सं० स्त्री० दर्द, ज़ोर का दर्द; क्रि०-ब, दर्द करना ।

टीहा सं० पुं० स्थान, ठिकाना; दे० ठेहा; सं० तिष्ठ ।

टुकरा सं० पुं० टुकड़ा;-माँगब, भीख माँगना, -देब; वि०-रहा, दरिद्र, भा०-राही, भिखमँगाई, -करब ।

टुकारब क्रि० स० 'तू' कह कर पुकारना या संबोधन करना ।

टुकुर-टुकुर क्रि० वि० धीरे-धीरे और बिना कुछ बोले (देखते रहना); प्र०-कुर ।

टुङवाइब दे० टूङब ।

टुच्चा वि० पुं० नीच; स्त्री०-ची भा०-च्चई, -पन ।

टुटब क्रि० अ० टूटना, वै० टू-, प्रे० तूरब, तुराइब, तुरवाइब ।

टुटरूटूँ वि० रद्दी, किसी तरह काम देनेवाला; वै० टुरू- ।

टुटहा वि० पुं० टूटा हुआ; स्त्री०-ही ।

टुड़ँहा वि० टूँड़ (दे०) वाला ।

टूँड़ सं० पुं० (गेहूँ या जौ की बाल का) पतला काँटा ।

टूँड़नि सं० स्त्री० मुंडन की तरह का एक संस्कार; -करब,-होब ।

टूँसी सं० पुं० पतला टुकड़ा;-यस, दुबला-पतला (व्यक्ति) ।

टूक सं० पुं० टुकड़ा, हिस्सा; वै०-का; आधी-टूका, थोड़ा-बहुत (भोजन); टूक-टूक होब; नष्ट हो जाना ।

टूङब क्रि० स० धीरे-धीरे खाना; एक-एक दाना उठाकर खाना; प्रे० टुङाइब,-ङवाइब ।

टूट वि० पुं० टूटा; स्त्री०-टि ।

टूटन सं० पुं० टूटा भाग, टुकड़ा ।

टूटब क्रि० अ० टूटना; प्रे० तूरब; दे० टुटब ।

टेंट सं० पुं० अंटी; क्रि०-टिआइब, टेंट में रख लेना, ले लेना ।

टेंसू सं० पुं० प्रसिद्ध फूल ।

टेइब क्रि० स० हाथ लगाना, मदद करना, नीचे से सहारा देना; वै०-उब ।

टेउका सं॰ पुं॰ लकड़ी जो किसी दूसरी चीज़ को नीचे गिरने से बचावे;-लागब,-लगाइब,-देब; स्त्री॰ -की।

टेक सं॰ स्त्री॰ गीत का अंतिम पद जो बार-बार गाया जाय; प्रतिज्ञा, हठ; यकटेकी, हठीला;-की, अपनी बात पर अड़ा रहनेवाला; अपन-।

टेकुआ सं॰ पुं॰ तकुआ; वै॰ ट्य-;सं॰ तर्कुः स्त्री॰ टिकुई (दे॰)।

टेघरब क्रि॰ अ॰ पिघलना; प्रे॰-राइब,-उब; वै॰ ट्य-।

टेङना सं॰ पुं॰ एक प्रकार की मछली जो ऊपर तैरती है और डंडे से जल्दी मर जाती है;-यस (छटपटाब, मरब), जल्दी ही; वै॰ ट्य-।

टेङारा सं॰ पुं॰ कुल्हाड़ा; स्त्री॰-री; वै॰ ट्य-; -लागब,-गिरब, आफ़त आना।

टेटाव क्रि॰ अ॰ अकड़ना (व्यक्ति का); (लिंग का) खड़ा होना, सख्त होना; प्रे॰-वाइब।

टेढ़ वि॰ पुं॰ टेढ़ा, स्त्री॰-ढ़ि; क्रि॰-ढ़ाब;-वा, छोटा डंडा जिसका सिरा टेढ़ा हो; स्त्री॰-ढ़िआ; टेढ़-बाँकुर, टेढ़ा-मेढ़ा, जैसा-तैसा।

टेढ़िआ सं॰ स्त्री॰ छड़ी; वै॰-या,-ढुई।

टेढ़ुआ सं॰ पुं॰ डण्डा; वै॰-ढ़वा; क्रि॰-ब, अकड़ना, मिज़ाज करना; स्त्री॰-ई, छोटा डंडा।

टेपर वि॰पुं॰ गुस्ताख़, मुँहलगा; स्त्री॰-रि; भा॰-ई।

टेम सं॰ स्त्री॰ जलती हुई बत्ती; वै॰-मि।

टेर सं॰ स्त्री॰ पुकार; क्रि॰-ब, पुकारना।

टेव सं॰ स्त्री॰ आदत;-परब,-लगाइब।

टेवा दे॰ टिउआ।

टैनी दे॰ टइनी।

टैप सं॰ पुं॰ टाइप;-करब,-होब;-बाबू, टाइपिस्ट; अं॰ टाइप।

टैरा दे॰ टयरा।

टोंक सं॰ स्त्री॰ रोक; कि॰-ब, टोंकना।

टोइब क्रि॰ स॰ हाथ लगाकर देखना; मु॰ दिल की बात की थाह लेना; प्रे॰-वाइब, वै॰-उब।

टोइयाँ सं॰ पुं॰ एक प्रकार का तोता जो बहुत मीठा बोलता है। वै॰-आँ; टु-।

टोक सं॰ पुं॰ शब्द, अक्षर, संक्षेप बात; यक -कहब, सुनब, ज़रा-सी बात कहना, सुनना...।

टोकना सं॰ पुं॰ टोकरा; स्त्री॰-नी; वै॰ ट्व-।

टोङ सं॰ पुं॰ कोना; किनारा, वै॰-ङा।

टोना सं॰ पुं॰ जादू;-लागब,-लगाइब;-टापर; क्रि॰ -ब, टोने में ग्रस्त होना।

टोप सं॰ पुं॰ बड़ी टोपी, कन-(दे॰); स्त्री॰-पी, व्यं॰-पा।

टोला सं॰ पुं॰ मुहल्ला;-महल्ला।

टोली सं॰ स्त्री गिरोह, समूह।

टोह सं॰ स्त्री॰ खोज;-लागब,-लगाइब,-करब; क्रि॰-हिआब (ज्ञात होना),-आइब, पता लगाना; वि॰-ही, खोजी।

टौन सं॰ पुं॰ टाउन स्कूल; बड़ा स्कूल; अं॰ टाउन।

# ठ

ठंठनगोपाल सं॰पुं॰ प्राप्तिहीन व्यक्ति;-होब,-करब, बिना भोजन के रह जाना।

ठंठनाब क्रि॰ अ॰ ठंठन करना; प्रे॰-नाइब।

ठंढ वि॰ पुं॰ ठंडा; सं॰ ठंडक;-परब, ठंडक पड़ना; क्रि॰-ढाब, ठंडा होना; प्रे॰-वाइब, ठंडा करना; स्त्री॰-ढि।

ठइआँ-भुइआँ सं॰ स्त्री॰ पृथ्वी, स्थान विशेष की देवी; ये शब्द प्रायः गीतों के प्रारंभ में प्रार्थना स्वरूप यों आते हैं—"...'धरम तुहार" अर्थात् हे पृथ्वी माता, तुम्हारे धर्म (का हमें बल है)।

ठउकब क्रि॰ अ॰ ज़ोर-ज़ोर से बोलना; प्रे॰ -काइब।

ठउरिग वि॰ पुं॰ स्थिर, निश्चित; स्त्री॰-गि;-रहब, -करब,-होब; वै॰-व-; 'ठवर' (दे॰) से।

ठकचा दे॰ ठोकचा।

ठकठक सं॰पुं॰ विशेष स्थान, रोब, अच्छी स्थिति।

ठकठकाइब क्रि॰ स॰ ठकठक आवाज़ करना; भा॰ -कहटि।

ठकर-ठकर क्रि॰ वि॰ व्यर्थ (बोलना);-करब, -होब।

ठकहरब दे॰ ठेकहरब।

ठकाठक वि॰ बिना भोजन के;-रहब; प्र॰-क्क।

ठकुरई सं॰ स्त्री॰ ठाकुर का रोब, स्वभाव आदि; -करब,-देखाइब; वै॰-राई,-पन; सं॰ ठाकुर, ठक्कुर।

ठकुरसोहाती सं॰स्त्री॰ बात जो मालिक को सुहाय; खुशामद; तु॰।

ठग सं॰ पुं॰ ठग; भा॰-ई, क्रि॰-ब, ठगना;-गाब -गाइब, ठगा जाना।

ठगई सं॰ स्त्री॰ ठगी;-करब,-होब।

ठटब क्रि॰ अ॰ ठाट से कपड़ा पहनना; तैयारी करना; प्रे॰ ठा-,-टाइब।

ठटरी सं॰ स्त्री॰ शरीर की हड्डियाँ (मांस बिना); -रहि जाब, बहुत दुबला हो जाना।

ठट्ठा सं॰ पुं॰ हँसी;-मारब,-करब; हँसी-, खिलवाड़; लघु॰-ठोली।

ठठाइब दे० ठँठाइब ।

ठठेर सं० पुं० धातु के बर्तनों का काम करनेवाला; ठठेरा; स्त्री०-रिनि; भा०-रई,-पन; वै० ठँ- ।

ठठोली सं० स्त्री० हँसी;-करब; हँसी-।

ठड़ा वि० पुं० खड़ा; स्त्री०-ड़ी; दे० ठाढ़ ।

ठढ़वाइब क्रि० स० खड़ा करना; वै०-उब; दे० ठाढ़ ।

ठनक सं० स्त्री० ठनकने की आवाज; थोड़ी पीड़ा; क्रि०-ब, थोड़ा-थोड़ा दर्द करना (सिर का), दे० टनकब; प्रे०-काइब, रुपया गिनना, कमाना; -कउआ, बहुत सा रुपया,-लेब, वसूल करना (दहेज आदि) ।

ठनगन सं० पुं० हठ, आग्रह (दान दहेज में);-करब, -होब ।

ठनन-ठनन सं० पुं० ठन-ठन की बार-बार की आवाज;-होब,-करब; क्रि०-नाब, (घंटा) बजना, प्रे०-नाइब ।

ठनब क्रि० अ० ठनना, मचना; प्रे० ठानब,-नाइब, -उब,-वाइब,-उब ।

ठप सं० पुं० गिरने की आवाज;-दें,-सें;-होब, बंद हो जाना,-करब, बंद कर देना; अनु० ध्व० ।

ठप्पा सं० पुं० छापने का साँचा या मुहर;-लगाइब, -लागब; स्त्री०-पी ।

ठरब क्रि० अ० ठंडक अधिक पड़ना; दे० ठारी ।

ठर्रा सं० स्त्री० देहात की बनी हुई शराब;-पियब; वि० मोटी एवं मज़बूत (रस्सी), स्त्री०-र्री ।

ठल-ठेपा सं० पुं० रहने का स्थान; ठिकाना;-होब, -करब,-रहब; सं० स्थल ।

ठलुआ वि०पुं० खाली, बेकार (व्यक्ति); स्त्री०-ई ।

ठवर सं० पुं० स्थान;-पाइब,-मिलब; वै०-उर, ठौर (दे०) ।

ठवरिंग वि० पुं० दे०-उरिंग ।

ठसक सं० स्त्री० गर्व, गर्वपूर्ण उक्ति या व्यवहार ।

ठसरा सं० पुं० गर्व, नखरा,-करब; वै०-र ।

ठसाइब क्रि० अ० ठसवाना (दे० ठासब); भीतर भरवाना; चुदवाना या अप्राकृतिक व्यभिचार कराना; वै०-सवाइब ।

ठस्स वि० पुं० गंभीर; भीतर से भरा हुआ (पोला नहीं); मज़बूत (बर्तन आदि); स्त्री०-स्सि ।

ठहकब क्रि० अ० चोट की आवाज़ होना; गंभीर शब्द होना; भा०-हाका; प्रे०-काइब,-उब ।

ठहकाइब क्रि० स० मार देना, ज़ोर से पीटना; वै० -उब ।

ठहर सं० स्त्री० बैठने या रहने का स्थान;-मिलब, -पाइब; क्रि०-ब; वै०-उर,-वर ।

ठहरब क्रि० अ० ठहरना, निश्चित होना, देर तक चलना, गर्भ धारण करना; प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब, -उब ।

ठहाक सं०पुं० किसी भारी चीज़ के गिरने या लगने का शब्द;-दें,-सें ।

ठहाका सं० पुं० ज़ोर की हँसी;-मारब,-होब ।

ठहिकै क्रि०वि० ज़ोर से, तानकर (बेधना, काटना); यद्यपि यह पूर्वकालिक रूप है, पर 'ठहब' कोई क्रिया नहीं है ।

ठाँठि वि० स्त्री० जो दूध न दे; सूखी ।

ठाउँ सं० पुं० स्थान, प्रारंभ;-से, पहले ही से; प्र० -वैं,-वैं से; वै०-वँ; ठावैं-, स्थान-स्थान पर; सं० स्थान ।

ठाकुर सं० पुं० मालिक, क्षत्रिय; स्त्री० ठकुराइनि; भा० ठकुरई,-राई;-ठकार, बड़े लोग;-बाबा, भगवान; सं० ।

ठाट सं० पुं० साजबाज, दिखावा;-बाट; क्रि०-ब, पहन लेना, ऊपर से छवाने की तैयारी करना; -पलान, छप्पर या खपरैल की छत की ठटरी या लकड़ी, बाँस आदि; वि०-दार,-टी ।

ठाढ़ वि० पुं० खड़ा;-करब,-होब; स्त्री०-ढ़ि, प्र०-ढ़ै, बिना तोड़े या टुकड़े किये (भोजन आदि); वै० ठड़ा,-ड़ी ।

ठान सं० पुं० निश्चय;-ठानब, प्रतिज्ञा कर लेना, डटा रहना ।

ठानब क्रि० स० निश्चय करना, प्रबंध करना; प्रे० टनाइब,-नवाइब,-उब; सं० स्था (तिष्ठ) ।

ठायँ सं० पुं० चोट की आवाज़;-से;-ठायँ, ज़ोर-ज़ोर से और व्यर्थ (बोलना),-ठायँ करब,-होब ।

ठारी सं० स्त्री० ज़ोर की ठंढ;-होब,-परब; क्रि० ठरब (दे०) ।

ठावैं क्रि० वि० तत्काल ही, उसी स्थान पर, प्रारंभ में ही;-ठावँ, यत्र-तत्र; दे० ठाउँ ।

ठासब क्रि० स० भीतर घुसेड़ देना, खूब भर देना; बाध्य करना; प्रे० ठसाइब,-सवाइब,-उब ।

ठिकरा सं० पुं० खपड़े का टुकड़ा; स्त्री०-री; मु० पैसा, थोड़ा साधन ।

ठिकवाइब क्रि० स० ठीक कराना; वै०-उब ।

ठिकान दे० ठे-।

ठिकाब क्रि० अ० ठीक होना; प्रे०-कवाइब,-उब ।

ठिठकब क्रि० अ० ठिठकना ।

ठिठुरब क्रि०अ० ठिठुरना; प्रे०-राइब,-उब,-रवाइब ।

ठिठोली सं० स्त्री० हँसी;-करब,-मारब; वै०-री ।

ठिलिया सं० स्त्री० छोटा घड़ा; वै०-आ ।

ठिहरी दे० ठे-।

ठीक वि० पुं० दुरुस्त; स्त्री०-कि;-ठाक;-करब,-होब, -रहब; प्र०-कै; क्रि०ठिकाब (दे०) ।

ठीका सं० पुं० ठेका;-देब,-करब;-केदार, जो ठीका ले; -री, ठीकेदार का काम ।

ठीस सं० स्त्री० गर्व, रोब;-करब,-देखाइब; वै० -सि ।

ठीहा सं० पुं० ठहरने का स्थान ।

ठुनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे रोना; किसी चीज़ के लिए मचलना; प्रे०-कियाइब,-काइब, मार देना (बच्चे को) ।

ठुमुकब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना, अड़-अड़ के चलना; तुल० ठुमुकि चलत रामचंद्र ··· ।
ठुस्स सं० पुं० पादने की धीरे के आवाज़;-सें,-दें, धीरे से।
ठूँठ वि०पुं०जिसमें पत्ती, डाल आदि न हो; स्त्री०-ठि।
ठेंगा सं० पुं० डंडा; क्रि०-गब, डंडे के सहारे चलना; वै० ठेंघब।
ठेंठी सं० स्त्री० शीशी या बोतल का मुँह बंद करने की लकड़ी;-देब,-लगाइब।
ठेठ वि० पुं० शुद्ध; स्त्री०-ठि।
ठेना सं० पुं० शरारत;-करब; स्त्री०-नी;-नी जगाइब, गड़बड़ शुरू करना; वि०-नहा,-ही, शरारती।
ठेप वि० पुं० कुछ छोटा; स्त्री०-पि।
ठेस सं० स्त्री० पैर की उँगलियों में लगी चोट; -लागब।
ठेहा सं० पुं० कोयर (दे०) काटने का स्थान; लकड़ी का टुकड़ा जिस पर गँड़ासे से कुट्टी काटी जाती है; स्त्री०-ही।
ठैंठैं सं० स्त्री० व्यर्थ की बातें, झिकझिक;-होब, -करब; बक-; वै० ठयँ-ठयँ।
ठोंक-ठाँक सं० पुं० मारपीट;-होब,-करब।
ठोंकब क्रि० स० ठोंकना, मारना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब।
ठोंकानि सं० स्त्री० ठोंकाई; ठोंकने की क्रिया, पद्धति आदि; वै०-ई।
ठोंठी सं० स्त्री० अन्न के दाने के ऊपर का खोल; रद्दी भाग।
ठोंड़ सं० पुं० चोंच;-मारब,-लगाइब; क्रि०-ड़िआइब,-ड़ि-; वै०-ढ़।
ठोंड़िआइब क्रि० स० ठोंड़ से थोड़ा काट देना (फल आदि); कुछ काटना, जूठा कर देना; वै० -ढ़ि-,-या-।
ठोंढ़ी सं० स्त्री० ठुड्डी;-बनाइब, दाढ़ी बनाना।
ठोकचा सं० स्त्री० आम की सूखी खटाई;-होब, सूख जाना (व्यक्ति का)।
ठोकर सं० पुं० चोट;-खाब, मारा-मारा फिरना; -लागब,-लगाइब।
ठोकवा सं०पुं० महुवे और आँटे की बनी हुई मोटी पूरी;-बनाइब,-पोइब (दे०); 'ठोंकब' से, क्योंकि इसे ठोंक-ठोंक कर बनाते हैं।
ठोप सं० पुं० बूँद;-ठोप, बूँद-बूँद; थक-, टुहु-।
ठोरा सं० पुं० भुना हुआ मक्के का वह दाना जो खिला न हो; स्त्री०-री; क्रि०-राब,-रिआब; वै० ठ्वरा।
ठोस वि० पुं० ठोस; स्त्री०-सि; भा०-पना।
ठौकब दे० ठउकब।
ठौर सं० पुं० स्थान;-देब, (बैठने, सोने आदि का) स्थान देना; वि०-रिग, दे० ठउरिग।
ठौरिग दे० ठउरिग।

## ड

डंका सं० पुं० ढिंढोरा, युद्ध का बाजा;-पीटब -बाजब,-बजाइब, विज्ञापन होना या करना।
डंकिनी वि० डंकिन साइब का, इस्तमरारी (भूमि का बंदोबस्त जो उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में अभी तक चलता है।)
डँगराब क्रि० अ० दुबला हो जाना; दे० डाँगर; वै० डङराब।
डँटब क्रि० अ० डटना; प्रे०-टाइब, डाटब।
डँटवाइब क्रि० स० डँटवाना; वै०-उब।
डँटाइब क्रि० स० डाँट दिलाना; भा०-ई।
डँठहा वि० पुं० जिसमें 'डाँठ' (दे०) बहुत हो; स्त्री०-ही।
डंड सं०पुं० दण्ड;-देब;-होब, व्यर्थ जाना;-लगाइब; -कवंडल, दंड-कमंडल; सारा सामान।
डंड-कवंडल सं० पुं० दंड एवं कमंडलु (दो मुख्य वस्तुएँ जो संन्यासी लेकर चलते हैं); सारा सामान।
डंडहिआ सं० स्त्री० बेड़ी जिसमें डंडा लगा हो; -लगाइब,-डारब,-छोड़ब।
डंडा सं० पुं० डंडा;-मारब,-लगाइब,-डारब।
डंडी सं० स्त्री० लिंग; तराज़ू की डण्डी;-मारब; पुं० संन्यासी जो दण्ड लिये हो;-स्वामी,-महराज।
डंडेबाजी सं० स्त्री० कड़ी मार;-करब,-होब।
डँड़ सं० पुं० डंड;-करब,-पेलब;-बइठक, डंड-बैठक।
डँड़कारब क्रि० अ० भाग जाना; धीरे से या चुपके से भागना।
डँड़या वि० 'डाँड़' (दे०) पर रहनेवाला; जंगली।
डँड़वार सं० पुं० दो घरों के बीच की दीवार; -छोड़ब,-डारब।
डँड़हा वि० पुं० डाँड़ (किनारे) का रहनेवाला; स्त्री०-ही; वै०-या।
डँड़ाही सं० स्त्री० दंड, जुर्माना;-देब,-लेब; सं० दंड + आही।
डँड़िआइब क्रि० स० निकालना, किनारे करना; 'डाँड़' से; प्रे०-वाइब,-उब।

डँड़िआब क्रि० अ० बाहर निकलना; प्रे०-इब, -उब ।
डँड़ोई सं० स्त्री० छोटे-छोटे कच्चे फल ।
डंफ सं० पुं० खूब फूला हुआ ढोल;-लागब, खूब फूल जाना; प्र०-फा,-भ, डम्म ।
डँवरा सं० पुं० एक घास जो धान के खेत में होती है । क्रि०-राब, धान की फसल का खराब हो जाना ।
डँसब क्रि० स० काट लेना (साँप आदि का); प्रे० -साइब, डँसवाइब; सं० दंश ।
डँसा सं० पुं० एक बड़ी मक्खी जो वर्षा में होती और पशुओं को कार्तिक तक काटती है । सं० दंश ।
डउँगी सं० स्त्री० टहनी ।
डउआब क्रि० अ० अकेले रहकर (भूत प्रेतादि से) डरते रहना ।
डउकब दे० चउँकब ।
डउकाइब क्रि० स० चौंका देना, धोका देना; वै० -उब ।
डउल सं० पुं० तरकीब, प्रबंध;-करब,-लागब, -लगाइब; वै० डौल ।
डउवाब क्रि० अ० व्यर्थ में किसी अनुपस्थित व्यक्ति को पुकारते रहना; वै०-आब; दे० कउआब, बउआब ।
डकडक व्यर्थ में घूमते रहने का क्रम;-करब; प्र० -क- ।
डकवा दे० डोकवा ।
डकार दे० डेकार ।
डक्कडक्क क्रि० वि० व्यर्थ में (घूमते रहना); धूप में निरर्थक (फिरते रहना);-करब; क्रि०-कडकाब ।
डखना-पखना सं० पुं० अंग-प्रत्यंग;-उखरब, अंग-भंग हो जाना ।
डखुरहा वि० पुं० द्वेषकरनेवाला; स्त्री०-ही; भा० -राही, द्वेष, ईर्षा ।
डग सं० पुं० कदम, पग;-भरब, जल्दी-जल्दी चलना; क्रि०-ब, हटना; प्रे०-गाइब,-उब; वै० डि- ।
डगमग वि० अनिश्चित, गिरनेवाला; क्रि०-माब, प्रे०-गाइब, हिलना, हिलाना ।
डगर सं० स्त्री० राह, पगडंडी; पुं०-रा; क्रि०-रब, -राब, रास्ता पकड़ना ।
डगर-मगर क्रि० वि० इधर से उधर (हिलना); -होब,-करब ।
डङरहा वि० पुं० दुबला पतला; स्त्री०-ही ।
डङराब क्रि० अ० दुबला हो जाना; दे० डाङर ।
डट्टा सं० पुं० डाट, शीशी या बोतल बंद करने की ठेंठी; स्त्री०-ट्टी;-देब,-लगाइब ।
डढ़िआइब क्रि० स० जलाना; (व्यंग में) कर डालना, समाप्त करना; दे० डाढ़ा ।
डढ़िआरा वि० पुं० दाढ़ीवाला; वै० द-,-यारा; कहा० घर भर-चूल्हा के फूँकै ?
डपट सं० पुं० ज़ोर से बोलने की आदत;-राखब; क्रि०-ब,-टाइब ।
डपकोरब दे० डभकोरब ।
डपोर वि० पुं० मूर्ख;-संख, महामूर्ख; भा०-रई ।
डपोरसंख वि० मूर्ख ।
डफला सं० पुं० एक बड़ा बाजा जो लकड़ी से बजाया जाता है । इसे 'डफ' भी कहते हैं और इसके बजानेवालों को 'डफाली' (दे०); स्त्री०-ली; -बाजब,-बजाइब ।
डफाली सं० पुं० डफला बजानेवाला ।
डबडबाब क्रि० अ० डबडबाना (आँखें); ऊपर तक भर जाना ।
डबरा सं० पुं० लंबा चौड़ा मैदान जिसमें पानी भरा हो या भर जाता हो ।
डबल वि० पुं० बहुत, तगड़ा; अं० ।
डबिआ सं० स्त्री० डिबिया ।
डब्बल सं० पुं० पैसा;-भर, ज़रा सा; अं० डबल ।
डब्बा सं० पुं० डिब्बा; स्त्री०-बी;-ब्बी चढ़ाइब, अलग भोजन बनाना ।
डभकउआ सं० पुं० डूबने की क्रिया; खूब पानी के नीचे पहुँच जाने की स्थिति;-मारब; वै० -कोर,-कौवा ।
डभका सं० पुं० धान या जड़हन जो पकनेवाला हो; अधपका ।
डभकोरब क्रि० स० (लोटा या पानी को) खूब ज़ोर से धक्का देकर पानी भरना; प्रे०-राइब, भा० -कौआ ।
डभकौवा दे०-कउआ ।
डभका सं० पुं० पानी में डभ से गिरने या डूबने का शब्द;-मारब ।
डभ्भ सं० पुं० पानी में गिरने का शब्द;-सें,-दें; वै०-ब्भ ।
डमकब क्रि० अ० डम-डम करना; प्रे०-काइब, -उब, बजाना ।
डमकाइब क्रि० स० ज़ोर ज़ोर से पीटना या बजाना; वै०-उब; 'डम-डम' का शब्द करना ।
डमडमाब क्रि० अ० डम-डम शब्द करना; प्रे० -माइब,-उब ।
डमरा सं० पुं० प्रसिद्ध टापू अंडमन जहाँ जन्म कारावास के लिए लोग भेजे जाते थे; वै० डामर; -होब,-करब, ऐसा दंड होना, देना ।
डमरू सं० पुं० पुराना बाजा जो शिवजी को प्रिय है;-बाजब,-बजाइब ।
डमाडम्म क्रि० वि० ऊपर तक (भरब) ।
डयरी सं० स्त्री० डायरी, रोज़नामचा;-भरब,-लिखब; अं० डायरी ।
डर सं० पुं० भय;-करब,-लागब; क्रि०-राब,-वाइब, -ब; वै० डेर,-रि;-भुताब, भूत के डर से आक्रांत हो जाना;-राँकुल, डरनेवाला, डरपोक, भयभीत, वै० डेर्गं- ।
डरवाइब क्रि० स० डराना; वै०-उब,डेर- ।

डराब क्रि० स० डरना, घबराना; प्रे०-वाइब, डेरवाइब; वै० डे-।
डरैबर सं० पुं० (रेल या मोटर का) चलानेवाला; भा०-री,-रई, अं० ड्राइवर।
डलिआ सं० स्त्री० छोटी सुंदर टोकरी; वै०-या।
डली सं० स्त्री० छोटा टुकड़ा; सुपाड़ी (कटी हुई); -कत्था, पान का सामान।
डहकब क्रि० अ० तरस-तरस कर रोते रहना; प्रे० -काइब।
डहरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना (पशुओं का); प्रे०-राइब; 'डहरि' से।
डहरि सं० स्त्री० पगडंडी; क्रि०-रब,-राइब,-रिआब।
डाँक सं० पुं० कै करने की इच्छा;-लागब; क्रि० -ब, कै करना;-ब- पोकब, बीमार पड़ना।
डाँट सं० स्त्री० भर्त्सना;-फटकार; क्रि०-ब, डाँटना
डाँटब क्रि० स० डाँटना, प्रे० डँटाइब,-टवाइब,-उब।
डाँठ सं० पुं० नाज समेत पौदा।
डाँड़ सं० पुं० हत्था; वै०-ड़ा, स्त्री०-ड़ी; सं० दंड।
डाँड़ सं० पुं० गाँव के बाहर का स्थान;-मेड़, सीमा; -काढ़ब, कपड़े का फटा अंश काट कर शेष को फिर से सी देना।
डाँड़ सं० पुं० दंड;-देब,-लेब,-परब; सं० दंड।
डाँड़ी सं० स्त्री० तराज़ू का डंडा;-मारब, कम तौलना।
डाँड़े क्रि० वि० बाहर; मैदान में; घर से दूर; -डाँड़ें।
डाइनि सं० स्त्री० भूत की स्त्री; डायन;-लागब।
डाकखाना सं० पुं० पोष्ट आफिस; वै०-घर; डाक, चिट्ठी आदि+ख़ाना: (फ़ा०) घर।
डाकट सं० पुं० महत्वपूर्ण काग़ज़;-आइब,-लाइब; अं० डाकेट।
डाकमुंसी सं० पुं० पोष्टमास्टर; डाक+मुंशी, लेखक।
डाका सं० पुं० लूटने का क्रम;-डारब,-परब; वै० डाँ-।
डाकिआ सं० पुं० पत्र लानेवाला, डाक ढोनेवाला; वै०-या।
डाकिनि सं० स्त्री० एक प्रकार की चुड़ैल; वै० -नी।
डाकू सं० पुं० डाका डालनेवाला।
डाङर सं० पुं० मरा हुआ जानवर; वै० डाँगर; क्रि० डङराब।
डाट सं० शीशी बोतल का कार्क; क्रि०-ब, भर लेना, ख़ूब खा लेना।
डाट सं० पुं० इमारत में लगा हुआ डाट;-लागब, -लगाइब,-देब।
डाढ़ब क्रि० स० जलाना, तंग करना; प्रे० डढ़िआइब,-वाइब।
डाढ़ा सं० पुं० आग;-लागब,-लगाइब; क्रि०-ढब।
डाबर सं० पुं० लंबा चौड़ा मैदान जिसमें पानी मरता हो; वै० डबरा; वि० मटमैला, तुल० भूमि परत भा-पानी।
डाभी सं० स्त्री० नई जमी हुई फ़सल; अंकुर; वै० डी-।
डामर सं० पुं० कालापानी;-होब,-करब; वै०-ल।
डायर वि० दाखिल;-करब,-होब; दायर।
डारब क्रि० स० डालना, छोड़ना; प्रे० डराइब, -रवाइब,-उब।
डारि सं० स्त्री० डाल;-पात, (डाल-पत्ता) सब कुछ; -रीं-डारीं, डाल डाल।
डाल सं० पुं० बाँस का टोकरा जिसमें विवाह के समय बधू के कपड़े, गहने आदि आते हैं। स्त्री० -ली।
डाली सं० स्त्री० उपहार;-लगाइब, उपहार सजाकर ले जाना;-लेब, -देब,-लाइब।
डावाँडोल वि० अनिश्चित;-करब,-होब; वै० डवाँ-।
डासब क्रि० स० बिछाना; प्रे० डसाइब,-उब; दे० उड़ासब।
डाह सं० स्त्री० ईर्ष्या;-करब; क्रि०-ब; वै०-हि, वि० -ही; सौतिया-, सौतों का सा ईर्ष्या-द्वेष।
डिउहार सं० पुं० डीह का देवता; ग्रामदेव;-होब, -बनब, पूज्य बन जाना, डटा रहना; डीह (दे०)+ वार।
डिगंबर वि० पुं० नंगा, वस्त्रहीन; दिगंबर।
डिगना सं० पुं० मिट्टी का ठप्पा जिससे कुम्हार अपने कच्चे बर्तन पीटता है; वै०-वा, कोंहर-डिगवा।
डिगब क्रि० अ० डिग जाना, गिरना; प्रे०-गाइब, -वाइब,-उब।
डिगर दे० नवडिगर।
डिगरी सं० स्त्री० मुकदमे में जीत;-होब,-करब,-देब; अं० डिक्री;-दार, जिसकी डिगरी हुई हो; वै० -गिरी।
डिग्ग सं० पुं० ऊँचा भाग या स्थान।
डिठवन सं० पुं० देवोत्थानी एकादशी का दिन; सं० देवोत्थान;-करब,-होब।
डिठिआँता वि० आँख से दूर;-होब; सं० दृष्टि+ अंतर।
डिठिआर वि० पुं० देखनेवाला; दृष्टिवाला; सं० दृष्टि+वार; स्त्री०-रि।
डिठिबन्हवा सं० पुं० जादूगर; डीठ बाँध देनेवाला भा०-न्हई; सं० दृष्टि+बन्ध।
डिठोहरी सं० स्त्री० एक पेड़ और उसका फल जिसका तेल दवा के काम आता है।
डिड़िआब क्रि० अ० व्यर्थ चिल्लाना या प्रार्थना करना; डीं-डीं करना; वै०-याब।
डिढ़ वि० पुं० हिम्मतवाला; दृढ़; भा०-ई,-ढ़ाई; स्त्री०-ढ़ि; क्रि०-ढ़ाब, सं० दृढ़।
डिढ़ाब क्रि० अ० धीरे-धीरे, हिम्मत करना; दृढ़ होना; प्रे०-ढ़वाइब,-उब।

डिपाट सं० पुं० विभाग, महकमा; अं० डिपार्ट-मेंट।

डिब्बा सं० पुं० डिब्बा; स्त्री०-बी,-बिया; डिब्बी चढ़ाइब; अलग खाना पकाना।

डिभिआव क्रि० अ० अंकुर निकलना; दे० डीभी।

डिल्ल सं० पुं० बैल के गर्दन पर का ऊँचा मांसल भाग; प्र०-ल्ला।

डिल्ली सं० स्त्री० दिल्ली; मु० बहुत दूर स्थान; सं० देहली, दिल्ली।

•डिवटी सं० स्त्री० नौकरी, काम;-देब, काम करना, हाजिरी देना; अं० ड्यूटी।

डिवठी सं० स्त्री० दीया रखने का मिट्टी या लकड़ी का जगरूप (दे०); वै०-उ-।

डिसकूट दे० दिसकूट।

डिसमिस वि० अस्वीकृत, बरख़्वास्त;-होब,-करब; प्र० डि-; अं०।

डिहरी दे० डेहरी,-रा।

डिहुली सं० स्त्री० छोटा डीह।

डीङ सं० स्त्री० गर्वभरी बात;-मारब,-हाँकब।

डीठि सं० स्त्री० नज़र, दृष्टि, अनुभव; सं० दृष्टि।

डील सं० पुं० व्यक्ति; ऊँचाई, व्यक्तित्व;-लें-डीलें, प्रत्येक व्यक्ति पर;-डौल, लंबाई-चौड़ाई (व्यक्ति विशेष की) (अपने, यन के)-न, (अपने, इनके) निज बूते पर, व्यक्तित:।

डीह सं० पुं० खँडहर; खेत नहीं आबादी के भीतर का भाग;-डाबर, गाँव का कोई भी भाग;-होब, गिर जाना (मकान का); नष्ट होना (गाँव का); मूल स्थान (ब्राह्मण का)।

डुकवा दे० डोकवा।

डुगडुगिआ वि० स्त्री० गाय जिसके सींग हिलते हों; वै०-या।

डुगडुगी सं० स्त्री० बच्चों के खेलने का छोटा बाजा अनु० डुग-डुग, प्र०-ग्ग-ग्ग।

डुगुर-डुगुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (हिलना, चलना)।

डुगुरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चलना; प्रे०-राइब, -उब; वै०-ड़ुरब।

डुग्गी सं० स्त्री० छोटी ढोल;-पीटब, विज्ञापन करना -पिटाइब;-होब;-मुनादी, सरकारी विज्ञापन।

डुडुआ सं० पुं० कबड्डी का खेल;-खेलब,-होब।

डुड़ँही सं० स्त्री० छोटी मछली।

डुपटा सं० पुं० डुपट्टा;-ओढ़ब।

डुबुक्की दे० बुड़ुकी।

डुभकी सं० स्त्री० कढ़ी में डाली हुई उड़द की पकौड़ी।

डुभुक्क सं० पुं० डूबने का शब्द;-दें, ऐसे शब्द के साथ (डूबना); प्र०-क्की,-मारब,-खाब, डूबना।

डुभुर-डुभुर सं० पुं० डूबने उतराने की क्रिया; -होब,-करब।

डुहकब क्रि० अ० अकेले पड़े-पड़े लालायित होते रहना; वै०-हु-, प्रे०-काइब।

डूँड़ वि० पुं० (पौदा या पेड़) जिसका सिर कट गया हो; (पशु) जिसके सींग टूटे हों; स्त्री०-ड़ी, -ड़ि, क्रि० डुँड़ाब।

डूम-डाम दे० ऊम-डाम।

डेउढ़ी सं० स्त्री० घर के भीतर प्रवेश करने के पूर्व का स्थान जहाँ पहरेदार आदि बैठते हैं;-दार, ड्योढ़ी पर पहरा देनेवाला।

डेग सं० पुं० बड़ा बटुला (दे०); स्त्री०-ची।

डेङ सं० पुं० बड़ा अनगढ़ बाँस का डण्डा; प्र० -ङा।

डेढ़ वि० पुं० एक और आधा; प्र०-वढ़,-ढ़ा, डेढ़-गुना, स्त्री०-ढ़ि।

डेढ़ी सं० स्त्री० अनाज उधार देने की पद्धति जिसमें लेनेवाले को एक सेर का डेढ़ सेर देना पड़ता है। -बिसार, नाज का लेन-देन; दे० बिसार।

डेरा सं० पुं० टिकने का स्थान; समूह (नाचवालों का), घर-बार का सामान (चलने-फिरनेवाले लोगों का);-डारब, रहने के लिए सामान जमाना।

डेवढ़ सं० पुं० डेढ़ गुना;-ढ़ा, रेल का ऊँचे दर्जे का डिब्बा; क्रि०-ढ़ब, डेढ़ा होना, रोटी का फूल जाना।

डेहरा सं० पुं० बड़ी डेहरी जो मिट्टी की बनाई जाती है और जिसमें नाज रखा जाता है। स्त्री० -री;-री-कोठिला, नाज का भंडार।

डैरी सं० स्त्री० डायरी (पुलीस आदि की);-भरब, खानापुरी करना; अं०।

डोंगा सं० पुं० नाव; स्त्री०-गी;-बोर, अयोग्य (जो -बोरे या डुबो दे); वै०-ङा।

डोभ सं० पुं० टाँका (कपड़े में लगा हुआ);-डारब; क्रि०-ब,-वाइब;-भै-डोभ, एक-एक डोभ, धीरे-धीरे (सीना या उधेड़ना)।

डोम सं० पुं० मेहतर, स्त्री०-मिनि।

डोरा सं० पुं० धागा;-डारब,-परब; स्त्री०-री, पतली रस्सी जिससे कुएँ में लोटा भरते हैं; क्रि०-रिआ-इब, रस्सी में बाँधकर (व्यक्ति को) ले जाना; सूई-, लोटा-डोरी लेब,-उठाइब, भीख माँगना।

डोरि दे०-लि।

डोलब क्रि० अ० हटना, चला जाना; प्रे०-लाइब, -उब,-लवाइब।

डोला सं० पुं० दुलहिन की सवारी;-निकारब, ज़बर-दस्ती स्त्री को ले जाना; स्त्री०-ली।

डोलि सं० स्त्री० बालटी।

डौंकब क्रि० अ० चौंकना; प्रे०-काइब,-उब; वै० डउँ-, चउँ-।

डौंगी दे० डउँगी।

डौंरा दे० डँवरा।

डौल सं० पुं० सिलसिला, तरकीब, प्रबंध;-लागब, -करब।

# ढ

**ढँचर-ढँचर** क्रि० वि० ढीले-ढाले लकड़ी के सामान के हिलने की आवाज़ की भाँति;-करब,-होब ।

**ढँसाई** सं० स्त्री० खाँसने की क्रिया; दे० ढाँसब ।

**ढउकब** क्रि० स० मुँह बनाकर डाँटना; दे० ठउकब ।

**ढकचब** क्रि० अ० बुरी तरह खाँसना, खाँस कर उलटी करना; वै० ढचकब ।

**ढकढक** सं० पुं० ढीले हो जाने का शब्द; प्र० -क्क-क्क; ढकाढक्क,-करब,-होब, क्रि०-काब ।

**ढकढोरब** क्रि० स० (कुएँ या तालाब को) मथना गंदा करना; वै०-ग-।

**ढकना** सं० पुं० ढक्कन; वि०-दार ।

**ढकब** क्रि० अ० छिपना, ढकना; प्रे० ढा-, ढकाइब -उब,-वाइब ।

**ढकर-ढकर** सं० पुं० (पहिये आदि की) ढीला होकर हिलने की आवाज;-करब,-होब; मु० बूढ़ा या बीमार होकर जर्जर हो जाने की अवस्था; वै० -पचर,-पहँच (पहले अर्थ में) ढचर-ढचर ।

**ढकवा** सं० पुं० मूँज की बनी बड़ी टोकरी;-मउनी, छोटी बड़ी ऐसी टोकरियाँ; दे० मउना,-नी; वै० ढाका, स्त्री०-किआ ।

**ढकोलब** क्रि० स० जल्दी-जल्दी और अधिक पी लेना; प्रे०-लाइब,-लवाइब ।

**ढकोसला** सं० पुं० अंधविश्वास; व्यर्थ की बात; वि०-लहा,-ही ।

**ढक्कन** सं० पुं० ढकना;-देब,-लगाइब; वि० -दार ।

**ढङ** सं० पुं० ढंग; वि०-ङी; ढङी-गुनी, होशियार; गुन-ढङ, होशियारी; प्र० ढंग ।

**ढचरा** सं० पुं० बुरा तरीका, व्यर्थ का नियम; वै० ढँ-।

**ढड्ढा-पसार** वि० पुं० इतना लंबा-चौड़ा कि सँभल न सके; स्त्री०-रि ।

**ढड्ढू** सं० पुं० लंगूर;-यस, काला मुँह बनाये हुए, कुरूप; वै०-ढ्ढू ।

**ढनगब** क्रि० अ० लुढ़कना; प्रे०-गाइब,-उब ।

**ढपना** सं० पुं० ढकना ।

**ढपब** क्रि० अ० मुँदना, बंद होना (आँख का); प्रे० ढापब; वै० ढँ-, ढाँ-।

**ढपुनी** दे० ढे-।

**ढब** सं० पुं० तरीका, हुनर; वि०-दार, बेढब, अनियमित, स्वतंत्र, विचित्र, अच्छा, अद्भुत ।

**ढबइल** वि० गंदा (पानी); कीचड़वाला; मिट्टी भरा; वै० ध-।

**ढबढभाब** क्रि० अ० ढभढभ आवाज़ करना; प्रे० -इब, पीटना; अनु० ।

**ढरकब** क्रि० अ० (द्रव का) गिर पड़ना; आकृष्ट होना प्रे०-काइब,-उब,-कवाइब,-उब ।

**ढरका** सं० पुं० बाँस की पोंगी जिसका सामना कलम की भाँति कटा होता है और जो जानवरों को दवा पिलाने आदि के काम आता है; स्त्री०-की; -देब,-पिआइब ।

**ढरकावन** सं० पुं० पानी जो किसी आगंतुक के कल्याणार्थ देवी-देवता को चढ़ाया जाता है; ढर-, धारि-(दे० धारि) ।

**ढरब** क्रि० अ० ढलना; प्रे० ढारब, ढराइब,-वाइब; -उब भा०-राई ।

**ढरहर** वि० स्त्री० गोल एवं चिकनी; स्त्री०-रि ।

**ढर्रा** सं०पुं० रास्ता, दस्तूर, नियम;-निकरब,-निकारब,-धरब,-खुलब ।

**ढलढल** वि० पुं० पतला (सना हुआ पदार्थ); स्त्री०-लि; क्रि०-लाइब, पतली सनी हुई वस्तु उँड़ेल देना; बुरी तरह एवं अधिक हग देना ।

**ढलब** क्रि०अ० उतरना, नीचे आना (आयु, जवानी); ढलना ।

**ढलर-ढलर** क्रि० वि० फैला हुआ (द्रव या भोजनादि);-करब,-होब ।

**ढलवाँसि** दे० ढेल-।

**ढलानि** सं० स्त्री० ढाल की उतराई ।

**ढहब** क्रि० अ० ढहना, गिर जाना (इमारत का), नष्ट होना; प्रे० ढाहब, ढहाइब,-उब ।

**ढहरब** क्रि० अ० धीरे-धीरे सरक कर गिरना (मटर आदि का); प्रे०-राइब,-उब; भा०-राई; दे० ढहरब ।

**ढहराइब** क्रि०स० सूप में रखकर साफ़ करना (चने, मटर आदि नाजों का); वै०-उब, प्रे०-रवाइब; भा० -राई ।

**ढाँका-तोपा** वि० पुं० छिपा-छिपाया; दे० तोपब ।

**ढाँचा** सं० पुं० ढाँचा;-च-पलान, प्रारंभिक तैयारी ।

**ढाँसब** क्रि० अ० बुरी तरह खाँसना; कभी-कभी 'ठासब' (दे०) के अर्थ में भी प्रयुक्त।

**ढाँसी** सं० स्त्री० ज़ोर की खाँसी;-आइब ।

**ढाइब** क्रि० स० गिरा देना (दीवार आदि); प्रे० ढहाइब,-हवाइब,-उब ।

**ढाक** सं० पुं० पलाश; वै०-ख ।

**ढाकब** क्रि० स० ढकना, छिपाना; प्रे०-काइब,-कवाइब; वै० ढाँ-।

**ढाका** सं० पुं० बंगाल का प्रसिद्ध नगर;-बंगाला, दूर देश; वै०-खा ।

**ढाका** सं० पुं० टोकरा; स्त्री० ढकिआ; वि०-यस, बड़ा भारी (मुँह),-यस मुँह बाइब ।

ढाठी सं० स्त्री० आदत, खराब आदत;-परब ।
ढाढ़स सं० पुं० हिम्मत;-करब,-होब,-धरब ।
ढारब क्रि० स० ढालना; ढाल देना (उत्तर-दायित्व, तुहमत); प्रे० ढराइब,-रवाइब,-उब; भा० ढराई ।
ढाल सं० पुं० नीचापन (भूमि का); वि०-लू ।
ढालि सं० स्त्री० ढाल,-तरवारि, ढाल और तलवार; -बान्हब ।
ढाही सं० स्त्री० बच्चों के खेल में कौड़ी का ढेर; निधि, माल;-मारब, सारा माल उड़ा देना ।
ढिठाई सं० स्त्री० धृष्टता;-करब ।
ढिठाब क्रि० अ० हिम्मत करना, ढीठ होना; प्रे० -ठवाइब ।
ढिपुनी सं० स्त्री० चूँची (दे०) का मुँह; फल का वह भाग जो पेड़ से जुड़ा रहता है; वै० ढे-।
ढिबढिबाब क्रि० अ० ढिब-ढिब की आवाज़ होना या करना; प्रे०-इब ।
ढिबरी दे० ढेबरी ।
ढिलढिल वि० पुं० कुछ-कुछ ढीला; स्त्री०-लि; -पुलपुल, ढीला-ढाला ।
ढिलवाही सं० स्त्री० ढीलापन;-करब,-होब ।
ढिलाब क्रि० अ० ढीला होना, लापरवाह हो जाना; प्रे०-लवाइब, ढीलब ।
ढिसमिस वि० समाप्त, विपरीत;-करब,-होब; अं० डिसमिस ।
ढीढ़ा सं० पुं० गर्भ; फूला हुआ पेट (गर्भ का) ।
ढीठ वि० पुं० हिम्मतवाला; स्त्री०-ठि, क्रि० ढिठाब (दे०) भा० ढिठाई ।
ढील वि० पुं० ढीला; क्रि० ढिलाब,-ब; स्त्री०-लि, -ढाल, बहुत ढीला ।
ढीलब क्रि० स० ढीला करना, छोड़ देना, त्याग देना, स्वतंत्र कर देना, नियंत्रण कम कर देना; प्रे० ढिलवाइब ।
ढीला दे० ढेला ।
ढीलौ सं० पुं० जूँ;-परब ।
ढुकब क्रि० अ० छिपकर खड़ा रहना; कुछ पाने की आशा में खड़े रहना; प्रे०-काइब ।
ढुकानी सं०स्त्री० 'ढुकने' की आदत;-लागब, छिपा रहना,-देब ।
ढुनुकब क्रि० अ० गिर पड़ना; मर जाना; धीरे से या अकस्मात् मर जाना ।
ढुनुमुनी सं०स्त्री० गिरकर लोटने की क्रिया;-खाब, गिरना; वै०-न- ।
ढुरकब क्रि० अ० लालच में खड़े या बैठे रहना; दूसरे के यहाँ पड़े रहना; प्रे०-काइब ।
ढुरब क्रि० अ० झुकना, आकृष्ट होना; प्रे० -राइब ।
ढुरढुर वि० पुं० चिकना एवं गोल (नाज या फल); स्त्री०-रि ।
ढुरुहुरी सं० स्त्री० पतला रास्ता;-लागब, रास्ता लगा रहना, होना; वै०-र- ।
ढुसकट दे० धुसकट ।
ढुहिआइब क्रि० स० ढूह (दे०) लगाना, एकत्र कर देना ।
ढूँढ़ब क्रि०स० तलाश करना; प्रे० ढुँढ़ाइब-ढ़वाइब, -उब ।
ढूँढ़ी सं० स्त्री० चावल के आँटे के बड़े-बड़े लड्डू जो प्रायः देहात में स्त्रियों की बिदाई पर दिये जाते हैं ।
ढूँह सं०पुं० ढेर; प्र०-हा स्त्री०-ही, क्रि० ढुहिआइब; -लगाइब; वै० धूह ।
ढेंकी सं० स्त्री० चावल कूटने की लकड़ी की मशीन जो पैर से चलाते हैं;-चलब ।
ढेंकुरि सं०स्त्री० ढेकली; पानी निकालने की तरकीब जिसमें दो लंबी लकड़ियों द्वारा काम लिया जाता है;-चलब,-चलाइब ।
ढेंपी सं० स्त्री० फल का वह भाग जो पेड़ से लगा रहता है । दे० ढिपुनी ।
ढेंसर वि० पुं० पकनेवाला (फल), अधपका; स्त्री० -रि, क्रि०-राब, अधपका होना ।
ढेबरी सं० स्त्री० मशीन का वह पुर्जा जिसमें तेल दिया जाय; दीया जिसमें मिट्टी का तेल जले ।
ढेर वि० पुं० अधिक; स्त्री०-रि; क्रि०-राब, अधिक होना; वै०-का,-की; प्र०-रै ।
ढेरा सं० पुं० एक जंगली फल ।
ढेरी सं० स्त्री० समूह, राशि (फल आदि की); क्रि०-रिआइब, ढेरी लगाना ।
ढेलवाँसि सं० स्त्री० रस्सी की बनी एक 'फँसरी' (दे०) जिससे ढेला दूर तक फेंका जाता है ।
ढेलहा वि० पुं० जिसमें ढेला बहुत हो (खेत); स्त्री०-ही ।
ढेला सं० पुं० मिट्टी का छोटा 'ढेर' जो उठाकर पत्थर की भाँति फेंका जा सके;-रौ, ढेलों द्वारा एक दूसरे को मारने की कार्रवाई, स्त्री०-ली ।
ढोंका सं० पुं० ढला, टुकड़ा; आँख का ढक्कन;-देब; -लगाइब; व्यं० चश्मा ।
ढोंढ़ी सं० स्त्री० नाभि ।
ढोइब क्रि० स० ढोना, ले चलना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब;-मूसब, जल्दी-जल्दी उठा ले जाना; चुरा लेना ।
ढोङ सं० पुं० ढोंग;-करब; वि०-ङी, ढोंग करने-वाला ।
ढोटा सं० पुं० लड़का ।
ढोल सं० पुं० ढोलक;-पीटब,-बजाइब, विज्ञापन करना; लघु०-क, वै०-लि ।
ढोवा सं० पुं० बोझ जो एक बार में जा सके; यक-, दुइ-;-मूसा, जल्दी-जल्दी ले जाने या चुराने की क्रिया;-लागब,-करब ।
ढौकब दे० ढकब ।

# त

तइकै क्रि० वि० तब फिर, तदनंतर; वै० तउकै।
तइसै क्रि० वि० तैसे; प्र०-सनै।
तउआब क्रि० अ० ताव में आना; आवश्यकता अनुभव करना; दे० ताव।
तउजा सं० पुं० उधार;-लेब,-देब,-करब; स्त्री० -जी।
तउर दे० तवर।
तउल सं० पुं० तौल, वज़न; क्रि०-ब, तौलना, परीक्षा करना, प्रे०-लाइब,-लवाइब,-उब;-ला, तौलनेवाला जो बाजार में बैठता हो; सं० तोल्, तुला।
तउलिया सं० स्त्री० तौलिया।
तउहीन दे० तवहीन।
तऊ क्रि० वि० तोभी, तिसपर भी।
तऊन दे० तमून।
तक अव्य तक; यहँ-, यहाँ तक; जहँ-, जहाँ तक, तहँ-, तहाँ तक,...।
तकतकाइब क्रि० स० चेतावनी देना, प्रोत्साहित करना, उकसाना; वै०-उब।
तकताल सं० पुं० खेल, व्यर्थ का काम;-करब।
तकथा सं० पुं० तख्ता; स्त्री०-थी;-थाँ, सदृश, बराबर, योग्य; तोहरे-, तुम्हारे सरीखा।
तकदमा सं० पुं० प्रमुत्व, अधिकार; वै०, -ग-।
तकदीर सं० स्त्री० भाग्य;-री, भाग्य संबंधी, भाग्यशाली; वै०-ग-।
तकधिन सं० पुं० तबले का शब्द; प्र० तकाधिन, ताक धिनाधिन; वै० तग-।
तकमा सं० पुं० तमग़ा;-लगाइब,-पाइब; वै० तगमा।
तकब क्रि० अ० ताकना; दे० ताकब।
तकरार सं० स्त्री झगड़ा, बहस;-करब,-होब; वह खेत जो बिना जोता पड़ा हो; वि०-री, तकररिहा।
तकरुरी सं० स्त्री० नियुक्ति;-होब,-करब।
तकलीफ सं० स्त्री० कष्ट, दुःख;-देब,-पाइब।
तकसीर सं० स्त्री० गलती, अपराध;-होब, -करब।
तकाइब क्रि० स० तकाना, ताकने की प्रेरणा करना, ताकने में सहायता करना; वै०-उब, प्रे० तकवाइब।
तकाई सं० स्त्री० ताकने की क्रिया, आदत आदि, वै० तकवाई।
तकादा दे० तगादा।
तकिआ सं० स्त्री० तकिया;-लगाइब।
तकुआ दे० टेकुआ।
तकैया सं० पुं० ताकनेवाला, रखवाली करनेवाला; प्रे०-कवैआ।
तक्कर वि० परेशान;-करब,-होब; सं० तक्र।
तखत सं० पुं० तख्त, स्त्री०-ती; वै०-ता, तकथा।
तखरी सं० स्त्री० दे० थकरी।
तगड़ा वि० पुं० बलवान; स्त्री०-ड़ी; क्रि०-ब, तगड़ा होना।
तगदीर दे० तकदीर।
तगमा दे० तमगा।
तगाइब क्रि० स० तागा लगवाना, सिलाना; प्रे० तगवाइब, वै०-उब।
तगादा सं० पुं० तकाज़ा;-करब,-लेब; वि०-दगीर, तकाज़ा करनेवाला।
तगार सं० पुं० कड़ाही, बड़ी थाली; स्त्री०-री; प्र० -रा।
तग्गी सं०स्त्री० पतला तागा या रस्सी;-लगाइब।
तच्च दे० टच्च।
तज सं० पुं० एक जंगली पेड़।
तजब क्रि० स० छोड़ना, त्याग देना; प्रे०-जाइब, -उब; सं० त्यज्।
तजबिज सं० पुं० फर्क; अंतर;-होब,-परब।
तजबीज सं० स्त्री० प्रस्ताव, मुकदमे का फैसला; -करब; क्रि०-ब, निश्चय करना; अर० तजबीज़ (प्रस्ताव)।
तजरबा सं० पुं० अनुभव;-करब,-होब; वि०-कार, अनुभवी; वै०-जु-।
तट दे० टट।
तड़कब क्रि० अ० टूट जाना, जोर-ज़ोर से बोलना, डाँटना; प्रे०-काइब,-उब; तोड़ देना (लकड़ी को बीच से), मार देना।
तड़क-भड़क सं० पुं० आडम्बर;-की-की देब, धमकाना।
तड़का सं०पुं० बघार;-देब,-लगाइब; बड़ा सवेरा; -कें, बड़े सवेरे।
तड़कि सं० स्त्री० छत में लगनेवाली लकड़ी; कटी हुई लंबी लकड़ी।
तड़कुल दे० तरकुल।
तड़क्की सं० स्त्री० नामवरी, शाबासी, शोहरत; -होब,-करब।
तड़खर वि० पुं० गर्म (व्यक्ति);-परब,-होब; वै० -र-।
तड़तड़ वि० पुं० तेज़, बोलने में चतुर, फुर्त; स्त्री० -ड़ि।
तड़ातड़ क्रि० वि० बिना रुके (मार आदि के लिए); बं० ताड़ाताड़ि।

तत संबो० बैलों को दाहिने घूमने का आदेशात्मक शब्द; क्रि०-कारब, आगे बढ़ाना, घुमाना; दे० वहकारब; वै० तता; बायें ओर घुमाने के लिए 'व' बोलते हैं।

ततइब क्रि० स० (नाज को) हलका और बिना तेल, घी आदि के भूनना; 'तात' (दे०) से; प्रे० -वाइब,-उब।

ततकारब क्रि० स० हाँकना; बैलों को तेज़ करना; दे० वहकारब।

ततकाल क्रि० वि० तुरंत; प्र०-लै, तुरंत ही; सं० तत्काल।

ततबीर सं० स्त्री० तदबीर, योजना;-करब,-लगाइब,-लागब; वि०-री,-बिरिहा, तद्बीर करनेवाला।

ततलामतूल संबो० लड़कों के खेल में प्रयुक्त एक शब्द जिसे ज़ोर-ज़ोर से कहकर वे एक दूसरे का हाथ पकड़े घूमते हैं; वै०-लम-; इसके आगे 'भाई' और जोड़ देते हैं, उदा०-भाई-।

ततारब क्रि० स० ख़ूब गर्म करना (नाज का); तङ्ग करना, कष्ट देना; तात (दे०) से; शायद दूसरे अर्थ में 'तातार' से (?)।

तदारुक सं० स्त्री० दंड, कष्ट;-करब,-देब; वै० -कि।

तन सं० पुं० शरीर;-मन धन, सब कुछ।

तनगब क्रि० अ० कूदना, झट से उचक जाना; किसी बात पर राज़ी न होना; प्रे०-गाइब।

तनदेही सं० स्त्री० तत्परता;-करब।

तनब क्रि० अ० तन जाना, अकड़ जाना; प्रे० तानब, तनाइब, तनवाइब,-उब।

तनिआब क्रि० अ० अकड़ के खड़ा होना; प्रे० -वाइब (छाती-, छाती निकाल के खड़ा होना); 'तन' से ?

तनिक वि० पुं० थोड़ा; प्र०-का,-कै,-कौ;-भर, थोड़ा सा; वै०-नी,-नुक।

तनी क्रि० वि० ज़रा; उदा०-सुनौ,-बैठौ;-तुनी, थोड़ा-बहुत, थोड़ा-थोड़ा।

तन्नाब क्रि० अ० अकड़ना, टेढ़ा बोलना; 'तनब' का प्र० रूप।

तप सं० पुं० तपस्या;-करब, सं०।

तपनि सं० स्त्री० गर्मी;-होब;-करब; सं० तप्।

तपब क्रि० अ० प्रभाव दिखाना (व्यक्ति का), सख़्ती करना।

तपवाइब क्रि० स० तापने में मदद करना, लकड़ी आदि जलाकर किसी को गर्म करना; दे० तापब; वै०-पाइब,-उब।

तपसी सं० पुं० तप करनेवाला;-क झाँटि यस, दुबला-पतला (व्यक्ति); सं० तपस्वी।

तपहा सं० पुं० एक नदी जो अयोध्या के पास बहती है।

तपाइब दे० तपवाइब।

तपिस्या सं० स्त्री० तपस्या; वै०-स्सा, वि०-स्सी, तपस्वी; सं०।

तपोभूमि सं० स्त्री० तपस्वियों का स्थान; सं०।

तब क्रि० वि० उस समय; फिर; प्र०-बै,-बौ,-हुँ, -ब्बै,-ब्बौ, तब भी;-कै, उस समय का।

तबदील सं० पुं० परिवर्तन, बदली; भा०-ली।

तबय क्रि० वि० तभी; वै०-बै, प्र०-ब्बै।

तबलची सं० पुं० तबला बजानेवाला।

तबला सं० पुं० प्रसिद्ध बाजा;-बजाइब।

तबा सं० पुं० हृदय, जी; जेस-कहै, जैसा मन कहे, जेस-होय, जैसी इच्छा हो।

तबालति दे० तवालति।

तबाह वि० परेशान, नष्ट;-करब,-होब; भा० -ही।

तबियत सं० स्त्री० मिजाज, इच्छा;-दार, शौक़ीन; प्र० तबीयत।

तबीज सं० स्त्री० सोने या चाँदी का एक गहना जो गले या कलाई में पहनते हैं; तावीज़।

तबेला सं० पुं० अस्तबल।

तबै दे० तबय।

तबो क्रि० वि० तब भी; प्र०-बौ,-ब्ब,-ब्बौ; कविता में "तबहुँ, तबहूँ"।

तमंचा सं० पुं० पिस्तौल;-दागब,-चलाइब,-मारब।

तमकब क्रि० अ० गर्म होना, क्रोध में आना।

तमकुहा वि० पुं० तम्बाकू का अभ्यस्त; स्त्री०-ही; वै०-खु-।

तमगा सं० पुं० दे० तकमा।

तमतमाब क्रि० अ० गर्म हो जाना, क्रुद्ध होना।

तमस्सुक सं० पुं० ऋण संबंधी अदालती काग़ज़; -लिखब,-धरब।

तमहा सं० पुं० ताँबे का छोटा बर्तन, लोटा; सं० ताम्र+हा (वाला)।

तमाकू सं० स्त्री० तंबाकू; वै०-खू, वि० तमकुहा, -ही (दे०)।

तमाचा सं० पुं० चपत;-मारब,-लगाइब; मु० -लागब, बड़ा दुःख एवं आश्चर्य होना।

तमाम वि० पुं० सारा, बिलकुल; मु०-होब, समाप्त होना, थक जाना, नष्ट होना;-मी, अंतिम (रसीद आदि) प्र०-मै,-मौ; साल-तमामी, सालभर का (देना, किराया आदि)।

तमासबीन सं० पुं० दर्शक, तमाशा देखनेवाला।

तमासा सं० पुं० तमाशा, दृश्य;-होब,-करब।

तमीज़ि सं० स्त्री० विवेक, सद्व्यवहार; वि०-दार।

तमून सं० पुं० ताऊन; प्लेग;-परब; वि० तमुनहा (जिसे ताऊन हुआ हो),-ही; वै० ता-,ताउन, तऊन।

तमूरा सं० पुं० तंबूरा;-बजाइब।

तमेर सं० पुं० ताँबे का काम करनेवाला, बर्तनों की मरम्मत करनेवाला; वै०-रा, स्त्री०-रिनि; सं० ताम्र+एर, जैसे काम से कमेरा (दे०)।

तमोली सं० पुं० पान बेचनेवाला; स्त्री०-लिन; सं० तांबूल (पान)।
तय वि० निश्चित, समाप्त;-करब,-होब; वै० तै,-यँ।
तयार वि० पुं० तैयार;-करब,-होब,-रहब; स्त्री० -रि, भा०-री, प्र० तइयार।
तरंतार सं० पुं० मुक्ति;-करब,-होब।
तर अव्य०नीचे;-परब, कम होना;प्र०तरें,-हँत;-ऊपर, ऊपर नीचे;-उँछी, जुए (दे० जुआ) के नीचे लगी हुई लकड़ी।
तरई सं० स्त्री० तारा; नरई-, कोई भी (वंशवाला); सं० तारा।
तरकिहार सं० पुं० तरकी बनानेवाला; एक जाति; स्त्री०-रिनि।
तरकी सं० स्त्री० स्त्रियों के कान में पहनने का एक आभूषण जिस पर तारे का आकार बना होता है; सं० तारा + की।
तरकीब सं० स्त्री० उपाय;-करब,-लगाइब; वै०-बि।
तरकुल सं० पुं० ताड़ का पेड़;-यस, बहुत लंबा।
तरक्की सं० स्त्री० उन्नति; प्र०-इ-।
तरखर वि० पुं० बात करने में तेज़ या गर्म; -परब, गर्म बात करना, धमकी देना।
तरछट सं० पुं० किसी पेय पदार्थ के नीचे का भाग; तर (नीचे)+छूँटब (दे०); वि०-हा, जिसमें तरछट हो।
तरज सं० पुं० विधि, प्रणाली, तर्ज़; वि०-दार।
तरजुमा सं० पुं० अनुवाद;-करब,-होब।
तरफ सं० पुं० ओर;-दार, पक्ष करनेवाला;-दारी पक्षपात।
तरब क्रि० अ० तरना; प्रे० तारब; घी या तेल में भूजना; प्रे०-वाइब।
तरमीम सं० स्त्री० परिवर्तन;-करब,-होब; यह शब्द मुकदमों के संबंध में प्रयुक्त होता है।
तरवा सं० पुं० तलवा; वै० तरुआ;-क धूरि, तुच्छ; सं० तल।
तरवारि सं० स्त्री० तलवार; "जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवारि?"; सं० तर्वार।
तरस सं० पुं० दया;-करब,-खाब; प्र० तरास।
तरसब क्रि० अ० तरसना; प्रे०-साइब,-उब; सं० तृष् (प्यासा रहना)।
तरह अव्य० भाँति।
तराई सं० स्त्री० पहाड़ के नीचे का देश; वि० तर-इहा, ऐसे प्रांत का; तर (दे०) से; सं० तल।
तराजू सं० पुं० तराज़ू।
तराब क्रि० अ० नीचे जाना; 'तर' (दे०) से।
तरायल वि० नीचे रहनेवाला; अधीन।
तरावट सं० स्त्री० तर होने का गुण।
तरास सं० पुं० कष्ट; दया, तर्स;-देब,-खाब,-करब; सं० 'त्रास' तथा 'तर्स' दोनों को एक कर दिया है।
तरासब क्रि० स० काटना।
तरिवर सं० पुं० पेड़; फलवाला पेड़, सुंदर पेड़; सं० तरुवर।
तरी सं० स्त्री० पुराना एकत्रित किया हुआ धन; निधि;-होब,-रहब; 'तर' (नीचे) से=नीचे गड़ा हुआ धन;-तापड़ी; बचा खुचा धन; वै० तड़ी-।
तरीख सं० स्त्री० तारीख;-परब,-डारब; वै० ता-।
तरें क्रि० वि० नीचे; प्र० तरैं (नीचे ही), तरैतर, नीचे ही नीचे;-परब, कम महत्त्वपूर्ण होना।
तरेरब क्रि० स० घूर-घूर कर ताकना, क्रोध से देखना।
तरैहा वि० पुं० तराई का रहनेवाला; वै० तरइहा (दे० तराई)।
तरोई सं० स्त्री० भिंडी, तरोई; जल-, मछली।
तरौंछी सं० स्त्री० जुआठा (दे०) के नीचे लगी हुई लकड़ी; वै० तरउछी (दे० तर); 'तर' से।
तलख वि० पुं० तेज़ (नमक); अधिक खट्टा या मीठा;-होब।
तलफब क्रि० अ० किसी व्यक्ति या वस्तु के अभाव में कष्ट पाना; प्रे०-फाइब।
तलब सं० स्त्री० वेतन; बुलावा;-तनखाह, प्राप्ति; -होब, बुलाया जाना; प्र०-बी (दूसरे अर्थ में)।
तलबाना सं० पुं० किसी को कचहरी में बुलाने की फ़ीस; चपरासी की उजरत।
तलबी सं० स्त्री० आवश्यक बुलावा; क्रि०-बिआइब, आज्ञा देना।
तलरी सं० स्त्री० तलैया; छोटा तालाब; ताल-, छोटे-बड़े सभी गड्ढे।
तलसवाइब क्रि० स० तलाश कराना; 'तलासब' का प्रे० रूप; भा०-ई, तलाश कराने की क्रिया, उसका ढंग, पारिश्रमिक आदि।
तलहा सं० पुं० वह जानवर जो ताल या नदी में घोंघे (दे० घोंघा) के भीतर पाया जाता है; 'ताल' से (ताल + हा = ताल वाला)।
तलातल सं० पुं० पृथ्वी के नीचे का एक काल्पनिक भाग जो रसातल के ऊपर है।
तलाव सं० पुं० तालाब; स्त्री०-ई; तुल० सिमिटि-सिमिटि जल भरै तलावा।
तलास सं० स्त्री० खोज,-करब; क्रि०-ब, खोजना; -सी, घर या व्यक्ति की तलाशी जो चोरी के संदेह में होती है;-सी लेब,-करब,-देब,-होब।
तलिआ सं० स्त्री० छोटा सा ताल; वै०-या।
तलीका सं० पुं० तलाशी;-लेब।
तलीन वि० पुं० तैयार (प्रबंध आदि);-होब,-करब; वै०-म।
तलैआ सं० स्त्री० दे० तलिया; वै०-या।
तव अव्य० तो; वै० तौ।
तवन वि० पुं०वही; स्त्री०-नि, प्र०-नै,-नौ; 'जवन' (जो) के साथ प्रयुक्त।
तवर सं०पुं० तरीका, तौर; वै०-उर।

तवान सं० पुं० दण्ड के रूप में लिया गया द्रव्य; -देब,-परब।
तवायफ सं० स्त्री० वेश्या।
तवालति सं० स्त्री० तकलीफ़, कष्ट;-करब,-होब।
तस वि० पुं० तैसा; जस...तस; प्र० तइसन,-सै, -सनै,-सस (वैसे वैसे)।
तसबीर सं० स्त्री० चित्र; वै०-रि।
तसमई सं० स्त्री० खीर; यह शब्द साधुओं द्वारा ही प्रयुक्त होता है।
तसला सं० पुं० बड़ा सा कटोरा; स्त्री० ली।
तह सं० पुं० तह; पर्त; रहस्य;-परब,-रहब, भेद होना, रहस्य रहना; तहै-तह, एक-एक पर्त।
तहदर्द वि० पुं० ताज़ा, नया (कपड़ा या कागज़); प्र०-र्दै।
तहवील सं० स्त्री० कोष; जमा किया हुआ धन; -दार, तहसील का वह कार्यकर्त्ता जो जमा का हिसाब रखता है।
तहरी सं०स्त्री० हरे मटर, आलू आदि की खिचड़ी; -चढ़ाइब, भोजन का अनावश्यक प्रबंध करना।
तहवाँ क्रि० वि० वहीं; प्र०-वैं।
तहस-नहस वि० नष्टप्राय; परेशान;-करब,-होब।
तहाँ क्रि० वि० वहाँ; प्र०-हैं,-हौं।
तहाइब क्रि० स० तह करना; प्रे०-हवाइब; वै० हिआइब,-याइब,-उब।
तहिआ क्रि० वि० ताकि, तिस दिन, उस रोज़; जहिआ...तहिआ, जिस दिन...उस दिन; प्र० -यैं।
तहैं क्रि० वि० वहीं, उसी स्थान पर;-हौं, वहाँ भी; वै०-हवैं।
ताइब क्रि० स० मिट्टी से बंद करना; गीली मिट्टी या आटे से बर्तन या 'डेहरी' (दे०)का मुँह बंद कर देना;-तोपब,-मूनब, सुरक्षित करना, बचाकर रखना; प्रे० तवाइब,-उब; वै०-उब।
ताउन सं० पुं० दे० तमून।
ताक सं० पुं० घात;-मैं रहब, ताक में रहना।
ताकति सं० स्त्री० ताक़त, शक्ति; वि०-दार; वै० -गति।
ताकब क्रि० अ० ताकना, देखना, रखवाली करना; प्रे० तकाइब।
ताक-तूक सं० पुं० एक दूसरे की प्रतीक्षा (किसी काम के प्रारम्भ करने में); ढील-ढाल, टालमटोल; -करब,-होब।
ताख सं०पुं० ताक; संख्या जो असम हो, जैसे ३, ५, ७; जूस-ताख, खेल जिसमें बच्चे कौड़ियाँ हाथ में छिपाकर एक दूसरे को बुझाते हैं; दे० जूस; पहले अर्थ में वै० ताखा।
ताखा सं० पुं० ताक; आला जो दीवार में बना हो।
ताग सं० पुं० धागा; पतला भाग (कपड़े या डंठल आदि का); तागै-ताग, एक-एक करके, थोड़ा-थोड़ा (एकत्र करना);-पाट, वह रंगीन धागा जो ब्याह में जेठ वधू के ऊपर डालता है;-डारब; ताग+पाट (वस्त्र)।
तागति दे० ताकति।
तागब क्रि० स० धागा डालना, सीना; प्रे० तगाइब,-उब।
ताँजा वि० पुं० ताज़ा; स्त्री०-जी; प्र०-जै।
ताजिया सं० पुं० ताजिया जो मुसलमान मुहर्रम में सजाते हैं;-उठब,-बैठब; दे० दाहा।
ताजी सं० स्त्री० कुत्तों की एक जाति।
ताजुब सं० पुं० ताज्जुब, आश्चर्य; वै०-ब।
ताड़ सं० पुं० ताड़ का पेड़।
ताड़का सं० स्त्री० प्रसिद्ध राक्षसी जिसका राम ने बध किया था; वै०-ड़ुका।
ताड़ब क्रि० स० ताड़ लेना, भाँप जाना।
ताड़ी सं० स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकलनेवाला रस; हथेली से बाँह ठोंकने की क्रिया;-ठोंकब;-चुआइब, -पियब।
तात वि० गर्म (भोजन का पदार्थ); प्र०-तै; तातैतात-गर्मागर्म।
ताधिन सं० पुं० तबले का शब्द;-ताधिन होब, ऐसी ध्वनि होना; प्र० ताकधिनाधिन।
तान सं० स्त्री० गीत की वह पंक्ति जो बार-बार दुहराई जाय;-लगाइब, बात को बढ़ाना;-बीन करब, प्रयत्न करना;-तून, तरकीब; वि०-नी, व्यर्थ का आंडबर करनेवाला।
तानब क्रि० स० तानना; सख्ती करना, दण्ड देना; प्रे० तनाइब,-नवाइब।
ताना सं० पुं० व्यङ्ग;-मारब, कटाक्ष करना।
तानी वि० तानवाला, व्यर्थ के लिए बात बढ़ानेवाला; दोनों लिंगों में यह एक सा रहता है। दे० तान।
ताप सं० पुं० मछली पकड़ने का टोकरा जिसमें दोनों ओर छेद होते हैं; वै०-पा;-लगाइब, ताप की सहायता से मछली पकड़ना।
तापब क्रि० अ० तापना, शरीर को गर्म करना; प्रे० तपाइब,--पवाइब,-उब।
तापस सं० पुं० संन्यासी।
ताफता सं० पुं० एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा (सा०)।
ताब सं० पुं० बल, शक्ति (शारीरिक); आब-, काम करने की शक्ति; आब-सें, सशक्त।
ताबा सं० पुं० अधिकार, प्रभाव;-बे में, अधीन।
ताबीज दे० तबीज।
ताम सं०पुं० ताँबा; प्र०-मा; सं०ताम्र; दे०तमहा।
तामून दे० तमून।
तार सं० पुं० धागा; किसी धातु का पतला लंबा टुकड़ा; तार द्वारा भेजा समाचार;-पठइब,-देब, -मारब,-लगाइब;-भाठ, किसी प्रकार निर्वाह; कठिनता का जीवन;-भाठ करब, होब।

तारब क्रि० स० तारना;-मारब, किसी प्रकार पूरा करना, नुकसान भरना; कसके काम लेना, दुःख देना; प्रे० तराइब,-रवाइब,-उब।

तारू सं० पुं० तालू; सं० तालु।

ताल सं० पुं० तालाब; सङ्गीत का ताल;-तलरी (दे०); सुर-,-सुर;-बैठब, ठीक प्रबन्ध हो जाना, -बैठाइब;-करब, नष्ट कर देना (घर, गाँव आदि)।

ताला सं० पुं० ताला; कुंजी-, ताला-कुंजी;-क भित्तर, बंद, सुरक्षित;-मारब,-लगाइब,-देब।

ताव सं० पुं० आवश्यकता; पकने या तैयार होने की स्थिति; कागज़ का पर्त;-पाइब,-मिलब,-लागब; क्रि० तउआब; यक-, दुइ-।

तावा सं० पुं० तवा; वि० ढका या बंद;-तोपा, सुरक्षित।

तावान सं० पुं० जुर्माना, वह मूल्य जो निश्चित समय के बाद देना पड़े;-देब,-लेब,-लागब।

तास सं० पुं० ताश; तिन-तसवा, इधर का उधर; -लगाइब, इधर का उधर लगाना।

तासा सं० पुं० एक बाजा जिसमें एक ओर चमड़ा लगा होता है।

ताहम क्रि० वि० तब भी, तिस पर भी, ऐसा होने पर भी।

तिउरा सं० पुं० एक प्रकार की सरसों जिसका तेल खाने के काम में नहीं केवल लगाने या जलाने में प्रयुक्त होता है।

तिउराइन सं० स्त्री० तिवारी की स्त्री, वै०-नि।

तिकड़म सं० पुं० चाल, तरकीब; वि०-मी।

तिकतिक सं० पुं० "तिक-तिक" शब्द, जानवर को हाँकने का शब्द; वै०-ग-ग।

तिकतिकाइब क्रि० स० तिकतिक करना; हाँकना, उत्तेजित करना; वै०-ग-गाइब।

तिक्की सं० स्त्री० ताश जिस पर तीन चिह्न हों; वै० -ग्गी।

तिखरब क्रि० अ० स्पष्ट होना प्रे०-खारब, स्पष्ट करना (बात का); भा० तिखार।

तिखार सं० पुं० स्पष्टीकरण;-करब,-होब; क्रि० -ब, प्रे०-खरवाइब; प्र०-ड़।

तिगुना वि० पुं० तीन गुना; स्त्री०-नी; सं० त्रिगुण।

तिग्गी दे० तिक्की।

तिजरा सं० पुं० ज्वर जो तीसरे दिन चढ़े; वै० -रिआ; सं० त्रि+ज्वर।

तिड़काइब क्रि० स० हटा देना (व्यक्ति को); प्रे० -कवाइब।

तितऊ वि० पुं० कड़वा (फल); इसी प्रकार 'मिठऊ' भी फल के लिए आता है।

तितलौकी सं० स्त्री० कड़ुई लौकी; तीत (दे०)+ लौकी।

तितवाइब क्रि०स० कड़वा कर देना; वै०-उब; सं० तिक्त।

तिताब क्रि० अ० कड़ुआ होना,-लगना; 'तीत' से; सं० तिक्त; प्रे०-तवाइब।

तितिला सं० पुं० एक गीत जो प्रायः जाँत चलाते समय स्त्रियाँ गाती हैं।

तितिली सं० स्त्री० तितली; एक छोटा जंगली पौदा जो गर्मियों में प्रायः खेतों में उगता है। इसके बीजों से तेल निकालकर जलाने के काम में लाते हैं।

तिती-तिती सं० स्त्री० निंदा के शब्द; निंदा;-होब, -करब।

तित्तिर सं० पुं० तीतर; वै० तीतिर, तिचिल; पहे०-तित्तिर के दुइ आगे-, तित्तिर के दुइ पाछे-, बूझौ कुलि कै तित्तिर ? (तीन) सं०।

तिदरा वि०पुं० तीन दरवाला (घर); सं०त्रि + दर।

तिथा सं० पुं० विश्वास, निश्चय;-परमान, ठिकाना, भरोसा;-होब,-करब।

तिथि सं०स्त्री० महीने का दिन (चंद्रमा की गणना से); किसी मृत व्यक्ति की स्मृति में किया भोजन; -खाब,-खवाइब; सं०।

तिनका सं० पुं० घास का तिनका।

तिन्ना सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो तालाब में होता है; स्त्री०-न्नी;-क चाउर, फलाहार का चावल।

तिपाई सं० स्त्री० तिपाई; तीन पैरवाली बेंच; सं० त्रिपाद।

तिय सं० स्त्री० स्त्री; वै०-या (कविता में प्रयुक्त); प्र० ती-;सं० स्त्री।

तियाला सं० पुं० तीसरा व्यक्ति; प्र०-लै,-यलवै।

तिरखा सं० स्त्री० प्यास;-होब,-लागब; सं० तृषा, मा० तीस।

तिरछा वि०पुं०तिर्छा; स्त्री०-छी; क्रि०-ब,-इब,-उब, तिरछा होना,-करना।

तिरवाइब दे० तिराब।

तिरवाह सं० पुं० नदी के किनारे का क्षेत्र, गाँव आदि;-वहा; ऐसे क्षेत्र का रहनेवाला, सीधा-सादा; सं० तीर + वाह,-हें, ऐसे क्षेत्र में।

तिरसठि सं० स्त्री० तिरसठ; सं० त्रिषष्ठि।

तिरसुति सं० स्त्री० जनेऊ के तीन सूत; एक जनेऊ (जोड़ा नहीं); सं० त्रिसूत्र।

तिरसूल सं० पुं० त्रिशूल; सं०।

तिरहुत सं० पुं० तिरहुत का क्षेत्र;-तिआ, वहाँ का निवासी; सं० तीर-भुक्त।

तिराब क्रि० अ० किनारे पहुँचना; मु० समाप्त करना, पूरा कर डालना; प्रे०-रवाइब,-उब;पैसे का नुकसान पूरा करना, दे० तीर; सं०।

तिरिआ सं० स्त्री० स्त्री, महिला, पहे० पुरुब देस से आई-, अन्न खाय पानी कै किरिआ।

तिल सं० पुं० तिल; स्त्री०-ली; क्रि० वि०-लै-तिल, थोड़ा-थोड़ा; माघ तिलै-बाढ़ै, फागुन गोड़ा काढ़ै; सं०।

तिलक सं० पुं० टीका (मत्थे का); स्त्री० शादी के पूर्व का कृत्य जिसमें ससुराल के लोग भावी वर को द्रव्य, नारियल आदि समर्पित करते हैं; इस दूसरे अर्थ में वै०-कि;-हरू, जो लोग तिलक लेकर आवें;-लगाइब,-देब; दूसरे अर्थ में,-चढ़ब,-चढ़ाइब, -लाइब,-धरब,-आइब ।

तिलमिलाब क्रि० अ० तिलमिलाना; दुखित होना।

तिलरब क्रि० स० तीन लड़ करना; प्रे०-राइब, -रवाइब,-उब;-री, तीन लड़ का एक आभूषण जो स्त्रियाँ पहनती हैं।

तिलवा सं० पुं० तिल का लड्डू ।

तिलहन सं० पुं० तेल देनेवाले अन्न जैसे सरसों आदि; सं० तिल ।

तिलैंठा सं० पु० तिल का डाँट (दे०); दाने निकालने के बाद तिल का सूखा पेड़ ।

तिल्लोक सं० पुं० त्रिलोक; तीनि-, सारा त्रिभुवन, प्र० तीनिउ-;तीनिउ-सूझब, परम आनंद आना; सं० त्रिलोक ।

तिल्लोकीनाथ सं०पुं० भगवान्, सं० त्रि- ।

तिवहार सं० पुं० त्योहार;-री, भोजन मिठाई या द्रव्य जो त्योहार पर दिया जाय; वै०-उ, तेव-।

तिवारी सं० पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा; त्रिपाठी; स्त्री०-वराइनि,-उराइन।

तिसकुट सं० पुं० अलसी का कुटा हुआ डंठल; खलिहान का चूरा; वि०-कुटहा; तीसी (दे०) + कूटब ।

तिसरा वि०पुं० तीसरा, तिहाई; सं० अन्य; स्त्री० -री, तीसरी; तीसरा भाग; क्रि० वि० तिसरौवाँ, तीसरी बार ।

तिसाला क्रि० वि० तीसरे साल; सं० त्रि+फ़ा० साल ।

तिसिहा वि० पुं० जिसमें तीसी या अलसी हो; तीसीवाला (खेत), तीसी मिला हुआ (अन्न) ।

तिहत्तरि वि० सं० सत्तर और तीन;-वाँ ।

तिहाई सं० पुं० तीसरा भाग; स्त्री० फ़सल ।

तीजि सं० स्त्री० पाख का तीसरा दिन; स्त्रियों का त्योहार जो भादों की तीज को पड़ता है;-होब, -पठइब,-जाब,-आइब; सं० तृतीय ।

तीत वि० पुं० कड़ुवा; स्त्री०-ति; मु० बैरी,-होब; -मीठ, सभी प्रकार के अनुभव;-मीठ जानब, खूब परिचित होना; क्रि० तिताब, कड़वा लगना; सं० तिक्त।

तीनि वि० सं० तीन;-तेरह, ब्राह्मणों के कई भेद; -तेरह होब, अलग हो जाना ।

तीय सं० स्त्री० स्त्री; कविता में प्रयुक्त; सं० स्त्री; दे० तिय, प्र०-या ।

तीर सं० स्त्री० बाण; मु०-मारब,-छोड़ब, तरकीब लगाना; कहा० लागै त-नाहीं तुक्का; वै०-रि ।

तीर सं० पुं० किनारा, नदी का किनारा;-रें, तीर पर, किनारे; क्रि० तिराब; तीरें-तीरें, किनारे-किनारे ।

तीली सं० स्त्री० लंबी कील जो छतरी आदि में लगी होती है ।

तीस वि० सं० तीस; सं० त्रिंशति ।

तीसमार वि० पुं० जो बहादुरी का गर्व करे, पर वास्तव में डरपोक हो;-खाँ ।

तीसर वि० पुं० तीसरा, अन्य; दे० तिसरा ।

तीसी सं० स्त्री० अलसी ।

तीहा सं० पुं० धीरज;-धरब,-देब,-होब; वै० ते-;सं० तीक्ष्ण ।

तुक सं० पुं० तुक, औचित्य;-रहब,-होब ।

तुक्का सं० पुं० मौका, अवसर;-लागब, अच्छा अवसर हाथ लगना; दे० तीर ।

तुच्चई सं० स्त्री० तुच्चापन, नीचता;-करब; प्र० टु-।

तुच्चा वि० पुं० नीच, संकीर्ण-हृदय; स्त्री०-च्ची; प्र० टु-;सं० तुच्छ ।

तुनि सं० स्त्री० एक पेड़ जिसके फूल से रंग बनता है ।

तुपक सं० स्त्री० तोप; छोटी तोप; वै०-कि; तीर-, लड़ाई के सामान ।

तुफ़ान सं० पुं० तूफ़ान; आँधी; आफ़त;-आइब, -होब,-चलब; वि०-नी, झंझट करनेवाला ।

तुम दे० तूँ ।

तुम्मी सं० स्त्री० भिक्षुक का बर्तन; लौकी का बना बर्तन; पुं०-म्मा, तुमड़ा,-ड़ी; कहा० भीखि न देय त-न फोरै;-लगाइब, खराब खून निकालने के लिए किसी अंग में-लगना ।

तुम्हार दे० तुहार ।

तुरंग सं० पुं० घोड़ा; कविता में 'तुरग' भी प्रयुक्त; कहा० चलि-चलि मरै बरदवा बइठें खायँ तुरंग ।

तुरत क्रि० वि० तुरंत, प्र०-तै,रंतै ।

तुरपब क्रि० स० कच्ची सिलाई करना; जल्दी-जल्दी सीना; भा०-पाई, प्रे०-पाइब,-पवाइब,-उब ।

तुरवाइब क्रि० स० तुड़वाना, तोड़ने में सहायता करना; 'तूरब' का प्रे० भा०-ई, वै०-उब ।

तुरसी सं० स्त्री० खटाई, खट्टापन ।

तुरही सं० स्त्री० भोंपू की तरह का बाजा जो मुँह से बजाते हैं; वै०-रु-।

तुराइब क्रि० अ० (पशु का) रस्सी तोड़ के भागना; -फनाइब, खूँटा छोड़कर अन्यत्र जाने का प्रयत्न करना; मु० (व्यक्ति का) घबराकर भागना, उकताना; तोड़ने में मदद करना, तुड़वाना; प्रे० -रवाइब; पुं०वि० तुरान, रस्सी तोड़कर भागा हुआ (पशु), स्त्री०-नि ।

तुरुक सं० पुं० तुर्क, मुसलमान; वि०-रकिआ, मुसलिम,-नाऊ, मुसलिम नाई (हिंदू से भिन्न); भा०-ई; स्त्री०-किनि ।

तुलतुलाब क्रि० अ० साफ़-साफ़ न बोलना; सीधी भाषा न निकलना ।

तुलब क्रि० अ० समता करना, बराबर होना; सं० तुल; प्रे० तउलब (दे०)।
तुलवाई सं० स्त्री० तैयारी;-करब,-होब; फ़ा० तूल (चौड़ा)।
तुलसी सं० स्त्री० प्रसिद्ध पौदा जिसकी पूजा होती है;-माता,-जी;-दास, प्रसिद्ध कवि, वै०-महराज; कभी-कभी प्रेमपूर्वक महत्व दिखाने के लिए 'तुलसा' (प्र०) बोलते हैं; तुलसाजी,-माता।
तुला सं० स्त्री० तराजू; कविता में प्रयुक्त;-दान, दान जिसमें व्यक्ति को तौला जाता है। सं०।
तुव सर्व० तुम्हारा (कविता में); सं०।
तुसार सं० पुं० पाला, ज़ोर की ठंड;-परब,-गिरब; सं० तुषार।
तुहार सर्व० पुं० तुम्हारा; स्त्री०-रि, वै० तो-;-मार, -म्हार (सी०); प्र० तोहरै,-रौ।
तुहीं सर्व० तुम्हीं।
तुहूँ सर्व० तुम भी।
तुहें सर्व० तुमको।
तैं सर्व० तुम; सं० त्व; पं० तुसी, बं० तुमि।
तूति सं० स्त्री० तूत, शहतूत।
तूती सं० स्त्री० एक चिड़िया; मु०-बोलब, नाम होना, रोब रहना।
तूर-फार सं० पुं० काट-कूट, कमीबेशी (विशेषतः तिथि में);-होब।
तूरब क्रि० स० तोड़ना;-तारब,-फारब।
तेइस वि० सं० बीस और तीन;-वाँ,-ईं, २३वाँ, २३वीं; सं० त्रिविंशति।
तेई सर्व० वही;-ऊ, वह भी; कहा० तेऊ तइसै, तेऊ तइसै, दोनों ही एक से (बुरे)।
तेकर सर्व० पुं० उसका, स्त्री०-रि,-रे, उसके; कविता में "तेहिकर"; प्र०-हकर।
तेकाँ सर्व० उसको; प्र०-हिकाँ।
तेग सं० पुं० तलवार, डण्डा;-गा, बड़ा डंडा।
तेज सं० पुं० प्रकाश, चमक; सं०।
तेज वि० पुं० तीक्ष्ण, चतुर, होशियार, जल्दी काम करनेवाला; स्त्री०-जि।
तेनु सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ और उसका फल; वै० बन-।
तेरज सं० पुं० आपत्ति, बाधा;-करब, बाधा डालना, आपत्ति करना; एतराज।
तेरह वि० सं० दस और तीन;तीन-,भिन्न-भिन्न (ब्राह्मणों के ३ और १३ मुख्य गोत्रों से)-ही, सं० स्त्री० मरने के तेरहवें दिन का कृत्य, ब्राह्मण भोज आदि;-करब,-होब।
तेल सं० पुं० तेल;-पेरब,-पेराइब; क्रि०-वाइब,गाड़ी के पहियों में तेल डालना;-वानि, विवाह के पहले एक कृत्य जिसमें स्त्रियाँ तेल लगाती हैं। सं० तैल।
तेलिआ सं० पुं० एक प्रकार का तेल जो वर्षा में पृथ्वी से निकलता है;-चुअब, ऐसे तेल का निकलना।
तेलिया कोल्हू सं० पुं० तेल पेरने का कोल्हू।
तेली सं० पुं० तेल पेरनेवाला; एक जाति; स्त्री० -लिनि।
तेवरी सं० स्त्री० तेवर; वै०-उ-;-बदलब, दूसरी ओर ताकना,-फेरब।
तेस वि० पुं० तैसा, वैसा; स्त्री०-सि; क्रि० वि० तेसस, तैसा तैसा; वै० त्यस।
तेसें सर्व० उससे; प्र०-हसें।
तेहकर सर्व० पुं० उसका; 'तेकर' का प्र० रूप; स्त्री-रि।
तेहरा वि० पुं० तीन पर्त का (कपड़ा आदि); स्त्री० -री, क्रि० तेहरब, तीन पर्त करना,-इब, तीसरी बार करना, देना आदि; दोहरा-।
तेहलाँ क्रि० वि० तीसरी बार (पशु का गाभिन होना या ब्याना); वि० तीसरी बार ब्याई हुई।
तेहवार दे० तिवहार।
तेहसें दे० तेसें।
तेहा दे० तीहा।
तैं दे० तय।
तैकै क्रि० वि० तब फिर; तुरंत ही फिर; वै० तइकय, -उ-, तइकै; तौ-।
तैस सं० पुं० क्रोध;-आइब;-मैं आइब।
तैहा दे० तहिया।
तोई सं० स्त्री० लहँगे, कुर्ते आदि का किनारा; -लागब,-लगाइब;-नेफा (दे० नेफा)।
तोख सं० पुं० संतोष;-होब,-करब; सं० तुष्।
तोड़ सं० पुं० जोर, प्रवाह;-करब,-मारब।
तोड़ा सं० पुं० रुपया पैसा रखने की लंबी थैली; एक-, दुइ-रुपया; प्र०-ही।
तोतरि वि० स्त्री० तुतलाहटवाली, तोतली, अस्पष्ट (बात); तुल० तोतरि बाता।
तोनारा वि० पुं० जिसकी बड़ी तोंद हो; स्त्री०-री; वै०-निआर,-नार।
तोनि सं० स्त्री० तोंद; उँगली का सिरा (भीतर की ओर का); क्रि०-आब, वि०-हा।
तोप सं० स्त्री० तोप; तुपक।
तोपना सं० पुं० ढकना; वस्तु जिससे कुछ ढका जाय; वै० त्वपना।
तोपब क्रि० स० ढकना, मूँदना;-ढाकब; प्रे० तोपाइब,-पवाइब।
तोफाँ वि० उम्दा; यह शब्द दोनों लिंगों में एक-सा रहता है। फ़ा० तोहफ़ा?
तोबड़ा सं० पुं० घोड़े के खिलाने के लिए मोमजामा का बर्तन जिसमें चना आदि रखकर उसकी गर्दन में टाँग देते हैं।
तोबा सं० पुं० किसी काम के न करने का प्रण; -करब, ऐसा प्रण करना; तोबः।
तोमड़ा सं० पुं० बड़ा तुम्मा या तुमड़ा; दे० तुम्मा।

तोर सर्वं० पुं० तुम्हारा; स्त्री०-रि;-मोर करब, परस्पर स्वार्थ की बातें करना,-होब।
तोला सं० पुं० रुपये भर का तोल; यक-, दुइ-।
तोसा सं० पुं० गृह देवता को चढ़ाने के लिए कई अन्नों का बना हुआ मोटा मीठा रोट; न्योरा (दे०)-।
तौ अव्य० तो; जौ-, यदि;-कै, तो फिर, तब, तत्पश्चात्।
तौर दे० तउर।
तौवाब क्रि० अ० ताव (दे०) का अनुभव करना; ताव में आना।
तौहीनी सं० स्त्री० अपमान;-करब,-होब।

# थ

थइला सं० पुं० थैला; स्त्री०-ली।
थइहाइब क्रि० स० थाह लेना, पता लगाना; वै० -हिआइब।
थई सं० स्त्री० विश्वास, भरोसा;-होब; दे० थया; सं० आस्था।
थउना दे०-वना।
थकब क्रि० अ० थकना, असमर्थ होना; प्रे०-काइब, -कवाइब,-उब।
थकरी सं० स्त्री० स्त्रियों के बाल साफ करने की कूची; क्रि०-रिआइब, थकरी से साफ करना।
थकहर वि० पुं० थका हुआ; वृद्ध; स्त्री०-रि।
थका सं० स्त्री० थकावट; वै०-नि;-मिटब,-मिटाइब, -लागब।
थकानि सं० स्त्री० थकावट।
थन सं० पुं० स्तन, गाय, भैंस आदि का थन; प्र०-न्ह;-काढ़ब, (ब्याने के पहले) बड़े-बड़े थन निकालना; ब्याने के निकट होना; सं० स्तन।
थनइली सं० स्त्री० स्तन की एक बीमारी जिसमें वे पक जाते हैं; प्र०-न्ह-; 'स्तन' से।
थपकियाइब क्रि० स० थपकी लगाना; वै० -आ-।
थपकी सं० स्त्री० थपकी; पुं०-क्का।
थपथपाइब क्रि० अ० थपथप करना।
थप्पड़ सं० पुं० तमाचा;-मारब,-लगाइब।
थबरा सं० पुं० तमाचा;-मारब; क्रि०-रिआइब, मारना, चपत लगाना।
थमब क्रि० अ० रुकना, गर्भवती होना; प्रे० -माइब, थामब; वै०-म्हब; सं० स्तंभ।
थम्हना सं० पुं० हत्था, जिससे कोई वस्तु थामी या पकड़ी जाय।
थम्हाइब क्रि० स० रोकना (व्यक्ति को), पकड़ाना, हाथ में देना; प्रे०-वाइब।
थया सं० स्त्री० विश्वास; प्र० थाया;-परमान, भरोसा, ठिकाना;-रहब सं० आस्था।
थरथर क्रि० वि० बार-बार;-काँपब; क्रि०-राब, बुरी तरह काँपना;-राइब, कँपवाना, कँपाना।
थरिआ सं० स्त्री० थाली; वै०-या; यक-, दुइ-, थाली भर (भात आदि); सं० स्थाली।
थरुहट सं० पुं० थारुओं की बस्ती; थारुओं का पुराना डीह; वै०-टि।
थरोंब क्रि० अ० काँप उठना; प्रे०-इब,-रँवाइब, घबरवा देना।
थल सं० पुं० सूखी भूमि; जल-;-ठेपा, रहने का स्थान, स्थायित्व;-होब,-रहब,-करब; सं० स्थल।
थल्हकब क्रि० अ० (गाय या भैंस का) ब्याने के निकट होना; प्रे०-काइब।
थवई सं० पुं० राज; ईंटे गारे का मिस्त्री; भा० -पन,-गीरी।
थवना सं० पुं० घड़ा रखने के लिए मिट्टी की बनी गोल चीज़; सं० स्था।
थहवाइब क्रि० स० थाह लेने के लिए कहना, मदद करना आदि।
थहाइब क्रि० स० थाह लेना; प्रे०-वाइब।
थाकि सं० स्त्री० सिवाने का पत्थर, सीमा का चिह्न।
थान सं० पुं० कपड़े का थान, मूजे या गन्ने का का समूह; गहने का पूरा सेट;-थारा, तिलक में दिया हुआ थाल, कपड़े आदि; वै०-न्ह।
थान्ह सं० पुं० स्थान; देवता का स्थान;-पवान, उचित स्थान;-ने-पवाने, अपने स्थान पर (व्यक्ति या देवता का); सं० स्थान।
थान्हा सं० पुं० पुलिस स्टेशन;-पुलुस, पुलिस की कारवाई;-करब,-होब, ऐसी कारवाई करना, होना।
थान्हेदार सं० पुं० दरोग़ा; सबइंस्पेक्टर; भा० -री।
थाप सं० पुं० स्थापना; क्रि०-ब, (देवता को किसी स्थान या व्यक्ति पर) स्थित कर देना; प्रे० थपाइब,-वाइब सं० स्थाप्।
थाम सं० पुं० लकड़ी का खंभा जिसपर छप्पर रखा जाय या ठेकुर (दे०) खड़ी हो; वै०-म्ह; -थूनी (दे०)।
थामब क्रि० स० पकड़ना, सहायता करना; वै० -म्ह-, प्रे० थमाइब,-म्हा-,-म्हवाइब,-उब; सं० स्तंभ्।
थाया दे० थया।

थार सं० पुं० बड़ा थाल; प्र०-रा; स्त्री०-री; वै० थरवा सं० स्था।
थारी सं० स्त्री० थाली;-परसब,-टारब, खाना देना;-टारि लेब, रखा हुआ खाना उठा लेना।
थारू सं० पुं० एक पहाड़ी जाति जो जादू टोना करती है; स्त्री०-इनि, झगड़ालू स्त्री।
थाह सं० स्त्री० गहराई की नाप;-लेब, पता लगाना;-पाइब, पता पाना; क्रि० थहाइब।
थाहि सं० स्त्री० डाल।
थिर वि० स्थायी;-करब,-होब; वै० अह- (दे०); भा० अहथिरई; तुल० खल की प्रीति जथा-नाहीं; सं० स्थिर।
थिरकब क्रि० अ० थिरकना; प्रे०-काइब,-कवाइब।
थिराब क्रि० अ० (पानी का) स्थायी होकर साफ़ हो जाना; (पशु का) गर्भ धारण के लिए स्थिर होना; प्रे०-रवाइब,-उब; सं०स्थिर।
थुआ दे० थुवा, थुड़ी।
थुक सं० पुं० थूक; क्रि०-ब।
थुकब क्रि० अ० थूकना; स० निंदा करना; प्रे० -काइब,-कवाइब; भा०-काई,-कासि।
थुकरब क्रि० स० पीटना, खूब मारना; प्रे०-करवाइब; वै० थुरब।
थुकलहा वि० पुं० थूका हुआ; स्त्री०-ही, वै०-हका, -की।
थुक्का-फजिहति सं० स्त्री० दुर्दशा, बदनामी; -करब,-होब, दे० फजिहति।
थुड़ी सं० स्त्री० निंदा;-थुड़ी करब, धिक्कारना; -है, धिक् है।
थुथुना सं० पुं० थूथुन; (सूअर का) मुँह; क्रि० -निआइब, थूथुन से चबाना या गोड़कर ख़राब करना; वै० थूथुन।
थुरब क्रि० स० मारना; प्रे०-राइब,-रवाइब; भा० -राई; दे०-करब।
थुवा अव्य० निंदावाचक शब्द;-थुवा करब, धिक्कारना; वै०-आ।
थूक दे० थुक, थुकब।
थून्ही सं० स्त्री० वह लकड़ी जिसे छप्पर आदि के नीचे रोकके लिए रखा जाय;-थाम, ऐसी छोटी-बड़ी लकड़ियाँ।
थूह सं० पुं० ढेर, गड्ड;-लागब,-लगाइब; वै० डू-, प्र०-हा।
थेंथर वि०पुं० परेशान, व्यग्र;-होब, चिंताओं अथवा अधिक परिश्रम के कारण थक जाना; स्त्री० रि।
थेई-थेई विस्म० वाह! वाह! यह शब्द कह-कहकर ताली बजाते हैं और छोटे-छोटे बच्चों को नचाते हैं; तबले की ध्वनि का अनुकरण सा है। ध्व०।
थोंथी सं० स्त्री० मटर आदि फलीदार नाजों का सूखी फलीवाला भाग; वै० ठोंठी।
थोक सं० पुं० पूरा हिस्सा, ढेर; गाँव का हिस्सा; -इत, एक थोक का हिस्सेदार;-कै थोक, एक-एक थोक का।
थोपब क्रि० स० लाद देना, उत्तरदायित्व देना; प्रे० -पाइब।
थोर वि० पुं० थोड़ा, कम; प्र०-रै,-रौ; क्रि०-राब, कम हो जाना,-रवाइब, कम कर देना;-का, छोटा (भाग),-रै थोर, थोड़ा ही थोड़ा, स्त्री०-रि।
थोरि सं० स्त्री० निंदा;-करब,-होब; वै०-राई।
थौना दे० थवना।

# द

दंगा सं० पुं० दंगा।
दँतइल सं० पुं० बड़े दाँतवाला हाथी; वि०-ला (-सूअर)।
दइआ विस्म० अरे दैव! दैव रे! बाप रे-, अरे-; सं० दैव; वै०-या, दै-।
दइउ सं० पुं० भगवान्;-राजा, ईश्वर एवं सरकार; -राजाबादि, यदि परमेश्वर और शासन ने कुछ रोक न की तो; -क दूसर, परम पराक्रमी; दूसरा ईश्वर;-लागब, ईश्वर ही विरुद्ध होना; वै०-व सं० दैव।
दइजा दे० दयजा।
दइत सं० पुं० दैत्य; व्यं० लंबा-चौड़ा एवं बहुत खानेवाला व्यक्ति; प्र०-इंत्र; सं० दैत्य।
दइवी सं० स्त्री ख़तरा; दैवी विपत्ति; दइवी-, आकस्मिक घटना;-होब,-रहब; सं० दैवी।
दउना दे० दवना।
दउरब क्रि० अ० दौड़ना; दौड़धूप करना; प्रे० -राइब,-रवाइब; भा०-राई;-रवाई,-पाइब, दौड़कर पकड़ लेना।
दउरा सं० पुं० टोकरा; स्त्री-री;-मउना (दे०), -री-मौनीं।
दउराल सं० पुं० दौड़-धूप;-परब,-करब; वै० -लि।
दकब क्रि० वि० कब? न जाने कब।
दकवन वि० पुं० कौन? न जाने कौन; वै० दके, स्त्री०-नि।
दकस वि० पुं० कैसा? न जाने कैसा; वै०-क्यस, स्त्री०-सि, प्र०-कस।

दकहाँ क्रि॰ वि॰ कहाँ ? न जाने कहाँ; कहीं, वै॰ -हुँ,-हूँ ।

दका सर्व॰ क्या ? न जाने क्या; प्र॰-व, वै॰ दव- ;प्र॰ धौंका ?

दकिआनूस वि॰ पु॰ देहाती, पुरानी तरह का; प्र॰-सी ।

दके वि॰ न जाने (?) कौन;-दके; न जाने कौन-कौन ।

दखल सं॰ पु॰ प्रवेश, अधिकार; अमल-, पूरा अधिकार;-करब,-होब (२) प्रभाव; बुरा प्रभाव (भोजन, दवा आदि का);-करब, गड़बड़ करना ।

दखाव दे॰ देखाव; वै॰ द्य- ।

दखार दे॰ देखार।

दखिनहा वि॰ पु॰ दक्षिण का; सरयू के दक्षिण का रहनेवाला (व्यक्ति, प्रायः ब्राह्मण); स्त्री॰-ही; सं॰ दक्षिण ।

दखिलकारी सं॰ पुं॰ वह खेत जो किसान बहुत दिनों से जोते हो; प्र॰-खी-;-र, ऐसा किसान ।

दखुराही दे॰ डखुराही ।

दगब क्रि॰ अ॰ दगना; प्रे॰ दा-, दगाइब, दग-वाइब ।

दगरा सं॰ पुं॰ मैले पानी या कीचड़वाला गड्ढा, तालाब आदि ।

दगल-फसल सं॰ पुं॰ धोखे का मामला; धोखा; -करब,-होब ।

दगहा वि॰ पुं॰ दागवाला ।

दगहिल वि॰ पुं॰ जिसमें दाग पड़ा हो; (फल) जो सड़ने लगा हो; स्त्री॰-लि; दाग + हिल ।

दगा सं॰ स्त्री॰ धोखा;-करब,-देब; वि॰-बाज ।

दगाबाज वि॰पुं॰ धोखा देनेवाला; स्त्री॰-जि, भा॰ -जी ।

दग्ग वि॰ पुं॰ प्रकाशमय; दगा-, उज्ज्वल, खूब साफ;-सें, अकस्मात् प्रकाशपूर्वक (दिखना) ।

दङ्ग वि॰ पु॰ चकित;-होब; स्त्री-ङ्गि; वै॰-ङ्ग ।

दङ्गा सं॰ पुं॰ दंगा, शोर;-करब,-होब; वै॰-ङ्गा ।

दतुइनि सं॰ स्त्री॰ दतौन;-करब;-कुंड, अयोध्या का एक प्रसिद्ध स्थान; वै॰-अन ।

ददई संबो॰ दादा, हे दादा, अरे बाप ।

ददरी सं॰ पुं॰ प्रसिद्ध स्थान जहाँ ददरी चेत्र का मेला लगता है;-क मेला ।

ददिआ ससुर सं॰ पुं॰ ससुर का बाप; स्त्री॰ -सासु, सास की सास ।

ददुआ संबो॰ हे दादा, अरे दादा ।

ददोरा सं॰पु॰ खाल के ऊपर निकला हुआ चकत्ता; दादा का सा बड़ा दाना;-परब,-होब; सं॰ दद्रु ।

दद्दा सं॰ पुं॰ बड़ा भाई; दादा; वै॰-द्दू ।

दधकब क्रि॰ अ॰ दहकना; वै॰ दहकब; प्रे॰-काइब, -उब ।

दधि सं॰पुं॰ दही; गीतों में ही प्रयुक्त; दे॰ दहिउ; सं॰ ।

दधिकंदो सं॰ पुं॰ एक त्योहार जिसमें लोगों पर दही छिड़का जाता है; दधि+कंदो (कीचड़); वै॰ -काँ-,-औ ।

दनकब क्रि॰ अ॰ (गोली, पत्थर आदि का) जल्दी-जल्दी छूटना; भागना; प्रे॰-काइब,-उब; 'दन्न' (दे॰) से ।

दनकाइब क्रि॰ स॰ मारना; झट से मार देना; वै॰ -उब, भा॰-नाका, झट से मार देने की क्रिया ।

दनगर वि॰ पुं॰ दानेवाला, जिसमें खूब दाना पड़ा हो (फली, बाल आदि); स्त्री॰-रि ।

दनाई सं॰ स्त्री॰ समझ, होशियारी;-करब ।

दनाका दे॰ दनकाइब ।

दनादन्न क्रि॰ वि॰ निरंतर; बिना रुके ।

दनाब क्रि॰ अ॰ दाना खाना, दाना करना; नाश्ता करना ।

दपाई सं॰ स्त्री॰ छिपने या चुप रहने की क्रिया; -मारब, चुपके से सुनना; वि॰-न;-न रहब; क्रि॰ दपाब ।

दपादप वि॰ पुं॰ साफ, चमकदार; प्र॰-प्प ।

दपाब क्रि॰ अ॰ छिप जाना, चुप खड़ा रहना ।

दफा सं॰ पुं॰ बार; यक-, एक बार; कानून की एक संख्या; वै॰-फाँ (पहले अर्थ में),-फें; कइव दफें, कई बार ।

दफादार सं॰ पुं॰ जमादार की तरह का एक फौजी या पुलिस का एक छोटा अफसर; स्त्री॰-रिन, वै॰ -फे-, भा॰-री ।

दबंग वि॰ प्रभावशाली; भा॰-ई ।

दबकब क्रि॰ अ॰ दुबक जाना; प्रे॰-काइब,-उब ।

दबदबा सं॰ पु॰ रोब, प्रभाव, मान;-होब, -रहब ।

दबब क्रि॰ अ॰ दबना, डरना, अदब करना; प्रे॰ -बाइब,-वाइब; प्र॰ दबाब ।

दबवाइब क्रि॰ स॰ दबवाना; मु॰ चुदाना; वै॰ -उब ।

दबाइब क्रि॰ स॰ दबाना, दाबना (पैर आदि); दबा देना; प्रे॰-बवाइब, वै॰-उब ।

दबाव सं॰ पु॰ प्रभाव;-परब ।

दबाहुर वि॰ पु॰ (सवारी) जो आगे दबी हो; -रहब,-पाइब,-होब; दे॰-उन्न ।

दबिला सं॰ पु॰ पकती हुई वस्तु को चलाने के लिए लकड़ी का बना बड़ा चम्मच या करछुल ।

दबीज वि॰ पु॰ भारी, मोटा (कपड़ा आदि); स्त्री॰ -जि ।

दबोट सं॰ पुं॰ दबाव; क्रि॰-ब, दबाना, प्रभाव डालना; प्र॰ डपोट,-ब ।

दबौला सं॰ पु॰ बड़ा दबाव, अनुचित दबाव;-म, अत्यधिक प्रभाव में ।

दब्ब वि॰ पुं॰ जो (सवारी) एक ओर दबी हो; -होब,-रहब; दे॰ उन्न (दब्ब का उलटा) ।

दब्बू वि॰ दबनेवाला, डरपोक ।

दम सं० पुं० शक्ति, जीवन;-म-, जान में जान; बे-, थका, विह्वल;-ढंकार, होश ।
दमक सं०स्त्री० विशेष चमक; गर्मी;-आइब, चमक-; क्रि०-ब, खूब चमकना;-काइब; वै०-कि ।
दमकल सं० पुं० पानी डालने की पिचकारी; वै० -ला ।
दमगर वि० पुं० मजबूत, प्रभावशाली; स्त्री०-रि, भा०-ई ।
दमड़ी सं० स्त्री० बहुत कम मूल्य; कहा०-क मुर्गी टका पकराई; 'दाम' से ।
दमदमाब क्रि० अ० झट से पहुँच जाना ।
दमा सं० पुं० यक्ष्मा ।
दमाद सं० पुं० दामाद; सं० जामातृ ।
दया दे० दाया;-धरम, पुण्य करने की प्रवृत्ति ।
दरइची सं० स्त्री० छोटी खिड़की; वै०-रै- ।
दरउनी सं० स्त्री० दलने की मजदूरी; वै०-रौ- ।
दरकब क्रि० अ० दरक जाना, कुछ फट जाना; प्रे० -काइब,-उब ।
दरकिनार वि० अलग;-रहब,-करब ।
दरखत सं० पुं० पेड़; प्र०-ख्खत ।
दरखनी सं० स्त्री० भूमि में छेद या गड्ढा करने का एक औज़ार; फा० दर (जगह)+सं० खन (खोदना); प्र०-ख्नी ।
दरगाह सं० स्त्री० मुसलमानों का पवित्र स्थान; वै०-हि ।
दरज सं०पुं०लिखने का काम;-करब,-होब;वै०-र्ज ।
दरजा सं० पुं० कक्षा; उच्च स्थान;-पाइब, पद प्राप्त करना ।
दरजाइब क्रि०स० स्पष्ट करना, निश्चित कर देना; वै०-उब ।
दरजि सं० स्त्री० दीवार या लकड़ी आदि में फटने का चिह्न ।
दरजी सं० पुं० दर्जी; स्त्री०-जिनि; भा०-जिआई, -आई ।
दरद सं० पुं० दर्द;-करब,-होब; दुख-,कष्ट; वै०-र्द; गीतों में "दरदिया" भी होता है ।
दरदर क्रि० वि० दरवाजे-दरवाजे, स्थान-स्थान पर; -घूमब,-फिरब ।
दरदराइब क्रि० स० जल्दी के चबा डालना ।
दरपनी सं० स्त्री० छोटा दर्पण; सं० दर्पण ।
दरब क्रि० स० दलना; प्रे०-राइब,-रवाइब, मु० छाती प कोदो-, अपमान करके तंग करना; भा० -उनी,-राई ।
दरब सं० पुं० द्रव्य, तत्व; महत्व, मूल्य; वि०-दार, जिसके पास कुछ हो, मालदार; वै०-बि; सं० द्रव्य ।
दरबर वि० पुं० मोटा पिसा हुआ (आटा आदि); स्त्री०-रि ।
दरबा सं० पुं० कबूतरों के रहने का घर; छोटा गिचपिच मकान ।
दरबार सं० पुं० दरबार,-करब,-लागब,-होब,-री, दरबार में बैठनेवाला ।
दररब क्रि० स० रगड़ना; प्रे०-राइब,-रवाइब; मु० गाँड़ि-, व्यर्थ प्रयत्न करना ।
दरसन सं० पुं० दर्शन;-करब,-पाइब;-देब; वि० -निहा, दर्शन करनेवाला; सं० दर्शन ।
दरि सं० स्त्री० जगह, स्थान; क्रि० वि०-रीं, स्थान पर, यही दरीं, इसी स्थान पर ।
दरिआ सं० पुं० दलिया;-दरब ।
दरिआव सं० पुं० नदी; बड़ी नदी; वै०-या-; लबे -, खूब भरा हुआ (पानी से, तालाब आदि); दरियः (समुद्र) ।
दरिद्दर सं०पुं० दरिद्रता; वै० प्र०-लि-; वि० दरिद्र; -खदेरब; गली से पुराने सूप को पीट-पीटकर "ईसर आवैं, दरिद्दर जाय" कहते हुए स्त्रियों द्वारा कार्तिक की रात को किया हुआ एक वार्षिक उपचार । भा०-ई,-पन ।
दरिनई सं० स्त्री० वृद्धता; दे० दरीना; वै०-पन ।
दरिवान सं० पुं० दरवान, दरवाज़े पर रहनेवाला नौकर; भा०-वनई,-वानी; वै० दरवान ।
दरी सं० स्त्री० दरी (बिछाने की);-गलैचा अच्छा-अच्छा बिछौना ।
दरीना वि० वृद्ध, अनुभवी;-पुरनिया, बड़ा (घर का); भा०-रिनई,-पन ।
दरेती सं० स्त्री० लोहे का औजार जिससे दीवार आदि में छेद किया जाता है; वै०-सी ।
दरेग सं० पुं० दया, तर्स;-लागब;-करब ।
दरेरब क्रि० स० रगड़कर चलना; प्रे०-रवाइब; वै० -रो- ।
दरेस सं० पुं० वर्दी; अं० ड्रेस ।
दरैची दे० दरइची ।
दरोगा सं० पुं० दारोगा, स्त्री०-गाइन,-नि ।
दरोरब क्रि०स० रगड़ना, ऊपर से दबा कर फोड़ना, दे० दरेरब ।
दरौनी दे० दरब; वै० दरउनी,-राई, दलने की मज़दूरी, पद्धति आदि ।
दर्रा सं० पुं० मोटा पिसा हुआ आटा, दला हुआ (गेहूँ, जौ आदि) ।
दर्राइब क्रि० स० चिल्लाकर हाँकना ।
दर्राक वि० पुं० चालाक, स्त्री०-कि ।
दल सं० पुं० पत्ता, तुलसीदल, निमंत्रण (कथा का); -जाब,-पठइब; सं० ।
दल सं० पुं० गिरोह;-बल, पूरी शक्ति; भीतर का गूदा; वि०-गर, गूदेदार ।
दलकब क्रि० अ० (भूमि का) भीगकर गल जाना; प्रे०-काइब ।
दलगर वि० पुं० गूदेदार (फल आदि); स्त्री० -रि ।
दलदल सं० पुं० दलदल ।
दलानि सं० स्त्री० दालान; प्र०-लान ।

दलामलि सं० स्त्री० ज़ोर की भीड़; रेलपेल; प्रायः गीतों में।
दलाल सं० पुं० दलाली का काम करनेवाला; धूर्त व्यक्ति; वि० बेईमान; भा०-ललई, प्रे०-ल्लाल।
दलिद्र दे० दरिद्दर।
दलिहा वि० पुं० दालवाला, दाल लगा हुआ; स्त्री०-ही।
दलील सं० पुं० तर्क, कारण;-करब,-देब,-होब।
दले संबो० महावत द्वारा प्रयुक्त शब्द जिससे हाथी पानी में चलने एवं पानी-पीने के लिए आदेश लेता है।
दलेल सं० पुं० दण्ड (प्रायः पुलिसवालों का); -करब,-बोलब,-होब; वै०-लि।
दवँगरा सं० पुं० हल्की वर्षा;-परब, ऐसी वर्षा होना।
दवँतरी सं० पुं० एक आयु के व्यक्ति; वै०-रिया।
दवँरी सं० स्त्री० बैलों को एक साथ बाँधकर कटे हुए नाज के डाँठ पर घुमाने की क्रिया;-हाँकब, -नाधब,-चलब; 'दवर' (दे०) से।
दवना सं० पुं० एक सुगंध देनेवाला पौदा जिसकी पत्तियाँ देवताओं को चढ़ती हैं;-मरुवा, दो ऐसे सुगंध देनेवाले पौदे जिनका उल्लेख प्रायः स्त्रियाँ गीतों में करती हैं।
दवर सं० पुं० चारों ओर का नाप; पहुँच; दौर।
दवरब दे० दउरब।
दवरा सं० पुं० दौरा;-करब।
दवाँइब क्रि० स० दाँइब (दे०) का प्रे० रूप।
दवाइति सं० स्त्री० दावात; वै० दु-।
दवाई सं० स्त्री० दवा, औषधि;-करब,-होब।
दस वि० सं० दस;-वाँ,-ईं, दसवाँ, दसवाँ भाग।
दसउन्ही सं० पुं० एक जाति जिसके पुरुष कविता गाकर जीवन यात्रा करते हैं;-बाभन, ऐसे ब्राह्मण।
दसखत सं० स्त्री० हस्ताक्षर;-करब,-होब; वै०-ति; वि०-ती, जिस पर दस्तख़त किया हुआ हो; फ़ा० दस्त (हाथ)+ख़त (अक्षर)।
दसगर्दा सं० पुं० हल्का मुकदमा, छोटा मामला; फ़ा० दस्तगर्द।
दसगात्र सं० पुं० मृत्यु के बाद की एक क्रिया।
दसनामी सं० पुं० एक प्रकार के साधू।
दसमी सं० स्त्री० पक्ष का दसवाँ दिन; सं० दशम।
दसमूल सं० पुं० प्रसिद्ध औषधि दशमूल।
दसरथ सं० व्य० राम के पिता महाराज दशरथ; सं०।
दसवरदार वि० पुं० (कानूनी अधिकार से) अलग; -होब, हट जाना; भा०-री फ़ा० दस्त (हाथ)।
दसवाँ सं० पुं० मृत का दसवें दिन का संस्कार; वि० पुं० दसवाँ; स्त्री०-ईं; सं० दश।
दसहरा सं० पुं० गंगा दशहरा जो जेठ में पड़ता है; क्वार शुक्ल का दसवाँ दिन जिसे "विजय दसमी', भी कहते हैं।
दसहरी सं० पुं० एक प्रकार का बढ़िया आम।
दसा सं० स्त्री० हालत; ज्योतिष में ग्रहों की दशा; गरह-, ग्रहों की स्थिति (जन्मपत्री में)।
दसाइब क्रि० स० बिछाना (पलँग); प्रे०-सवाइब; वै० ड-,-उब।
दस्त सं० पुं० टट्टी;-होब,-लागब।
दस्ता सं० पुं० २४ ताव (काग़ज़)।
दस्तावेज सं० पुं० कचहरी का प्रमाणित कागज़; किसी का लिखा हुआ मुकदमे का कागज़; फ़ा० दस्त (हाथ)+,वै०-हता-।
दस्ती वि० पुं० हाथ से लाया हुआ (समन, पत्र आदि); फ़ा० दस्त (हाथ)।
दस्तूर सं० पुं० कायदा, रिवाज।
दस्तूरी सं० स्त्री० फ़ीस; (व्यक्ति-विशेष की) उज-रत;-देब,-लेब।
दस्सा सं० पुं० बनियों की एक उपजाति।
दहँजब क्रि० स० कुचलना, नष्ट करना; प्रे० -जाइब; दे० अहँजब।
दहकच्चरि सं० स्त्री० बड़ी भीड़; शोर गुल;-मचब, -मचाइब।
दहकब क्रि० अ० ख़ूब जलना या गर्म होना (आग का) प्रे०;-काइब,-उब।
दहकारब क्रि० स० पानी छिड़कना; ख़ूब भिगोना; प्रे०-करवाइब,-उब; दे० दहाइब।
दहतावेज दे० दस्तावेज़।
दहपट्ट वि० पुं० हट्टा-कट्टा, बहादुर; स्त्री०-ट्टि।
दहपेल वि० पुं० जो कठिन काम कर डाले; परि-श्रमी, धैर्यवान।
दहलब क्रि० अ० दहलना, घबरा जाना; प्रे०-लाइब, -उब।
दहला सं० पुं० नदी के किनारे का मैदान या जंगल।
दहवाइब क्रि० स० दहाने में सहायता करना; दे० दहाइब, दहकारब।
दहसति सं० स्त्री० डर, भय।
दहाइब क्रि० स० ख़ूब भिगोना; 'दह' (दे०) से; सं० ह्रद; वै०-उब।
दहाई सं० स्त्री० किनारा; खड़ी फ़सल का एक भाग।
दहिआ सं० पुं० लकड़ी या पौदों में लगनेवाला एक रोग;-लागब।
दहिउ सं० पुं० दही; दूध-, दूध-दही; सं० दधि।
दहिजरा वि० पुं० जिसकी दाढ़ी जली हो; बद-माश; दहि (दाढ़ी)+जरा (जला हुआ); आ०-रू; वै० दाढ़ीजार; द+हिजरा ? (दु हिजरा=भग हिजड़े) यह शब्द गाली के ही लिए स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है;-क पूत (दाढ़ीजार का बेटा) भी इसी अर्थ में बोला जाता है।
दहिना वि० पुं० दाहिना; स्त्री०-नी;-बावाँ, बुरा भला; दाहिन (दे०) बावँ, सं० दक्षिण; वै०दाहिन।

दहु अव्य० कि, शायद; संदेह-सूचक शब्द है; वै० -हुँ; ब्र० धौं।

दहेज सं० पुं० लड़की के ब्याह में दिया गया उपहार;-देब,-लेब; वै० दैज़ा, दायज।

दाँइब क्रि० स० दँवाई करना; वै०-उब, प्रे० दँवाइब,-उब; काटब-, फ़सल का प्रबंध करना, गृहस्थी करना।

दाँत सं० पु०दाँत; क्रि०-ब, पशु का दाँत हो जाना, पूरी आयु प्राप्त करना;-ती, मशीन या औज़ार के दाँत।

दाई सं० स्त्री० बूढ़ी स्त्री; बाबा की पत्नी; दादी; किसी भी बुढ़िया को संबोधित करने का शब्द; बाबा-,कोई भी।

दाई-जोटिया सं० पु० साथी, सक-वयरक; दे०जोटी।

दाउँ दे० दाँव।

दाउति सं० स्त्री० दावत;-देब,-खाब; वै०-वति।

दाखिल वि० प्रविष्ट, जमा;-करब,-होब; सं०-ला, प्रवेश;-खारिज, पटवारी के कागज़ों में एक व्यक्ति के स्थान में दूसरे नाम का प्रवेश।

दाग सं० पुं० धब्बा, चिह्न;-परब,-डारब; क्रि०-ब, जलाकर चिह्न करना; जला देना (किसी अंग को); मु० ताना मारना, व्यंग कसना; बंदूक, पिस्तौल आदि चलाना; गोली-, बंदूक-,प्रे०दगाइब।

दागी वि० जिस पर दाग पड़ा हो; दूषित; जो जेल काट आया हो।

दाता सं० पुं० दान देनेवाला; "दास मलूका कहि गये सब के-राम"।

दादरा सं० पुं० प्रसिद्ध राग और गीत;-गाइब।

दादा सं० पुं० पितामह; पिता के बड़े भाई या अन्य बड़े व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द; दे० ददई, ददुआ; स्त्री०-दी।

दादु सं० स्त्री० दाद; सं० दद्रु।

दान सं० पुं० दान;-देब,-लेब; वि०-नी,-निया।

दानव सं० पुं० राक्षस; वै०-नौ; सं०।

दाना सं० पुं० नाज का बीज; हार में का एक (मोती, सोने का टुकड़ा आदि); यक-,दुइ-,चार-क हवेलि (दे०);-दाना क तरसब, दाने-दाने के लिए तरसना।

दानी सं० वि० उदार; देनेवाला; वै०-निया,-आँ, दानशील।

दाब सं० पुं० दबाव, प्रभाव,-दहसति, डर या प्रभाव।

दाबब क्रि० स० दबाना, तंग करना, मजबूर करना; प्रे० दबवाइब,-उब।

दाबस सं० पुं० दबाव, ज़ोर; डर-,भय।

दाम सं० पुं० मूल्य;-करब, मोल करना, भाव ठीक करना;-पूछब,-लगाइब,-होब।

दाया सं० पुं० दया;-लागब,-करब,-होब; राम खबरिया लेबै करिहैं, दाया लागी देबै करिहैं।

दार वि० पुं० उपजाऊ, मालदार; स्त्री०-रि।

दारू सं० पुं० शराब, दवा-, उपचार,-पियब।

दालि सं० स्त्री० दाल,-भात, दाल-भात, भोजन; कहा० सहर क राम-राम गँवई क दालिभात; दे० पहिली।

दाल्हब क्रि० स० व्यंग कह-कह कर दुःख देना।

दावँ सं० पुं० दावँ, चाल, बदला;-लेब,-करब, -पाइब।

दावति दे० दाउति।

दावा सं० पुं० अधिकार, मुकदमा, शिकायत;-होब -करब, वि०-गीर, दावा करनेवाला,-दार।

दास सं० पुं० नौकर; स्त्री०-सी; साधुओं एवं पण्डितों द्वारा प्रयुक्त; चरनदासी, जूती (व्यं०); सं०।

दासा सं० पुं० मकान की खँभियों (दे० खम्हिया) के ऊपर रखी हुई लंबी लकड़ी।

दाह सं० पुं० जलन; मुर्दा जलाने की क्रिया;-देब, शव को जलाना; सं०।

दाहा सं० पुं० ताजिया;-रोइब, मुहर्रम के शोकपूर्ण गीत-गाना; मु० लाँड़ पकरि कै दाहा रोइब, कुछ न कर सकना, हाथ पर हाथ धरे बैठना; मै०।

दिअना सं० पुं० दीया, दीपक;-लेसब,-बारब; यह रूप सु०, प्र०, रा० ब० जिलों में ही बोला जाता है; वै० दिआ, दीआ एवं दिया; सं० दीप, मै० दिया।

दिउँका सं० पुं० दीमक;-लागब; वै० देवकि; क्रि० -काब, दीमकों द्वारा आक्रांत होना; वि०-कहा।

दिउठी सं० स्त्री० लकड़ी या मिट्टी का बना छोटा स्तंभ जिस पर दीया रखा जाता है। वै० डि-; मै० दिवठ; सं० दीप।

दिउली सं० स्त्री० छोटा मिट्टी का कटोरीनुमा बर्तन जिसमें दीया जलाया जाय; पुं०-ला।

दिक्क वि० पुं० बीमार, परेशान;-करब,-होब; तपे-, यक्ष्मा।

दिक्कति सं० स्त्री० परेशानी, कष्ट;-उठाइब,-होब।

दिखउआ सं० पुं० दिखावा; मुँह-, नई दुलहिन को देखने का रस्म, उसमें उसे दिया गया उपहार -देब,-पाइब; वै० दे-; मै० देखना।

दिखब क्रि० अ० दिखना; प्रे०-खाइब,-खवाइब।

दिगर वि० पुं० दूसरा; स्त्री०-रि; वै० प्र० दी-;नौ-, परिवर्तन, आकस्मिक घटना; फा० नौ (नया) +दीगर (दूसरा)।

दिमाग सं० पुं० मस्तिष्क, गर्व;-देखाइब, गर्व-पूर्ण बातें करना;-होब,-करब;-झारब, गर्वचूर्ण करना वि०-गी,-दार।

दियना दे० दिअना।

दिया सं० पुं० दीपक; वै०-आ; स्त्री० दिउली; सं० दीप।

दिरघौं वि० दीर्घ (मात्रा); बच्चों को रटाया जाता था-"रेसौं (ह्रस्व) कि, दिरघौं की...।"

दिल सं० पुं० हृदय; वि०,-ली, हृदय का; हार्दिक;

-जानी, प्रेमिका;-वर, प्रेमी;-दार, स्नेही;-जमई, पूरा भरोसा ।

दिलावर वि० पुं० बहादुर; स्त्री०-रि; भा०-री ।

दिलासा सं० पुं० भरोसा, ढाढ़स;-देब; फ़ा० दिल +सं०आशा ।

दिलेर वि० पुं० निर्भय; स्त्री०-रि; भा०-री,-रई ।

दिवला सं० पुं० बड़ा दिया; स्त्री०-ली,-उली; दे० दिअना ।

दिवाइब क्रि० स० दिलाना; वै० दे-,-उब ।

दिवान सं० पुं० थान्हे का बड़ा मुहर्रिर; वै० दे-, -जी; मंत्री, प्रधान सचिव; कहा० लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान ।

दिवानी सं० स्त्री० दीवानी (कचहरी);-करब; दीवानी का मुकदमा लड़ना ।

दिवार दे० देवालि ।

दिसकूट सं० पुं० पहेली;-कहब ।

दिसा सं० स्त्री० पाखाना;-होब; टट्टी जाना;-फराकति, शौचादिक;-फिरब,-करब;-लागब ।

दिसा सं० स्त्री० दिशा;-भरम, स्थिति जिसमें मनुष्य को दिशा का ज्ञान न रह जाय;-सूल, दिन जब किसी विशेष दिशा में यात्रा वर्जित हो ।

दिसाउर दे० देसाउर ।

दिसटांत सं० पुं० दृष्टांत;-देब,-पाइब ।

दिहात सं० पुं० गाँव;-ती, ग्रामवासी, गाँव का; वै०-ति; देह (गाँव) ।

दीठि सं० स्त्री० दृष्टि; वै० डी-; दिठिआँतर, दृष्टि का हटाना, आँख का ओझल; सं० ।

दीदा सं० पुं० आँख, हिम्मत;-क चप्पर, बेशर्म एवं हिम्मती; दीद + सं० चपल (चंचल)।

दीदी सं० स्त्री० बहिन, बड़ी बहिन; बहिन या जिठानी को संबोधित करने का शब्द ।

दीन सं० पुं० धर्म; बे-, बेधर्म, धर्मच्युत;-यकीन, ईमानदारी ।

दीप सं० पुं० द्वीप; सं० ।

दीया दे० दिअना ।

दुँदुआब क्रि० अ० मस्ती की बातें करना; 'दूँदूँ' करना ।

दु संबो० धत, हट जा;-मरदवा, धत तेरे की,-राजू ; प्र० दू, दुअ ।

दुआर सं० पुं० द्वार, घर के सामने का भाग; स्त्री०-रि,-री; प्र०-रा;-करब, मातमपुर्सी करना, -ताकब,-झाँकब; क्रि०वि०-रें; अं० डोर, वै०-वार ।

दुआसि दे०-वासि ।

दुइ वि०सं० दो;-चंद, दुगना;-ठूँ,-ठें,-ठी, केवल दो; प्र०-औ, दूओ, दूअउ (जा०) दूनौ,-नौं,-औ, दुई; -तरफा, दोनों ओरवाला,-ली (कारवाई आदि) ।

दुकड़ा सं० पुं० पैसे का एक भाग; स्त्री०-ड़ी; वै० -री ।

दुकान सं० स्त्री० दूकान;-कंदार, दूकानदार; वै० -नि ।

दुकाब वि० न जाने क्या; कुछ; वै० दुका; दौं+ का ? दे० दहु ।

दुकेस वि० पुं० न जाने कैसा; स्त्री०-सि; वै० -क्यस ।

दुकैसे क्रि० वि० न जाने कैसे; वै०-सै ।

दुकैहा क्रि० वि० न जाने किस दिन; वै०-कहिआ (दे० कहिआ) ।

दुक्का सं० पुं० दो चिह्नवाला ताश; वै०-क्की; यक्का -क्रि० वि० एक या दो के साथ ।

दुख सं० पुं० दुःख; क्रि०-ब,-खाब, दुखना, दर्द करना;-दर्द, कष्ट; वि०-हिल,-लहल, घाववाला (अंग) ।

दुखइब क्रि० स० दुखा देना, छूकर दर्द पैदा कर देना; प्रे०-वाइब; वै०-खा-।

दुखड़ा सं०पुं०दुःख का हाल;-गाइब,-कहब,-रोइब, -सुनब,-सुनाइब; वै०-रा ।

दुखतरी वि० लड़की का (अधिकार); (जायदाद पर) कन्या का (कानूनी हक़); फ़ा० दुख़्तर (कन्या) ।

दुखब क्रि० अ० दर्द करना, प्रे०-खाइब,-खइब; प्र० -क्खब, वै०-खाब ।

दुखलहल वि० (अङ्ग) जिसमें घाव या फोड़ा आदि हो; जो शीघ्र दुख सके; वै०-हिल ।

दुखाइब क्रि० स० दुखाना, दर्द पहुँचाना; दे० दुखइब ।

दुखारी वि०दुखी; प्राय: कविता में प्रयुक्त; तुल०जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।

दुखिआ सं० दुखी व्यक्ति; वै०-या ।

दुखी वि० दुखपूर्ण, दुख से ग्रस्त ।

दुगुना वि० पुं० दोगुना; स्त्री०-नी ।

दुग्गी सं० स्त्री० ताश जिसमें दो का चिह्न बना हो ।

दुत विस्म० डाँटने का शब्द; प्र०-त्तोरे के !,-त्त, धत (दे०); सं० दुतकार, दुत कहने का अवसर आदि; दे० दु ।

दुतकारब क्रि० स० दुतकारना, 'दुत-दुत' कहना; फटकारना, भगा देना ।

दुतरफा वि० जिसमें दोनों की बात रहे; दोनों को खुश या नाखुश करनेवाली (बात, कारवाई आदि) वै० दुइ-।

दुतल्ला वि०पुं० जिसमें दो तल्ले हों ।

दुताई सं० स्त्री० दूत का कार्य; चुँगली;-करब, इधर का उधर लगाना ।

दुतिआ सं० स्त्री० द्वितीय; द्वितीया का चंद्रमा, वै०-या ।

दुदहँड़ि सं० स्त्री० हंडी जिसमें दूध गर्म होता हो; दूध+हाँडी (सं० दुग्ध + भांड); वै०-ध-।

दुद्धी सं० स्त्री० खरिया; एक बूटी जिसमें दूध होता है और जो कई दवाओं में काम आती है । सं० दुग्ध ।

दुद्धू दे० दूधू ।
दुधारि वि० स्त्री० खूब दूध देनेवाली ।
दुनवढ़ वि० पुं० दुगुना; क्रि०-ब, दूना हो जाना; स्त्री०-ढ़ि ।
दुनाली सं० स्त्री० दो नालवाली बंदूक ।
दुनिआ सं० स्त्री० संसार;-भर, बहुत सा; वै० -या ।
दुनी सं० स्त्री० कविता में प्रयुक्त 'दुनिया' का रूप ।
दुनौ दे० दुइ ।
दुपट्टा दे० दुपट्टा ।
दुपदुपाब क्रि० अ० दुप दुप करना, काँपते रहना ।
दुपल्ला वि० पुं० जिसमें दो पल्ले हों; स्त्री०-ल्ली, -ल्लिया (टोपी) ।
दुपहर सं० पुं० दोपहर; स्त्री०-री,-रिआ; इस नाम का एक फूल भी होता है जो दोपहर को फूलता है; दुइ+पहर, सं० प्रहर ।
दुपहरिया सं० स्त्री० दोपहर का भोजन; ऐसे भोजन का कच्चा सामान; दाना-, खाना;-देब ।
दुपहरी सं० स्त्री० दोपहर का समय; गर्मी का वक्त; खड़ी-, दिन का वह समय जब बहुत गर्मी पड़ती है ।
दुपाब दे० दपाई, दपाब ।
दुबकब दे० दबकब ।
दुबकड़ सं० पुं० दुबे (दे०) का घृ० रूप; कहा० दुबे दुबकड़ तीबे नबाब, तिवारी हरजोतना चौबे चमार ।
दुबचउर वि० पुं० जहां दूब की हरियाली और भूमि चौरस हो, सुन्दर (स्थान); क्रि० वि०-रें, ऐसे स्थान पर ।
दुबरई सं० स्त्री० गरीबी, धनहीनता; वै०-पन; सं० दुर्बल ।
दुबराब क्रि० अ० दुबला हो जाना; प्रे०-रवाइब; सं० दुर्बल ।
दुबाइनि सं० स्त्री० दुबे की स्त्री ।
दुबाढ़ा वि० पु० दुगना, अधिक;-देब,-लागब ।
दुबारा क्रि० वि० दूसरी बार; फिर ।
दुब्बक सं० पुं० अड़चन;-लगाइब ।
दुमड़ब क्रि० स० दुमड़ देना; दो तह कर देना; प्रे० -डाइब ।
दुमना वि० पुं० जो (पशु) खड़े-खड़े हिलता हो; स्त्री०-नी; ऐसे पशु कुलच्छी माने जाते हैं ।
दुम्मा सं० पुं० मोटी दुमवाली भेड़;-भेड़ा, ऐसी भेड़ ।
दुरदुराइब क्रि० स० कुत्ते को दुतकारना, हटाना या मारना; 'दुर दुर' कहना ।
दुरपती सं० स्त्री० द्रौपदी जी,-जी,-महरानी; सं० ।
दुरबल वि० पुं० कमजोर; स्त्री०-लि; सं० ।
दुरमुस सं० पुं० सड़क पीटने का औज़ार ।
दुरिआइब क्रि० स० अपमानपूर्वक भगा देना; प्रे०-वाइब ।
दुर्र संबो० बच्चों के चुप करने या सुलाने का शब्द जो बार बार राग से दुहराया जाता है;-दुर्र; माता बच्चे को कल्पना कराती है कि कोई कुत्ता, बिल्ली आदि उसके पास से 'दुरदुर' कहके भगाया जा रहा है ।
दुलकब क्रि० अ० ठुमुक-ठुमुक कर चलना; वि० -कन, जो दुलकता हुआ चले ।
दुलकी सं० स्त्री० घोड़े की एक प्रसिद्ध चाल; -चलब,-चलाइब; तु० दुलदुल (प्रसिद्ध घोड़ा) ।
दुलत्ती सं० स्त्री० (पशुओं और विशेषकर घोड़े या गदहे के) पीछे के दो लात; पैर की मार; -मारब,-फेंकब,-लगाइब ।
दुलराब क्रि० अ० (बच्चों या स्त्रियों का) दुलार से बिगड़कर ऐंठी ऐंठी बातें करना; प्रे०-रवाइब ।
दुलरुआ सं० पुं० दुलारा, प्रेमपात्र; स्त्री०-ई; जा० (पदु० १९, १) वै०-ले-।
दुलहा सं० पुं० वर, पति; स्त्री०-हिन,-नि; कविता में-ही; स्त्रियों को संबोधित करने के लिए भी 'दुलहिन' कहते हैं ।
दुलाई सं० स्त्री० हलकी रज़ाई ।
दुलार सं० पुं० प्रेम का व्यवहार जो बड़े छोटों से करें; वि०-रा,-री, जो दुलार से पाला गया हो; क्रि०-ब, प्रेम भरे शब्दों से बार-बार पुकारना, उछालना आदि (जैसा बच्चों के साथ प्रायः होता है) ।
दुवा सं० स्त्री० आशीर्वाद;-देब;-भभूति, आशीर्वाद एवं प्रसाद;-लागब; वै०-आ ।
दुवाइति सं० स्त्री० दावाद; दे० दवा- ।
दुवारा सं० पुं० दरवाज़ा;-करब, मृत्यु के बाद उसके घर मातम के लिए जाना; स्त्री०-रि,-री; वै०-आ-; सं० द्वार; क्रि० वि०-रें, दरवाजे पर, बाहर ।
दुवासि सं० स्त्री० द्वादशी; वै०-दसी,-आ-; सं० ।
दुवौ दे० दुइ;-जने, दोनों जने,-जनी, दोनों स्त्रियाँ ।
दुसमन सं० पुं० वैरी; भा०-नाय,-नई,-नी; दुश्मन ।
दुसरा वि० पुं० दूसरा; स्त्री०-री; सं० दूसरा वर्ष; प्र०-रै,-रौ; दे० दूसर ।
दुसराइब क्रि० स० दुहराना, फिर से या और परोसना, देना आदि ।
दुसवार वि० पुं० कठिन;-करब,-होब; वै०-सु-, दुश्वार ।
दुसाला सं० पुं० दुशाला ।
दुस्ट वि० पुं० दुष्ट, स्त्री०-ष्टि, भा०-ई,-हटई; वै०-हुट; सं० ।
दुस्टई सं० स्त्री० दुष्टता;-करब; वै० -हु-।

**दुहब** क्रि० स० दुहना; वसूल करना, खूब ले लेना; प्रे०-हाइब,-उब; सं० दुह् ।
**दुहरब** दे० दोहरब ।
**दुहराइब** दे० दो–।
**दुहाई** दे० दोहाई ।
**दूअउ** दे० दुइ ।
**दूजि** सं० स्त्री० द्वितीया; जम-, भाई दूज, यम द्वितीया; वै० दुइज ।
**दूत** सं० पुं० संदेश ले जानेवाला; शीघ्र जानेवाला; भा० दुताई (दे०); स्त्री०-ती ।
**दूध** सं० पुं० दूध;-गारब, दूध निकालना;-पूत, सब कुछ (आशीर्वाद स्वरूप); सं० दुग्ध; कहा० दूधे (दूधन) नहाउ (पूतन) पूतें फरौ, खूब सुखी रहो ।
**दून** वि० पुं० दूना, दूनै-, बराबर दूना (बढ़ना) ।
**दूनौ** वि० दोनों ही; दे० दुइ ।
**दूबर** वि० पुं० दुबला, कम पैसेवाला; स्त्री०-रि, क्रि० दुबराब, भा० दुबराई, सं० दुर्बल ।
**दूबा** सं० पुं० बड़ी-बड़ी दूब; सं० दूर्वा ।
**दूबि** सं० स्त्री० दूब ।
**दूबे** सं० पुं० ब्राह्मणों की एक उपजाति; दुबे; स्त्री० दुबाइन,-नि; वै० दुबे; सं० द्वि + वेद ।
**दूभर** वि० पुं० दुष्प्राप्य, कठिनता से प्राप्त होने वाला;-होब; सं० दुर्लभ का विकृत रूप ।
**दूमब** क्रि० अ० खड़े-खड़े हिलना (पशुओं का) ।
**दूरि** वि० दूर; प्र०-हि,-रै सं० दूर ।
**दूलभ** वि० दुर्लभ;-दास, प्रसिद्ध संत;-होब,-रहब, सं० दुर्लभ ।
**दूलह** सं० पुं० दुलहा, दूल्हा; तुल० जस-तस बनी बराता; कविता में ही प्रयुक्त; स्त्री० दुलही; दे० दुलहा ।
**दूवौ** दे० दुइ ।
**दूसब** दे० धूसब ।
**दूसर** वि० पुं० दूसरा; पराया; स्त्री०-रि ;प्र० दुसरै, दैवक-, बड़ा शक्तिशाली; दे० दूइउ ।
**देंह** सं० स्त्री० शरीर;-दसा, शकल-सूरत; वि० -गर, अच्छे शरीरवाला ।
**देउँका** सं० पुं० दीमक;-लागब; वै० देवँकि, क्रि० -काब, दीमकों से प्रभावित होना ।
**देखब** क्रि० स० देखना; प्रे०-खाइब,-खवाइब, -उब;-सुनब, जाँच करना, समाचार लेना ।
**देखवार** सं० पुं० देखनेवाला, वर देखनेवाला; वै० द्य- ।
**देखा-देखी** क्रि० वि० दूसरे को देखकर ।
**देखार** वि० पुं० स्पष्ट; दिखाई पड़नेवाला;-प्रगट; -होब, (छिपी बात का) प्रगट हो जाना, व्यवहार से स्पष्ट हो जाना; वै० द्य-।
**देखैया** सं० पुं० देखनेवाला; रक्षा करनेवाला; वै० -खवैया; द्य- ।
**देन** सं० पुं० जो कुछ दिया जाय;-दार, देनेवाला; वै०-नी,-नि ।
**देना** सं० पुं० बाकी जो किसी को देना हो वार्षिक चंदा, पोत, किराया आदि;-लेना ।
**देनी** सं० स्त्री० जो कुछ दूसरे से या भगवान से प्राप्त हो, आशीर्वाद अथवा कृपास्वरूप प्राप्त वस्तु ।
**देब** क्रि० स० देना;-लेब, देनालेना; प्रे० देवाइब; भा० देन,-ना,-नी ।
**देबी** सं० स्त्री० देवी;-देवता;-जी, कोई भी सभ्य स्त्री; कभी-कभी व्यंग रूप में साधारण स्त्रियों के लिए भी प्रयुक्त; पुत्र की समानता करते हुए पुत्री के लिए भी यह शब्द आता है ।
**देर** दे० बेर ।
**देवँकि** सं० स्त्री० दीमक;-लागब; वै०-उँका; वि० -हा,-कही, दीमकवाला, दीमक लगा हुआ ।
**देवकी** सं० व्य० कृष्ण की माता;-नंदन, कृष्ण ।
**देवखरी** सं० स्त्री० देवताओं का समूह; देव-, देवता भवानी आदि; वै० द्य-।
**देवदार** सं० पुं० प्रसिद्ध पेड़ और उसकी लकड़ी; सं०-रु ।
**देवपख** सं० पुं० पितृपक्ष के साथवाला पक्ष जो देवताओं की पूजार्थ विशिष्ट है ।
**देवर** सं० पुं० पति का छोटा भाई; स्त्री०-रानि; गीतों में "देवरा"; सं० ।
**देवल** सं० पुं० मंदिर ।
**देवाई** सं० स्त्री० देने का ढङ्ग, क्रिया आदि ।
**देवान** दे० दिवान ।
**देवाना** वि० पुं० पागल; स्त्री०-नी; दीवानः ।
**देवारी** सं० स्त्री० दिवाली; दिया-, दीपावली ।
**देवाला** सं० पुं० दीवाला;-निकारब,-काढ़ब ।
**देवालि** सं० स्त्री० दीवार; वै० दिवालि;-गीर, लालटेन जो दीवार के सहारे रखी जाती है ।
**देवैया** सं० पुं० देनेवाला; कहा० अजगर कहँ भख राम देवैया ।
**देस** सं० पुं० देश;-साउर, दूर का स्थान जहाँ से माल आवे या जहाँ जाय;-सी, वि० अपने देश या देहात का;-देसांतर,-परदेस, चारों ओर, सारे संसार में; सं० ।
**देसनी** सं० स्त्री० देश का अज्ञात भाग;-क ओरें, बहुत दूर; सं० देश + नी (दूरी एवं लघुत्वद्योतक प्रत्यय) ।
**देसवरिआ** सं० पुं० सफ़ेद कुम्हड़ा जिसका मुरब्बा आदि बनता है, वै०- कोंहड़ा ।
**देसाउर** सं० पुं० व्यापार का स्थान; बाहरी मंडी; वि०-री, बाहर का (माल); दे० देस ।
**देसाचार** सं० पुं० देश का रिवाज; सं० देश + आचार ।
**देसी** वि० अपने देश का; बाहर का नहीं, कहा० देसी कौवा मराठी भाखा ।
**देहाति** दे० दिहात ।
**दैजा** सं० पुं० दहेज; वै० दयजा, दायज;-देब,-लेब, -माँगब,-पाइब ।

दैया दे० दइआ ।
दैव दे० दइउ ।
दोंदब क्रि० स० इनकार करना (बात को), विरोध करना; सं० द्वन्द्व ।
दोख सं० पुं० दोष, पाप;-देब,-लागब,-लगाइब; -होब; वि०-खी, दुर्गुणी; ऐबी (व्यक्ति);-पाप, सं० ।
दोगा सं० पुं० रजाई का छपा हुआ कपड़ा ।
दोङ सं० पुं० ब्याह के बाद की दूसरी विदाई जो गौने (दे० गवन) के कुछ दिन पीछे होती है;-देब, -लाइब; वै० दोंग ।
दोचा सं० पुं० हिसाब में कमी, नुक़सान;-परब; कहा० गदहा कि गाँड़ी म नव मन दोचा ?
दोना सं० पुं० पत्तों का बना पात्र; स्त्री०-निआ; -काढ़ब, मृत्यु के दूसरे दिन दोने में रखकर भात, उड़द की दाल आदि दाहकर्त्ता द्वारा रास्ते पर रखवाना, लघु०-नका ।
दोपच सं० पुं० अड़चन, दुविधा,-परब,-डारब ।
दोब सं० पुं० रोक, नियंत्रण; क्रि०-ब, रोकना, मना करना, हाँकना, प्रे०-बाइब,-बवाइब ।
दोमट वि० स्त्री० अच्छी (भूमि), उपजाऊ; दु-; दो (दोहरी, मोटी)+मट (मिट्टी) ।
दोयँ सं० पुं० मारने की आवाज़;-से, ज़ोर से; भो० गोयँ ।
दोसन वि० द्वेष करनेवाला, विरोधी, सं० द्वेष ।
दोहरस वि० स्त्री० उपजाऊ (मिट्टी या भूमि), वै० -सि ।
दोहराइब क्रि० स० दुहराना, प्रे०-रवाइब ।
दोहरि सं० स्त्री० दुहरी चादर; खलनेवाली बात, -देब, अनुमोदन करना;-बोलब, ऐसी बात बोलना, फबती कसना; भो०, मै० ।
दोहा सं० पुं० दो पंक्तिवाला प्रसिद्ध छंद;-चउपाई, दो छंद जिनमें रामायण लिखी गई है ।
दोहाई सं० स्त्री० सहायता की आशा में की गई पुकार;-देब; संबो०-सरकार कै !, सरकार (आप) बचावें !, राम-,रामजी की शपथ ! भो० मै०; तुल० ।
दोहान सं० पुं० जवान बैल; भो०; मै०-हरा ।
दौङरा दे० दवँगरा ।
दौना सं० पुं० एक छोटा पौदा जिसकी पत्तियाँ सुगंधित होती और देवी को चढ़ाई जाती हैं; -मदुवा जिसका गीतों में उल्लेख है । दे० दवना; मै०, भो० ।
दौराई दे० दउराई ।
दौरी दे० दउरी ।
दौलति सं० स्त्री० सम्पत्ति; वै० दउ- ।

## ध

धंधा सं० पुं० ख़ूब जलता हुआ अलाव;-बारब, धंधा जलाना; साधारण या नित्य प्रति का काम; काम-, व्यापार ।
धँवर वि० पुं० सफ़ेद (पशु); स्त्री०-रि,-री; वै० -रा; सं० धवल ।
धँसनि सं० स्त्री० धँसने की स्थिति; वै०-सानि ।
धँसब क्रि० अ० धँसना, पतन होना, समझ में आना; प्रे०-साइब,-उब ।
धउँकनी सं० स्त्री० धौंकनी ।
धउँकब क्रि० स० धौंकना; (धातु) गर्म करना; प्रे० -काइब,-कवाइब; भा०-काई,-कवाई ।
धउँधिआब क्रि० अ० जल्दबाज़ी करना; व्यर्थ की शीघ्रता करना ।
धकधकाब क्रि० अ० धकधक करना ।
धकाधक क्रि०वि० ख़ूब तेज़ी से; निरंतर; प्र०-क्क ।
धकापेल क्रि० वि० बहुतायत से; धक्का+पेल (दे० पेलब); वै०-पइँच ।
धक्का सं० पुं० धक्का; क्रि०-किआइब, धक्का देना ।
धगरिन सं० स्त्री० (गीतों में) धोबिन; इसका पुं० शब्द नहीं बोला जाता ।
धचका दे० हचका ।
धड़ंग दे० नंग-धड़ंग ।
धड़कब क्रि० अ० धड़कना; प्रे०-काइब ।
धड़का सं० पुं० धड़कने की क्रिया; डर, संदेह; प्र० -ड़ाका,-क्का ।
धड़क्का सं० पुं० ज़ोर का शब्द; धूम-, चहल-पहल, भीड़-भाड़ ।
धतुरा सं० पुं० प्रभावशाली व्यक्ति ।
धधकब क्रि० अ० धधकना, ख़ूब जलना; प्रे० -काइब ।
धधाब क्रि०अ०प्रज्वलित होना; तीव्र इच्छा करना ।
धन सं० पुं० द्रव्य;-छय, धन की बरबादी;-करब, -होब; त्रि०-इत, धनाढ्य ।
धनइत वि०पुं० धनवाला; स्त्री०-तिन; गीत-"बहिनि धनइतिनि भइया निर्धन"; वै०-नैत ।
धनकोदवा सं० पुं० धान एवं कोदो (दे०) मिला हुआ अन्न; स्त्री०-दई (दे० कोदई); भो० ।
धनखर सं० पुं० धान का खेत ।
धनगर वि० पुं० धान उत्पन्न करनेवाला (खेत); स्त्री०-रि; भो०; मै०-हर ।
धनछय सं० पुं० दे० धन; सं० धनक्षय; वै० धन्छय ।

धनिआ सं० स्त्री० धनिया;-मेथी, दो प्रसिद्ध साग ।
धनिया सं० स्त्री० युवा स्त्री, दुलहिन; मालवी में 'धनी' पति या मालिक के लिए आता है ।
धनी वि० धनाढ्य; धनवाला या धनवाली; सं० ।
धनुख सं० पुं० धनुष; सं० ।
धनुहा सं०पुं० बड़ा धनुष;स्त्री०-ही; तुल०बहु धनुही तोरेउँ लरिकाईं ।
धनेचि सं० स्त्री० एक बड़ी चिड़िया जिसका मांस खाया जाता है; वै०-स,-सि ।
धनैत दे० धनइत ।
धन्ना सं० पुं० धरना;-देब; वै० धर्ना; क्रि०-ब ।
धन्नासेठ वि० बहुत धनाढ्य ।
धन्नि सं० स्त्री० धरनि; मोटी लकड़ी जो कुँए पर या दीवार पर रखी जाती है; सं० धृ ।
धन्नि वि० धन्य, प्रशंसनीय;-होब,-भागि, धन्यभाग्य; -धन्नि, धन्य धन्य ।
धपक्का सं० पुं० ज़ोर की थपकी;-मारब;-लगाइब ।
धपाधप वि० बहुत साफ, उज्ज्वल; प्र०-प्प ।
धपाप सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जो सुलतान पुर प्रांत में है और जहाँ स्नानार्थ मेला लगता है । वै० धौ- ।
धपैया सं० पुं० धाप; कोस का आधा; एक मील की दूरी ।
धबइल दे० ढबइल ।
धब्बा सं० पुं० दाग;-परब,-डारब ।
धमक सं० स्त्री० धमकने की आवाज़; क्रि०-ब, मारना; धमक की आवाज़ देना ।
धमकाइब क्रि० स० धमकाना; भा०-की ।
धमकी सं० स्त्री० धमकी;-देब; क्रि०-किआइब ।
धमक्का सं० पुं० धक्का; स्त्री० मोटी स्त्री ।
धमधमाब क्रि० अ० धमधम शब्द होना; प्रे० -माइब ।
धमसा सं० स्त्री० छोटी चेचक;-निकरब,-होब ।
धमाक सं० पुं० 'धम' का शब्द; प्र०-का;-से, ज़ोर से (गिरना) ।
धमार सं० पुं० प्रसिद्ध गीत ।
धमिना सं० पुं० एक प्रकार का साँप; धामिन ।
धमी-धमा सं० पुं० मारपीट; प्र०-म्मी-म्मा; वै० धमा-धमी;-होब,-करब ।
धरउआ सं० पुं० बिना ब्याह के ऐसी स्त्री का लाना जिसका ब्याह पहले हुआ हो;-बइठाइब, -लाइब ।
धरकब क्रि० अ० धड़कना; प्रे०-काइब; वै०-ड़- ।
धरता सं० पुं० ऋण;-रहब, ऋणी रहना ।
धरती सं० स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।
धरनि सं० स्त्री० दे० धन्नि ।
धरब क्रि० स० पकड़ना, रखना; प्रे०-राइब,-वाइब, -उब;-उठाइब, उपयोग में लाना, सँभालना ।
धरम सं० पुं० धर्म; वि०-मी, धर्म करनेवाला; -करम, आचार-विचार; सं० ।
धरमातमा वि० धर्म करनेवाला ।
धरमारथ क्रि० वि० निःस्वार्थ, धर्म के लिए; सं० ।
धरहरिया सं० स्त्री० पकड़ने की कोशिश, बाध्य करने का प्रयत्न;-होब; -करब सं० धृ + हृ (धरब + हरब) ।
धराई सं० स्त्री० पकड़ने की क्रिया;-पाइब, पकड़ पाना; सं० धृ० ।
धराऊ वि० सुरक्षित (कपड़ा आदि); विशेष अवसरों पर पहनने के लिए रखा हुआ;-धरब; वै० -ऊँ; सं० धृ ।
धरिकार सं० पुं० बाँस की टोकरी आदि बनानेवाला; स्त्री०-रिन ।
धरोहरि सं० स्त्री० थाती; जो वस्तु दूसरे के लिए रखी हुई हो;-धरब ।
धरौआ दे० धरउआ ।
धवरहरा सं० पुं० टीला, ऊँची इमारत, मीनार ।
धहर-धहर दे० भहर-भहर ।
धाइब क्रि० अ० दौड़ना;-धूपब, दौड़-धूप करना; सं० धा; वै०-उब ।
धाकड़ सं० पुं० निकृष्ट ब्राह्मण ।
धागा सं० पुं० डोरा, तागा ।
धातु सं० स्त्री० वीर्य ।
धान सं० पुं० चावल का पेड़, उसका दाना; सं० धान्य ।
धानी सं० पुं० एक प्रकार का रंग ।
धाम सं०पुं० पवित्र स्थान; चारों धामों में से एक; द्वारका,बदरीनाथ, पुरी एवं रामेश्वरम्; चारिउ-; सं० ।
धार सं० स्त्री० चाकू या तलवार की धार; वै० -रि ।
धारा सं० पुं० बहाव; गहरा पानी; दशा, बुरी हालत;-क पहुँचब,-होब, बुरी दशा हो जाना; सं० ।
धारि सं०स्त्री० देवी को चढ़ाई हुई वह पानी की धार जिसमें लौंग, गुड़ आदि डाला हो;-ढरकावन (दे०); -देब,-चढ़ाइब; सं० ।
धारौ-धार क्रि० वि० बेरोक-टोक (बह जाना, पतित होना); एकदम, निरंतर; बीच धारा में पड़कर ।
धाह सं० पुं० जलन; जलती हुई आग की दूर से लगती गर्मी;-मारब,-लागब; सं० दह् ।
धिक्कारब क्रि० स० बुरा कहना; सं० धिक् ।
धिङरा वि० पुं० सुस्त, लुच्चा, जिसे कोई काम न हो; भा०-रई,-रपन; दे० धींङधींङा ।
धिया-पूता सं० पुं० बाल-बच्चे; धी (कन्या) + पूत (पुत्र); 'धिया' स्त्रियों द्वारा अलग भी संबोधन रूप में बोला जाता है । बराबर अवस्थावाली स्त्री को 'बहिनी' और छोटी को 'धिया' कहा जाता है ।
धिरइब क्रि० स० धमकाना; प्रे०-वाइब ।

धींकब क्रि० अ० गर्म होना; प्रे० धिंकइब,-वाइब, -उब।

धीङ-धीङा सं०पुं० अस्तव्यस्तता;-करब,-मचाइब; शायद इसी से 'धिङरा' बना है।

धीम वि० पुं० धीमा; स्त्री०-मि, क्रि०वि०-में,-में -धीमें, धीरे-धीरे; मज़े में।

धीया दे० धिया-।

धीरज सं० पुं० धैर्य;-धरब, धैर्य करना; सं० धीर।

धीरपूर वि० पुं० शांत एवं धैर्यवान्; भा० धिर-पुरई।

धीरा सं० पुं० धीरज;-धरब, ठहरना, शांत रहना; -गम्हीरा, धैर्य एवं गांभीर्य।

धीरें क्रि० वि० शांत होकर;-धीरें, शनैः शनैः।

धीवर सं० पुं० कहार।

धुआँठब क्रि० अ० धुएँ से काला पड़ जाना; प्रे० -ठाइब; दे० धुवाँ; वै०-वँ-।

धुइँहर सं० पुं० धुआँ करने के लिए जलाई हुई आग;-करब, ऐसी आग जलाना (प्रायः मच्छड़ों को भगाने के लिए)।

धुकुनब क्रि०स० मारना, पीटना; खूब पीटना; प्रे० -नाइब, वै०-नकब।

धुकुर-धुकुर क्रि०वि० धक-धक (हृदय का चलना); वै० धुकुर-पुकुर;-करब,-होब।

धुचब क्रि० अ० हठ करना; सं०-च्चि (दे०); प्र० -च्चाब।

धुच्चि सं० स्त्री० हठ, व्यर्थ की जिद;-करब; क्रि० -चब,-च्चाब; वि०-च्ची।

धुनकब दे० धुकुनब।

धुनकी सं० स्त्री० छोटी सी डेहरी (दे०);-यस, छोटा एवं मोटा; व्यं० पेट (प्रायः छोटे बच्चों का)।

धुनब क्रि० स० धुनना; बार-बार कहते रहना, हठ करना; प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब।

धुनाई सं० स्त्री० धुनने की विधि अथवा मज़दूरी।

धुनि सं० स्त्री० ध्वनि, धुन, रट;-लगाइब; क्रि० -आब, जिद करना, व्यर्थ काम करने के लिए इच्छुक होना।

धुनिआँ सं० पुं० धुननेवाला; स्त्री०-निनि।

धुनिनि सं० स्त्री० एक चिड़िया जो रुई के रंग की होती है।

धुपाइब क्रि० स० धूप से (टोकरी को) पुताना; प्रे० -पवाइब; दे० धूपब।

धुपुर-धुपुर दे० धुकुर-धुकुर।

धुमिल वि० पुं० मटमैला; स्त्री०-लि; क० "नैहरे म चुनरी धुमिलि भइ"; वै० धू-; सं० धूम्र (धुएँ के रंग का) क्रि०-लाब।

धुर सं० पुं० धुरा; स्त्री०-री; वै० प्र०-रा।

धुरिआधाम सं० पुं० नाश की ओर; धूल का घर; -म जाब, नष्ट होना।

धुरिआब क्रि० अ० धूल लग जाना; प्रे०-वाइब।

धुवाँ सं० पुं० धुआँ; वि०-मिल, क्रि०-ब, धुआँठब, -वँठब; मु० मुँह-होब, आश्चर्य या शर्म से मुँह फक हो जाना; सं० धूम्र।

धुस्स सं० पुं० ढेर (बालू का);-होब,-परब; प्र० धु-; धुसकट, बालू से भरी भूमि।

धुस्सा सं० पुं० गर्म चादरा; हाथ से बुना पुराने समय का गर्म ओढ़ना।

धूईं सं० स्त्री० धूनी;-रमाइब, (साधु संन्यासी का) मस्त होकर रहना; सं० धूम्र।

धूप सं०पुं० एक पेड़ और उसकी लकड़ी जो सुगंध देती है;-दीप, पूजा का सामान; सं०।

धूपब क्रि० स० धूप या करायल (दे०) से (टोकरी आदि को) पोतना; प्रे० धुपाइब,-पवाइब।

धूम सं० स्त्री० चहल-पहल;-धाम;-मचब,-मचाइब।

धूमिल दे० धुमिल।

धूरि सं० स्त्री० धूल; वि० धुरिहा;-माटी।

धूह दे० ढूह।

धेनु सं० स्त्री० दूध देती हुई गाय; सं०।

धोंधा वि०पुं० मोटा एवं सुस्त; सं० निर्जीव पदार्थ; सं० ढुंढि।

धोइब क्रि० स० धोना; पीटना, खूब मारना; प्रे० -वाइब,-उब; वै०-उब।

धोकर-कसा सं० पुं० काल्पनिक व्यक्ति जो अपनी 'धोकरी' (दे०) में बच्चों को भर के उठा ले जाय; इस शब्द से छोटे-छोटे बच्चे डराये जाते हैं। धोकर+कसब।

धोकरी सं० स्त्री० बड़ी थैली; क्रि०-रिआइब; थैले में कसकर बाँध लेना।

धोखा सं० पुं० धोका;-खाब,-देब,-करब,-कमाब; वि०-बाज,-खेबाज; क्रि० वि० धोखी-धोखाँ, धोखे से।

धोती सं० स्त्री० स्त्री या पुरुष की धोती;-लूगा, कपड़ा; सं० धौत (धुला हुआ); घृ०-ता।

धोबिनि सं० स्त्री० धोबी की स्त्री।

धोबी सं० पुं० धोबी;-घट्टा, धोबी का घाट (स्नान-वाला नहीं)।

धोव सं० पुं० धोने की बारी; यक-, दुइ-, पहिला -, दुसरा-; (२) नाश; तोर-होय, तेरा नाश हो! दूसरे अर्थ में यह शब्द शाप देने के ही लिए आता है। प्र०-वा।

धोवन सं० पुं० धोने के बाद गिरा हुआ पानी; निकृष्ट अंश; गोड़े क-, तुच्छ (दूसरे की तुलना में) वै०-नारी।

धोवाई सं०स्त्री० धोने की पद्धति, क्रिया या उसकी मज़दूरी।

धौं दे० दहुँ।

धौंकनी दे० धउँकनी।

धौरा वि०पुं० सफेद (बैल); स्त्री०-री; सं० धवल; दे० धँवर।

धौलागिर सं० पुं० धवलागिरि (चोटी)।
धौंस सं० स्त्री० रोब, गर्वपूर्ण व्यवहार, वैं० धउंस;-सहब,-मानब।
धौंसा सं० पुं० बड़ा नगाड़ा;-बाजब,-बजाइब।

# न

नंगई सं० स्त्री० निर्लज्जता एवं हठ;-करब; क्रि०-गाब।
नंगधड़ंग वि० पुं० एकदम नङ्गा; प्र०-गै।
नंगबाँड़िया वि० पुं० (बच्चा) जो अपनी बात पर मचला रहे; जिद्दी; नंगा (दे०)+बाँड़ा (दे०) वै०-आ।
नंगा वि० पुं० बेशर्म एवं झगड़ालू; स्त्री०-गिनि, क्रि०-ब, हठ करना; वै०-ङ्‌ङा, भा०-गाई,-लुच्चा, अत्यन्त नीच; सं० नग्न।
नंगानंग वि० पुं० बिलकुल नङ्गा; सं० नग्न; वै० नि-।
नंगाब क्रि० अ० अनुचित हठ करना।
नंद सं० पुं० यशोदा के पति;-दुलारे, श्रीकृष्ण।
नंदि दे० ननदि।
नंदोई दे० ननदोई।
नइकी वि० स्त्री० नई; पुं०-वका (दे०)।
नइचा सं० पुं० हुक्के का नैचा।
नइनी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली जिसका उल्लेख गीतों में मिलता है; "कूदै मल्लाह पकरै-मछरी"-गीत।
नइया सं० स्त्री० नाव।
नइहर सं० पुं० (स्त्री के) पिता का घर या गाँव; क० "नइहरे म चुनरी घुमिल भइ"।
नई वि० स्त्री० नई, ताज़ा; सं० नव।
नउअई सं० स्त्री० नाई का काम; नीचतापूर्ण खुशामद;-करब; वै०-वई।
नउआझकोर सं० पुं० नाइयों की लंबी पञ्चायत; झंझट; वै०-झाकड़ि।
नउज क्रि० वि० कोई हर्ज नहीं।
नउटंकी दे० नवटंकी।
नउहड़िआ दे० नवहड़िया।
नकचवाइब क्रि० स० निकट पहुँचा देना; वै०-ग।
नकचाब क्रि० अ० निकट पहुँचना; वै० नग-; दे० नगीच।
नकछिकनी सं० स्त्री० एक घास जिसको मलकर सूँघने से छींकें आने लगती हैं।
नकटा सं० पुं० व्यक्ति जिसकी नाक कट गई हो; स्त्री०-टी; एक छोटा गीत जो स्त्रियाँ गाती हैं।
नकटी सं० स्त्री० नाक की मैल।
नकद्दर वि० खराब, रद्दी; फ़ा० ना+कद्र।
नकनकाब क्रि० अ० नाराज़ होकर बोलते रहना।
नकबेसरि दे० बेसरि;-उतारब।
नकल सं० पुं० अनुकरण;-करब,-उतारब-बनाइब; वि०-ली; फ़ा०।
नकसा सं० पुं० नक्शा;-खींचब,-उतारब,-बनाइब।
नकारब दे० नहकारब।
नकारा सं० पुं० इनकार; क्रि०-कारब,-हकारब।
नकासब क्रि० स० नक्कासी करना; प्रे०-कसवाइब; फ़ा० नक्श।
नकिदरों सं० पुं० परेशानी; कष्ट; नाकि+दररब (नाक रगड़ना); वै०-कदरौं;-करब,-होब।
नकिष्ट वि० निकृष्ट, रद्दी; सं०।
नकुना सं० पुं० नाक; वै०-रा, ने-, न्य-।
नक्कू वि० मुँह छिपानेवाला;-बनब।
नक्कटई सं० स्त्री० बदनामी;-करब,-होब; नाक+कटाई।
नखड़ा सं० पुं० नखरा;-करब; वि०-ड़हा,-ही; नखर:।
नखत सं० पुं० नक्षत्र; वै०-छत्र; सं०।
नखून सं० पुं० नाखून; वि०-नी, बारीक (किनारा); दे० नह।
नग सं० पुं० बहुमूल्य पत्थर; आभूषण में जड़ा हुआ पत्थर या शीशा।
नगद सं० पुं० नकद, बढ़िया; सं०-दी, नकद रुपया; प्र०-दै,-दौ;-नरायन, नकद रुपया।
नगर सं० पुं० शहर; सहर-, देहात नहीं; वै०-प्र; सं०।
नगाउरी सं० पुं० एक प्रकार का बैल तथा गाय; नागौर (स्थान) से।
नगारा सं० पुं० नगाड़ा;-बाजब,-बजाइब, विज्ञापन करना; नक्कार:।
नगिरही सं० स्त्री० स्त्रियों का एक आभूषण जिसमें नौ दाने होते हैं। सं० नवग्रह+ई।
नगीच वि० पुं० निकट;-ची, निकट का सम्बन्धी; क्रि० वि०-चें, क्रि०-गिचाब,-गचाब,-कचाब।
नगीना सं० पुं० अँगूठी का पत्थर; वि० सुन्दर, बहुमूल्य।
नगेसरनाथ सं० पुं० अयोध्या का प्रसिद्ध शिव-मंदिर; बाबा-।
नघाइब क्रि० स० कुदा देना; 'नाघब' (दे०) का प्रे० रूप; प्रे०-घवाइब।
नघ्घन सं० पुं० किसी रोगी के मलमूत्र को लाँघने से मिला रोग;-पाइब; दे० नाघब; सं० लंघ्।
नचना सं० पुं० बारात में मित्रों एवं नातेदारों

द्वारा नाचनेवाले को दिया गया रुपया;-देब, -पाइब; सं० नृत् ।
नचनिआ सं० पुं० नाचनेवाला; सं० नृत् ।
नचवाइब क्रि० स० नचवाना; वै०-उब,-चाइब ।
नचाइब क्रि० स० नचाना, परेशान करना ।
नचाई सं०स्त्री० नाचने की क्रिया, सुन्दरता आदि ।
नछरोहब दे० निछरोहब ।
नजर सं० स्त्री० दृष्टि;-करब,-लागब,-लगाइब, -झारब; रिश्वत;-देब,-लेब, क्रि०-राइब,-राब; वै० -रि; फ़ा० ।
नजरा सं० पुं० आगे के बड़े-बड़े बाल, जुलफी; -राखब ।
नजराना सं० पुं० वह रुपया जो किसी को प्रसन्न करने के लिए दिया जाय;-देब,-लेब; फ़ा० ।
नजराब क्रि० अ० टोना लगना; दूसरे की दृष्टि से प्रभावित हो जाना;-राइब, टोने की दृष्टि डालना; वै०-रिआब; फ़ा० ।
नजरिआब दे० नजराब ।
नजाकति सं० स्त्री० नज़ाकत; फ़ा० ।
नजारा सं० पुं० प्रेम की दृष्टि, प्रेमियों का परस्पर देखना;-मारब; फ़ा० ।
नज़ीर सं०स्त्री० उदाहरण, दृष्टांत (प्राय: मुकदमों का);-देब;-पेस करब; फ़ा० ।
नजूल सं० पुं० भूभाग जो जोता-बोया न जाय ।
नजोर वि० पुं० कमज़ोर;-होब, वै० निजोड़ ।
नट सं० पुं० खेल-कूद करनेवाली एक जाति के पुरुष; स्त्री०-टिनि,-टिनी,-न; सं० ।
नटई सं० स्त्री० गला, गर्दन; वै० गटई;-फारब, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना ।
नटारम सं० पुं० प्रारंभिक तैयारी; पूरा प्रबंध; -करब,-होब; सं० नटारंभ ।
नटुला सं० पुं० नाटा व्यक्ति; स्त्री-ली, म०-ल्ला, -ल्ली ।
नतअभेर सं० पुं० रिश्तेदारी का सिलसिला; नात+अभेर; दूसरा शब्द अलग नहीं बोला जाता ।
नताइति सं० स्त्री० रिश्तेदारी ।
नतोहू सं० स्त्री० नाती (दे०) की स्त्री; सं० नप्तृ+वधू ।
नतौ क्रि० वि० नहीं; दो बातों को नहकारने के लिए यह यों प्रयुक्त होता है:—न तौ अपुना आय न लरिका पठइस, न स्वयं आया, न लड़के को भेजा । कविता में "नतरु" ।
नथब क्रि० अ० नथ जाना; प्रे० नाथब ।
नथवाई सं० स्त्री० नाथने की क्रिया, ढंग या मज़दूरी ।
नथाइब क्रि० स० नथवाना; नाथब (दे०) का प्रे० रूप ।
नथिआ सं०स्त्री० नथ;-पहिरब;-झुलनी, दो प्रसिद्ध आभूषण जो नाक में पहने जाते हैं ।
नथुनी सं० स्त्री० छोटी नथ;-गढ़ब,-गढ़ाइब ।
ननदि सं० स्त्री० पति की बहिन; वै०-न्दि; गीतों में "ननदी, ननदिया" ।
ननदोई सं० पुं० पति का बहनोई; ननद का पति; गीतों में "ननदोइया"; वै० नदोई ।
ननिआउर सं०पुं० नाना का घर; गाँव जहाँ नाना आदि रहते हों, क्रि० वि०-अउरें, ननिहाल में; सी०-हार ।
ननिआससुर सं० पुं० पति या पत्नी का नाना ।
ननुआ दे० ने- ।
नन्हका वि० पुं० छोटा, स्त्री०-की, दे० नान्ह ।
नपना सं०पुं० नापने की वस्तु, बर्तन आदि, स्त्री० -नी; सं० माप ।
नपहँड़ सं० पुं० नापने का बर्तन, नाप+हाँड़ी (भांड) ।
नपाइब क्रि० स० नपाना, प्रे०-पवाइब,-उब, वै० -उब, भा०-ई,-पवाई ।
नपाक वि० पुं० अपवित्र, स्त्री०-कि, फ़ा० ना-, भा० नपकई ।
नपान वि०पुं० प्रतीक्षा में, लालच में,-रहब, स्त्री० -नि, वै० न्य- ।
नपाब क्रि० अ० (प्रायः खाने पीने की) लालच में रहना, वै० न्य-, ने- ।
नपैया सं० पुं० नापनेवाला, प्रे०-पवैया, सं० माप् ।
नफगर वि० पुं० नफा देनेवाला, फ़ा० नफ़ः+गर, स्त्री०-रि ।
नफा सं० पुं० लाभ,-मुनाफा, आय,-लेब,-करब, -पाइब, नफः ।
नबाब सं० पुं० धनी व्यक्ति, अधिकारप्राप्त पुरुष, व्यं० व्यर्थ में गर्व अथवा अत्याचार करनेवाला, स्त्री०-बिन,-नि, भा०-बी, अराजकता, नव्वाब ।
नबिस्सासी वि० विश्वास न करने योग्य, न+बिस्सास (दे०), सं० विश्वास ।
नबुला दे० नेबुल ।
नबूझ वि० पुं० न समझनेवाला; स्त्री०-झि; वै० अ-; तुल० अबहुँ न बूझ अबूझ; न+ सं० बुद्धि; भा०-बुझई; दे० कमबुझ ।
नबूद वि० पुं० नष्ट, स्त्री०-दि,-करब,-होब, फ़ा० नाबूद ।
नबेली वि० स्त्री० नई, जवान (स्त्री), सुन्दर, शौक़ीन ।
नबोल वि० पुं० बेहोश, जो न बोल सके; स्त्री० -लि, वै० अ- ।
नब्बे वि० ९०; कहा० जइसै-तइसै छब्बे ।
नमो नरायन संबो० गुसाईं लोगों को नमस्कार करने का शब्द ।
नमोसी सं० स्त्री० बदनामी;-करब,-होब ।
नयका वि० पुं० नया; स्त्री०-की; वै०-ब- ।

नयचा सं० पुं० हुक्के की नली; वै०-इ-, नै-।

नयन सं० पुं० आँख, दृष्टि; अपने-से, अपनी ही आँखों; कवि० में-ना,-नन,-नवा (गीत)।

नयपाल सं० पुं० नैपाल;-ली, नैपाल देश का निवासी; वै० नै-।

नयबई सं० स्त्री० नायब का पद या काम;-करब, -लेब,-पाइब।

नर सं० पुं० पुरुष; मादा नहीं; सं०।

नरई सं० स्त्री० एक घास जो पानी में होती है और जिसमें पत्ते नहीं होते;-तरई, (कुल का) कोई भी व्यक्ति; छोटे से छोटा सदस्य (परिवार का); प्राय: ये दोनों शब्द किसी कुल में निर्वंश होने पर प्रयुक्त होते हैं।

नरक सं० पुं० स्वर्ग का उलटा;-कें जाब, नरक में पड़ना; वि०-हा,-ही, नारकीय;-करब,-होब, संकटपूर्ण करना या होना।

नरकासुर सं० पुं० प्रसिद्ध राक्षस।

नरकुल सं० पुं० जंगली पौदा जिसकी लकड़ी से कलम बनाते हैं।

नरगह सं० पुं० दु:खमय स्थिति;-करब,-होब; सं० नृग। (?)

नरजई सं० स्त्री० अप्रसन्नता, नाराज़ी; वै० -राजी; दे० नराज।

नरदई सं० स्त्री० नारद का काम; इधर-उधर लगाने की आदत; दे० नारद।

नरदहा सं० पुं० नाबदान।

नरनराब क्रि० अ० जोर जोर से बोलना; झगड़ा करना; नार:; वै० नरांब।

नरबदा सं० स्त्री० प्रसिद्ध नदी;-करब,-होब, बहुत कीचड़ कर देना या होना; सं० नर्मदा।

नरबदेसर सं० पुं० नर्मदेश्वर शिव।

नरम वि० पुं० नर्म;-गरम, सभी प्रकार का वातावरण; क्रि०-माब, नर्म होना, भा०-माई, नर्मी।

नरमा सं० पुं० एक प्रकार की रुई और उसका पेड़।

नरा सं० पुं० पेट के भीतर का नाभि के पास का भाग जिसमें दर्द होता है;-उखरब,-बैठाइब, ऐसा दर्द होना और उसको शांत करना, प्र० नारा।

नराज वि० पुं० रुष्ट; स्त्री०-जि, भा०-जी; नाराज़।

नरिअर सं० पुं० नारियल; वै०-यर।

नरिआ सं० स्त्री० छत पर खपड़े के साथ रखी जानेवाली मिट्टी की बनी वस्तु; खपड़ा-, यह दोनों सामान; वै०-या।

नरिआब क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ चिल्लाना; नार:, कहा० घिउ देत बाभन नरिआय; वै० नरांब।

नरी सं० स्त्री० सूत लपेटने की लकड़ीवाली पोली चीज़;-दार, एक प्रकार का जूता, वै० नल्लीदार सं० नलिका।

नरेस सं० पुं० राजा; कहा० परदेस कलेस नरेसहु को।

नरोई सं० पुं० घुटने के नीचे का सामनेवाला भाग जिसमें ऊपर हड्डी होती है।

नल सं० पुं० राजा नल; पानी का कल; स्त्री०-ली; सं०।

नलायक वि० पुं० अयोग्य; भा०-लयकी; नालायक।

नल्ला सं० पुं० हथेली एवं बाँह को जोड़नेवाला भाग; स्त्री०-ल्ली; यकनल्ली, जिसके एक ही नल्ली हो, ऐसे लोग बड़े बलवान् होते हैं। नल्लीदार, एक प्रकार का जूता; दे० नरी।

नव वि० नौ; क्रि०-तता, दाहिनी ओर घूमने के लिए हलवाहे का बैलों को निर्देश;-वाइब, मोड़ना; -गीर, नया।

नवा सं० पुं० नये अन्न का ग्रहण;-करब,-होब; वर्ष में दो बार यह रस्म गाँवों में होती है; सं० नव (नया) वि० नया, कहा० नवा नौ दिन पुराना सब दिन।

नवाइब क्रि० स० मोड़ना; सं० नम:।

नवाई सं० स्त्री० नवीनता;-कै, नई बात; सं० नव +ई।

नवारा सं० पुं० नाव पर चढ़कर खेला जानेवाला एक पुराना खेल; गीत—"सरजू मेँ खेलत राम नवारा"; वै० ने- सं० नौ।

नसइल वि० पुं० नशेवाला, मस्त, खतरनाक; स्त्री० -लि; प्र०-ला; नश:।

नसकट वि० जो नस काटे; घाघ-"नसकट खटिया बतकट जोय......।"

नसकटा सं० पुं० मुसलमान; नस+कटा (जिसकी नस कटी हो अर्थात् मुसलमानी हुई हो)।

नसल सं० स्त्री० जाति।

नसहा वि० पुं० नशेवाला; स्त्री०-ही; नश:+हा।

नसा सं० पुं० नशा;-चढ़ब,-करब,-होब;-पानी, वक्त पर खाने या पीने का क्रम; वि०-सइल,-हा, -सेवाज।

नसाइब क्रि० स० नशा करना, खोना; सं० नाश; वै०-ब्रब, प्रे०-सवाइब।

नसि सं० स्त्री० नस;-नसि; प्रत्येक नस, रग-रग।

नसी सं० स्त्री० हल से जुती एक पंक्ति; फार (दे०) का अग्रिम भाग;-घूमब, हल चलना।

नसीहति सं० स्त्री० उपदेश, चेतावनी,-देब, -करब।

नसुहा सं० पुं० लकड़ी का टुकड़ा जिसका आधा भाग भूमि में गाड़कर ऊपर चारा काटा जाता है।

नसूर सं० पुं० फोड़ा जो अच्छा न हो; नासूर।

नसेबाज वि० पुं० नशा करनेवाला; दे० नसा।
नस्ट वि० पुं० नष्ट, बहुत खराब;-भ्रस्ट, गया बीता; बुरी-बुरी गाली; सं०।
नह सं० पुं० नाखून;-न्नी, नाखून काटने का हथियार; नहे नह, प्रत्येक नख में;-नह टाँड़ना, बड़ा दंड; सं० नख।
नहकारब क्रि० स० इनकार कर देना; "न" कह देना।
नहकै क्रि० वि० नाहक, व्यर्थ ही; प्र०-कौ, यों ही; ना+हक़ (सत्य)।
नहछू सं० पुं० विवाह के पूर्व वर एवं वधू के नाखून काटकर पैर में महावर (दे०) देने आदि का रस्म;-करब,-होब वै० ने-।
नहट वि० पुं० नष्ट;-होब;-भरहट, नष्ट-भ्रष्ट।
नहनह वि० नाना प्रकार का (दुःख)।
नहन्नी दे० नह।
नहरूम वि० पुं० जिससे कुछ छीन लिया गया हो;-करब,-होब; महरूम।
नहवनिया सं० पुं० स्नान के लिए जानेवाला यात्री।
नहवाइब क्रि० स० नहलाना; वै०-उब, भा०-ई, नहाने की क्रिया; सं० स्ना।
नहसुति सं० स्त्री० एक पेड़ जिसकी लकड़ी लाल होती है। वै० ने-।
नहान सं० पुं० स्नान;-लागब, स्नान का मेला लगना, भीड़ होना; सं० स्नान।
नहारी सं० स्त्री० नाश्ता;-करब, सबेरे कुछ खाना।
नहिआइब क्रि० स० इनकार कर देना; 'नहीं' कह देना; दे० नहकारब।
न हो ! संबो० क्यों ! सुनो !
नहोस वि० पुं० अजान, छोटा (उम्र में), नादान; न+होश; स्त्री०-सि, भा०-सी।
नाइब क्रि० स० डालना, प्रे० नवाइब, वै० -उब।
नाउनि सं० स्त्री० नाई की स्त्री;-ठकुराइनि, नाइन का आदर प्रदर्शक संबोधन।
नाऊ सं० पुं० नाई;-बारी, नौकर;-ठाकुर, नाई को संबोधित करने का आदर प्रदर्शक रूप; भा० नउअई।
नाका सं० पुं० प्रवेशद्वार;-बंदी, प्रवेश पर नियंत्रण;-करब।
नाकि सं० स्त्री० नाक; पानी में रहनेवाला भैंस की भाँति का एक बड़ा जानवर;-काटब, घोर अपमान करना।
नाकेदार सं० पुं० कर्मचारी जो नाके का नियंत्रण करता है। स्त्री०-रिनि, भा०-री।
नाग सं० पुं० साँप; करिया-,-नाथ; स्त्री०-गिनि; सं०; कहा० जइसे नाग नाथ तइसै साँप नाथ।
नागरी सं० स्त्री० हिंदी।
नागा सं० पुं० अनुपस्थिति;-होब,-करब; अर० नाग़ः।
नागिनि सं० स्त्री० छोटी विषैली सर्पिणी; ईर्ष्यापूर्ण बुरी स्त्री; दे० नाग।
नाघब क्रि० स० कूदना, पार करना; प्रे० नघाइब, -उब; सं० लंघ्; वै० नाँ-।
नाचब क्रि० स० नाचना, घबरा के इधर-उधर फिरना; प्रे० नचाइब,-उब, नचवाइब,-उब; सं० नृति।
नाचि सं० स्त्री० नाच;-खड़ी करब, नृत्य की पूरी पार्टी जुटाना; व्यं० व्यर्थ का फ़ज़ीता करना; सं० नृत्य।
नाजो सं० स्त्री० (गीतों में) नाज़ करनेवाली सुंदरी; नायिका।
नाटक सं० पुं० तमाशा, खेल;-करब,-होब; सं०।
नाटा वि० पुं० कद में छोटा; स्त्री०-टी; सं० छोटा बैल; स्त्री० आदर प्रदर्शक रूप "नाटौ"।
नात सं० पुं० रिश्तेदार;-हित,-बाँत, हित-मित्र; रिश्ता;-तूरब, रिश्ता तोड़ना; भा० नताइति, नाता।
नाती सं० पुं० पौत्र; स्त्री०-तिनि; व्यं० बेचारा; कोई व्यक्ति जिसे नीचा दिखाना हो; सं० नप्तृ; छोटे पौत्र को "नाती बाबा" भी कहा जाता है।
नातेदारी सं० स्त्री० रिश्ता;-करब,-तूरब।
नाथ सं० पुं० मालिक; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; सं०।
नाथब क्रि० स० नाथना, फँसाना; प्रे० नथाइब, नथवाइब।
नाथि सं० स्त्री० जानवरों की नाक में बाँधने की रस्सी;-लगाइब,-पगहा।
नाधब क्रि० स० नाधना, जोतना; प्रे० नधाइब, -धवाइब,-उब; सं० नध्।
नाधा सं० पुं० रस्सी जो नाधने के काम आती है; -पैना क भीखि, देहात में प्रचलित एक भिक्षा जो जानवरों में बीमारी होने के समय किसान नाधा-पैना (दे०) लेकर माँगते हैं।
नाना सं० पुं० माँ का पिता; स्त्री०-नी; ये दोनों शब्द व्यं० स्वरूप छोटों के लिए क्रोध में प्रयुक्त होते हैं।
नान्ह वि० पुं० छोटा-सा, स्त्री०-न्हि; क्रि० वि० -न्हें, छुटपन में;-न्हे क मिलनियाँ, छुटपन का मित्र (गीतों में)।-भरे कै, बहुत छोटा सा।
नाप सं० पुं० माप,-लेब,-देब; क्रि०-ब, नापना।
नापब क्रि० सं० नापना, प्रे० नपाइब, नपवाइब, -उब; मु० गटई-,दंड देना,-जोखब, तौलना, जाँच पड़ताल करना; सं०माप्।
नाफा दे० नेफा।
नाबदि सं० स्त्री० न होने की स्थिति, अस्वीकृति;

-होब,-करब, अस्वीकार करना; न + बदब (दे०)।
नाभी सं० स्त्री०बीच का भाग (भूमि या नदी का); सं०।
नाम दे० नावँ।
नाय सं० स्त्री० नाव; सं० नौ।
नायक सं० पुं० नेता; स्त्री०-का, प्रभावशाली स्त्री; व्यं० ख़राब स्त्री; गी० कुलवा क नायक, कुल का अगुआ; सं०।
नायब सं० पुं० सहायक; भा०-बी।
नार सं० पुं० नाभी से जुटा लंबा चमड़ा जो बच्चे के जन्म पर काटा जाता है;-छिनब (दे०),-गाड़ब, इसके काटने को 'छिनब' (सं० छिद्) कहते और उसे काटकर तुरंत ही जन्म के स्थान पर ही गाड़ देते हैं।
नारद सं० पुं० प्रसिद्ध पौराणिक व्यक्ति;-मुनि; स्त्री०-दा, झगड़ालू स्त्री, इधर-उधर लगानेवाली स्त्री; दे० नरदई।
नारा दे० नरा; (२) नाला; नदी-।
नारायन सं० पुं० भगवान्; वै० नरा-; स्त्री०-नी, -माई।
नारि सं० स्त्री० स्त्री; कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं०-री।
नारी सं० स्त्री० नाड़ी;-देखब,-देखाइब; सं० नाड़ी; (२) नाली;-खोंदब,-बनाइब।
नालि सं० स्त्री० नाल;-ठोंकब,-ठोकाइब,-बन्हाइब।
नाली दे० नारी।
नावँ सं० पुं० नाम, यश;-गाँव, विवरण,-वाँ-रासी, उसी नाम का दूसरा व्यक्ति, कहा० मर्द मरै नावँ कँ निमर्द मरै पेट कँ,-करब,-होब।
नास सं० पुं० नाश,-करब,-होब;-भै, (शाप का रूप) तू ने नाश कर दिया! क्रि० नसाइब।
नासि सं०स्त्री० नाक में घी आदि डालने की क्रिया, -देब,-लेब।
नाहक क्रि० वि० व्यर्थ; प्र० नहकै, व्यर्थ ही।
नाहर वि० पुं० बहादुर; कहा० जरदार मर्द नाहर चहै घर रहै चहै बाहर;=शेर; वै०-रू, तुल० मारेसि गाय नाहरू लागी।
नाहाँ सं० पुं० इनकार;-करब।
नाहीं क्रि० वि० नहीं; सं० इनकार,-करब।
निकरब क्रि० अ० निकलना; प्रे०-कारब,-करवाइब, वै०-सब;-पइठब, आना जाना; सं० निष्क्रि-।
निकाई सं० स्त्री० अच्छाई।
निकार सं० पुं० चेचक; (२) निकलने का ढंग, -पइठार, आना जाना;-होब; वै०-स।
निकोलब क्रि० स० छिलका उतारना, चमड़ा उतारना; प्रे०-वाइब,-उब; निकोला मूस यस, दुबला पतला, मरियल सा।
निखरब क्रि० अ० निखरना, प्रे०-खारब, साफ़ करना,-वाइब,-उब।
निखार सं० पुं० सफ़ाई;-करब; वै० ति-।
निखोरब क्रि० स० नाखून से छिलना, प्रे० -वाइब।
निगराइब क्रि० स० स्पष्ट कर लेना; वै० -ङ-; सं० निर्णय (?)
निगाह सं० स्त्री० दृष्टि, कृपा;-करब,-होब।
निगोड़ा वि० पुं० जिसके संतान न हो; वै०-ड़ी, -ड़िया; नि + गोड़ (बे पैर = जिसका वंश आगे न चले)।
निघारब क्रि० स० (जाँत में कुछ न छोड़कर) पीसना; अच्छी तरह पीसना।
निङानिंग दे० नङानङ्ग।
निचला वि० पुं० नीचेवाला; स्त्री०-ली।
निचाट वि० सूनसान, निर्जन; क्रि० वि०-टें, निर्जन स्थान में, खुले में, छत के नीचे नहीं।
निचाब क्रि०अ० नीचे आना, प्रे०-चवाइब,-उब।
निचोर सं० पुं० संक्षेप, असल रहस्य; क्रि०-ब, निचोड़ना, प्रे०-रवाइब।
निछरोइब क्रि० स० नाखून से काढ लेना।
निछान वि० पुं० केवल, जिसमें कुछ और न मिला हो; प्र०-नै; नि + छान (बिना छना हुआ, ज्यों का त्यों); निछान चाउर,-गुड़।
निज वि० पुं० बिलकुल; वै०-जु, स्त्री०-जि;-उल्लू; सं० निजं (निर्दिष्ट) (२)-कै, अपना, क्रि० वि० खूब, बिलकुल, एकदम; सं० निज, अपना।
निजड़ वि० पुं० कम या कुछ न जाड़ेवाला (दिन, मौसम);-होब,-रहब; नि + जाड़ (दे०)।
निजी वि० अपना, दूसरे का नहीं;-घर,-रुपया।
निजोड़ दे० नजोर।
निठाह वि० (समय) जब कोई फ़सल आदि तैयार न हो;-महीना; भा०-ही;-ही मारिकै, मुँह पर बिना कोई भाव प्रदर्शित किये।
निठुर वि० पुं० निष्ठुर; स्त्री०-रि, भा०-ई।
निडर वि० पुं० निर्भय; स्त्री०-रि।
नित क्रि० वि० नित्य; प्र०-त्ति;-नित, प्रतिदिन; वै० -ति; सं० नित्य।
निथरब क्रि० अ० साफ़ हो जाना (पानी आदि द्रव का); प्रे०-थारब,-थो-।
निदरब क्रि० स० निरादर करना, प्रे०-राइब।
निदाग वि० पुं० बेदाग, साफ़; लांछन-रहित;-रहब, -होब; स्त्री०-गि, प्र०-द्ग्ग।
निदोख वि० पुं० निर्दोष।
निधरक वि० बेफ़िक्र; प्र०-ड़क।
निधि सं० स्त्री० संपत्ति;-पाइब, अति प्रसन्न होना; प्र०-द्धि, न्यामत, अलभ्य पदार्थ।
निधुआँ वि० जिसमें धुआँ न हो; वै०-रधूँ;-आगि, -आँचि; सं० निर्धूम।
निनार वि० अलग, स्पष्ट;-होब।
निनिआ सं० स्त्री० नींद; दे० नीनि; शब्द का यह रूप लोरियों में प्रयुक्त होता है।
नितुआ दे० नेतुआ।

निपट वि० एकदम, बिलकुल;-अनारी; क्रि०-ब, समाप्त करना, मिटाना (झगड़ा), प्रे०-टाइब।

निपुन वि० पुं० चतुर, होशियार; स्त्री०-नि; सं०-ण।

निपोर सं० पुं० कुछ नहीं, शून्य; क्रि०-ब, (मुँह) खोल देना, कुछ न कह सकना।

निफरब क्रि० अ० पार करना, पूरा कर लेना; प्रे० -फारब।

निबकब क्रि० अ० निकल जाना, अलग होना, छुट्टी ले लेना; प्रे०-काइब, वै०-बु-।

निबटब दे० निपट।

निबरई सं० स्त्री० निबलता, धनहीनता;-आइब।

निबराब क्रि० अ० निर्बल हो जाना, गरीब हो जाना।

निबहब क्रि० अ० निर्वाह होना; प्रे०-बाहब; सं० निर्वह।

निबहुर सं० पुं० एक काल्पनिक स्थान जहाँ जाकर कोई लौट न सके;-क कोलिया, ऐसे स्थान की गली; स्वर्ग;-रें जाब, मर जाना; नि (न)+बहुरब (लौटना)।

निबाजि सं० स्त्री० नमाज़;-पढ़ब; वै०-मा-।

निबाह सं० पुं० निर्वाह;-होब,-करब; क्रि०-ब, निर्वाह करना; सं०।

निबि सं० स्त्री० निब; अं० निब।

निबिआहिन वि०पुं० नीम की सुगंधवाला;-आइब; स्त्री०-नि।

निबुसब क्रि० अ० वर्षा बंद होना; नि (न)+ बरिसब (बरसना); वै०-बसब।

निबेरब क्रि० स० रोकना, प्रे०-रवाइब; सं० निवार।

निबौरी सं० स्त्री० नीम का फल, वै०-मौरी, -मकौरी।

निभोटब क्रि० स० नाखून से काटना, नोचना, प्रे०-टवाइब।

निमक सं० पुं० नमक; दे० नोन।

निमकउरी दे० निबौरी।

निमटब क्रि० अ० टट्टी जाना, झगड़ा करना, तै करना; दे० निपटब।

निमनाब क्रि० अ० मजबूत होना (नाज आदि का)।

निम्मन वि० पुं० मजबूत; क्रि०-मनाब; वै०नीमन।

निरकेवल वि० पुं० साफ़ (अकाश, जल आदि); -होब; स्त्री०-लि।

निरखब क्रि० स० देखना, ताकना; सं० निरीक्ष; "निरखत जात जटायू"।

निरगह वि० पुं० बिलकुल, अमिश्रित (पानी, दूध); -पानी, (पानी मिलाया हुआ दूध) एकदम पानी।

निरगुन वि० पुं० निर्गुण; सगुण का प्रतिकूल।

निरगुनिया वि० गुणहीन, सीधा।

निरघिति सं०स्त्री० दुःख, दुःखपूर्ण स्थिति;-भोगब, -भूजब,-दुख भोगना।

निरजूँ वि० कमजोर; जिसमें जान न हो; सं० निर्जीव।

निरधूँ वि० जिसमें धुआँ न हो;-आगि।

निरफल वि० फलहीन;-जाब,-होब।

निरबल वि० पुं० बलहीन; भा०-ता; दे० नीबर।

निरबीज वि० पुं० नष्ट, जिसका बीया भी न मिले; सं०।

निरभय वि० निडर; सं०।

निरमल वि० पुं० निर्मल।

निरमोही वि० जिसे मोह या प्रेम न हो।

निरवाइब क्रि० स० निरवाना, भा०-वाही, निराने की मजदूरी, पद्धति आदि; दे० निरौनी।

निरहा वि०पुं०अकेला;-हे क, केवल एक (पुत्र आदि)।

निराइब क्रि० स० निराना; घास निकालना, साफ़ करना; प्रे०-वाइब, वै०-उब।

निराल वि० पुं० बिलकुल, बहुत से, एकदम; प्र० -लै;-जौ, बिलकुल जौ (गेहूँ नहीं),-मनई बहुत से मनुष्य।

निरास वि० पुं० निराश;-होब,-करब; सं०।

निरौनी सं० स्त्री० निराने की मजदूरी;-देब,-लेब।

निछ्छल वि० पुं० निश्छल, स्त्री०-लि, भा०-ई; सं०।

निजल वि० पुं० जिस (व्रत) में जल भी न ग्रहण किया जाय; स्त्री०-ला (एकादशी)।

निनय सं० पुं० निर्णय;-करब,-देब,-होब; सं०।

निवार दे० नेवार।

निवारब क्रि० स० मिटाना, दूर करना; थका-, थकान मिटाना, वै० ने-।

निवाला सं० पुं० कौर, ग्रास; यक-, दुई-; वै० ने-; प्राय: मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त।

निसचय दे० निहचय।

निसतार सं० पुं० निर्वाह;-होब,-करब; सं० निः+ तर (पार होना या करना); वै०-ह-।

निसरब क्रि० अ० निकलना;-पइठब, आना-जाना; प्रे०-सारब,-सरवाइब; सं० नि:+सृ।

निसान सं० पुं० चिह्न, झंडा; स्त्री०-नी;-देही, गाँव या खेत की सीमा निर्धारित करने की कानूनी कार्रवाई।

निसुहा दे० नेसुहा।

निसोख वि० पुं० शुद्ध; स्त्री०-खि।

निहचय सं० पुं० निश्चय;-करब,-होब; सं०।

निहतार दे० निस्तार।

निहतूक वि० पुं० पक्का, ठीक; निश्चित; एक (दो नहीं); प्र०-की,-कै; नि+टूक (बिना टुकड़ेवाली बात); दे० टूका।

निहल वि० पुं० कमज़ोर, छोटा; स्त्री०-लि, भा० -ई।

निहाइति वि० एकदम, बिलकुल; प्र०-हइतिह।

निहारब क्रि० अ० देखना, देखते रहना।

निहाल वि० पुं० प्रसन्न;-करब,-रहब,-होब; स्त्री० -लि।

निहुरब क्रि० अ० झुकना; प्रे०-राइब,-उब; कहा० ऊँट चरावै निहुरें-निहुरें ?
निहोर सं० पुं० कृतज्ञता, एहसान; वै०-रा; जौ कबिरा कासी मरै रामहि कौन निहोर ?
नीक वि० पुं० अच्छा, सुन्दर; स्त्री०-कि;-निकरब, -लागब,-करब, चंगा करना,-होब; फ़ा०नेक; प्र०-कै।
नीकसूक क्रि० वि० बिना किसी के कहे, बिना आपत्ति के; वै०-सु-, नि-।
नीच वि० पुं० छोटा, निम्न श्रेणी का; स्त्री०-चि; क्रि० वि०-चें, प्र० निचवें।
नीनि सं० स्त्री० नींद;-आइब; गीतों एवं लोरियों में "निनिया"।
नीबर वि० पुं० निर्बल, स्त्री०-रि, क्रि० निबराब।
नीबि सं० स्त्री० नीम; सं० निम्ब।
नीमन वि० पुं० दे० निम्मन।
नीयति सं० स्त्री० नीयत; कहा० जइसन-तइसन बरक्कति।
नीरस वि० पुं० निरस, सूखा; स्त्री०-सि।
नीवाँ वि० पुं० कड़ी (धूप); बिना हवा का (घाम); वै० निउआँ, नेवाँ।
नुकसान सं० पुं० हानि;-करब,-होब,-पाइब (हो जाना); वै०-सकान।
नुकुस सं० पुं० ऐब, दुर्गुण; नुक्स; वि०-सिहा; -निकारब।
नुनखार दे० नोनखार।
नूनी सं० स्त्री० लिंग;-देखाइब, मूर्ख बना देना, -लेब, कुछ न पाना।
नेउर सं० पुं० नेवला;-यस, डरपोक एवं दुबला-पतला; क्रि०-राब, दबे-दबे रहना, छिपे खड़े रहना; सं० नकुल।
नेउसा सं० पुं० सेवार (दे०) की पूती जिसका स्वादिष्ट साग बनता है।
नेकी सं० स्त्री० भलाई;-करब; कहा० नेकी औ पूछि-पूछि ?
नेग सं० पुं० मान्यों या नौकरों आदि को दिया उपहार;-हरू, ऐसे उपहार पानेवाले लोग;-देब, -पाइब।
नेटा सं० पुं० नाक के भीतर का मैल;-पोटा, शरीर की गन्दगी; वि०-टहा,-ही।
नेति सं० स्त्री० नीयत, इरादा, इच्छा;-करब,-धरब।
नेनुआ सं० पुं० एक तरकारी; वै० न्य-।
नेपाब क्रि० अ० पास आना, चुपके से खड़े रहना, लालच में खड़ा रहना; वै० न्य-।
नेफा सं० पुं० लहँगे के किनारे का भाग जो ऊपर से जोड़ा जाता है।
नेबुआ सं० पुं० नीबू; "गलगल नेबुआ औ चिउ-तात"; गीतों में "-बुल,-ला";-नोन चटाइब, मूर्ख बनाना।
नेम सं० पुं० नियम;-धरम; सं० वि०-मी, नियम का पालन करनेवाला।
नेर वि० पुं० निकट; क्रि०-राब, नियराब; भा० -राई; अ० नियर, सं० निकट।
नेवँ सं० स्त्री० नीवँ;-देब।
नेवतब क्रि० स० निमंत्रित करना; सं०-ता, निमं-त्रण,-तउनी, निमंत्रण लानेवाले को दी गई मज़-दूरी या उपहार;-तहरी, निमंत्रित व्यक्ति।
नेवाँ दे० नीवाँ।
नेवाब क्रि० अ० पहुँचना (दर्द, आवाज़) वै० नि-।
नेवार सं० पुं० सूत की पट्टी जिससे पलंग बुनते हैं।
नेवारा दे० नवारा।
नेवारि सं० स्त्री० कुएँ में नीचे देने के लिए गूलर की बनी गोल पहिया की तरह एक चीज़;-छोड़ब, -परब।
नेवासा सं० पुं० दौहित्र का अधिकार; ऐसे अधि-कार से प्राप्त धन, भूमि आदि;-पाइब,-लेब, अ० नवासः (दौहित्र)।
नेसुहा सं० पुं० लकड़ी का मोटा ज़मीन में गड़ा टुकड़ा जिस पर कोयर (दे०) काटा जाता है। सं० न्यस्।
नेह सं० पुं० प्रेम, स्नेह;-करब,-होब; वि०-ही, प्रेमी, स्नेही; सं०।
नेहसुति सं० स्त्री० एक पेड़ जिसकी डाल लगती है और जिसकी लकड़ी पीले रंग की होती है।
नेहा सं० पुं० ध्यान, हठ;-धरब; सं० स्नेह।
नैहर दे० नइहर।
नोक सं० पुं० नोक; वै०-कि।
नोकर सं० पुं० नौकर;-चाकर; भा०-री; स्त्री० -रानी।
नोखे क वि० गर्वपूर्ण, अनोखा; कहा०-नाउनि बाँसे क नहन्नी।
नोचब क्रि० स० नोचना;-चोथब, चुरा कर खाना (खेत की फ़सल); प्रे०-चाइब,-चवाइब,-उब।
नोट दे० लोट।
नोन सं० पुं० नमक;-खार, नमक का स्वादवाला; -छटही, (दीवार, ईंट आदि) जो मिट्टी के खार से कट गई हो;-पानी से, अच्छे स्वास्थ्य में (रहब); नोनेक बोरा यस, सुस्त एवं मोटा;-हरामी, नमक-हराम।
नोनछटब क्रि० अ० स्वाभाविक खारी से कटना (दीवार, ईंट आदि का); दे० नोन।
नोनी दे० लोनी।
नोहर वि० पुं० अप्राप्य, दुष्प्राप्य; बढ़िया;-होब; भा०-ई, कमी; नीक-, अच्छा-अच्छा।
नौ वि० नव;-दुइ ग्यारह होब, भाग जाना;-डीगर होब, गड़बड़ होना, फ़ा नव+दीगर।
नौहड़ब क्रि० अ० नया हो जाना (चमड़ा आदि)।
नौहड़िया सं० पुं० व्यक्ति जो अलग भोजन बनावे; वै०-हा,-हँ-।

# प

पँगुला सं० पुं० पंगुल (दे०) व्यक्ति; स्त्री०-ली; सं० पंगु।
पँगुलाब क्रि० अ० लँगड़े-लँगड़े चलना; सं० पंगु।
पंघति सं० स्त्री० (भोजन के समय की) पंक्ति या जनता;-उठब,-उठाइब; सं० पंक्ति।
पंच सं० पुं० पञ्च;-बदब,-मानब;-चाइलि, पंचायत;-करब,-होब; सं०।
पंछा सं० पुं० किसी अंग से बहनेवाला पानी; -बहब,-निकरब।
पंछी सं० पुं० चिड़िया; व्यं० व्यक्ति; अताय-,दुख का मारा हुआ व्यक्ति।
पंछोप सं० पुं० पानी का किनारा।
पंजा सं० पुं० हाथ की पाँचों उँगलियों का समूह; -लड़ाइब, हाथ की उँगलियों से दूसरे के पंजे को मरोड़ना; (२) पाँच (रुपयों आदि) का समूह; यक-, दुइ-; सं० पंच, फ़ा० पंज; स्त्री०-जी।
पंजाब सं० पुं० प्रसिद्ध प्रांत;-बी, पंजाब का रहनेवाला;-बिनि, पंजाबी स्त्री।
पंडब्बा सं० पुं० पान का डिब्बा।
पंडा सं० पुं० पंडा; स्त्री०-इनि, पंडे की स्त्री;-गिरी, -ईपन, पंडे का पेशा।
पंडुब्बी सं० स्त्री० पानी में डुबकी लगानेवाली एक जंगली चिड़िया।
पडोह सं० पुं० नाबदान; घर के भीतर का वह स्थान जहाँ गंदा पानी गिराया जाय।
पँड़खी सं० स्त्री० एक चिड़िया; पंडुख, फाख्ता; वै० पें-।
पँड़वा सं० पुं० भैंस का बच्चा; स्त्री०-ड़िया,-या।
पंथ सं० पुं० रास्ता;-सूझब; (२) बीमार का भोजन; -देब,-लेब;-पानी, बीमारी में दिया गया द्रव भोजन आदि।
पंदरह वि० पंद्रह; वै०-न्नरह।
पइँट सं० पुं० पक्ष, दृष्टिकोण;-प रहब, पक्ष करना; वै०-यँट, पैंट; अं० प्वाइंट।
पइआ सं० स्त्री० वह अनाज जो मारा गया हो, जिसमें तत्व न हो;-होब, व्यक्ति का किसी काम का न होना; महत्वहीन हो जाना; क्रि०-आब, वै० -या; कहा० जन्म्यो पूता खोलक लइआ बोयो धान पछोर्यो पइआ।
पइजनिया दे० पयजनिआ।
पइती सं० स्त्री० कुश की गाँठ दी हुई रस्सी जो पूजा आदि के समय दाहिने हाथ की अनामिका में धारण की जाती है;-पहिरब।
पइरि सं० स्त्री० खलियान में दाँने (दे० दाँइब) के लिए फैलाई कटी फसल।
पइरुख सं० पुं० बल, शारीरिक शक्ति;-पुराइब, बल पहुँचना,-करब; सं० पौरुष; वि०-खी, वै०पौ-, पय-।
पइली सं० स्त्री० मिट्टी का छोटा प्याला।
पइसा सं० पुं० पैसा, द्रव्य; वि०-सहा, धनवान्।
पई सं० स्त्री० छोटे कीड़े जो नाज में लगते हैं; क्रि० -इआब; वै० पाई।
पउआ सं० पुं० सेर का ¼ भाग; वै०-वा।
पउनी सं० पुं० सेवक जैसे बढ़ई, लुहार आदि; -परजा, काम करनेवाले लोग जिन्हें स्वामी से कुछ मिले; पाइब (दे०) से = पानेवाला।
पउरुख दे० पइरुख।
पउला सं० पुं० खड़ाऊँ की तरह का लकड़ी का बना पदत्राण जिसमें खूँटी के स्थान पर रस्सी लगती है।-पहिरब; सं० पद।
पउली सं० स्त्री० पाँव का वह भाग जो चलते समय भूमि पर पड़ता है।
पउसाला सं० पुं० वह स्थान जहाँ जनता को पानी पिलाया जाय;-चलब,-बैठब,-बैठाइब; सं० पय + शाला; वै० पव-, पौ-।
पउहारी दे० पवहारी।
पकइब क्रि० स० पकाना (गुड़ या ईंट आदि, भोजन नहीं); प्रे०-वाइब; भोजन की सामग्री पकाने के लिए 'रीन्हब' आदि अन्य शब्द हैं।
पकना सं० पुं० महुए का पका फल; बच्चों का गीत—"बूढ़ी दाई-दाई पकना खायँ, बुढ़वा भतार लैकै बँगला जायँ"; वै० पो-।
पकसाइब क्रि० स० (फल को) कच्चा तोड़कर पकाना।
पकहा वि० पुं० पाका (दे०) वाला; जिसके फोड़ा हुआ या प्राय: होता हो; स्त्री०-ही।
पकुसब क्रि० अ० गर्मी से (फल का) समय के पूर्व ही सूखकर पक जाना; प्रे० पकसाइब।
पकेठ वि० पुं० अनुभवी एवं चालाक; स्त्री०-ठि, भा०-ई,-पन।
पक्कन वि० पुं० पकानेवाला (दिन का मौसम); -महीना, बरसात का दिन (जब फोड़े फुंसी पकते हैं)।
पक्कपक्क क्रि० वि० व्यर्थ में एवं जल्दी-जल्दी (बोलना); क्रि० पकपकाब, इस प्रकार बोलना; वै० प्र० पकर-पकर।
पक्का सं० पुं० पक्का मकान; पक्का आम; वि० खूब मजबूत; अनुभवी; स्त्री०-क्की; कच्ची-पक्की, गाली।
पख सं० पुं० कमी, दुर्गुण;-लगाइब,-लागब, नुक्स निकालना,-निकलना; सं० पक्ष।
पखना सं० पुं० पंख; डखना-, अंग-प्रत्यंग;-पानी

न लागब, साफ-साफ बच जाना; ऊँची-ऊँची बातें करना; सं० पक्ष ।

पखवाज सं० पुं० एक बाजा; वै० पखावज ।

पखवारा सं० पुं० १५ दिन की अवधि; पक्ष; यक-, दुइ-; सं० पक्ष ।

पखारब क्रि०स० धोना (हाथ पाँव); प्रे०-खरवाइब; सं० प्रक्षालय ।

पखिआब क्रि० अ० मचलना; प्रे०-वाइब; सं० पक्ष (एक बात), किसी बात पर हठ करना ।

पखुरा सं० पुं० बाँह और कंधे का जोड़; डखुरा-(तूरब, टूटब), अंग-प्रत्यंग; सं० पक्ष ।

पखेरू सं० पुं० पक्षी; मानरूपी पक्षी,-(उड़ब); सं० पक्षधर ।

पग सं० पुं० पाँव, कदम;-पग पर, कदम-कदम पर; पगै-पग, कदम-कदम; सं० पद ।

पगड़ी सं० स्त्री० पगड़ी;-बान्हब;-उतारब, अपमान करना;-धरब (गोड़े पर), पाँव पर पगड़ी रख देना (विनय करने के लिए) ।

पगहा सं० पुं० पशु को बाँधने की रस्सी; स्त्री०-ही; -लागब,-लगाइब ।

पगाइब क्रि० स० पाग (दे०) में डालना; रस में उबालना; प्रे० पगवाइब, वै०-उब; दे० पागि ।

पगिआ सं० स्त्री० पगड़ी;-बान्हब,-उतारब;-गोड़े पर धरब; दे० पगड़ी ।

पगुराइब क्रि० स० पागुर करना; खा जाना; व्यं० बैठे-बैठे खाना ।

पचइब क्रि० स० पचाना, हजम करना; व्यं० बेईमानी से दबा लेना; प्रे०-वाइब, वै०-चा-,-उब; सं० पच् ।

पचउखा सं० पुं० पाँच ईखों का प्रसाद जो बसियार (दे०) में प्रत्येक हिस्सेदार को दिया जाता है । वै० -चौ ।

पचकल्यानी वि० इधर-उधर का; साधारण; यह शब्द भी 'गुरु' की भाँति बुरे अर्थ में आने लगा है ।

पचकब क्रि० अ० (धातु के बर्तन का) कोई भाग दब जाना; प्रे०-काइब ।

पचखा सं० पुं० पंचक;-लागब; सं०; पंचक प्रत्येक मास के प्राय: अंत में पाँच दिनों तक रहता है जिसमें सभी शुभ कर्म वर्जित हैं, यहाँ तक कि इस समय में मृत व्यक्ति का दाह संस्कार भी स्थगित रहता है ।

पचरा सं० पुं० देवी को प्रसन्न करने के लिए गीत जो ओझाई (दे०) एवं डिहवन्हई (दे०) में गाया जाता है । वै०-ड़ा ।

पचहँड़ सं० पं० पाँच मिट्टी के बर्तन जो किसी के मरण के १०वें दिन घर से निकालकर दूर बाहर रखे जाते हैं ।-काढब, तोर-निकसै, तेरा-निकले; स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त शाप के शब्द; सं०पंच+भांड ।

पचहत्था वि० पुं० पाँच हाथ का; लंबा-चौड़ा (व्यक्ति);-जवान ।

पचाइब दे० पचइब ।

पचाढ़ी सं० स्त्री० जोठे (दे० जोठा) में लगी छोटी लकड़ी ।

पचास वि० ५०;-न, पचासों;-सी, ८५;-चसवाँ,-ई, ५० वाँ भाग; प्र०-सौ,-सै,-च्चास ।

पचिसई सं० स्त्री० पचीसवाँ भाग; वि० पच्चीसवीं ।

पचीस वि० २५; प्र०-च्ची-,-सौ;-न, पचीसों;-सी, जुये का एक खेल; "रतियाँ परी सवन की झोसी पिय सँग खेलौं पचीसी नायँ"—झूले का गीत ।

पचेढ़ी सं० स्त्री० गन्ने के पेड़ के नीचे निकली हुई छोटी सी ईख जो चूसने योग्य नहीं होती ।

पचौखा दे० पचउखा ।

पचौवाँ क्रि० वि० पाँचवीं बार; वि० पाँचवाँ भाग ।

पच्चड़ सं० पुं० किसी भारी वस्तु को रोकने के लिए ठोंका हुआ लकड़ी का टुकड़ा;-ठोंकब; गाँड़ी म-परब, बड़ी बाधा आ जाना ।

पच्छ सं० पुं० पक्षपात;-करब,-होब; सं० ।

पच्छाँह सं० पुं० पश्चिम का प्रांत ।

पछरब क्रि० अ० पिछड़ जाना; प्रे०-छारब ।

पछवाँ क्रि० वि० पीछे; प्र०-वैं ।

पछाड़ी सं० स्त्री० घोड़े के पीछे के पैर बांधने की रस्सी; वै० पि- ।

पछार सं० पुं० पछाड़;-खाब, पीछे गिर जाना, अकस्मात् गिर पड़ना (शोकादि के कारण) ।

पछारब क्रि० स० पीछे कर देना; फींच देना, कचारना (कपड़ा); प्रे०-छराइब, वै० पि- ।

पछारी सं० स्त्री० पीछे बांधने की रस्सी; अगारी-, दो रस्सियाँ जिससे घोड़े बँधते हैं ।

पछिताब क्रि० अ० पछताना ।

पछिला वि० पुं० पिछला; वै० पाछिल; स्त्री० -ली ।

पछुआँ सं० पुं० पच्छिम की हवा;-चलब,-बहब ।

पछुआइब क्रि० स० पीछे-पीछे चलना ।

पछुवहाँ वि०पुं० पश्चिम का (रहनेवाला); पश्चिम में पैदा होनेवाला, स्त्री०-ही; वै०-अहाँ ।

पछुवा सं० पुं० अनुयायी; अगुआ के पीछे चलनेवाला; स्त्रियों का एक आभूषण जो कंकण के पीछे पहना जाता है । वै० पछेला ।

पछुवाइब क्रि०स० पीछे-पीछे हो लेना; पीछा करना; वै०-छिआ- ।

पछेड़ सं० पुं० पीछे पड़ने की क्रिया या आदत; -करब, तंग करना ।

पछोरन सं० पुं० नाज का निकृष्ट अंश जो पछोरने के बाद रह जाता है ।

पछोरब क्रि० स० सूप की सहायता से (नाज आदि) साफ करना; प्रे०-रवाइब,-उब ।

पछूछँ क्रि० वि० पश्चिम में;-ओर, पश्चिम की तरफ ।

पजरीं क्रि॰ वि॰ बगल में, सट कर (बैठना); दे॰ पाँजरि ।

पजावा सं॰ पुं॰ छोटा भट्ठा ।

पजिआब क्रि॰ अ॰ पाजीपन करना ।

पजिरिहा वि॰ पुं॰ पजीरीवाला; जिसे पजीरी का शौक हो; स्त्री॰-ही, वै॰ पँ- ।

पजीरी सं॰ स्त्री॰ आटे और शक्कर की बनी हुई बुकनी जो प्रसाद रूप में प्रायः बाँटी जाती है । वै॰ पँ-।

पटइब क्रि॰ स॰ पटाना (सौदा आदि), चुकाना (ऋण) ठीक करना, मैत्री कर लेना; 'पटब' का प्रे॰ रूप; वै॰-टा-,-उ-, प्रे॰-टवाइब ।

पटऊ स॰ पुं॰ कपड़े का थान जो कुल देवता को चढ़ाया जाता है । सं॰ पट; वै॰-टू ।

पटकउअलि सं॰ स्त्री॰ बार-बार पटक देने की क्रिया;-करब,-होब; वै॰-कौ-।

पटकन सं॰ पुं॰ डंडा ।

पटकनी सं॰ स्त्री॰ वर्षा के पीछे धूप का समय; सूखने का अवसर (फ़सल के लिए);-पाइब, -देब ।

पटकब क्रि॰ स॰ पटकना, गिरा देना; प्रे॰-काइब, -कवाइब, भा॰-काई,-कवाई ।

पटकी-पटका सं॰ स्त्री॰ एक दूसरे को पटक देने की क्रिया;-करब,-होब ।

पटखाइनि सं॰ स्त्री॰ पाठक की स्त्री; दे॰ पाटख ।

पटब क्रि॰अ॰ पटना; मैत्री होना; प्रे॰-टाइब; पाटब; दे॰ पटइब, पाटब, भा॰ पटानि ।

पटरा सं॰ पुं॰ (लोहे या लकड़ी का बड़ा) टुकड़ा -करब,-होब, चौपट होना ।

पटरिआइब क्रि॰स॰ ठीक करना, तै करना ।

पटरी सं॰ स्त्री॰ पट्टी, मैत्री,-बइठब, ठीक होना; -खाब ।

पटहरई सं॰ स्त्री॰ पटहार का काम या पेशा; -करब ।

पटहार सं॰ पुं॰ रंगीन सूत का काम करनेवाला; स्त्री॰-हारिनि ।

पटिअइती सं॰ स्त्री॰बराबरी, स्पर्धा;-करब,-रहब ।

पटिआ सं॰ स्त्री॰ पट्टी, बिरादरी का एक भाग; क्रि॰-इब,-उब ।

पटिआइब क्रि॰ स॰ अपनी ओर कर लेना; वै॰ -उब ।

पटीलब क्रि॰ स॰ ले लेना, धूर्तता से प्राप्त कर लेना; प्रे॰-टिलवाइब ।

पटोर दे॰ लहर-।

पटौधन सं॰ पुं॰ पट जाने का हिसाब; ऋण का चुकता हो जाना;-करब,-होब; पटब (दे॰)+धन; पटइब ।

पट्ट वि॰ पुं॰ ठंढा, हलका, शांत;-परब, चूक जाना; स्त्री॰-ट्टि; चट्ट-, झटपट ।

पट्टा सं॰ पुं॰ बड़े-बड़े सिरके बाल (पुरुषों के) जिन्हें सँवार कर पोछे कर दिया जाय;-रखाइब; ठेके की भाँति दिया गया अधिकार; ठीका-,-देब, -करब,-लेब,-लिखब,-लिखाइब ।

पट्टी सं॰ स्त्री॰ गाँव या भूमि का अंश;-दार, एक पट्टी के हिस्सेदार;-दारी, बराबरी, स्पर्धा; बिरादरी ।

पट्टू दे॰ पटऊ ।

पट्टै क्रि॰ वि॰ तुरन्त ही; प्र॰-ह,-ट्टै ।

पट्टे ! संबो॰ तोते को बुलाने का शब्द ।

पठइब क्रि॰ स॰ भेजना; प्रे॰-वाइब; बँ॰ पाठाओ; वै॰-उब ।

पठउनी सं॰ स्त्री॰ भेजने की क्रिया; लड़की की विदाई; अनउनी-, (स्त्रियों के) लाने एवं 'बिदा करने की प्रथा ।

पठवनिया सं॰ भेजा हुआ व्यक्ति; सन्देशवाहक ।

पठान सं॰ पुं॰ मुसलमानों की एक जाति; स्त्री॰ -निनि ।

पठिआ सं॰ स्त्री॰ मोटी बकरी जो ब्याई न हो; व्यं॰ जवान तगड़ी स्त्री; वै॰-या;-यसि, जवान एवं तगड़ी ।

पठौआ सं॰ पुं॰ भेजने की बारी; एक-, दुइ-; वै॰ -ठउआ ।

पठ्ठा सं॰पुं॰ खूब हृष्टपुष्ट व्यक्ति; स्त्री॰-ठिया; वै॰ -ट्ठा ।

पड़रू सं॰ पुं॰ भैंस का पड़वा या बच्चा; वै॰ पँ-; यह शब्द पँड़वा एवं पँड़िया दोनों के लिए आता है ।

पड़ाव सं॰ पुं॰ स्थान जहाँ डेरा डाला जाय;-परब, -डारब ।

पड़िआ दे॰ पड़वा ।

पड़िआब क्रि॰ अ॰ (भैंस का) गाभिन होना; प्रे॰ -वाइब, वैं॰ पँ-।

पड़आ सं॰ पुं॰ प्रतिपदा; वै॰-रुवा ।

पड़ेल सं॰ स्त्री॰ पड़िया जो गाभिन होनेवाली हो; बड़ी पड़िआ; वै॰-लि; क्रि॰-ब, खूब खाना, दबा के गिरा देना ।

पड़ोस दे॰ परोस ।

पड़ौआ सं॰ पुं॰ विशेष पड़वा; अपना पड़वा; स्त्री॰ -ड़ियवा ।

पढ़ब क्रि॰ अ॰ पढ़ना, प्रे॰-ढाइब,-उब; सं॰ पठ् ।

पतकी सं॰ स्त्री॰ छोटी हँड़िया; वै॰-तु-।

पतकौरा सं॰ पुं॰ बड़ी पतकी; वै॰-कउरा,-कोला ।

पतझर सं॰ पुं॰ पतझड़; शिशिर ।

पतर-पुक्का वि॰ पुं॰ दुबला-पतला; स्त्री॰-की ।

पतरवार वि॰ पुं॰ पतला-पतला; स्त्री॰-रि ।

पतराब क्रि॰ अ॰ पतला हो जाना; प्रे॰-इब,-उब ।

पतरी सं॰ स्त्री॰ पत्तल;-परब; कटु अनुभव होना; -म छेद करब, लाभ उठाकर निंदा करना ।

पतवार सं॰ पुं॰ पतवार ।

पतहा वि० पुं० पत्तोंवाला; स्त्री०-ही; सं० पत्र।
पता सं० पुं० पता, ठिकाना;-ठेकान; एक गाना जो नाचनेवालों को उत्तेजित करने के लिए गाया जाता है;-बोलब,-पाइब।
पताई सं० स्त्री० पत्तियों का ढेर; सं० पत्र।
पताब क्रि० अ० पत्ते देना (पेड़ का); दु:खी होना, अनुपस्थिति अनुभव करना; तोहरे बिना केव पतात बा? तुम्हारे बिना क्या कोई दु:खी हो रहा है? पहले अर्थ में वै०-तिआब; सं० पत्र।
पतिआइब क्रि० स० विश्वास करना।
पतिआब क्रि० अ० पत्ती देना; दे० पताब।
पतिगर वि० पुं० पत्तोंवाला; स्त्री०-रि।
पतित वि० पुं० नीच; जिसका पतन हो गया हो; भा०-ई, बेशरमी;-करब, बेशरमी से व्यहार करना; सं०।
पतिनास सं० पुं० अपकीर्ति बदनामी; प्र०-ती-; -होब,-करब।
पतिहा सं० पुं० पंक्तिवाला; श्रेष्ठ ब्राह्मण जिन्हें अवध में पंक्तिपावन कहते हैं। वै० पँ-।
पतील वि० पुं० बहुत पतला; स्त्री०-लि।
पतुकी दे० पतकी।
पतुरपन सं० पुं० वेश्यापन;-करब।
पतुरिआ सं० स्त्री० वेश्या।
पतेली दे० भदेला,-ली।
पतोह सं० स्त्री० पुत्र की स्त्री; सं० पुत्र-वधू; प्र० -हू, घृ०-हा,-हिआ।
पथरा सं० पुं० पत्थर; पत्थर का टुकड़ा; क्रि०-ब, पत्थर हो जाना;-ही, ओले पड़ने की हानि;-होब; दे० पत्थर; सं० प्रस्तर।
पथरी सं० स्त्री० मूत्राशय में छोटे-छोटे पत्थर जैसे टुकड़े हो जाने की बीमारी;-परब; (२) पत्थर की कटोरी; सं०।
पथाइब क्रि० स० पथाना (ईंट, कंडा); 'पाथब' का प्रे०; प्रे०-थवाइब; भा०-ई, पाथने की क्रिया या मजदूरी; वै०-उब।
पद सं० पुं० रिश्ता;-लागब; (२) उचित बात, निर्णय,-करब,-सुपद, उचित बात का निर्णय, वि० -दी, जिसे बात या उचित अनुचित के निर्णय करने की शक्ति हो, (३) कविता की पंक्ति;-कहब, -बोलब।
पदगउँज सं० पुं० पाजामे का हास्यास्पद नाम, पद (पाद)+गउँजब (घूमना-फिरना)=जिसमें (पहननेवाले का) पाद (दे०) घूमता-फिरता रहे, बाहर न निकले।
पदनी वि० पादनेवाला (व्यक्ति), यह शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता और फटकारने या गोली देने के लिए आता है। उ० दु पदनी! हत्तेरे पादनेवाले की!,-चोदी, बेकार बोलनेवाला व्यक्ति, कहा० जस मुकुंद तस पादनि चोदी...।
पदरौंकब क्रि० अ० दौड़-धूप करना, परेशान होना।
पदाइब क्रि० स० पदाना, तंग करना, दौड़ाना, वै०-उब, दे० पादब।
पदानि सं० स्त्री० परेशानी;-होब;-रहब।
पदारथ सं० पुं० अच्छी वस्तु; "सकल पदारथ है जगमाहीं"; सं०-र्थ।
पदिआइब क्रि० स० मूर्ख समझना; बार-बार व्यर्थ की आज्ञा देते रहना; वै०-उब।
पदी वि० पुं० पद करनेवाला; दे० पद; सं०।
पदुम सं० पुं० एक पेड़;-क लकड़ी, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है।
पदौअलि सं० स्त्री० पादने की निरंतर क्रिया।
पन सं० पुं० जीवन का एक भाग; बाला-,चउथा-; (२) मार्ग, जीवनयात्रा का उपाय।
पनरहिआ सं० पुं० १५ दिन का समय; एक-, दुइ-;-यन, कई सप्ताह।
पनहा सं० पुं० चौड़ाई (कपड़े की); अर्ज़; वि० -हगर, चौड़ा, ख़ूब चौड़ा।
पनही सं० स्त्री० जूता, देसी जूती; सं० उपानह।
पनारा सं० पुं० पनाला; स्त्री०-री।
पनिआइब क्रि० स० (बरहे में) पानी लाना; दे० बरहा।
पनिआब क्रि० अ० पानी (बरहे में) आ जाना; पानी से भर जाना।
पनिगर वि० पुं० पानीवाला (कुँआ); वै०-यार।
पनिहा वि० स्त्री० पानी से भरा (रास्ता); पानी में रहनेवाला (साँप); पानी+हा; स्त्री०-ही।
पनिहारिन सं० स्त्री० पानी भरनेवाली स्त्री; वै० -नि।
पनुआ सं० पुं० पानी मिला हुआ गन्ने का रस जो खोइआ (दे०) को भिगोकर चुआया जाता है।
पनेहथी सं० पुं० मोटी रोटी जिसे पानी लगा-लगा कर हाथ से (चकला बेलन से नहीं) ही बनाते हैं। पानी+हाथ+ई, पुं०-था, बड़ी मोटी पनेहथी; वै०-नेथी।
पन्ना सं० पुं० पृष्ठ;-उलटब।
पन्नी सं० पुं० चमकदार अबरक का टुकड़ा;-लगाइब; वि०-दार, पन्नी लगा हुआ।
पन्हवाइब क्रि०स० (गाय, भैंस आदि को) दूध देने के लिए पुचकारना, थन छूते रहना; व्यं० मनाना, फुसलाना; पन्हाब (दे०) का प्रे०।
पन्हाव क्रि० अ० दूध देने के लिए तैयार होना; प्रे० -न्हवाइब।
पपरी सं० स्त्री० पतला पापड़ जैसा मिट्टी, दीवार या खेत आदि के ऊपर निकला भाग; क्रि०-रिआब, ऐसी पपरी निकालना या देना; वै० पो-।
पपिहरा सं० पुं० पपीहा।
पयखाना सं० पुं० विष्टा; टट्टी जाने का स्थान; -करब,-जाब,-होब।

पयजनियाँ सं० स्त्री० बच्चों के पैर में पहनाने का एक आभूषण जिसमें घूँघरू लगे रहते हैं। तुल० "ठुमुकि चलत रामचंद्र बाजति···"

पयजामा सं० पुं० पाजामा; दे० पदगउँज; फ़ा० पा (पैर)+जामः (कपड़ा)।

पयट सं० पुं० पत्त, बात;-बदलब,-पर रहब, तरफ़दारी करना; अं० प्वाइंट; वै०-यँ-, पैंट।

पयठारी सं० स्त्री० प्रवेश, स्थान;-पाइब; वै० पायठ (दे०); पैठारी।

पयतरा सं० पुं० पैंतरा;-बदलब।

पयताबा सं० पुं० मोज़ा; प्र० पा-।

पयदर क्रि० वि० पैर से;-चलब,-जाब,-आइब; प्र० -रै; फ़ा० पाय (पैर)।

पयना सं० पुं० छोटा डंडा जिससे बैल हाँका जाता है; नाधा-क भीखि, जानवरों की बीमारी के समय माँगी जानेवाली भिक्षा; दे० नाधा।

पयमाइस सं० स्त्री० भूमि का नाप, हिसाब आदि; -करब,-होब।

पयमाना सं० पुं० नाप का आदर्श।

पयमाल वि०पुं० थका हुआ, गिरा, निर्बल; प्र०पा-।

पयरा सं० पुं० पुआल;-पारब, पुआल का गद्दा बनाना, बिछाना।

पयरुख दे० पइरुख।

पयरोकार सं० पुं० प्रतिनिधि (कचहरी में), कार्यकर्त्ता; भा०-री।

पयल सं० पुं० पायल (दे०) के लिए गीतों में प्रयुक्त;-"-मोर भारी।"

पयलउँठी सं० स्त्री० पहिली संतान;-क, पहला; वै०-इ-,-हि-।

पयसरम सं० पुं० परिश्रम, कष्ट;-करब,-परब; वि० -मी; सं०।

पयान सं०पुं० बिदाई, रवानगी;-करब, चलना; सं० प्रयाण।

परई सं० स्त्री० मिट्टी की छोटी तश्तरी।

परकब क्रि० अ० आदी हो जाना; हिम्मत करना; प्रे०-काइब,-उब।

परकार सं० पुं० प्रकार; भोजन, व्यंजन; बरहौ-, बारह व्यंजन; वै०-ल; सं०।

परकाल सं० पुं० रेखागणित में प्रयुक्त एक औज़ार।

परकोसा सं० पुं० खलियान की भूमि का बटोरा हुआ भूसा, पुआल आदि का मिश्रित भाग।

परख सं० पुं० परीक्षा, पहिचान; क्रि०-ब;-वैआ, परखनेवाला; सं० परीक्ष्।

परखी सं० स्त्री० बोरे के भीतर से नाज का नमूना निकालने के लिए लोहे का चम्मच।

परग सं० पुं० कदम, पग; यक-, दुइ-; क्रि०-गाब, कदम रखना, चलना।

परगट वि० प्रकट;-होब; क्रि०-ब, फल देना (बुरे काम का)।

परचा सं० पुं० पर्चा; स्त्री०-ची, छोटा पर्चा।

परचाइब दे० परकाइब।

परचार सं० पुं० प्रचार;-होब,-करब; सं०।

परचि सं० स्त्री० पतला टुकड़ा; वै०-र्चि।

परचून सं० पुं० आटा, चावल आदि; वै० भा० -नी; वि०-निहा।

परचौ सं० पुं० परिचय; चीन्ह-,मुलाकात;-करब, -रहब,-होब; सं०।

परछब क्रि० स० पूजा करना, स्वागत करना (दूल्हे या दुलहिन का); प्रे०-छाइब,-छवाइब।

परजन सं० पुं० दूसरा व्यक्ति; बाहरी मनुष्य; "परजन, पुरजन, परिजन।"

परजलित वि० स्पष्ट, ज्ञात;-करब,-होब; सं० प्रज्वलित।

परजा सं० पुं० प्रजा;-पउनी (दे०); सं०।

परत सं० पुं० पर्त;-तै परत, एक-एक पर्त अलग करके।

परतल सं० पुं० मौका, अवसर;-परब।

परता सं० पुं० पड़ता, उचित दाम;-परब,-खाब।

परताप सं० पुं० प्रताप, इकबाल; पुन्य-; वि०-पी, प्रतापवाला, इकबाली; सं०।

परतारब क्रि० स० बराबर करना, बराबर बाँटना।

परतिआइब क्रि० स० प्रत्यक्ष अनुभव से जानना।

परतिज्ञा सं० स्त्री० प्रतिज्ञा;-करब; सं०।

परतिष्ठा सं० स्त्री० इज्जत;-ष्ठित, प्रसिद्ध; सं०।

परती सं० स्त्री० भूमि जिसमें खेती न हो;-छोड़ब, -परब;-जोतब।

परतेजब क्रि०स० परित्याग करना, बलिदान करना; जिउ-,प्राणों की परवाह न करना; सं०परि+त्यज्।

परतैपर्त क्रि० वि० एक-एक पर्त; दे० परत।

परथन सं० पुं० पलेथन; मु०-लगाइब, सच बात में कुछ और मिलाकर कहना; वै०-नी।

परथा सं० स्त्री० प्रथा, रिवाज।

परदनी सं० स्त्री० धोती (पुरुष की); फ़ा० परदः +नी।

परदर सं० पुं० प्रदर रोग;-होब; सं०।

परदा सं० पुं० पर्दा;-करब,-उठाइब; पेट-, खाना कपड़ा, जीवनयात्रा;-चलब, खर्च चलना; फ़ा० -दः।

परदेस सं० पुं० घर से दूर का देश;-सी, बाहर का व्यक्ति।

परदोस सं० पुं० द्वादशी का व्रत;-रहब।

परधन सं० पुं० दूसरे का धन; कहा०-जोगवैं मूरुख।

परधान वि० पुं० ईमानदार, सच्चरित्र; स्त्री०-नि।

परन सं० पुं० प्रण;-करब; सं०।

परनाम सं० पुं० प्रणाम;-करब; सं०।

परनि सं० स्त्री० ढेर, अधिक संख्या;-क परनि, बहुत अधिक (फसल, पशु आदि)।

परपराब क्रि० अ० (किसी अंग में) मिर्च सा

लागना; (२) पर-पर-पर-पर बोलना; किसी के विरुद्ध कुछ कहते रहना।
परब सं० पुं० पर्व;-लागब; प्र०-भ, वै०-भी,-बी।
परब क्रि० अ० पड़ना, शुभ होना।
परबत सं० पुं० पहाड़;-लागब, ढेर का ढेर होना, खूब लंबा चौड़ा होना; सं०।
परबतिआ सं० पुं० एक प्रकार की लाल मिर्च; -मर्चा, यह पहाड़ों में अधिक होता है, इसी से यह नाम पड़ा। एक पहाड़ी लौकी; सं० पर्वत+इन्।
परबस्ती सं० स्त्री० पालन, परवरिश;-करब,-होब; वै०-वस्ती।
परबीन वि० प्रवीण, चतुर; सं०।
परबेस सं० पुं० प्रवेश, पहुँच;-होब,-रहब; सं०।
परमातमा सं० पुं० परमात्मा, भगवान्; सं०।
परमान सं० पुं० अंदाज़ा, आदर्श;-होब,-रहब; सं० प्रमाण।
परमेसर सं० पुं० परमेश्वर; स्त्री०-री, ईश्वरीय शक्ति, दुर्गा जी; सं०।
परमेह सं० पुं० प्रमेह; धातु-, प्रमेह का रोग।
परर-परर क्रि० वि० परँ-परँ (बकना, पादना आदि)।
परवर सं० पुं० प्रसिद्ध फल जिसकी तरकारी बनती है। कहावतों में "परौरा, परवरा।"
परवरिस सं० स्त्री० पालन, गुजर;-करब,-होब; फ़ा०-श।
परवाना सं० पुं० आज्ञापत्र;-पाइब,-देब।
परवाह सं० पुं० चिंता, ध्यान;-रहब,-करब,-होब; बे-, नि-।
परवाहब क्रि० स० नदी के प्रवाह में (शव) डाल देना; वै० परि-।
परसन्न वि० प्रसन्न; (२) सं० पसन्द, इच्छा; वै० पो-;-करब,-होब,-आइब।
परसब क्रि० स० परसना, परोस देना; प्रे०-वाइब, -साइब; वै०-रोसब।
परसहिजे क्रि० वि० सबके सामने; चोरी से नहीं; खुले आम; सं० प्रसिद्ध।
परसाद सं० पुं० प्रसाद;-देब,-लेब; स्त्री०-दी,-धी; -पाइब, भोजन करना; सं०।
परसौआ सं० पुं० जितना एक बार में परोसा जाय; वै० परोसा।
परहाल सं० पुं० हिम्मत, शक्ति।
परहेज सं० पुं० रोक, नियंत्रण;-करब; वि०-जी, परहेजवाला।
परात सं० पुं० बड़ा थाल; स्त्री०-ति; प्र०-ता।
परान सं० पुं० प्राण; जिउ-, पूरा हृदय; सं०।
परानी सं० पुं० व्यक्ति, पति, परिवार का सदस्य; प्राणी; सं०।
परापति सं० स्त्री० प्राप्ति;-करब,-होब; सं०।
परावा वि० पुं० पराया; स्त्री०-ई; सं० पर।
परास सं० पुं० पलाश, सं०।
परिच्छा सं० स्त्री० परीक्षा;-लेब, जाँचना; सं०।
परिवा सं० पुं० प्रतिपदा; वै०-रुआ; सं०।
परिहास सं० पुं० उपहास, बदनामी; वै०-री-; -करब,-होब; सं०।
परी सं० स्त्री० तेल या घी नापने का लोहे का चम्मच; यक-, दुइ-,सं० पल्ली; (२) सुन्दर स्त्री; स्वर्गीय स्त्री; फा०-।
परु क्रि०वि० पार साल; प्र०-औ,-रू, पार साल भी; -इ, पार साल ही।
परुआ दे० परिवा।
परुवा वि० पड़ा हुआ (माल),-पाइब, पड़ा हुआ (माल) पा जाना;-धन, ऐसा धन, 'परब' (दे०) से।
परेट सं० पुं० बड़ा मैदान; ड्रिल;-परब, (भूमिका) बिना जोती पड़ी रहना;-करब, ड्रिल करना; अं० पैरेड।
परेठा सं० पुं० पराठा।
परेम सं० पुं० प्रेम; वै० पि-; वि०-मी।
परेवा सं० पुं० एक चिड़िया; स्त्री०-ई।
परेसान वि० चिंतित, दुखित;-होब,-करब; भा० -नी; परीशान।
परोस सं०पुं० पड़ोस,-सी, पड़ोसी;-सें, पड़ोस में।
परोसब क्रि० स० परसना, प्रे०-वाइब; वै० पर-, भा०-सा, परसौआ; दे० परसौआ।
परोहन सं० पुं० काम की वस्तु।
परौं क्रि० वि० परसों; कालिह-, दो एक दिन में, कल-परसों।
पलँगरी सं० स्त्री० छोटी सी सुन्दर खाट; सं० पर्यंक, पल्यंक।
पलँगा सं० पुं० पलँग; वै०-ङा;-बिछाइब,-बीनब; सं० पर्यंक, पल्यंक।
पल सं० पुं० क्षण;-भर,यक-, दुइ-, सं०।
पलई सं० स्त्री० पेड़ का सिरा; वै० फुलुई।
पलक सं० स्त्री० आँख की पलक;-मारब,-भाँजब।
पलका दे० पलँगा।
पलझब क्रि० अ० बड़े प्रयत्न के बाद मानना; रूठने के बाद देर में मानना; प्रे०-झाइब,-उब।
पलटनि सं० स्त्री० पलटन; वि०-हा, पलटनवाला; अं० प्लैटून।
पलटब क्रि० अ० पलट जाना, बदलना; स० पलट देना, बदल देना; प्रे०-टाइब,-उब।
पलटा सं० पुं० एक लोहे या पीतल का बर्तन जिससे पकनेवाली वस्तु पलटी जाती है।
पलटू सं० व्यं० प्रसिद्ध भक्त कवि पलटूदास।
पलथी सं० स्त्री० पालथी;-मारब; पुं०-था, ज़ोर से या जल्दी मारी हुई-।
पलरा सं० पुं० पलड़ा, छोटा टोकरा, स्त्री०-री, मु० पच।
पलिवार सं० पुं० परिवार, कुल-, सं०।
पल्ला सं० पुं० दरवाजा, हलकी टोपी, एक धोती

(जोड़ा नहीं), बगल,-पकरब,-धरब, भरोसा करना।

पल्लें क्रि० वि० अधिकार में,-परब, हाथ लगना, प्राप्त होना।

पल्लौ सं० पुं० पल्लव, आम की पत्तियाँ; सं०।

पवँरब क्रि० अ० तैरना; मु० इधर-उधर भटकते रहना; प्रे०-राइब,-उब; वै०-इब।

पवदरि सं० स्त्री० (कोल्हू के चारों ओर) बैल के पैर से बना गोल रास्ता; पव (पैर)+दरि (स्थान), फ़ा० पाव+दर।

पवदा दे० पौधा।

पवन सं० पुं० वायु; कविता एवं गीतों में प्रयुक्त; -सुत, हनूमान (गीतों में)।

पवना सं० पुं० मिठाई आदि छानने के लिए हत्था लगी हुई चलनी; वै० पौना।

पवनारि सं० स्त्री० दे० पौनारि।

पवपुजी सं० स्त्री० पैर पूजने के साथ दिया गया द्रव्य, जो ब्याह का एक अंग है; फ़ा० पाव+सं० पूजा; वै०-पुजाई।

पवबारा सं० पुं० सुंदर अवसर।

पवसाला सं० पुं० पानी पिलाने का स्थान;-बइठाइब, ऐसा स्थान बनाना; सं० पय+शाला; दे० पउसाला।

पवहारी वि० पुं० केवल दूध पीनेवाला (साधु); सं० पय+आहारी; वै० पौ-।

पवाँरा सं० पुं० लंबी कथा;-गाइब, व्यर्थ की बात करना।

पवाई सं० स्त्री० जूते या खड़ाऊँ की जोड़ी में का एक; फ़ा० पाव (पैर)।

पवित्तर वि० पुं० पवित्र;-करब,-होब।

पवित्री सं०स्त्री०वी (साधुओं की बोली में);सं०।

पसँघा सं० पुं० पासंग; वै०-संघा,-गा; फ़ा० पा (पैर)+संग (पत्थर)।

पसगइयत सं० स्त्री० एकान्तता;-में, पृथक्।

पसम सं० पुं० बाल; गुप्तांग के बाल;-बराबर, कुछ नहीं; पश्म।

पसर सं० पुं० फैली हुई हथेली (में जितना आ सके); यक-, दुई-भर; सं० प्रसर।

पसरब क्रि० अ० फैलना, लेट जाना; प्रे०-राइब, -सारब,-उब; सं० प्रसर।

पसवाइब क्रि० स० पसाइब (दे०) का प्रे०; सं० प्र+सर।

पसाइब क्रि० स० पानी निकालना; चुवाना; सं० प्र+सू।

पसार सं० पुं० फैलाव; उसार-, सामान का इधर-उधर फैला रहना; सं० प्र+सर।

पसावन सं० पुं० चावल का माड़;-पियब,-भात; सं० प्र+सू (बहना)।

पसिआइब क्रि० स० पासा (दे०) से फोड़ना, मारना (ढेला, मिट्टी आदि)।

पसिजवाइब दे० पसीजब।

पसिनहा वि० पुं० पसीने से भरा या भीगा; स्त्री० -ही।

पसीजब क्रि० अ० पसीजना, पिघलना; प्रे०-सिज-वाइब।

पसीजर सं० पुं० मुसाफिर; मुसाफिर गाड़ी (माल गाड़ी नहीं); अं० पैसेंजर।

पसीना सं० पुं० पसीना; वि०-सिनहा,-ही; सीन-, पसीने से लथपथ; थका।

पसु सं० पुं० पशु।

पसुपति सं० पुं० नैपाल के प्रसिद्ध महादेव;-नाथ; सं०।

पसेरी सं० स्त्री० पाँच सेर की तौल; यक-, दुइ-; -ढमिलाइब, इच्छा करना, मनाना (कोई बुरी बात)।

पसेव सं० पुं० पसीना;-आइब, थक जाना; सं० प्र+सू।

पस्ट वि० पुं० गिरा हुआ (मकान);-होब,-करब; फ़ा० पस्त।

पस्त वि० पुं० थका हुआ; नष्ट;-करब, जीत लेना; भा०-ती।

पहँटब क्रि० स० तेज़ करना (छुरी आदि औज़ार); प्रे०-टाइब,-उब,-टवाइब,-उब।

पहँटा सं० पुं० खेत या फ़सल का सीधा भाग जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो;-धरब,-लेब।

पहट वि० पुं० गिरा हुआ;-होब, गिर जाना।

पहताब क्रि० स० अ० पछताना।

पहर सं० पुं० एक पहर जो ३ घण्टे का होता है; आठौ-, रात दिन; ज़माना; दे० पहरा।

पहरब क्रि० अ० (पशु का) ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ना (विशेषकर साँड़ का)।

पहरा सं० पुं० पहरा;-देब; समय, ज़माना।

पहरुआ सं० पुं० मूसल; बखरी-।

पहसुल वि० थकावट मिटा हुआ (अंग);-करब, (किसी अङ्ग की) थकावट मिटाना; सीधा करना।

पहाड़ सं० पुं० पर्वत;-यस, बहुत बड़ा, लंबा (दिन);-होब, न बितना, कठिन होना, न कट सकना (समय); स्त्री०-ड़ी; वै०-र।

पहाड़ा सं० पुं० संख्याओं का पहाड़ा;-पढ़ब।

पहाड़िन सं० स्त्री० पहाड़ी स्त्री; पहाड़ी की पत्नी; वै०-नि।

पहाड़ी सं० पुं० पहाड़ का निवासी; (२) छोटा पहाड़; वि० पहाड़ों से भरा या घिरा (प्रांत)।

पहिआ सं० पुं० पहिया; वै०-या।

पहिचान सं० स्त्री० परिचय;-करब; क्रि०-ब, पह-चान लेना; जान-,-होब; वि०-नी परिचयवाला।

पहिती सं० स्त्री० पकी दाल; दे० सगपहिता; सं० प्रहित (मसाला)+ई=मसालेवाली (वस्तु); प० पाइती।

पहिरब क्रि० स० पहनना; प्रे०-राइब,-उब।

पहिराव सं० पुं० जो कुछ पहना जाय; वै०-वा।

पहिला वि० पुं० प्रथम; स्त्री०-ली; वै०-ल,-लका,-की;-लाँ, (पशु का) प्रथम वार (बच्चा देना); क्रि० वि०-लें, पहले।

पहिलौंठी सं० स्त्री० (स्त्री का) प्रथम वार गर्भ धारण;-क, प्रथम (संतान)।

पहुँच सं० स्त्री० पहुँचने की शक्ति।

पहुँचब क्रि० अ० पहुँचना; प्रे०-चाइब,-उब,-चवाइब,-उब।

पहुँचा सं० पुं० हाथ और बाँह के बीच का भाग;-ची, ऐसे भाग पर पहनने का एक आभूषण।

पहुँचानि सं० स्त्री० पहुँचने की फ़ुरसत; कहीं जाने का मौका;-होब,-रहब।

पहुँची दे० पहुँचा।

पहुना सं० पुं० अतिथि; वै० पाहुन, भा०-ई,-नई।

पाँखी सं० स्त्री० पङ्खवाली चींटी;-उठब,-उधिराब; सं० पक्ष (पङ्ख)+इन् (वाली)।

पाँच वि० पाँच; प्र०-चै,-चौ; तीन-करब, चरका देना; तीन-आइब, चालाकी आना; सं० पञ्च।

पाँचा सं० पुं० किसानों का औज़ार जिसमें लकड़ी के पाँच टुकड़े आगे निकले होते हैं;-यस, लंबे-लंबे (दाँत)।

पाँजरि सं० स्त्री० पसली।

पाँड़ा सं० पुं० पँड़वा; भैंस का बच्चा; वि० हृष्ट-पुष्ट (नवयुवक) पर उजड्ड; दे० पँड़वा, पँड़रू।

पाँड़े सं० पुं० पांडेय, स्त्री० पँड़ाइनि; सं०।

पाँति सं० स्त्री० पंक्ति; सरवार के सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणों की श्रेणी जिन्हें पँतिहा एवं पंक्तिपावन भी कहते हैं।-क पाँति, कई पंक्तियाँ; वै० पाँती सं० पंक्ति।

पाइब क्रि० स० पाना, खाना; वै०-उब; सं० प्राप्।

पाई सं० स्त्री० पैसे का एक भाग; जुलाहे का सामान;-फइलाइब, सामान बिखेरे रहना।

पाक वि० पुं० पक्का; पका (फोड़ा); स्त्री०-कि; क्रि०-ब, पकना; सं० पक्व।

पाका सं० पुं० फोड़ा; स्त्री० फोरिया;-फोरिया होब, फोड़ा-फुंसी होना।

पाकिट सं० पुं० जेब;-मार, जेब-कट; अं०-केट।

पाख सं० पुं० घर के किनारे की ऊँची दीवार; महीने का आधा भाग, पक्ष; अँजोर-, शुक्ल पक्ष; अन्हियार-, कृष्ण पक्ष; सं० पक्ष; कहा० एक पाख दुइ गहना, राजा मरै कि सहना।

पाग सं० स्त्री० पगड़ी; वै० पगिआ,-गि; क्रि०-ब, पाग तैयार करके उसमें कुछ डालना; प्रे० पगाइब, पगवाइब।

पागल वि० पुं० विक्षिप्त; स्त्री०-लि; क्रि० पगलाब, भा० पगलई।

पागि सं० स्त्री० पाग; मिठाई की चाशनी;-उठाइब; क्रि० पागब: यक-,दुइ-, जितना गुड़ एक बार कड़ाह में बने।

पागुरि सं० स्त्री० जुगाली;-करब; क्रि० पगुराब,-राइब; कहा० भइँसि के आगे बेन बजावै, भइँसि खड़ी पगुराय। वै०-र।

पाचक सं० पुं० पाचन-शक्ति की सहायक वस्तु, दवा आदि।

पाचरि सं० स्त्री० गन्ने के कोल्हू का एक भाग जिसे ठोंक कर कोल्हू कसा जाता है।

पाछ सं० पुं० पीछे का भाग; आग-,आगा-पीछा; आग-करब, ...चकना; वै०-छा।

पाछब क्रि० स० चीरना (पोस्ते के फल या टीके के लिए मनुष्य की बाँह को); प्रे० पछाइब,-छवाइब।

पाछिल वि० पुं० पीछे का; स्त्री०-लि; दे० पछिला।

पाजी वि० दुष्ट; भा०-पन।

पाट सं० पुं० चौड़ाई (नदी की)।

पाटख सं० पुं० ब्राह्मणों का एक भेद; पाठक; स्त्री० पटखाइनि (दे०)।

पाटन सं० पुं० नेपाल की ओर का एक तीर्थ-स्थान जिसे देवी पाटन भी कहते हैं; यहाँ देवी का मेला लगता है।

पाटब क्रि० स० पाटना; प्रे० पटाइब,-उब, पटवाइब,-उब।

पाटी सं० स्त्री० तख्ती; सिर के बालों के दाहिने और बायें दोनों भाग;-परब (बाल सँवारना); (२) खाट की दोनों लंबी लकड़ी जो लेटने पर दायें-बायें रहती है। सिरई (दे०) पाटी; सं० पट्ट।

पाठ सं० पुं० (पुस्तक का) पाठ;-करब,-बैठब,-बैठाइब; वै०-ठि;-ठि बाँचब; सं०।

पाठा सं० पुं० हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति; स्त्री० पठिया (दे०); वि० बलवान।

पाठि सं० स्त्री० (किसी धार्मिक ग्रंथ का) पाठ; प्राय: दुर्गापाठ;-बाँचब,-बैठब,-बैठाइब; सं० पाठ।

पात सं० पुं० पत्ता;-भर, पूरा पत्ता भर (भोजन); तुल० पात भरी सहरी (दे०)... स्त्री०-ती, प्र० पत्ती वै०-ता; सं० पत्र।

पातक सं० पुं० पाप;-लागब; सं०।

पातर वि० पुं० पतला; अनुदार; स्त्री०-रि।

पाता सं० पुं० पत्ता;-पूजब, चेचक का प्रकोप समाप्त होने पर देवी का पूजन करना;-पाव पूजब, बिना कुछ द्रव्य दिये ही कन्या का पाँव पूजकर ब्याह कर देना; सं० पत्र; दे० पात; स्त्री०-ती।

पाती सं० स्त्री० चिट्ठी; पत्ती; खर-; पहले अर्थ में गीतों एवं कविता में प्रयुक्त; सं० पत्र + ई।

पातुर सं० स्त्री० दे० पतुरिया।

पाथब क्रि० स० पाथना; प्रे० पथाइब,-उब,-थवाइब,-उब।

पाथर सं० पुं० पत्थर, ओला;-परब, ओला पड़ना;

दे० पथरा; "नैया मेरी तनक सी बोझी पाथर भार"; सं० प्रस्तर।
पाथी सं० स्त्री० टोकरी जिसमें नाज रखा जाय; क्रि० पथिश्राइब।
पाद सं० पुं० पादने की क्रिया या उसकी दुर्गंध; क्रि० पादब।
पादनि वि० स्त्री० पादनेवाली; कमजोर; दे० पदनी।
पादब क्रि० अ० पादना, परेशान होना; प्रे० पदाइब,-उब।
पान सं० पुं० तांबूल।
पानी सं० पुं० जल; जलवायु; तेज, चमक, मान; "रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून;" सं० पानीय।
पाप सं० पुं० पाप; वि०-पी; सं०।
पापड़ सं०पुं० पापड़;-बेलब, मारे-मारे फिरना, सब कुछ करना।
पापी वि० पुं० पाप करनेवाला; स्त्री०-पिनि।
पायठ सं० पुं० प्रवेश, गुजर; वै० पयठारी (दे०)।
पायल सं० पुं० पैर में पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।
पार सं० पुं० किनारा;-पाइब, जीतना,-करब,-होब; -लागब, हो सकना;-लगाइब।
पारन सं० पुं० व्रत के बाद का भोजन;-करब; सं०।
पारब क्रि० स० लिटा देना (वस्तु को), बनाना (काजल); प्रे० पराइब,-उब।
पारस सं० पुं० प्रसिद्ध पत्थर जिसके छूने से लोहा सोना हो जाता है।
पारा सं० पुं० पारा (धातु);-चढ़ब, क्रोध आना, -गरम होब।
पारी सं० स्त्री० बारी;-परब,-लागब,-लगाइब; क्रि० वि०-पारीं, बारी-बारी से।
पारुस सं० पुं० भोजन का सामान।
पारें क्रि० वि० उस पार, अंत तक;-जाब, समाप्त होना, सकुशल संपन्न होना।
पालकी सं०स्त्री० प्रसिद्ध सवारी जिसमें चार कहार लगते हैं; (२) पालक का साग।
पालब क्रि०स० पालना, रक्षा करना; प्रे० पलाइब; -पोसब, पालन करना; सं०।
पालसी सं० स्त्री० नीति, कूटनीति; अं० पालिसी।
पाला सं० पुं० जमा हुआ पानी; कठोर जाड़ा; -परब;-पाथर, ठंढ तथा ओला।
पाव सं० पुं० सेर का ¼ भाग;-भर; वै० पउआ (दे०)।
पावजेब सं० पुं० पैर का एक आभूषण; फा० पा (पैर)+जेब (शोभा); वै० पौ-, दे० पयजनिया।
पावदान दे० पौदान।
पावर सं० पुं० शक्ति, अधिकार; अं०।
पावा सं० पुं० स्तंभ; खाट का पाया।
पास अव्य०अधिकार में, निकट, हाथ में; (२) सफल; -होब,-करब; पहले अर्थ में सं० पार्श्व; दूसरे में अं०।
पासा सं० पुं० कुदाल का सिरा।
पासी सं० पुं० शूद्रों की एक उपजाति; भर-, -चमार।
पाहन सं० पुं० पत्थर; कविता में ही; सं० पाषाण।
पिंजरा सं० पुं० पिंजड़ा।
पिंड सं० पुं० मकान की लम्बाई-चौड़ाई; मनुष्य का पीछा;-छोड़ब, पीछा छोड़ना, छुटकारा देना।
पिंडा सं० पुं० पिण्ड;-देब, (पितरों को) पिण्ड दान करना;-पानी, पिण्ड तथा तर्पण का जल; सं०।
पिंड़िश्रा सं० स्त्री० छोटी पिंडी; सं० पिंड; दे० पींड़ी।
पिउ सं० पुं० पति; प्रिय; सं०।
पिउबि सं० स्त्री० पीब;-बहब,-निकरब।
पिउरी सं० स्त्री० रुई की पूनी;-बनइब,-कातब; वै० -नी।
पिउसी दे० पेउस।
पिचकारी सं० स्त्री० पिचकारी;-मारब।
पिचास सं० पुं० पिशाच; स्त्री०-सिनि।
पिछउरी सं० स्त्री० दो पर्त की चादर; कहा० कंबर पर जब परै पिछौरी, जाड़ बेचारा करै चिरौरी; वै० -छौरी; पुं०-रा।
पिछवार सं० पुं० (घर के) पीछे का स्थान; अगवार -;-रें,पीछे; सं० पृष्ठ; वै०-रा।
पिछुरब क्रि० अ० पिछड़ना; वै० पछु-; सं० पृष्ठ, प्रे०-छारब, पछा-।
पिछाड़ी दे० पछाड़ी।
पिछारब क्रि० स० पीछे कर देना; हरा देना; प्रे० -छराइब,-छरवाइब; सं० पृष्ठ।
पिछुश्रा सं०पुं० पीछे चलनेवाला व्यक्ति; अनुयायी; क्रि०-इब, दे० पछुआइब।
पिछौरी दे० पिछउरी।
पिटवाइब क्रि० स० पिटाना; वै०-उब, भा०-ई।
पिटाइब क्रि० स० पीटब का प्रे०; भा०-ई।
पिटारा दे० पेटारा।
पिटास सं० पुं० पीटने का क्रम या आधिक्य; -परब।
पिट्ठा सं० पुं० गुड़ में मसाला मिलाकर बनाई हुई बर्फी; वै० टि-।
पिटैया सं० पुं० पीटनेवाला; प्रे०-वैया।
पिटौनी सं० स्त्री० पीटने की (नाज आदि) मजदूरी।
पिट्ट-पिट्ट दे० गिटपिट।
पिट्ठू सं० पुं० अनुयायी, चेला।
पिठासा सं० पुं० पीछे का भाग, पीठ।
पिठिश्राइब क्रि० स० पीछे-पीछे हो लेना, पीठ के बल गिरा देना।

पिढ़ई सं०स्त्री० छोटा पीढ़ा (दे०), गाड़ी का वह भाग जिस पर पैर रखकर चढ़ा जाता है।

पितउँछब क्रि०अ० पित्त से क्लेश पाना; वै० -तौं-।

पितकोप सं० पुं० क्षोभ; वह भाव जो पिता को कुपुत्र पाने पर होता है; पित्त का कोप; प्र०-ता-; -करब,-होब।

पितराब क्रि० अ० पीतल के बर्तन से (दही आदि) खराब होना।

पिता सं० पुं० बाप के लिए आदर प्रदर्शक शब्द; माता-,-माता; सं०।

पितिआउत वि० चाचा से उत्पन्न (भाई, बहिन)।

पितिआनि सं० स्त्री० चाची; वै०-या-।

पितिआसासु सं० स्त्री० पति की चाची, पत्नी की चाची।

पितु सं०पुं० कविता में प्रयुक्त 'पिता' के लिए शब्द; -मात।

पित्त सं० पुं० पित्त;-चढ़ब; सं०।

पित्तरे सं० पुं० पितर लोग; सं०।

पित्ती सं० पुं० चाचा; (२) पित्त के कारण शरीर पर निकले बड़े-बड़े दाने; दे० जुड़पित्ती;-निकरब।

पिद्दिर-पिद्दिर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बोलना);-करब।

पिद्दी सं० पुं० छोटा सा महत्वहीन जीव;-यस।

पिन सं० स्त्री० आलपीन; वै०-नि।

पिनकब दे० मिनकब।

पिनसिन सं० स्त्री० पेंशन; (२)-नि, पेंसिल।

पिनाक वि० पुं० कठिन;-होब; धनुप।

पिपिहिरी सं० स्त्री० लकड़ी की बाँसुरी जो बच्चे बजाते हैं।

पिय सं० पुं० प्रिय व्यक्ति; पति; कविता में 'पिया'; वै०-उ; सं० प्रिय।

पियक्कड़ सं० पुं० शराबी; बहुत पीनेवाला।

पियनी वि० स्त्री० पीनेवाली;-तमाखू।

पियब क्रि० स० पीना; खाब-, खाना-पीना; प्रे० -याइब; सं० पिब्।

पियर वि० पुं० पीला; स्त्री०-रि; क्रि०-राब, भा०-ई, -पन; प्र० पीयर; सं० पीत।

पियरी सं० स्त्री० पीली धोती;-देब,-पहिरब,-पहिराइब।

पिया दे० पिय।

पियाइब क्रि०स० पिलाना, भरना; दे० पियब; भा० -याई, पीने की क्रिया; मजदूरी के अलावा कहारों को पालकी ले चलने पर दिया इनाम।

पियाउक सं० पुं० पीनेवाला; शराबी।

पियाजि सं० स्त्री० प्याज; वि०-यजिहा (खेत)।

पियादा सं० पुं० पैदल चलनेवाला; सिपाही, संदेशवाहक।

पियार वि० पुं० प्यारा, सुखद, मीठा; स्त्री०-रि; "हाथ की साँकरि मुँह की पियारि, गरे लगि रोवै मउसी हमारि"—कहा०।

पियाला सं० पुं० प्याला; स्त्री०-ली।

पियासब क्रि० अ० प्यासा होना।

पियासा वि० पुं० प्यासा; स्त्री०-सी।

पियासि सं० स्त्री० प्यास;-लागब,-मारब।

पिरकी सं० स्त्री० फुड़िया, फुंसी; 'पीर'+की।

पिरथी सं०स्त्री० पृथ्वी, भूमि, संसार;-नाथ, स्वामी, भगवान्।

पिरवाइब क्रि० स० दर्द पहुँचाना, पीड़ा देना; सं० पीड्।

पिराब क्रि० अ० दर्द करना; प्रे०-रवाइब; सं० पीड्।

पिरीति सं० स्त्री० प्रीति; सं०।

पिरेम दे० परेम।

पिरोइब क्रि० स० पिरोना; दे० गुहब।

पिर्र-पिर्र क्रि०वि० व्यर्थ एवं जल्दी-जल्दी (बोलना)।

पिलवान दे० पीलवान।

पिलीहा सं० पुं० प्लीहा; दे० बरवट।

पिल्ला सं० पुं० कुत्ते का बच्चा; हरामी क-, नालायक; स्त्री०-ल्ली, वै०-लवा।

पिवाई दे० पियाइब।

पिसनहारि सं०स्त्री० पीसनेवाली (स्त्री, मजदूरिन); सं० पिप्।

पिसनहा वि० पुं० जिसमें आटा हो, लगा हो या रखा जाता हो; स्त्री०-ही।

पिसना-कुटना सं० पुं० पीसना-कूटना; घर का काम; गृहस्थी; सं०।

पिसब क्रि० अ० पिसना।

पिसरान सं० पुं० पुत्र लोग; प्रायः कचहरी के कागज़ों में यह शब्द पहले प्रयुक्त होता था जिनमें पिता पुत्र के नाम लिखे जाते थे।

पिसाइब क्रि०स० पिसाना; वै०-उब; भा०-ई, पीसने की मजदूरी; सं० पिप्।

पिसाच दे० पिचास।

पिसान सं० पुं० आटा; सं० पिष्टान्न;-सानब, आटा गूँधना।

पिसुन सं० पुं० दुष्ट व्यक्ति; "पिसुन छल्यो नर सुजन को..."; सं० पिशुन।

पिसौनी सं० स्त्री० पीसने का धंधा;-करब;-कुटौनी।

पिहँकब क्रि० अ० जोर से चिल्लाना; सुरीला गाना गाना; वै०-हि-।

पिहाना सं० पुं० डेहरी (दे०) का ढक्कन जो मिट्टी का बनता है; स्त्री०-नी।

पीक सं०स्त्री० जितना एक बार में थूक दिया जाय; -दान, बर्तन जिसमें थूकते हैं। वै०-कि, पीग।

पीछा सं० पुं० पीछे का भाग;-करब, पीछे-पीछे दौड़ना;-छोड़ब, छेड़-छाड़ न करना; सं० पृष्ठ।

पीट-पाट सं० पुं० मार-पीट;-करब,-होब।

पीटब क्रि० स० पीटना; प्रे० पिटाइब,-टवाइब, -उब।

पीठा सं० पुं० थोड़ा सा आटा जो किसी देवता को

लौंग के साथ चढ़ाया जाता है;-लवाँगि (दे०), स्त्री०-ठी।
पीठि सं०स्त्री० पीठ;-देखाइब; भाग जाना;-लगाइब, अखाड़े में हरा देना;-लागब; सं० पृष्ठ।
पीठी सं० स्त्री० दाल का सना हुआ आटा जिसका बड़ा, पकौड़ा आदि बनता है। पिष्।
पीड़ी सं० स्त्री० पिंडी।
पीढ़ा सं० पुं० लकड़ी की छोटी चौकी जिस पर बैठकर प्रायः भोजन करते हैं; स्त्री०-ढ़ी, पिढ़ई (दे०)।
पीढ़ी सं० स्त्री० पुश्त; यक-, दुइ-।
पीतरि सं० स्त्री० पीतल; क्रि० पितराब (दे०); वै० पितरी।
पीनस सं० पुं० नाक का एक रोग।
पीनसि सं० स्त्री० पालकी का एक सुंदर रूप।
पीपर सं० पुं० पीपल; छाती परकै-,सदा का कष्ट, असाध्य कष्ट (क्योंकि पीपल को काट नहीं सकते)।
पीपरि सं० स्त्री० प्रसिद्ध औषधि जो खाँसी में शहद के साथ खाई जाती है; सं० पिप्पली।
पीपा सं० पुं० कनस्तर; बड़ा डिब्बा; स्त्री०-पी, पिपिया।
पीब सं० स्त्री० मवाद; वै०-बि,-प।
पीया दे० पिय।
पीरा सं० स्त्री० दर्द;-होब,-देब,-करब; सं० पीडा।
पीलवान सं० पुं० महावत; भा०-नी; वै० पि-; फ़ा० फ़ील (हाथी)।
पीव सं० पुं० पति; प्रिय; कविता में प्रयुक्त।
पीसब क्रि० स० पीसना; प्रे० पिसाइब,-सवाइब; भा० पिसाई।
पीहर सं० पुं० लड़की के माँ का घर।
पुँजिहा सं० पुं० पूँजीवाला; टुट-, जिसके पास थोड़ी पूँजी हो;-या।
पुआइनि वि० दुर्गंधपूर्ण;-आइब,-वरब; वे०-वा-।
पुइरा सं० पुं० पुआल; वै० पयरा (दे०)।
पुइहट सं० पुं० भीतर भरा हुआ पुआल, रुई आदि;-निकरब, शक्ति समाप्त होना।
पुकार सं० स्त्री० पुकार; क्रि०-ब।
पुकेटब क्रि० स० पीछा करना; प्रे०-टवाइब।
पुख्य सं० पुं० पुष्य नक्षत्र।
पुछत्तर सं० पुं० पूछनेवाला, सहानुभूति करनेवाला।
पुछल्ला सं० पुं० दुम में बँधी कोई चीज़;-लागब, -लगाइब।
पुछवाइब क्रि० स० पुछवाना; पूछब का प्रे० रूप।
पुछाइब क्रि० स० पूछब का प्रे०।
पुजवाइब क्रि० स० पुजवाना; पूजब का प्रे०।
पुजाइब क्रि० स० पूजब का प्रे०।
पुजारी सं० पुं० पूजा करनेवाला; स्त्री०-रिनि।
पुजाही सं० स्त्री० गठरी जिसमें पूजा का सामान हो; सं० पूज्।
पुट सं० पुं० पुट;-देब।
पुटकब क्रि० अ० मर जाना, चुपके से मरना; वै० -टु-,प्रे०-काइब।
पुट्ट वि० पुं० पेट के बल लेटा हुआ; दे० चित; स्त्री०-ट्टि; क्रि० वि०-सें,-दें, धीरे से, बिना बीमार पड़े (मर जाना)।
पुट्ठा सं० पुं० चूतड़ के ऊपर का भाग; स्त्री०-ट्ठी, पहिये के केंद्र का उभरा हुआ भाग।
पुड़िआ सं० स्त्री० पुड़िया;-बान्हब,-बन्हाइब,-खाब।
पुतरा सं० पुं० बदनामी का बहाना;-बन्हब, पुरानी बात कहते रहना;-टाँगब, तुहमत लगाना; सं० पुत्तलिका।
पुतरी सं० स्त्री० पुतली; आँखि क-, परम प्रिय; सं० पुत्तलिका।
पुतवा दे० पूता।
पुतवाइब दे० पोतब।
पुदाना सं० पुं० पोदीना।
पुदुर-पुदुर क्रि० वि० व्यर्थ में (बोलना)।
पुद्दन वि० पुं० ख़राब, भद्दा; बच्चों द्वारा प्रयुक्त; स्त्री०-नि।
पुनरगति सं० स्त्री० दुर्दशा;-होब,-करब; सं० पुनः + गति (दूसरा जन्म)।
पुनि क्रि० वि० फिर; प्रायः फै० प्र० सु० आदि में स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त; सं० पुनः।
पुनीत वि० पवित्र।
पुन्ना वि० पुं० पुराना; स्त्री०-न्नी;-हिन, पुरानेपन की गंध या स्वादवाला;-आइब।
पुन्नि सं० स्त्री० पुण्य;-करब, दान देना;-दान, -खाता।
पुन्यातमा वि० पुण्य करनेवाला; उदार; सं०।
पुपुआब क्रि०अ० व्यर्थ में चिल्लाना; पूँ-पूँ (पों-पों) करना; दे० बुबुआब।
पुरइनि सं०स्त्री० कमल का पेड़;-पात, कमल पत्र।
पुरइब क्रि० अ० पूरा करना, सहायता देना (गीत में); प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब;सं पूर।
पुरकाम वि० पुं० मज़बूत (वस्तु)।
पुरखा सं० पुं० वृद्ध पुरुष, परिवार का बड़ा व्यक्ति; स्त्री०-खिनि; सं०।
पुरजा सं० पुं० (मशीन आदि का) छोटा भाग; स्त्री०-जी, काग़ज़ का छोटा टुकड़ा जिस पर कुछ लिखा हो; दे० पर्ची।
पुरबुज सं० पुं० पूर्व जन्म; वि०-जी, पूर्व जन्म का।
पुरवा सं० स्त्री० पूरब की हवा; वै०-ई, (२) पुं० छोटा सा गाँव; पुरई-,बस्ती; सं० पुर।
पुरहर वि० पुं० पूरा; स्त्री०-रि।
पुरसा सं० पुं० पुरुष के हाथ उठाकर खड़े होने तक की ऊँचाई या गहराई; एक-,दुइ-;-भर (ऊँच, गहिर): सं० पुरुष।
पुराइब क्रि० स० पूरने (दे० पूरब) में सहायता करना; प्रे० पुरवाइब।

पुरातन वि० पुराना, बहुत प्राचीन; सं, तुल० प्रीति पुरातन।
पुरान वि० पुं० पुराना; स्त्री०-नि; (२) पुराण; कथा-; सं०।
पुरायठ वि० पुं० हृष्ट पुष्ट; पूरी अवस्था का; स्त्री० -ठि।
पुरिआ सं० स्त्री० गोली (भात की); यक-, दुइ-; देहात में भात पुरिआ बनाकर परसा जाता है, विशेषतः मेहमानों को।
पुरिखा दे० पुरखा; बातचीत में दूसरे के लिए "दु पुरिखेव !" कहा जाता है जब उस व्यक्ति के मुँह से कोई ग़लत बात निकलती है।
पुरी सं० स्त्री० पुण्यस्थली, पवित्रनगरी; अजोध्या-, काशी-; सं०।
पुरुख सं० पुं० पति, प्रियतम; "केहि पर करौं सिंगार पुरुख मोर बाउर !"।
पुरुब सं० पुं० पूरब;-पच्छूँ, दिशाज्ञान;-जानब; वि० -बहा, पूरब का रहनेवाला;-ही; वै० पुरबहा; पद्दे० -"पुरुब देस से आई तिरिया, अन्न खाय पानी के किरिया"।
पुरुवा दे० पुरवा।
पुरोहित दे० उपरोहित।
पुरौआ दे० पुरवा।
पुलकब क्रि० अ० हर्षित होना; उचकना (हर्ष या गर्व के मारे); प्रे०-काइब,-कारब; सं०।
पुलटिस सं० स्त्री० तीसी या आँटे की गर्म-गर्म गोली जिससे सेंक की जाती है;-बान्हब; अं०।
पुलह सं० पुं० पुल; स्त्री०-लिहआ; भा०-लाही, पुल पार करने का कर;-लाही लेब,-देब,-लागब।
पुवा दे० मालपुवा।
पुस्ट वि० पुं० मजबूत; हिस्ट-;-ई, पुष्ट होने की दवा; सं०।
पुस्ति सं० स्त्री० पुश्त; यक-,दुइ-; वै० पुहुति; फ़ा० पुश्त (पीठ)।
पुस्तैनी वि० खांदानी (जायदाद आदि)।
पूछि सं० स्त्री० दुम; व्यं० अनुयायी; खुतरे म -डारब, दुम दबा लेना।
पूछब क्रि० सं० पूछना; प्रे० पुछाइब,-छवाइब।
पूजब क्रि० स० पूजना; प्रे० पुजाइब,-जवाइब; मु० प्रसन्न कर लेना, रिश्वत देना।
पूड़ी सं० स्त्री० पूरी;-तरकारी।
पूत सं० पुं० पुत्र;-ता, हे पुत्र ! धिया-पूता, लड़के लड़कियाँ; सं० पुत्र।
पूती सं० स्त्री० गोल जड़, (आलू आदि का) दाना; यक-,दुइ-;-परब; सं० पुं+त्र (जो नाश से रक्षा करे; बीज)।
पूर वि० पुं० पूरा, सारा;-पूर, पूरा-पूरा;-पार, तौल में ठीक, क्रि०-ब, बनाना (सेवईं-); सं० पूर्ण।
पूरन वि० पूर्ण;-होब,-करब; सम-, संपूर्ण; सं० पूर्ण।
पूरा सं० पुं० गट्ठर; स्त्री०-री (ईख की पत्ती, घास आदि का गट्ठर)।
पूस सं० पुं० पूस का महीना;-माघ, जाड़े के दिन; सं० पौष।
पूस-पूस सं० पुं० बिल्ली को बुलाने का शब्द;-करब, पुचकारना, मीठा बोलना, व्यर्थ बुलाते रहना (हठी व्यक्ति को); तु० अं० पूसी।
पेंग सं० पुं० झूले पर खड़े होकर पैर से दिया गया धक्का;-मारब; वै०-ङ।
पेंच सं० पुं० तरकीब, मशीन;-म परब, मुश्किल में पड़ना वि०-इत (पहलवान) जो लड़ने की तरकीब जाने;-चौदा, पेंचवाली (बात); फ़ा० पेच (टेढ़ापन)।
पेंचिस सं० स्त्री० बीमारी जिसमें बहुत दस्त हों।
पेउनी सं० स्त्री० एक प्रकार की बेर;-बइरि।
पेउस सं० पुं० गाय या भैंस के ब्याने के १० दिन के भीतर का दूध जिसकी इनरी (दे०) बनती है। सं० पीयूष ? वै०-सी; वि०-सहा।
पेट सं० पुं० पेट, गर्भ, भेद, जीवन यात्रा;-रहब, गर्भ रह जाना;-काटब, कम खाना, रोज़ी लेना;-लेब, रहस्य जानने की कोशिश करना; वि०-टू,-टू,-टार्थू, -हा, जिसे खाने की ही चिंता हो;-हा;-ही; मु० मुहीं पेट, क़य तथा दस्त;-चलब; क़य दस्त होना।
पेटरिआ सं० स्त्री० पिटारी; पुं०-टारा; वै०-टारी।
पेटी सं० स्त्री० छोटा बक्स; पेट पर बाँधने की पट्टी।
पेडुआ सं० स्त्री० एक पौधा जिसकी छाल से रस्सी बनती है, इनका दाना भूनकर खाया जाता है और इसके फूल की तरकारी बनती है।
पेटू वि० पुं० बहुत खानेवाला; प्र०-टू, जिसे खाने की ही चिंता हो; दे० पेट।
पेठा सं० पुं० सफ़ेद कुम्हड़े का मुरब्बा;-बनाइब।
पेड़ सं० पुं० वृक्ष,-पालव, लता वृक्ष;-ड़ी, गन्ने का पेड़ जो खोदा न जाय और जिसकी जड़ में से कई बार गन्ना होता रहे;-राखब, ऐसे गन्ने का खेत रखना; मु० जड़, मूल कारण; क्रि०-ढ़ाब, (पौदे का) बढ़कर पेड़ हो जाना।
पेड़ा सं० पुं० प्रसिद्ध मिठाई।
पेड़ार सं० पुं० एक जंगली पेड़ जिसके फल की तरकारी होती है।
पेडुरी सं० स्त्री० पेट के नीचे का भाग; दे० पेड़ू; -काँपब, बहुत डर लगना, भयभीत होना।
पेड़ू सं० पुं० पेट के ठीक नीचे का भाग।
पेनी सं० स्त्री० पेंदी; मु० बेपेनी क लोटा, जिसका भरोसा न हो (बिना पेंदी का लोटा)।
पेम सं० पुं० कमल; अं० पेन।
पेरना सं० स्त्री० प्रेरणा;-होब, प्रेरणा होना।
पेरब क्रि० स० पेलना; रस निकालना; तङ्ग करना; प्रे०-राइब,-रवाइब,-उब; भा०-राई,-रवाई; सं० प्रेर्।

पेलब क्रि० स० ढकेलना, घुसेड़ना; प्रे०-लाइब, -लवाइब,-उब।
पेला सं० पुं० अपराध; वि०-दार, अपराधी;-करब, -होब।
पेलिआइब क्रि० अ० धक्का देकर आगे जाना; प्रे० -वाइब; वै०-उब।
पेल्हर सं० पुं० अंडकोष।
पेवना सं० पुं० पैबंद;-लगाइब,-लागब।
पेस सं० पुं० सामना;-करब, सामने रखना;-होब; -पाइब,जीतना;-सी,सामने रखने की क्रिया, तारीख आदि (मुकदमे की);-कार, कर्मचारी जो अफसर के सामने कागज पेश करे; फ़ा० पेश।
पेसा सं० पुं० काम, कारबार; फ़ा० पेशः।
पैंट सं० पुं० दे० पयट।
पैकर सं० पुं० पैर बाँधने की जंजीर;-डारब; फ़ा० पा (पाय=पैर)+कर।
पैखाना सं० पुं० विष्टा, टट्टी;-करब,-जाब,-होब; फ़ा० पा (पैर)+खाना (घर)।
पैगम्मर सं० पुं० नेता, देवता; मुहम्मद; पैगम्बर (पैगाम+बर=संदेशवाहक)।
पैगाम सं० पुं० संदेश;-देब,-लाइब,-भेजब; पैग़ाम।
पैजनिया दे० पय-।
"पय" से प्रारम्भ होनेवाले प्रायः सभी शब्द "पै" से भी प्रारम्भ हो सकते हैं।
पोंकब क्रि० अ० पतले दस्त करना; प्रे०-काइब, -उब।
पोंगड़ा सं० पुं० घुटने से नीचे पैर का भाग; स्त्री० -ड़ी; वै०-का,-कड़ा।
पोंछन सं० पुं० पोछा हुआ अंश;-पोंछन, मैल।
पोंछब क्रि० स० पोंछना; प्रे०-छाइब,-छवाइब; -पोंछब, साफ करना।
पोंपरा सं० पुं० गीली भूमि, दीवार आदि के ऊपर का सूखा भाग; स्त्री०-री, क्रि०-रिआब;-परब।
पोंपला वि० पुं० जिसके मुँह में दाँत न हो; स्त्री० -ली।
पोंपा वि० पुं० मुँह बानेवाला, मूर्ख;-दास,-राम।
पोइ सं० स्त्री० एक बेल जिसके पत्ते की पकौड़ी बनती है और वे दाल में भी पड़ते हैं। वै०-ई, -य।
पोइब क्रि० स० (रोटी) बनाना, पकाना, प्रे०-वाइब, वै०-उब।
पोइसि सं० स्त्री० थकावट, परेशानी;-आइब,दुर्गति होना।
पोई सं० स्त्री० गन्ने की प्रारम्भिक शाखा; वै०-य; कहा० जेकर बाप न देखो पोय, तेकरे घर गुरवाई (दे०) होय।
पोखब क्रि० स० पोषण करना; प्रे०-खाइब,-उब; सं० पोष्।
पोखरा सं० पुं० तालाब; स्त्री०-री; सं० पुष्कर।
पोका सं० पुं० बाँस का खोखला टुकड़ा; स्त्री०-की, जो पङ्खे के डंडे में लगती है; (२) वि० पुं० मूर्ख; भा०-पन।
पोटा सं० पुं० नाक के भीतर से निकला द्रव मैल, नेटा-, गंदगी; वि०-टहा,-ही।
पोटास सं० पुं० पोटाश; अं०।
पोटी सं० स्त्री० पेट के भीतर की हड्डी; आँती-, अँतड़ी, हड्डियाँ आदि।
पोढ़ वि० पुं० मजबूत; स्त्री०-ढ़ि; भा०-ढ़ाई; क्रि० -ढ़ाब, मजबूत होना (बीमार का); (२) सं० पुं० उँगली का एक भाग,-ढ़े पोढ़, एक-एक अङ्ग।
पोत सं० पुं० खेत का लगान;-देब,-लेब।
पोतनहरि सं० स्त्रियों का गर्भाशय;-उखरब,-पिराब।
पोतना सं० पुं० लत्ता जिससे चूल्हा, चौका आदि पोता जाय;-होब, (पेट का) नरम हो जाना; वै० प्व-;-नहरि, बर्तन जिसमें पोतना रखा रहता है।
पोतब क्रि० स० पोतना; लीपब-, लीपना पोतना; सब एक में मिला देना, गड़बड़ कर देना; प्रे० -ताइब,-तवाइब, भा०-ताई, पुताई।
पोता सं० पुं० पौत्र; नाती-; (२) अंडकोष;-बाढ़ब, -चिराइब,-चीरब; (१) सं० (२) फ़ा० फोतः।
पोथा सं० पुं० बड़ी पोथी; स्त्री०-थी, बड़ी पुस्तक, पूज्य पुस्तक; "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पण्डित भया न कोय"-कबीर।
पोपटा सं० पुं० छीमी जिसका दाना मजबूत न हो; क्रि०-ब, दाना पड़ने लगना।
पोय दे० पोइ।
पोर दे० पोढ़ (२);-रे पोर, एक-एक उँगली, प्रत्येक अङ्ग।
पोला सं० पुं० सूत का छोटा गुच्छा; कहा० "मियाँ बटोरैं ताग-ताग औ बीबी उड़ावैं पोला।"
पोसब क्रि० स० पोषण करना; पालब-; सं०।
पोसाक सं० स्त्री० पहनावा, पोशाक; फ़ा०।
पोसाब क्रि० अ० अच्छा लगना।
पोहब क्रि० स० माला का एक-एक दाना पिरोना या गुहना; प्रे०-हाइब।
पौंगब क्रि० अ० हाथ फैलाकर पहुँचने का प्रयत्न करना; वै०-ड्ब, पउँगब।
पौंड़ब क्रि० अ० तैरना; इधर-उधर भटकते रहना; प्रे०-ड़ाइब, भा०-ड़ाई; वै०-रब।
पौंढ़ब क्रि० अ० लेटना; प्रे०-ढ़ाइब,-उब।
पौंरब दे० पौंड़ब।
पौ सं० पुं० प्रातःकाल की लाली;-फाटब, सवेरे की लाली दिखना।
पौआ सं० पुं० पाव; सेर का चौथाई;-भर; वै० पउआ।
पौटब क्रि० अ० (द्रव का) गिरकर फैल जाना; प्रे०-टाइब; वै० पव-।
पौड़ा सं० पुं० एक प्रकार का लंबा मोटा गन्ना; वै०-दा।
पौढ़ा पुं० लेटा हुआ, स्त्री०-ढ़ी (२) दे० पौड़ा।

पौदरि दे० पवदरि ।

पौदान सं० पुं० सवारी का वह भाग जिस पर पैर रखा जाय; फ़ा० पा (ब)+दान ।

पौधा सं० पुं० छोटे पेड़; पौदा ।

पौना दे० पवना ।

पौनारि सं० स्त्री० कमल का पेड़, उसकी जड़ अथवा शाखा जिसका साग बनता है। सं० पद्म-नाल; वै० पव-।

पौवा दे० पउआ ।

पौवारा दे० पववारा ।

पौसाला दे० पउसाला, पव-।

पौहट सं० पुं० पड़ोस, जवार; प्र०-ट्ट; वै० पव-; तुल० चौहट्ट हाट्ट ।

पौहारी दे० पवहारी ।

# फ

फँसनि सं० स्त्री० फँसान, व्यस्तता;-होब,-रहब; वै०-सानि ।

फँसब क्रि० अ० फँसना; प्रे०-साइब,-सवाइब ।

फँसरी सं० स्त्री० बाँधने की रस्सी, फाँसी;-लागब, -लगाइब,-डारब ।

फइँकब क्रि० स० फेंकना, व्यर्थ करना; प्रे० फेंका-इब,-वाइब,-उब ।

फइँचि सं० स्त्री० बारीक लकड़ी का टुकड़ा जो काँटे की भाँति गड़ जाय; वि०-चहा,-चिहा ।

फइल वि० पुं० चौड़ा; स्त्री०-लि; प्र०-हर, क्रि० -ब ।

फइलब क्रि० अ० फैलना; प्रे०-लाइब,-लवाइब; वि०-लहर ।

फइसन दे० फयसन ।

फइहाब क्रि० अ० चिल्लाना, व्यर्थ में रोना; वै० -हियाब,-याब ।

फउआरा सं० पुं० फौवारा ।

फउत वि० मरा हुआ;-होब;-ती, मृतक के संबंध की पुलिस रिपोर्ट;-लिखाइब; अर० फ़ौत (गुम) ।

फउदि सं० स्त्री० फ़ौज;-दी, फ़ौजवाला, सिपाही; -हा; फ़ौज का; अर० फ़ौज ।

फउरम क्रि० वि० तुरंत; दे०-वरम; अ० फ़ौर (शय) ।

फउरेब सं० पुं० जाल, षड्यंत्र;-करब,-रचब; वि० -बी,-बिहा; वै० फरेब-बरेब; फ़ा० फ़रेब ।

फकना सं० पुं० पतला रद्दी कपड़ा; शा० 'कफन' (अ०) का विपर्यय ।

फकफकाब क्रि० अ० व्यर्थ में बोलना; दे० बक-बकाब ।

फकर-फकर क्रि० वि० व्यर्थ एवं शीघ्र (बोलना) ।

फकली दे० फो- ।

फकीर सं० पुं० साधु, भिखमंगा;-होब; स्त्री० -रिनि, भा०-किरई,-कीरी; अर० फ़कीर ।

फक्क वि० बदरङ्ग, निस्तेज (चेहरा);-होब;-दें, झट से (काटना, फाड़ना आदि); फका-, जल्दी-जल्दी,-फक्क (वै०) ।

फक्कड़ वि० पुं० फक्कड़, स्त्री०-ड़ि; प्र०-ड़ी ।

फगुआ सं० पुं० होली (त्योहार);-करब,-होब; फागुन के महीने में गाया जानेवाला एकगीत; -गाइब; क्रि०-इब, रंग या होली का रंग डालना; वै०-वा; सं० फाल्गुन ।

फगुई सं० स्त्री० होली; करब,-मनाइब,-होब;-पंचमी, त्योहार; सं० फाल्गुन ।

फगुनहट सं० पुं० फागुन का मौसम; फागुन के कुछ दिन पूर्व तथा कुछ दिन पीछे के दिन;-टें, इस मौसम में; सं० फाल्गुन ।

फचफचहटि सं० स्त्री० 'फचफच' की आवाज़; -करब,-होब; अनु० ।

फचाफच्च क्रि० वि० फचफच आवाज़ करते हुए (अनु०); प्र०-च्च ।

फजरी सं० पुं० एक प्रकार का अच्छा आम ।

फजिर क्रि० वि० सूर्योदय के समय; बड़े-; अर० फ़ज्र ।

फजिहति सं० स्त्री० दुर्दशा, डाँट-फटकार;-करब, डाँटना;-ताचार, थुक्का-फजीता; अर० ।

फजूल क्रि० वि० व्यर्थ; वि० निर्थरक; वै० बे-; प्र० -लैं; अर० फ़ुजूल ।

फज्झी सं० स्त्री० लकड़ी का पतला टुकड़ा; वै० फाझी ।

फटकब क्रि० स० साफ़ करना (नाज), पछोरना; अ० अलग हो जाना; प्रे०-काइब,-कवाइब ।

फटका सं० पुं० फाटक, दरवाज़ा ।

फटकारब क्रि० स० फटकारना; भा०-कार ।

फटहा वि० पुं० फटा; स्त्री०-ही ।

फट्टा सं० पुं० (बाँस का) चीरा हुआ लंबा टुकड़ा; स्त्री०-ट्टी ।

फट्टा वि० चालबाज़; भा०-ट्टई ।

फठिआब क्रि० अ० हठ करना ।

फणा सं० पुं० साँप का फन; वै०-णा ।

फतुही सं० स्त्री० सदरी; अर० फतह (खोलना) इसकी बाँह खुली रहती है ।

फतूर सं० पुं० धोका, षड्यंत्र;-करब,-रचब; वि० -री; अर० फ़ितूर ।

फते सं० स्त्री० विजय;-करब,-होब; अर० फ़तह ।

फदफदगोबरी सं० स्त्री गड़बड़, मिलावट;-करब, एक में मिलाकर खराब कर देना;-होब; फद-फद+गोबरी (गोबर तथा मिट्टी की मिलावट)।
फद्दसे क्रि० वि० (गिरना) धमाक से।
फन सं० पुं० होशियारी, चालाकी; प्र०-न्न; बड़े-क, बहुत चतुर; अर० फ़न।
फनइब क्रि० स० आरंभ करना, आयोजन करना; वै०-ना-,-उब; प्रे०-वाइब।
फनकब क्रि० अ० दूर भागना, इनकार करना।
फनगब क्रि० अ० कूदना, उछलकर अलग हो जाना; ज़ोर से इनकार करना।
फनगाइब क्रि०स० उछालना (रुपया-पैसा); जल्दी कमा लेना; वै०-उब।
फनफनाब क्रि० अ० 'फन-फन' का शब्द करना; भागना; न करने का प्रयत्न करना।
फफद्दु सं० स्त्री० एक प्रकार की दाद; क्रि०-दब, दाद की भाँति फैल जाना; वै० बफ-।
फबब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना (देखने में)।
फयँकट वि० पुं० धोखेबाज; वै० फें-; भा०-ई।
फयर सं० पुं० गोली की आवाज़;-करब,-होब; अं० फ़ायर; वै० फैर।
फयसन सं० पुं० शौक; वि०-निहा,-नी; अं० फ़ैशन;-करब,-मारब।
फर सं० पुं० फल; क्रि०-ब;-फरहार, फल एवं फलाहार, सं० फल।
फरक सं० पुं० अंतर;-कें, पृथक्; अर० फ़र्क़।
फरकब क्रि० अ० फड़कना; प्रे०-काइब,-उब; मु० (रुपये पैसे की) अधिकता होना।
फरका सं० पुं० छप्पर का एक भाग; अर० फ़र्क़।
फरकाइब क्रि० स० फड़काना; खूब कमाना; वै०-उब।
फरजी सं० पुं० (शतरंज का) वज़ीर; वि० काल्पनिक, झूठा; फ़ा०फरजी (वज़ीर) अर० फ़र्ज़ (तै)।
फरद सं० स्त्री० पर्त; हल्की रजाई; वै०-दं,-दिं; फ़ा० फ़र्द।
फरफर सं० पुं० फरफर की आवाज़;-करब,-होब।
फरब क्रि० अ० फलना; दाने पड़ जाना (चमड़े पर); सं० फल।
फरसा सं० पुं० कुल्हाड़ा; सं० परशु; फालसा।
फरसी सं० स्त्री० हुक्का जिसे फ़र्श पर रखकर पी सकें; फ़ा० फ़र्श।
फरा सं० पुं० एक व्यंजन जिसमें चावल का आटा और दाल की पीठी पड़ती है। इसे यम-द्वितीया को अवश्य खाते हैं।
फराइब क्रि० स० फड़वाना; (कपड़ा) खरीदना।
फराई सं० स्त्री० फलने का क्रम, नियम या शोभा; फाड़ने का तरीक़ा; प्रे०-वाई।
फराक सं० पुं० स्त्रियों का एक कपड़ा; अं० फ्राक।
फरार वि० पुं० भगा हुआ (अपराधी); स्त्री०-रि;-होब,-करब; अर० फ़रार।
फरिवाह सं० पुं० फरी मारनेवाला; अद्भुत खेल दिखानेवाला; भा०-ही।
फरी सं० स्त्री० कूदकर हाथों के बल चलने की कसरत;-मारब;-गतका, गतका-, इस प्रकार के खेल; दे० गतका।
फरुआ सं० पुं० फावड़ा;-चलाइब; स्त्री०-ही।
फरुही सं० स्त्री० लकड़ी का हथियार जिससे गोबर आदि बटोरते हैं।
फरेनि सं० स्त्री० फरेंद, जामुन।
फरेब दे० फउरेब।
फर्च वि० पुं० साफ़, शुद्ध;-चैं, शुद्ध स्थान पर; भा०-ई, क्रि०-र्चाब,-र्चाइब; स्त्री०-र्चि।
फर्स सं० पुं० जीत; विजय; मैदान या फ़र्श;-पाइब, जीतना; फ़ा० फर्श।
फल सं० पुं० फल, नतीजा;-पाइब,-होब,-देब; क्रि०-ब, अच्छा या बुरा फल देना (कर्म का); सं०।
फलकब क्रि० अ० (बर्तन में रखे द्रव का) छलकना; प्रे०-काइब।
फलनवा वि० पुं० अमुक; स्त्री०-निआ; दे० फलाने, फलान,-ना जिनका यह दुकारने का रूप है।
फलफल क्रि० वि० (खून के बहने के लिए) ज़ोर से, धार फूटकर; प्र०-लल-लल, फलल-फलल; वै० फल्ल से।
फलान वि० पुं० अमुक, स्त्री०-नि; फ़ुलाँ; वै०-ना,-ने (आ०)।
फलानैन सं० पुं० एक प्रकार का गर्म कपड़ा; अं० फ़लानेल।
फलास सं० पुं० जुआ जो ताश के साथ खेला जाता है; अं० फ़्लश।
फली सं० स्त्री० छीमी;-लागब।
फवरम क्रि० वि० तुरंत; फ़ौरन्; प्र०-इम।
फहरब क्रि०अ० फहरना; प्रे०-राइब,-उब; वै०-राब।
फहिआब दे० फहाब; वै०-याब।
फाँक सं० पुं० टुकड़ा; स्त्री०-की; क्रि० फँकिआइब, टुकड़े करना।
फाँकब क्रि० स० फाँकना; प्रे० फँकाइब,-कवाइब,-उब।
फाँका सं० पुं० चबेना या अन्य वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जा सके; यक-, दुइ-:-मारब; क्रि०-कब।
फाँट सं० पुं० काग़ज़ जिस पर हिस्सेदारों की भूमि का ब्योरा लिखा हो; अलग ब्योरा; क्रि० फँटिआइब।
फाँड़ सं० पुं० कमर के दोनों ओर का भाग; क्रि० फँड़िआइब,-में रख लेना।
फाँता वि० होशियार;-बनब; दोनों लिंगों में इसका यही रूप रहता है। अर० फातः।

फाँफी सं० स्त्री० पतली मलाई; पर्दा;-परब।
फाँस सं० पुं० जिसमें कुछ फँसा हो; "बाँस फाँस औ मीसरी एकै संग बिकाय"।
फाँसब क्रि० स० फँसाना; प्रे० फँसाइब, फँसवाइब, -उब।
फाँसी सं० स्त्री० फाँसी;-लागब; बुरा लगना;-देब, -होब,-पाइब; सूरी-,सूली एवं फाँसी।
फागुन सं० पुं० चैत के पहले का महीना।
फाजिल वि० पुं० अधिक, बढ़ा हुआ।
फाझी दे० फज्झी।
फाट वि० पुं० फटा, स्त्री०-टि।
फाटब क्रि० अ० फटना; प्रे०-रब, फराइब,-उब, फरवाइब।
फानब क्रि० स० बाँध देना; प्रे० फनाइब,-उब।
फाना सं० पुं० डोरी या उबहन (दे०) का वह भाग जो बर्तन के चारों ओर बाँधा जाता है।
फाफा सं० पुं० झूठ;-उड़ाइब।
फायँ-फायँ क्रि० वि० व्यर्थ (बकना)।
फायदा सं० पुं० लाभ;-होब,-करब,-देब; फ़ा० फ़ायद:।
फार सं० पुं० हल का लोहेवाला भाग जो भूमि को "फाड़ता" है। 'फारब' से।
फारखती सं० स्त्री० हिसाब चुकता होने की रसीद; -देब,-लेब,-होब; अर० फ़ारिग़+ख़त।
फारन सं० पुं० फाड़ा हुआ भाग।
फारब क्रि० स० फाड़ना; प्रे० फराइब, फरवाइब, -उब; चीरब-, तूरब-(दे० तूर-फार)।
फालिज सं० पुं० रोग जिससे अंग विशेष संज्ञाहीन हो जाता है;-मारब,-गिरब; अर० फ़ालिज।
फाहा सं० पुं० रुई या कपड़े का टुकड़ा जो घाव पर रखा जाय।
फिकिर सं० स्त्री० चिंता;-करब,-होब,-रहब; वै० -रि; फ़ा० फ़िक्र।
फिचकुर दे० फेच-।
फिचवाइब क्रि० स० फीचब (दे०) का प्रे० रूप।
फिटकिरी सं० स्त्री० फिटकरी; वै०-टि-।
फिट्ट वि० दुरुस्त, ठीक;-करब,-होब,-रहब; सं० फुट, (दे०) अं० फ़िट।
फिन क्रि० वि० फिर; वै०-नि,-नु; प्र०-नू; सं० पुन:।
फिरंगी सं० पुं० विदेशी, अंग्रेज़; वै०-रिं-; फ़ा०।
फिरंता सं० पुं० लौटती या लौटाती बार;-मँ, लौटते समय; वै०-ता,-रौता, फे-।
फिरकी सं० स्त्री० फिरकी; मु० पतली रोटी; वै० -रि-।
फिरब क्रि० अ० फिरना; झाड़े-, टट्टी जाना; प्रे० फेरब, फिराइब,-वाइब, फे-,-उब।
फिराक सं० पुं० चिंता, उद्योग;-मँ रहब, कोशिश करना; अर०।
फिरार दे० फरार।
फिरि-फिरि क्रि० वि० बार-बार; वै०- नि-नि।
फिरू क्रि०वि० फिर; वै०-नू, फेरू।
फिरैआ सं० पुं० फिरनेवाला; वै०-या।
फिलपाव दे० पिलपावा; फ़ा० फील+पा।
फिलवान दे० पिलवान; फ़ा०फील+वान।
फिसड्डी वि० पुं० अयोग्य; वै०-सि-।
फिसिहा वि० पुं० फ़ीसवाला; स्त्री०-ही।
फिस्स वि० पुं० व्यर्थ;-होब,-करब; टायँ-टायँ-, बड़ी बक-बक के बाद कुछ नहीं।
फीक वि०पुं० हल्का, कम महत्त्व का; नीरस (तुल० सरस होय अथवा अति फीका);-परब, कम महत्त्व-पूर्ण हो जाना।
फीचब क्रि० स० पटक-पटक कर साफ़ करना; प्रे० फिचाइब,-चवाइब,-उब; दे० उपछब; सं० प्रक्षाल; भो० फे-।
फीट सं० पुं० फुट; अं०।
फीता सं० पुं० फीता।
फीलखाना सं० पुं० घर जिसमें हाथी रहे; वै० पी-; फ़ा० फ़ील (हाथी)+ख़ान: (घर)।
फीला सं० पुं० शतरंज के खेल में 'ऊँट' कहा जाने-वाला मुहरा; फ़ा० फ़ील।
फीस सं० स्त्री० शुल्क;-लागब,-देब,-लेब; वै०-सि; अं० फ़ी० का बहुवचन।
फुआ दे०-वा।
फुक्क सं० पुं० हवा या प्राण निकलने का शब्द;-सँ, झट से।
फुचरा सं० पुं० लकड़ी आदि का किनारे का पतला भाग;-निकरब; क्रि०-ब, ऐसे टुकड़े हो जाना; खराब हो जाना।
फुट सं० पुं० फुट का नाप; यक-, दुइ-, अं०।
फुटकर वि० पुं० अनेक प्रकार का (व्यय, द्रव्य आदि)।
फुटब क्रि० अ० फूटना; प्रे० फोरब; वै० फू-।
फुटबाल सं० पुं० प्रसिद्ध खेल या उसका गेंद; -होब -खेलब।
फुटमति सं० स्त्री० असहमति; वैमनस्य;-होब,-रहब, -करब।
फुटहरा सं० पुं० भूना हुआ चना जिसका छिलका उतर गया हो; वै०-टे-; 'फुटब' से (जो खूब फूटा हो)।
फुटहा वि० पुं० फूटा हुआ; स्त्री०-ही।
फुट्टइल वि० पुं० अलग, असम्मिलित; वै-फायँ।
फुदकब क्रि० अ० फुदकना; प्रे०-काइब; भा० -कवाई।
फुनकब क्रि० अ०(पशु का) फुन्न-फुन्न करना, मारने का प्रयत्न करना।
फुनगी सं० स्त्री० कोंपल; क्रि०-गिआब, कोंपल फूटना।
फुनि क्रि० वि० फिर; वै० फिनु,-नू, पु-;-फुनि, बार-बार; सं० पुन:।
फुपकार सं० पुं० एक चर्म रोग जो साँप के 'फु-प

कार' के कारण होता है; साँप या छिपकली आदि जंतुओं के मुँह की साँस;-छोड़ब; वै०-फ- ।

फुप्फा सं० पुं० फूफी का पति; वै०-प्फा ।

फुफुआउर सं० पुं० गाँव या घर जहाँ फुआ ब्याही हो; क्रि० वि०-अउरें, फुआ के यहाँ ।

फुफुनी सं० स्त्री० स्त्रियों की धोती का वह चुना भाग जो पेट के ऊपर रहता है ।

फुर सं० पुं० सच;-कहब,-बोलब; वि० सत्य, स्त्री० -रि, क्रि०-वाइब (सत्य सिद्ध करना),-राब, सत्य होना (देवता का); क्रि० वि०-फुर, सचमुच प्र०-रै, -रै-फुरै ।

फुरमाइब क्रि० अ० आज्ञा देना; सं० फुरमाइस; -इस करब; फ़ा० फरमाइश ।

फुरसति सं० स्त्री० छुट्टी;-पाइब,-रहब,-देब,-मिलब; (फ़ुर्संतवाला) फ़ा० फ़िरसत ।

फुराब क्रि० अ० सत्य सिद्ध होना (देवी देवता का); फल देना, प्रे०-रवाइब ।

फुरिआ दे० फोरिया ।

फुरुर-फुरुर क्रि० वि० फुर्र-फुर्र आवाज़ के साथ ।

फुरेहरी सं० स्त्री० सींक में लपेटी हुई रुई (जिससे दवा या इत्र लगाया जाय); वै०-र-;-लगाइब; यक-,दुइ- ।

फुर्र सं० पुं० चिड़ियों के शब्द;-दे,-से; क्रि० वि० -फुर्र ।

फुलगेनवा सं० पुं० गेंद जिसमें फूल लगा हो (गी०) ।

फुलझरी सं० स्त्री० फूलों की झड़ी ।

फुलरा सं० पुं० कृत्रिम फूल जिसमें लटकाने की रस्सी लगी हो ।

फुलवाइब क्रि० स० 'फूलब' का प्रे० रूप ।

फुवा सं० स्त्री० बाप की बहिन; वै०-आ, फू- ।

फुसकब क्रि० अ० फुस-फुस करना; धीरे-धीरे कहना ।

फुसरी सं० स्त्री० फुड़िया;-फोरब, पुचकारते रहना ।

फुस्स सं० पुं० 'फुस' की आवाज़;-दें,-से, ऐसी आवाज़ के साथ ।

फुहरई सं० स्त्री० फूहड़पन ।

फुहरपन सं० पुं० फूहड़पन ।

फुहराब क्रि० अ० ख़राब हो जाना; प्रे०-इब, खराब करना ।

फुहारा सं० पुं० पानी की हल्की बौछार ।

फूँक सं० स्त्री० फूँक; कि०-ब, फूँकना ।

फूँकेब क्रि० स० जलाना;-तापब,-लाइब, नष्ट कर देना; प्रे० फुँकाइब,-कवाइब ।

फूआ दे० फुवा ।

फूट सं० स्त्री० बैर भाव; पकी ककड़ी; वै०-टि ।

फूटन सं० पुं० टूटा या फूटा हुआ भाग ।

फूटब क्रि० अ० फूटना; प्रे० फोरब,-वाइब,-उब ।

फूलब क्रि० अ० फूलना; सूजना; प्रे० फुलाइब, -वाइब;-सोंथब, मरणासन्न होना ।

फूहर वि० पुं० बेढंगा; स्त्री०-रि, सं० फूहड़ स्त्री; भा० फुहरई,-पन ।

फेंकब क्रि० स० फेंकना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब ।

फेंचकुर सं० पुं० मुँह से गिरा हुआ झाग जो रोग या बेहोशी का द्योतक है;-गिरब ।

फेंटब क्रि० स० मिलाना; एक में घोंटना प्रे०-टाइब, -टवाइब ।

फेंटा सं० पुं० बड़ी पगड़ी;-बान्हब ।

फेंटार सं० पुं० काला साँप; मु० दुष्ट व्यक्ति ।

फेकारें क्रि० खोले हुए; मूड़-,सिर खोले हुए; 'फेकारब' कोई स्वतंत्र क्रिया नहीं है, पर पूर्वकालिक का यही रूप प्रयोग में है ।

फेदर सं० पुं० स्त्री० का गुप्तांग (केवल गाली में); उ० हु तोरे-में; वै०-रा ।

फेन सं० पुं० फेन; क्रि०-नाब, फेन देना; वि०-हा ।

फेफन सं० पुं० गला; वै०-ना ।

फेर सं० पुं० परिवर्तन, पेंच;-म परब; ९९ क-, सोच-विचार, चिंता ।

फेरब क्रि० स० लौटाना; प्रे०-राइब;-रवाइब,-उब ।

फेरवटब क्रि० अ० बात को बदल कर दूसरे पहलू पर आ जाना; 'फेर' से; दे० घरवटब ।

फेल वि० पुं० असफल;-करब,-होब; स्त्री०-लि; अं० फ़ेल ।

फैंकट वि० पुं० शरारती, स्त्री०-टि ।

फैर सं० पुं० (बंदूक की गोली का) वार;-करब; अं० फ़ायर ।

फैलसूफ वि० पुं० व्यर्थ का व्यय करनेवाला; भा० -सुफई,- फी; अर० फलसफ़ी ।

फैसन सं० पुं० शौक; वि०-हा,-निहा; अं० फैशन ।

फोकट वि० मुफ़्त,-मँ,-कै ।

फोटका सं० पुं० फफोला;-परब; मु०-बोलब, व्यंग बोलना ।

फोड़ा सं० पुं० फोड़ा;-होब,-फुंसी; स्त्री०-रिआ ।

फोरब क्रि० स० फोड़ना; अपनी ओर कर लेना; प्रे०-राइब,-रवाइब ।

फौड़म क्रि० वि० तुरंत; प्र०-मँ, तुरंत ही; फ़ौरन; दे० फवरम ।

फौत दे० फ़उत ।

# ब

बंक सं० पुं० बैंक; अं० ।

बंगा सं० पुं० बच्चों का एक खेल जिसमें पानी में पत्थर, ईंट आदि फेंक कर सब चिल्लाते हैं "कैसेर बंगा" और फिर सब पानी में डुबकी लगा कर उसे ढूँढ़ते और कहते हैं—"अढ़ाई सेर बंगा" ।

बंगाला सं० पुं० बंगाल; ढाका-, दूर देश;-ली, बंगाल का निवासी ।

बँचाइब क्रि० स० पढ़ाना; प्रे०-चवाइब,-उब; वै० -उब ।

बंजर त्रि० पुं० जिसमें खेती न होती हो, (भूमि) जो उपजाऊ न हो ।

बंजारा सं० पुं० एक जाति जो घूमती रहती है और जिसके लोग शिकार आदि करते हैं; स्त्री० -रिन ।

बंझा दे० बाँझ ।

बंटाढार सं०पुं० नाश; बहुत गड़बड़;-होब,-करब।

बँठऊ सं० पुं० बाँठा (दे०) का घृ० रूप ।

बंडा सं० पुं० अरवी की तरह की एक तरकारी जिसकी पूती (दे०) बहुत बड़ी होती है ।

बंडी सं० स्त्री० बनयान; शायद 'बंदा' (दे०) से= जिसमें बंदा लगा हो ।

बँड़ऊ सं० पुं० बाँड़ा (दे०) का आ० रूप; वै० -वा, स्त्री०बाँड़ी ।

बंता सं० पुं० स्त्रियों के आने-जाने का मुहूर्त (जो 'बनता' हो); बिना-के, बिना ऐसा मुहूर्त होते हुए ।

बंदा सं०पुं० कपड़े के पतले बंद जो किनारे बाँधने के लिए लगे होते हैं; सं० बन्ध ।

बंधन दे० बन्हन ।

बंबं सं० बो० शिवजी की पूजा के समय उच्चारित शब्द;-महादेव,-शंकर; इस शब्द को कहकर पूजा करनेवाले जोर से अपने गाल बजाते हैं ।

बँवरा सं० पुं० कपड़ा पकड़कर हवा करने का तरीका (खलियान में नाज साफ़ करने को); -मारब ।

बँवरि सं० स्त्री० जंगली बेल; क्रि०-आब, बेल की तरह एक में लिपट जाना ।

बंस सं० पुं० पुत्र, कन्या आदि;-वृद्धि, परिवार की अधिकता; निर-, निःसन्तान होने की स्थिति; सं० वंश ।

बँसफोर सं० पुं० एक जाति जिसके लोग बाँस के पङ्खे, टोकरे आदि बनाते हैं; वै०-वा, भा०-ई,-पन; दे० धरिकार ।

बइठक सं० पुं० बैठब; (बैलों की) सुस्ती;-का, बैठने का दालान; वि०-बाज, मित्रों में बैठनेवाला; भा० -जी ।

बइठकी सं० स्त्री० हलवाह के काम न करने का दिन; छुट्टी;-करब, अनुपस्थित रहना ।

बइठब दे० बैठब ।

बइरि सं० स्त्री० बेर;-यस, छोटा (आम); त्रि०-रिहा, छोटा ।

बइरी सं० पुं० बैरी; दे० बयरी ।

बइसाख सं० पुं० बैसाख ।

बउँका सं० पुं० पानी का एक खर ।

बउआ सं० पुं० एक काल्पनिक जीव जिससे छोटे बच्चे डरते हैं; उन्हें डराने के लिए कहा जाता है "बउआ !"

बउआब क्रि० अ० निद्रा में कुछ बड़बड़ाना; दे० कउआब ।

बउखल वि० पुं० कुछ पागल; स्त्री०-लि; क्रि०-लाब, पगलाना ।

बउखा दे० बौखा ।

बउचट वि० पुं० विक्षिप्त, मूर्ख; स्त्री०-टि ।

बउझकब क्रि० अ० पागल हो जाना; वै०-काब; दे० झक्क ।

बउर सं० पुं० फूल (आम का); क्रि०-ब; सं० मुकुल, पा० मकुल, प्रा० मउल, सिं० मोर, पं० मौरना (फूलना), बं० मौला ।

बउरहपन सं० पुं० मूर्खता, सिधाई ।

बउरहा वि० पुं० मूर्ख, सीधा; स्त्री०-ही; दु-, ऐ सीधे (भले) आदमी ! कभी "-ही" भी पुं० में व्यवहृत होता है ।

बउराब क्रि० अ० पागल होना; पागल सी बातें करना; प्रे०-रवाइब ।

बउरैंठ वि० पुं० अर्द्ध विक्षिप्त; स्त्री०-ठि ।

बउसब क्रि अ० गर्व से कहना, डींग मारना ।

बउसाव सं० पुं० शक्ति;-पुरइब, सामर्थ्य होना; वै० बाउस (दे०) ।

बउहरि दे० बहुअरि ।

बकइनि सं० स्त्री० बकायन; वै०-का-।

बकठैंठैं सं० स्त्री० देर तक होनेवाली और व्यर्थ की बातें जो ज़ोर-जोर से हों; बक+ठायँ-ठायँ ।

बकला दे० बोकला ।

बकवादि सं० स्त्री० व्यर्थ का विवाद; वि०-दी ।

बकस सं० पुं० बक्स; वै० बाकस,-सा; अं० बाक्स ।

बकसब क्रि० स० दे देना; रक्षा करना; प्रे०-साइब; फ़ा० बख्श ।

बकसीस सं० स्त्री० इनाम;-देब,-पाइब; फ़ा० बख्शीश ।

बकसुआ सं० पुं० बकसुआ जो वास्कट आदि में लगता है ।

बकाइब क्रि० स० बकाना, बोलने के लिए बाध्य करना; वै०-उब, प्रे०-कवाइब ।
बकाया सं० पुं० शेष; वि०बाक़ी;-रहब,-करब; फ़ा० बकायः ।
बकिश्रा सं० पुं० बचा हुआ अंश; क्रि०-इब, बचा लेना, न देना, बाकी रखना; फ़ा० बकीयः ।
बकिल परन्तु; "बल्कि" का विपर्यय; वै०-लुक ।
बकेना सं० स्त्री० कुछ दिन की ब्याई हुई दूध देनेवाली गाय या भैंस; सी०-नी, सं० वष्कयणी ।
बकैश्रा सं० पुं० बकनेवाला; प्रे०-कवैश्रा ।
बकैयाँ क्रि० वि० दोनों हाथों तथा पैरों के बल (चलना);-बकैयाँ, इस प्रकार ।
बकोट सं० पुं० मुट्ठी भर; यक-, दुइ-; वै०-टा ।
बक्कब क्रि० स० बकना, बोलना; प्रे०-काइब ।
बक्कल सं० पुं० चमड़ा;-फोरब, चमड़ी उधेड़ना, खूब पीटना, सं० वल्कल ।
बक्काल सं० पुं० बनिया; बनिया-, नीच जाति के लोग ।
बक्की वि० पुं० बकनेवाला; व्यर्थ बोलनेवाला; बक-, योंही बोलनेवाला ।
बखर-सुद्ध दे० बखरी ।
बखरा सं० पुं० हिस्सा;-हीसा;-देब,-लेब,-करब; पं० बखरा (अलग) ।
बखरीं क्रि० वि० मालिक के घर पर; वै०-रियाँ ।
बखरी सं० स्त्री० घर;-रि-सुद्ध, वि० जो गृह-निर्माण के हिसाब से लंबाई-चौड़ाई के माप में ठीक हो; पं० बखरी (अलग) ।
बखान सं० पुं० वर्णन, प्रशंसा; क्रि०-ब; वि०-ना, -नी, प्रशंसित ।
बखार सं० पुं० नाज रखने का स्थान; स्त्री०-री (सी०) ।
बखिश्रा सं० पुं० बखिया;-करब; क्रि०-इब, बखिया करना; फ़ा० बखियः ।
बगल सं० स्त्री० दहिना और बायाँ किनारा; वै० -लि; क्रि० वि०-लीं,-लें, बगल में; क्रि०-लिआब, किनारे होकर निकल जाना,-आइब, अलग या किनारे करना ।
बगली सं० स्त्री० दरवाजे के बगल में दीवार काट कर चोरी;-काटब, इस प्रकार चोरी करना ।
बगार सं० पुं० झुंड;-भर, अनेक ।
बगिश्रा सं० स्त्री० छोटा बाग; फुलवारी; वै० -या ।
बगुल-पंख वि० पुं० सफेद; बगुला + पङ्ख (बगले के पङ्ख की तरह सफेद) ।
बगुला सं० पुं० बगला;-भगत, दिखावटी, धोकेबाज; स्त्री०-ली ।
बगेदब क्रि० स० भगाना, निकालना ।
बघुआब क्रि० अ० गुर्राकर बोलना; बाघ की तरह गुर्राना; सं० व्याघ्र; दे० बाघ ।
बघेल सं० पुं० एक प्रकार के क्षत्रिय;-ला, वि० शेर (बाघ) की भाँति बहादुर एवं तंदुरुस्त; सं० व्याघ्र; दे० बाघ ।
बङ्गला सं० पुं० अच्छा हवादार मकान ।
बङुआ सं० पुं० बिना पता ठिकान का व्यक्ति; वि० लावारिस; मु० बेकार के लोग; असंबद्ध व्यक्ति; भा०-अई, क्रि०-आब ।
बच सं० स्त्री० एक औषधि ।
बचइब क्रि० स० बचाना; वै०-चा-,-उब; प्रे० -वाइब ।
बचकानी वि० स्त्री० बच्चे का, छोटा; पुं०-ना ।
बचति सं० स्त्री० बचत;-करब,-होब ।
बचनि सं० स्त्री० बात; कुटुक-, कटु शब्द; सं० वचन ।
बचब क्रि० अ० बचना; प्रे०-इब,-चाइब,-उब ।
बचवाइब क्रि० स० रक्षा करना ।
बचानि सं० स्त्री० बचने का दाँव या तरकीब;-रहब, -होब ।
बचाव सं० पुं० बचने का दाँव; रक्षा;-करब ।
बचैया सं० पुं० बचनेवाला; प्रे० बचवैया ।
बछरू सं० पुं० बछड़ा; स्त्री०-छिया; सं० वत्स ।
बछवा सं० पुं० बछड़ा;स्त्री०-छिया; सं० वत्स ।
बछिश्रा सं० स्त्री० छोटी गाय; मु०-यस, नामर्द; सं० वत्सतरी ।
बछौश्रा सं० पुं० बछड़ा ।
बजकब क्रि० अ० ऐसी स्थिति में पहुँचना कि कीड़े पड़ जायँ; प्रे०-काइब,-उब ।
बजड़ब क्रि० अ० पहुँच जाना, भिड़ जाना; प्रे० -ड़ाइब, मार देना ।
बजड़ा सं० पुं० बाजरा; स्त्री०-ड़ी, छोटा-छोटा बाजरा ।
बजना सं० पुं० बाजा;-बाजब, विज्ञापन होना; बरहौ-बाजब, सभी प्रकार की दुर्गति होना; सं० वाद्य ।
बजनिश्रा सं० पुं० बजानेवाला; बने क-, सुख का मित्र; वै०-या ।
बजनी सं० स्त्री० कुश्ती,-बाजब ।
बजबजाब क्रि० अ० बजबज करना (भिगोई हुई वस्तु का); कीड़ों की अधिकता होना ।
बजमार सं० पुं० डाकू; भा०-मरई, वै०-ट-।
बजर सं० पुं० बज्र; प्र०-ज्जर दे०; गीत-"दै दीना बजर केवाँर"; सं० बज्र ।
बज्जर सं०पुं० बज्र;-कै, कठोर;-परब,-मारब; सं० ।
बज्जह सं० पुं० महत्वपूर्ण विधि;-बूड़ब, बड़ी हानि होना; वै० जब्बह ।
बज्जात वि० पुं० दुष्ट;स्त्री०-ति; भा०-ज्जतई; फ़ा० बदज़ात ।
बझनि सं० स्त्री० व्यस्तता;-रहब,-होब; वै०-झा-; सं० बन्ध ।
बझब क्रि० अ० फँसना; प्रे०-झाइब; वै० बाझब; सं० बन्ध ।

बटइलि सं० स्त्री० बटेर;-यस, दुबला-पतला।
बटखरा सं० पुं० छोटा बाट;-यस, हल्का, छोटा; स्त्री०-री।
बटगायन सं० पुं० रास्ता चलते गानेवाला, सच्चे गवैये को "सभा गायन" कहते हैं; बट (बाट) + गायन।
बटनि सं० स्त्री० बटन;-देब,-लगाइब; अं० बटन।
बटब क्रि० स० बटना, कातना; प्रे०-टाइब।
बटमार सं० पुं० डाकू जो रास्ते में लूटे; वै०-ज-; बट + मार।
बटाऊ सं० पुं० रहगीर, यात्री; 'बाट' से; तुल० "तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।"
बटिआ सं० स्त्री० पतला रास्ता; 'बाट' का लघु० रूप।
बटुआ सं० पुं० बटुवा।
बटुरब क्रि० अ० इकट्ठा होना; (प्रे०-टोरब,-टोरवाइब।
बटुला सं० पुं० बड़ा बर्तन जिसमें दाल या भात पकाया जाय; स्त्री०-ली।
बटोर सं० पुं० समूह; बभन-, ब्राह्मणों का जमाव; क्रि०-ब, प्र०-रा,-रिआ;-होब,-करब।
बटोही सं० पुं० यात्री, राहगीर; 'बाट' से।
बट्टा सं० पुं० बट्टा;-लागब,-देब।
बट्टी सं० स्त्री० धागे की गोली।
बड़ क्रि० वि० बहुत, प्र०-डै,-डिहि; वि० बड़ा,-र, बड़े-बड़े।
बड़कई सं० स्त्री० बड़प्पन;-करब, बड़ाई करना; वि० बड़ी;-कऊ का स्त्री० रूप, वै०-नी।
बड़कऊ वि० पुं० बड़ा (भाई, बेटा आदि);-जने; स्त्री०-कई, वै०-नू।
बड़कवा सं० पुं० आदरणीय व्यक्ति।
बड़का वि०पुं० बड़ा; स्त्री०-की;-बड़का, बड़ा-बड़ा।
बड़गर वि० पुं० थोड़ा बड़ा; स्त्री०-रि।
बड़र वि० पुं० बड़े-बड़े, स्त्री०-रि; "ज्यों बड़री अँखिया निरखि आँखिन को सुख होत।"
बड़वार वि० पुं० बड़े-बड़े; स्त्री०-रि; भा०-वरकी, बड़प्पन, प्रशंसा;-की करब,-बतुआब, प्रशंसा करना।
बड़हन वि० पुं० कुछ बड़ा; स्त्री०-नि।
बड़हर सं०पुं० एक पेड़ और उसका फल; कटहर-, तरह-तरह के फल।
बड़हार सं० पुं० ब्याह का दूसरा दिन जब बारात ठहरी रहती है;-रहब, (बारात का) ठहरना।
बड़ा वि० पुं० बड़ा; स्त्री०-ड़ी; क्रि० वि० बहुत।
बड़ाई सं० स्त्री० प्रशंसा;-करब,-होब।
बड़ायल वि० पुं० कुछ बड़ा; स्त्री०-लि, वै० -लल।
बड़च्छा वि० पुं० जिसके कोई न हो; अकेला।
बढ़इता सं० पुं० जेठ या उसके भाई-बंद; गीतों में प्रयुक्त-"जेठवा बढ़इता।"
बढ़इब क्रि० स० बढ़ाना; (दही या मट्ठे में) पानी मिलाना; (दूकान) बंद करना, (दीया) बुझाना; वै०-ढ़ा-,-उब; प्रे०-वाइब-,-उब।
बढ़इनि सं० स्त्री० बढ़ई की स्त्री; एक चिड़िया जो लकड़ी में से कीड़े निकाल-निकालकर खाती है; इसे "कठफोरवा" (दे०) भी कहते हैं।
बढ़ई सं० पुं० लकड़ी का काम करनेवाला; स्त्री० -इनि; भा०-यपन।
बढ़उब क्रि० स० बढ़ाना; दे० बढ़इब।
बढ़ाइब क्रि० स० बढ़ाना; दे० बढ़इब।
बढ़िआँ वि० स० अच्छा;-बढ़िआँ, उम्दा-उम्दा।
बढ़ी वि० अधिक (भाव, मात्रा, तौल);-देब,-लेब, -होब,-उतरब।
बढ़ैता दे० बढ़इता।
बढ़ोतरी सं० स्त्री० बढ़ने की क्रिया।
बणवा वि० स० बाँड़ा; जिसके पूँछ न हो या पूँछ कटी हो; स्त्री० बाँड़ी; दे० बँड़ऊ।
बत अव्य० कि, सं० यत्।
बतउरी सं० स्त्री० किसी अङ्ग पर निकला फोड़ा ऐसा गोल मांस का लोथड़ा जो दर्द नहीं करता; -निकरब,-होब; सं० वात (?)।
बतकही सं० स्त्री० बातचीत;-करब,-होब; तुल० "करत बतकही अनुज सन"।
बतक्कड़ सं० पुं० लंबी बात; व्यर्थ की बात; बातिक...।
बताइब क्रि० स० बताना; वै०-उब।
बतास सं० स्त्री० हवा; सं० वात।
बतासा सं० पुं० बताशा।
बतिआ सं० स्त्री० फलों का प्रारंभिक रूप;-लागब, -देब; वै०-या; तुल० "इहाँ कुहम्ड़ बतिया कोउ नाहीं"।
बतिआइब क्रि० स० (खेत के चारों ओर) बेरहा (दे०) में बाती (दे०) लगाना; कहा० "बेरहा बतिआयें सूद लतिआयें"।
बतिधर वि० पुं० जो अपनी बात पर पक्का रहे; जो बात को पकड़े; वै०-त-।
बतीसी सं० स्त्री० दाँतों के ऊपर लगा हुआ सोना या चाँदी; ३२ दाँतों का समूह।
बतुआब क्रि० अ० बातें करना; वै०-वाब।
बतूनी वि० बातूनी, बात करनेवाला।
बतेरा वि० पुं० बातें बनानेवाला; स्त्री०-री,-रि।
बतौरी दे० बतउरी; वि०-रिहा, जिसके बतौरी हो।
बत्तक सं० स्त्री० बतख़; वै०-ख।
बत्तिस वि० बत्तीस;-वाँ, ३२वाँ,-ईं, ३२ भाग; प्र० -सौ,-सै।
बत्ती सं० स्त्री० दीया; बिजुली-, टार्च; दिया-; घाव के भीतर डाला हुआ कपड़ा; दे० बाती।
बथब क्रि० अ० दर्द करना; प्र०-त्थब; सं० व्यथ्।
बथुआ सं० पुं० बथुआ का साग, उसका पौधा; वै०-वा, स्त्री०-ई।

बदकब क्रि० अ० पकने में शब्द करना; खुरना; प्रे० -काइब।
बदनाम वि० पुं० जिसकी बदनामी हो गई हो; स्त्री०-मि; भा०-मी;-करब,-होब,-रहब।
बदब क्रि० स० निश्चित करना; प्रे०-दाइब; भा० -नि,-दानि, निश्चित स्थान एवं समय (वादे का)।
बदबू सं० स्त्री० दुर्गंध;-आइब; वि०-दार;-करब।
बदमास वि० पुं० बदमाश; स्त्री०-सि; भा०-सी; -करब।
बदरंग वि० पुं० जिसका रङ्ग ख़राब या उतरा हो; स्त्री०-गि; फ़ा०।
बदरउख वि० पुं० कुछ-कुछ बादलवाला (मौसम); -होब,-रहब; क्रि० वि०-खें, ऐसे मौसम में, जब बादल हों; बादर+औख।
बदरी सं० स्त्री० बादलवाला मौसम;-होब;-करब, -रहब;-बूनी, बादल और बूँदा-बाँदी का मौसम।
बदलब क्रि० स० बदलना; अ० बदल जाना; प्रे० -लाइब,-लवाइब,-उब।
बदला सं० पुं० बदला;-लेब,-देब।
बदलावन सं० पुं० अदला-बदला;-करब,-होब, -देब; फ़ा०।
बदली सं० स्त्री० (व्यक्ति की) एक स्थान से दूसरे को बदली;-करब,-होब; फ़ा०।
बदहवास वि० पुं० जिसका दिमाग खराब हो; स्त्री०-सि; भा०-सी;-रहब,-होब; फ़ा० बद+अर० +हवास।
बदहोस वि० पुं० बेहोश; स्त्री०-सि; भा०-सी; -करब,-रहब; फ़ा०-श।
बदा वि० पुं० भाग्य में निश्चित;-होब,-रहब।
बदिबदि क्रि० वि० अवश्य, निश्चयपूर्वक।
बदी सं० स्त्री० बुराई;-करब; नेकी-,भलाई-बुराई; फ़ा०।
बदौलति अव्य० कारण; बदौलत; अर०-त; वै० -दउ-।
बद्द वि० पुं० शरारती; स्त्री०-द्दि; भा०-ई, फ़ा० बद, अं० बैड।
बद्दरीनाथ सं० पुं० प्रसिद्ध धाम बदरीनाथ; वै० -द्दिरी-,-बिसाल।
बद्दवँ वि० बुरा; दुश्मन;-होब,-करब; फ़ा० बद।
बद्धी वि० पुं० आख्ता; जिस (बकरे) का अंडकोष निकाल दिया गया हो; दे० बधिया; सं०-लागब, कसर रहना।
बध सं० पुं० हत्या;-करब,-होब; क्रि०-ब, मारना; सं०।
बधउआ सं० पुं० जन्मोत्सव पर भेजा उपहार, -देब,-लाइब।
बधना सं० पुं० मुसलमानों का लोटा; स्त्री०-नी; बोरिया-, सारा सामान।
बधब क्रि० स० मारना; प्रे०-धाइब,-धवाइब,-उब, सं०।
बधिआ वि० पुं० (पशु) जिसका अंडकोष निकाल दिया गया हो;-करब,-होब; वै०-या,-द्धी।
बधिक सं० पुं० मारनेवाला, बध करनेवाला।
बन सं० पुं० जङ्गल; वि०-या, जङ्गली।
बनइब क्रि० स० बनाना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब -नाइब; बार-, खाब-।
बनइला वि० पुं० जङ्गली।
बनकर सं० पुं० जङ्गलवाला भाग (गाँव का); जलकर-, तालाब, नदी, जङ्गल आदि।
बनकसि सं० स्त्री० एक जङ्गली घास जिसकी रस्सी बनती है; बन+कासि (दे०), काँस।
बनचर सं० पुं० जङ्गल के रहनेवाले; असभ्य लोग।
बनजर सं० पुं० भूमि जिसमें कुछ न होता हो; वै० बं-।
बनजारा सं० पुं० एक जङ्गली जाति; स्त्री० -जारिनि; वै० बं-; बंजर से (जो बंजर पर रहता हो)? भा०-जरई,-पन।
बनब क्रि० अ० बनना; प्रे०-नइब,-नाइब,-नवाइब, -उब।
बनवाई सं०स्त्री० बनाने की मजदूरी, क्रिया आदि।
बनावनि सं० स्त्री० बनावट; वै०-वरी,-उरी।
बनिअई सं० स्त्री० बनिये का काम, कंजूसी;-करब; वै०-य-; सं० वणिक्।
बनिआ सं० पुं० बनिया; स्त्री०-नि,-आइनि, सं० वणिक्।
बनिआइन सं० स्त्री० बनियान।
बनिजि सं० स्त्री० तिजारत;-करब,-होब;-ब्योपार; वै०-नी-; सं० वाणिज्य।
बनेठी सं० स्त्री० लाठी की भाँति चलाने और फिराने के लिए एक लकड़ी जिसमें तीन गिट्टक लगे होते हैं;-भाँजब।
बनेवा वि० निःसहाय;-होब,-करब; फ़ा० बेनवः (मात्रा के विपर्यय का उदाहरण)।
बनौनी सं० स्त्री० बनाने की मजदूरी; वै०-नउ-।
बन्न वि० पुं० बंद;-करब,-रहब; स्त्री०-न्नि; प्र०-न्ने, -न्नौ।
बन्नय क्रि० वि० बिलकुल, एकदम; वै०-न्नै, बनाय।
बन्नर सं० पुं० बंदर; दे० बानर।
बन्हन सं० पुं० बंधन;-तर, छत के नीचे;-ना वान्हब, प्रबंध करना।
बन्हवाइब क्रि० सं० बँधवाना।
बपंस सं० पुं० बाप से प्राप्त (भूमि पर) अधिकार; बाप+अंश।
बपई संबो० हे पिता! बाप को संबोधन करने का शब्द; दूसरे शब्द बापी, बापू, बाबू आदि हैं।
बपउती सं० स्त्री० बाप की जागीर, बाप का अधिकार; विशेषाधिकार वै०-पौती।
बपऊ सं० पुं० दरिद्र बाप, बेचारा बाप।
बपुरा वि० पुं० बेचारा; स्त्री०-री।

बफइब क्रि० स० बाफ से थोड़ा पकाकर नरम करना; सं० वाष्प; प्रे०-फा ,-फवाइब; वै०-उब ।

बफाब क्रि० अ० भाप से आधा पक कर नरम होना ।

बफारा सं० पुं० भाप की गरमी;-देब,-लेब, भाप का सेंक देना या लेना; सं० वाष्प ।

बबऊ सं० पुं० बाबाजी (घृ०); इससे अधिक घृ० रूप "बबवा" है ।

बबुर सं० पुं० बबूल;-री बन, गीतों में (प्रायः आल्हा में) वर्णित कोई प्राचीन बन;-री, बबूल की छीमी ।

बब्बरी वि० पुं० तगड़ा;-जवान; (शेर) 'बबर' से ।

बभ्भन सं० पुं० गरीब ब्राह्मण ।

बभनइआ सं० स्त्री० ब्राह्मणों की बस्ती; वै० -या ।

बभनई सं० स्त्री० ब्राह्मणत्व ।

बभनऊ वि० पुं० ब्राह्मणों जैसा; वै०-उआ ।

बमक सं० स्त्री० बमकने की क्रिया; जोश ।

बमकब क्रि० अ० बमकना, जोश में कुछ कह जाना; प्रे०-काइब,-कवाइब,-उब; भा०-वाई ।

बमनबटोर सं० पुं० ब्राह्मणों का जमाव; देर तक होनेवाली बातचीत;-करब,-होब ।

बम्म सं० पुं० बम; ताँगे या इक्के का बम ।

बम्मई सं० स्त्री० बम्बई; वि०-इहा, बम्बई का या वहाँ रहनेवाला ।

बम्मड़ वि० पुं० उजड्ड, बेढंगा; भा०-ई ।

बम्मा सं० पुं० पानी का नल; वै०-म्बा ।

बय सं० पुं० बिक्री;-करब ।

बयकल वि० पुं० फूहड़, बेढङ्गा; स्त्री०-लि; भा० -ई ।

बयकुंठ सं० पुं० वैकुंठ;-ठें, स्वर्ग को, स्वर्ग में; सं० वैकुंठ; क्रि०-ब, शालग्रामजी को बन्द करके रख देना ।

बयजा सं० पुं० अंडा, अर०-ज़ ।

बयना सं० पुं० उपहार जो ब्याह अथवा पुत्रजन्म पर बाँटा जाता है; सं० वायन ।

बयपार सं० पुं० व्यापार;-करब;-री, व्यापारी; सं० व्यापार ।

बयम्मर सं० पुं० बखेड़ा;-होब,-गाइब,-खड़ा करब ।

बयर सं० पुं० दुश्मनी; वि०-री; सं० वैर ।

बयल सं० पुं० बैल; मु० मूर्ख व्यक्ति ।

बयलर वि० पुं० बेढङ्गा, फूहड़; स्त्री०-रि; प्र०-ड़, वै० बै-।

बयस सं० पुं० राजपूतों की एक शाखा जो पहले बैसवाड़े के अधिपति थे ।

बयसवाड़ा सं० पुं० बैसवाड़ा प्रान्त जिसमें बैसवाड़ी बोली जाती है। यह उन्नाव एवं रायबरेली के आस-पास है ।

बर सं० पुं० वर;-कन्या;-हेरब,-देखब;-देखा, जो वर देखने आवे; सं० वर ।

बरई सं० पुं० तमोली; स्त्री०-इनि; फ़ा० वर्ग (पत्ता) ।

बरकब क्रि० अ० (खेत का) कुछ सूख जाना; जोतने या गोड़ने लायक हो जाना; प्रे०-काइब,-उब ।

बरखा सं० स्त्री० वर्षा;-होब; क्रि०-सब ।

बरखी सं० स्त्री० वार्षिक श्राद्ध;-करब,-होब ।

बरगाह सं० पुं० वैश्यों की एक जाति और उसके लोग; वै०-रि-।

बरछा सं० पुं० बर्छा; स्त्री०-छी;-मारब ।

बरजब क्रि० स० मना करना; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; दे० हरकब; वै०-रि-।

बरजोरी सं० स्त्री० जबरदस्ती; करब,-होब; वै० बारा-; गीतों में प्रयुक्त;-रीं, क्रि० वि० जबरदस्ती से; फ़ा० बज़ोर ।

बरत सं० पुं० व्रत;-करब,-रहब; वै० बर्त; सं०; वि०-ती;-तिहा,-तहा ।

बरदब क्रि० अ० (गाय का) गाभिन होना; सं० वर्द; वै०-दाब, प्रे०-दाइब,-दवाइब,-उब ।

बरदही सं० स्त्री० बैलों का व्यापार या बाजार; -करब,-लागब; सं० वर्द ।

बरदा सं० पुं० बैल; क्रि०-ब; दे० बरदब ।

बरदी सं० स्त्री० बैलों का समूह ।

बरन सं० पुं० प्रकार; बरन-कै, कई प्रकार के; सं० वर्ण ।

बरनि सं० स्त्री० बरने (दे० बरब) की पद्धति ।

बरपाँ वि० उत्पन्न;-होब,-करब; फ़ा० बरपा (पैर पर) ।

बरफ सं० स्त्री० बर्फ़;-परब ।

बरफी सं० स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

बरब क्रि० अ० जलना, प्रे० बारब; स० बटना; (रस्सी), प्रे०-राइब,-रवाइब,-उब; मु० अत्याचार करना ।

बरबराब क्रि० अ० बर-बर बर-बर करते रहना; अनु० ।

बरबरिहा वि० पुं० बराबरी का; स्त्री०-ही ।

बरबस क्रि० वि० जबरदस्ती से ।

बरबाद वि० पुं० नष्ट; स्त्री०-दि, भा०-दी;-करब, -होब; फ़ा० ।

बरम सं० पुं० भूत;-लागब,-हाँकब; वि०-हा,-ही; वै०-म्ह; सं० ब्रह्म ।

बरमा सं० पुं० छेद करने का औज़ार; क्रि०-मब, -इब, बरमा लगाना ।

बरमौज अव्य० बराबर, मुताबिक़, अनुसार;-जें ।

बरम्हा सं० पुं० ब्रह्मा, स्रष्टा; बर्मा (देश); सं० ब्रह्मा ।

बरम्ही सं० स्त्री० प्रसिद्ध बूटी जिसकी पत्ती बुद्धि-वर्धक होती है । सं० ब्राह्मी ।

बरर-बरर क्रि० वि० बर-बर बर-बर ।

बरसब क्रि० अ० बरसना; मु० ख़ूब देना; प्रे० -साइब,-उब; वै०-रि- ।

बरसवानी वि० वर्षा का (नदी या कुएँ का नहीं) ।

बरहना सं० पुं० एक देवता जिसकी नीच जाति के लोग पूजा करते हैं और जिसे "-बाबा" कहते हैं; फ़ा० बरहन: (नंगा)।

बरहा सं० पुं० पानी ले जाने की पतली नाली; -बनइब,-खोदब।

बरही सं० स्त्री० जन्म के १२ दिन के बाद का उत्सव;-होब,-मनाइब।

बरहें क्रि० वि० बारहवें स्थान पर (कुंडली में)।

बरहै वि० केवल बारह।

बरहौ वि० पूरे-पूरे बारह; बारह में से प्रत्येक; -व्यंजन,-बाजन (बाजा)।

बरा सं० पुं० बड़ा (खाने का);-भात; स्त्री०-री, -रिआ (दे०); सं० बटक।

बराइब क्रि० स० बराना (रस्सी); प्रे०-रवाइब, -उब; वै-उब, भा०-ई, बटने का तरीक़ा।

बराति सं० स्त्री० बारात;-करब, बारात में जाना; -तें जाब; मु० पूरी जमात, बहुत से; सं० वर-यात्रा।

बराती सं० पुं० बारात में जानेवाले; वै०-रतिहा।

बराभन दे० बाभन।

बरारी सं० स्त्री० रस्सी जिससे हेंगा (दे०) बाँधा जाता है।

बराव सं० पुं० भेद, विवेक;-करब; क्रि०-इब, बे-(दे०)।

बरिआ सं० स्त्री० पकौड़ी; गुर-,मीठी पकौड़ी।

बरिआब क्रि० अ० तगड़ा होकर गर्वीली बातें करना; शक्ति दिखाना; प्रे०-वाइब; सं० बली।

बरिआर वि० पुं० तगड़ा; स्त्री०-रि; वै० यार; सं० बल।

बरिआरा सं० पुं० एक जंगली पौदा जिसका पंचांग दवा में लगता है। वै०-या-।

बरिस सं० पुं० वर्ष; यक-,दुइ-,-भर।

बरी सं० स्त्री० बड़ी (खाने की)।

बरु अव्य० बल्कि, अच्छा हो, वै०-क, सं० वरं म० वर, प्र०-रू; तुल० "बरु भल बास नरक कर ताता"।

बरुआ सं० पुं० ब्राह्मण का पुत्र जिसका जनेऊ न हुआ हो; सं० वटु।

बरुआर सं० पुं० डाकू; वि० डाका डालनेवाला; भा०-अरई,-अरपन,-आरी।

बरुक दे० बरु।

बरुदि सं० स्त्री० बारूद;-होब, गर्म पड़ जाना, क्रोध करना; फा० बारूद।

बरेठा सं० पुं० धोबी; यह शब्द प्रायः धोबी को संबोधित करने को प्रयुक्त होता है; स्त्री०-ठिन।

बरेत सं० पुं० मोटा रस्सा जिससे पानी खींचा जाता है।

बरैआ सं० पुं० बरने या बटनेवाला; दे० बरब।

बरोठा सं० पुं० कोठे के कोठा-।

बरोरीं क्रि० वि० ज़बरदस्ती; हठ करके।

बरौनी सं० स्त्री० आँखों के ऊपर का बाल; वै० -रउनी, सं० भ्रू।

बल सं० पुं० शक्ति; छल-, मस्तिष्क एवं शरीर की शक्ति;-लगाइब,-लागब; वि०-ली,-गर,-थक।

बलगर वि० पुं० बलवान, स्त्री०-रि, भा०-ई।

बलथक वि० पुं० जिसका बल समाप्त हो गया हो; स्त्री०-कि, भा०-ई;-होब,-करब।

बलदेव सं० पुं० कृष्णजी के भाई;-जी; सं०।

बलराम सं० पुं० बलराम जी;-जी; सं०।

बलहन सं० पुं० छत के नीचे की लकड़ी का क्रम; -होब, ऐसा क्रम ठीक होना;-करब; 'बल्ली' + हन (बहुवचन का चिह्न); वै०-म फ़ा० बरहम।

बलाइब क्रि० स० बुलाना; प्रे०-वाइब,-उब; वै० -उब, भा०-लउआ।

बलिहन सं० पुं० बालवाले नाज (गेहूँ, जौ आदि); बालि (दे०) + हन।

बली वि० पुं० बलवान।

बलुआ वि० पुं० बालूवाला; स्त्री०-ई; वि०-भासर, रद्दी ज़मीन; क्रि०-ब, वै०-हा,-ही।

बलुक अव्य० बल्कि; वै०-रुक; दे० बरु; सं० वरं; अर० बल + फ़ा० कि।

बलुहट सं० पुं० बालूवाली भूमि।

बलैआ सं० स्त्री० बला;-सें, बला से;-लेब, बलैया लेना; वै०-या; फ़ा० बला (आफ़त)।

बलौआ सं० पुं० बुलावा, निमंत्रण;-देब,-आइब; वै० बो-।

बवासीर सं० पुं० प्रसिद्ध रोग; वि०-सिरहा, अर०।

बवाल सं० पुं० झंझट;-करब,-होब; वि०-ली, बौवाली; वै० बौ-,-आ-।

बवैआँ सं० पुं० बाईं ओर चलनेवाला बैल; वै० -वइयाँ; सं० वाम।

बस सं० पुं० बल;-चलब,-रहब; अव्य० बस; -करब,-होब।

बसगिति सं० स्त्री० बस्ती, निवास।

बसब क्रि० अ० बसना; प्रे०-साइब,-सवाइब,-उब; सं० वस्।

बसर सं० पुं० निर्वाह;-होब,-करब; गुजर-, किसी प्रकार निर्वाह।

बसहब दे० बेसहब।

बसही सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी: वै० बे-; सं० बस् से (घर बसानेवाली) या 'बेसहब' से (क्रीता दासी)।

बसाइब क्रि० स० बसाना; प्रे०-सवाइब; वै०-उब; सं० वस्।

बसाब क्रि० अ० बदबू करना।

बसिआ वि० पुं० बासी: सं० रात का रखा हुआ भोजन;-खाब;-धरब,-रहब; सं० वस (रहा हुआ) दे० बासी।

बसिआब क्रि० अ० बासी हो जाना; प्रे०-इब; वै० -याब।

बसिआरि सं० स्त्री० गन्ने की पेराई एवं गुड़ की तैयारी;-नधब (दे०)-नाधब,-चलब ।
बसीकरन सं० पुं० एक मंत्र जिसके जपने से दूसरा बश में हो जाता है; सं० वशीकरण ।
बसुला सं० पुं० बसूला; स्त्री०-ली; वै० बँ- ।
बसेंट सं० पुं० छोटा बाँस; सं० वंश ।
बसेड़ सं० पुं० बसेरा;-लेब, बसेरा करना; सं० बस् ।
बसैया सं० पुं० रहनेवाला; बसनेवाला; प्रे० -सवैआ,-या; सं० वस् ।
बस्ता दे० बहता ।
बस्तु सं० स्त्री० चीज; चीज- ।
बहँकटी सं० स्त्री० आधी बाँह की बनयान;-पहिरब ।
बहँगा सं० पुं० बाँस की लकड़ी जिसके दोनों ओर लटकाकर बोझ ले जाते हैं; स्त्री०-गी; क्रि० -गिआइब, बहँगे में बाँधना या ले जाना ।
बहुँटिआइब क्रि० अ० बहाना कर देना, टाल देना; वै०-उब ।
बहुँडुआ दे० बहेंडुआ ।
बहँस सं० पुं० विवाद;-करब,-होब;-सी,-बहँसा, बहुत विवाद; क्रि०-ब, बहुत गर्व भरी बातें करना ।
बहकब क्रि० अ० बहकना; प्रे०-काइब,-उब ।
बहकाइब क्रि० स० बहकाना, बहलाना, काम में लगा रखना, बहाना करना; वै०-उब, प्रे०-कवाइब ।
बहकौना सं० पुं० बहाना;-करब,-पाइब; वै०-आ, -कावा ।
बहतर सं० पुं० वस्त्र; वै० बस्तर; सं० वस्त्र ।
बहता सं० पुं० बस्ता; फ़ा० बस्तः (बँधा हुआ) ।
बहतू वि० पुं० बहता हुआ; वै०-ता; कहा० "रमता जोगी बहता पानी" ।
बहपट वि० पुं० आवारा;-होब; स्त्री०-टि ।
बहब क्रि० अ० बहना; आवारा हो जाना; प्रे० -हाइब,-उब,-वाइब,-उब; सं० वह् ।
बहरवाँसू वि० पुं० जो बाहर रहे; बाहर+बास ।
बहरिआइब क्रि० स० बाहर कर देना; वै०-उब, -हि- ।
बहरिआब क्रि० अ० बाहर जाना ।
बहरि-बहरि ! संबो० साँड़ को खदेड़ने के लिए प्रयुक्त शब्द; अर्थ है "बाहर ! बाहर (जाओ)" ।
बहरी दे० बाहरि ।
बहरुपिया सं० पुं० बहरुपिया; वै०-आ ।
बहरें क्रि० वि० बाहर;-करब,-जाब;-बहरें, बाहर-बाहर; प्र०-रैं ।
बहलि सं० स्त्री० ढकी हुई दरवाजेदार बैलगाड़ी; वै०-ली ।
बहाइब क्रि० स० फेंकना; प्रे०-हवाइब ।
बहादुर वि० पुं० वीर, स्त्री०-रि; भा०-री,-हदुरई ।
बहाना सं० पुं० बहाना;-करब,-बनइब ।
बहार सं० स्त्री मज़ा; वि०-दार;-करब,-देब,-रहब; फ़ा० ।
बहारब क्रि० स० झाड़ू लगाना, साफ़ करना; प्रे० -हरवाइब; झारब-, सफ़ाई करना, झारू-बहारू करब, सफ़ाई करना ।
बहाल वि० पुं० जैसे पहले रहा हो;-करब,-होब; फ़ा० ब+हाल (पहली स्थिति में); भा०-ली ।
बहाव सं० पुं० बहने का रुख़ ।
बहिआ सं० स्त्री० बाढ़;-आइब; सं० वह् (बहना); वै०-या,-हि- ।
बहिनि सं० स्त्री० बहिन;-नौत; सं० भगिनी ।
बहिपार वि० पुं० जो बाहर घूमता रहे; आवारा; स्त्री०-रि; भा०-पराई; वै०-ही-; सं० वहिः ।
बहिर वि० पुं० बहरा, स्त्री०-रि;-सनाका, जो बहुत बहरा हो, आधा पागल; भा०-ई,-पन, क्रि० -राब, बहरा होना ।
बहिरिआब क्रि० अ० बाहर निकल पड़ना; प्रे० -आइब ।
बहिरी सं० स्त्री० बहिर स्त्री ।
बहिरू सं० पुं० बहिर पुरुष ( आ० ) ।
बहिला वि० स्त्री० पशु जो गाभिन न हो; क्रि० -ब, बहिला हो जाना; सं० बंध्या ।
बही सं० स्त्री० हिसाब की बही;-खाता ।
बहुअरि सं० स्त्री० बहू; गीतों में प्रयुक्त (बहुअरि बैठि डोलावै बेना); सं० वधू+अरि, वरि (आदर एवं स्नेह प्रदर्शक प्रत्यय); वै०-रिया,-वरि ।
बहुत क्रि० वि० अधिक, वि० संख्या में अधिक; स्त्री०-ति (तुहू-हौ, तू भी अजीब है); प्र०-तै ।
बहुमत सं० पुं० भिन्न मत, मतभेद;-होब; प्र०-ता; वै०-ति; सं० ।
बहुरब क्रि० अ० लौटना (व्यं०); प्रे०-राइब,-होरब, -रवाइब,-उब ।
बहुरा चौथि सं०स्त्री० भादों कृष्णपक्ष की चौथ जब सधवाएँ व्रत करती हैं; इस संबंध में गाय एवं शेर की एक कथा है जिसमें गाय ने "लौटकर" शेर के पास आने का वचन दिया था। "बहुरब"(दे०) से ।
बहुरिआ सं० स्त्री० नई बहू, दुलहिन; वै०-या ।
बहुरी सं० स्त्री० गूढ़ी (दे०) जौ की लाई;-बनइब, -चबाब ।
बहू सं० स्त्री० पत्नी; अमुक-, अमुक की स्त्री ।
बहेंड़ सं० पुं० स्थान जहाँ से खेत का पानी बहता हो; सं० वह ।
बहेंतू वि० जिसका पता-ठिकाना न हो (व्यक्ति अथवा पशु); सं० वह् ।
बहेरवाँसू दे० बहर-।
बहेरा सं० पुं० एक जंगली पेड़ और उसका फल जो दवा में काम आता है; हर्रा-, दो फल जो आँवले के साथ मिलकर 'त्रिफला' (दे० तिरफला) कहलाते हैं । स्त्री०-री, छोटा बहेरा ।

बहेल्ला वि० पुं० जो फेंकने योग्य हो; बेकार, काहिल (व्यक्ति); स्त्री०-ल्ली; 'बहाइब' से ।

बहोरब क्रि० स० लौटाना, (गोरू) देखते रहना; प्रे०-रवाइब,-उब ।

बाँक सं० पुं० टँड़िया (दे०) के ऊपर पहना जाने-वाला स्त्रियों का एक आभूषण;-दिजायठ ।

बाँका सं० पुं० एक प्रकार की कुल्हाड़ी; स्त्री०-की; वि० बढ़िया, स्त्री०-की ।

बाँचब क्रि० स० पढ़ना; प्रे० बँचवाइब,-चाइब, -उब; सं० वच् ।

बाँझ वि० पुं० जो संतति उत्पन्न न कर सके; (पेड़) जिसमें फल न लगें; स्त्री०-झि; सं० बन्ध्या ।

बाँठ सं० पुं० बटवारा;-बखरा, हिस्सा; क्रि०-ब, बाँटना ।

बाँटब क्रि० स० बाँटना, प्रे० बँटाइब,-टवाइब, -उब ।

बाँठा वि० पुं० बहुत छोटे कद का; स्त्री०-ठी; घृ० बठुल्ला,-ल्ली, बँठऊ सं० वामन, बटुक ।

बाँड़ा वि० पुं० जिसकी दुम कटी हो; स्त्री०-ड़ी; घृ० बँड़ुल्ला,-ल्ली ।

बाँह सं० स्त्री० हाथ; वै०-हिं; एक बार की जुताई; यक-, दुइ-; सं० वाह ।

बाइब क्रि० स० खोलकर (मुँह) चौड़ा करना; प्रे० बवाइब,-उब ।

बाइस वि० सं० बाईस; बइसवाँ, २२वाँ;-सई, २२वीं ।

बाई सं० स्त्री० वायु का प्रकोप;-पचब, गर्व मिटना, -पचाइब, गर्व मिटाना ।

बाउर वि० पुं० मूर्ख, स्त्री०-रि; हि० बावला; क्रि० बउराब (दे०) ।

बाउस सं० पुं० पुरुषार्थ, शक्ति; वै० बउसाब; -पुरइब ।

बाकस सं० पुं० बकस; अं० बक्स ।

बागड़बिल्ला सं० पुं० बेढंगा व्यक्ति; स्त्री०-ल्ली ।

बागि सं० स्त्री० बाग; ल० बगिआ; फा० बाग ।

बाघ सं० पुं० शेर; बहादुर व्यक्ति; सं० व्याघ्र; क्रि० बघुआब, गुर्राना ।

बाघी सं० स्त्री० पशुओं का एक घातक रोग जो कभी-कभी मनुष्यों को भी हो जाता है ।

बाकुड़ वि० बेढंगा ।

बाछ सं० पुं० चंदा; क्रि०-ब;-लगाइब, चंदा करना ।

बाछा सं० पुं० बछड़ा; स्त्री०-छी, बछिआ; वै० बछवा; सं० वत्स ।

बाज सं० पुं० बाज (पक्षी) वि० कोई-कोई, एकाध, स्त्री०-जि ।

बाजड़ा सं० पुं० बाजरा; स्त्री०-ड़ी, वै० बज-।

बाजन सं० पुं० बाजा; बरही-बाजब, सभी प्रकार की दुर्दशा होना; वै० बजना ।

बाजब क्रि० अ० लड़ना व ब॰॰ना; प्रे० बजाइब, -जवाइब,-उब; दे० बजनी ।

बाजा सं० पुं० बाजा;-बजाइब; मु० नाचि-होब, तमाशा (झगड़ा) होना ।

बाजी सं० स्त्री० बाजी;-लगाइब,-जीतब,-हारब; फा० ।

बाजीगढ़ सं० पुं० बाजीगर; भा०-ई; फा० ।

बाजू सं० पुं० बाँह पर पहना जानेवाला स्त्रियों का एक आभूषण;-बंद ।

बाझब क्रि० अ० फँस जाना; वै० ब-, प्रे० बझाइब -झवाइब,-उब ।

बाढ़ सं० पुं० वृद्धि;-बियास, वृद्धि एवं विकास; क्रि०-ब; सं० वृध् ।

बाढ़ब क्रि० अ० बढ़ना; प्रे० बढ़ाइब,-उब; सं० वृध् ।

बाढ़ि सं० स्त्री० बढ़ा भाव; जल की अधिकता; घाटि-, कम या अधिक भाव;-आइब, बाढ़ आना; सं० वृद्धि ।

बाधवाई क्रि० वि० व्यर्थ,बेकार ।

बान सं० पुं० बाण;-लागब,-मारब; सं० बाण ।

बानक सं० पुं० तरकीब, उपाय;-लागब,-लगाइब; सं० बाण ।

बानगी सं० स्त्री० नमूना;-देब,-लेब ।

बानर सं० पुं० बंदर; स्त्री० बनरिन,-री; सं० ।

बाना सं० पुं० एक पौदा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है । इसकी गीली लकड़ी भी आग में जलती है ।

बानी सं० स्त्री० बचन, बोल; सं० वाणी ।

बान्ह सं० पुं० बाँध, पुल;-बान्हब, बाँध बाँधना; सं० बन्ध ।

बान्हब क्रि० स० बाँधना; प्रे० बन्हाइब,-न्हवाइब, -उब; सं० बंध ।

बाप सं० पुं० पिता; वै०-पी,-पू, बपई (प्रेम सूचक एवं संबो० में); मु०-कै बाप, बहुत बड़ा ।

बाफ सं० स्त्री० भाप; क्रि०-ब, बफाब, भाप में गरम होना या पकना; वै०-फि; सं० वाष्प ।

बाफब क्रि० अ० बाफ देना; प्रे० बफाइब,-फवाइब, -उब; सं० वाष्प ।

बाबति सं० स्त्री० विषय, संबंध; अ० बाब (द्वार) ।

बाबरी सं० स्त्री० सिर के आगे रखे हुए बड़े बड़े बाल; दे० जुलफी;-राखब,-रखाइब; अर० बब्र (बालदार शेर) बँ० बाबरी, चूल ।

बाबा सं० पुं० पितामह, (स्त्री का) ससुर; स्त्री० दाई; कुछ शब्दों के साथ आदर के लिए जोड़ दिया जाता है । उदा० साधू-,-गुरु; फा० ।

बाबू सं० पुं० राजा का छोटा भाई; अपने से बड़े के लिए प्रयुक्त संबोधनार्थ शब्द; नामों के पहले प्रयुक्त आदर प्रदर्शक शब्द; फा० बा (सहित) + बू, सुगंध, स्त्री० बबुई, बबुनी; लघु० बबुआ ।

बाभन सं० पुं० ब्राह्मण; स्त्री०-नि; वै० बरा-,बा-; -बिसुन, दान का पात्र-,राऊ;बरा-,हिंदुत्व के दो मुख्य अंग; सं० ब्राह्मण ।

बाम सं० पुं० एक प्रकार की मछली ।

बामकी सं० स्त्री० भविष्य जानने या अद्भुत बातें बताने की विद्या;-पढ़ब,-जानब।
बायें क्रि० वि० बाईं ओर; दहिने-, दोनों ओर; तुल० "जे बिन काज दाहिने बायें।"
बार सं० पुं० बाल;-बनइब, हजामत बनाना;-बनवाइब;-उतारब, छोटे बच्चों का मुंडन कराना; मु०-बार बचना, बाल-बाल बचना।
बारब क्रि० स० बालना, जलाना; दिया-, चूल्हा-; प्रे० बराइब,-रवाइब,-उब।
बारह सं० वि० दस और दो;-मास, सालभर;-मासी, सालभर होने वाला (फल, फूल)।
बारहाँ क्रि० वि० कई बार; फा०-हा।
बारा सं० पुं० बाड़ा; सुअर-,सुअरों के रखने का घर; बँ० बाड़ी।
बारिस सं० स्त्री० वर्षा;-होब: फ़ा०।
बारी सं० पुं० दूसरों की सेवा करनेवाली एक जाति; नाऊ-, नौकर-चाकर।
बारी सं० स्त्री० पारी;-बारी, एक एक करके; किनारा (बर्तन का); दे० पारी; कान में पहनने का छल्ला।
बारीक वि० पुं० उम्दा (-चाउर); स्त्री०-कि, पतली (-धोती); फा०, भा०-की, बरिकई।
बालब क्रि० सं० छोटे छोटे टुकड़े करना; प्रे० बलाइब,-उब; मु० सिर काट लेना, मार डालना।
बालभोग सं० पुं० भगवान का भोजन।
बालम सं० पुं० पति, प्रियतम; सं० बल्लभ; गीतों में प्रयुक्त; वै० बलमा,-मू,-मा,-मवा।
बाला सं०पुं० बहुत सा बालू (रास्ते में);-परब, कुएँ में बालू निकलना;-होब, सड़क पर बालू होना।
बालि सं० स्त्री० (नाज की) बाल।
बालिक वि० पुं० बालिग, जवान;-होब; ना-, छोटा; अर०।
बालू सं० पुं० बालू, रेत; सं० बालुका।
बालूचर सं० पुं० चिलम पर पीने का एक नशा।
बालूसाही सं० स्त्री० प्रसिद्ध मिठाई।
बालेमियाँ सं० पुं० मुसलमानों के एक पीर; कहा० एक हाथ कै बालेमियाँ नौ हाथ कै पूँछि।
बावँ सं० पुं० बायाँ;-देब, बचा जाना, तितीचा करना;-दाहिन, उलटा सीधा, ऊँचा-नीचा; वै०-वाँ,-उँ; सं० बाम।
बावना दे० बौना।
बावाँ वि० पुं० बायाँ; बायें तरफ चलने वाला बैल स्त्री०-ईं।
बास सं० स्त्री० बू, बदबू;-आइब; क्रि० बसाब, बासब।
बासन सं० पुं० बर्तन; तुल० लेहिं न-बसन चोराई।
बासठि वि० सं० बासठ, सं० द्वि+षष्ठि।
बासब क्रि० स० फूल रखकर सुगंधित करना (कपड़ा, कत्था आदि); प्रे० बसाइब।
बाह अव्य० शाबास;-वाह, वाह-बाह;-बाही, अधिक प्रशंसा।
बाहब क्रि० स० (पशु का) मैथुन करना; सं० बाह (घोड़ा एवं बैल)।
बाहरि सं० स्त्री० सींचने के पानी को नीचे से ऊपर ले जाने का मार्ग।
बाहा सं० पुं० छोटा नाला, पानी बहने का मार्ग; सं० बह।
बाहीं सं० स्त्री० खेत का वह टुकड़ा जो एक बरहा (दे०) से सींचा जाय; सं० बाहु।
बाहुक सं० पुं० लकड़ी का खम्भा जो मकान की छत को सँभालने के लिए लगाया जाता है; वै०-हू; सं० बाहु।
बिंग सं० पुं० व्यंग;-बोलब; सं० व्यङ्ग।
बिंड़िआइब दे० बींड़ा।
बिंचि सं० स्त्री० बेंच; अं०।
बिंजन सं० पुं० व्यंजन; बरहो-,कई प्रकार के पकवान; सं० व्यंजन।
बिंदी सं० स्त्री० बिंदी;-धरब, बिंदु रखना; -लगाइब, मत्थे में बिंदी लगाना, अक्षर के ऊपर बिंदु देना; सं० बिंदु।
बिउरब क्रि० स० (बालों को) एक-एक करके साफ करना; प्रे०-रवाइब,-राइब,-उब।
बिकब क्रि० अ० बिकना; वै०-काब; प्रे०-वाइब, बेचब,-वाइब; सं० वि+क्री।
बिकल वि० पुं० बेचैन;-होब,-रहब, स्त्री०-लि; वै० बे-।
बिकिनब क्रि० स० बेचना; बेचब-, व्यापार करना; सं० वि०+क्री, बँ० कीन।
बिकिरी सं० स्त्री० बिक्री;-होब,-करब।
बिख सं० पुं० विष;-देब,-खाब;-करब, लड़कर विपाक्त कर देना, वि०-हा; सं० विष।
बिखड़ब क्रि० अ० क्रुद्ध होना; प्रे०-ड़ाइब,-उब; सं० विपथण।
बिखरब क्रि० अ० बिखर जाना; प्रे०-खे-, -खराइब।
बिगड़ब क्रि० अ० बिगड़ना, नाराज होना; प्रे० -गाड़ब,-ड़ाइब,-उब; भा०-गाड़,-गड़ी-बिगड़ा, नाराजगी।
बिगर अव्य० बिना, वै० बे-;फा० बग़ैर।
बिगवा सं० पुं० भेड़िया; वै० बीग; सं० वृक।
बिगहा सं० पुं० बीघा; यक-, दुइ-।
बिगाड़ सं० पुं० वैमनस्य;-करब,-होब,-रहब; क्रि० -ब।
बिगाड़ब क्रि० स० नष्ट करना; सम्बन्ध खराब कर लेना; प्रे०-गड़ाइब,-गड़वाइब,-उब।
बिचऊपुर सं० पु० बीच का स्थान; काल्पनिक स्थान जो न इधर हो न उधर; अनिश्चित स्थान; -मैं रहब, अंत तक न पहुँच पाना।
बिचकब क्रि० अ० बिचकना; प्रे०-काइब,-उब।
बिचका वि० पुं० बीचवाला; स्त्री०-की, वै०-ला।

बिचकाइब क्रि० स० टेढ़ा कर देना, मुँह-, घृणा या द्वेष से मुँह टेढ़ा करना।
बिचखोपड़ा सं० पुं० एक विषैला जंतु जो बड़ी छिपकली सा होता है। वै०-स-।
बिचरब क्रि० अ० विचरना, घूमना; सं० वि+चर।
बिजायठ सं० पुं० ऊपर बाँह पर पहनने का एक आभूषण।
बिजुली सं० स्त्री० बिजली; सं० विद्युत्।
बिजै सं० स्त्री० निमंत्रण का बुलावा;-देब,-पठइब,-आइब,-कहवाइब; सफलता;-होब,-करब; सं० विजय।
बिटिआ सं० स्त्री० बेटी, घृ०-हिनी,-डुहनी;-यस, नामर्द की भाँति;-बेटारौ, स्त्रियाँ;-बेटवा।
बिड़मना सं० स्त्री० निंदा;-होब,-करब; सं० विडंबना; वै०-ट-।
बिड़र सं० पुं० बिरला, अलग-अलग, दूर-दूर (पेड़-पौदे);-बिड़र, दूर दूर (बोना, लगाना); स्त्री०-रि; क्रि०-राब; प्र०-रै; सं० बिरल।
बिड़राब क्रि० अ० अलग अलग या दूर दूर हो जाना, भग जाना; प्रे०-राइब,-उब।
बिड़वा सं० पुं० पुआल का बना हुआ गोल छोटा मोढ़ा; सं० वेष्ठ, दे० बींड़ा।
बिढ़इब क्रि० स० कमाना; व्यं० खो देना, प्रे० -ढवाइब।
बिढ़ता सं० पुं० कमाया हुआ (अन्न, धन आदि); -खाब, कमाई खाना।
बितइब क्रि० स० बिताना; वै०-ताइब,-उब; प्रे० -तवाइब; सं० व्यतीत।
बित्ता सं० पुं० बीता; हाथ भर का आधा;-भर कै, बहुत छोटा (व्यक्ति)।
बिथुरब क्रि० अ० बिखरना; प्रे०-थोरब;-थुराइब।
बिदखोरब क्रि० स० खोद या कुरेद कर खराब करना; प्रे०-खोराइब,-उब।
बिदबिदाब क्रि० अ० घृणित सूरत का हो जाना; इधर उधर पड़ा रहना; प्रे०-दाइब।
बिदा सं० स्त्री० बिदाई;-करब;-होब, नष्ट होना, संसार से जाना; सं०।
बिदुर सं० पुं० महाभारत काल के प्रसिद्ध भक्त; -जी,-नीति।
बिदुरब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना (ओंठ); प्रे० -दौरब।
बिदोर वि० पुं० मूर्ख देखने में मूर्ख; चतुर-बिदोरवा, जो देखने में मूर्ख, हो पर चतुरता के कारण मूर्खता करे।
बिदोरब क्रि० स० टेढ़ा करना (मुँह, ओंठ); प्रे० -रवाइब,-उब।
बिधंस सं० पुं० विध्वंस;-करब,-होब, नष्ट करना, नष्ट होना; क्रि०-ब; सं० विध्वंस।
बिधना सं० पुं० ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता, सं० विधि।
बिधवाँ सं० स्त्री० विधवा;-होब।
बिधाँ क्रि० वि० विधि से; भाँति; कउनिउ-, किसी प्रकार; प्र०-द्धाँ; सं० विधि; वै०-धीं।
बिधि सं० स्त्री० प्रणाली; तरीका; घर-, घर का सा आराम;-सें, अच्छी तरह;-बैठब, सब कुछ ठीक हो जाना;-बइठाइब, सब कुछ ठीक कर देना; सं०।
बिधीं दे० बिधाँ; वै०-धें।
बिधुआब क्रि० अ० हठ करते रहना; मचलना; प्रे०-वाइब।
बिन अव्य० बिना, बगैर; सं० बिना।
बिनइब क्रि० स० बिनती करना, प्रार्थना करना; वै०-उब, सं० विनय।
बिनउठा दे० बेनउठा।
बिनउर सं० पुं० ओला; स्त्री०-री;-परब,-गिरब; वै० बे-।
बिनकर सं० पुं० बिनने वाला; कपड़ा बीनने वाला; भा०-ई।
बिटिया सं० स्त्री० बेटी, वै०-आ; कहा०-चमार की नाँव रजरनियाँ; घृ०-हिनी, पुं० बेटवा।
बिनती सं० स्त्री० प्रार्थना;-करब।
बिनय सं० स्त्री० विनय;-करब; सं०।
बिनवट सं० पुं० बिनावट; फरी-गतका की तरह का एक खेल।
बिनसब क्रि० अ० (दूध) फटना, बदबू करना; सं० वि+नश् (नष्ट होना)।
बिना अव्य० बिना; सं०।
बनाइब क्रि० स० बुनाना; प्रे०-नवाइब।
बिनावट सं० स्त्री० (खाट आदि के) बुनने का तरीका।
बिनास सं० पुं० विनाश;-होब,-करब; सं०।
बिनिआ सं० स्त्री० (अन्न) बीनने का समय; कटिआ-, फसल काटने एवं खेत में गिरे हुए अन्न के बीनने का समय;-करब।
बिनु अव्य० बिना; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; सं० बिना।
बिनुआ वि० पुं० बीना हुआ (कंडा); जो जंगल से बीना गया हो (पाथा न गया हो); ऐसे कंडे से औषधि तैयार करने में विशेष महत्व माना जाता है। हाथ से पाथे हुए कंडे को "पथुआ" कहते हैं।
बिनैआ सं० पुं० बीनने वाला; प्रे०-नवैआ, वै० -या।
बिनौरी सं० स्त्री० छोटे छोटे ओले के पत्थर; दे० बिनउर।
बिपता सं० स्त्री० बिपत्ति; दे० विपति; वै०-दा; जेहि पर बिपता परति है सो आवै यहि देस (रहिमन)।
बिपति सं० स्त्री० बिपत्ति;-काटब,-परब,-भोगब, -आइब; वि०-हा; सं० विपत्ति; बिपति बराबर सुख नहीं...।

बिबरा सं० पुं० बुवाई समाप्त होने पर छोटे बच्चों एवं हलवाहों को दिया गया अन्न;-लेब,-पाइब, -देब; मै० मुठिया ।

बिबस वि० पुं० बेबस; स्त्री०-सि; भा०-ई; सं० विवश ।

बिमउट सं० पुं० पृथ्वी के नीचे बनाया हुआ साँप आदि जंतुओं का घर या उसके ऊपर का भाग; वै० बे-, व्य-,-टा ।

बिमरस सं० पुं० रोष, विमर्ष;-करब,-होब वै० बे-; सं० विमर्ष, दे० अमरख ।

बिमल वि० पुं० साफ ।

बियहब क्रि० स० ब्याह करना;-दानब ।

बिया सं० पुं० बीज; प्र० बी-, वै०-आ; छोड़ब, -डारब; सं० बीज ।

बियाड़ वि० पुं० जिसके भीतर का बीज पक्का हो गया हो; स्त्री०-ड़ि;-ढ़ा, (खेत) जिसमें जड़हन का बिया बोया जाय, वै०-र; नै० बियाड़, पं० बिआड़, गु०-ड़ ।

बियाधा दे० व्याधा ।

बियाधि सं० स्त्री० रोग; -होब; सं० व्याधि ।

बियाव क्रि० अ० बच्चा देना; सं० जन्म देना; प्रे० -यवाइब,-उब; 'बिया' से ।

बियास सं० पुं० वृद्धि; बाढ़ि-; क्रि०-ब, बढ़ना, शाखायें फेंकना; सं० व्यास ।

बियाह सं० पुं० ब्याह;-करब,-होब; सं० विवाह; क्रि०-बियहब (दे०), वि०-हा,-ही ।

बिरई सं० स्त्री० पौदा, जड़ीबूटी; दे० बिरवा; अरई-, अरई-बिरवा ।

बिरकुल क्रि० वि० बिलकुल, सारा; प्र०-लै,-ल्लै बिलकुल ।

बिरछा सं० पुं० वृक्ष; वै०-रिछ,-छा;-तर, वृक्ष के नीचे;-लगाइब; कवने बिरिछ तर भीजत ह्वै हैं रामलखन दुनौं भाय ? सं० वृक्ष ।

बिरता दे० बिरता ।

बिरति सं० स्त्री० बहुत रात; बिलंब;-करब,-होब; सं० वि + रात्रि ।

बिरथा वि० व्यर्थ;-करब,-जाब,-होब; सं० व्यर्थ ।

बिरधा सं० पुं० वृद्ध; वि० अधिक आयु का; सं० वृद्ध; भा०-ई,-पन ।

बिरन सं० पुं० भाई, प्रियबंधु;-भैया,-ना (गीतों में), बीरन (दे०) ।

बिरमाइब दे० बिलम्हाइब ।

बिरवा सं० पुं० पौदा; स्त्री०-ई; अरई-,जड़ीबूटी ।

बिरह सं० पुं० भीतर का दुःख; व्यंग;-बोलब; व्यंग कसना; वि०-ही, जिसे विरह हो; सं० ।

बिरहा सं० पुं० एक सर्वप्रिय गीत जिसे प्रायः अहीर गाते हैं । इसमें अधिकांश प्रेम कथा होती है; सं० ।

बिरहिनि सं०स्त्री० स्त्री जिसका पति वा प्रेमी दूर हो; गीत एवं कविता में प्रयुक्त; सं० विरहिणी ।

बिरही सं० पुं० पुरुष जिसकी प्रेमिका या पत्नी दूर हो; सं० ।

बिराइब क्रि० स० मुँह बनाकर चिढ़ाना; वै० -उब ।

बिराग दे० बिरोग ।

बिराजब क्रि० अ० शोभित होना ।

बिराना वि० पुं० दूसरा; स्त्री०-नी; वै० बे- ।

बिरिआ सं० स्त्री० कानों में पहनने का आभूषण; वै०-या ।

बिरिछ दे० बिरछा ।

बिरोग सं० पुं० हार्दिक दुःख;-करब,-होब,-सें ।

बिर्ति सं० स्त्री० दान में दी हुई भूमि;-पाइब, -मिलब,-देब; दे० अबिर्ति;-दार, जिसे बिर्ति मिली हो; सं० वृत्ति ।

बिर्धि सं० स्त्री० वृद्धि;-करब,-होब ।

बिलकब क्रि० अ० निःसहाय होकर रोना; दुःखी रहना; प्रे०-काइब,-उब; वै०-खब ।

बिलग वि० पुं० पृथक;-होन; अलग- ।

बिलगाइब क्रि० स० (द्रव को) पृथक् करना; अलगाइब-, लोगों को अलग करना; दे० अलगी-बिलगा ।

बिलटब क्रि० अ० उलट जाना, नष्ट हो जाना; प्रे०-टाइब,-टवाइब ।

बिलनी सं० स्त्री० एक उड़ने वाला कीड़ा जो मिट्टी का घर बनाता है; आँख के किनारे होने वाली छोटी फुंसी ।

बिलपब क्रि० अ० रोना, बिलाप करना; कविता में प्रयुक्त; सं० वि + लप् (विलाप) ।

बिलबिलाइब क्रि० स० 'बिल-बिल' कहना; (बिल्ली को) भगाना ।

बिलबिलाब क्रि० अ० रोते रहना; दुःख से जीवन काटना ।

बिलम सं० स्त्री० देर;-करब,-होब; क्रि०-म्हाइब; सं० बिलंब ।

बिलम्हाइब क्रि० स० फँसा रखना; (प्रेमी को) रोक रखना; वै०-उब, सं० विलंब ।

बिललाब क्रि० अ० विपत्ति में रहना, दुःखी जीवन बिताना ।

बिलल्ला वि० पुं० बेढंगा; स्त्री०-ल्ली; वै० बे- ।

बिलवाइब क्रि० स० नष्ट करना, नाश होने में सहायता करना; वै०-उब; सं० वि + लय ।

बिलसब दे० बेलसब ।

बिलाइति सं० स्त्री० बिलायत; वि०-ती; फा० वलायत ।

बिलान वि० पुं० नष्टप्राय; स्त्री०-नि;-पुरी, गया बीता;-नी हाल, गई बीती दशा में भी ।

बिलाप सं० पुं० रोना;-करब; सं० ।

बिलाब क्रि० अ० नष्ट होना; प्रे०-लवाइब,-उब सं० वि + ली ।

बिलारा सं० पुं० बिल्ला ।

बिलारि सं० स्त्री० बिल्ली;-यस, छोटा एवं चुप्पा (व्यक्ति)।
बिलारी सं० स्त्री० दरवाजे को भीतर से बंद करने की लकड़ी की सिटकिनी;-देब,-मारब, दरवाजा भीतर से बंद करना।
बिलि सं० स्त्री० बिल;-करब,-खोदब; सं० बिल।
बिलिया सं० स्त्री० छोटा सा मिट्टी का पात्र; दे० मलिया; वै०-आ।
बिलिर-बिलिर क्रि० वि० सिसक-सिसक कर बराबर आँसू बहाते हुए (रोना)।
बिलैक सं० पु० चोरबाजार; अं० ब्लैक।
बिलौंटा सं० पु० बड़ा बिल्ला।
बिल्टी सं० स्त्री० पार्सल की रेल रसीद;-आइब -लेब,-पठइब।
बिसकब दे०-सु-।
बिसकरमा सं० पु० विश्वकर्मा; वि० बड़ा चतुर; सं०।
बिसखोपरा दे० बिष-।
बिसगरभ सं० पु० विषगर्भ तेल; सं०।
बिसरब क्रि० अ० भूल जाना; प्रे०-सारब; सं० वि+स्मर।
बिसरवाइब क्रि० स० भुला देना; वै०-उब।
बिसार, सं० पु० नाज उधार देने की पद्धति जिसमें दिये हुए नाज का सवाया लिया जाता है; डेढ़ी-बिसार, जिसमें ड्योढ़ा लौटाया जाय;-देब,-लेब, -काढ़ब; भा०-सरही, बिसार देने का व्यापार।
बिसाहिन वि० मछली की सी बू वाला;-आइब, ऐसी बू आना; वै०-सहिना; अं० फिश।
बिसुकब क्रि० अ० दूध देना बंद कर देना (पशु का); प्रे०-काइब,-उब; सं० शुष्क।
बिसेंडी सं० स्त्री० व्यंग भरी हुई बात;-बोलब; सं० विष।
बिसेख सं० पु० विचित्र प्रभाव, अद्भुत बात; -मानब,-होब; सं०-शेष, क्रि०-खब, पगला जाना, सं० विक्षिप्।
बिसेन सं० पु० क्षत्रियों की एक जाति।
बिसेस वि० पुं० विशेष; स्त्री०-सि; सं०।
बिस्टा सं० पु० गू;-खाब, बुरा काम करना; सं०।
बिस्नु सं० पु० विष्णु भगवान; वै०-सुन; सं०।
बिस्नेनमः सं० पु० दान;-करब, दान दे डालना; सं० विष्णवेनमः।
बिस्वास सं० पु० विश्वास,-करब,-होब,-रहब; वि०-सी; वै०-स्सास।
बिस्सा सं० पु० बिस्वा; मु० सौ-स्सा, बहुत संभव है;-बिगहा, भूमि का माप।
बिहँसब क्रि० अ० प्रसन्न होकर हँसना, खुश होना; सं० वि+हस।
बिहुइआ सं० स्त्री० छिपकली;-यस, छोटा सा।
बिहुर वि० दूर, ओझल; आँखा से-;-करब, -होब।



बिहनैं क्रि० वि० कल ही;-भर, दूसरे ही दिन; दे० बिहान।
बिहफै सं० पु० बृहस्पति (दिन);-फैया; स्त्री० बृहस्पति तारा; सं० बृहस्पति।
बिहवल वि० पुं० विह्वल; स्त्री०-लि;-होब,-करब, -रहब; सं०।
बिहरब क्रि० अ० बिहार करना, मज़े उड़ाना; प्रे० -राइब; प्र०-ड़-;सं० वि+हृ।
बिहाग सं० पु० प्रसिद्ध राग; सं० वि-।
बिहान सं० पु० प्रातःकाल;-होब;-करब; "साँझे धनुख बिहानें पानी"।
बिहार सं० पु० आनन्द;-करब; प्र०-ड़, सं०।
बिहाल दे० बेहाल।
बिहीदाना सं० पु० एक औषधि।
बिहून वि० पुं० देखने में भद्दा, मूर्ख; स्त्री०-नि; वै० बे-।
बींड़ा दे० बिड़वा; स्त्री०-ड़ी, छोटा बंडल (रस्सी का); क्रि० बिड़िआइब, रस्सी का बंडल बनाना; दे० बिड़वा।
बीग दे० बिगवा।
बीच सं० पु० मध्य;- चें; बीच में, बिचवैं; बीच में ही;-बिचाव, मध्यस्थता, रोकथाम।
बीछी सं० स्त्री० बिच्छू; प्र० बिच्छी;-मारब; पु० -छा, बिच्छा, बहुत बड़ा बिच्छू, सं० वृश्चिक।
बीज दे० बिया।
बीजू वि० बीज से उत्पन्न (कलम न किया हुआ, आम आदि)।
बीड़ी सं० स्त्री० बींड़ी, दे० बरई, बीरा; फ़ा बर्ग (पत्ती)।
बीतब क्रि० अ० बीतना; प्रे० बितइब,-ताइब,-उब; वै० बितब; सं० व्यतीत।
बीदुर सं० पु० मुँह का कृत्रिम टेढ़ापन,-काढ़ब; क्रि० बिदुराब, वि० बिदोर (दे०), जिसके 'बीदुर' हो।
बीन सं० पु० एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है; सं० वीणा।
बीनब क्रि० स० बीनना, बुनना; बेल-,मारे-मारे फिरना; कातब-,कातना बुनना; प्रे०बिनाइब,-नवा-; सं० वृण।
बीन्हब क्रि० स० बींधना; काट लेना; प्रे० बिन्ह-वाइब,-उब; सं० विध्।
बीया दे० बिया।
बीर वि० पु० बहादुर;-बाँकुड़ा।
बीरन सं० पु० प्यारा भाई (बहिनों द्वारा प्रयुक्त); गीतों में "बिरन,बिरना, बिरन भैया"; दे० बिरन; सं० वीर।
बीरा सं० पु० बीड़ा;-जोरब,-जोराइब,-कूँचब, -उठाइब, तैयार होना।
बीस वि० सं० बीस, प्र०-सै,-सौ;-न,-बीसों;-सी, बीस का एक बंडल; यक बीसी, दुइ-।

बीहड़ वि० सं० लंबा चौड़ा एवं मजबूत (व्यक्ति, वस्तु); स्त्री०-ड़ि; भा० बिहड़ई,-पन ।

बुँचवा वि० पुं० बूँचा ।

बुँदेला दे० बुनेला ।

बुआ सं० स्त्री० बाप की बहिन; वै० बू-,-वा, फु-, फू- ।

बुकनी सं० स्त्री० बूका (दे० बूकब) हुआ पदार्थ; सफूफ;-बुकाइब, फाँकना ।

बुकला दे० बोकला ।

बुकवा सं० पुं० उबटन;-लागब,-लगाइब; तेल-,सेवा;-होब,-करब; 'बूकब' से (बूका, हुआ पिसा हुआ) ।

बुकवाइब क्रि० स० बूकने के लिए कहना; पिट वाना; वै०-उब ।

बुकाइब क्रि० स०फाँक लेना; सं०बुक्का (दे० बूक) ।

बुखरहा वि० पुं० जिसे बुखार आया हो; स्त्री० -ही; फ़ा० बुखार+हा ।

बुखार दे० बोखार ।

बुजरी वि० स्त्री० निर्बल, नालायक, दु-, भगु-, आ०-रौ, बुरि+जरी (दे० बुड़जरी); वै०-जारि; फटकार एवं गाली के ही लिए प्रयुक्त ।

बुजरुग वि० वृद्ध, वै०-क; भा०-गी,-की ।

बुज्जा सं० पुं० बुलबुला;-छोड़ब; क्रि०-जबुजाब, बुज्जा देना, होना ।

बुझउवलि सं० स्त्री० पहेली, वै०-अलि,-औवलि ।

बुझवाइब क्रि० स० बुझाना, बूझने में सहायता देना ।

बुझाइब क्रि० स० बुझाना, बूझब (दे०) का प्रे०, समझाइब-, संतोष दिलाना, समझाना ।

बुझारति सं० स्त्री० संतोष,-करब,-होब ।

बुटवलि सं० स्त्री० प्रसिद्ध स्थान जो नैपाल में है और जहाँ के संतरे अच्छे होते हैं । दूर की जगह; दे० मुलतान ।

बुट्टब क्रि० स० उड़ा देना, लेकर भाग जाना, प्रे० -ट्टवाइब,-ट्टि जाब, गायब हो जाना,-लेब, गायब कर देना ।

बुड़जरी सं० स्त्री० नालायक स्त्री, वै०-र- (बुरि+जरी, जिसकी योनि जल गई हो), दे० बुजरी ।

बुड़वाइब क्रि० स० डुबो देना; दे० बूड़ब, वै० -ड़ाइब ।

बुड़ानि सं० स्त्री० स्थान जहाँ डूबने भर को पानी हो,-होब,-रहब, वै०-व, 'बूड़ब' से ।

बुड़ाव सं० स्त्री० (व्यक्ति विशेष के) डूबने भर का पानी,-होब,-रहब, 'बूड़ब' से ।

बुड़ुआ सं० पुं० जो पानी के भीतर नीचे तक डूब कर गिरी हुई चीजें उठा लावे; वै०-वा ।

बुड़ुकी सं० स्त्री० डुबकी,-मारब,-लगाइब ।

बुढ़ऊ सं० पुं० वृद्ध व्यक्ति; स्त्री०-ढ़ियऊ, बूढ़ा (आ०) ।

बुढ़नाब क्रि० अ० (अंग का) ठंढ से ठिठुर जाना ।

बुढ़भस सं० पुं० बुढ़ापे के दुर्गुण ।

बुढ़ाब क्रि० अ० बुड्ढा होना ।

बुढ़िआ सं० स्त्री० बूढ़ी स्त्री;-अऊ,-यऊ (आ० रूप) ।

बुतवाइब क्रि० स० बुझाने में सहायता देना; वै०-उब ।

बुताइब क्रि० स० बुझाना (दीया अथवा आग), प्रे०-वाइब, वै०-उब ।

बुताति सं० स्त्री० (खाने पीने का) सामान;-देब ।

बुताब क्रि० अ० बुझना; शांत होना; प्रे०-ताइब, -उब,-तवाइब;-न, शांत, बुझा हुआ;-रहब शांत रहना-"जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना" ।

बुत्त सं० पुं० मूर्ति; वि० चुपचाप, शांत,-होब, -यस; फा०बुत ।

बुत्ता सं० पुं० प्रोत्साहन;-देब ।

बुदबुदाब क्रि० अ० बुदबुद करना; पकते रहना ।

बुदुर-बुदुर सं० पुं० चूने की आवाज;-रोइब, आँसू चुवा चुवाकर रोना ।

बुद्द सं० पुं० गिरने का शब्द;-सें;-बुद्द, धीरे-धीरे और एक एक करके (गिरना) ।

बुद्ध सं० पुं० बुधवार ।

बुद्धि सं० स्त्री० अकल;-रहब,-होब; वि०-मान; वै० -धि; सं० ।

बुद्धू वि० मूर्ख; भा०-पन,-पना ।

बुधि दे० बुद्धि; कहा० सिखई बुधि उपराजो माया ।

बुनका सं० पुं० बिंदी, बूँद; स्त्री०-की;-धरब सं० बिंदु ।

बुनिआ सं० स्त्री० बुँदिया; एक प्रकार की मिठाई, जिसमें छोटे गोल दाने चाशनी में मीठे किये जाते हैं;-क लड्डू; सं० बिंदु; वै०-या ।

बुनिआब क्रि० अ० बूँद पड़ना; बरसना; सं० बिंदु; दे० बूनी, बून ।

बुनेला वि० बढ़िया; यह शब्द दोनों लिंगों में एक सा ही रहता है; बुंदेलों की वीरता का इतिहास इसमें छिपा है ।

बुमुआब क्रि० अ० चिल्लाना; पशु की भाँति क्रंदन करना; बूँ बूँ करना; वै० बुँबु- ।

बुरा वि० पुं० खराब; भा०-ई;-करब,-बनब, बुरा हो जाना; स्त्री०-री; कबीर—बुरा जो देखन मैं चला .. ।

बुरि सं०स्त्री० योनि;-मारी,-चोदी,-माँ, गाली देने के (स्त्रियों को) शब्द जो पुरुष प्रयोग करते हैं ।

बुलाइब दे० बोलाइब ।

बुल्ला सं० पुं० बुलबुला (पानी का); सं० बुदबुद ।

बुवा दे० बुआ ।

बुहरवाइब दे० बहारब ।

बूँच वि० पुं० बूँचा, स्त्री०-ची ।

बू सं० स्त्री० गंध;- आइब, दुर्गंध आना,-देब, -करब; बद-,खुस-; वै०बोय; फा० ।

बूक सं० पुं० मुट्ठी; यक-,मुट्ठी भर(पिसी हुई वस्तु); वै० प्र० बुक्का ।

बूकब क्रि० सं० बूकना, पीसना, मैदा करना; खूब मारना; प्रे० बुकवाइब, बुकाइब ।

बूझ सं० स्त्री० बुद्धि; समझ-; क्रि०-ब, समझना; समुझब-;अबूझ, मूर्ख वै०-झि; सं० बुद्धि ।

बूझब क्रि० स० समझना, अंदाज लगाना, तर्क करना; प्रे० बुझवाइब, सं० बुझउवलि (दे०) ।

बूट सं० पुं० अंग्रेज़ी फैशन के जूते; अं० ।

बूटा सं० पुं० फूल पत्ता जो चित्र में बना हो; बेल-; पं० बूटा (छोटा पेड़) ।

बूटी सं० स्त्री० बन की औषधि; जड़ी-; पं० बूटा, छोटा पेड़ ।

बूड़ब क्रि० अ० डूबना; प्रे० बुड़वाइब, बोरब (दे०); मु०-उतिरब, दुविधा में पड़ा रहना ।

बूड़ा सं० स्त्री० अधिक वर्षा ।

बूढ़ वि० पुं० बुड्ढा, स्त्री०-ढ़ा (-ढ़ाई)-ढ़ि; क्रि० बुढ़ाब, भा० बुढ़ापा,-ई; तुल०-जनु वर्षा कृत प्रगट बुढ़ाई; सं० वृद्ध ।

बूत सं० पुं० बूता, शक्ति; यनके-कै, इनके मान का, जिसे यह कर सके; प्र०-ता,-ते ।

बून सं० पुं० बूँद;-भर, यक-; क्रि० बुनियाब,-आब (दे०); स्त्री०-नी; (-परब); बूना-बानी (होब), बूँदे (वर्षा की); बूनै-बून, एक एक बूँद करके सं० विंदु ।

बूनी सं० स्त्री० छोटा बूँद;-परब,-आइब; क्रि० बुनिआब (दे०); सं० बिंदु ।

बूय दे० बोय ।

बूरा सं० पुं० शक्कर ।

बूवा दे० बुआ ।

बेंचब क्रि० स० बेंचना; प्रे०-चाइब,-चवाइब, बिकाब,-कब ।

बेंची सं० स्त्री० बिक्री का दस्तावेज;-लिखब,-करब ।

बेंड़ वि० पुं० चौड़ाई के आरपार,-बेंड़,-करब, नष्ट कर देना ।

बेंत सं० पुं० बेत, छड़ी,-मारब,-लगाइब ।

बेंवड़ा सं० पुं० झोपड़ी का दरवाजा;-देब; टाटी -;सं० व्यवधान ।

बेंवार सं० पुं० लंबा छेद; दराज़;-फाटब; वै०-रा; सं० ।

बेइलि सं० स्त्री० बेल (फूल आदि की); गीतों में '-या' ।

बेई सं० स्त्री० बारी;-बेई, बारी बारी से, बार-बार; 'बेरि' का 'र' लुप्त होकर यह शब्द बना है ।

बेईमान वि० पुं० बेईमान; भा०-नी;-करब ।

बेकरई सं० स्त्री० खराबी; वै०-पन; दे० बेकार; वै० ब्य-।

बेकरका सं० पुं० किसी के मरने का १० वाँ दिन; -करब,-होब,-रहब,-मनाइब; 'बेकार' से; वै० ब्य-।

बेकल दे० बिकल, वै० ब्य-।

बेकाम वि० पुं० थका; विह्वल;-होब,-करब,-रहब, वै० ब्य-, स्त्री०-मि ।

बेकार वि० पुं० खराब, रद्दी, वै० ब्य-, स्त्री०-रि, भा०-करपन,-ई ।

बेकूफ वि० पुं० मूर्ख, स्त्री०-फि; फा० बे+वकूफ; भा०-फी,-फई ।

बेखउफ वि० पुं० निश्चित, निडर; स्त्री०-फि; -रहब होब-, फा० बेखौफ़ ।

बेग सं० पुं० थैला; मनी-, रुपया पैसा रखने का चमड़े का बटुआ, अं० बैग ।

बेगारी सं० स्त्री० बेगार,-लेब,-देब,-करब ।

बेगि क्रि० वि० शीघ्र (कविता में ही प्रयुक्त) ।

बेगी सं० स्त्री० बेगम या रानी (ताश के खेल में); बेगम ।

बेगुन वि० पुं० जिसमें गुण न हो; वै०-नी ।

बेघर वि० पुं० जिसके घर न हो; जिसका घर उजड़ गया हो ।

बेजह सं० स्त्री० अनुचित बात या व्यवहार;-करब, -होब,-रहब; फा० बेजा, वै०-जाहिं,-जाइँ,-जाहँ, वि०-जाही, अनुचित करनेवाला ।

बेजाँ दे० बेजह ।

बेजान वि० निर्जीव ।

बेजाप्ता वि० (बात, कार्रवाई आदि) जो नियम विरुद्ध हो ।

बेझरा सं० पुं० दो अन्न एक में मिले हुए, स्त्री०-री, मोटी रोटी जो प्राय: दो अन्नों के आटे से बनती है । वै०-र ।

बेटवा सं० पुं० बेटा, स्त्री० बिटिया, वि०-वही, पुत्रवती;-बिटिया, परिवार ।

बेटहना सं० पुं० छोटा लड़का, घृ० खराब छोकरा; स्त्री० बिटिहिनी ।

बेटा सं० पुं० पुत्र; स्त्री०-टी;-बेटी, परिवार ।

बेठन सं० पुं० बाँधने का वस्त्र, सं० बेष्ठन ।

बेड़ा सं० पुं० नावों का समूह;-पार होब,-पार करब, महत्त्वपूर्ण काम पूरा हो जाना ।

बेड़िन सं० स्त्री० नीच श्रेणी की नाचने-गाने वाली स्त्री,-पतुरिया, दुश्चरित्र, स्त्रियाँ, दे० पतुरिया ।

बेड़ी सं० स्त्री० पैरों को बांधने की जेल वाली जंजीर, हथकड़ी-,-परब,-लगाइब ।

बेडौल वि० पुं० जिसके डौल में अनुपात न हो, बदशकल;-होब ।

बेढब वि० अद्भुत, बढ़िया ।

बेढ़ब क्रि० स० फँसा देना, प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब; 'बेढ़ा' (दे०) से ।

बेढ़ा सं० पुं० खेत या बगीचे के चारों ओर लगा कांटा या लकड़ी की दीवार;-लगाइब,-रून्हब ।

बेतकल्लुफ वि० जिसमें आडंबर न हो; भा० -फी ।

बेतरह क्रि० वि० बुरी तरह (बिगड़ना, नाराज़ होना) ।

बेतहासा क्रि० वि० बिना साँस लिए; एकदम।
बेतान दे० तान।
बेताब वि० परेशान, निर्जीव;-करब,-होब,-रहब।
बेतोल वि० बिना तौल का; अन्दाज़िया; फा० बे+ सं० तुल्; वै०-तउल (दे० तउलब)।
बेद सं० पुं० वेद;-पुरान,-वाक्य; सं०।
बेदाग दे० अदग।
बेदाना वि० बिना बीज वाला (अंगूर, अनार)।
बेदिहा वि० पुं० वेदी का; पूज्य;-पंडित, धार्मिक कृत्य करानेवाला पंडित।
बेदी सं० स्त्री० स्थान जिस पर पूजा, बलिदान आदि हो; सं०।
बेध सं० पुं० शामत;-होब; ग्रहण में सूर्य या चंद्र का वेध;-लागब; क्रि०-ब,-धा होब,-रहब, (कसी की शामत होना); सं०।
बेधड़क वि० निश्चिन्त; क्रि० वि० निश्चिन्त होकर।
बेधब क्रि० स० बेधना, ग्रस्त करना; प्रे०-धाइब, -धवाइब, फाँसना।
बेधरम वि० पुं० धर्म-च्युत;-करब,-होब; फ़ा० बे +सं० धर्म; भा०-ई।
बेन सं० पुं० प्रसिद्ध बाजा; कहा० भइँस के आगे -बजावै, भइँस खड़ी पगुराय; सं० वेणु (बाँस)।
बेनचठा सं० पुं० बाँस का छोटा टोकरा; सं०वेणु; स्त्री०-ठी।
बेनउर सं० पुं० ओला; स्त्री०-री, छोटे छोटे ओले; -परब,-गिरब; सी० बिनौला।
बेनजीर वि० पुं० जिसकी तुलना न हो; स्त्री० रि; फ़ा० बे+।
बेना सं० पुं० पंखा; छोटा हाथ का पंखा; स्त्री० -निआ,-या;-डोलाइब,-हाँकब; सं० वेणु (बाँस जिसका बेना प्रायः बनता है।)
बेनी सं० स्त्री० स्त्री का बँधा हुआ बाल; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; सुरुज मुख धीरे तपौ मोरी बेनी क रँग छुरि जाय"; सं०।
बेनुला सं० पुं० प्रसिद्ध घोड़ा जिसका वर्णन आल्हा में है।
बेनुली सं० स्त्री० जूड़ा बनाने में सहायक एक गोल छल्ला जिसे स्त्रियाँ प्रयुक्त करती हैं। इसका रिवाज कम होता जा रहा है। दे० 'जूरा'; विंदुली जो स्त्रियाँ मत्थे में लगाती हैं।
बेपरवाह दे० निपरवाह।
बेपर्द वि० पुं० नंगा, बिना परदे के; स्त्री०-र्दि; वै० नि-।
बेफाँट वि० निरर्थक।
बेफायदा वि० जिसमें कुछ लाभ न हो; फा०।
बेफ़िकर दे० निफिकिर।
बेफै दे० बिहफै।
बेबस वि० पुं० निःसहाय; स्त्री०-सि; भा०-सी, -सई; सं० विवश।
बेभाँति वि० बेमेल, बुरा लगने वाला;-कै, जिसका मेल न खा सके (काम)।
बेमउट दे० बिमउट।
बेमान सं० पुं० विमान, वै०-वान; सं० विमान।
बेर सं० स्त्री० विलंब, बार, वै०-रि;-करब,-होब; क्रि० वि०-बेर, बार-बार; यक,-दुइ-।
बेरनि सं० स्त्री० बीजों से उगे हुए पौदे;-डारब, -छोड़ब; वै०-हनि; सं० बीज-वपन।
बेरहम वि० पुं० निर्दय; स्त्री०-मि, भा०-मी, -मई।
बेराइब क्रि० स० अलग करना, चुनना; प्रे०-रवाइब, -उब; भा०-राव।
बेराम वि० पुं० बीमार; स्त्री०-मि;-होब,-परब, -रहब; भा०- मी; वै०-मार।
बेराय सं० स्त्री० दूसरी राय; जिसकी राय भिन्न हो।
बेराह वि० बिना रास्ते का;-चलब।
बेरि सं० स्त्री० विलंब; दे० बेर।
बेरुख वि० उदासीन;-होब, भा०-खी,-खई।
बेरी सं० पुं० कुमुदिनी के बीज।
बेल सं० पुं० बेल, प्रसिद्ध फल और उसका पेड़; -बीनब, मारा मारा फिरना, बेकार रहना।
बेलन सं० पुं० लकड़ी या लोहे का औज़ार जिससे बेला जाय।
बेलना सं० पुं० रोटी बेलने का हत्था,-यस, छोटा सा (बच्चा); वै० ब्य-।
बेलब क्रि० स० बेलना, नष्ट करना; प्रे०-लाइब, -लवाइब,-उब, पापड़-, अधिक परिश्रम करना।
बेलल्ला वि० पुं० बेढंगा; स्त्री०-ल्ली।
बेला सं० पुं० बेल को खोखला करके बनाया हुआ लकड़ी लगा छोटा बर्तन जिससे तेल निकाला जाता है; स्त्री०-लिआ,-या।
बेला सं० स्त्री० समय;-होब; सं०।
बेलौस वि० पुं० ममताहीन; स्त्री०-सि।
बेवकूफ दे० बेकूफ।
बेवरा सं० पुं० ब्योरा;-देब,-लेब।
बेवहर सं० पुं० कर्ज;- लेब,- देब; तु० बेवहरिया।
बेवहार सं० पुं० व्यवहार; मैत्री;-करब;-रिक, मित्र, सं० व्यवहार।
बेवा सं० स्त्री० विधवा;-होब।
बेवाय सं०स्त्री० पैर के तलुवे में फटी दरार;-फाटब; कहा० जेहिके पाँय न होय बेवाई, सो का जानै पीर पराई।
बेवारिस वि० जिसका कोई वारिस न हो।
बेसक क्रि० वि० निःसंदेह; बे+अर०
बेसन सं० पुं० चने का आटा।
बेसरम वि० पुं० निर्लज्ज; स्त्री०-मि; भा०-मई; -मा पहलवान, बहुत ही निर्लज्ज, जो अपनी बेशर्मी में गर्व करता हो; फा० बेशर्म;- ई, बेशर्मी के साथ।

बेसरि सं० स्त्री० नाक में पहनने स्त्रियों का एक आभूषण; वै० नक- ।

बेसहनी सं० स्त्री० खरीद ।

बेसहब क्रि०स० खरीदना; प्रे०-हाइब,-हवाइब, -उब ।

बेसही सं० स्त्री० पत्नी, खरीदी हुई ('बेसही' हुई); दे० बेसहब; वै० बसही ।

बेसहूर वि० पुं० बेढंगा; जिसे शहूर न हो; स्त्री० -रि; फा० बे +

बेसी वि० अधिक ।

बेस्सा सं० स्त्री० वेश्या; वै०- स्या; सं० ।

बेहनि सं० स्त्री० दे० बेरनि ।

बेहबल दे० बिहबल ।

बेहया वि० बेशर्म, निर्लज्ज; भा०-ई ।

बेहाल वि० पुं० घबराया हुआ; मरणासन्न;-होब, -करब,-रहब; स्त्री०-लि, फा० बे + हाल ।

बेहिसाब वि० अधिक, असंख्य; फा० बे + ।

बेहूदा वि० पुं० बेढंगा; स्त्री०-दी ।

बेहून वि० पुं० कुरूप; स्त्री०-नि ।

बेहोस वि० पुं० बेहोश; स्त्री०-सि; भा०-सी; फा० बे + होश ।

बैकल वि० मूर्ख, बेढंगा; स्त्री०-लि; भा०-ई ।

बैकुंठ सं० पुं० स्वर्ग; क्रि०-ब; (भगवान् की मूर्ति को) स्नानादि के बाद सुला देना ।

बैगन दे० भाँटा ।

बैजा दे० बयजा ।

बैठक सं० पुं० घर के बाहर मेहमानों के बैठने का कमरा, दे० बइठक,-का,-की; वि०-बाज, जो दूसरों के यहाँ जाकर बहुत बैठा करे ।

बैठनी सं० स्त्री० बैठने का बीड़ा या लकड़ी आदि का पीढ़ा ।

बैठब क्रि० अ० बैठना; पटना, जम जाना; प्रे० -ठाइब,-उब ।

बैठाहुर वि० पुं० जो प्रायः बैठा रहे, कुछ काम न करे; स्त्री०-रि; वै०-उर ।

बैतबाजी सं० स्त्री० अंत्याक्षरी;-करब,-होब ।

बैताल सं० पुं० विक्रमादित्य के कथानकों में प्रश्न करनेवाला अलौकिक पुरुष ।

बैद सं० पुं० वैद्य; भा०-ई,-पन; सं० ।

बैदक सं० पुं० वैद्यक;-करब, भा०-ई; सं० ।

बैन सं० पुं० बचन; यह शब्द कविता में ही प्रयुक्त होता है ।

बैना सं० पुं० ब्याह अथवा पुत्र जन्म आदि अवसरों पर बटनेवाला उपहार;-बाँटब,-देब,-आइब, -लाइब; वै० बयना ।

बैपरब क्रि० स० व्यवहार में लाना, काम में लेना (वस्तु का); व्यवहार करना (व्यक्ति का), अनुभव प्राप्त करना; सं० व्यापार ।

बैपार सं० पुं० व्यापार;-री, व्यापारी,-करब; सं० व्यापार, क्रि०-परब (दे०) ।

बैरी वि० बाहर का; अपरिचित (व्यक्ति या पशु) ।

बैमान दे० बेईमान, भा०-नी ।

बैर सं० पुं० दुश्मनी;-री, दुश्मन; सं०; वै० बयर; -करब,-राखब,-रहब ।

बैरन वि० जिस पर महसूल लगे (पत्र); अं० बेयरिंग ।

बैरा सं० पुं० खाना बनानेवाला नौकर; अं० बेयरर ।

बैल सं० पुं० बैल; मु० मूर्ख ।

बैलट सं० पुं० शक्ति, इंजिन; अं० ब्वायलर ।

बैलर वि० पुं० फूहड़; स्त्री०-रि, भा०-ई ।

बैस सं० पुं० ठाकुरों की एक जाति जिनके कारण बैसवाड़ा प्रांत का नाम पड़ा; वै० बयस ।

बोंका सं० पुं० कीड़ा जो घास में रहता और कूद-कूदकर इधर-उधर बैठता है ।

बोइब क्रि० स० बोना; प्रे०-आइब,-उब, मु० बात फैलाना, प्रचार करना; छींटब-, फेंकना ।

बोउनी सं० स्त्री० बोने की क्रिया, उसका समय; -होब,-करब; प्रे०-वउनी ।

बोकड़ब क्रि० स० (कपड़े या कागज़ को) चबा के खराब कर देना; बीच-बीच में छेद कर देना; प्रे० -ड़ाइब;-उब ।

बोक सं० पुं० बड़ा सा मोटा डण्डा ।

बोझ सं० पुं० भार; क्रि०-ब, लादना; वै०-झा ।

बोझब क्रि० स० लादना, खूब भरना; मु० खूब डट कर खाना; प्रे०-झाइब,-झवाइब,-उब ।

बोटा सं० पुं० लकड़ी का बड़ा और मोटा टुकड़ा; स्त्री०-टी, मांस आदि का टुकड़ा; बोटी-बोटी, क्रि० वि० छोटे-छोटे टुकड़ों में (काटना); क्रि०-टिआइब ।

बोड़ा सं० पुं० बड़े दाने की एक फली जिसका साग खाया जाता है ।

बोतल सं० पुं० बड़ी शीशी; अं० बॉटल ।

बोदा वि० पुं० सुस्त, भद्दा; स्त्री०-दी; भा०-पन ।

बोध सं० पुं० ज्ञान, तृप्ति;-करब,-होब; सं० ।

बोबा सं० पुं० स्तन (दूध भरा हुआ).-पियब; स्त्रियों या बच्चों द्वारा प्रयुक्त; स्त्री०-बी; लि०बुबो, लें० बुब्बा ।

बोमब क्रि० अ० जोर-जोर से चिल्लाना, व्यर्थ में बोलना ।

बोय सं० स्त्री० बदबू, दुर्गंध;-करब, आइब; बू ।

बोरा सं०पुं० बोरा; स्त्री०-री, क्रि०-रिआइब, बोरों में भरना ।

बोरो सं० पुं० एक प्रकार का चावल जो पानी में होता है । सं० व्रीहि ।

बोल सं० पुं० बोली, शब्द; वै०-लि;-चाल, संपर्क ।

बोलब क्रि० स० बोलना, कहना; प्रे०-लाइब,-उब, -लवाइब, बुलाना;-चालब, संपर्क रखना ।

बोली सं० स्त्री० बोली, भाषा,व्यंग;-बोलब, व्यंग कहना, नीलाम में दाम लगाना ।
बोह सं० पुं० (जल में भैंसों का) आनंद -लेब;-हा, चरने की घास की अधिकता ।
बोह्ब क्रि० स० सान देना (तेल आदि में), जोर से पकड़ना; कचकन-,दो व्यक्तियों की हाथ की उँग-लियों को मिलाकर पकड़ना; यह शब्द और दूसरे अर्थ में नहीं प्रयुक्त होता ।
बौंका दे० बउँका ।
बौंड़ा दे० बँवरा ।
बौआब क्रि० अ० सोते समय बड़बड़ाना; दे० बउ-आब, वै० बउ-,-वाब ।
बौखल दे० बउखल ।
बौखा सं०पुं० थोड़ी देर तक चलनेवाली तेज हवा; आन्ही-;-आइब: वै० बउखा ।
बौना सं० पुं० जो व्यक्ति कद में बहुत छोटा हो; वै० बावना; सं० वामन; स्त्री०-नी ।
बौर दे० बउर; पं०मौरना, सिं० मोर ।

# भ

भँकार दे० भोंकार ।
भँजाइब क्रि० स० भजाना (पैसा); प्रे०-जवाइब; भा० भँजवाई ।
भँटइती सं० स्त्री० भाँट का सा व्यवहार; अनावश्यक प्रशंसा;-करब; दे० भाँट ।
भंटा सं० पुं० बैंगन, भाँटा ।
भंडा सं० पुं० किसी भारी वस्तु को उठाने के लिए लगाई हुई लकड़ी;-लागब,-लगाइब;-फोर, रहस्योद्घाटन;-करब,-होब ।
भँड़इती सं० स्त्री० भाँड़ का सा व्यवहार,-करब, -होब; वै०-यती,-ड़ैती ।
भँड़खेलि सं० स्त्री० गड़बड़;-करब,-होब; भाँड़ (दे०)+खेलि, भाँड़ों का खेल ।
भँड़री सं० स्त्री० गन्ना पेरने का पहला दिन जब गुड़ भी तैयार होता है;-करब,-होब ।
भँड़सार सं० पुं० भोजनवाला घर; स्थान, जहाँ भोजन बने; वै०-सारा ।
भँड़ुआ सं० पुं० वेश्या के साथ रहनेवाला पुरुष; गुलाम; नीच व्यक्ति; भा०-अई,-पन ।
भँड़ेरि सं० स्त्री० गड़बड़;-करब,-होब, भाँड़ों का सा काम; वि०-री, 'भँड़ेरि' करने वाला ।
भँड़ैती दे० भँड़इती ।
भँवकखा वि० पुं० जिसकी आँखें टेढ़ी हों; स्त्री० -खी; भँव+आँखि, जिसकी आँख भौं की ओर उठी हो ।
भँवर सं० स्त्री० नदी की भँवर;-मँ परब, चक्कर में पड़ना, असमंजस में रहना ।
भँवरी सं० स्त्री० फेरी;-करब, (बनिये का) गाँव गाँव फिरकर सौदा बेचना ।
भँवरा सं० पुं० भ्रमर; मु० इधर उधर फिरने वाला व्यक्ति; स्त्री०-री, मनुष्य के बालों का चक्र, पशु के मत्थे या पीठ आदि पर बालों का चक्र; सं० भ्रमर ।
भ क्रि० अ० हुआ, हो गया; वै० भय, भै; स्त्री०-इ; उदा० जौन-तौन-, जो कुछ हुआ सो हुआ; सं० भूत: ।
भइँस सं०पुं० भैंसा;-साब, भैंस का गाभिन होना; -साहिन, भैंस की भाँति बू करनेवाला;-आइब; स्त्री० -सि;-यस, मोटा तगड़ा पर सुस्त व्यक्ति; सं० महिष ।
भइँसि सं० स्त्री० भैंस;-यस, मोटी तगड़ी पर सुस्त स्त्री; सं० महिषी ।
भइआ संबो० हे भाई, भैया;-भउजी, भाई भौजाई;-चारा, भाई का सा व्यवहार, बिरादरी ।
भइने दे० भयने ।
भउजाई सं० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री; सं० भ्रातृजाया ।
भउजी सं० स्त्री० भउजाई; ऐसी स्त्री को संबोधन करने का शब्द; सं० भ्रातृजाया ।
भउरब क्रि० स० खुरपी से (पौदे की जड़ की) मिट्टी खोदकर उलट देना; प्रे०-राइब ।
भउरी सं० स्त्री० मोटी गोल रोटी जो हाथ से ही बनाकर कंडे की आँच पर सेंकी जाती है; इसी को 'लीटी' भी कहते हैं;-लीटी,-लगाइब; मु० छाती पर -लगाइब, खूब तंग करना ।
भकंदर दे०-गंदर ।
भकचुम्मा वि० पुं० जो कुछ बोल न सके; स्त्री० -मी ।
भकड़ब क्रि० अ० सड़ जाना (लकड़ी का) ।
भकभेलर वि० पुं० फूहड़, बेढंगा; स्त्री०-रि; वै० -ग- ।
भकसब क्रि० अ० सड़ जाना (लकड़ी, फल आदि का); बदबू करने लगना ।
भकाभक क्रि० वि० जल्दी-जल्दी, निरंतर (धूएँ आदि के निकलने लिए); प्र०-क्क ।
भकुहा वि० पुं० जो कुछ कर न सके; निःसहाय एवं मूर्ख; स्त्री०-ही, भा०-पन, क्रि०-आब ।

भकोसब क्रि०स० जल्दी-जल्दी फाँकना या चबाना; प्रे०-साइब,-सवाइब,-उब ।

भक्खर सं० पुं० खाने का स्थान, बलिवेदी; भवानी क-, देवी की बलिवेदी; यह शब्द या तो इसमें या "-मेँ परब" (संकट में पड़ जाना) में प्रयुक्त होता है; "भवानी क-मेँ जाव" तू देवी की बलि हो जा; सं० भच् ।

भक्साहिन वि० जिसमें सड़ी बदबू हो;-आइब, -लागब ।

भख सं० पुं० भोजन; कहा० "अजगर को-राम देवैया" इसी में इस शब्द का प्रयोग होता है । सं० भक्ष ।

भखवइआ सं० पुं० भाखनेवाला, भविष्यवाद करनेवाला; स्वीकार करनेवाला; सं० भाष्; वै० -या,-वैया ।

भखवाइब क्रि० स० कहलवाना, कहने के लिए बाध्य करना; सं० भाष्; भा०-वाई, भविष्यवाणी करने की क्रिया, क्रम, मजदूरी आदि ।

भखाइब क्रि० स० कहलवाना, स्वीकार कराना; प्रे०-खवाइब,-उब; सं० भाष् ।

भगंदर सं० पुं० प्रसिद्ध रोग जिसमें गुदा से मवाद आता है ।

भग सं० स्त्री० स्त्री की गुप्तेंद्रिय; पुरुष की गाँड; सं० ।

भगउती सं०स्त्री० देवी, भगवती; भगवान-, देवता भवानी;-माई, दुर्गा जी; वै०-गौती; सं० भगवती ।

भगत वि० पुं० भक्त; जो मांस मछली न खाय; स्त्री०-तिनि,-न; भा०-ई,-ती; सं० भक्त ।

भगति सं० स्त्री० कीर्तन;-करब,-होब ।

भगदरि सं० स्त्री० भागने की क्रिया; घबराकर भागने का क्रम;-परब,-होब,-करब ।

भगतहा सं० पुं० एक जंगली पेड़ और उसकी लकड़ी ।

भगवा सं० पुं० छोटा सा कपड़ा जो गुप्तेंद्रियों पर गरीब लोग लपेट लेते हैं; स्त्री०-ई;-पहिरब, -बान्हब; सं० भग+वा ।

भगवान सं० पुं० परमात्मा, भगवान;-करै,-चाहैं; -जानैं, भगवान् की शपथ; जै-;-भगउती, परमात्मा की कृपा ।

भगाइब क्रि० स० भगाना, भगा ले जाना; वै० -उब, प्रे०-गवावब, भा०-ई,-गवाई ।

भगाई वि० स्त्री० भगाई हुई (स्त्री), जिसे कोई पुरुष भगा लाया हो ।

भगोड़ा सं० पुं० भागनेवाला या भागा हुआ व्यक्ति ।

भगोना सं० पुं० खुले मुँह का बर्तन (धातु का) जिसका ढकना अलग हो; बटुली की भाँति का बर्तन ।

भँकरइया सं० स्त्री० एक बूटी जो वर्षा में अधिक होती है; भृंगराज; सं०; वै०-रैया, भँग- ।

भँकरा सं० पुं० बोरे का टुकड़ा; पुराने कंबल का भाग ।

भचक सं० पुं० पैर की खराबी, चलने में अड़चन; क्रि०-ब, लँगड़ा कर चलना, भचक कर चलना; प्रे०-काइब, पैर मचकाना प्र०-क्का,-मारब (व्यं०) ।

भचभचाब क्रि० अ० 'भच-भच' का शब्द करना; प्र० भचर-भचर करब; भचाभच्च करब; अनु० ।

भजन सं० पुं० भक्ति का गीत;-गाइब,-करब; -नानंदी, जिसे भजन में आनंद आवे ।

भजब क्रि० स० भजना, ध्यान करना; प्रे०-जाइब, -उब ।

भजभजाब क्रि० अ० 'भज-भज' का शब्द करना (सड़े हुए द्रव, कीचड़ आदि का); अनु० ।

भटक सं० पुं० संदेह, दुविधा;-रहब,-करब ।

भटकब क्रि० अ० भटकना, प्रे०-काइब,-कवाइब ।

भटकोइया सं०पुं० प्रसिद्ध काँटेदार बूटी जो खाँसी की दवा है; वै० भँ- ।

भटवासी सं० स्त्री० एक जंगली पौदा जिसकी पत्तियों को उबालकर लगाने से जूँ मरते हैं ।

भट्ठा स० पुं० ईंट पकाने का भट्ठा; स्त्री-ट्ठी ।

भठब क्रि०अ० भट जाना, (कुँए, तालाब आदि का) बंद या पट जाना; प्रे० भाठब,-ठाइब,-ठवाइब,-उब; भा०-ठाई, पाटने की क्रिया, मज़दूरी आदि ।

भठिआरा सं०पुं० भट्ठी चलानेवाला, रोटी पकानेवाला (मुसलमान), खाना बेचनेवाला; स्त्री० -रिन ।

भड़ंग सं० पुं० दिखावा, व्यर्थ की बनावट;-करब; वि०-गी ।

भड़क सं० पुं० दिखावा; तड़क-,बाहरी टीम-टाम ।

भड़कब क्रि० अ० भड़कना; प्रे० -काइब,-उब ।

भड़कील वि० पुं० देखने में सुंदर; स्त्री०-लि; प्र० -खील ।

भड़भड़ाइब क्रि० स० 'भड़भड़' करना; पीटना (दरवाज़ा आदि) ।

भड़भड़ाब क्रि० अ० 'भड़भड़' होना; प्रे०-ड़ाइब ।

भड़भड़िया वि० बहुत बातें करनेवाला; वै०-आ ।

भड़भाड़ सं० पुं० काँटेदार जंगली पौदा जिसे संस्कृत में स्वर्णक्षीरी कहते हैं ।

भड़ाक सं० पुं० किसी बर्तन के फूटने का शब्द; -दें, ऐसे शब्द के साथ; प्र०-का ।

भड़ाभड़ सं० पुं० 'भड़भड़' की निरंतर आवाज; -होब,-करब ।

भतइल सं० पुं० हलवाह जो भाता (दे०) पर काम करे; भा०-ती ।

भतखवाई सं० स्त्री० ब्याह में भात खाने का नेग (दे०) जो समधी को दिया जाता है । भात+ खवाई; वै०-खउआ,-खौआ;-देब,-पाइब,-लेब ।

भतरहा वि० पुं० भूना या उबला हुआ पदार्थ जिस में कोई भाग गला न हो;-रहब; क्रि०-राब ।

भतरिन्हा सं० पुं० खाना बनाने वाला; भात+रिन्ह; (दे०) रीन्हब।
भतहा सं० पुं० भात (दे०) वाला; भात खाने वाला नातेदार; भात+हा; सं० भक्त।
भतार सं० पुं० पति, मालिक; सं० भर्तृ; वि० भतरहा (भतारवाली)।
भतिज-बहु सं० स्त्री० भतीजे की स्त्री; भतीज+बधू।
भतीज सं० पुं० भाई का लड़का; सं० भ्रातृज; स्त्री०-जि, भतीजे की बहिन।
भत्ता सं० पुं० घर से बाहर जाने का खर्च; यात्रा का पूरा व्यय;-लेब,-देब; 'भात' से ?
भथुरब क्रि० स० धीरे धीरे पर अच्छी तरह मारना; प्रे०-राइब,-रवाइब; दे० थुरब।
भदई सं० स्त्री० भादों में होनेवाली फसल; सं० भाद्र।
भदउहाँ वि० पुं० भादों का, भादों में होने वाला (फल, धूप); सं० भाद्र+हा; स्त्री०-हीं; वै०-वहाँ।
भद्-भद् क्रि० वि० 'भदभद' आवाज़ के साथ (गिरना); प्र०-द्-द्; भदर भदर; क्रि०-दाव, जल्दी जल्दी गिर पड़ना।
भद्राव क्रि० अ० खूब होना (पके फलों का), पक कर गिरना (आम का)।
भद्द सं० स्त्री० बदनामी, दुर्गति;-करब,-होब; वै० -द्दि।
भद्दरा सं० पुं० खराब मुहूर्त; कहा० घरी मेँ घर जरै नव घरी भद्दरा।
भद्दा वि० पुं० खराब; स्त्री०-द्दी; भा०-पन।
भद्र वि० पुं० जिसकी दाढ़ी मूछें मुँड़ी हों,-होब।
भनक सं० स्त्री० जरा सा शब्द, आवाज;-परब; क्रि०-ब, म-।
भनछब क्रि० अ० फिरते रहना, तलाश करना, मारा मारा फिरना; प्रे०-छाइब,-उब।
भनब क्रि० स० कहना, वर्णन करना; काव्य में ही प्रयुक्त हुआ है।
भनभनाब क्रि० अ० भन भन करना; रुष्ट होना, बोलते रहना।
भन्न सं० पुं० 'भन्न' की आवाज;-सें,-दें, ऐसी आवाज के साथ; क्रि०-आब, रुष्ट हो जाना।
भभक सं० पुं० जल उठने का क्रम; किसी बंद रखी हुई वस्तु की उत्कट गंध; क्रि०-ब, जल उठना, भीतर से जोर मारना, 'भ भ' की आवाज करना; प्रे०-काइब।
भभका सं० पुं० सत निकालने का बर्तन;-लगाइब।
भभकाइब क्रि० स० यकायक गिरा देना (द्रव को), उँड़ेल देना।
भभक्का सं० पुं० बड़ा सा छेद;-करब,-होब।
भभरिआब क्रि० अ० सूज जाना (बीमारी के बाद चेहरे का); भा० भभरी।
भभूति सं० स्त्री० विभूति;-देब,-लेब,-लागब; सं० विभूति।
भभ्भाब क्रि० अ० जलन होना (अंग में)।
भय सं० पुं० डर;-लागब,-करब,-खाब; सं०।
भयवादी सं० स्त्री० बिरादरी, भाईचारा; प्र० -वद्दी।
भयरो दे० भैरव।
भर उप० पूर्ति का द्योतक यह शब्द अन्य शब्दों में जोड़ दिया जाता है, उदा० पेट-, अँगुरी-, मन-, जिउ-, आँखि-; माप या तोल का भी यह सूचक है, सेर-, यक-(एक तोला) दुइ-, गज-, हाथ-,कोस-।
भरइत वि० पुं० जो भार ले जाय; दे० भार।
भरता सं० पुं० किसी फल या कंद आदि को आग में भूनकर उसमें तेल आदि डालकर बनाया हुआ साग;-करब,-होब, दबा देना, कुचलना।
भरती सं० स्त्री० भरती;-होब,-करब।
भरनी सं० स्त्री० एक नक्षत्र;-भद्दा, भिन्न-भिन्न नक्षत्र; फल (जइसन करनी तइसन-); सं० भरणी।
भरब क्रि० स० भरना, देना (कर्ज); प्रे०-राइब, -वाइब,-उब।
भरभर भरभर क्रि० वि० एक के पीछे दूसरे; -भागब; क्रि०-राब,-राइब।
भरम सं० पुं० भ्रम, भेद;-खोलब,-देब,-गँवाइब, -लेब; क्रि०-ब, भटकना; सं० भ्रम।
भरमाइब क्रि० स० भटकाना, प्रे०-मवाइब,-उब; भरमब (भटकना) का प्रे० रूप; सं० भ्रामय।
भरसक क्रि० वि० जहाँ तक हो सके; शायद, संभवतः यथाशक्ति; भर+शक्ति।
भरसा सं० पुं० छत को सँभालने के लिए भीत में से निकला हुआ लकड़ी का टुकड़ा; वै०-ड़-।
भरहा वि० पुं० किराये का; दे० भारा; स्त्री०-ही, जो (भैंस या गाय) 'भारे' (दे० भारा) से दूध दे।
भरा वि० पुं० पूरा, स्त्री०-री;-पुरा, अच्छी तरह भरा, संतुष्ट;-री-पुरी, (सधवा स्त्री) जिसके पुत्र पौत्रादिक हों।
भराइब क्रि० स० भराना, प्रे०-रवाइब; भा०-राई, भरने की रीति, मजदूरी या मिहनत, प्रे० भरवाई।
भरी सं०स्त्री०तोले की तौल; यक-, दुइ-; दे०भर।
भरुका सं० पुं० मिट्टी का छोटा प्याला; पुरवा; स्त्री०-रकी,-रुकी; वै० भुर-।
भरैया सं० पुं० भरने वाला; प्रे०-रवैया।
भरोस सं० पुं० भरोसा;-होब,-रहब,-करब, धरब।
भरोब क्रि० अ० भर भर करना।
भल वि० पुं० अच्छा, सुंदर; स्त्री०-लि;-होब,-करब; -भल, कितना ही, बहुत (प्रयत्न); वै०-लि-भलि।
भलभलुआ वि० पुं० जो अपने व्यवहार से दूसरे का शुभचिंतक जान पड़े, पर वास्तव में स्वार्थी हो;-बनब।
भलमनई सं० पुं० सज्जन; वै०-मानुस; भा० -मनसी; भल+मनई (दे०)।

भलर-भलर क्रि॰ वि॰ धारा प्रवाह, निरंतर (बहना, चूना); प्र॰ झुलुर-झुलुर।
भला सं॰ पुं॰ कल्याण;-करब,-होब; संयो॰ अच्छा (वाक्यों के प्रारंभ या अंत में आता है,-भला, बनके इहाँ क का हालि बा ?); कभी कभी प्रश्न सूचक भी है-बजार जाय के ई चीज़ ले आवो, भला ? भा॰-ई; सं॰ वर, बँ॰ भाल।
भलुहा सं॰ पुं॰ एक घास; लघु॰-ही।
भव सं॰ स्त्री॰ भूमि का आकस्मिक छेद;-फूटब; सं॰ भू।
भवतव्यता सं॰ स्त्री॰ होनी, भाग्य: वै॰ हो-।
भवन सं॰ पुं॰ विचार, मंसूबा, व्यर्थ की भावना; -मेँ रहब, व्यर्थ का मंसूबा बाँधना; सं॰ भावना।
भवसागर सं॰ पुं॰ संसार के झंझट; व्यर्थ के विचार;-मेँ परब, तर्क वितर्क में पड़ना; सं॰।
भवहिं सं॰ स्त्री॰ भौं;-सिकोरब, नाक-भौं सिकोड़ना, रुष्ट होना; सं॰ भ्रू।
भवानी सं॰ स्त्री॰ दुर्गा, काली; देवी-, देवता-, भगवान्-;-परै,-लेयँ, (तुम्हें) भवानी नष्ट करें ! स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त साधारण शाप; लड़की; कन्या (छोटी); सं॰।
भसींड़ि सं॰ स्त्री॰ कमलनाल जिसकी तरकारी बनाकर खाते हैं।
भसुआ दे॰ भरुआ-।
भसोट सं॰ पुं॰ शक्ति; प्राय: दूसरे को ललकारने के लिए प्रयुक्त; तोहार-बा ई कै लेबो ? क्या तुममें शक्ति है इसे कर लेने की ?
भहर-भहर क्रि॰ वि॰ जोर जोर से (जलना); -बरब,-जरब, खूब जलना।
भहराब क्रि॰ अ॰ गिर पड़ना; प्रे॰-राइब, गिरा देना (पेड़, भीत आदि),-रवाइब।
भाँज सं॰ पुं॰ रोक, विघ्न,-पारब, रोक देना, वै॰ -जो।
भाँजब क्रि॰ स॰ भांजना, प्रे॰ भँजाइब।
भाँट सं॰ पुं॰ गीत गाकर मांगने वाली एक जाति, भा॰ भँटैती,-भिखार, भिखमंगे।
भाँटा स॰ पुं॰ बैंगन;-यस, छोटा सा (व्यक्ति)।
भाँड़ सं॰ पुं॰ मसखरा, सभा में हँसी करनेवाला; भा॰ भँड़इती।
भाँड़ा दे॰ बरतन-भाँड़ा; स॰ भाण्ड।
भाँपब क्रि॰ स॰ भाँपना, पता लगाना।
भाँवरि सं॰ स्त्री॰ ब्याह में वर-बधू का चक्कर; -घूमब,-होब; सं॰ भ्राम्।
भाइब क्रि॰ स॰ अच्छा लगना।
भाई सं॰ पुं॰ भ्राता,-बंद, बिरादरी के लोग,-बंदो, बिरादरी,-चारा, दे॰ भाय, सं॰ भ्रातृ, पं॰ भ्रा।
भाउ सं॰ पुं॰ भाव, दर,-खुलब,-चढ़ब,-गिरब।
भाकुर सं॰ पुं॰ एक प्रकार की मछली।
भाखब क्रि॰ स॰ कहना, भविष्यवाणी करना; प्रे॰ भखाइब,-खवाउब,-उब, सं॰ भाष्।
भाखा सं॰ स्त्री॰ बोली, भाषा, बोलने का तरीका, कहा॰ खग जानै खग ही की-, सं॰।
भागब क्रि॰ अ॰ भागना, अलग होना, प्रे॰ भगाइब,-गवाइब,-उब।
भागि सं॰ स्त्री॰ भाग्य, वि॰-दार, अभागा; सं॰ भाग्य।
भाङि सं॰ स्त्री॰ भंग,-खाब,-घोंटब,-रगरब, कहा॰ लंगड़ भचंगड़ के तीन मेहरी, यक कूटै, यक पीसै, यक-रगरी। वि॰ भङेड़ी, जो भाँग खाता हो।
भाठब क्रि॰ स॰ भाठना, पाटना, भरना; प्रे॰ भठाइब,-ठवाइब,-उब; पेट-, किसी प्रकार जीवित रहना।
भाठी सं॰ स्त्री॰ भट्ठी।
भाफ दे॰ बाफ।
भाभरी दे॰ मसान-भाभरी।
भाय सं॰ पुं॰ भाई; सं॰ भ्रातृ, पं॰ भ्रा; फ़ा॰ बिरादर, अं॰ ब्रदर; तुल॰ रामलखन अस भाय।
भार सं॰ पुं॰ बोझ; बाँस के फट्टे के दोनों ओर लटकाया हुआ बोझ जो कंधे पर ले जाते हैं;-अड़इब, दूसरों का उत्तरदायित्व सँभालना;-देब, किसी नातेदार के यहाँ उत्सव आदि में भार द्वारा सामान भेजना; सं॰; फ़ा॰बार; वि॰ भरहृत (भार ले जाने वाला व्यक्ति)।
भारा सं॰ पुं॰ किराया, भाड़ा;-देब,-लेब; सं॰ भार से;-किराया,-केरावा;-लादब, भाड़े से गाड़ी आदि चलाना।
भारी वि॰ पुं॰ बड़ा, वज़नी, संभ्रांत (व्यक्ति); भा॰-पन; सं॰ भार+ई (बोझवाला)।
भारू वि॰ जो भारस्वरूप हो, जिसका भार न सँभाला जा सके (व्यक्ति);-होब, असह्य होना, -करब; सं॰ भार+ऊ।
भाला सं॰ पुं॰ बरछा;-मारब।
भालू सं॰ पुं॰ रीछ;-यस, जिसके शरीर पर बड़े-बड़े बाल हों, सं॰ भल्लूक।
भाव सं॰ पुं॰ दर;-ताव, मोल-भाव,-करब, का-, किस भाव ?
भावना सं॰ स्त्री॰ विचार; प्राय: गलत अन्दाज; -मेँ रहब, मुगालते में रहना।
भास सं॰ पुं॰ कीचड़ या पानी में धँस जाने की स्थिति;-होब; क्रि॰-ब, कीचड़ में फँस जाना।
भासब क्रि॰ अ॰ जान पड़ना; बाहर से दिखना।
भिंग सं॰ पुं॰ दोष, छिद्रान्वेषण;-पारब, आपत्ति करना।
भिखमंगा सं॰ पुं॰ भीख माँगनेवाला; स्त्री॰-गिनि; भा॰-मँगाई; सं॰ भिक्षा+माँगब; दे॰ मंगन।
भिखारी सं॰ पुं॰ भिक्षुक; स्त्री॰-रिनि;-दुखारी, कोई भी आवश्यकतावाला व्यक्ति; सं॰ भिक्ष्, वै॰-र, तुल॰ तापस बनिक भिखार।
भिच्छा सं॰ स्त्री॰ भिक्षा;-माँगब,-लेब;-भवन करब, भीख माँगकर काम चलाना; सं॰।

भिटहुर सं० पुं० उपलों या कंडों का समूह जिसे सुन्दरता से जमाकर रखा जाता है।-यस, लंबा-चौड़ा।

भिट्ट सं० पुं० तालाब के किनारे का ऊँचा भाग; -होब,-लागब, ऊँचा हो जाना (सड़कर या अधिक होकर); दे० भीट, सं० भित्ति (दीवार)।

भिड़काइब क्रि० स० (दरवाजों को) लगा देना, भिड़ा देना; वै०-उब।

भिड़न्ती सं० स्त्री० संघर्ष, भिड़ंत;-होब,-करब, -कराइब; प्र०-ड़न्त, वै०-ड़ानि।

भिड़ब क्रि० अ० भिड़ जाना, लड़ जाना; प्रे० -ड़ाइब, लड़ा देना, भिड़ा देना, एक दूसरे के सम्मुख कर देना।

भितराब क्रि० अ० अंदर जाना, प्रे०-राइब, भीतर ले जाना,-रवाइब,-उब।

भितरीं अव्य० भीतर, अंदर; प्र०-रैं,-रौं।

भितरैतिनि सं० स्त्री० स्त्री जो रसोई घर में हो; वै०-रहतिन।

भितल्ला सं० पुं० नीचे का भाग (रजाई, दुहरे कपड़े आदि का);वै०-रला (भीतर का); स्त्री०-ल्ली।

भितूरी सं० स्त्री० भीतर का स्थान; रसोई घर।

भित्तर क्रि० वि० अंदर, भीतर; क्रि०-तराब, अंदर जाना; वै०-तरीं, प्र०-तरैं,-तरै-भीतर, अंदर ही अंदर।

भिदभिदाब क्रि० अ० भिद-भिद करना; प्रे०-दाइब, -उब।

भिदिर-भिदिर क्रि० वि० निरंतर और धीरे-धीरे (पानी बरसना);-होब।

भिनउखा सं० पुं० प्रातःकाल;-खाँ, सवेरे; दे० भिनसार, भिनहीं, भियान, बिहान।

भिनकब क्रि० अ० भिनभिनाना (मक्खी आदि का); प्रे०-काइब।

भिनब क्रि० स० (द्रव का) भीतर प्रवेश करना; प्रे०-नाइब,-नवाइब।

भिनि वि० भिन्न, दूसरा; पृथक, अलग; सं०।

भिन्न दे० भिनि।

भिन्नही सं० स्त्री० प्रातःकाल;-होब; भिनही (दे०) का प्र० रूप; प्र०-हवैं,-हियैं (प्रातःकाल ही)।

भिभिआब क्रि० अ० चिल्लाना; "भी-भी" करना; दे० विविआब।

भियान सं० पुं० प्रातःकाल, बिहान;-होब;-करब, रात बिताना; क्रि० वि० कल, रात बीतने पर, प्र० -नै,-नौ।

भिरब दे०-ड़ब, अभिरब।

भिरही सं० स्त्री० भीड़ का समय; काम का समय।

भिराब क्रि० अ० लग जाना, व्यस्त हो जाना; प्रे० -राइब,-रवाइब।

भिरोजा सं० पुं० प्रसिद्ध सुगंधित औषध।

भिलनी सं० स्त्री० भील की स्त्री; वै० प्र०-ल-,-लि-, भीलिनि।

भिलभिलाब क्रि० अ० असहाय की तरह रोना।

भिलिरभिलिर क्रि० वि० फूट-फूटकर (रोना); असहाय की भाँति; 'भिल-भिल' शब्द करके (अनु०)।

भिहलाब क्रि० अ० बिखर कर खराब हो जाना; फूट जाना; प्रे०-लाइब,-उब।

भीखि सं० स्त्री० भिक्षा;-माँगब,-देब,-लेब; सं०।

भीज वि० पुं० भीगा; स्त्री०-जि; क्रि०-ब।

भीजब क्रि० अ० भीगना; मु० अनुभव होना; कटु अनुभव आना; प्रे० भेइब,-उब; कवने बिरिछ तर भीजत ह्वैहैं रामलखन दुनौं भाय ?-गीत।

भीट सं० पुं० तालाब के किनारे का ऊँचा भाग; टीला; वै० प्र०-टा, भिट्ट (दे०); सं० भित्ति।

भीतर क्रि० वि० अंदर; बाहर-, भितरै-, अंदरही अंदर; दे० भित्तर।

भीति सं० स्त्री० दीवार; सं० भित्ति।

भीम सं० पुं० प्रसिद्ध योद्धा जो पांडवों में सबसे बली थे; वि० महाबली।

भीर सं० स्त्री० भीड़, काम की अधिकता;-होब, -रहब,-करब; वै०-रि, क्रि० भिराब।

भीरा सं० पुं०(काँटों का) बोझ; यक-, दुइ-; स्त्री० -री, छोटा बोझ।

भील सं० पुं० प्रसिद्ध जङ्गली जाति और उसके व्यक्ति जो मध्य भारत में अधिक हैं; स्त्री०-लिनि, भिल्लिनी,-नि।

भुँकाइब क्रि० स० भूँकने या चिल्लाने को बाध्य करना; प्रे०-कवाइब, भा०-ई।

भुइँ सं० स्त्री० भूमि; क्रि० वि० भुइं, पृथ्वी पर; सं० भूमि, भू, म० भुई, उ० भुईं, पं० भुइ, पं० भू; -दगधा, भूमि को काम में लाने का कर जो उसका मालिक लेता है।

भुकतब क्रि० अ० भुगतना; वै०-ग-, प्रे०-ताइब, -उब, भा०-तानि; सं० भुज्, नै० भुकताउनु।

भुकतान सं० पुं० भुगताने का क्रम या अंत; वै० -ग-,-नि;-करब,-होब; सं० भुज्।

भुकुड़ी सं० स्त्री० वर्षा में कुछ वस्तुओं पर लगी सफेद काई;-लागब; क्रि०-इब।

भुकुर-भुकुर क्रि० वि० आँसू गिरा-गिराकर; "भूँ-भूँ शब्द करते हुए (रोना); अनु०।

भुक्खा सं० पुं० सत्तू;-खोर, जो सत्तू भी छीन ले, नीच, दरिद्र; दे० भूखा,-खोर।

भुक्खड़ वि० पुं० बहुत भूखा; स्त्री०-ड़ि; सं० बुभुक्षा।

भुखहर वि० पुं० भूख से त्रस्त; स्त्री०-रि;-दुखहर, -रू, दुखिया; सं० बुभुक्षा+हर।

भुखाब क्रि० अ० भूख से आक्रांत होना; वि०-खान, भूखा,-नि।

भुगतब दे०-क-।

भुगुति सं० स्त्री० भुक्ति; मृत व्यक्ति की स्मृति में एक ब्राह्मण का भोजन;-खाब; सं० भुज् (भुक्ति)।

भुग्गा सं० पुं० मूर्ख;-बनाइब, उल्लू बनाना।

भुच्चड़ वि० पुं० जिसकी समझ में बात जल्दी न आवे; स्त्री०-ड़ि।

भुजइटा सं० पुं० एक काला पक्षी जो कौए से कुछ छोटा पर उससे भी काला होता है; करिया-, बहुत ही काला; वै०-जैंटा।

भुजइनि सं० स्त्री० भूज की स्त्री।

भुजरी दे०-जुरी।

भुजवाइब क्रि० स० भुजाना, भुनवाना; 'भूजब' का प्रे० रूप।

भुजाइब क्रि० स० भूनने के लिए बाध्य करना या उसमें मदद करना; भूनने के लिए कहना; प्रे० -जवाइब; यह शब्द स्वयं 'भूजब' का प्रे० रूप है। भा०-ई, भूनने की मजदूरी या पद्धति; नै० भुटाउनु।

भुजाली सं० स्त्री० नैपालियों द्वारा प्रयुक्त कुकड़ी; -मारब।

भुजिआ सं० पुं० धान को भिगोकर उबालने का क्रम;-करब; वि० ऐसा तैयार किया हुआ (चावल); वै०-या; दे० अरवा।

भुजुरी सं० स्त्री० छोटा-छोटा टुकड़ा (प्रायः तरकारी का);-करब, काट डालना; क्रि०-रिआइब।

भुट्टब क्रि० स० सीधे आग में डालकर भूनना जैसे भुट्टा; प्रे०-वाइब, तङ्ग कराना।

भुट्टा सं० पुं० किसी भी अन्न की बाली जो सीधे आग में भूनी जाय; क्रि०-ट्टब।

भुड़कब क्रि० अ० भुड़-भुड़ करना (बर्तन, दर्वाजे आदि को) प्रे०-काइब।

भुड़काइब क्रि० स० भुड़भुड़ाना, (बर्तन अथवा दर्वाजे को) हिलाना।

भुड़भुड़ाइब क्रि० स० भुड़-भुड़ की आवाज करना (दर्वाजे, बर्तन आदि में)।

भुड़भुड़ाब क्रि० अ० भुड़भुड़ होना; प्रे०-इब, -उब।

भुतहा वि० पुं० भूतवाला; स्त्री०-ही; भूत+हा।

भुताब क्रि० अ० भूत की भाँति व्यवहार करना; भूत हो जाना; डर-, भूत के डर से आक्रांत हो जाना; डरभुति जाब, इस प्रकार डर जाना।

भुताही सं० स्त्री० भूतों के प्रकोप की निरंतरता; -होब,-परब, भूतों के प्रकोप होते रहना; भूत+आही।

भुनगा सं० पुं० मच्छड़ की तरह का एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

भुरका सं० पुं० दे० भरूका; स्त्री०-की; प्र० भो-।

भुरभुरा सं० पुं० गुबरैले की तरह के कीड़े जो गंदी जगह की मिट्टी चालते हैं;-लागब।

भुरभुराइब क्रि० स० भुरभुराना, छिड़कना (आटे की भाँति)।

भुर्र-भुर्र क्रि० वि० भुर्र-भुर्र शब्द करके (उड़ना); प्र० भुरर-भुरर।

भुर्रा वि० खुला हुआ; जो गोली के रूप में बँधा न हो (तंबाकू, शकर आदि)।

भुलभुलाइब क्रि० स० (फल आदि को) आग में थोड़ा सा भून लेना।

भुलवाइब क्रि० स० भुलाना, भूलने में सहायता करना, गुम कर देना (व्यक्ति को, छोटे बच्चे आदि को); वै०-उब।

भुलाइब क्रि० स० भुला देना; प्रे०-लवाइब, -उब।

भुलाब क्रि० स० भूलना; भा० भुलावा,-देब, चरका या धोखा देना; प्रे० भुलाइब,-लवाइब,-उब; भुलान-भटका, भूला-भटका।

भुलुर-भुलुर क्रि० वि० आँसू गिरा-गिराकर (रोना); अनु०।

भुलैया सं० पुं० भूल जानेवाला; वै०-आ।

भुलौआ सं० पुं० भुलावा।

भुवन सं० पुं० भुवन; सं०।

भुवर वि० पुं० भूरा; स्त्री०-रि; क्रि०-राब, भूरा हो जाना; वै०-अर, प्र० भू-, भा०-ई,-पन।

भुवा सं० पुं० सफेद बाल की सी चीज़ जो कुछ फूलों तथा पेड़ों में से निकलती है;-क नदी में परब, व्यर्थ की कल्पना करते रहना; क्रि०-ब, फूलना, भुवा निकलने की स्थिति पर पहुँचना; वै० -आ, प्र० भू-।

भुसइला सं० पुं० घर जिसमें भूसा रखा जाय; वै०-उला,-उल।

भुसहा वि० पुं० जिसमें भूसा बहुत हो, स्त्री० -ही।

भुहराइब क्रि० स० छिड़कना (सूखी बुकनी, दवा आदि); प्रे०-रवाइब।

भूँई क्रि० वि० ज़मीन पर, फर्श पर;-भूईं, पैदल, सं० भूमि।

भूँकब क्रि० अ० भूँकना; व्यर्थ का और बार-बार कहना; प्रे० भुँकाइब,-कवाइब।

भूँखा वि० पुं० व्रती;-रहब, व्रत करना; स्त्री०-खी; -दूखा, भोजनहीन एवं दुखी।

भूँखि सं० स्त्री० भूख;-लागब;-मारब, भूख को दबाना; क्रि० भुखाब, भूखा होना; मु० इच्छा, ग़र्ज़;-होब।

भूँभुरि सं० स्त्री० आग से भरी हुई राख।

भूका सं० पुं० सत्तू की तरह की पिसी हुई अन्न की चीज़ जिसे बिना दाँतवाले फाँक सकें; सतुवा-, खाने का सामान, रास्ते का सामान;-छोर, जो खाने की चीज़ भी छीन या चुरा ले; नीच।

भूज सं० पुं० भार (दे०) रखने और नाज भूजने वाला; भड़भूजा; स्त्री० भुजइनि।

भूजब क्रि० स० भूजना, भूनना, तङ्ग करना, दुःख देना; प्रे० भुजाइब,-जवाइब।

भूजा सं० पुं० चबेना; कुछ भी अन्न जो भुना हो; वि० चंट, अनुभवी; कटु अनुभव प्राप्त; स्त्री०-जी;

-छोर, जो चबेना भी छुरा या छीन ले; दुष्ट एवं नीच।

भूत सं० पुं० शैतान;-भवानी, मनुष्यों को तङ्ग करनेवाले देवी देवता;-लागब,-उतारब,-छोड़ाइब; वि० भुतहा (जिसमें भूत हो),-ही; क्रि० भुताब, भूत की भाँति व्यवहार करना; दे० भुताईं।

भूवा दे० भुवा।

भूसा सं० पुं० भुस।

भूसी सं० स्त्री० नाज का छिलका; वि० भुसिहा, -ही, क्रि० भुसिआब।

भेंट सं० स्त्री० मुलाकात; उपहार, रिश्वत;-करब, -होब; वै०-टि, क्रि०-टाब (मिलना),-ब, गले मिलना;-घाँट, रिश्वत, मिलना-जुलना;-देब।

भेंड़ सं० पुं० विघ्न, छिद्रान्वेषण;-पारब, छिद्रान्वेषण करना, किसी बनते हुए काम में अड़ङ्गा डाल देना।

भेइब क्रि० स० भिगोना; 'भीजब' का प्रे० रूप; प्रे० -वाइब; वै०-उब।

भेख सं० पुं० भेस; आडम्बरपूर्ण पहनावा,-बनाइब; प्र०-खा,-सा; सं० वेश।

भेजब क्रि० स० भेजना; प्रे०-वाइब,-जाइब।

भेड़ा सं० पुं० भेड़ का नर; स्त्री०-ड़ी; क्रि०-ब, भेड़ी का गाभिन होना।

भेद सं० पुं० रहस्य, अंतर;-परब;-भाव, भिन्न व्यवहार; सं० भिद; वि०-दिहा,-या भेद जाननेवाला।

भेभन सं० पुं० मुँह से निकला हुआ थूक, पानी आदि;-निकरब,-निकसब।

भेव सं० पुं० रहस्य, अंतर;-परब; शायद 'भेद' का दूसरा रूप।

भेस दे० भेख।

भैंसासुर सं० पुं० प्रसिद्ध राक्षस; मु० बहुत खाने एवं सोनेवाला व्यक्ति; सुस्त व्यक्ति; सं० महिषासुर; वै० भइँ-।

भैआ दे० भैया।

भैनबहु सं० स्त्री भैने (दे०) की स्त्री।

भैनवार सं० पुं० बहिन के पुत्र, पुत्री आदि; यह शब्द समूहवाचक है। वै० भयन-।

भैने सं० पुं० स्त्री० बहिन का पुत्र या पुत्री; यह शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होता है। वै० भयनें, सं० भागनेय।

भैया सं० पुं० बड़ा भाई; पटवारी; बड़े भाई या अन्य प्रिय व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द; स्त्री० भउजी; वै० भइया; सं० भ्रातृ।

भैरव सं० पुं० प्रसिद्ध देवता; वै० भय-; सं०।

भैवद्दी सं० स्त्री० भाई का रिश्ता; वै०-वादी।

भैवा सं० पुं० भाई; अपनी उम्र के या छोटे लोगों को स्नेहपूर्वक संबोधित करने का शब्द; कहो-, नाहीं-, अरे-।

भोंकब क्रि० स० भोंकना; प्रे०-काइब,-कवाइब।

भोंकार सं० पुं० ज़ोर से रोने का स्वर;-छोड़ब, ज़ोर से रोना; क्रि०-करब, जोर से रोना।

भोंड़ी सं० स्त्री० पेट का मध्य भाग; यह शब्द प्रायः धमकी देने के ही लिए प्रयुक्त होता है, उ० भोंड़ी फोरि देब, पेट फाड़ दूगा; सं० भ्रूण।

भोंपा सं० पुं० भोंपू;-बजाइब, रो देना; स्त्री० -पी।

भोंभों सं० पुं० 'भों भों' शब्द।

भोंसड़ा सं० पुं० स्त्री का गुप्तांग (गाली में); स्त्री० -ड़ी; तोरे-मँ, दु तोरी-मँ।

भोग सं० पुं० देवता का भोजन; स्त्री-संभोग; -लगाइब, भोजन प्रारंभ करना,-करब, मैथुन करना, सुख या दुःख पाना, क्रि०-ब, उपयोग करना, सहना; सं० भुज्।

भोङा सं० पुं० लंबी वस्तु जिसमें आरपार बड़ा छेद हो; प्र०-ड़ा।

भोज सं० पुं० राजा भोज; कहा० कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली।

भोजन सं० पुं० खाना;-करब; सं०।

भोटिया सं० पुं० छोटा-मोटा एवं हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति।

भोथा वि० पुं० भद्दा एवं कम समझवाला व्यक्ति।

भोर सं० पुं० सवेरा,-होब;-करब, विलंब करना; -हरी, बहुत सवेरे,-हरें, सूर्योदय के पूर्व।

भोरइब क्रि० स० बहकाना, फँसाना, आकर्षित कर लेना (पुरुष-स्त्री का); प्रे०-वाइब; वै०-रब।

भोरका दे० भुरका।

भौंरा सं० पुं० भ्रमर; देस क-,चारों ओर घूमनेवाला; स्त्री०-री; सं० भ्रमर।

भौंरी सं० स्त्री० बालों का घुमावदार चक्कर (मनुष्य के सिर पर या पशु की पीठ आदि पर); -करब, घूम-घूमकर माल बेचना; क्रि०-रिआइब, जल्दी से भाँवर घूमकर ब्याह कर लेना; दे० भाँवरि।

भौंह दे० भवँहि।

भौचकब क्रि० अ० भौचक्का हो जाना; प्रे०-काइब।

भौजाई दे० भउजाई,-जी।

भौन दे० भवन।

मंगर दे० मङ्गुर ।

मंगली दे० मङ्गली ।

मँगाइब क्रि० स० मँगाना; प्रे०-गवाइब,-उब; वै० -उब ।

मँगुरी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली; पुं० मंगुर (दे०) ।

मंजूर वि० स्वीकृत;-करब, मानना,-होब; भा०-री, स्वीकृति; फ़ा०; दे० मनजूर ।

मंडल वि० बहुत सा, असंख्य; सं० ।

मंडली सं० स्त्री० बहुत लोगों का दल, गिरोह; तुल० खलमंडली बसै दिन राती ।

मंतर सं० पुं० मंत्र;-देब,-लेब, दीक्षा देना, लेना; माला-,-जंतर; वि०-रिहा, दीक्षित;-मारब,-करब, मंत्र की शक्ति प्रयुक्त करना; सं० ।

मंतरा सं० पुं० मात्रा; -देब,-लगाइब; सं०; झोरी-, थोड़ा-बहुत सामान, सारी संपत्ति (दरिद्र की) ।

मंतरिहा वि० पुं० मंत्र लिया हुआ व्यक्ति; स्त्री० -ही ।

मंतिरी सं० पुं० सलाहकार;-क पूजा, ब्याह तथा जनेऊ के समय होनेवाली एक पूजा जो वर के माता-पिता करते हैं । सं० मातृका ।

मंथरा सं० स्त्री० कैकेयी की दासी जिसकी कथा रमायण में है ।

मंद-मंद क्रि० वि० धीरे-धीरे; प्र०-दें-दें ।

मंदाग्नि सं० स्त्री० रोग जिसमें पाचन शक्ति मंद हो जाती है; सं० ।

मंदिर सं० पुं० मंदिर; सुन्दर घर; तुल० मंदिर ते मंदिर चढ़ि जाई ।

मंदी सं० स्त्री० सस्ती; बाजार में भावों के कम होने की स्थिति;-होब,-रहब; सस्ती-।

मंसा सं० पुं० इच्छा, उद्देश्य; वै०-य, मनूसा; -फलब, इच्छापूर्ति होना (प्राय: आशीर्वाद रूप में प्रयुक्त-"तोहार मंसा फलै !"); सं० मनस् ।

मइआ संबो० हे माता ! 'माई' (दे०) का रूप जो संबो० या भावावेश में प्रयुक्त होता है। सं० मातृ ।

मइजिल सं० पुं० मंज़िल; दूर का स्थान; यक-, दुइ-; दूरी जो एक दिन में पूरी हो सके; फ़ा० ।

मइनि सं०स्त्री० एक जंगली पेड़ और उसका फल ।

मइल वि० पुं० मैला, गंदा; स्त्री०-लि; (२) मील; अं० माइल; दे० मील ।

मइला सं० पुं० गू;-खाब, बुरा काम करना ।

मइलाब क्रि० अ० मैला होना ।

मइलि सं० स्त्री० मैल ।

मई सं० स्त्री० मई का महीना; अं० मे !

मउका सं० पु० मौक़ा, अवसर; मौकः; वै०-वका (दे०) ।

मउगा सं० पुं० पुरुष जो स्त्रियों की भाँति बोले या वस्त्र पहने; वै० मौगा ।

मउज सं० पुं० आनंद, मन की लहर;-करब, मजा करना; वि०-जी, जो अपने मन की बात करे; मन-, भावावेश; मन-जी; फ़ा० मौज (लहर)।

मउजा सं० पुं० गाँव ।

मउति सं०स्त्री० मृत्यु; दुःखदायी बात, काम आदि; सं० मृत्यु; लै० मार्ट ।

मउन वि० पुं० मौन, चुपचाप;-नी, जो मौन रहे; सं० ।

मउना सं०पुं० मूज का टोकरा; स्त्री०-नी, डलिया ।

मउर सं० पुं० मौर; दूल्हे के सिर पर रखने का फूल पत्तों का बना ताज; स्त्री०-री, मौर जो दुलहिन के सिर पर रखा जाता है। सं० मौलि (सिर); क्रि०-राइब, हिलाना; गाँड़ि-, व्यर्थ घूमते रहना ।

मउसा सं० पुं० मौसी का पति;-सी, माँ की बहिन; वै०-सिआ;-या;-सिआउत भाई, मउसी का लड़का; कहा० चोर-चोर-भाई; सेंति क धान मउसिया क सराधि; आन्हरि मउसी चूमै मचवा, मैं जानौं मोरि बहिनि क बेटवा ।-सियान, मौसी का घर या गाँव; बँ० मास; सं० ।

मउहारी दे० महुआ,-री ।

मकना सं० पुं० पतला कपड़ा; बँ० फ- ।

मकरा सं० पुं० मकड़ा; स्त्री०-री, मकड़ी; (२) एक अन्न जिसकी बाल मकड़े की भाँति गोल-गोल होती है ।

मकलाब क्रि० अ० चिल्लाकर दौड़ना (भैंस का); बिना काम के घूमते रहना; वै० मच-,-नाब; दे० मकुना ।

मकाई सं० स्त्री० मक्का ।

मकान सं० पुं० घर;-मालिक, घर का मालिक; फा० ।

मकाबिला सं० पुं० तुलना, आमना-सामना, बातचीत;-करब,-होब; फ़ा० मुकाबल: ।

मकाम दे० मोकाम ।

मकुना स० पुं० हाथी जिसके बाहरवाले दाँत न हों; छोटा हाथी ।

मकुनी सं० स्त्री० मोटी रोटी जो मटर चने या जौ के आटे की बनती है ।

मकूला सं० पुं० कहावत;-कहब ।

मकोरब क्रि० स० धीरे-धीरे आराम से खाना; प्रे०-रवाइब; वै०-लब; मकोला (नर्म ताज़ा चारा) ।

मखउड़ा सं० पुं० व्य० प्रसिद्ध स्थान जहाँ दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। यह अयोध्या के पास सरयू के उत्तर ओर है जहाँ प्रति वर्ष मेला लगता है। सं० मख।

मखउलिया सं० पुं० मज़ाक, हँसी;-उड़ाइब; अर० मखौल।

मखमल सं० पुं० प्रसिद्ध कपड़ा; बारीक कीमती वस्त्र;-यस; वे०-क ; फ़ा० मखमल।

मखाना सं० पुं० पानी में होनेवाला एक पौदा और उसका फल जिसके भुने हुए लावे दूध में खाये जाते हैं। वै० तात-।

मगन वि० पुं० प्रसन्न;-होब,-रहब; स्त्री०-नि; सं० मग्न।

मगहर सं० पुं० व्य० अयोध्या तथा गोरखपुर के बीच प्रसिद्ध स्थान जहाँ कबीर की समाधि है। -रिआ, मगहर का बना ( कपड़ा या गाढ़े का जोड़ा)।

मगहा सं० पुं० मगध, काशी क्षेत्र के बाहर का प्रदेश।

मग्घा सं० पुं० मघा नक्षत्र।

मघाड़ब क्रि० स० माघ में खेत का जोतना; प्रे० -घवाइब।

मघोचर सं० पुं० सीधा-सादा देहाती; स्त्री०-रि; भा०-ई।

मङता सं० पुं० माँगनेवाला, याचक; स्त्री० -तिनि।

मङनी सं०स्त्री० उधार दी हुई वस्तु; उधार;-माँगब, -देब,-लेब,-लाइब,-आइब; (२) छोटी जातियों का व्याह के पूर्व का रस्म जो ब्राह्मण ठाकुरों की तिलक की भाँति होता है,-होब,-करब।

मङरइलि सं० स्त्री० मँगरैल, एक मसाला।

मङरा सं० पुं० रोग या उसका कीड़ा जो आलू, शकरकंद आदि में लगता है; क्रि०-ब, ऐसे रोग से ग्रस्त होना।

मङवाइब दे० मँगाइब।

मङकन सं० पुं० भिखमंगा; स्त्री०-नि।

मङर सं० पुं० मंगलवार; वै० मंगर।

मङरि सं० स्त्री० छप्पर या खपरैल के बीच का भाग जो सबसे ऊँचे पर रहता है।

मङली वि० जिसकी जन्मपत्री में पति या पत्नी के शीघ्र मर जाने का योग हो।

मचक सं० स्त्री० मचकने की क्रिया।

मचकब क्रि० अ० मचक-मचक कर चलना; नखरा करना, नखरे की बातें करना; प्रे०-काइब; दे० चमकब।

मचब क्रि० अ० मचना; प्रे०-चाइब,-वाइब,-उब।

मचर-मचर सं०पुं० जूते या चमड़े की अन्य वस्तु की आवाज़;-करब,-होब।

मचवा सं० पुं० बड़ी मचिया; सं० मंच; कहा० आन्हरि मचसी चूमै मचवा।

मचाइब क्रि०स० मचाना;'मचब' का प्रे०;प्रे०-चवाइब,-उब; वै०-उब।

मचान सं० पुं० खेत की रखवाली करने के लिए गड़ा माचा (दे०) जिस पर खाट प्राय: बँधी रहती है; वै०-ना, माचा।

मचिआ सं० स्त्री० रस्सी या नेवार से बुनी छोटी चौकी; वै०-या; पुं०-चवा (दे०)।

मचिआइब क्रि० स० नाधना (बैलों को); प० अ०।

मछरिहा वि० पुं० मछलीवाला; जो मछली खाता हो; जिसमें मछली पकती हो; स्त्री०-ही; सं० मत्स्य।

मछरी सं० स्त्री० मछली;-कुछरी, निकृष्ट खाद्य; कहा० मछरी न कुछरी दयाल बहू उछरी; सं० मत्स्य।

मछवाह सं० पुं० मछली मारनेवाला; वै०-छु-; भा०-ही, मछली मारने का पेशा।

मजकिहा वि० पुं० मज़ाक करनेवाला; स्त्री०-ही; मज़ाक।

मजकूर वि० उल्लिखित; प्रायः कचहरी के काग़ज़ों में प्रयुक्त।

मजका सं० पुं० हास्य;-मारब, मज़े करना।

मजगर वि० पुं० बढ़िया, अच्छा; स्त्री०-रि;मज़ा +गर; क्रि० वि०-रें, सुख में, अच्छी स्थिति में।

मजगोदरा वि० पुं० बीचवाला; जो किसी ओर का न हो; स्त्री०-री; वै०-र; सं० मध्य।

मजदूर दे० मजूर।

मजब क्रि० अ० मँजना, साफ होना; प्रे० माजब, मजाइब, (दे०); सं० मज।

मजबूत वि० पुं० सबल, पुष्ट; स्त्री०-ति, भा०-ती; वै०-गूत।

मजबूर वि० पुं० बाध्य;-करब,-होब; भा०-री।

मजरुआ सं० पुं० वह खेत जिसमें खेती होती हो; गैर-, वह खेत या भूमि जिसमें कृषि न हो, परती।

मजलिस सं० स्त्री० सभा;-लागब।

मजहम सं० पुं० भेद, रहस्य;-पाइब।

मजा सं० पुं० आनंद; सुख;-करब,-देब,-लेब; वि० -दार,-जेदार,-री।

मजाइब क्रि० स० मजवाना; 'माजब' का प्रे०; वै० -उब; भा०-ई।

मजाक सं० पुं० हँसी;-करब; वि०-की,-जकिहा (दे०), प्र०-किया।

मजाज सं० पुं० अधिकार;-रहब,-होब।

मजाल सं० पुं० हिम्मत, बल,-होब,-रहब।

मजीठ सं० पुं० मजीठा जिसमें लाल रंग होता है।

मजीरा सं० पुं० मजीरा;-बजाइब।

मजुआब क्रि०अ० पीब से भर जाना (अंग, फोड़ा आदि); दे० माजु; सं० मज्जा।

मजुरिहा वि० पुं० मजदूरी का; स्त्री०-ही; दे० मजूरी।
मजूर सं० पुं० मज़दूर; स्त्री०-रिनि,-जुरनी; भा० -री, मजदूरी;-रहा,-ही, पुरुष या स्त्री जो इधर-उधर घूमकर मजूरी करे।
मजैया सं० पुं० माँजनेवाला; प्रे०-जवैया।
मझधार सं० पुं० बीच की धारा; अधूरा काम; निःसहाय स्थिति;-म छोड़ब; सं० मध्य+धार।
मझवाइब क्रि० स० मझाने में सहायता करना; दे० मझाइब।
मझाइब क्रि० स० (प्रांत या व्यक्तियों में) घूम-घूम कर अनुभव प्राप्त करना, जानना; भीतर जाना; सं० मध्य।
मझार अव्य० बीच में; प्रायः गीतों में और शब्दों के पीछे प्रयुक्त;-ठाईं, बीच में ही; गाँव-, गाँव के बीच में; सं० मध्य।
मझिअरिया सं० स्त्री० घर का वह भाग जहाँ भोजन बने; वै०-आ; सं० मध्य।
मझोला वि० पुं० बीच का; न बहुत बड़ा, न छोटा; स्त्री०-ली; सं० मध्य।
मटक सं० स्त्री० मटकने का ढंग; नखरा; चटक-, बाहरी दिखावट; क्रि०-ब,-काइब।
मटकब क्रि० अ० अंगों को टेढ़ा-मेढ़ा करके चलना, बोलना आदि; प्रे०-काइब, मुँह या हाथ टेढ़ा करके दूसरे को छेड़ने के लिए कुछ कहना।
मटका सं० पुं० (विशेषतः पशुओं की) आँखों से निकला हुआ अधिक मात्रा में एकत्रित सफ़ेद कीचड़;-बहब।
मटहा वि० पुं० जिसमें माटा (दे०) हों; स्त्री० -ही।
मट्टी सं० स्त्री० मिट्टी;-करब,-होब, व्यर्थ करना या होना; (२) शव;-देब, गाड़ना, दफ़न करना; सं० मृत्तिका; क्रि० मटिआइब, मिट्टी से साफ़ करना।
मट्ठर वि० पुं० सुस्त; जिसे काम करने की इच्छा न हो; स्त्री०-रि; भा०-ई; सं० मंथर।
मट्ठा दे० माठा।
मठ सं० पुं० मठ; कहा० बहुते जोगी मठ उजार; स्त्री०-ठिया, छोटा मठ, झोपड़ा।
मठहा वि० पुं० जिसमें मट्ठा हो (घी); दे० माठा।
मठारब क्रि० स० बार-बार जोतना; मु० किसी बात को अनेक बार कहते रहना।
मठाहिन वि० पुं० मट्ठे की गंधवाला;-आइब।
मठिआ सं० स्त्री० छोटा मठ; कुटी; झोपड़ी; दे० मठ।
मठेठब क्रि० स० (बात) सुनकर कुछ न करना; टाल देना; प्रे०-ठवाइब।
मड़ई सं० स्त्री० छप्पर, झोपड़ी; पुं० मड़हा, वै० -ड़ैया।
मड़क दे० मढ़क।
मड़राब क्रि० अ० मँड़राना; किनारे-किनारे चलते रहना; सं० मंडल।
मड़री दे० मेड़री।
मड़वा सं० पुं० ब्याह या जनेऊ का मंडप;-गाड़ब, -गड़ाइब; सं० मंडप।
मड़ुहा सं० पुं० छप्पर का ओसारा (दे०); स्त्री० -ई; लघु०-हला,-हिला; फ़ा० मरहलः।
मड़िआ सं० स्त्री० कीचड़; तालाब या नदी के भीतर का कीचड़;-मारब, (भैंस का) पानी के भीतर डूबकर कीचड़ में लोटना; वै०-या।
मड़िहा वि० पुं० जिसमें माड़ी (दे०) हो; स्त्री० -ही; वै०-आर, नया (कपड़ा), जो पानी में भिगोया न हो।
मड़ुआ सं० पुं० एक अन्न जो काला होता है; वै० मे-।
मड़ैया दे० मड़ई; राम-, एकांत घर; सं० मठ।
मढ़ सं० पुं० बोझ; व्यर्थ का उत्तरदायित्व; व्यक्ति जिसकी उपस्थिति से ऐसा उत्तरदायित्व बढ़े।
मढ़क सं० पुं० बाधा; सं० मरक (महामारी)।
मढ़ब क्रि० स० मढ़ देना, लाद देना, प्रे०-ढ़ाइब।
मत सं० पुं० राय, सलाह;-देब,-मिलब,-लेब; प्र० -ता; सं०।
मतलब सं० पुं० उद्देश्य, अर्थ; वि०-बी, स्वार्थी; -बी यार, परम स्वार्थी;-निकारब,-काढ़ब।
मतवना वि० पुं० जिसके खाने से सिर घूमने लगे (फल, अन्न आदि); स्त्री०-नी (कोदई); दे० मताइब।
मतवा सं० स्त्री० बूढ़ी माँ; हे माँ!;-जी,-राम; दू-, ज-! यह शब्द परम श्रद्धा दिखाने एवं प्रायः संबोधनार्थ ही प्रयोग में आता है। सं० मातृ।
मतवाइब क्रि० स० मता देना; पागल कर देना; 'मातब' (दे०) का प्रे० रूप; सं० मत्त।
मताइब क्रि० स० सिर घुमा देना; दे० मातब; भा०-ई।
मति सं० स्त्री० बुद्धि; प्रायः "मति भरष्ट होब,-करब" आदि प्रयोगों में ही यह शब्द आता है। (२) मत, दे० जिनि; दूसरे अर्थ में यह 'मत' का प्र० रूप है।
मत्थवानि सं० स्त्री० मत्थे में पानी स्पर्श करने की क्रिया;-करब; यह क्रिया किसी तीर्थ स्थान पर तब की जाती है जब या तो स्नान करनेवाला जल्दी में हो या बीमारी के कारण स्नान न कर सके।
मथब क्रि० स० मथना; प्रे०-थाइब,-थवाइब; सं०।
मथुरा सं० पुं० प्रसिद्ध नगर;-जी;-बिन्द्रावन, ब्रज-धाम।
मथुरिआ वि० पुं० मथुरावासी;-चौबे।
मद सं० पुं० घमंड, गर्व;-करब,-होब;-भरा, नशीला;-होस, गर्व या नशे में चूर; सं०।

मदति सं० स्त्री० मदद; मजदूरों का झुंड;-करब, -लागब: मदद् ।
मदनो सं० स्त्री० स्त्री का गुप्तांग; मदन का घर; गालियों के गीतों में: वै० मे-।
मदरसा सं० पुं० स्कूल; वि०-सिहा; पढ़नेवाला; अर०-सः ।
मदरिस सं० पुं० अध्यापक; वै० मु-, मो-।
मदामा वि० सदा रहने या होनेवाला; बारहमास चलनेवाला; वै० मो-।
मदार सं० पुं० आक; सं० मंदार ।
मदारी सं० पुं० बन्दर नचानेवाला।
मदाहिन वि० पुराने गुड़ या राब की गंधवाला; -आइब, ऐसो गंध देना ।
मदोवरि सं० स्त्री० मंदोदरी; रानी-, रावण की रानी: प्रायः गीतों में प्रयुक्त: सं० ।
मद्दा वि० पुं० सस्ता: स्त्री०-द्दी ।
मद्धिम वि० कम, द्वितीय श्रेणी का:-होब,-परब, कम हो जाना (दर्द आदि); क्रि०-धिमाब, घटना, कम होना: सं० मध्यम ।
मद्धे क्रि० वि० हिसाब में, सम्बन्ध में; सं० मध्य; यह शब्द प्राय: हिसाब सम्बन्धी है ।
मधन्ध वि० पुं० सुस्त; भा०-ई; स्त्री०-धि ।
मधु सं० स्त्री० शहद;-कै माछी, मधुमक्खी ।
मन सं० पुं० हृदय;-करब, इच्छा करना;-होब; -राखब, इच्छापूर्ति करना;-लगाइब;-जउकी, जो अपनी इच्छा से ही प्रेरित होकर काम करे;-पवन, स्वतन्त्र इच्छा;-चित, पूरा ध्यान ।
मनई सं० पुं० मनुष्य, व्यक्ति;-तनई, नौकर-चाकर ।
मनउती दे० मनौती ।
मनकब क्रि० अ० धीरे-धीरे आवाज़ करना; असंतोष प्रगट करना; दे० भनक, भनकब, मिनकब ।
मनका सं०पुं० छोटी माला; जपने की माला;कबीर-"करका मन का छाड़िके, मनका मनका फेर" ।
मनगढ़ंत वि० पुं० मन से गढ़ी हुई (बात); झूठी, काल्पनिक ।
मनगौ सं० स्त्री० एक प्रकार का अच्छा गन्ना ।
मनचलाक वि० जिसका मन चंचल हो; लालची; अनियंत्रित मनवाला; स्त्री०-कि, भा०-लकई ।
मनचाहा वि० पुं० मनवांछित; स्त्री०-ही ।
मनवनिया सं० स्त्री० मनाने की कोशिश;-करब, -होब; वै०-आ,-नावनि ।
मनाइब क्रि० स० मनाना, प्रार्थना करना; वै०-उब, प्रे०-नवाइब ।
मनाही सं० स्त्री० मना करने की बात; वै०मि-।
मनि सं० स्त्री० मणि;-बरब, चमकना, चेहरे पर रोब रहना; सं० ।
मनिहार सं० पुं० दूकानदार जो काँच तथा स्त्रियों के शृंगार का सामान बेचता हो; स्त्री०-रिन, भा० -री; सं० मणि+हार ।

मनोजर दे० मुनीजर ।
मनुआ सं० पुं० मन;-दर, ये शब्द छत पर चढ़कर गाँव की स्त्रियाँ उस दिन चिल्लाती हैं जब लड़के का ब्याह हो चुकता है । उस दिन दूल्हे के घर पर पूरा नाटक होता है और उसकी माँ का मजाक उड़ता है ।
मनुहारि सं० स्त्री० फुसलाने या मनाने की क्रिया; -करब,-होब ।
मनू सं० पुं० मनु;-जो,-महराज; सं० ।
मने क्रि० वि० भला; जरा सोचिये; सं० मन्ये (मैं समझता हूँ); वै०-नौ ।
मनेजर दे० मुनीजर ।
मनैआ सं० पुं० आदमी, नौकर; वै०-वा ।
मनैया सं० पुं० मनानेवाला; प्रे०-नवैया ।
मना क्रि० वि० जैसे, मानो; वै०-नौ, मा-।
मनाकानिका सं० पुं० काशी का प्रसिद्ध मनकर्णिका घाट ।
मनोकामना सं० स्त्री० हृदय की इच्छा: सं० मनः +कामना; तुल० पूजहिं मन कामना तुम्हारी ।
मनोरथ सं० पुं० मन की अभिलाषा ।
मनौती सं० स्त्री० किसी देवता को मानी हुई वस्तु या की गई प्रतिज्ञा;-मानब: वै०-नउती ।
ममता सं० स्त्री० अपनापन, प्रेम;-करब,-होब ।
ममानिअत सं० स्त्री० मनाही, रोक;-होब,-करब; वै०-यत; मु-।
ममारक सं० पुं० मुबारक;-करब,-होब,-रहब; वै० -ख; मुबारक; का०ममरखी (बधाई) ।
ममिआउत वि० मामा के यहाँ का;-भाई, मामा का लड़का,-बहिन, मामा की लड़की ।
ममिआ ससुर सं० पुं० पति का मामा; स्त्री० -सासु ।
ममूली वि० साधारण ।
मय अव्य० साथ ।
मया सं० स्त्री० प्रेम;-करब,-लागब,-होब; क्रि०-ब, प्रेम करना, स्नेह में व्याकुल होना ।
मरकब क्रि० अ० टूटने के पूर्व की सी आवाज करना; प्रे०-काइब, करीब-करीब तोड़ देना ।
मरकहा वि० पुं० जो मारता हो; बदमाश; स्त्री० -ही ।
मरना सं० स्त्री० (वंश में) मृत्यु हो जाने की अवस्था;-परब; फा० मर्ग (मृत्यु)+ई; भा०-की ।
मरघट सं० पुं० स्मशान; दे० मुर्दघट्टा; मर+ घाट ।
मरचा सं० पुं० लाल मिर्च; स्त्री० मर्चि, मरिच (काली मिर्च);-यस, बहुत कड़वा;-लागब, बहुत बुरा लगना; वि०-चहा, लाल मिर्चवाला (खेत, बर्तन आदि) ।
मरजि सं०स्त्री० रोग; वि०-हा,-ही; मर्ज; वै०-मर्जि ।
मरजी सं० स्त्री० इच्छा, कृपा;-करब,-होब, कृपा करना, होना; मर्जी ।

मरट्ठा दे० मरहठा ।
मरतकहा वि० पुं० दुबला-पतला, बीमार; मरणासन्न; स्त्री०-ही; सं० मृत्यु ।
मरदई सं० स्त्री० बहादुरी, मर्द का सा व्यवहार; -करब; मर्द+ई ।
मरदवा संबो० हत्तेरे की ! भले आदमी ! वै०-दे ! -दे आदमी !
मरन सं० पुं० मरण, मृत्यु;-होब; स्त्री०-नि, परेशानी, आफत;-नी,-नी करनी, मृत्यु सम्बन्धी कार्यक्रम ।
मरब क्रि० अ० मरना, कष्ट करना, नष्ट होना; प्रे० मारब, मरवाइब; जरब-, सब कुछ करना, दुःख उठाना; सं० मृ ।
मरभुक्खा सं० पुं० वह व्यक्ति जो भूख से मर रहा हो; स्त्री०-खी ।
मरम सं० पुं० मर्म, भेद, रहस्य ।
मरमराब क्रि० अ० मरं मरं शब्द करना, टूटने के निकट होना ।
मरमहित सं० पुं० विशेष प्रेम करनेवाला; घनिष्ठ संबंधी; हित-, खास लोग; सं० मर्म+हित ।
मरम्मति सं० स्त्री० मरम्मत; प्रबंध;-करब,-होब ।
मरर-मरर सं० पुं० मरं-मरं की आवाज;-करब, -होब ।
मरलहा वि० पुं० (अन्न) जो मारा हुआ हो; जिसमें पाला या ओला आदि लगा हो; स्त्री०-ही; वै० -रलहा,-ही ।
मरवट सं० पुं० पेटुवा (दे०) या सन जो पानी में भिगोया न गया हो; मजबूत सन ।
मरवाइब क्रि० स० मरवाना ।
मरसा सं० पुं० प्रसिद्ध साग; वि०-सहा (खेत) जिसमें मरसा बोया गया हो ।
मरहठा सं० पुं० महाराष्ट्र देश का निवासी; स्त्री० -ठिन,-नि; वै०-राठा, प्र०-ट्ठा।
मरहला दे० मड़हा ।
मरा वि० पुं० मृत; स्त्री०-री ।
मराइब दे० मरब, वै०-उब, भा०-ई, मरने या मारने की क्रिया; मुँह-, व्यर्थ का काम करना ।
मरायल वि० पुं० मरने के निकट; दबा हुआ; निर्बल; स्त्री०-लि; वै० मरियल ।
मराव सं० पुं० मराने का कार्यक्रम; मछरि-, मछली मारने का कार्यक्रम, शोरगुल का काम ।
मरिच दे० मरचा।
मरियल वि० पुं० मरणासन्न, दुबला-पतला; स्त्री० -लि ।
मरी सं० स्त्री० ग्राम देवी जिन्हें मरीमाई भी कहते हैं।
मरीज वि० पुं० रोगी; स्त्री०-जि ।
मरु क्रि० अ० मर;-सारे, (साले तू मर) हत्तेरे की ! यह वाक्यांश ऐसे समय पर कहकर किसी छोटे को संबोधित किया जाता है जब वह ठीक काम न कर रहा हो ।

मरुआ सं० पुं० एक पौदा जिसका पत्ता तथा फूल देवी को चढ़ाया जाता है; गीतों में प्राय; "दवना मरुअवा" (दे० दवना) आता है ।
मरोरब क्रि० स० (किसी अंग को) एंठ देना; प्रे० -रवाइब; वै० मि- ।
मर्द सं० पुं० पुरुष;-मनई,बहादुर व्यक्ति; क्रि०-ब, पूरा मर्द हो जाना (लड़के का), बालिग होना ।
मलंग सं० पुं० निर्जन स्थान में रहनेवाला मुसलिम भूत ।
मल सं० पुं० मैल, कचड़ा; शरीर के भीतर का मैल; सं० ।
मलगा सं० पुं० एक छोटी मछली जो पतली और चिकनी होती है ।
मलब क्रि० स० मलना; प्रे०-लाइब,-उब,-लवाइब; सं० मल=मैल (उतारना, निकालना) ।
मलमल सं० पुं० प्रसिद्ध बारीक कपड़ा ।
मलयागिर सं० पुं० एक पहाड़ जिसमें चंदन होता है;-चन्नन, वहाँ होनेवाला चंदन ।
मलहम सं० पुं० मरहम, घाव पर लगाने की दवा; -पट्टी करब, ऐसी दवा करना, सेवा करना ।
मलाई सं० स्त्री० दूध की मलाई; (२) मलने की क्रिया;-दलाई ।
मलाल सं० पुं० शिकायत एवं दुःख का भाव; -करब,-होब, ।
मलिआ सं० स्त्री० मिट्टी की लुटिया; वै०-या ।
मलिकई सं० स्त्री० मालिक का काम;-करब,-सम्हारब; दे० मालिक ।
मलिच्छ वि० पुं० गंदा, अपवित्र; भा०-ई,-पन; सं० म्लेच्छ ।
मलीदा सं० पुं० शकर घी एवं आटे का बना भोजन; बढ़िया खाद्य; फा० मलीद: (मला हुआ) ।
मलीन वि० पुं० (चेहरा) जिस पर आभा न हो; भा०-लिनई,-लिनपन; सं० ।
मलूकदास सं० पुं० प्रसिद्ध संत कवि; प्रायः "दास-मालूका" की छाप से इनके पद गाये जाते हैं ।
मल्लाह सं० पुं० एक जाति के लोग जो मछली मारने तथा नाव चलाने का काम करते हैं । अर० मलह (नमक); नमक बनाने वाला; ये लोग समुद्र के किनारे रहकर पहले नमक भी बनाते थे । -ही, नदीपार करने का कर; मल्लाह की मजदूरी ।
मल्हार सं० पुं० प्रसिद्ध राग जो वर्षा में गाया जाता है । वै०-लार ।
मवका सं० पुं० अवसर; प्र०-क्का; मोकः;-परब, -पाइब,-रहब ।
मवक्किल सं० पुं० वकील के पास जानेवाला व्यक्ति ।
मवजा सं० पुं० गाँव; वै०-उजा, मौ-, दे० मउ-; मौजअ ।
मवजी वि० जिसके मन में तरंग आवे; आनंद

करनेवाला;-उजी; वै० मौजी; फा० मौज (तरंग) दे० मउज।

मवजूद वि० वर्तमान, उपस्थित; वै० मौ-, मह-, फा०।

मवनी दे० मउन, मउना।

मवला वि० मस्त; अवला-, मनमौजी; अर० मौला।

मवसिआन दे० मउसिआ।

मवादि सं० स्त्री० पीब, मवाद;-परब, पीब पड़ जाना।

मवेसी सं० पुं० जानवर; पालतू पशु; मवेशी;-खाना कांजीहौस (दे०)।

मसक सं० पुं० मशक; भिश्ती के पानी लाने का चमड़ा।

मसकब क्रि० स० दबाकर फोड़ना, फाड़ना; इस प्रकार फटना, फूटना; प्रे०- काइब।

मसका सं० पुं० मक्खन।

मसकुर सं० पुं० मसूड़ा।

मसखरा सं० पुं० हँसी करनेवाला;-री, हँसी; भा०-पन।

मसनंद सं० पुं० मसनद, गद्दी-तकिया; गद्दी।

मसनिआइब क्रि० स० थोड़ा पानी मिलाकर सानना; प्रे०-वाइब।

मसमस वि० पुं० कुछ भीगा हुआ; स्त्री०-सि; क्रि० -साब, नमी के कारण गिर जाना (दीवार आदि का)।

मसरफ सं० पुं० काम, उपयोग;-लायक, उपयोगी।

मसलहति सं० स्त्री० नीति, रहस्य।

मसवदा सं० पुं० पांडुलिपि; अदालती लेख; वै० -सौदा; मसविदः।

मसहरी सं० स्त्री० मच्छड़दानी;-लगाइब; वै०-से-; सं० मशक+ह (जिसमें मच्छड़ न लगें)।

मसहूर वि० पुं० प्रसिद्ध; स्त्री०-रि; मशहूर।

मसा सं० पुं० मच्छड़; सं० मशक;-माछी।

मसान सं० पुं० श्मशान;-भामरी, व्यर्थ का डर; -भामरी देखाइब; सं० श्मशान।

मसाल सं० पुं० मशाल;-देखाइब,।

मसाला सं० पुं० मसाला; वि०-दार।

मसी सं० स्त्री० रोशनाई; सं० मसि।

मसीन सं० स्त्री० मशीन, यंत्र; अं०; (२) वि० पुं० सुस्त; स्त्री०-नि।

मसुआही सं० स्त्री० मांस (विशेषतः सूअर का) खाने का समय;-करब,-होब।

मसुगर वि० पुं० मांस वाला, जिसमें अधिक मांस हो; स्त्री०-रि, सं० मांस+फा० गर।

मसुढ़ी सं० स्त्री० मसूर।

मस्त वि० पुं० मस्त; स्त्री०-स्ति, भा०-स्ती; वै०-हुत, -हती, क्रि०-स्ताब,-हताब।

महंत सं० पुं० मंदिर का सर्वोच्च अधिकारी, स्त्री० -न्तिनि; वै०-न्थ, भा०-न्ती,-न्थो,-न्थई।

महक सं० स्त्री० सुगंध, क्रि०-कब सुगंध देना, वि० -कौआ,-दार।

महङ वि० पुं० महँगा; स्त्री०-ङि, भा०-ङी, महँ-गाई।

महजनई सं० स्त्री० महाजनी,-करब, दे० महाजन।

महतीनि सं० स्त्री० मालकिन;-बनब; सं० महत्।

महतो सं० पुं० (वैश्यों में) ससुर या जेठ; वै० -तौ; सं० महत् (बड़ा)।

महब क्रि० स० मथना, मट्ठा तैयार करना; प्रे० -हाइब।

महमह महमह क्रि० वि० ज़ोर से (सुगंध फैलना), -महकब।

महरा सं० पुं० कहार; स्त्री०-रिन,-नि।

महराज सं० पुं० महाराजा; ब्राह्मण; भोजन बनानेवाला; स्त्री०-जिन,-नि।

महला सं० पुं० मकान की एक मंजिल; यक-, दु-, ति-, चौ-आदि।

महलि सं० स्त्री० महल; पत्नी (पहली-, पहली स्त्री; दुसरी-)।

महल्ला सं० पुं० नगर का एक भाग; टोला-,पड़ोस।

महा त्रि० पुं० बड़ा;-भारी, बहुत बड़ा; स्त्री०-ही; (२) महाब्राह्मण;-खाब, मरने के ११वें दिन महा-पात्र का भोजन।

महाजन सं० पुं० मालदार व्यक्ति; उधार देनेवाला; भा०-नी, महजनई (दे०)।

महातम सं० पुं० महात्म्य, महत्व; सं०।

महातमा सं० पुं० महापुरुष; व्यं० बदमाश, जिसका व्यवहार समझ में न आवे; सं०।

महावरा सं० पुं० अभ्यास, आदत;-करब,-होब।

महाभारत सं० पुं० विलंब से होनेवाली बात; -करब,-होब; वै० महनाभारत, प्र०-थ।

महामाई सं० स्त्री० महामाया, दुर्गाजी, काली; तुहैं-लेयँ, तू मरजा ! सं० महामारी,-माया।

महाल सं० पुं० गाँव का एक भाग; (२) वि० कठिन।

महावरि दे० मेहावरि।

महास सं० पुं० महान् व्यक्ति, महाशय; सं० महाशय।

महिआब क्रि० अ० वर्षा के लक्षण दिखाई पड़ना; चारों ओर से हवा चलकर बादल छाना; सं०।

महिन्ना सं० पुं० महीना;-महिना, प्रतिमास; -नवारी, प्रतिमास का, मासिक धर्म,-होब।

महिमा सं० स्त्री० महत्व, महिमा; सं०।

महिलवत सं० पुं० दोनों ओर रहने का स्वभाव; वै०-लई।

महीन त्रि० पुं० बारीक, पते की (बात); दे० मेहीं; -कातब, पते की बात कहना; स्त्री०-नि।

महीना सं० पुं० मास; दे० महिन्ना।

महुअरि सं० स्त्री० एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है।

महुआ सं० पुं० प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी अच्छी होती और फल-फूल बड़े काम आते हैं;-री महुए का बाग; वै०-वा ।

महुलाब क्रि० अ० मुरझाना;-लान, मुरझाया हुआ ।

महूँ सर्व० मैं भी;-क, मुझको भी ।

महूरत सं०पुं० मुहूर्त, अवसर,-करब, प्रारंभ करना; सं० ।

महेर सं० पुं० रुकावट, विघ्न;-जोतब,-करब,-डारब; वि०-री, विघ्न करनेवाला, बाधक ।

महेल्ला सं० पुं० खड़े उर्द या मसूर की खिचड़ी जिसमें खूब मसाला पड़ा हो ।

महेसी सं० स्त्री० बवासीर; वि०-सिहा, जिसे बवासीर हो; स्त्री०-ही ।

महोखा सं० पुं० एक बड़ी चिड़िया जो लाल-काले रंग की होती है; वै०-ख,-रंग, उस चिड़िया की भाँति का रंग; काला कत्थई रंग ।

महोबा सं० पुं० प्रसिद्ध स्थान जो आल्हा के गीत में वर्णित है और जहाँ का पान भी विख्यात है ।

माँगि सं० स्त्री० माँग;-काढ़ब, माँग निकालना ।

माई सं० स्त्री० माता; महा-(दे०), महामाई परैं, देवी का प्रकोप हो!;-क लाल, संभ्रांत व्यक्ति; सं० मातृ ।

माख सं० पुं० प्रेमपूर्ण शिकायत;-करब; क्रि०-ब; बुरा मानना; दे० अमरख,-ब ।

माखन दे० मसका ।

माघ सं० पुं० माघ का महीना;-घी, माघ में पड़ने वाला (दिन, पूर्णिमा, अमावस्या आदि); क्रि० मघाइब (दे०) माघ में जोतना; सं० ।

माङन सं० पुं० वरदान; माँगी हुई वस्तु;-माङब; गीतों में "मङन" ।

माङब क्रि० स० माँगना;-खाब, भीख माँगकर खाना; भीखि-; प्रे० मङाइब,-उब, मङवाइब ।

माचा सं० पुं० मचान,-गाड़ब; सं० मंच ।

माछी सं० स्त्री० मक्खी;-लागब,-बैठब (घाव पर मक्खी का अंडा दे देना); वनकै-, तोहार-, उनके या तुम्हारे पितर लोग (ऐसा करेंगे); मुहँ माँ-आवत जात है, व्यक्ति बहुत सुस्त है । क्रि० मछिआब, (पशु का) तुराने की कोशिश करना, घबराना ।

माजब क्रि० स० माजना, साफ करना; प्रे०मजाइब, -उब; सं० मार्जय ।

माजु सं० स्त्री० मवाद ।

माझा सं० पुं० शरीर का मध्य भाग (कमर)-कहा० यही जुवानीं माझा ढील ! (२) नदी के किनारे का प्रदेश; वि० मझहा, ऐसे प्रदेश का निवासी; सं० मध्य ।

माटा सं० पुं० लाल चींटा;-लागब; चिउँटा-।

माटी सं० स्त्री० मिट्टी; शव;-देब, गाड़ देना, दफन करना; वि० मटिहा; मु०-होब,-करब, व्यर्थ हो जाना या करना; दे० मट्टी; सं० मृत्तिका, क्रि० मटिआइब ।

माठा सं० पुं० मट्ठा; जिउ-करब, परेशान करना; जिउ-होब ।

माड़ सं० पुं० पकते चावलों का सफेद पानी; -काढ़ब; स्त्री०-ड़ी, सफेद पानी जो नये वस्त्रों में से धोने पर निकलता है;-ड़ी देब, कपड़े पर कलप देना; शव के दाह के बाद "माड़ काढ़ने" का कृत्य होता है जिसमें चावल का माड़ उड़द की दाल के साथ एक दोने में रखकर मृतात्मा को अर्पण किया जाता है ।

माड़व सं० पुं० मंडप (ब्याह एवं जनेऊ के समय का);-गाड़ब ।

माड़वारी सं० पुं० मारवाड़ का निवासी; व्यं० धन का लोभी ।

मात सं० स्त्री० माता; प्रायः व्यक्तिवाचक शब्दों के पूर्व लगता है. मात जानकी, मात केकयी; वै०-तु, सं० मातृ ।

मातब क्रि० अ० नशे में आना; प्रे० मताइब,-उब, -तवाइब,-उब; सं० मत्त; वि० माता,-ती ।

माता सं० स्त्री० माँ; हे माँ (स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त; नाहीं-, हु-); वै० मतवा; सं० मातृ ।

माथ सं० पुं० मत्था;-थें, ऊपर; हमरे-, तोहरे-; सं० मस्तक ।

मादा सं० स्त्री० स्त्री जाति; नर नहीं ।

मान सं० पुं० आदर;-करब,-राखब; क्रि०-ब;-जान, आदर-सत्कार; सं० ।

मानब क्रि० स० मानना, प्रेम करना; प्रे० मनाइब, -उब,-नवाइब,-उब;-जानब, आदर एवं प्रेम करना ।

माना सं० पुं० लकड़ी का एक बर्तन जिसमें नाज, दही, दूध आदि नापा जाता है; थक-, दुध-।

मानी सं० पुं० १६ सेर का तौल; एक मानी में १६ सेई (दे०) होती है ।

माफिक वि० अनुकूल ।

माफी सं० स्त्री० क्षमा; (२) भूमि या अन्य संपत्ति जो बिना मूल्य प्राप्त हो;-देब,-पाइब ।

मामा सं० पुं० माता का भाई; स्त्री०-मी, मामा की स्त्री; कउआ क-(दे० कउआ-) ।

मामूली वि० साधारण ।

माया सं० स्त्री० माया; मोह-,-जाल; सं० ।

मारक सं० पुं० रोकनेवाली, बंद करनेवाली (औषध); जैसे कफ कै-, पित्त कै-; वै०-ग ।

मारकीन सं० पुं० एक सफेद कपड़ा; वै०-लन-।

मारग सं० पुं० रास्ता; सं० मार्ग ।

मारन सं० पुं० मारण; मार डालने का मंत्र, उपचार आदि; सं० ।

मारफत अव्य० द्वारा ।

मारब क्रि० स० मारना;-पीटब,-काटब; प्रे० मराइब -रवाइब,-उब ।

मारु सं० स्त्री० मार; लड़ाई;-करब, टूट पड़ना, किसी वस्तु के लिए बहुत प्रयत्न करना, ललचाना; -काट, मार-काट ।
मारू वि० युद्ध सम्बन्धी (बाजा), जिसकी प्रेरणा से मार (लड़ाई) हो ।
माल सं० पुं० द्रव्य, रुपया-पैसा;-टाल; (२) बढ़िया पदार्थ;-खाब,-उड़ाइब; खजाना; वि०-दार, -वर, धनी;-पुआ, एक प्रकार का पकवान ।
माला सं० स्त्री० माला; जय-।
मालिस सं० स्त्री० तेल या औषध मलने की क्रिया;-करब,-होब ।
माली सं० पुं० फूल तथा बाग का काम करनेवाला; स्त्री०-लिन,-नि ।
मावस दे० अमावस ।
मास सं० पुं० महीना; क० एक-दुइ महना, राजा मरै कि सहना; सं० ।
मासा सं० पुं० तोले का भाग ।
मासु सं० स्त्री० मांस ।
माहूँ सं० पुं० छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो सरसों आदि के फूलों पर बैठता और बैठे-बैठे मर जाता है; व्यं० सुस्त व्यक्ति ।
मिअऑं दे० मेउऑं ।
मिउड़ी दे० मेउड़ी ।
मिचकुरी सं० स्त्री० छोटा पतला मेढक जो घरों के कोनों में रहता है;-यस, छोटा दुबला आदमी ।
मिजाँ सं० पुं० पसंद;-बैठब, हिसाब ठीक बैठना, प्रबन्ध होना; मीज़ान ।
मिजाइब क्रि० स० मिजाना; मीजने में सहायता करना; प्रे०-जवाइब ।
मिजाज सं० पुं० मिजाज;-करब, रोब गाँठना;-होब; वि०-जी, गर्व करनेवाला; मिज़ाज ।
मिजान सं० पुं० हिसाब; योग;-करब;-बइठाइब, हिसाब ठीक करना ।
मिठअ वि० मीठा; सं० मिष्ठ ।
मिठवाइब क्रि० स० मीठा करना; सं० मिष्ठ ।
मिठाई सं० स्त्री० मिठाई; सं० ।
मिठाब क्रि० अ० मीठा होना, मीठा लगना; प्रे० मिठवाइब; सं० मिष्ठ ।
मिठास सं० पुं० मीठापन; सं० ।
मिढ़ब क्रि० स० मढ़ना; प्रे०-ढ़ाइब,-ढ़वाइब,-उब; मु० झूठा अभियोग या षड्यंत्र खड़ा करना ।
मितऊ दे० मीत ।
मिताई सं० स्त्री० मित्रता; कहा० तिल गुर भोजन तुरुक मिताई, पहिल मीठ पाछे पछिताई ।
मिती सं०स्त्री०दिन, महीने के दोनों पक्षों के दिन ।
मिथिला सं० स्त्री० जनक का राज्य;-नगरी, जनकपुर ।
मिथौरी दे० मेथौरी ।
मिनकब क्रि० अ० ज़रा सी आवाज करना; दे० मनकब ।
मिनमिनाब क्रि० अ० मिन्न-मिन्न करना; अस्पष्ट बोलते रहना; धीरे-धीरे शिकायत करना ।
मिनहा सं० पुं० मना;-करब आ०-नाहीं, रुकावट, इनकार ।
मिन्न-मिन्न क्रि० वि० धीरे-धीरे बोलते हुए;-करब, धीरे-धीरे बोलना; क्रि० मिनमिनाब; वि०-नमिनहा, मिन्न-मिन्न करनेवाला, स्त्री०-ही ।
मिमिआब क्रि० अ० मी-मी या मे-मे करना(बकरी की भाँति); बेबसी के साथ चिल्लाना; वै०-याब; तु० मेमना ।
मियाँ सं० पुं० मुसलमान; बूढ़ा मुसलिम; फेर में पड़ा हुआ व्यक्ति; छका हुआ पुरुष;-जी; स्त्री० -इनि, वै०-आँ; फा० मियाँ, मध्यस्थ ।
मियाना सं० पुं० छोटी पालकी; वै०-आना ।
मियानि सं० स्त्री० मीयान; तलवार का घर ।
मिरगा सं० पुं० मृग; स्त्री०-गी; वै०-रिग; सं० ।
मिरगिहा वि० पुं० जिसे मिरगी (दे०) आवे; स्त्री०-ही ।
मिरगी सं० स्त्री० वह रोग जिसके कारण मनुष्य बेहोश होकर मुँह से झाग गिराता तथा हाथ-पैर पटकता है;-आइब ।
मिरचा सं० मिरचा; लाल मिर्च; स्त्री०-ची; मु० -लागब, बुरा लगना,-भरब, तङ्ग करना ।
मिरजई सं० स्त्री० छोटी अँगरखी, पुराने ढंग की कमीज; 'मिरजा' का पहनावा ?
मिरजा सं० पुं० मुसलमानों का एक संभ्रांत पद; मीर का पुत्र; अर० मीर+जा ।
मिरदंग सं० पुं० मृदंग ।
मिरदहा सं० पुं० कानूनगो और अमीन का सहायक ।
मिरुकब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना, थोड़ा सा ऐंठ जाना (किसी अंग का); प्रे०-काइब ।
मिरुग दे० मुरुग; वै०-गा ।
मिरोरब क्रि० स० मरोड़ देना, ऐंठ देना; प्रे० -रवाइब; ।
मिर्चि सं० स्त्री० काली मिर्च, छोटी पतली लाल मिर्च; वि०- चिहा, मिर्च खाने का शौकीन, स्त्री० -ही ।
मिलइब क्रि० स० मिलाना, एक करना; वै० -लाइब,-उब; प्रे०-लवाइब; सं० मिल् ।
मिलकियति सं० स्त्री० सम्पत्ति, जायदाद; वि० -दार; वै०-अति ।
मिलना सं० पुं० बारात में दोनों पक्षों के मिलने का रिवाज; ऐसे रस्म में दिया गया उपहार;-करब, -देब,-पाइब; मिलने का अवसर (गी०); सं० ।
मिलब क्रि० अ० मिलना; प्रे०-लाइब,-लइब,-उब, -लवाइब,-उब;-जुलब, मिलना-जुलना;-मिलाइब, मिलना मिलाना; सं० मिल् ।
मिलान सं० पुं० मिलान, तुलना;-करब, होब; सं०; वै०-नि ।

मिलावट सं० पुं० दूसरी चीज मिला देने की क्रिया; गड़बड़;-होब,-करब,-रहब; सं० ।
मिलि सं० स्त्री० मिल, कारखाना; अं० मिल; वि०-हा, मिलवाला; प्र० मी-।
मिलौनी सं० स्त्री० मिलाने की क्रिया, मजदूरी आदि ।
मिसिर सं० पुं० मिश्र; एक प्रकार के ब्राह्मण; स्त्री०-राइन,-नि; कहा० मिसिर करैं विसिर -विसिर रहिला नोन चबायँ ।
मिसिरी सं० स्त्री० मिश्री; माखन-, प्रिय खाद्य (कृष्ण जी का विशेषतः) ।
मिस्तिरी सं० पुं० कारीगर; भा०-पन,-गीरी ।
मिस्सी दे० मीसी ।
मिहरी दे० मेहरी ।
मिहावर दे० मेहावरि ।
मीजब क्रि० स० मीजना; रुपया बचाना, कंजूसी करना;-सारब, सेवा करना, हाथ पैर दबाना; प्रे० मिजाइब,-जवाइब ।
मीठ वि० पुं० मीठा, प्रिय; स्त्री०-ठि, क्रि० मिठाब (दे०) भा० मिठास,-ई; सं० मिष्ठ; प्र०-ठै-मीठ ।
मीठा सं० पुं० मीठी वस्तु; मिठाई; सं० ।
मीत सं० पुं० मित्र; भा० मिताई (दे०); सं० मित्र ।
मीन सं० पुं० प्रसिद्ध राशि;-मेख करब,-निकारब, आगा-पीछा सोचते रहना ।
मीयाँ दे० मिया ।
मीर वि० प्रथम, आगे;-परब,-रैं परब, अच्छी स्थिति में रहना; दे० दोल्ह (मीर-दोल्ह, बच्चों के कौड़ी के खेल के दो शब्द); अर० मीर, आज्ञादाता, शासक ।
मील सं० पुं० आधा कोस; अं० माइल ।
मीसी सं० स्त्री० मिस्सी;-लगाइब; सं०मिश्र (?) ।
मीही दे० मेही ।
मुँगवा सं० पुं० मूँगा; सं० मुद्ग (मूँग); मूँगे का आकार मूँग की भाँति होता है, इसी से इसका यह नाम पड़ा ।
मुअब क्रि० अ० मरना; प्रे०-आइब; सं० मृत; वि० -आ, मरा हुआ ।
मुइला वि० पुं० मुँह चुरानेवाला, मक्खीचूस; स्त्री०-ली ।
मुई वि० स्त्री० मरी हुई;-घिरीइब, किसी प्रकार काम चलाना; कहा० मुई बछिया बाभन के नाँव;
मुकछी सं० स्त्री० बरी;-काटब ।
मुकदिमा सं० पुं० अभियोग;-चलब,-करब,-चलाइब; वै० मो-, वि०-म्हा ।
मुकाम सं० पुं० स्थान; ठेकान-,-ठेकान, पता ठिकाना;-करब, ठहरना; वै० मो- ।
मुकाबिला सं० पुं० तुलना;-करब,-होब; (आमने-सामने बात कराना, होना) "मुकाबला" का विपर्यय ।
मुकिआइब दे० मुक्का; वै०-उब ।
मुकुर सं० पुं० शीशा, आईना; तुल० निज मन मुकुर सुधारि; सं० ।
मुकौआ सं० पुं० गुलवरि (दे०) का वह भाग जिधर से धुआँ, आँच आदि निकले ।
मुक्का सं० पुं० घूसा;-मारब; स्त्री०-की, क्रि० -किआइब, घूसा लगाना, धीरे मुक्की लगाकर शरीर दबाना;-मुक्की, घूसेबाजी; सं० मुष्टिक ।
मुख दे० मुँह ।
मुखड़ा सं० पुं० चेहरा;-देखब,-देखाइब ।
मुखतै क्रि० वि० मुफ्त ही;-मैं, मुफ्त में ही; वै० -कुत मैं; मुफ्त ।
मुखबिर सं० पुं० खबर देनेवाला; गुप्त भेद बतानेवाला; भा०-रई,-री (करब) ।
मुखानि सं० स्त्री० चेहरे की बनावट;-चीन्हब; सं० मुख ।
मुखिया सं० पुं० गाँव का मुख्य व्यक्ति; नेता; भा० -गीरी, मुखिया का काम; वै०-या, स्त्री०-इनि मुखिया की स्त्री; सं० मुख ।
मुगरा सं० पुं० बड़ी मुँगरी; स्त्री०-री; वै०-ग्दरा ।
मुगल दे० मोगल ।
मुचंडा सं० पुं० हट्टा-कट्टा युवक; वै० मो-, स्त्री० -डी ।
मुचमुचहा वि० पुं० ढीला-ढाला (व्यक्ति); स्त्री० -ही ।
मुचलिका सं०पुं० अपराधी का बन्धेज;-लेब,-होब-, -देब; प्र०-चा-, वै० मो-; जमानत-।
मुच्छाइब क्रि० स० एकाधिकार कर लेना; चुन लेना; दूसरे को न देना; वै०-उब ।
मुच्छारोइयाँ वि० पुं० नवयुवक; मुच्छ+रोवाँ (जिसकी मूछें अभी नहीं निकली हों);-गदह पचीसी, एकदम जवान; वै० मो-।
मुछाड़ा दे० मोछाड़ा ।
मुजरा दे० मोजरा, मोजर ।
मुदुर-मुदुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (चबाना); क्रि० मुदुराइब, धीरे-धीरे आराम से खाना या चबाना ।
मुतना वि० पुं० मूतनेवाला; स्त्री०-नी ।
मुतवाइब क्रि० स० मुताना, मूतने में मदद करना, मूतने को बाध्य करना; मु० परेशान या तङ्ग करना ।
मुताइब क्रि० स० मूतब (दे०) का प्रे० ।
मुदर्रिस सं० पुं० गाँव के स्कूल का अध्यापक; वै० मो-, भा०-र्सी; अ० दरस (शिक्षा) ।
मुनक्का सं० पुं० मुनक्का ।
मुनगा सं० पुं० सहिजन की फली ।
मुनरी सं० स्त्री० अँगूठी; कुँए की गोलाई, उसका व्यास; गी० मुनरी बरन करिहाँव, गोल पतली कमर; मुद्रिका ।
मुनवाइब क्रि० स० मूँदने में मदद करना, मूँदने के लिए बाध्य करना; 'मूनब' का प्रे० ।

मुनसरिम सं० पुं० जज का पेशकार।

मुनसी सं० पुं० मुहर्रिर, लेखक; स्त्री०-सिआइन, मुंशी की स्त्री।

मुनाइब क्रि० स० मूँदने के लिए बाध्य करना, मूँदने में सहायता करना; प्रे०-नवाइब; दे० मूनब।

मुनासिब वि० उचित, ठीक; वै० मो-।

मुनि सं० पुं० मुनि, ऋषि-; सं०।

मुनिआ सं० स्त्री० छोटी लड़कियों को संबोधित करने का प्यार का शब्द; पुं०-नुआ; राय-, एक छोटी चिड़िया (दे०)।

मुनिजर सं० पुं० प्रबंधकर्ता, अं० मैनेज (प्रबंध करना); भा०-री, वै०-नी-, मने-, मुने-।

मुनुआ सं० पुं० छोटे लड़कों को बुलाने का प्यार का शब्द स्त्री०-निआ; वै०-नू; दे० मुना।

मुनेजर दे० मुनिजर।

मुन्न सं० पुं० धीरे से बोलने का शब्द;-मुन्न, बहुत धीरे-धीरे; मुन्ना सं० पुं० छोटा बच्चा (पशु या मनुष्य का); स्त्री०-न्नी।

मुफट्ट वि० पुं० स्पष्टवक्ता; स्त्री०-ट्टि, प्र० मू-, मुह-; मुह+फट, जो फट से मुँह पर कह दे।

मुफ़ती वि० बिना मूल्य; प्र०-तै;-पाइब,-लेब।

मुफस्सिल वि० विस्तृत;-करब, विस्तारपूर्वक जानना, कहना आदि; वै० मुह-।

मुबारक वि० धन्य;-होब; वै० ममारक,-ख।

मुमुआब क्रि० अ० मूमू करना (बकरी की भाँति); दे० मिमिआब, बुमुआब।

मुरई सं० स्त्री० मूली;-गाजरि, साधारण (व्यक्ति); सं० मूल।

मुरकब क्रि० अ० ऐंठ जाना, कुछ टूट जाना; प्रे० -काइब।

मुरखई सं० स्त्री० मूर्खता;-करब।

मुरगा सं० पुं० मुर्गा; स्त्री०-गी;-गी यस, दुबला-पतला छोटा सा (व्यक्ति); फ़ा० मुर्ग (चिड़िया)।

मुरगाबी सं० स्त्री० पानी की चिड़िया; फा० मुर्ग+आब (पानी)।

मुरचा सं० पुं० मोर्चा; लड़ाई का मुख्य स्थान; -लेब,-ठानब, युद्ध करना; मोरचः; क्रि०-ब, मुरचे से प्रभावित होना।

मुरछा सं० स्त्री० मूर्छा, बेहोशी;-आइब।

मुरझुराब क्रि० अ० मुरझा जाना; दे० मुल-।

मुरदघट्टा सं० पुं० घाट जहाँ शव जलाये जायँ।

मुरदा सं० पुं० शव; वि० निर्जीव, निष्क्रिय।

मुरदार वि० पुं० (शरीर का भाग, चमड़ा) जो सूखकर निर्जीव हो गया हो; प्र०-रै।

मुरहठा सं० पुं० साफा, बड़ी पगड़ी; वै०-रेठा; -बान्हब।

मुरहा वि० पुं० चालाक, तरकीब करनेवाला; स्त्री० -ही, वै०-हंठ; भा०-राही; सं० मुरहा (मुर राक्षस को मारनेवाला) कृष्ण।

मुराई सं० पुं० मुराव (दे०); सं० मूल (कंद मूल आदि उत्पन्न करनेवाला); स्त्री० मुराइनि।

मुराद सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा;-पाइब, इच्छा प्राप्ति करना; वै०-दि।

मुराव सं० पुं० शाक भाजी की खेती करनेवाली एक जाति के लोग जो मांस मछली नहीं खाते; दे० कोइरी; स्त्री०-इनि।

मुराही सं० स्त्री० चालाकी, होशियारी;-करब।

मुरीद सं० पुं० चेला, शिष्य;-होब,-करब।

मुरेठा दे० मुरहठा।

मुरैला सं० पुं० मोर।

मुरब क्रि० अ० पेट का दर्द करना।

मुर्रा सं० पुं० एक प्रकार की भैंस; (२) पेट की ऐंठन; क्रि०-र्रब।

मुर्री सं० स्त्री० धोती का ऐंठा हुआ भाग जो कमर के चारों ओर बँधा रहता है।

मुलकाइब क्रि० स० पलक भाँजना; आँखि-; दे० मुल्ल-मुल्ल।

मुलकाति सं० स्त्री० मुलाकात, साक्षात्;-करब, -होब; वै० मुला-।

मुलझुलाब क्रि० अ० मुरझा जाना; वै० मुर-झुराब।

मुलायम वि० पुं० नर्म, स्त्री०-मि, भा० -मियति।

मुलाहिजा सं० पुं० विचार, सङ्कोच, ध्यान;-करब, -होब; वै०-ल-।

मुलुर-मुलुर क्रि० वि० चुपचाप बैठे-बैठे, बिना कुछ बोले (आँखें जल्दी-जल्दी बन्द करते तथा खोलते हुए); निःस्पृह (ताकते रहना); दे० मुल्ल-मुल्ल।

मुलेहठी सं० स्त्री० मुलहठी; दे० जेठी मधु।

मुल्ल-मुल्ल सं० पुं० (आँख) जल्दी-जल्दी बंद करने तथा खोलने की क्रिया;-करब; दे० मुल-काइब; प्र० मुलुर-मुलुर।

मुल्ला सं० पुं० बड़ा मौलवी, धार्मिक एवं कट्टर मुसलिम;-जी।

मुवा वि० पुं० मरा हुआ; स्त्री०-ई; दे० मुअब; (२) एक चिड़िया जो रात को "मुवा-मुवा" बोलती है। वै०-चिरई।

मुवाइब क्रि० स० मुअब का प्रे०।

मुसकब क्रि० अ० धीरे-धीरे हँसना; मुसकाना; भा०-की; सं० स्म।

मुसकानि सं० स्त्री० मुसकान; सं०।

मुसकी सं० स्त्री० व्यंगपूर्ण हँसी;-मारब।

मुसचंड वि० पुं० हट्टा-कट्टा; स्त्री०-ण्डि; वै० -टण्ड।

मुसम्माति सं० स्त्री० स्त्री; प्रायः विधवा स्त्री; अर०।

मुसम्मी सं० स्त्री० मुसंबी; प्रसिद्ध फल।

मुसरा सं० पुं० जड़ का मुख्य भाग।

मुसटी सं० स्त्री० चुहिया;-होब, चुपचाप या डरपोक बन जाना; क्रि०-रिआव,-याब ।

मुसवाइब क्रि० स० चुरवाना; दे० मूसब जिसका यह प्रे० है । सं० मूष् ।

मुसाइब क्रि० स० मूसब (दे०) का प्रे० ।

मुसोबति सं० स्त्री० आफ़त, दुःख;-मा परब ।

मुश्ति सं० स्त्री० मुट्ठी; यक-, एक ही साथ (रुपये आदि); फ़ा० मुश्त ।

मुह सं० पुं० चेहरा, मुँह;-ताकब, भरोसा करना, निर्भर रहना;-लुकवाइब,-देखाइब,-बाइब,-कौर, भरे मुँह का (उत्तर, आलोचना);-जोर, जोर से बोलनेवाला, निडर;-चोर, जो मित्रों से मुँह छिपावे;-तोर ।

मुहटिआब क्रि० अ० (फोड़े या घाव का) मुँह निकालना; सं० मुख ।

मुहटी सं० स्त्री० फुड़िया या घाव आदि का मुँह; वै० मो-, क्रि०-टिआब ।

मुहड़ा सं० पुं० सामना, भार;-आइब,-सँभारब, आवश्यकता पूरी कर सकना; वै० मो- ।

मुहताज वि० पुं० आवश्यकतावाला, दरिद्र;-होब, -रहब; स्त्री०-जि; मा०-जी ।

मुहर्रम सं० पुं० मुसलमानों का प्रसिद्ध त्योहार; वै० मो- ।

मुहलति सं० स्त्री० फ़ुर्सत;-पाइब,-लेब; वै० मो- ।

मुहावरा दे० महावरा ।

मुहाल वि० पुं० कठिन;-होब; वै० मो- ।

मुहासा सं० पुं० मुँह पर निकले दाने ।

मुहिम सं० स्त्री० लड़ाई की तैयारी; लड़ाई ।

मुहीं-मुहाँ सं० पुं० काना-फुसकी;-करब,-होब ।

मुहूरत दे० महूरत ।

मूआ दे० मुआ ।

मूका सं० पुं० घूसा;-मारब; क्रि० मुकिआइब, धीरे-धीरे बदन पर थपकी लगाना; सं० मुष्टिक ।

मूङा सं० पुं० मूँगा ।

मूङी सं० स्त्री० मूँग; वै०-ङि ।

मूज सं० पुं० मूज देनेवाली लंबी घास; सं० मुञ्ज ।

मूजि सं० स्त्री० मूज, जिसकी रस्सी बनती है; सं० मुञ्ज ।

मूठा सं० पुं० हथेली, बँधी हुई हथेली; मुट्ठी;-बान्हब; यक-, दुइ-, एक मुट्ठी, दो-; सं० मुष्टि, फ़ा० मुश्त ।

मूठि सं० स्त्री० बुआई का प्रारंभ;-लेब, ऐसा प्रारंभ करना;-क कोन, ईशान कोण; यह काम ईशान कोण से प्रारंभ होता है । सं० मुष्टि ।

मूड़ सं० पुं० सिर;-डारब, प्रारंभ करना; अ०-ड़ा; स्त्री०-ड़ी, क्रि० मुड़िआइब, प्रारंभ कर देना; -फोरब,-नाइब ।

मूड़न सं० पुं० मुंडन;-होब,-करब; सं० मुंड; दे० मूँड़नि; वै०-नि ।

मूड़ब क्रि० स० मूड़ना; प्रे० मुड़ाइब,-उब; सं० मुंड ।

मूत सं० पुं० पेशाब, मूत्र;-बंद करब, खूब तंग करना, परास्त कर देना; क्रि०-ब; सं० मूत्र ।

मूतनि सं० स्त्री० मूतने का चिह्न; बर्धा-, बैल के मूतने का टेढ़ा-मेढ़ा चिह्न (जो किसी से पढ़ा न जाय) ।

मूतब क्रि० स० मूतना, प्रे० मुताइब; खून-, आगि-, अत्याचार करना; सं० मूत्र ।

मूनब क्रि० स० मूँदना, ढकना; ताइब-; ढाकब-; प्रे० मुनाइब,-उब ।

मूर सं० पुं० मूल, मूलधन; सूद-, ब्याज तथा मूल; मूरै-, केवल मूलधन; सं० ।

मूरख दे० मूरुख ।

मूरुख सं० पुं० मूर्ख ।

मूलमंतर सं० पुं० मूलमंत्र, असली भेद; सं० -मंत्र ।

मूस सं० पुं० चूहा; स्त्री० मुसरी; सं० मूषक ।

मूसनि सं० स्त्री० चोरी; ढाबा-, चुराकर ले जाने की क्रिया; सं० मूष् ।

मूसब क्रि० स० चुराना; सब कुछ उठा ले जाना; ढोइब-; सं० ।

मेउड़ा सं० स्त्री० एक वृक्ष और उसकी पत्ती जो दवा में काम आती है ।

मेख सं० पुं० खूँटी या खूँटा जो पृथ्वी में गाड़ा जाय ।

मेघा सं० पुं० मेढक; स्त्री०-घी; पानी न बरसने पर बच्चे चिल्लाते हैं—"काल कलौती उज्जर धोती मेघा सारे पानी दे ।"

मेज सं० पुं० मेज़ ।

मेट सं० पुं० सड़क पर काम करनेवाले मजदूरों का जमादार; अं० मेट (साथी) ।

मेटब क्रि० स० मेटना, रोकना; प्रे०-टाइब ।

मेटा सं० पुं० मिट्टी का बड़ा बर्तन; स्त्री०-टी; वै० -टहा,-टवा ।

मेड़ सं० पुं० सीमा, मेड़; स्त्री०-ड़ी,-बान्हब;-बन्ही करब ।

मेड़ुआ सं० पुं० एक अन्न ।

मेथी सं० स्त्री० मेथी;-भूजब, रोब गाँठना ।

मेथौरी सं० स्त्री० बड़ी जिसमें मेथी पड़ती है; वै० -थउरी;-काटब ।

मेदनी दे० मदनी ।

मेदा सं० पुं० आमाशय ।

मेम सं० स्त्री० अंग्रेज की स्त्री; वै०-मि; अं० मैडम ।

मेर सं० पुं० प्रकार, मित्रता; वि० री, प्रेमी, क्रि० -इब, मिलाना,-उब; यक-, दुइ- ।

मेरइब क्रि० स० मिलाना, एक करना; प्रे०-राइब, वै०-उब ।

मेरचा दे० मरचा ।

मेरसा दे० मरसा ।

मेल सं० पुं० मैत्री;-करब,-लाब; वि०-ली, स्नेही ।

मेलहा वि० पुं० मेलावाला; स्त्री०-ही;-ठेलहा ।
मेला सं० पुं० मेला;-मेला, भीड़ ।
मेलान सं० पुं० एक प्रकार का भूत,-हाँकब, -करब ।
मेलावट दे० मिलावट ।
मेलिआ सं० स्त्री० मिट्टी का छोटा गोल बर्तन ।
मेली वि० मेलवाला, मित्र;-मनई; दे० मेल ।
मेवा सं० पुं० मीठा फल, बढ़िया चीज;-त, मेवे; -ति ।
मेहरारू सं० स्त्री० स्त्री, पत्नी; फा० मेहर (चाँद) + रू (मुँह) ।
मेहरी सं०स्त्री० जोड़, पत्नी, फा० मेहर (चाँद) ।
मेहावरि सं० स्त्री० स्त्रियों के पैर में लगाने का लाल रंग;-देब,-लगाइब ।
मेहीं वि० बारीक;-बाति;-मनई, दूर तक सोचनेवाला व्यक्ति ।
मैआ सं० स्त्री० माता; प्रायः संबोधन में प्रयुक्त; वै०-या ।
मैजिल दे० महजिल ।
मैदा सं० पुं० बारीक आटा, मैदा ।
मैना सं० स्त्री० प्रसिद्ध चिड़िया ।
मोखा सं० पुं० घास या खर (दे०) का बाँधा हुआ भाग; यक-, दुइ- ।
मोगल सं० पुं० मुग़ल; वै०-लिआ, स्त्री०-लाइन ।
मोघी वि० दुष्ट (प्रायः बच्चों के लिए) ।
मोच सं० पुं० किसी अंग के ऐंठ जाने से आई चोट;-आइब ।
मोची सं० पुं० चमड़े का काम करनेवाला, जूता बनानेवाला ।
मोछि सं० स्त्री० मूछ;-प ताव देब,-ऊपर रहब, -तरे होब; सं० श्मश्रु; वि० मोछाड़ा ।
मोजा सं० पुं० मोज़ा, पायताबा ।
मोट सं० पुं० चमड़े का बर्तन जिससे कुएँ में से पानी निकाला जाता है;-चलब,-चलाइब ।
मोट वि० पुं० मोटा, स्त्री०-टि, क्रि०-टाब, भा० -टाई ।
मोटमर्द वि० पुं० संतुष्ट, चिंताहीन; दूसरे की न सुननेवाला; भा०-र्दी,-ई; वै० स्वट-।
मोटरि सं० स्त्री० मोटर ।
मोटरी सं० स्त्री० गट्ठर, बोझ;-गठरी ।
मोटवाइब क्रि० स० मोटा करना; वै०-उब ।
मोटहा सं० पुं० बोझ ले जानेवाला, कुली ।
मोटाब क्रि० अ० मोटा होना, घमंड करना; कहा० मोटान खँसी लकड़ी चबाय ।
मोटासा वि० पुं० जो किसी का काम न करे, घमंडी; स्त्री०-सी ।
मोटिआ सं० पुं० मोटा कपड़ा, खद्दर; वै०-या ।
मोढ़ा सं० पुं० बेत और रस्सी का बना बैठका; स्त्री०-ढ़िआ ।
मोताब सं० पुं० अंदाज, अनुपात;-से ।
मोतिआबिंद सं० पुं० आँख का प्रसिद्ध रोग; वै० -या-।
मोती सं० पुं० मोती; मु० बहुमूल्य वस्तु ।
मोथा सं० पुं० एक घास जिसकी जड़ में सुगंध होती है ।
मोथी सं० स्त्री० मूँग की तरह की एक दाल और उसका पौदा ।
मोदर्रिस सं० पुं० दे० मुदर्रिस ।
मोदी सं० पुं० खाने-पीने का सामान बेचनेवाला दूकानदार ।
मोनासिब दे० मुनासिब ।
मोमि सं० स्त्री० मोम; वि०-मी,-मिहा ।
मोयन सं० पुं० निश्चय, निश्चित मूल्य;-करब, (मूल्य) निर्धारित करना;-होब; मुअय्यन ।
मोर सर्व० मेरा, स्त्री०-रि (कविता में 'मोरी') ।
मोरङ सं० पुं० दूर का स्थान; इस नाम का एक स्थान नैपाल में है; जो बड़ा अस्वास्थ्यकर है; दूरी के अर्थ में मुलतान भी आता है; नै० काल ले विरसे मोरङ भरनू, यदि मृत्यु तुम्हें भूल जाय तो मोरङ चले जाओ ।
मोरचा सं० पुं० लड़ाई का मुख्य स्थान;-करब, -होब,-लेब; (२) मुर्चा;-लागब; वै० मुर्चा ।
मोरछल सं० पुं० हवा करने का या मक्खी उड़ाने का सुसज्जित पंखा ।
मोरब क्रि० स० मोड़ना; प्रे-राइब,-उब ।
मोरब्बा सं० पुं० मुरब्बा ।
मोरम सं० पुं० ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े ।
मोरी सं० स्त्री० नाली ।
मोल सं० पुं० खरीद, दाम;-करब,-लेब;-भाव, दाम का ठीक-ठाक; क्रि०-वाइब, मोल करना;-लंस, जायदाद जो किसी व्यक्ति की खरीदी हुई हो, बपंस (दे०) न हो; मोल + अंश; बाप + अंश ।
मोह सं० पुं० प्रेम;-करब,-लागब; क्रि०-हाब, प्रेम करना; सं० ।
मोहबति सं० स्त्री० छत के नीचे लगी लकड़ी की पंक्ति; अर० महबत ।
मौका दे० मउका ।
मौगा दे० मउगा ।
मौन वि० पुं० चुपचाप;-व्रत, न बोलने का व्रत; स्त्री०-नि;-नी, साधु जो मौन रहे; सं० ।
मौना दे० मउना,-नी ।
मौहारी दे० मउहारी, महुआ,-री ।

# य

यइ वि० सर्व० यह; प्र०-ई, यही,-ऊ, यह भी; सं० एषः।
यक वि० पुं० एक, स्त्री०-कि; प्र०-क्कै,-क्कौ;-यक, एक एक;-हूँ, एक; सं० एक।
यकठा वि० पुं० अकेला, स्त्री०-ठी।
यकता वि० पुं० एक, बेजोड़, निराला।
यकबटब क्रि० अ० एक हो जाना; एकत्र होकर विरोध करना।
यकसठि वि० साठ और एक; सं० एकषष्ठि।
यकहरब क्रि० स० एक पर्त करना; वि०-रा, दुहरा नहीं।
यकहव वि० एकत्र; संगठित होकर एक; सम्मिलित; वै०-हौ।
यकाई सं० स्त्री० इकाई।
यकानबे वि० इक्यानबे।
यक्काह वि० पुं० पहला (ब्याह); दुआह नहीं।
यक्का सं० पुं० इक्का;-दुक्का, एक दो; यक्की-यक्कौं, क्रि० वि०; सं० एकाकी।
यक्की सं० स्त्री० ताश का इक्का;-दुक्की; तिक्की; क्रि० वि०-यक्कौं, एक की अकेले दूसरे से (कुश्ती, लड़ाई आदि); सहसा, अकस्मात्; सं०।
यगारह वि० ग्यारह; सं० एकादश।
यठईं क्रि० वि० इस स्थान पर; वै०-ठाईं,-ठावँ; ई (यह)+ठावँ (स्थान) दे०।
यड़ाव दे० अड़ाव।
यतना वि० पुं० इतना; स्त्री०-नी।
यत्तवार सं० पुं० इतवार, रविवार; सं० आदित्यवार।
यत्तै क्रि० वि० इस ओर, इधर और निकट;-वत्तै, इधर-उधर; वै०-त्तहि; सं० अत्र।
यथाउचित दे० जथा-।
यथापरमान क्रि० वि० जितना आवश्यक हो; वै० ज-।
यथुआ सर्व० जिस; वै० ज-।
यन सर्व० इन;-काँ, इनको,-सें; बहु०-न्हन,-न्हने; -न्है-वन्है, इन्हें उन्हें।
यपहर क्रि० वि० इस पर; (गों०); यह पह का विपर्यय।
यवमस्त क्रि० वि० अच्छा, ऐसा ही हो! प्र० ए-; सं० एवमस्तु।
यस वि० ऐसा, स्त्री०-सि; क्रि० वि० ऐसे, इस तरह; प्र० यहसै,-सनै,-सस;-यस, ऐसा ऐसा; -वस, ऐसा वैसा।
यसवँ क्रि० वि० इस वर्ष; वै०-सौं, प्र०-वैं (इसी वर्ष),-वौं (इस वर्ष भी)।
यसस वि० पुं० ऐसा ऐसा; स्त्री०-सि; क्रि० वि० इस प्रकार; प्र०-सै,-सौ।
यहर क्रि० वि० इस ओर;-वहर, इधर उधर; प्र० -रै,-रौ।
यहि वि० इसी; प्र०-ही,-हू।
यहीं क्रि० वि० इसी स्थान पर; प्र०-हूँ (यहाँ भी), इहाँ, इहैं।
याद सं० स्त्री० स्मरण;-करब,-रहब,-होब,-आइब; वै०-दि।
यार सं० पुं० दोस्त; भा०-री, दोस्ती; फा०।
यावत दे० जावत।
याहू वि० इस; वै०-हौ;-बाति, यह बात भी।

# र

रंक सं० पुं० दरिद्र व्यक्ति; राजा-।
रंग दे० रङ्ग।
रंच वि० पुं० तनिक;-भर, थोड़ा सा; स्त्री०-चि; प्र०-चै,-चौ; वै०-चा,-क।
रंज सं० पुं० शोक;-करब, दुःख मानना;-रहब, कष्ट होना; फ़ा० रंज।
रंजिस सं० स्त्री० तनातनी, रंजिश;-रहब,-होब।
रंडी सं० स्त्री० वेश्या;-मुंडी, दुश्चरित्र स्त्री।
रँड़ापा सं० पुं० वैधव्य;-खेहब, वैधव्य बिताना।
रँड़िरोवन सं० स्त्री० राँड़ का रोना; जीवन भर का दुःख।
रँड़पुतवा सं० पुं० राँड़ का पुत्र; दुलारा लड़का।
रंदा सं० पुं० लकड़ी को छीलकर बराबर करने की मशीन;-करब; क्रि०-दब, इस प्रकार बराबर या साफ़ करना (लकड़ी को)।
रईं सं० स्त्री० लकड़ी या काँटे का पतला बारीक अंश जो किसी अंग में चुभ जाय।
रईस दे० रहीस।
रउताइनि सं० स्त्री० राउत (दे०) की स्त्री।
रउताई सं० स्त्री० इधर उधर लगाने की आदत; -बउताई (करब),-आइब; दे० राउत; वै० रव-।
रउतुआ सं० पुं० रायता; वै०-व-,-य-।
रउनक दे० रवनक।
रउनब क्रि० स० रौंदना; प्रे०-नाइब,-नवाइब-उब।

रउरिआब क्रि० अ० कुछ पाने की आशा में डटा रहना; 'राउर' कहकर प्रसन्न करने की कोशिश करना ।
रउरे दे० राउर ।
रउल सं० पुं० चक्कर, पर्यटन;-घूमब; अं० रोल ।
रखहाल दे० रवहाल ।
रकत सं० पुं० रक्त; क्रि०-ताब, खून देना (अंग, फोड़े आदि का),-ताइब; वि०-ताहिन, रक्त से भरा हुआ;-तार; मु०-पियब, कसम दिलाने का शब्द (अपने पूते क रकत पिउ, अपने पुत्र का रक्त पी); सं० ।
रकबा सं० पुं० क्षेत्रफल; बहुत सी भूमि;-घेरब, -घेराइब ।
रकम सं० स्त्री० किस्म; यक-, दुइ-; यक रकमै, एक तरफ से; (२) माल, रुपया पैसा, आभूषण; वै०-मि; वि०-मी, बहुमूल्य, कीमती;-दार, मालदार,-मिहा, रकमवाला ।
रकाबी सं० स्त्री० तश्तरी; वै० रि-।
रक्खब क्रि० स० रखना; वै० राखब (दे०), प्रे० -खाइब,-खवाइब,-उब; सं० रक्ष् ।
रखउनी सं० स्त्री० रक्षाबन्धन;-बान्हब,-मनाइब; सं० रक्षा ।
रखवार सं० पुं० रक्षक, चौकीदार; भा०-री ।
रखाइब क्रि० स० रक्षा करना, चौकीदारी करना; प्रे०-खवाइब; वै०-उब; सं० रक्ष् ।
रखिआइब क्रि० स० राखी (दे०) लगाना (बर्तन के पीछे); वै०-उब, प्रे०-वाइब ।
रखिहा वि० पुं० राख लगा हुआ, स्त्री०-ही ।
रखुई सं० स्त्री० रखी हुई (विवाहित नहीं) स्त्री; रखेल स्त्री; सं० रक्ष् ।
रखेलि सं० स्त्री० रखेल; सं० रक्ष् ।
रखैआ सं० पुं० रखनेवाला, प्रे०-खवैया, वै०-या; सं० रक्ष् ।
रखौना सं० पुं० रखाया हुआ घास का मैदान, चरागाह, वै०-खवना;-रखाइब,-राखब, सं० रक्ष् ।
रखौनी दे० रखउनी ।
रगर सं० स्त्री० ज़िद, ईर्ष्या,-करब, बार-बार किसी काम के लिए प्रयत्न करना; क्रि०-ब, रगड़ना, दे० रिगिर ।
रगरब क्रि० स० रगड़ना, प्रे०-राइब,-रवाइब; भा० -राई, रगड़ने की क्रिया, मज़दूरी आदि ।
रगरी वि० हठी, ईर्षालु, रगर करनेवाला ।
रगवाही सं० स्त्री० वर्षा न होने का समय; वर्षा बंद हो जाने की बात;-होब,-करब; सं० रज (धूल) ।
रगा सं० स्त्री० वर्षा न होने का दिन; सं० रज (धूल = पानी का अभाव), क्रि०-ब, सूखा मौसम होना ।
रगिआइब क्रि० स० राग आरम्भ करना, राग से गाना; सं० राग ।
रगेदब क्रि० स० खदेड़ना, पीछे पड़ना, दबाने की चेष्टा करना; प्रे०-दवाइब ।
रङ्ग सं० पुं० रङ्ग; क्रि०-ब, रँगना ।
रङ्गब क्रि० स० रँगना; लिख डालना, झूठी बात लिखना; प्रे०-ङाइब,-ङवाइब ।
रङ्गरूट सं० पुं० नया सिपाही, नया व्यक्ति; वह व्यक्ति जो अपना काम अच्छा न जानता हो; भा० -टी; अं० रेक्रूट ।
रङ्गरेज सं० पुं० रँगरेज; स्त्री०-जिन,-नि ।
रङाई स० स्त्री० रँगने की पद्धति, मज़दूरी आदि ।
रचका वि० पुं० ज़रा सा; थोड़ा सा, स्त्री०-की ।
रचब क्रि० स० रचना; सुन्दर बनाना; प्रे०-चाइब, -चवाइब; भा०-चाई; सं० रच् ।
रचि-रचि क्रि० वि० अच्छी तरह, सुन्दरतापूर्वक ।
रच्छा सं० स्त्री० रक्षा;-करब; क्रि०-च्छब, राखब; वै०-च्छ; रच्छ ताकब,-रहब, रक्षा करते रहना (व्यक्ति की) ।
रछसई सं० स्त्री० राक्षसपना, राक्षस की आदत; -करब; सं० रक्षस् ।
रजऊ वि० पुं० राजा का सा (व्यवहार, ठाट-बाट आदि) ।
रजया वि० राजा का ।
रजवा सं० पुं० वह राजा; घृ० ।
रजाई सं० स्त्री० रज़ाई, दुलाई;-ओढ़ब ।
रजाब क्रि० अ० राजा की भाँति व्यवहार या शासन करना ।
रजायसु सं० स्त्री० आज्ञा;-लेब,-पाइब ।
रजिआ वि० दैनिक; रोजाना; वै० रो- ।
रजुरी दे० लेजुरी; सं० रज्जु ।
रज-गज सं० पुं० अधिकता, आराम, चैन; सं० राज्य + फ़ा० गंज (ढेर);-होब,-रहब ।
रट सं० स्त्री० याद करने की अधिकता; रटने की क्रिया;-लगाइब; क्रि०-ब ।
रटनि सं० स्त्री० रटने की क्रिया; बराबर स्मरण; -लागब ।
रटब क्रि० स० रटना, बिना समझे याद कर लेना; प्रे०-टाइब; भा०-टाई ।
रट्टू वि० रटनेवाला, जो बुद्धि से काम कम ले, रटाई अधिक करे ।
रतउन्ही सं० स्त्री० रात को न दिखाई पड़ने का रोग;-होब; वि०-न्हिहा, जिसे यह रोग हो । रात्रि + अन्ही (अंध) ।
रतजगा सं० पुं० रात को जागने का काम; अधिक जागने का काम;-करब; वै० रति- ।
रतिआही सं० स्त्री० रात को चोरी करने की आदत या प्रणाली,-करब,-होय, वै०-या- ।
रत्ती सं० स्त्री० रत्ती का तौल,-भर, ज़रा सा, -मासा ।
रथ सं० पुं० रथ; सं० ।

रद्द वि० पुं० ख़राब, बदमाश; स्त्री०-द्दि; प्र०-द्दी, पुराना खराब काग़ज; क्रि०-द्दाब।

रद्दा सं० पुं० दीवार के ऊपर गीली मिट्टी का पंक्ति, -धरब; वै०-दा, मु० तोहमत, बदनामी;-धरब, -पाइब,-धइ उठब।

रनिकजरा सं० पुं० एक प्रकार का काला धान; रानी + काजर (रानी का काजल) = काला।

रनिवास सं० पुं० महल; रानी का निवास, -करब, महल का सुख उठाना; रानी + निवास (वास)।

रपारप्प वि० पुं० तेज काटनेवाला (हथियार, तलवार आदि);-होब,-करब।

रपोट सं० स्त्री० रिपोर्ट;-करब; वै० रपट; अं०।

रफू सं० पुं० पुराने ऊनी या रेशमी कपड़े की मरम्मत;-करब;-चक्कर वि० गायब;-करब,-होब; -गर, रफू करनेवाला।

रबड़ सं० पुं० रबर; अं०।

रबड़ी सं० स्त्री० दूध की बनी प्रसिद्ध वस्तु,-बनइब,-खाब; मु० बारीक कीचड़; प्र० रा-।

रबाना सं० पुं० एक बाजा जो हाथ से बजाया जाता है;-बजाइब।

रबी सं० स्त्री० चैत की फ़सल; प्र०-ब्बी, अर० रबी (चैत में पड़नेवाले मुसलिम मास का नाम।

रमजान सं० पुं० एक मुसलिम महीना तथा त्योहार; अर०।

रमझल्ला सं० पुं० आनन्द, गपशप;-उड़ाइब।

रमता वि० पुं० इधर-उधर फिरनेवाला;-जोगी, -राम, एक स्थान पर न रहनेवाला व्यक्ति; सं० रम्।

रमब क्रि० अ० किसी स्थान पर डट जाना; प्रे० -माइब, भभूति रमाइब, राख पोत लेना, साधू बन जाना।

रमायन सं० पुं० रामायण; व्यं० झगड़ा या गालीगलौज;-होब,-कहब; वि० रमयनिहा (पंडित), रामायण की कथा कहनेवाला; सं०।

रम्मा सं० पुं० कङ्कड़ खोदने या दीवार आदि गिराने का लंबा लोहे का औज़ार।

रयकवार सं० पुं० क्षत्रियों की एक उपजाति।

रयपर सं० पुं० चद्दर, गर्म चादरा; अं० रैपर।

रयफिल सं० स्त्री० बंदूक, रायफिल, अं० रायफिल।

ररा सं० पुं० बक-बक करने और माँगनेवाला; क्रि०-ब, ररा की भाँति व्यवहार करना;-यस; स्त्री०-री, बहुत से ररा।

रलवई दे० रेल-।

रवंजक वि० परम प्रसन्न; प्रोत्साहित;-करब,-होब।

रव सं० पुं० दिशा, लक्षण;-भव, बातचीत; न भव, कोई चिह्न नहीं; कहा० रव न भव बिन बदरे का बरखा।

रवजा सं० पुं० रौज़ा; रौज:।

रवताई दे० रउ-।

रवतुआ दे० रउ-; वै० रौ-।

रवन्ना सं० पुं० खरीदी वस्तु, बैल आदि की रसीद जिसे लेकर 'रवाना' होने की आज्ञा मिले; -लेब,-देब,-पाइब; रवान:।

रवहाल वि० ख़ुश;-रहब; फ़ा० रव + हाल ?

रवा सं० पुं० छोटा दाना, टुकड़ा (आटे, शकर आदि का); (२) परवाह, फिक्र;-दार, परवाह या सहानुभूति करनेवाला।

रवाना वि० चलता;-करब,-होब; भा०-नगी, बिदाई; रवान:।

रवाब क्रि० अ० सूखते जाना (व्यक्ति का); (२) इर्द गिर्द घूमते या उड़ते रहना।

रस सं० पुं० शर्बत; जूस; आनंद, लाभ;-पाइब, -मिलब; वि०-गर,-दार,-सादार; क्रि०-साब, रस चूना, पानी निकलना; सं०।

रसउती सं० स्त्री० एक प्रकार की ईख; सं० रसवती (मीठी)।

रसता सं० पुं० राह, रास्ता,-देब, लेब,-धरब,-पाइब, -नापब।

रसदि सं० स्त्री० खाने-पीने का सामान,-देब;-पहुँचाइब।

रसम सं० स्त्री० रिवाज, दस्तूर; फ़ा० रस्म; वि० -मी।

रसरा सं० पुं० मोटी रस्सी, रस्सा; स्त्री०-री; सं० रज्जु।

रसवाई सं० स्त्री० पंचायती रूप से रस पेर कर बांटने की क्रिया,-करब,-होब; दे० भँड़रौ।

रसहँग सं० पुं० हल्का ज्वर; शरीर की हरारत; -होब,-धरब।

रसाई सं० स्त्री० पहुँच, सिलसिला;-होब,-रहब।

रसातल सं० पुं० पाताल के नीचे का एक लोक, -जाब,-पहुँचब, नष्ट होना, पतित हो जाना; सं०।

रसिआव सं० स्त्री० मीठा भात;-खाब,-बनइब, सं० रस।

रसोई सं० स्त्री० भोजन, भोजन का स्थान;-घर, -बनाइब,-होब; दे० रसोय; वै०-इया;-दार, भोजन बनानेवाला।

रसोय सं० स्त्री० भोजन बनाने का स्थान; सीता क-, अयोध्या जी में एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ सीता जी का भोजनालय था।

रसौती दे० रसउती।

रहँटिआब क्रि० अ० दुबला होता जाना; वै० रे-; रहठा (दे०) से ? (सूखकर रहठा हो जाना)।

रहगर वि० पुं० चला हुआ; घर से बाहर;-होब, रवाना हो जाना; फ़ा० राहगीर।

रहट सं० पुं० पानी निकालने का रहट,-चलब, -लागब।

रहकल सं० पुं० एक पुराने प्रकार की बंदूक जो टूटदार होती थी ।

रहठा सं० पुं० अरहर का सूखा पेड़, अरहर की लकड़ी ।

रहता सं० पुं० रास्ता, पगडंडी;-धरब; फ़ा० राह ।

रहनि सं० स्त्री० रहने की दशा; तुल०सुनहु पवन-सुत रहनि हमारी ।

रहब क्रि०अ० रहना, ठहरना; पेट-,गर्भ रह जाना; बाकी- ।

रहम सं०पुं० दया, कृपा,-करब; वि०-दिल, कृपालु; -होब, क्रोध समाप्त होना ।

रहसुति सं० स्त्री० रहने की संभावना ।

रहाइस सं० स्त्री० रहने की दशा, रहने की संभावना,-होब, रह सकना ।

रहाइब क्रि० स० बंद कर देना, रोक देना (जाँत का चलाना); प्रे०-हवाइब ।

रहार दे० रेहार ।

रहिआव क्रि० अ० राह लेना, रवाना हो जाना; प्रे०-वाइब, रवाना कर देना; फ़ा० राह ।

रहिला सं० पुं० चना, कहा० मिसिर करैं घिसिर-घिसिर रहिला नोन चबायँ ।

रहीस सं० पुं० रईस, वि० शरीफ़, मालदार; भा०-सी,-हिसई, फ़ा० रईस ।

रहूँ सं०पुं० धुएँ का जाला जो घाव आदि में दवा का काम देता है ।

राँच वि० पुं० थोड़ा सा, स्त्री०-चि;-कै, थोड़ा ही सा; वै० रंच ।

राँड़ि सं० स्त्री० विधवा,-होब,-रहब,-रेवा, दीनहीन; स्त्री; रँड़ि-रोवन (दे०), भा० रँड़ापा ।

राई सं०स्त्री० सरसों का एक भेद;-नोन, दो वस्तुएँ जो कभी-कभी लाल मिर्च के साथ स्त्रियाँ नजर लगे हुए बच्चे के ऊपर उआर (दे० उआरब) कर आग में डाल देती हैं ।

राउत सं० पुं० अहीर के लिए आदरप्रदर्शक शब्द; रावत; स्त्री० रउताइन,-नि (दे०); रॉ० रावल, रावला ।

राकस सं० पुं० राक्षस; भा० रकसई; सं० रक्षस् ।

राखब क्रि०स०रखना, बैठा लेना; मेहरारू-, भेड़ी-, मान-,बाति-,बाकी-; प्रे०रखाइब,-उब; सं० रक्ष ।

राखी सं०स्त्री० राख;-करब,-होब; क्रि० रखिआइब, राख लगाना (विशेष कर चूल्हे पर चढ़नेवाले बर्तनों के पीछे); मु०-होब, जलन या क्रोध के मारे राख होना ।

राग सं० पुं० गीत का राग;-अलापब; क्रि० रगिआइब, राग छेड़ना, राग से पढ़ना; सं०, दे० खटराग ।

राङ सं० पुं० राँगा; वि० रङहा, जिसमें राँगा मिला हो ।

राछस सं० पुं० राक्षस; वि०-सी, स्त्री०-सिन, सं० रक्षस् ।

राछि सं० स्त्री० विवाह का एक रस्म;-घुमाइब, -घूमब ।

राज सं० पुं० राज्य;-करब, सुख से रहना;-पाट, राज्य का कारबार, क्रि० रजाब ।

राजा सं०पुं० शासक, राजा; स्त्री०रानी; कहा०जथा राजा तथा प्रजा (परजा), वि० राजसी,क्रि० रजाब; सं० ।

राजी सं० स्त्री० स्वीकृति, प्रसन्नता,-खुशी, कुशल-मंगल, प्रसन्नता,-नामा, स्वीकृतिपत्र;-होब,-करब ।

राजू अव्य० भले आदमी, "राजा" का प्रिय रूप; हु-, नाहीं- ।

राड़ा सं० पुं० एक घास जो बहुतायत से होती है ।

राढ़ा दे० रेढ़ा ।

राति सं० स्त्री० रात,-दिन, दिन-;-बिराति, कुसमय सं० रात्रि ।

रातिब सं० पुं० रात का भोजन (विशेष कर हाथी का) ।

राधारानी सं० स्त्री० बोल-चाल की काल्पनिक आदर्श स्त्री; कहा०जहाँ गईं-तहाँ परा पाथर पानी ।

रान सं० स्त्री० जाँघ; वै०-नि ।

रानी सं० स्त्री० राजा की स्त्री, सुखी स्त्री ।

रापट सं० पुं० ज़ोर का चपत,-मारब; वै० झापड़ ।

राब सं० स्त्री० गन्ने के रस की बनी द्रव वस्तु; वै० -बि, वि० रबिहा ।

राबड़ी दे० रबड़ी ।

राम सं० पुं० अयोध्या के प्रसिद्ध राम; अरे-, राम-राम, सीता-,-दोहाई (दे०)-जानैं,-धैं (शपथ); हाय-; सं० ।

राय सं० स्त्री० सम्मति;-देब,-लेब,-होब,-करब; (२) ठाकुरों की एक जाति जो अपने नाम के अंत में 'राय' जोड़ते हैं ।

रार सं० स्त्री० झगड़ा;-करब,-मचब,-मचाइब; वै० -रि ।

राल सं० स्त्री० मुँह से गिरनेवाला पानी;-चुवब, -गिरब; वै०-लि ।

राव सं० पुं० बड़ा जमींदार; राजा- ।

रास सं० स्त्री० लंबी रस्सी या चमड़े की डोरी जिससे घोड़ा गाड़ी में चलाया जाता है ।

रासि सं० स्त्री० ढेर; अनाज का ढेर जो खलिहान में तैयार हो;-ढोइब,-लाइब; सं० राशि ।

राह सं० स्त्री० मार्ग;-चलब;-बताइब, सिखाना, टालना;-गीर, यात्री;-ही, राह चलनेवाला;-बाट; क्रि० रहियाब,-आब; फ़ा० राह ।

रिकवँछि सं० स्त्री० जमीकंद के अधखुले पत्तों की रसेदार पकौड़ी;-बनाइब ।

रिखि सं० पुं० ऋषि;-मुनि; सं० ।

रिगिर सं० स्त्री० हठ, द्वेष;-करब; वि०-रिहा; क्रि० -रिआब ।

रिचका, वि० पुं० ज़रा सा, थोड़ा सा; स्त्री०-की ।

रिचा दे० रीचा ।

रिझवाइब क्रि० स० पकवाना; प्रसन्न कराना; 'रीझब' का प्रे०; सं० ।
रिधि-सिधि सं० स्त्री० ऋद्धि-सिद्धि (कविता में); सं० ।
रिन सं० पुं० क़र्ज;-लेब,-देब,-होब,-करब; वि० -निया; कर्जदार; सं० ऋण ।
रिपोट दे० रपोट; प्र० रपोटी-रपोटा, एक दूसरे की शिकायत ।
रिमझिम क्रि० वि० धीरे-धीरे पर लगातार (वर्षा होना); रिमझिम-रिमझिम ।
रियासति सं० स्त्री० रियासत, अच्छी संपत्ति; राज-; वि०-ती, रियासत संबंधी; फ़ा० 'रईस' का भा०; वै०-आसत;-ति ।
रिरिआब क्रि० अ० री री करना, निःसहाय की भाँति चिल्लाना; ध्व०, अनु० ।
रिवाज सं० पुं० दस्तूर, सामाजिक नियम; वै० र-।
रिसि सं० स्त्री० क्रोध;-करब; वि०-हा, क्रुद्ध; क्रि० -आब, क्रोध करना;-आन, क्रोध में आया हुआ स्त्री०-नि;-अवधा, कुछ क्रुद्ध ।
रिसिवाइब क्रि० स० नाराज करना; वै०-उब; सं० रुष ।
रिसिहा वि० पुं० अप्रसन्न; स्त्री०-ही; जिसको क्रोध अधिक आता हो;-परब,-होब; वै० -अवधा ।
रीकड़ सं० पुं० भूमि जिसमें कङ्कड़ पत्थर हो; खेत जिसमें कुछ उत्पन्न न हो; क्रि० रिकड़ाब, वै० -ड़ि ।
रीचा सं० पुं० छोटी सी बात; बात का मूल; बतंगड़;-काढ़ब; सं० ऋचा ।
रीझब क्रि० पक जाना, प्रसन्न होना; प्रे० रिझा-इब,-झवाइब ।
रीठा सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ और उसका फल जो दवा में काम आता है ।
रीढ़ सं० पुं० पीठ के बीच की हड्डी; वै०-ढ़ा; -रा ।
रीति सं० स्त्री० तरीक़ा;-भाँति,-रिवाज; वै०-त; सं० ।
रीन्हब क्रि० स० पकाना; रींधना; प्रे० रिन्हाइब, -न्हवाइब ।
रीरा सं० पुं० रीढ़ (दे०) ।
रुआब सं० पुं० रोब;-गाँठब,-झारब,-दिखाइब ।
रुइहर सं० पुं० रुई का छोटा टुकड़ा ।
रुइहा वि० पुं० रुई का बना, रुई से भरा; स्त्री० -ही ।
रुकब क्रि० अ० रुकना, प्रे० रोकब,-काइब,-उब ।
रुकमिनि सं० स्त्री० रुक्मिणी जी; गीतों में यह नाम प्रायः आता है ।
रुकसति स० स्त्री० विदाई, छुट्टी;-लेब,-होब वै० -ती ।
रुक्का सं० पुं० काग़ज का छोटा टुकड़ा; पत्र; -लिखब,-देब,-पठइब; फ़ा० रुक्कः ।
रुक्खर वि० पुं० सूखा, रूखा; सं० रुक्ष; स्त्री० -रि, क्रि०रुखराब, सूखना (घाव आदि का), भा० -ई ।
रुखानि सं० स्त्री० रुखान; वै०-नी ।
रुगारुगाब क्रि० अ० अच्छा होना, जीने लगना; सं० रुज् (रोग से मुक्त होना) ।
रुचब क्रि० अ० अच्छा लगना; सं० रुच् ।
रुजुक सं० पुं० रोजी, जीवन यात्रा;-चलब; रिज़्क़; कहा० हिल्ले-बहानें मउति ।
रुतबा सं० पुं० स्थिति, उच्च स्थान ।
रुन सं० पुं० ऊन; मुलायम बालदार वस्तु जो कुछ फलों आदि पर होती है । वि०-दार ।
रुनझुन सं० पुं० सुरीली आवाज (घुँघुरु आदि की); स्त्रियों के उन गीतों में यह शब्द प्राय; आता है जो नातेदारों के भोजन के समय गाये जाते हैं—"रुनझुन भौंरा रे···" ।
रुन्हवाइब क्रि० स० रुँधाना, काँटे आदि से बंद करा देना (खेत, राह...);वै०-न्हाइब; सं० रुध् ।
रुपया सं० पुं० रुपया, द्रव्य;-पैसा,-कमाब,-देब, -लेब; वि०-यहा,-ही ।
रुपहला वि० पुं० चाँदी का बना हुआ; स्त्री० -ली ।
रुमालि सं० स्त्री० रूमाल; प्र०-ली ।
रुरुआब क्रि० अ० इधर-उधर खाने पीने की आशा में मारे-मारे फिरना ।
रुवाई दे० रोवाई ।
रुसनाई दे० रोस- ।
रुसवति सं० स्त्री० घूस;-देब,-लेब; रिश्वत; वै० रो- ।
रुहकब क्रि० अ० किसी वस्तु के लिए तरसते रहना; प्रे०-काइब,-उब;-हुहकब, तरसते-तरसते जीवन बिताना ।
रूख सं० पुं० पेड़;-यस, चुपचाप, निष्क्रिय; कहा० रूख न विरूख तहाँ रेंड़वै पुनीत; (२) वि०-सूख, रूखा-सूखा प्र०-खै, बिना घी तेल के; रुक्खै-सुक्खै: सं० रुक्ष ।
रूठब क्रि० अ० रूठना, अप्रसन्न होना; प्रे० रुठा-इब,-ठवाइब; सं० रुष्ट ।
रून्हब क्रि० स० रूँधना, काँटा लगाना; प्रे० रुन्हाइब,-न्हवाइब (दे०); सं० रुध् ।
रूप सं० पुं० शकल;-धरब,-बनाइब;-रंग ।
रूपा सं० पुं० चाँदी; सोना- ।
रूबरू क्रि० वि० आमने सामने (व्यक्ति के); मुँह पर; फ़ा० रू (चेहरा)+ब (साथ)+रू; प्र० रूहबरूह ।
रूल सं० पुं० नियम;-करब,-बनइब; अं० ।
रूला सं० पुं० पटरी; नापने का रूल; अं० रूल ।
रेंकब क्रि० अ० गधे की भाँति बोलना ।

रेंक-रेंकौं सं० पुं० सारङ्गी की आवाज;-करब, -होब; अनु०, ध्व०; प्र०-कौं-रेंकौं ।
रेंड़ सं० पुं० एक पेड़ जिसमें रेंड़ी होती है; सं० एरएड; कहा० रूख न बिरूख तहाँ रेंड़वै पुनीत; क्रि०-ब ।
रेंड़ब क्रि० अ० दाने पड़ने के निकट होना (गेहूँ आदि के पौदे का) ।
रेंड़ी सं० स्त्री० रेंड़ की फली; किसी पेड़ की फली जिसमें से तेल निकले;-क तेल, रेंड़ की फली का तेल; सं० एरएड ।
रूसा दे० अरूसा ।
रूसी सं० स्त्री० सिर या शरीर में से भूसी की भाँति निकलनेवाली हल्की पतली वस्तु; क्रि० रुसिआब, रूसी से भर जाना (सिर या शरीर का) ।
रूह सं० स्त्री० आत्मा, प्राण;-काँपब, बड़ा डर लगना;-थराब; अर० रूह (आत्मा) ।
रेइब क्रि० स० टाँग देना; बहुत दिन तक टाँग रखना; प्रे०-वाइब ।
रेउरी सं० स्त्री० रेवड़ी ।
रेखि सं० स्त्री० मूँछ की रेखा;-फूटब-आइब, मूँछें निकलना; वै०-ख,-फ (फै०) सं० रेखा ।
रेङब क्रि० अ० रेङ्गना, धीरे-धीरे चलना; पहुँचना (खेत में पानी का); प्रे०-ङाइब,-ङ्वाइब ।
रेचा दे० रीचा ।
रेजा सं० पुं० छोटा-छोटा टुकड़ा;-रेजा, टुकड़ा टुकड़ा ।
रेट दे० रैट ।
रेढ़ा सं० पुं० झगड़ा, बखेड़ा;-करब,-उठाइब ।
रेत सं० पुं० बालू; बालू-(गीतों में); वि०-हा, -ही,-तील ।
रेतब क्रि० स० रेतना, काटकर टुकड़ा करना; व्यं० डाँटना, धिक्कारना, एक ही बात को बार-बार कहते रहना ।
रेरिआइब क्रि० स० रे रे करना, किसी को हुकार कर बुलाना या पुकारना ।
रेल सं० स्त्री० रेलवे ट्रेन;-पेल, भीड़-भाड़;-वई, रेलवे; अं० ।
रेलब क्रि० स० ढकेलना, इकट्ठे ही भेज देना; प्रे० -लाइब,-लवाइब ।
रेह सं० स्त्री० नमक और सोडा भरी मिट्टी जिससे कपड़ा साफ होता है;-लादब, दुबला होता जाना; वि०-हार, रेह से भरा हुआ (खेत; मैदान) ।
रेहनि सं० स्त्री० रेहन;-लेब,-धरब ।
रैकवार सं० पुं० ठाकुरों की एक उपजाति ।
रैज सं० पुं० तरीका, व्यवहार;-निकरब,-होब,-निकारब, नियम कर देना; फ़ा० रायज ।
रैनि सं० स्त्री० रात; वै०-न; प्रायः गीतों में;-बसेरा, थोड़ी देर का निवास ।
रैपर सं० पुं० हलका गरम चद्दर;-ओढ़ब; अं० ।
रैफिल सं० स्त्री० बंदूक, रायफिल; अं० ।
रैयत सं० स्त्री० असामी, प्रजा; वै०-अत;-वारी, एक पद्धति जिससे भूमि का विभाजन होता है ।
रोआँ सं० पुं० पतला बाल;-रोआँ, रोम-रोम; वै० -वाँ; सं० रोम ।
रोइब क्रि० अ० रोना, शिकायत करना;-गाइब, अपना दुःख सुनाना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब ।
रोक सं० पुं० रुकावट;-थाम; क्रि०-ब ।
रोकड़ सं० पुं० नकद रुपया; बचा हुआ द्रव्य; वै० -र ।
रोकब क्रि० स० रोकना; प्रे०-काइब, भा० रुकावट ।
रोकादानी सं० स्त्री० बेईमानी (खेल में);-करब, -होब ।
रोकैया सं० पुं० रोकनेवाला; प्रे०-कवैया ।
रोग सं० पुं० व्याधि;-होब; वि०-गी, क्रि०-गाब, रोगी हो जाना;-गिआब; सं० रुज् ।
रोगन सं० पुं० तेल, मसाला (लगानेवाला) ।
रोचना सं० पुं० विवाह का एक रस्म ।
रोज क्रि० वि० प्रतिदिन;-ही, दैनिक मजदूरी;-रोज; फ़ा० रोज (दिन); प्र०-जै ।
रोजमर्रा क्रि० वि० प्रतिदिन; वै० रु-।
रोजही सं० स्त्री० दैनिक मजदूरी;-पर ।
रोजा सं० पुं० मुसलमानों का प्रसिद्ध व्रत;-राखब, -रहब,-खोलब; अर० रोजः ।
रोजाना क्रि० वि० प्रतिदिन; रोज; वै०-जिना ।
रोजिगार सं० पुं० पेशा, व्यवसाय;-री, व्यवसायी; -करब;-होब ।
रोजी सं० स्त्री० जीवन यात्रा;-चलब,-देब,-लेब ।
रोजै क्रि० वि० रोज ही; प्रतिदिन;-रोज, नित्य-प्रति ।
रोट सं० पुं० बड़ी और मोटी रोटी; रोटी जो देवता को चढ़ाई जाय ।
रोटी सं० स्त्री० किसी के मरने पर की गई दावत; -करब,-होब; भा०-टियाही, रोटी होने का ताँता ।
रोड़ा सं० पुं० पत्थर का टुकड़ा; रुकावट;-लगाइब, -अटकाइब ।
रोदन सं० पुं० रोने की क्रिया; जोर-जोर से रोना; -करब,-ठानब; पं०; तुल०रोदन ठाना ।
रोनउक दे० रोवनउक ।
रोपब क्रि० स० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को पकड़ लेना; प्रे०-पाइब,-पवाइब, रोप लेना, परसवाना (भोजन), सं० रोपण् ।
रोब सं० पुं० आतंक;-गाँठब,-बघारब;-दाब; वै० रुआब (दे०); वि०-बीला,-दार ।
रोय-धोय क्रि० वि० दुःखपूर्वक, किसी प्रकार; रो-धोकर; इस कहावत में इन दोनों शब्दों को क्रिया के रूप में प्रयोग करते हैं । अपुना क रोईं-धोईं आन क अढ़ाईं,पोईं, अपने लिए तो रोना पड़ता है पर दूसरे के लिए २½ रोटी बनाकर देता है ।

रोरा सं०पुं० आँख का एक रोग;-फोरब;-क गुरिया, एक जंगली पौदे का कँटीदार फल जिसके बाँधने से रोरा सूखकर अच्छा हो जाता है। (२) छोटा टुकड़ा; यक रोरा नोन, गुर...।
रोरी सं० स्त्री० मत्थे में लगाने का रंग; छोटा टुकड़ा;-लगाइब।
रोवाइब क्रि० स० रुलाना, तंग करना; भा०-ई।
रोस सं० पुं० क्रोध का आवेश; क्रि०-साब; आवेश में आना।
रोसनी सं०स्त्री० प्रकाश;-करब,-होब; फा० रोशनी।
रोहनिया सं० पुं० एक प्रकार का आम जो रोहिणी नक्षत्र में सब आमों के समाप्त होने पर पकता है। वै०-हि-,-हा; सं० रोहिणी।
रोहब क्रि० अ० अच्छा फल देना, चलन होना, माना जाना (रिवाज या दस्तूर का); सं० रुह्, पनपना।
रौजा सं० पुं० कब्र।
रौनब क्रि० स० रौंदना; प्रे०-नाइब; वै० रउनब (दे०)।
रौहाल वि० पुं० प्रसन्न, स्त्री०-लि;-रहब।

# ल

लंका सं० स्त्री० प्रसिद्ध द्वीप और उसकी राजधानी; -पुरी।
लंगड़ वि० पुं० लँगड़ा; स्त्री०-ड़ि; वै०-ङ्ङड; क्रि० -ङ्डाब, लँगड़े-लँगड़े चलना;-ड़ू, आदर प्रदर्शक रूप।
लंपट वि० पुं० दुश्चरित्र; स्त्री०-टि; भा०-ई।
लइआ सं० स्त्री० लाई; भुना हुआ दाना; राम दाना क-, रामदाने के भुने हुए दाने।
लइका दे० लरिका।
लइन सं० स्त्री० पंक्ति, दिशा; कार्य की पद्धति, पेशा; अं० लाइन;-धरब, काम करना;-से, क्रम से।
लइमड़ दे० लयमद।
लइसन सं० पुं० लैसंस, आज्ञा-पत्र;-लेब;-दार, जिसके पास आज्ञापत्र हो; अं० लाइसेंस; वै० लय-।
लउँचा सं० पुं० छोटी पतली डाल; स्त्री०-ची।
लउँड़ी सं० स्त्री० लौंडी, परिचारिका;-चेरिया, नौकरानियाँ; वै०-वँडी,-ड़िनि।
लउआर सं० पुं० चुँगली;-लगाइब, चुँगली कर देना; वि०-री,-रिहा, चुँगलो करनेवाला; वै० -वार।
लउक-बरा सं० पुं० लौकी के टुकड़ों का बना हुआ बड़ा या पकौड़ा।
लउकी सं० स्त्री० लौकी।
लउछिआव क्रि० अ० लालच में पड़े रहना, कुछ पाने की आशा में डटे रहना;-आन रहब; वै०-व-, लौ-।
लउटब क्रि० अ० लौटना; प्रे०-टाइब,-उब; वै० -व-।
लउटानी सं० स्त्री० लौटती बार; वै०,-व-।
लउता-बउता सं० पुं० इधर-उधर की बात; भा० -ई-ई, ऐसी बातें करने की आदत; दे० रउताई।
लउर सं० पुं० बड़ा डंडा या लाठी;-बान्हब।
लउलीन वि० पुं० उत्सुक;-होब,-रहब; वै०-व-।
लउवार दे० लउआर।
लउहार दे० लवहार।
लकड़िहार सं० पुं० लकड़ी बेचनेवाला; स्त्री० -रिनि।
लकड़ो सं० स्त्री० काठ, लाठी का खेल; छड़ी; -मारब,-चलाइब; क्रि०-ड़िआब, सूखना (पेड़ या व्यक्ति का)।
लकलका वि० पुं० खूब साफ एवं चमकीला; प्र० लकालक्क;-होब,-रहब।
लकवा सं० पुं० प्रसिद्ध बीमारी जिसमें अंग मारा जाता है;-लागब,-गिरब;-मारब।
लखन सं० पुं० लक्ष्मण; तुल० उठे लखन निसि विगत सुनि...; वै०-छन; सं०।
लखनऊ सं० पुं० अवध का प्रसिद्ध नगर जिसे लक्ष्मणपुर भी कहते हैं। वि०-नउआ, लखनऊ का (व्यक्ति, फैशन आदि)।
लखनी सं० स्त्री० बच्चों का एक खेल जिसमें पेड़ की डालों पर चढ़ते कूदते रहते हैं;-खेलब।
लखब क्रि० स० देखना, ताकते रहना, रखवाली करना; प्रे०-खाइब,-खवाइब; सं० लक्ष्।
लखाइब क्रि० स० दिखा देना, बतला देना; दूर से दिखाना; सं० लक्ष्।
लखाउरी वि० पुं० एक प्रकार की पतली ईंट जिनसे पहले मकान बना करते थे;-ईंटा; वै० -खउरी; सं० लक्ष।
लखैया सं० पुं० देखनेवाला, रखवाली करनेवाला; प्रे०-खवैया।
लग अव्य० निकट; प्र०-गें, पास;-सग, वि० घनिष्ठ (सम्बन्धी);-गें, पास में ही, अत्यंत निकट।
लगछुआई सं० स्त्री० सम्पर्क, छूत; सं० लग्+ छुअब।
लगन सं० स्त्री० विवाह का समय;-लागब; सं० लग्न; वै०-नि।

लगब क्रि० अ० लगना, प्रभावित करना; वै० लागब; प्रे० लगाइब,-गवाइब,-उब ।

लगवना सं० पुं० जलाने की लकड़ी, कंडा आदि ।

लगा सं० पुं० प्रारम्भ;-लगाइब प्रारम्भ करना ।

लगामि सं० स्त्री० लगाम;-लागब,-लगाइब, रोकना ।

लगेनि वि० स्त्री० लगने या दूध देनेवाली (गाय, भैंस आदि) ।

लग्गा सं० पुं० फल आदि तोड़ने की लम्बी लकड़ी स्त्री०-ग्गी;-लगाइब, प्रारम्भ करना;-लागब;-यस्, लम्बा ।

लग्गू-भग्गू सं० पुं० सहायक, गौण लोग; साधारण व्यक्ति; वै०-गुआ-भगुआ; (मौका पड़ने पर पास लग जानेवाले और फिर भग जानेवाले) ।

लङड़ा सं० पुं० प्रसिद्ध आम ।

लङड़ी सं० स्त्री० कुश्ती का एक पेच;-लगाइब, -मारब, यह पेच लगाना ।

लङोट सं० पुं० लँगोट; स्त्री०-टी;-लगाइब,-बान्हब; कहा० भागे भूत के लङोटी ।

लचक सं० स्त्री० लचकने की प्रवृत्ति या शक्ति; क्रि०-ब, प्रे०-काइब ।

लचब क्रि० अ० लचना, झुकना; प्रे०-चाइब, -उब ।

लचर वि० पुं० ढीला-ढाला, सुस्त; स्त्री०-रि; भा० -ई,-पन, क्रि०-राब; दे० लोचर ।

लचाइब क्रि० स० लचाना, झुकाना, हराना; प्रे० -चवाइब ।

लचार वि० पुं० लाचार, निःसहाय; भा०-री, -चरई; फा० लाचार ।

लच्छन सं० पुं० लक्षण, चिह्न; वि०-छनवत,-ति, अच्छे लक्षणवाला (व्यक्ति);कु-(दे०) ।

लछन दे० लखन ।

लछनवति वि० स्त्री० अच्छे लक्षण वाली (स्त्री०) ।

लछमन सं० पुं० लक्ष्मण; वै०-छि-।

लजवाइब क्रि० स० लज्जित करना; वै०-उब; सं० लज्जा ।

लजाधुर वि० पुं० शर्मीला; स्त्री०-रि ।

लजाब क्रि० अ० लज्जित होना, शर्म करना; सं० लज्ज ।

लजुरी दे० लेजुरी ।

लटइब दे० लटब ।

लटकब क्रि० अ० लटकना; प्रे०-काइब,-उब ।

लटका सं० पुं० लटकाने या स्थगित करने का बहाना;-लगाइब ।

लटकाइब क्रि० स० लटकाना, फाँसी देना; वै० -उब, प्रे०-कवाइब;-उब ।

लटगेना सं० पुं० गेंद जो फूल की भाँति स्त्री की लट में लटका या लगा हो; गीतों में "लटगेनवा" और "फुलगेनवा" का प्रायः उल्लेख आता है ।

लटब क्रि० अ० झुकना, हारना; प्रे०-इब,-टाइब ।

लट्ठा सं० पुं० बड़ा डंडा; एक प्रकार का कपड़ा; -पार, नैपाल राज की सीमा में ।

लठइत वि० पुं० लाठी चलानेवाला; झगड़ालू; वै०-ठैत ।

लठबाज वि० पुं० लाठीवाला; प्र०-ट्ठ-, लड़ाकू; भा०-बजई,-जी ।

लठिहा वि० पुं० लाठीवाला; स्त्री०-ही ।

लड्डू सं० पुं० मोदक; वै०ले-; गीतों में "लड्डुवा"

लड़इआ वि० पुं० लड़नेवाला; वै०-या ।

लड़कपिल्ली वि० पुं० चिबिल्ला लड़का; वै० -ल्ला ।

लड़खड़ाब क्रि० अ० हिलकर गिरने लगना; वै० -र-।

लड़ब क्रि० स० लड़ना; प्रे०-ड़ाइब,-ड़वाइब, -उब ।

लड़हरा सं० पुं० चरी का लंबा पेड़ ।

लड़ाइब दे० लड़ब ।

लड़ाई सं० स्त्री० युद्ध, झगड़ा;-करब,-होब ।

लड़ाका वि० झगड़ालू ।

लढ़िआ सं० स्त्री० बैलगाड़ी;-ढकेलब; बड़ा परिश्रम करना (व्यं०); वै० लढ़ी,-या ।

लढ़िवान सं० पुं० गाड़ीवान; भा०-नी,-वनई ।

लढ़ी दे० लढ़िआ ।

लणवादि सं० स्त्री० परेशानी;-करब,-होब; लण (लिंग) + वादि (दे० अपवादि) ।

लतखोर वि० पुं० लात खाने वाला; स्त्री०-रि; दे० लुचखोर; फा० खुरदन (खाना); 'खोर' कई और निंदात्मक शब्दों में लगता है, जैसे, हरामखोर, हलालखोर (दे०) ।

लतमरुआ वि० पुं० लात का मारा हुआ; पिछड़ा; गया-बीता

लतरी सं० स्त्री० पुरानी जूती ।

लतिआइब क्रि० स० पैरों से सीधा करना (काँटे आदि को); मारना; प्रे०-वाइब; कहा० बेरहा बतिआयें, सूद लतिआयें, अर्थात् बेरहा (दे०) बाती (दे०) लगाने से और शूद्र लातों की मार से ठीक होता है ।

लत्ता सं० पुं० चिथड़ा, फटा कपड़ा ।

लथफथ वि० पुं० भीगा एवं थका; पसीने में तर; प्र०-थ्थ-थ्थ;-होब ।

लथेरब क्रि० स० मिट्टी; कीचड़ आदि में सान कर गंदा करना; गिराना, परास्त कर देना; प्रे० -रवाइब,-उब ।

लद्-लद् क्रि० वि० भद्दपन के साथ (गिरना) ।

लदनी सं० स्त्री० लादने की क्रिया;-करब,-होब ।

लदब क्रि० अ० लदना, चला जाना; नष्ट होना, जेल जाना; प्रे० लादब, लदवाइब, लदाइब; अं० लोड, लेड ।

लदर-लदर क्रि० वि० झूलता या लटकता हुआ; वै०-फदर ।

लद्वाइब क्रि० स० लादने में सहायता करना; भा०-वाई, लादने की क्रिया, मजदूरी आदि।
लदाइब क्रि० स० लदवाना; भा०-ई।
लद्धड़ वि० पुं० भारी एवं सुस्त, स्त्री०-ड़ि।
लदू वि० जिस पर बोझ लादा जाय, सवारी न की जाय (घोड़ा, घोड़ी)।
लधब क्रि० अ० (बीमारी में) खाट ले लेना; असाध्य हो जाना।
लनती वि० निंदा का;-दाग, अपयश; फा० लानत +ई (लानत का);-दाग लागब, अपयश लग जाना।
लपकब क्रि० अ० लपकना, जल्दी से पकड़ने का प्रयत्न करना, दौड़ना; प्रे०-काइब, हाथ बढ़ाकर पहुँचाना।
लपचा सं० स्त्री० एक प्रकार की लंबी पतली मछली; लघु०-ची।
लपटा सं० पुं० नमकीन लपसी (दे०); फुहरी क-, व्यर्थ, गड़बड़ (करब, होब)।
लपटि सं० स्त्री० आग की आँच, लपट;-लागब।
लपटिआब क्रि० अ० लग जाना, जुट जाना, कमर कस लेना।
लपलप क्रि० वि० बार-बार (बाहर भीतर करना); क्रि० लपलपाइब, बाहर भीतर निकालना (जीभ), जल्दी जल्दी हिलाना (तलवार)।
लपेटब क्रि० स० लपेटना; भा० लपेट, चक्कर;-म आइब, चक्कर में आ जाना; प्रे०-वाइब।
लप्पड़ सं० पुं० तमाचा;-मारब,-देब,-लगाइब।
लफब क्रि० अ० टेढ़ा हो जाना, झुकना; प्रे० -फाइब,-फवाइब।
लबड़ा वि० पुं० बायाँ; स्त्री०-ड़ी;-ड़-हत्था, बायाँ हाथ काम में लानेवाला।
लबड़िहा वि० पुं० जो अपना बायाँ हाथ प्रयोग में लावे; स्त्री०-ही।
लबदा सं० पुं० ताजा तोड़ा हुआ डंडा जिससे फल तोड़ा जाय;-बहाइब,-मारब।
लबनी सं० स्त्री० मटकी जिसमें ताड़ी चुवाई जाती है;-लगाइब।
लबर-लबर क्रि० वि० जल्दी जल्दी और व्यर्थ (बोलना); क्रि० लबलबाब।
लबलबी वि० पुं० जल्दबाज; कहा० लबलबी क बियाह, कनपटी मँ सेनुर, जल्दबाज अपने ब्याह में दुलहिन की माँग में नहीं उसकी कनपटी में सिंदूर लगाता है। वै०-ब।
लबाब सं० पुं० गाढ़ा द्रव;-होब।
लबार वि० पुं० झूठा; स्त्री०-रि, भा० लबराई, -पन।
लबालब क्रि० वि० पूरा पूरा, मुँह तक (भरा हुआ), प्र०-ब्ब।
लबेद सं० पुं० मनमानी बात; वेद विरुद्ध बात; बेद और लबेद, शास्त्रीय मत तथा ढकोसला।
लबेरब क्रि० स० पोत देना; प्रे०-वाइब; प्र०-भे-; दे० चभोरब।
लमउझ वि० पुं० दूर का (रिश्तेदार); स्त्री०-झि; वै०-झा।
लमछर वि० पुं० कुछ लम्बा; स्त्री०-रि; सं० लंब।
लमटँगा वि० पुं० जिसकी टाँग लंबी हो; स्त्री० -गी।
लमाब क्रि० अ० दूर जाना; दे० लाम।
लमेरा सं० पुं० धान के साथ उगा हुआ वह पौधा जिसमें अन्न न पैदा हो; व्यर्थ की वस्तु; संतान जो असली पिता से न हुई हो।
लम्मर सं० पुं० संख्या;-लागब,-डारब; अं० नंबर।
लम्मरी वि० पुं० नंबर वाला;-सेर;-मनई, बदमाश आदमी जिस पर पुलिस ने नंबर या अपराध का दफा डाल रखा हो; अं० नंबर।
लम्मा वि० पुं० लंबा; स्त्री०-मी;-होब, भाग जाना।
लय सं० स्त्री० गीत का तर्ज; यक-से, ठीक तरह से; वै० लै।
लयमड़ सं० पुं० सुस्त और फूहड़ व्यक्ति, स्त्री०-ड़ि; भा०-ई,-पन।
लर सं० स्त्री० पंक्ति (आभूषणों की); यक-, दुइ-; लड़ी; वै०-रि।
लरखराब दे० लड़खड़ाब।
लरिकई सं० स्त्री० लड़कपन; वै०-काई।
लरिका सं० पुं० लड़का, छोटा बच्चा; स्त्री०-की, क्रि०-ब, लड़के की भाँति व्यवहार करना; भा० -काय, ऐसा, व्यवहार, मूर्खता आदि; लरिकाय करब; भा०-ई,-कई (दे०); वि०-कोरि, (स्त्री) जिसके संतान हो चुकी हो;-परिकोरि।
ललका वि० पुं० लाल रङ्गवाला; स्त्री०-की।
ललकार सं० स्त्री० चुनौती; क्रि०-ब।
ललाई सं० स्त्री० लाल रङ्ग (किसी वस्तु का)।
ललाब क्रि० अ० इच्छुक रहना; अतृप्त रहना (किसी अप्राप्त वस्तु के लिए); पाने के लिए ललचाते रहना; सं० लालू।
लल्ला सं० पुं० छोटा प्यारा बच्चा; स्त्री०-ल्ली; कविता में "-ला,-ली" प्रिय व्यक्ति के लिए; वै० -ल्लू।
लवंडा सं० पुं० छोटा लड़का; स्त्री०-डी, लड़की; भा०-डपन,-ना, बच्चों की सी बात या व्यवहार।
लव सं० पुं० रामचंद्र के पुत्र;-कुस, दोनों भाई।
लवइया सं० पुं० लानेवाला; वै०-वैआ;-यवैया; सं० नी (लाना)।
लवछिआब दे० लउ-।
लवटब दे० लउ-।
लवटानी दे० लउ-।
लवता-बवता सं० पुं० इधर उधर की बात; -मारब, गप मारना।

लवरि सं० स्त्री० लपट;-निकरब ।
लवलीन वि० पुं० उत्सुक, व्यस्त;-होब,-रहब; भा० -लिनई ।
लवहार सं०पुं० मर कर जीवित हो जाने की दशा; -रे जाब, ऐसा हो जाना ।
लवा सं० पुं० प्रसिद्ध पक्षी ।
लवाङ्गि सं० स्त्री० लौंग;-देखब, ओझाई करना; पीठा-, देवी को चढ़ाने का सामान ।
लस सं० पुं० चिपकने का गुण;-होब,-रहब ।
लसकरि सं० स्त्री० फ़ौज;-चढ़ाइब, देवी की एक पूजा करना जिसमें मिट्टी के बने हुए सिपाही समर्पित किये जाते हैं । फ़ा० लश्कर ।
लसब क्रि० अ० चिपक जाना; प्रे०-साइब ।
लसम सं० पुं० चिपकने की प्रवृत्ति;-धरब; दे० लस ।
लसर-लसर क्रि० वि० चिपकते हुए;-करब ।
लसार वि० चिपकनेवाला (आटा, गुड़ आदि); -धरब,-होब ।
लसिआब क्रि०अ० चिपक जाना; ख़राब हो जाना; गीत-"बान्हल जूरा लसिआय महिनवा दिनवा सावन कै" ।
लसोड़ा सं० पुं० एक पेड़ और उसका फल जिसका अचार बनता है । वै०-हसोड़ा,-चोड़ा ।
लस्सी सं० स्त्री० पतला शरबत ।
लस्सुन दे० लहसुन ।
लहँगरी सं० स्त्री० छोटा लहँगा ।
लहँगा सं० पुं० लहँगा; वै०-ङा ।
लहकब क्रि० अ० चमकना, (आग का) जीवित रहना; प्रे०-काइब, चमकाना ।
लहकारब क्रि० स० उत्तेजित कर देना, उकसा देना ।
लहचिचिरा सं० पुं० एक जंगली पौदा; अपामार्ग ।
लहजा सं० पुं० क्षण;-भर; (२) ध्वनि ।
लहतगा सं० पुं० सिलसिला;-लागब,-लगाइब; वै० -स्तगा ।
लहना सं०पुं० रुपया जो पाना हो; सं० लभ् (प्राप्त करना);-तगादा ।
लहब क्रि०अ० सफल होना (बात का); प्रे०-हाइब, लगाना, मदद करना; सं० लभ् ।
लहबड़ सं० पुं० पताका, झंडा;-बिआ सुग्गा, एक प्रकार का तोता;-यस, लंबा ।
लहमा सं० पुं० क्षण; लमहः ।
लहर सं० स्त्री० तरङ्ग; वि०-री, मौजी; वै०-रि; -आइब,-देब, साँप के काटे हुए व्यक्ति को विष की लहर आना; क्रि०-राब;-रिआब ।
लहरा सं० पुं० वर्षा का झोंका; यक-, दुइ- ।
लहलहाब क्रि० अ० लहलह करना; हरा भरा रहना ।
लहसुन सं० पुं० लहसुन; वै० ले-; सं० लशुन; -पियाजि, ब्राह्मणों या वैष्णवों का अखाद्य पदार्थ ।
लहाउर सं० पुं० लाहौर; दूर स्थान;-री नोन, एक प्रकार का नमक ।
लहासि सं० स्त्री० लाश, शव ।
लहिआब क्रि० अ० पक कर लाल हो जाना ।
लहुआलोहान दे० लोहुआ- ।
लहुरा वि० पुं० छोटा, कम अवस्था का; स्त्री० -री ।
लाँगि सं० स्त्री० पहनी हुई धोती का एक भाग; वै०-ङि ।
लाँघब क्रि० स० कूदना; प्रे० लँघाइब; दे० नाघब ।
लाँड़ सं० पुं० पुरुष की जननेंद्रिय;-देखाइब, धोखा देना;-ड़े से, मेरी बला से ।
लाइब क्रि० स० लाना; वै०-उब; प्रे० लवाइब ।
लाई सं० स्त्री० लाई; चना-,-चना;-लूसी, चुगली; -लगाइब ।
लाख सं० पुं० लाख; यक-,दुइ-;-न, लाखों;-खौ, लाखों; सं० लक्ष ।
लाग सं० स्त्री० लगन, चिंता;-करब,-रहब,-होब; वै०-गि;-से, फ़िक्र से, ध्यानपूर्वक ।
लागब क्रि० अ० लगना, जल जाना; प्रे० लगाइब, -उब; आँखि-, मन-, चित-, जिउ- ।
लाग-लीन वि० पुं० लगा हुआ (भूत प्रेत आदि); बाकी; लेना-देना (पैसा);-होब,-रहब ।
लागुन वि० पुं० लगनेवाला (भूत प्रेत आदि); स्त्री०-नि (चुड़ैल); आक्रमण करनेवाला (पशु) ।
लाज सं० स्त्री० लज्जा;-लागब; क्रि० लजाब, वि० लजाधुर ।
लाट सं० पुं० लार्ड;-साहब,-कमंडल, लार्ड गवर्नर; अं० लार्ड ।
लाटा सं० पुं० महुए को गर्म करके उसमें दूसरी चीजें मिलाकर बनाया हुआ पापड़ ।
लाठी सं० स्त्री० लाठी;-मारब, कठोर शब्द कहना, उजड्डता करना ।
लात सं० पुं० पैर; क्रि० लतिआइब ।
लादब क्रि० स० लादना; प्रे० लदाइब,-दवाइब, -उब ।
लादी सं० स्त्री० धोने का उतना कपड़ा जितना एक गधे पर लद सके; यक-, दुइ-; (२) केंकुर (दे०) के पीछे लदी हुई मिट्टी जिसमें फूस मिला होता है और जिसके कारण बल्ली नीचे जाती है ।
लानति सं० स्त्री० निन्दा;-मलामति करब, डाँटना; फटकारना; दे० लनती ।
लापता वि० जिसका पता न हो; अर० ला+पता ।
लापरवाह वि० जिसे परवाह न हो; अर० ला (बिना)+परवाह; वै० ल-निपरवाह (दे०); भा० -ही ।

लावरलिल्ला वि० पुं० फूहड़, बेढंगा; वै०-ड़-, स्त्री०-ल्ली ।
लाभ सं० पुं० तौलते समय अन्नादि का वह अंश जो अलग निकाल दिया जाता है;-निकारब,-लेब; सं० लभ् (लेना) ।
लाम वि० पुं० दूर; क्रि० वि०-में, क्रि० लमाब, दूर हो जाना, दूर चला जाना; सं० लम्ब ?
लामें क्रि० वि० दूर पर;-लामें, दूर-दूर ।
लाय-लाय सं०पुं० सिफारिश;-करब, अनुनय विनय करना ।
लायन सं० पुं० दहेज का वह भाग जो नकद नहीं वस्तुओं के रूप में दिया जाय ।
लार सं० पुं० मुँह का पानी;-गिरब,-टपकब ।
लारी सं० स्त्री० बड़ी मोटर;-चलब,-हाँकब; अं० ।
लाल सं०पुं० एक छोटी चिड़िया (२) एक बहुमूल्य पत्थर (३) वि० लाल रङ्ग का; भा० ललाई, लाली ।
लालरी सं० स्त्री० लाल रङ्ग या वस्तु की पंक्ति; -होब ।
लालसर सं० पुं० एक चिड़िया जिसका मांस स्वादिष्ट होता और दवा के काम भी आता है ।
लाला सं० पुं० कायस्थ, पटवारी; स्त्री० ललाइनि ।
लाली सं० स्त्री० ललाई, लालिमा ।
लालसा सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा;-करब,-होब, -रहब; सं० ।
लावनी सं० स्त्री० एक प्रकार का गीत;-गाइब, -होब ।
लावा सं० पुं० कुछ अन्नों का भुना हुआ दाना; -परछब, विवाह का एक संस्कार जिसमें धान का लावा वर-कन्या के ऊपर दुलहिन का भाई गिराता है । सं० लाज; स्त्री० लाई ।
लासा सं०पुं० गोंद;-लागब,-लगाइब, फँसाना; क्रि० लसिआब ।
लाह सं० पुं० लाख;-लागब, दुबला होते जाना, बराबर स्वास्थ्य गिरते रहना ।
लाही सं० स्त्री० सरसों का एक प्रकार जिससे तेल निकलता है ।
लिखना सं० पुं० लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र;-करब, -होब,-लिखब,-कराइब, लिखाइब; सं० लिख् ।
लिखब क्रि० स० लिखना; प्रे०-खाइब,-खवाइब, -उब, सं० लिख् ।
लिखवाई सं० स्त्री० लिखने का परिश्रम, उसकी मजदूरी आदि; सं० ।
लिखाई दे० लिखवाई ।
लिचड़ई सं० स्त्री० लीचड़पन, काहिली; दे० लीचड़ ।
लिटाब क्रि० अ० लीटा (दे०) हो जाना; वै० -टिआब ।
लिटिहा वि० पुं० जिसमें लीटा हो; गीला (गुड़); वै०-टहा, स्त्री०-ही (भेली) ।
लिट्टी सं० स्त्री० आटे की गोल मोटी रोटी जो कंडे पर सेंकी जाती है; वै० लीटी;-लगाइब,-बनाइब ।
लिदिहा वि० पुं० जिसमें लीद हो; स्त्री०-ही ।
लिपवाइब क्रि० स० लिपवाना; भा०-ई, लीपने की क्रिया, मजदूरी, पद्धति आदि ।
लिपाइब क्रि० स० लीपने में सहायता करना; दे० लीपब ।
लिफाफा सं० पुं० पत्र भेजने का लिफ़ाफ़ा; बाहरी ठाट-बाट; आडंबर ।
लिबड़ी बिरताना सं०पुं० पोशाक; दिखावटी कपड़े; अं० लिवरी ।
लिबलिब वि० पुं० लापरवाह और जल्दबाज; दे० लबलब; क्रि०-बाब, जल्दी करके काम बिगाड़ना ।
लिम्मस सं० पुं० अपयश;-लागब,-लगाइब; वि० -सहा, अपयशवाला; दे० निमोसी ।
लिलगाह सं० पुं० नीलगाय; प्र० ली- ।
लिलवाइब क्रि० स० निगलवाना ।
लिल्ला सं० पुं० चमड़े के ऊपर निकला हुआ मसा (दे०) की तरह का मांस का भाग ।
लिल्लाह वि० पुं०मुक्त, दान में दिया हुआ; अर० अल्लाह के लिए; प्र०-ही, संत का (माल);-करब, -देब ।
लिल्ली घोड़ी सं० स्त्री० बरसात में होनेवाला एक कीड़ा जो एक दूसरे के ऊपर चढ़ा हुआ घूमता रहता है ।
लिवाइब क्रि० स० ले आना; वै०-याइब,-उब; सं० नी ।
लिहाज सं० पुं० ध्यान, संकोच, सद्भावना;-करब, -राखब ।
लिहाड़ा सं०पुं० उजड्ड व्यक्ति, मसखरा; प्र०-ड़िआ, भा०-ड़ई,-ड़पन,-ड़ाही; वै० लु- ।
लीभी सं० स्त्री० उबटन लगाने के बाद गिरी हुई उसकी सूखी मैल ।
लीक सं० स्त्री० पहिये का चिह्न, रास्ता ।
लीखि सं० स्त्री० जूँ का अंडा ।
लीटा सं० पुं० गीला और खराब गुड़; क्रि० लिटि-याब, गुड़ का खराब हो जाना ।
लीटी सं० स्त्री० दे० लिट्टी ।
लीडर सं० पुं० नेता; भा०-री, नेतागिरी ।
लीदि सं० स्त्री० लीद;-करब ।
लीन-छाड़न सं० पुं० रिवाज; किसी बात को लेने और दूसरी को छोड़ने का क्रम ।
लीपब क्रि० स० लीपना;-पोतब; भूसा पर-, बात बनाना; भेद छिपाने के लिए कुछ कहना; प्रे० लिपाइब,-पवाइब,-उब ।
लील सं० पुं० नील ।
लीलब क्रि०स० निगलना, जल्दी-जल्दी खाना, प्रे० लिलाइब,-लवाइब,-उब ।
लीला सं० स्त्री० नाटक, खेल;-करब,-भरब; सं० ।

लुंज वि० पुं० जिसके पैर न काम करें; स्त्री० -जि;-होब।
लुँड़िआब क्रि० अ० प्रेम से हिलमिलकर किसी बच्चे का अपने से बड़े से खिलवाड़ करना; वै०-रि।
लुकवाइब क्रि० स० छिपा देना; वै०-उब; 'लुकाब' का प्रे०।
लुकाब क्रि० अ० छिपना; प्रे०-कवाइब,-उब।
लुकारा सं० पुं० जलता हुआ लकड़ी का टुकड़ा; स्त्री०-री।
लुकुड़ी सं० स्त्री० छोटी पतली लकड़ी।
लुक्क सं० पुं० जलती हुई लकड़ी; स्त्री०-क्की; प्र० -क्का; लूका;-बारब; क्रि० वि०-से, झटपट (जल उठना)।
लुगरी सं० स्त्री० फटा पुराना वस्त्र (स्त्री के पहनने का); पुं०-रा, प्र०-ग्गा।
लुङ्गी सं० स्त्री० धोती की भाँति पहनने का अँगोछा।
लुच्चा सं० पुं० नीच व्यक्ति; वि० नीच; भा० -च्चई,-पन।
लुचुई सं० स्त्री० छोटी नरम पूरी; बँ० लूची।
लुजलुज वि० पुं० ढीला-ढाला; स्त्री०-जि।
लुजुर-लुजुर क्रि० वि० ढीलेपन के साथ;-करब, -होब।
लुटवाइब क्रि० स० लुटा देना, लूटने में मदद देना; वै०-उब।
लुटही सं० स्त्री० लूट, लूटने की क्रिया;-परब;-होब।
लुटाइब क्रि० स० लुटाना; प्रे०-टवाइब,-उब; वै० -उब, भा०-ई।
लुटिआ दे० लोटिया।
लुटेरा सं० पुं० लूटनेवाला व्यक्ति; भा०-रई,-रपन।
लुटैआ सं० पुं० लूटनेवाला, प्रे०-टवैया।
लुढ़कब क्रि० अ० लुढ़क जाना; प्रे०-काइब।
लुनिया दे० लोनिया।
लुप्प सं० पुं० जीभ बाहर निकालने की क्रिया;-दें, -सें;-लुप्प, जल्दी जल्दी जीभ निकालते हुए; वै० -ब्ब।
लुबुर-लुबुर क्रि० वि० बिना सोचे समझे (बोलना)।
लुबुरिहा वि० पुं० लुबुरी (दे०) लगाने वाला, स्त्री०-ही।
लुबुरी सं० स्त्री चुंगली; इधर उधर लगाने की आदत;-लगाइब,-करब।
लुभाब दे० लोभाब।
लुमड़ा वि० पुं० फूहड़, बेहुदा; स्त्री०-ड़ी; प्र० लू-।
लुरकी सं० स्त्री० कान में पहनने का एक छोटा गहना।
लुलवा वि० पुं० लूला; स्त्री० लूली; दे० लूल।
लुलुआइब क्रि० स० फूहड़ या मूर्ख बना देना; 'लूलू' (दे०) कहना या बनाना।
लुलुहा सं० पुं० हाथ का पंजा।
लुवाठ सं० पुं० हाथ का खड़ा अँगूठा;-दिखाइब, कुछ न देना; वै०-आ-।
लुवाठी सं० स्त्री० जलती हुई लकड़ी; वै०-आ-, -कारी; "कबिरा खड़ा बजार में लिए लुवाठी हाथ";-कबीर।
लुहाड़ा दे० लिहाड़ा।
लूँड़ि सं० स्त्री० घास या पुआल का छोटा गट्ठर जो बरहे (दे०) में ढकेला जाता है; वै० लुइँड़ि।
लूक सं० पुं० आकाश से टूटा हुआ तारा;-परब, -गिरब; तुल० "दिन ही लूक परन कपि लागे!"
लूगा सं० पुं० कपड़ा;-लूटब, अपमान करना, निंदा करना;-लत्ता,-रोटी; लघु०-लुगरी,-रा;-क लाँड़, निरर्थक या बेकार व्यक्ति।
लूटब क्रि० स० लूटना; प्रे० लुटाइब,-टवाइब, -उब; लूगा-; भा०-टि,-ट, लुटही (दे०); रामनाम की लूट है...।
लून दे० नून, लोन; सं० लवण।
लूमड़ि दे० लुमड़ा।
लूल वि० पुं० लूला; स्त्री०-लि; घृ० लुलवा (दे०)।
लूलू वि० फूहड़, मूर्ख; 'उल्लू' से? सं० उलूक।
लूह सं० पुं० लू; सख्त गर्मी;-चलब,-बरसब।
लेंड़ सं० पुं० गू का टुकड़ा; स्त्री०-ड़ी।
लेंढ़ा सं० पुं० छोटा कच्चा फल (विशेषत: कटहल का); स्त्री०-ढ़ी।
लेड़आइब क्रि० स० बर्तन के नीचे राख लगाना जिससे वह कम जले; वै०-उब; दे० लेवा।
लेई सं० स्त्री० आटे की लेई;-लगाइब,-बनइब।
लेक्चर सं० पुं० भाषण;-देब,-सुनब; अं०।
लेखा सं० पुं० हिसाब;-लेब;-जोखा, हिसाब-किताब; सं० लिख्।
लेजुरी सं० स्त्री० रस्सी; वै०-रि; सं० रज्जु।
लेट वि० पुं० विलंब से आया हुआ;-खाब, देर कर देना।
लेटब क्रि० अ० लेटना, दे० पलरब।
लौङ सं० स्त्री० लौंग; वै० लवाङि।
लौंचा दे० लउँचा।
लौंड़ा सं० पुं० लिंग;-लेब, कुछ न पाना;-देब, कुछ न देना।
लौंड़ी सं० स्त्री० दे० लउँड़ी।
लौछिआब दे० लउ-।
लौटब क्रि० अ० लौटना; प्रे०-टाइब,-टवाइब।
लौटानी क्रि० वि० लौटते समय।
लौता-बौता दे० लउता-।
लौहार दे० लवहार।

# व

वइ वि० स्त्री० वे; पुं०-य ।
वइरब क्रि० स० (पीसना) प्रारम्भ करना; (जाँत या चक्की) चलाना; प्रे०-राइब,-रवाइब ।
वइसन वि० पुं० वैसा, स्त्री०-नि; क्रि० वि०; प्र० -नै,-नौ ।
वई वि० वही ।
वऊ वि० वह भी ।
वकलाई सं० स्त्री० कै करने की इच्छा;-आइब, ऐसी इच्छा होना; वै०-कि-।
वकालति सं० स्त्री० वकालत, वकील का पेशा; -करब; अर० विकालत ।
वखरी सं० स्त्री० ओखली;-यस, मोटा ताजा, हट्टा-कट्टा; सं० उखल ।
वगरब क्रि० अ० चूना, बूँद-बूँद करके चूना; प्रे० -गारब ।
वछराब क्रि० अ० (घाव, कुल्हाड़ी या फावड़े की चोट का) हलका होना, हलका लगना, कम लगना; दे० ओछर; वै० ओ-।
वछाँह सं० पुं० पेड़ की निकटता के कारण खेत या फ़सल को हानि;-मारब; वै० ओ-।
वजह सं० पुं० कारण; प्र० वो-।
वझाई दे० ओझाई ।
वझास सं० पुं० ओझने या फँस जाने का स्थान; नदी, तालाब या जंगल का वह स्थान जहाँ से जल्दी निकलना कठिन हो; दे० ओझब ।
वठई क्रि० वि० वहाँ; वै०-ठाई ।
वठघन सं० पुं० सहारा; स्त्री०-नी ।
वठङब क्रि०अ०सहारा लेना, लेट जाना; वै०-घब; प्रे०-ङाइब (दरवाज़ा) लगा देना (बंद नहीं करना)
वतरा वि० पुं० उतना; स्त्री०-री; वै०-ना,-नी ।
वतहँत क्रि० वि० कुछ दूर, उधर; प्र०-तै, उधर ही; दे० यतहँत ।
वतीरा सं० पुं० तरीका, स्वभाव; वै० उ-।
वथुआ सर्व० उस'''यह शब्द उस समय प्रयोग में आता है जब उपयुक्त शब्द स्मरण नहीं हो पाता; वै०-थू ।
वदरब क्रि० अ० (मिट्टी, दीवार आदि का) फट-कर गिरना; प्रे०-दारब,-दरवाइब,-उब; सं०वि+दृ।
वन सर्व० उन;-कां,-कर,-कै,-हूँ; वन्हैं, उनको ।
वनइस वि० बीस में एक कम; कुछ कम अच्छा; -बीस, थोड़ा सा अंतर; प्र०-अ-।
वनचब वि० स० खाट की रस्सी तानना; प्रे० -चाइब,-चवाइब ।
वनचास वि० चालीस और नौ;-सौ बयारि, सभी आफतें ।
वनसठि वि० पचास और नौ ।
वनसिल वि० कुछ खराब; न+अर० असल ।
वनहत्तरि वि० सत्तर में एक कम ।
वनाइब क्रि० स० पकड़कर झुकाना; प्रे०-नवाइब; सं० नम् ।
वनान सं० पुं० आज्ञापालन;-देब, हुक्म मानना, काम करना ।
वफा सं० पुं० लाभ (दवा का);-करब,-होब; वै० ओ-; वफ़: ।
वबा सं० स्त्री० संक्रामक बीमारी; बीमारी की देवी; -माई,-क जाब, मरना, वै० ओ-।
वमहँ क्रि० वि० उसमें; वै० वहमाँ; अवधी में वर्ण विपर्यय के ऐसे नमूने बहुत हैं ।
वरखब क्रि० स० ध्यान देना, सुनना (बात), आज्ञा मानना ।
वरंट सं० पुं० वारंट;-काटब,-आइब; अं० ।
वरमब क्रि० अ० लटकना, मोटा होकर या सूजकर लटक जाना; प्रे०-माइब ।
वरहन सं० पुं० उलाहना;-देब,-लेब ।
वस वि० पुं० वैसा;-स, वैसे-वैसे; स्त्री०-सि, वससि (बहु०);-हस, वैसे-वैसे; दे० यस ।
वसहन सं०पुं०नाज जो खलियान में वसाये जाते हैं ।
वसाइब क्रि० स० हवा में गिराकर साफ करना (खलियान में फसल के नाज को); मु० अपनै-, अपनी ही बात कहते जाना, दूसरे की न सुनना, प्रे०-सवाइब, वसाने में सहायता करना ।
वसीअत सं० स्त्री० उत्तराधिकार;-लिखब,-पाइब; -नामा, अदालती कागज़ जिसमें कोई दूसरे को अपना उत्तराधिकारी बनावे ।
वसूल वि० प्राप्त;-करब,-होब; भा०-ली, क्रि०-ब; फा० वसल (मिलना) ।
वह वि० पुं० वह; प्र० उहै; स्त्री०-हि, प्र०-ही ।
वहकारब क्रि० स० हाँकना; बैलों को हाँकने में 'व तता' ये तीन अक्षर के दो शब्द प्रयुक्त होते हैं; पहले शब्द 'व' से यह धातु बनता है और 'तता' से 'ततकारब' (दे०) ।
वहार सं० पुं० पालकी के चारों ओर परदा करने के लिए रंगीन कपड़ा;-डारब ।
वाजिब वि० उचित; प्र०-बी ।
वापस वि० पीछे;-जाब,-आइब,-करब, लौटाना,-लेब, -देब; फा० पस (पीछे) ।
वासिल वि० उचित रूप से प्रयुक्त, प्राप्त या मिला; -करब,-होब; फा० वसल (मिलना) ।
वासिलबाकी नवीस सं० पुं० तहसील का एक कर्मचारी जो आई हुई और बाकी लगान का हिसाब रखता है; फा० ।
वाहियात वि० पुं० व्यर्थ, मूर्खतापूर्ण; स्त्री०-ति ।

# स

संकर सं० पुं० महादेव;-जी,-महराज, सिव-,-भगवान; सं० शंकर।
सँकरा वि० पुं० तङ्ग; स्त्री०-री; दे० साँकर।
संका सं० स्त्री० शंका, संदेह;-करब,-होब; लघु-, पेशाब (करब); सं० शंका।
संकेत सं० पुं० इशारा;-करब,-पाइब; दे० संकेत; सं०।
संकोच सं० पुं० विचार, ध्यान, संकोच;-करब, -होब;-चें; सं०।
संख सं० पुं० शंख;-बजाइब (व्यं०) विज्ञापन करना, कहते फिरना; सं०।
संखानि सं० स्त्री० संतति; यक्कै-, एक ही प्रकार के (दो या अधिक लोग); सं०।
संखिया सं० पुं० एक प्रकार का विष;-देब,- खाब।
संग सं० पुं० साथ;-करब,-पाइब;-गें, साथ में;-गी, साथी; दे० सङ्ग।
संगीन वि० भारी (अपराध); अं० सैंग्वीन ?
संगी-साथी सं० पुं० मित्र, परिचित लोग।
सँघरिया सं० पुं० साथी; वै०-री।
सँघरी सं० पुं० साथी; स्त्री० साथ, संगति;-करब; -धरब, सं० सङ्ग, सङ्घ।
संच सं० पुं० ठीक-ठाक, जमा-जमाया (कारबार); -होब,-रहब।
सँचरब क्रि० अ० प्रचार होना, फैलना; प्रे० चारब; सं० सं+चर।
सँचारब क्रि० स० प्रचार करना।
संजम सं० पुं० संयम;-करब,-राखब; वि०-मी; नेम-; सं० संयम।
संजाफ सं० पुं० रंगीन किनारा;-लगाइब।
सँजोइब क्रि० स० तैयार करना; सं० संयोज्।
संजोग सं० पुं० अवसर;-लागब,-आइब,-परब, -पाइब,-मिलब; सं० संयोग।
संजोगिता सं० स्त्री० प्रसिद्ध स्त्री।
संझा सं० स्त्री० सायंकाल;-करब,-होब;-गाइत्री; सं० संध्या।
सँझलौका सं० पुं० संध्या के निकट का समय; सं० संध्या।
सँझवैं क्रि० वि० बिलकुल सायंकाल; सं० संध्या।
सँझैया सं० पुं० सायंकाल का भोजन;-करब,-होब; दे० दुपहरिया।
संटर सं० पुं० केन्द्र; अं० सेंटर।
संटा सं० पुं० डंडा; स्त्री०-टी; सोंटी।
संड-मंड वि० सूजा हुआ; मोटा;-होब।
संडाब क्रि० अ० मस्त होना, किसी की न सुनना।
संडास सं० पुं० लम्बा-चौड़ा छेद; पाखाना।
संडासी सं० पुं० संन्यासी; सं०।
संडील सं० स्त्री० स्त्रियों के पहनने की जूती; अं० सैण्डल।
सँड़ाब क्रि० अ० साँड़ की भाँति होना या व्यवहार करना; दूसरों को छेड़ते रहना या तङ्ग करना।
संत सं० पुं० साधु, महातमा, साधू-।
संतरी सं० पुं० पहरेदार; अं० सेण्ट्री।
संताइब क्रि० स० दुःख देना; प्रे०-तवाइब; सं० संतप्; कहा० सुई सवति संतावै, काठे क ननदि बिरावै।
संतान सं० स्त्री० बच्चे।
संताप सं० पुं० हार्दिक दुःख;-करब,-देब,-होब, पर-, दूसरे को दुःख देने का पाप; पर-संतापी, ऐसा पाप करनेवाला; सं०।
संती अव्य० स्थान पर, बदले; हमार-, वनकै-।
संतोख सं० पुं० संतोष;-करब, जाने देना,-मारब; वि०-खी, संतोष करनेवाला; तुल० जिमि लोभहिं सोखय संतोखा।
संतोला सं० पुं० संतरा।
संथाब क्रि० अ० सुस्ताना, आराम करना; प्रे० -थवाइब।
संदेह सं० पुं० संदेह;-करब,-होब,-रहब; सं०।
संपति सं० स्त्री० सुख का सामान;-विपति, सुख-दुःख; सं० संपत्ति।
संबंध सं० पुं० संबंध;-करब,-जोरब,-होब;-धी, नातेदार; सं०।
संबल सं० पुं० शक्ति, सहायता;-करब,-देब।
संभू सं० पुं० शंकर, महादेव;-नाथ।
संसय सं० पुं० संदेह;-करब,-होब,-रहब; सं० संशय।
संसर्ग सं० पुं० साथ, आना-जाना;-करब,-रहब, -होब; सं०।
संसार सं० पुं० संसार;-भर, सभी लोग, सारी दुनिया; वि०-री, संसार का; सं०।
संहार सं० पुं० नाश;-करब,-होब।
संहुति सं० स्त्री० साथ, संगति;-करब,-पाइब-होब; वै०-घु-;-तिआ, साथी।
सइँतब क्रि० स० मिट्टी से लीपना; प्रे०-ताइब; -पोतब,-माजब;-लीपब।
सइका सं० पुं० मिट्टी का बर्तन जिससे कोल्हाड़ में रस उँडेलते हैं।
सइजन दे० सहिजन।
सइनि सं० स्त्री० सेना, समूह; सं० सैन्य।
सई सं० स्त्री० उत्तेजना, सहायता;-देब,-पाइब; फ्रा०।
सईस दे० सहीस।

सउँघ सं० पुं० सामना;-परब;-घें, सामने; सं० सन्मुख।
सउँपब क्रि० स० सौंपना; प्रे०-पाइब,-पवाइब; -पौनी, चरवाहे को नये पशु चराने के लिए प्रथम बार देने के समय प्राप्त इनाम।
सउँफि सं० स्त्री० सौंफ।
सउक सं० पुं० शौक; वि०-की,-कीन; क्रि०-कियाब, प्रबल इच्छा करना।
सउगाति सं० स्त्री० उपहार;-आइब,-पठइब; वै० -दु-; फ़ा० सौग़ात।
सउचब क्रि० अ० आबदस्त लेना; प्रे०-चाइब; सं० शौच; वै०-उँ-।
सउजा दे० सौजा।
सउति सं० स्त्री० सौत; वि०-या (डाह);-तील (लरिका, सासु); सं० सहपत्नी।
सउनब क्रि० स० (कपड़े को) पानी, साबुन आदि से भिगोना; एक में मिला देना; प्रे०-नाइब,-नवाइब,-उब।
सउर सं० पुं० एक बड़ी मछली; स्त्री०-री।
सउरी सं० स्त्री० एक प्रकार की मछली; (२) बच्चे के जन्म का स्थान, जन्म की क्रिया;-परब; वि० -रिहा (कपड़ा)।
सचहाइनि दे० सहुआइनि।
सकठि सं० स्त्री० स्त्रियों का एक त्योहार।
सकठी वि० पुं० जो 'भगत' (दे०) न हो; अदीक्षित; वै०-ठिहा (भगतिहा से भिन्न); शक्ति?
सकड़ब क्रि० अ० हिचकना, डरना; भा० सकढ़ (हिचक) वै०-ढ़-।
सकती सं० स्त्री० शक्ति; लक्ष्मण जी को लगा हुआ शक्तिबाण;-लागब; सं०।
सकदम सं० पुं० दमा; प्र०-स्म।
सकपकाब क्रि० अ० हिचकना, घबरा जाना।
सकब क्रि० स० सकना।
सकल वि० पुं० सारा; प्रायः कविता में प्रयुक्त -"सकल पदारथ है जग माहीं"।
सकारें क्रि० वि० सवेरे; बँ० सकाले।
सकिहा वि० पुं० जिसे दमा आता हो; स्त्री० -ही; दे० साकि।
सकीमी सं० स्त्री० कमी, तङ्गी;-पाइब,-धरब, वि० -म (कम बोला जाता है)।
सकुचाब क्रि० अ० सङ्कोच करना, हिचकना; सं० सं+कुच्।
सकूनति सं० स्त्री० निवास; फा० सकूनत।
सकेत सं० पुं० कमी, (स्थान, पैसे आदि की); -होब,-पाइब;-तें, कष्ट में, वै० सँ-, प्र० सं-।
सकेलब क्रि० स० कठिनता से भीतर करना, ढकेलना; बिना मन के खाना; प्रे०-लवाइब।
सकोरा सं० पुं० छोटा मिट्टी का बर्तन; वै० सि-; मै० कुञ्ची।
सक्कर सं० स्त्री० चीनी; चिउ-, मीठी वस्तु; मु० तोहरे मुहँमा चिउ सक्कर (चिउ गुर, गुर-चिउ) होय, तुम जो कहते हो ठीक निकले; सं० शर्करा।
सखा सं० पुं० सखी का पति; (२) कविता में, मित्र, साथी; सं०।
सखी सं० स्त्री० स्त्री मित्र;-जोराइब, एक रस्म जिसमें लड़कियाँ या स्त्रियाँ पानी में जाकर सखी होने की प्रतिज्ञा करती और एक पान के बीड़े को आधा-आधा काटकर खाती हैं; ऐसी सखियाँ एक दूसरे का नाम नहीं लेतीं।
सखुआ सं० पुं० साखू; वै० से-।
सग वि० पुं० सगा; स्त्री०-गि;-भाई,-बहिनि; प्र०-गै,-गौ,-ग्गै।
सगपहिता सं० पुं० दाल जिसमें साग मिला हो; साग+पहिती (दे०)।
सगय दे० सग,-गै।
सगर वि० पुं० सारा; प्र०-रै,-रौ; सं० सकल; कहा० सगर गाँव जरि गै फूहरि कहैं लत्ता गन्हान!
सगरा सं० पुं० बड़ा तालाब; सं० सागर।
सगहा वि० पुं० सागवाला स्त्री०-ही;-पतहा, जो साग-पात खाय।
सगाई सं० स्त्री० नीची जातियों का ब्याह;-करब, -होब।
सगाही सं० स्त्री० साग खोंटने का समय, रिवाज आदि;-परब,-करब।
सगियान वि० पुं० सचेत, बड़ा; स्त्री०-नि; वै० -ग्यान,-नि; प्र०-गिग-; सं० सज्ञान।
सगुन सं० पुं० शकुन; अ-, अपशकुन, सं० शकुन।
सगोत वि० पुं० एक ही गोत्र का; वै०-ती।
सघन वि० पुं० घना, स्त्री०-नि।
सङ्ग सं० पुं० सङ्ग, साथ;-सङ्ग,-ङ्गे,-ङ्गें-ङ्गे, साथ-साथ।
सङ्गरहिनी सं० स्त्री० संग्रहिणी (रोग);-धरब, -होब; सं० संग्रहिणी।
सङ्गहा सं० पुं० गुड़ बनाने के लिए एकत्र किया हुआ झोंकने का सामान;-पाती।
सङ्गाब क्रि० अ० (साँप आदि जीवों का) मैथुन करना; सं० सङ्ग (प्रसंग)।
सङ्गिरहा सं० पुं० संग्रह, रखाः-करब; सं०।
सङ्गी सं० पुं० संगी;-साथी, मित्र; सं० सङ्ग।
सचेत वि० पुं० होशियार, जिसे बातों का ध्यान हो; स्त्री०-ति।
सच्चा वि० पुं० ईमानदार; स्त्री०-च्ची।
सच्चै क्रि० वि० सचमुच।
सजग वि० पुं० सचेत; स्त्री०-गि; वै०-जुग।
सजन सं० पुं० प्रेमी; स्त्री०-नि,-नी, प्रेमिका; प्रायः गीतों में; दे० साजन; सं० सज्जन,-नी।
सजब क्रि० अ० सजना, शृङ्गार करना; प्रे० साजब, -जाइब;-बजब, तैयारी करना (बारात आदि की)।

सजरा सं० पुं० वंशवृक्ष; अर०शजर: ।

सजाव वि० पुं० मलाई सहित (दही);-दहिउ, ऐसा दही ।

सजाय सं० स्त्री० दण्ड;-करब,-देब ।

सजिल वि० पुं० सजा हुआ; गँठा, सुव्यवस्थित ।

सजुग वि० पुं० तैयार स्त्री०-गि;-होब,-रहब ।

सज्जी वि० सारा, पूरा; प्र०-ज्जै; सं० सर्व ।

सझिया वि० साझे का ।

सटइब क्रि० स० सटा देना; वै०-टाइब ।

सटकब क्रि० अ० धीरे से खिसक जाना; प्रे० -काइब ।

सटब क्रि० अ० सट जाना, अत्यंत निकट आना; प्रे०-टाइब,-टवाइब ।

सटर-पटर क्रि० वि० किसी प्रकार, ढीलाढाला; वै०-फटर ।

सटल्लहा वि० पुं० रद्दी, पुराना; स्त्री०-ही, वै० -टि- ।

सटहा सं० पुं० डण्डा;-मारब; स्त्री० सोंटी,-ही; दे० सोंटा; क्रि०-हरब, खूब पीटना; वै० साँटा (दे०)।

सटाइब दे० सटब, साटब ।

सटाक क्रि० वि० झटपट; अ०-से,-दें;-पटाक ।

सटिआइब क्रि० स० मानना, अदब करना, दबाना ।

सट्ट-फट्ट सं० पुं० कुछ भी; थोड़ा बहुत (काम, भोजन) ।

सट्टा सं० पुं० सट्टा; वि०-ट्टहा;-पट्टा, गुप्त राय, सलाह;-ट्टेबाज,-जी ।

सट्टी सं० स्त्री० बाजार, सं० हट्ट, पं० हट्टी (दूकान) ।

सठ वि० पुं० दुष्ट, भा०-ई; सं० शठ ।

सठिआब क्रि० अ० ६० वर्ष का हो जाना; बुद्धि-हीन होने लगना ।

सठौरा दे० सोंठउरा ।

सड़कि सं० स्त्री० रास्ता, सड़क; वि०-हा, सड़क पर का ।

सढ़ुआइनि सं० स्त्री० साढ़ू की स्त्री; स्त्री की बहिन ।

सढ़ुआन सं० पुं० साढ़ू का घर या गाँव ।

सतँगुरु सं० पुं० सच्चा गुरु जिसका उल्लेख प्रायः कबीर के पदों में है; वै०-र - ।

सतनजिउ अव्य० किसी के छींकने पर कहा हुआ शब्द; शतंजीव, सौ वर्ष जीओ; सं० ।

सतनाम सं० पुं० सत्य नाम, भगवान् का नाम; संत कवियों ने इस शब्द का बहुत प्रयोग किया है ।

सतपुतिया सं० स्त्री० एक तरकारी; वै०-र-।

सतभतरा सं० पुं० सात भतार या पति;-के जाव, ए सात भतार कर ! स्त्रियों की एक गाली; सं० सप्त + भर्तार ।

सतवाँसा वि० पुं० सात महीने का (बच्चा); स्त्री०;-सी; सं० सप्त + मास ।

सताइब क्रि० स० सताना; वै०-उब, प्रे०-तवा-इब ।

सतुआ सं० पुं० सत्तू;-पिसान बान्हब, तैयारी करना;-बान्हि कै, खूब तैयारी करके;-भूका, -पिसान, सामान;-सतुआनि (दे०) ।

सतुआनि सं० स्त्री० गर्मी का एक त्योहार जब सत्तू खाया और दान में दिया जाता है । वै० सतुआ- ।

सत्तरह वि० दस और सात;-वाँ ।

सत्तरि वि० सत्तर;-वाँ,-ईं; कहा० सत्तरि चूहा खाय कै बिलारि भईं भगतिनि ।

सत्तिमी सं० स्त्री० पक्ष का सातवाँ दिन; सप्तमी; सं० ।

सत्ती वि० स्त्री० सती;-होब; कष्ट उठाना, त्याग करना; सं० सती ।

सथवाँ क्रि० वि० साथ में; प्र०-वैं ।

सदर सं० पुं० मुख्य स्थान; सद्र (मुख्य) ।

सदरी सं० स्त्री० कपड़ा जो छाती के ऊपर पहना जाय ।

सदा क्रि० वि० हमेशा;-सर्वदा, सदैव;-फर, वह पेड़ जो १२ महीने फल दे;-गाभिनी, व्यं०पशु या स्त्री जिसके बच्चे न हों ।

सदाव्रत सं० पुं० बारह महीने मुफ्त भोजन या भोजन सामग्री बाँटने की पद्धति;-देब,-लेब,-चलब; वि० -र्ती ।

सधब क्रि० अ० पटना; मैत्री भाव रहना, हो सकना; प्रे० सा-, सधाइब,-उब; नपब-; दे० साधब ।

सधर वि० पुं० बड़ा और बढ़िया (आम या अन्य फल) ।

सधा वि० पुं० जिसकी आदत पड़ी हो; स्त्री०-धी; -सधावा;-धी-सधाई ।

सधाइब क्रि० स० (कपड़ा या आभूषण) पहनकर देखना; वै०-उब ।

सधुअई सं० स्त्री० साधू की स्थिति, दशा या तपस्या;-करब,-निबाहब ।

सधुआइन सं० स्त्री० साधू की स्त्री या स्त्री जो साधुनी हो जाय; दूसरे अर्थ में 'साधुनि' शब्द है (दे०) ।

सधुआब क्रि० अ० साधू हो जाना ।

सनई सं० स्त्री० सन का पेड़ ।

सनक सं०स्त्री० विक्षिप्तता; क्रि०-ब, पागल होना; वि०-की, अर्द्धविक्षिप्त;-कातर,-रि, जो ऊल-जलूल बात करे;-कहा,-ही, जिसमें सनक हो ।

सनकाइब क्रि० स० पागल कर देना; मार देना (डंडा, लाठी आदि) ।

सनकारब क्रि० स० इशारा करना, इशारे से बुलाना; सं० संकेत ।

सनखर सं० पुं० सन का टुकड़ा; वै०-रा।
सनहकी सं० स्त्री० चीनी की तश्तरी।
सनफर वि० पुं० सस्ता; क्रि० वि०-रे; कम दाम में।
सनीचर सं० पुं० शनिश्चर; व्यं० बहुत भोजन करनेवाला; सं०।
सनेस सं० पुं० संदेश;-पठइब,-देब,-आइब,-पाइब, -मिलब; सं० संदेश।
सनेह सं० पुं० स्नेह, प्रेम; वि०-ही।
सनोहब क्रि० स० (दूध का) अंदाज लगाना; खरीदने के पहले पशु का दूध दुहना।
सन्नूखि सं० स्त्री० संदूक।
सन्नेह सं० पुं० संदेह;-करब,-रहब; सं० संदेह।
सपट्ट सं० पुं० चुप हो जाने की स्थिति;-मारब, -खींचब।
सपठा सं० पुं० लकड़ी का छोटा संदूक जिसमें जेवर रखे जाते हैं।
सपना सं० पुं० स्वप्न;-देखब; कविता एवं गीतों में "सपन";-होब, बहुत दिनों से न दिखाई पड़ना; सं०।
सपनाय सं० पुं० किसी देवता की प्रेरणा से आया हुआ स्वप्न;-होब।
सपरब क्रि० अ० तैयार होना, तैयारी करना; प्रे० -राइब,-उब; वै० सँ-, भा०-राई, तैयारी; (२) हो सकना, संभव होना; प्रे०-पारब, नाश कर देना।
सपहरि क्रि० वि० सब के सब; बिना किसी को छोड़े; वै० सँ-।
सपाट वि० पुं० साफ; स्त्री०-टि।
सपारब क्रि० स० नष्ट करना; उखारब-,हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना; दे० सँपरब, वै० सँ-।
सपेद वि० पुं० सफेद; भा०-दी;-दी करब,-होब, चूनाकारी करना या होना; (२) सपेदी= बुढ़ापा।
सफका वि० पुं० सफेद।
सफर सं० पुं० यात्रा; वि०-री, जो यात्रा योग्य हो (सामान), हल्का, छोटा; प्र०-इ।
सफरा सं० पुं० बैलगाड़ी में बिछाने और ढकने के लिए चौड़ा मजबूत सुतली का कपड़ा।
सफवाइब क्रि० स० साफ कराना, सफाई कराना; फा० साफ।
सफहा वि० पुं० साफा बाँधे हुए, साफा वाला।
सफाइब क्रि० स० साफ करना; स्पष्ट कर लेना; प्रे०-फवाइब, वै०-उब।
सफाई सं० स्त्री० स्वच्छता; व्यं० हानि, नाश; -करब,-होब।
सफाचट्ट वि० समाप्त; जिसमें कुछ बचा न हो; वै०-ट।
सफाब क्रि० अ० साफ होना; प्रे० सफाइब, -फवाइब,-उब।

सफीना सं० पुं० उपस्थित होने का आज्ञा-पत्र; सम्मन-,-आइब,-मिलब;-तामील करब,-होब; लै० सब (नीचे)+पीना (दंड)=जिसके विरोध करने पर दंड मिले; अं० समन।
सफील वि० पुं० बहुत साफ; स्त्री०-लि।
सफेद दे० सपेद।
सफेदा सं० पुं० प्रसिद्ध आम जो सफेद रंग का होता है। (२) एक सफेद मसाला जो लकड़ी आदि में लगता है।
सब वि० सर्व० सारा, सब लोग, प्र०-बै,-भै; सं० सर्व।
सबज वि० पुं० हरा; स्त्री०-जि; वै०-बुज (प्रायः गीतों में); फा० सब्ज।
सबजा सं० पुं० नाक का एक आभूषण; वै०-बु-।
सबजी सं० स्त्री० ताजा साग; साग-,-तरकारी।
सबद सं० पुं० शब्द; पवित्र शब्द;-सुनब; सं०।
सबन सर्व० सभों; सं० सर्व।
सबरी सं० स्त्री० नकब काटने का लोहे का हथियार।
सब्बल सं० पुं० लोहे का लंबा औजार जिससे कंकड़ आदि खोदते हैं।
सबाब सं० पुं० पुण्य;-करब,-मिलब,-पाइब; सवाब; अर०।
सबासी सं० स्त्री० साबाशी; वै० चाबसी;-देब, -करब।
सबुज वि० पुं० हरा; सब्ज।
सबुनहा वि० पुं० साबुन वाला, साबुन लगा हुआ; स्त्री०-ही।
सबुनाइब क्रि० स० साबुन लगाना; प्रे०-नवाइब, वै०-उब।
सबुनाहिन वि० पुं० साबुन की सी बू वाला; -आइब,-लागब।
सबुर सं० पुं० संतोष;-करब,-होय (नष्ट होना); फा० सब्र।
सबूत सं० पुं० प्रमाण;-देब,-लेब,-माँगब।
सबेरे वि० पुं० जल्दी; समय से पूर्व; (२) प्रातः-काल (३)-रे, क्रि० वि० शीघ्र, सबेरे; अबेरे-, चाहे जब, प्र०-रवैं; दे० अबेर; सं० स+बेला (समय)।
सबै सर्व० सभी; सब लोग; दे० सब; प्र०-भै।
सभन सर्व० पुं० सभों; स्त्री०-नि।
सभा सं० स्त्री० सभा;-लागब,-होब,-करब,-बटोरब; सं०।
सम वि० पुं० बराबर;-करब,-होब;-सोझ, सीधा; -सें, सीधे से; सं०।
समकब क्रि० अ० उभड़ना, उन्नति करना, विकास करना; प्रे०-काइब; दे० जमकाइब।
समकाइब क्रि० स० संगठित करना, विकसित करना, जमाना; दे० जम-।
समकिआइब क्रि० स० बटोरना (कपड़ा आदि), सीधा करना; प्रे०-वाइब।

समगम वि० शांत;-करब; प्र०-म्म-म्म; सं० सम+गम।
समझब क्रि० स० समझना; प्रे०-झाइब,-उब; वै० -सु-।
समझि सं० स्त्री० समझ, बुद्धि; वै०-सु-।
समडेङ वि० स्त्री० लम्बा और चिकना (बाँस, लकड़ी आदि)।
समथर वि० पुं० बराबर; जो ऊँचा नीचा न हो; स्त्री०-रि; सं० सम+स्तर, स्थल।
समथाव क्रि० अ० आराम करना, सुस्ताना।
समधिआन सं० पुं० समधी का घर; वह गाँव जहाँ लड़का या लड़की ब्याही हो;-करब, समधी का मेहमान होना।
समधी सं० पुं० लड़की या लड़के का ससुर; स्त्री० -धिनि।
समन सं० पुं० कचहरी का आज्ञापत्र जिसमें किसी की उपस्थिति निश्चित समय एवं स्थान पर आवश्यक होती है। प्र०-म्मन;-आइब,-लेब, -पठइब; अं० समन।
समान दे० सामान।
समौ सं० स्त्री० ऋतु, मौसम, जमाना; सं० समय।
सम्मै वि० सारा, बहुत सा।
सयँभवार सं० पुं० कुर्मियों की एक जाति; वै० सैं-।
सय सं० स्त्री० वृद्धि;-होब।
सयकड़ा दे० सैकड़ा।
सयकिलि सं० स्त्री० पैरगाड़ी, बाइसिकिल; वि० -लिहा, सायकिल चलानेवाला।
सयगर वि० पुं० अधिक; क्रि०-राब, स्त्री०-रि; वै० सै-।
सयतान सं० पुं० शैतान, बदमाश; भा०-नी; अर० शैतान।
सयदै क्रि० वि० शायद ही; दे० सायद।
सयन सं० पुं० इशारा; वै० सैन; (२) सोने की क्रिया;-करब, सोना (देवता के लिए); सं० शयन।
सयमड़ वि० पुं० मस्त, मनमौजी; भा०-ई।
सयम्मर वि० बहुत सा।
सयराठ सं० पुं० झंझट, तैयारी;-करब, कष्ट उठाना; वै० सै-।
सयल दे० सैल।
सयलानी वि० मनमौजी; वै० सै-।
सयहरन सं० पुं० सहन;-करब,-होब; वै० सै-।
सयान वि० पुं० बड़ा, समझदार; स्त्री०-नि; भा० -यनई,-पन; सं० सज्ञान।
सयार वि० पुं० जल्दी होनेवाला (काम);-होब, -धरब।
सरक सं० पुं० साला; सार (दे०) का घृ० रूप।
सरकठ सं० पुं० प्रबन्ध, समझौता;-करब,-होब।
सरकब क्रि० अ० सरकना; प्रे०-काइब,-उब।
सरकस वि० पुं० प्रभावशाली, हिम्मतवाला; स्त्री० -सि, भा०-ई; फा० सरकश (सर=सिर, कश, उठानेवाला)।
सरका सं० पुं० सरकाने की क्रिया, हस्तमैथुन, -मारब।
सरकाइब क्रि० स० खिसकाना; वै०-उब; प्रे० -कवाइब।
सरकार सं० स्त्री० गवर्नमेंट; मालिक; वि०-री; नौकर मालिक को "सरकार" कहकर संबोधित करता है और उसके सामान को 'सरकारी' कहता है। सर्कार।
सरकिल सं० पुं० क्षेत्र, मंडल, सीमा; अं०।
सरकी दे० सेरकी।
सरखत सं० पुं० लिखित ठेका या किरायानामा।
सरग सं० पुं० स्वर्ग; नरक-;-गें जाब, मरना; सं०।
सरगना सं० पुं० नेता; प्रभावशाली व्यक्ति; फ़ा० सरग़नः।
सरगही सं० स्त्री० सूर्योदय के पूर्व का वह भोजन जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग करते हैं।
सरङ्गी सं० स्त्री० सारंगी;-बजाइब; वि०-ङ्गिहा, सारंगी बजानेवाला; सं०।
सरजि सं० स्त्री० प्रसिद्ध कपड़ा सर्ज; अं०।
सरजू सं० स्त्री० रामायण की प्रसिद्ध नदी सरयू; -जी,-माई; सं०।
सरति सं० स्त्री० शर्त, वै०-र्ति; फ़ा०।
सरथब क्रि० स० समझाना;-भरथब, पट्टी पढ़ाना; प्रे०-थाइब-भरथाइब।
सरद-गरम सं० पुं० सर्द-गर्म;-पकरब,-धरब, सर्दी-गर्मी पकड़ लेना।
सरदार सं०पुं० नेता; स्त्री०-रिनि; भा०-री; बारात में जानेवाले लोग (नौकर-चाकर नहीं)।
सरदिआब क्रि० अ० सरदी से प्रभावित होना, बीमार पड़ना; वै०-याब।
सरदिहा वि० पुं० सरदीवाला, सरदी से जल्दी बीमार पड़ जानेवाला; स्त्री०-ही।
सरदी सं० स्त्री० ठंढक; जाड़ा;-परब,-होब;-खाब, -लागब।
सरधा सं० स्त्री० श्रद्धा;-भगती, श्रद्धा भक्ति।
सरन सं० स्त्री० शरण;-लेब,-देब;-पाइब; सं०।
सरनाम वि० पुं० प्रसिद्ध;-होब,-रहब; वै०-नाम; फा०।
सरप सं० पुं० साँप; प्र०-र्प्प।
सरपट सं० पुं० घोड़े की एक चाल; तेज चाल; -चलब,-दउरब,-दउराइब।
सरपत सं० पुं० मूँजा; एक लंबी जंगली घास।
सरपुत सं० पुं० साले का बेटा; सं० श्यालपुत्र।
सरपुतिया सं० स्त्री० लता में फलनेवाली एक तरकारी; वै०-आ, सत-।
सरपोटब क्रि० स० बटोरकर खा लेना; झटपट खा लेना।

सरफ सं० पुं० व्यय;-करब,-होब; फा० ।
सरफा सं० पुं० खर्च;-करब,-होब ।
सरफारेवरी सं०स्त्री० एक छोटा खट्टा फल जिसका आकार रेवड़ी की भाँति होता है ।
सरफुराई सं० स्त्री० सनई की सूखी लकड़ी; वै० -लाई,-लफुलाई ।
सरब क्रि० अ० सड़ना, प्रे०-राइब,-उब ।
सरबत सं० पुं० शर्बत;-घोरब,-बनइब,-पियब ।
सरबती सं० पुं० एक बारीक कपड़ा ।
सरबदा क्रि० वि० सदैव, सर्वदा; सं० ।
सरबराहकार सं० पुं० मुकदमे या जमींदारी का काम देखनेवाला सहायक ।
सरबरि सं० स्त्री० बराबरी;-करब; वि०-हा, समकक्ष ।
सरबस सं० पुं० सर्वस्व; सब कुछ; सं० ।
सरबावलि सं० स्त्री० सर्वनाश; समाप्ति;-होब, -करब ।
सरम सं० पुं० शर्म, लज्जा; कभी-कभी यह स्त्रीलिंग में भी बोला जाता है; वि०-दार, क्रि० -माब ।
सरमाब क्रि०अ० लजाना, शर्म करना; प्रे०-मवाइब; शर्म ।
सरया सं० पुं० एक प्रकार का अच्छा धान ।
सरर-सरर क्रि० वि० सरसर आवाज करते हुए; वै० सर्र-सर्र ।
सरलहा वि०पुं० सड़ा हुआ; वै० सल्लाह (दे०) ।
सरवन सं० पुं० श्रवण जिसकी मातृ-पितृ-भक्ति प्रसिद्ध है; सं० ।
सरवरिआ सं० पुं० सरयू के उत्तर के प्रदेश का रहनेवाला (ब्राह्मण); वै०-रिहा; सं० सरयू; दे० सरवार ।
सरवाइब क्रि० स० ठंढा करना; वै० से-,-उब ।
सरवार सं०पुं० सरयू के उत्तर का प्रांत जो ब्राह्मणों की पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है; वै०-रुआर; सं० सरयू+पार ।
सरसई सं० स्त्री० किसी फल का गोल प्रारम्भिक रूप (विशेषतः आम के);-लागब ।
सरसव सं० स्त्री० सरसों; वै०-सौ; सं० सर्षप ।
सरहँग वि० पुं० लंबा चौड़ा (व्यक्ति) प्रभावशाली ।
सरहजि सं० स्त्री० साले की स्त्री ।
सरहद्द सं०पुं० सीमा; वि०-द्दी, सीमा पर स्थित ।
सरहर वि० पुं० पतला एवं लंबा; स्त्री०-रि; पद्दे० "सावन टेढ़ि चढ़त मा सरहरि, कहैं सबलसिंह बूझौ नरहरि ।"
सरहँस सं० पुं० सारस;-यस, लंबा (व्यक्ति) ।
सराइब क्रि० स० सड़ाना; प्रे०-रवाइब,-उब; वै० -उब ।
सराकति सं० स्त्री० साझा;-करब,-मँ;।वै०-री-; फ़ा० शिरकत ।
सराजाम सं०पुं० प्रबंध;-करब,-होब; फ़ा०सरंजाम ।
सराधि सं० स्त्री० श्राद्ध;-करब,-होब; कहा० सेंति क धान मउसिआ क सराधि ।
सराप सं० पुं० शाप;-देब; क्रि०-ब; सं० शाप ।
सरापब क्रि० स० शाप देना, प्रे० सरपवाइब,-उब; सं० ।
सराफा सं० पुं० सर्राफ की दूकान वृत्ति या बाजार; -फी, सर्राफ का काम ।
सराब सं० स्त्री० मदिरा; वि०-बी; फा० ।
सराबोर वि० पुं० खूब भीगा हुआ; स्त्री०-रि; -होब,-करब; क्रि० सरबोरब; कविता में "सरबोर" ।
सराय सं० स्त्री० धर्मशाला; सूनी-, निर्जन स्थान ।
सरारति सं० स्त्री० शरारत;-करब,-होब; वि०-ती, -ररतिहा,-ही ।
सरावट सं० पुं० हँड़िया में भिगोया प्याज़, महुआ आदि जो कई दिन सड़ने के बाद बैलों को पिलाया जाता है; खटाई से भरा हुआ पानी जिसमें माजनेवाले बर्तन भिगोये जाते हैं ।
सरासर वि० स्पष्ट, निःसंदेह ।
सराहना सं० स्त्री० प्रशंसा;-करब,-होब ।
सराहब क्रि० स० प्रशंसा करना ।
सरि सं० स्त्री० गड्ढा;-भाठब, किसी प्रकार काम चलाना ।
सरिआइब क्रि० स० सड़ाना; प्रे०-वाइब ।
सरिष्ठ वि० बड़ा; सं० श्रेष्ठ ।
सरिहन दे० सरीहन ।
सरीक वि० सम्मिलित; हिस्सेदार;-होब; सामिल- ।
सरीख वि० बराबर, समान ।
सरीफ वि० पुं० सज्जन, भलामानुस; स्त्री०-फि ।
सरीफा सं० पुं० शरीफा ।
सरीर सं० पुं० बदन; गुह्येंद्रिय; सं० शरीर ।
सरीराडंड सं०पुं० बीमारी; शारीरिक दंड (भगवान् द्वारा दिया हुआ) ।
सरीहन क्रि० वि० स्पष्टतः; खुल्लम-खुल्ला ।
सरुआर दे० सरवार ।
सरेख वि० पुं० चतुर; स्त्री०-खि; कहा० कहवैया ल सुनवैया सरेख होय; सं० श्रेयस् ।
सरौता सं० पुं० सुपारी काटने का औजार; स्त्री० -ती; वै० सरवता ।
सरौती सं० स्त्री० एक प्रकार का गन्ना जो नरम एवं पतला होता है ।
सर्हा वि० पुं० चिकना और ऊँचा (पेड़) वै० सर्रा ।
सलकठ सं० पुं० प्रबंध;-बइठब,-बइठाइब दे०-र- ।
सलतन्त वि० पुं० शांत, कुशलतापूर्ण;-होब,-करब, -रहब ।
सलफ वि०पुं० आसान, सस्ता; स्त्री०-फि; क्रि० वि० -फें, सस्ते में; वै०-भ; सं० सुलभ ।
सलाई सं० स्त्री० सलाई;-लागब,-लगाइब ।

सलाइब दे० सालब ।

सलाकब क्रि० स० पेंसिल से कागज़ पर लिखने के लिए रेखायें खींचना; सं० शलाका ।

सलाका सं०स्त्री० पेंसिल; क्रि०-कब; सं० शलाका ।

सलाम सं० पुं० प्रणाम करने का मुसलिम तरीका; -करब; अर० सलम (परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे ) ।

सलामी सं० स्त्री० बार बार सलाम करने की पद्धति; महत्वपूर्ण अवसर पर सलाम; दीवार, छत आदि का थोड़ा सा झुकाव;-लेब,-देब,-दागब ।

सलिल वि० पुं० आसान;-पाइब, आसान होना, -रहब; सं० सरल ।

सलीपट सं० पुं० लकड़ी या लोहे का मोटा लंबा टुकड़ा; वै० सि-।

सलीपर दे० सिलीपर ।

सलीफा सं० पुं० शरीफा ।

सलीमा सं० पुं० सिनेमा;-देखब; अं० ।

सलूक सं० पुं० व्यवहार;-करब,-होब ।

सलूका सं० पुं० आधी बाँह की बनियान जिसमें सामने बटन लगते हों ।

सलैआ सं० पुं० सालदेने वाला; दे० सालब ।

सलोन वि० पुं० नमकीन; सुन्दर; स्त्री०-नि; भा० -पन,-नई सं० सलवण; दे० अलोन।

सल्लाह सं० स्त्री० राय;-देब,-लेब,-करब; वि०-हूँ, सलाह की (बात); क्रि० वि०-न-, सलाह के लिए, -सूत, विचार-विनियम ।

सल्लेब सं० पुं० मेल, एकमत;-करब,-होब ।

सवँठई सं० स्त्री० साँवठ (दे०) का काम;-करब ।

सवँपब दे० सउँपब ।

सवँरिआ क्रि० अ० सावँला हो जाना, (अंग या व्यक्ति का); भुनकर काला पड़ जाना (चावल आदि का); वै०-राब; सं० श्यामल ।

सवँला सं० पं० प्रेमी, पति; गीतों में प्रयुक्त; वै० -लिया,-आ; सं० श्यामल ।

सवँलिआ सं० पुं० प्रेमी, पति; वै०-यार, साँ-; सं० श्यामल ।

सव वि० सौ; यक-,दुइ-; वै० यक सय, दुइ सय ।

सवकीन दे० सउक ।

सवगंध सं० पुं० शपथ;-खाब,-लेब; वै० सौ-, सउ-।

सवति सं० स्त्री० सपत्नी;-आ डाह, सपत्नी वाली ईर्ष्या; वै० सौ-; सं० सहपत्नी ।

सवतिन सं० स्त्री० कविता एवं गीतों में 'सवति' के ही अर्थ में; सं० ।

सवदा सं०पुं० सौदा;-करब,-देब,-लेब;-सुलुफ, छोटा मोटा सौदा;-गर, व्यापारी; वै० सौदा; सौद: ।

सवधंधी वि० जो अनेक कार्यों में व्यस्त रहे; सव (सौ)+धंधा ।

सवन सं० पुं० गीतों में प्रयुक्त 'सावन' का संक्षिप्त रूप ।

सवहर सं० पुं० पति; वि०-री, पति का (हिस्सा, हक आदि); वै०-ह; शौहर ।

सवाई सं० सवागुना (नाज, रुपया आदि);-देब -लेब;-सूत;-डेढ़ी, सवाया तथा ड्योढ़ा (सूद लेने एवं नाज देने का तरीका) ।

सवाङ सं० पुं० वयः प्राप्त पुरुष; सुन्दर व्यक्ति; स्त्री०-ङिनि; बारात में आये हुए मिहमान (नौकर नही) ।

सवाचब क्रि० स० गिनकर ठीक करना; मिलाना; प्रे०-वचवाइब ।

सवाद सं० पुं० स्वाद, आनंद, मजा;-लेब,-देब, -मिलब; क्रि०-ब, वि०-दी,-दू; सं० स्वाद ।

सवादब क्रि० स० मजा लेना; जीभि-, खाकर आनंद लेना; सं० स्वाद ।

सवादी वि० स्वाद लेनेवाला; शौकीन (खाने पीने का); पृ०-दू ।

सवाया वि० सवागुना ।

सवार सं० पुं० चढ़ने वाला व्यक्ति;-करब,-होब ।

सवारी सं० स्त्री० चढ़ने का वाहन; चढ़नेवाला व्यक्ति;-पाइब,-देब,-लेब,-मिलब;-सिकारी, चढ़कर जाने का साधन ।

सवाल सं० पुं० प्रश्न, प्रार्थना;-करब, प्रार्थना करना;-जवाब, उत्तर-प्रत्युत्तर ।

सवाल-खानी सं० स्त्री० कचहरी में प्रार्थनापत्र लेने का समय, दस्तूर आदि ।

ससरी सं० स्त्री० साँस;-चलब; वै० सँ-;सं० श्वस् ।

ससुर सं० पुं० स्त्री का पिता;-रें, (स्त्री की) ससुराल में; सं० श्वशुर ।

ससुरा सं० पुं० गाली या घृणा में प्रयुक्त "ससुर" का रूप; दु ससुरा !

ससुरारि सं० स्त्री० ससुराल; सं० श्वशुरालय; गीतों में "सासुर";-रीं, ससुराल में ।

ससेटब क्रि० स० बाध्य करना, घेरना; प्रे०-टवाइब ।

सह सं० स्त्री० प्रोत्साहन;-देब,-पाइब; सं० सह (बल) ।

सहज वि० पुं० आसान, सीधा; स्त्री०-जि, प्र०-जै, -जौ; भा०-ई,-पन क्रि० वि०-जें, सरलतापूर्वक; सं० ।

सहजोर वि० पं० बलवान; स्त्री०-रि; सं० सह (बल)+फा० ज़ोर (बल) ।

सहत वि० पुं० सस्ता; भा०-ई,-ती-ताई, क्रि०-ताब, सस्ता होना;-महँग, चाहे जिस मूल्य पर; क्रि० वि०-तें, सस्ते दाम में ।

सहन वि० लंबा चौड़ा (स्थान); फा० सहन (आँगन) ।

सहना सं० पुं० प्रजा; केवल कविता में; एक मास दुइ गहना, राजा मरै कि सहना । (२) फसल संबंधी मुकदमों में अदालत द्वारा नियुक्त पंच जो सभी फसल का उत्तरदायी होता है ।

सहनाई सं० स्त्री० प्रसिद्ध बाजा; फा० शहनाई।
सहनी सं० स्त्री० छोटी नाँद जिसमें गन्ने का रस गरम होता है।
सहब क्रि० स० सहना; प्रे०-हाइब,-हवाइब; सं० सह।
सहबई सं० स्त्री० साहबी; वै०-हे-।
सहबऊ वि० साहब का सा; अंग्रेजी;-ठाट वै० -हे-।
सहमब क्रि० अ० सहम जाना; प्रे०-माइब,-उब।
सहर सं० पुं० नगर;-कहर, शहर जैसा स्थान; वि० -री,-रऊ,-राती।
सहलोलवा वि० जो बोलने में चतुर और मीठा पर धोका देनेवाला हो; भा०-लई।
सहवइया सं० पुं० सहन करनेवाला; वै० -वैया।
सहवाइब क्रि०स० दंड देना, (किसी को) सह लेने के लिए बाध्य करना; वै०-उब; सं० सह्।
सहाना सं० स्त्री० एक प्रकार की चूड़ी जो प्रायः शादी में पहनी जाती हैं; फा० शाहानः ?
सहारा सं० पुं० आश्रय;-देब,-लेब,-पाइब।
सहिजन सं० पुं० एक पेड़ जिसकी फली की तरकारी बनती है;-अति फूलै तऊ डार पात की हानि।
सहिना सं० पुं० अरवी के पत्तों में पीठा लपेटकर बनाई हुई बड़ी बड़ी पकौड़ी,-बनइब; वै० सो-।
सही वि० ठीक;-करब, हाँ कर लेना;-सही, ठीक ठीक; इहै-, यही ठीक है; सहीह।
सहीस सं० पुं० साईस; भा०-सी, साईस का काम।
सहुआइन सं० स्त्री० साहु की स्त्री; वै०-नि; दे० साहु; कहा० सीलें सीलें-गभिनाय गईं।
सहुगाति सं० स्त्री० उपहार (प्रायः खाने-पीने की वस्तुओं का); दे० सउगाति।
सहेजब क्रि० स० गिनकर या अच्छी तरह देखकर मिला लेना; सँभाल लेना; व्यर्थ न जाने देना (भोजन आदि को); प्रे०-जवाइब,-उब।
सहेलरी सं० स्त्री० सहेली; सखी-।
सहैया दे० सहवइया।
साँकर वि० पुं० तंग; स्त्री०-रि, भा० सँकरई।
साँकलि सं० स्त्री० जंजीर; सं० शृंखला।
साँच वि० पुं० सच्चा; स्त्री०-चि, सं० सत्य।
साँचा सं० पुं० साँचा।
साँची सं० पुं० एक प्रकार का पान जो शायद पहले पहल साँची में उत्पन्न होता रहा हो।
साँचै-साँच क्रि० वि० सच्ची-सच्ची, ठीक-ठीक (कहना); वै० सच्चै-सच्च,-चौ-; (दे०)।
साँझ सं० स्त्री० संध्या; क्रि० वि०-झैं,-झौ-साँझ, -बिहान,-सबेरे;-करब,-होब; सं० संध्या; दे० संझा।
साँट-गाँठ सं० पुं० मिल-जुलकर किया प्रबंध; -करब,-लगाइब, क्रि० साँटब-गाँठब, ठीक कर लेना।
साँटा सं० पुं० मोटा बेत;-मारब; स्त्री०-टी;-लगाइब; वै० सँटहा; दे० सोंटा, सटहा; क्रि० सँटहरब (दे०)।
साँड़ सं० पुं० साँड़; व्यं० मोटा तगड़ा व्यक्ति जो कुछ न करता हो, जवान लड़का;-होब,-थस; क्रि० सँड़ाब, साँड़ की भाँति व्यवहार करना, उद्दंडता करना।
साँड़िनी सं० स्त्री० मादा ऊँट जो बहुत तेज दौड़ती है।
साँड़िया सं० पुं० तेज दौड़नेवाला ऊँट जो पागल हाथी को भी पकड़कर ठीक करता है।
साँप सं० पुं० साँप; स्त्री०-पिनि; सं० सर्प।
साँस सं० स्त्री० साँस;-लेब,-निकरब; मु० फुर्सत, -पाइब,-देब,-लेब; वै०-सि,-सु।
साँसति सं०स्त्री० कष्ट; निरंतर पर साधारण दुःख; -करब,-होब; जिउ कै-।
साँसा सं० पुं० प्राण; केवल साँस (शक्ति नहीं); -चलब, मरने के समय चलनेवाला साँस; सं० श्वास।
साँसि दे० साँस।
साइति सं० स्त्री० मुहूर्त;-देखब,-निकारब,-बिचारब; -सुदिना, अच्छा मुहूर्त; फा० सायत।
साइरी सं० स्त्री० कविता, कहावत;-मसल; शायरी।
साईं सं० पुं० मुसलिम फकीर; एक विशेष प्रकार के भिखमंगे जो मुसलमान होते और झाड़-फूँक करते हैं; स्वामी (प्रायः कविता में);-बाबा; सं० स्वामिन्।
साई सं० स्त्री० बाजा बजानेवाले या अन्यान्य विशेष मजदूरों को काम करने के लिए दिया हुआ बयाना;-देब, निमंत्रित करना, बुलाना।
साउधान दे० सावधान।
साक सं० पुं० रोब, प्रसिद्धि;-मर्जाद;-होब,-चलब; प्र०-का; सं० शाका।
साकि सं० स्त्री० पुरानी खाँसी; वि० सकिहा।
साकिन सं० रहनेवाला या वाली, कचहरी या कानूनी कागजों में स्त्री पुरुषों के नाम के आगे प्रयुक्त शब्द; फा०।
साख सं० स्त्री० शाखा;-फूटब,-निकरब; प्र०-खा; सं०।
साखी सं० पुं० गवाही,-भरब,-देब; गवाही-, प्रमाण; सं० साक्षी।
साखोच्चार सं० पुं० विवाह में दोनों पक्षों के गोत्रों का पूरा विवरण जो पंडितों द्वारा सुनाया जाता है। सं० शाखा + उच्चार।
साग सं० पुं० पत्तेवाली तरकारी;-पात, पत्तों का भोजन जिसमें मसाला आदि न पड़ा हो;-यस, सुविधापूर्वक (काट डालना); सं० शाक।

साङ्ठ सं० पुं० प्रबंध;-करब,-बान्हब; सं० स+गठ् (संगठन)।

साजन सं० पुं० प्रिय, प्रेमी; पति; प्रायः गीतों में; स्त्री०-नि, सजनी (दे०)।

साजब क्रि० स० सजाना;-बाजब,-तुलइब; ठाट-बाट से तैयार करना (दुलहे, दुलहिन आदि को); प्रे० सजाइब सजवाइब,-उब।

साज-बाज सं० पुं० ठाट-बाट, सजाने का उपक्रम या सामान;-करब,-होब।

साटन सं० पुं० प्रसिद्ध कपड़ा।

साटब क्रि० स० चढ़ा देना, ऊपर सी देना या डाल देना (एक कपड़े पर दूसरा); प्रे० सटाइब।

साठा सं० पुं० साठ वर्ष का व्यक्ति; कहा० साठा सो पाठा (दे०)।

साठि वि० साठ; सं० षष्ठि।

साठी सं० पुं० एक प्रकार का धान।

साढ़ा सं० पुं० लालच, आकर्षण;-लगाइब; लालच देना।

साढ़ू सं० पुं० स्त्री की बहिन का पति;-भाई; स्त्री० सढ़ुआइनि (दे०), दे० सढ़ुआन।

सात वि० सात;-पाँच, अनेक लोग;-पाँच कै लाठी एक जने क बोझ; प्र०-तै,-तौ; सं० सप्त।

सातय वि० सात ही; वै०-तै।

सातव वि० सातो; वै०-तौ।

साथ सं०पुं० साथ;-करब,-देब,-धरब,-छोड़ब,-रहब, -होब,-पाइब,-लेब; क्रि० वि०-थें-थें,-थै साथ, साथ ही साथ;-थँ, साथ में।

साथी सं० पुं० साथ रहनेवाला; स्त्री०-थिनि।

सादय क्रि० वि० सादे ढंग से ही;-बोदा, सीधे-सादे ढंग से; वै०-दै।

सादव वि० सादा भी; वै०-दौ।

सादा वि० पुं० सादा; स्त्री०-दी; सीधा-,-बोदा; दे० सोझ।

सादी सं० स्त्री० ब्याह;-करब,-होब;-बियाह-; फा० शादी (ख़ुशी)।

साध सं० स्त्री० हार्दिक इच्छा, लालसा;-रहब, इच्छापूर्ति होना;-करब;-लागब;-न मरब, साध करते-करते मर जाना, इच्छापूर्ति न होना; वै०-धि।

साधब क्रि० स० साधना, ठीक करना, नापना; नापब-; प्रे० सधाइब,-उब; मु० बैर-, दुश्मनी निकालना।

साधा-लोभी क्रि० वि० इच्छा या साध के कारण (आवश्यकता से नहीं); साध+लोभ; प्रायः किसी ऐसी वस्तु के खाने के लिए जो प्रायः न खाई जाती हो।

साधि सं० स्त्री० लालसा; दे० साध।

साधू सं० पुं० साधु; भा० सधुप्पन, सधुआई;-अई, क्रि० सधुआब (दे०)।

सान सं० स्त्री० तेजी (चाकू आदि की);-धरब, -धराइब,-चढ़ब,-चढ़ाइब; वै०-नि।

सान सं० स्त्री० रोब, ठाट;-करब,-देखाइब,-गाँठब; वि०-नी,-दार; क्रि० सनाब, शान में आना।

सानब क्रि० स० सानना (आटा, मिट्टी आदि), सम्मिलित करना, व्यर्थ में फँसाना; प्रे० सनाइब, सनवाइब,-उब।

सापट सं० पुं० शांति, चुप्पी;-मारब,-खींचब।

साफ वि० पुं० साफ;-रहब,-करब (मु० नष्ट करना), -होब;-सूफ, खूब साफ; स्त्री०-फि;-साफ, साफै-।

साफ़ा सं० पुं० सिर पर बाँधने का साफा; स्त्री० फी, छोटा रूमाल जिसे साधू लोग चिलम में नीचे लगाकर गाँजा आदि पीते हैं। साफ़?

साबर सं० पुं० एक जंगली जानवर जिसका चमड़ा बहुत मजबूत होता है और जूते आदि बनाने के काम में आता है।

साबर सं० पुं० प्रसिद्ध मंत्र (पं०)।

साबस वि० बो० शाबाश! वै० बा-।

साबित वि० सिद्ध;-करब,-होब।

साबुन सं०पुं० साबुन; वि० सबुनहा,-नाहिन; क्रि० सबुनाइब;-दान, बर्तन जिसमें साबुन रखा जाय।

साबूत सं०पुं० सबूत, प्रमाण;-देब,-लेब, हाकिम का, वि०-ती (कागद) सबूतवाला (कागज) अर०।

सामग्रिही सं० स्त्री० कथा, पूजा आदि के लिए सामग्री;-लाइब,-धरब; सं०।

सामतूल वि० पुं० शांत, चारों ओर बराबर;-करब, -रहब; सं० सम्+तुल्; वै०-कूल।

सामने क्रि० वि० सम्मुख;-आमने-।

सामान सं०पुं० सामान;-करब, प्रबंध करना; वै० समान; फा० सामाँ।

सामि सं० स्त्री० लोहे की गोल टोपी जो मूसल में लगती है।

सामिल वि० सम्मिलित;-करब,-होब;-हाल, एकत्र, मिलकर (कई लोगों का रहना) फा० शामिल।

सायर सं० पुं० गाँव का ऊपरी काम;-दार, गाँव का चमार जो यह ऊपरी काम सँभाले।

सायरी सं० स्त्री० कविता, पुरानी मसल जो प्रायः कविता में रहती हैं। मसल, कहावत; फा० शायरी।

सायल सं० पं० प्रार्थी; फा०।

सार सं० पुं० साला; दु-रे, मरु-रे, डाँटने के शब्द; -बहनोई; दे० सरपुत, सरहजि, सारि, सरसरा, सबसड़ा (साले का साला)।

सारङ सं० स्त्री० एक प्रकार की मधुमक्खी।

सारङा सं० स्त्री० रानी सारङा जिनकी कहानी देहात में खूब कही जाती है।

सारब क्रि० स० दबा-दबा के मीजना; तेल लगाकर मलना; मीजब-,-मीजब, प्रे० सराइब।

सारा वि० पुं० पूरा; कुल; स्त्री०-री।

सारि सं० स्त्री० साले की बहिन।

सारी सं० स्त्री० जानवरों के बाँधने का वर; (२) साड़ी; लहँगा-।

साल सं० पुं० वर्ष; यक-भर,-तमामी (पूरे साल का लगान),-लौ साल, प्रतिवर्ष,-लै साल; वै०-लि; फा० ।
सालन सं०पुं० भात या रोटी के साथ खाने के लिए तरकारी ।
सालब क्रि० अ० दु:ख देना, खलना, हृदय में गड़ा रहना; गी० क०; (२) चूल मिलाना, खाट के सभी अंग ठीक करना; प्रे० सलाइब,-उब ।
सालम मिसिरी सं० स्त्री० एक प्रकार की बूटी जो देखने में मिश्री सी होती है । वै०-लि- ।
सालिकराम सं० पुं० शालग्राम; वै०-ग-; सं० ।
सालिस सं०स्त्री० षड्यंत्र;-करब, किसी से मिलकर गड़बड़ करना;-होब,-रहब ।
सावकास सं० पुं० फुर्सत, बीमारी की कमी;-होब, -पाइब; सं० स+अवकाश ।
सावधान वि० पुं० शांत, ठीक-ठाक;-रहब, -होब ।
सावन सं० पुं० श्रावण;-भादौं; कहा०-के अन्हरे क हरियरी सूझत है ।
सावाँ सं०पुं० एक नाज जिसका चावल गोल और पीला होता है;-कोदो, साधारण देहाती अनाज ।
सासु सं० स्त्री० सास; अजिया-, सास की सास; ननिया-, मयभा-(दे० मयभा); सं० ।
सासुर सं० पुं० (स्त्री के) ससुर का घर; नैहर-; गी० ।
साह वि० ईमानदार; जो चोर न हो; सं० साधु ।
साहब सं० पुं० अंग्रेज; मेम-, लाट-, बड़े-; वै० -हे- ।
साही सं०स्त्री० प्रसिद्ध जंगली जानवर जिसके पीठ पर काँटे होते हैं; (२) शासन;-बियापब, अधिकार या शासन होना; फा० शाह (सम्राट्) ?
साहु सं०पुं० सेठ, धनी व्यापारी; स्त्री० सहुआइनि; किसी भी बनिये को "साहु" कहकर पुकारा जाता है; सं० साधु ?
सिंघासन सं० पुं० सिंहासन ।
सिंघुरब क्रि० अ० बीमारी के बाद ठीक होना; वै०-हु- ।
सिंचवाइब क्रि० स० सिंचाना; वै०-उब; सं० सिच् ।
सिंचवाई सं० स्त्री० सींचने की मजदूरी या पद्धति; सं० ।
सिंचाइब क्रि० स० सिंचाना; सींचने में मदद करना; प्रे०-चवाइब,-उब; सं० ।
सिंचाई सं० स्त्री० सींचने का क्रम; उसकी मजदूरी;-करब,-होब; सं० ।
सिंचानि सं० स्त्री० सींचने की मिहनत ।
सिंहुरब दे०-घुरब ।
सिंहोर सं० पुं० एक जङ्गली पेड़ जिसकी छाल दवा में काम आती है ।
सिंहोरा सं० पुं० लाल डिब्बा जो प्राय: लकड़ी का बना और सिंदूर रखने के लिए होता है; लाल -,खूब लाल;-यस लाल ।
सिउ सं० पुं० शिव;-जी,-बाबा,-सिउ,-पारबती; सं० शिव ।
सिकन सं०स्त्री० चमड़े या कपड़े आदि की सिकुड़न या रेखा;-परब,-डारब ।
सिकमी सं०पुं० छोटा या मुख्य काश्तकार के नीचे का जुतारा ।
सिकहर सं० पुं० छींका कहा०-टूट बिलारी क भागि से ।
सिकस्त वि० थका या हारा;-करब, हरा देना, गिरा देना (दीवार, मकान आदि)-खाब, हार जाना ।
सिकाइति सं० स्त्री० शिकायत;-करब,-होब; वि० -ती, शिकायतवाली (चिट्ठी, बात आदि) ।
सिकार सं० पुं० शिकार;-करब,-खेलब,-पाइब; फा० ।
सिकारी सं० पुं० शिकार खेलनेवाला; वि०-मनई, -जिउ ।
सिकुरब क्रि० अ० सिकोड़ना; प्रे०-कोरब ।
सिकोरब क्रि०स० सिकोड़ना; नेकुरा-, नाक सिकोड़ना; सं० सं+कोच् ।
सिकौला सं० पुं० सींक का बना टोकरा; स्त्री० -ली, वै०-कहुला,-ली ।
सिक्का सं०पुं० सिक्का;-जमाइब, प्रतिष्ठा स्थापित करना ।
सिखइब क्रि० स० सिखाना;-पढ़इब; वै०-खा-,-उब, -खा-; सं० शिक्ष् ।
सिखरन सं० पुं० दही या मट्ठा मिला हुआ शर्बत; -घोरब,-पियाइब; म० श्रीखंड ।
सिच्छा सं० स्त्री० उपदेश; शिक्षा;-लेब,-देब; सं० ।
सिजिल वि० बना हुआ; ठीक-ठीक; सजा हुआ; "साजब, सजब" से; सं० सज् ।
सिझवाइब क्रि० स० सीझने में मदद करना, खेना; वै०-झाइब,-उब ।
सिटकिनी सं० स्त्री० दरवाजे की सिटकिनी; -लगाइब,-देब; वै० चटकनी ।
सिटकी सं० स्त्री० एक जङ्गली पेड़ जिसकी पत्तियाँ कभी-कभी दवा में काम आती हैं ।
सिट्ट-पिट्ट सं० पुं० आपत्ति के शब्द;-करब; प्र० टिर-पिटिर; क्रि०-टपिटाब ।
सिट्ठी दे० सीठी ।
सिड़बिड़हा वि० पुं० टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा; स्त्री० -ही ।
सिड़ाब क्रि० अ० ठंढ से गीला हो जाना; दे० सीड़ा ।
सितार सं० पुं० प्रसिद्ध बाजा;-रिया, सितार बजानेवाला ।
सितिआब क्रि० अ० ओस से प्रभावित होना; दे० सीति; सं० शीत ।

सिथिल वि० पुं० थका हुआ, पुराना (शरीर, व्यक्ति);-परब,-होब; सं० शि- ।
सिद्ध सं० पुं० सिद्ध पुरुष;-महात्मा, पहुँचा हुआ साधु; भा०-ई,-द्धाई; (२) वि० ठीक;-करब,-होब; सं० ।
सिद्धि सं० स्त्री० योग आदि की सिद्धि; प्रायः-द्धी रूप में बोला जाता है; सं० ।
सिधवाइब दे० सोझवाइब ।
सिधाई सं० स्त्री० सीधापन; दे० सोझाई ।
सिधारब क्रि० अ० चला जाना; मर जाना; सरग- ।
सिधि वि० सिद्ध; क० में; तुल० "जेहि सुमिरत -होय" ।
सिन्नी सं० स्त्री०मुसलमानों के यहाँ बँटनेवाली मिठाई; फ़ा० शीरीनी;-बाँटब,-चढ़ाइब । कहा० अन्हरा बाँटै सिन्नी घरै घराना खाय ।
सिप्पा सं० पुं० तिकड़म, सिलसिला;-लगाइब, तरकीब करना ।
सिपारस सं० पुं० सिफारिश;-करब,-लाइब,-पहुँचाइब; फ़ा०-फारिश; वि०-सी, जो सिफारिश करे ।
सिपाही सं० पुं० सिपाही, योद्धा, पहरेदार; भा० -हगीरी, वि०-हियाना ।
सिपिहा वि० पुं० (आम) जिसके फल में पतली सीपी (दे०) सी गुठली हो ।
सिपावा सं० पुं० बैलगाड़ी के आगे लगाने के लिए लकड़ी के दो पैर जिससे गाड़ी खड़ी रहे ।
सिपुरुस सं० पुं० अधिकार, उत्तरदायित्व; सिपुर्द; -करब,-होब ।
सिपों-सिपों सं० पुं० गदहे के चिल्लाने का शब्द; -करब; अ० सी- ।
सिफर सं० पुं० शून्य;-धरब; यक-,दुइ- ।
सियब क्रि० स० सीना;-फारब, सिलाई आदि करना ।
सियरडंडा सं० पुं० अमिलतास का लंबा फल; सियार + डंडा (दे०) ।
सिया सं० स्त्री० सीता;-जी सीताजी;-बर; रामचंद्र; -बर रामचंद्र की जै, प्रायः रामायण के पाठ के अन्त में यही कहते हैं ।
सियाई सं० स्त्री० सिलाई, सीने की मजदूरी, उसकी पद्धति ।
सियार सं० पुं० गीदड़; स्त्री०-रिनि;-फेंकरत है, निर्जन स्थान है ।
सियाराम सं० पुं० सीताराम; तुल०-मय सब जग जानी ।
सिरई सं० स्त्री० चारपाई में लगी वह लकड़ी जो सिर की ओर हो;-पाटी, चारपाई की चार लकड़ियाँ (पायों के अतिरिक्त); सं० शिरः ।
सिरका सं० पुं० गन्ने या दूसरे फलों के रस की बनी एक की खटाई ।
सिरकी सं० स्त्री० मूजा (दे०) की लंबी-पतली लकड़ी; ऐसी लकड़ी (सींक) का बना छप्पर जिसे गाड़ी पर तानते या छत की भाँति झोपड़ों में लगाते हैं । दे० सींकि ।
सिरजनहार सं० पुं० बनानेवाला; भगवान्; सं० सृज् ।
सिरजना सं० स्त्री० रचना, जन्म, सृष्टि;-करब,-होब; सं० सृज् ।
सिरजब क्रि० स० बचाकर रखना; बचाना, रक्षा करना; प्रे०-जाइब,-जवाइब; सं० सृज् ।
सिरताज सं० पुं० अगुआ, शिरोमणि; फ़ा० सरताज ।
सिरनेति सं० पुं० क्षत्रियों की एक शाखा; श्रेष्ठ व्यक्ति; बड़ा-, अपने को श्रेष्ठ समझनेवाला, वै० सिन्नेत,-त; सं० श्रीनेत्र ।
सिरमिट सं० पुं० सीमेंट;-लगाइब; अं० ।
सिरीं वि० पुं० झक्की, जिद्दी; सं० झक्की व्यक्ति; भा०-पन,-पना ।
सिरसा सं० पुं० सिरसा; सं० शिरीष ।
सिलउटि सं० स्त्री० पत्थर जिस पर नाई उस्तरा साफ करता है; वै०-वटि; सं० शिला ।
सिलगर वि० पुं० जिसमें शील हो; दयालु; दूसरे का ख्याल करनेवाला; स्त्री०-रि; भा०-ई; सं० शील + फ़ा० गर; दे० सिलार ।
सिलबिल्ला वि० पुं० बेढंगा; स्त्री०-ल्ली ।
सिलवर सं० पुं० जर्मन सिलवर; अं० ।
सिलसिला सं० पुं० संबंध, सिलसिला; फ़ा० ।
सिलापट सं० पुं० लंबी चौड़ी लकड़ी ;कटी लकड़ी का टुकड़ा; अं० स्लीपर; दे० सिलीपर ।
सिलाब क्रि० अ० शील में आना, दया करना; सं० शील ।
सिलार वि० पुं० शीलवाला; दूसरे का ध्यान रखनेवाला; सं० शील; दे० सील ।
सिलिप सं० स्त्री० सिमेंट की पटरी;-लगाइब; वै० -लीप; अं० स्लैब ।
सिलीपर सं० पुं० रेल का स्लीपर; पैर में पहनने का स्लिपर; अं० स्ली- ।
सिल्ली सं० स्त्री० बड़ा टुकड़ा (लकड़ी, पत्थर आदि का); सं० शिला ।
सिव सं० पुं० शिव;-बाबा,-महराज;-सिव, घृणा एवं खेद का द्योतक शब्द; सं० ।
सिवान सं० पुं० पड़ोस का गाँव; सीमा; वै० सिउ-,-आन; सं० सीमा ।
सिवार दे० सेवार ।
सिवाला सं० पुं० शिवालय; वै०-उवाला; सं० ।
सिसकब दे० सुसकब ।
सिसहा वि० पुं० शीशेवाला, शीशे का; स्त्री० -ही ।
सिहटाचार सं० पुं० ब्याह के दूसरे दिन का एक व्यवहार;-करब,-होब; सं० शिष्टाचार ।

सिहरब क्रि० अ० सिहरना।
सिहिटि सं० स्त्री० मछली पकड़ने का एक लोहे का काँटा,-लगाइब।
सींकड़ि सं० स्त्री० जंजीर; पतली जंजीर; सं० शृंखला; वै० सिकड़ी।
सींका सं० पुं० नीम का सींका।
सींकि सं० स्त्री० सींक; मूजे का सींका;-यस, दुबला पतला।
सींङि सं० स्त्री० सींग;-पूँछि; सं० शृंग।
सींचब क्रि० स० सींचना; प्रे० सिंचाइब,-चवाइब, -उब; सं० सिच्।
सीजन सं० पुं० (गन्ने की) फसल का समय; वह ऋतु जब गन्ना मिल पर पेलने के लिए जाये; अं०।
सीझब क्रि० अ० उबल के पक जाना; खूब पक जाना; प्रे० सिझाइब,-झवाइब,-उब; सं० सिध्।
सीठा सं० पुं० सूखा हुआ नीरस अंश; स्त्री०-ठी, क्रि० सिठियाब।
सीड़ा सं० पुं० सीलन; क्रि० सिड़ाब (दे०)।
सीता सं० स्त्री० रामचंद्र की स्त्री जिनके संबंध में अवधी में अनेक गीत हैं। गीतों में प्रायः इन्हें "सितल रानी" कहा जाता है।
सीति सं० स्त्री० ओस;-परब;-घाम, सभी प्रकार का मौसम; क्रि० सितिआब,-आब।
सीधा सं० पुं० भोजन का कच्चा सामान; यक-, दुइ-, एक या दो व्यक्ति के भोजन का सामान; -पिसान, ऐसा सामान;-बान्हब,-लेब,-देब; सं० सिद्ध।
सीन-पसीना वि० पसीने से तर;-होब।
सीना सं० पुं० एक छोटा कीड़ा जो कपड़ों में लगता है; (२) छाती;-निकारब,-फुलाइब;-जोरी, जबरदस्ती।
सीनियर वि० पुं० बड़ा; स्त्री०-रि; भा०-रई; अं०।
सीया दे० सिया।
सीरा सं० पुं० शीरा; फ़ा० शीरः।
सीरि सं० स्त्री० स्वयं जोता हुआ खेत;-करब, -कराइब, खेती करना (खेत को असामी द्वारा न जुताना); वै०-र; सं० सीर (हल)।
सील सं० पुं० लिहाज़;-करब;-सकोच; वि०-दार, सिलगर, सिलार; सं०।
सीला सं० पुं० फसल का वह भाग जो काटते समय खेत में ही गिर जाता है; इसे बाद को गरीब लोग बीन ले जाते हैं; तुल० "सीला बिनत मजूर"।
सीव सं० पुं० सीमा, पराकाष्ठा; कविता में "सीवा" (तुल० अतुल बल सीवा); सं० सीमा।
सीसा सं० पुं० शीशा, आईना; फ़ा० शीशः।
सीसी सं० स्त्री० शीशी; (२) सी सी की आवाज; -करब; क्रि० सिसिआब।



सुँघनी सं० स्त्री० सूँघने की वस्तु; वै०-इ-।
सुअना दे० सुगना।
सुअरा दे० सुवरा।
सुआव क्रि० अ० क्रोध में फूला रहना।
सुइलार वि० पुं० नुकीला; स्त्री०-रि।
सुकउआ सं० पुं० शुक्र (तारा); वै० सुकवा; सं०।
सुकसुकहा वि० पुं० सुस्त एवं अकर्मण्य; स्त्री० -ही।
सुकाल सं० पुं० अच्छा समय, जमाना; दे० सुदिन, अकाल; सं०।
सुकुराना सं० पुं० काम हो जाने पर दिया हुआ द्रव्य;-देब;-लेब,-पाइब; फ़ा० शुक्र (धन्यवाद, कृतज्ञता)।
सुकुल सं० पुं० एक प्रकार के अच्छे ब्राह्मण; स्त्री० -लाइन; सं० शुक्ल।
सुक्खे क्रि० वि० बिना किसी सालन के (खाना); मु०-खाब, देखकर कुढ़ना।
सुख सं० पुं० आराम;-करब,-देब,-पाइब,-रहब, -होब; क्रि० वि०-खें, सुखपूर्वक, सरलता से; वि०-खी, कविता में-खारी; सं०।
सुखइब क्रि० स० सुखाना; वै०-उब,-खाइब; प्रे० -खवाइब; सं० शुष्क।
सुखमी वि० सुख करनेवाला, सुख का अभ्यस्त।
सुखरसी सं० स्त्री० पानी की सुविधा;-होब,-रहब; केवल पेड़ों या फसल के लिए प्रयुक्त;=रस (पानी) का सुख (शब्द-विपर्यय)।
सुखवन सं० पुं० सूखने के लिए फैलाया हुआ अन्न;-डारब,-छोड़ब,-फइलाइब; सं० शुष्क।
सुखवाइब दे० सुखइब।
सुखान वि० पुं० सूखा हुआ; स्त्री०-नि; सं० शुष्क।
सुखाब क्रि० अ० सूखना; प्रे०-खाइब,-खवाइब; दे० सूखब; सं० शुष्क।
सुखारी वि० सुखी; कविता एवं गीतों में ही प्रयुक्त; सं०।
सुखी वि० सुखपूर्ण,-रहब,-होब,-करब; आशीर्वाद में कभी-कभी कहते हैं—"सुखी रहौ।"
सुखें क्रि० वि० सुगमता से; दे० सुख।
सुगना सं० पुं० प्यारा तोता, परम प्रिय व्यक्ति; सं० शुक।
सुगाब क्रि० अ० रुष्ट होना; भीतर ही भीतर रुष्ट रहना; वै०-आब; सं० शुच् ?
सुगा सं० पुं० तोता; स्त्री०-गी; सं० शुक।
सुघर वि० पुं० चतुर, दक्ष; स्त्री०-रि, भा०-ई,-पन; प्र०-ग्घर; सं० सुगृह ?
सुच्चा वि० पुं० असली (सोना आदि); स्त्री० -ची; सं० शुचि।
सुजनी सं० स्त्री० बिछौना जिसमें बहुत पास-पास तागा डाला जाता है; फा० सोजनी।

सुजान वि० पुं० अच्छी तरह जाननेवाला; 'अजान' (दे०) का उलटा; सं० सु + ज्ञा (जानना)।
सुज्जा दे० सूजा।
सुझवाइब क्रि० स० सुझाना।
सुझाइब क्रि० स० सुझाना; 'सूझब' का प्रे०।
सुटकुनी सं० स्त्री० पतली छड़ी; क्रि०-निआइब; जरा सा मार देना, सुटकुनी से मारना; वै०-टु-।
सुटुर-सुटुर क्रि० वि० धीरे-धीरे, बिना आवाज किये (खा जाना)।
सुठउरा दे० सोंठउरा।
सुढ़रब क्रि० अ० सुधर जाना; प्रे०-राइब,-ढारब; सं० सु+धृ।
सुतना वि० पुं० खूब सोनेवाला (बच्चा); इसी प्रकार 'मुतना' (दे०) भी बनता है।
सुतरा सं०पुं० नाखून के किनारे का पतला चमड़ा; -उखरब, इस चमड़े का खिचकर बाहर निकलना।
सुतरी सं० स्त्री० सुतली; पतली सन की रस्सी; -बीनब,-बरब,-बनइब।
सुतही सं० स्त्री० सूद पर रुपया देने का काम; -चलाइब, ऐसा पेशा करना; फा० सूद।
सुताइब क्रि० स० सुलाना; मारकर गिरा देना; वै० सोवाइब; सं० सुप्त।
सुताई सं० स्त्री० सोने की क्रिया; आदत; वै० सोवाई; सं० सुप्त।
सुतार वि० पुं० सीधा, आसान; स्त्री०-रि; क्रि० वि०-रें, सीधे-सीधे, ठीक तरह से, शांतिपूर्वक; भा०-तरपन।
सुतुहा सं० पुं० बड़ा चम्मच; स्त्री०-ही, सीपी; सं० शुक्ति।
सुतैया वि० सोनेवाला; दे० सूतब।
सुत्तब दे० सूतब।
सुथना सं० पुं० पाजामा; प्र०-ना, स्त्री०-नी; "सुथना पहिरे हर जोतै औ पउला पहिरि निरावै ..."-घाघ।
सुदामा सं० पुं० प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त;-क चाउर, दरिद्र मित्र का उपहार।
सुदिन सं० पुं० अच्छा दिन; बहुत घोर वर्षा के बाद खुला दिन;-करब,-होब; दे० कुदिन।
सुद्द दे० सूद।
सुध सं० पुं० किसी की मृत्यु के बाद का दसवाँ दिन जब उसके सम्बन्धी बाल बनवाकर शुद्ध होते हैं; सं० शुद्ध;-करब,-होब।
सुधब वि० पुं० सीधा, ठीक; स्त्री०-धि, वै०-द्ध; -करब, ठीक करब,-उतरब,-रहब,-होब; बखर-, शास्त्रीय माप के अनुकूल बना (मकान); दे० बखरी।
सुधरब क्रि० अ० सुधरना; प्रे०-धारब,-धरवाइब; सं० सु+धृ।
सुधाँ अव्य० साथ, लेकर; घर-, घर लेकर या सम्मिलित करके; प्र०-धाँ।
सुधारब क्रि० स० ठीक करना।
सुधि सं० स्त्री० याद, स्मृति;-करब,-आइब,-होब, -रहब।
सुधिआब क्रि० अ० पता लगना, मिलने की आशा होना; वै०-याब; सं० शोध।
सुनगा सं० पुं० कोपल; दे० फुनगी।
सुनब क्रि० स० सुनना, बात मानना; प्रे०-नाइब, -नवाइब; सं० श्रु।
सुनरई सं० स्त्री० सुन्दरता; वै०-पन, सुनराई; सं० सुन्दर + ई।
सुनराइब क्रि० स० सुन्दर करना या बनाना; प्रे० -रवाइब; वै०-उब।
सुनराई दे० सुनरई; प्रायः गीतों में प्रयुक्त।
सुनवाई सं० स्त्री० सुनने का अवसर (शिकायत, उलाहना आदि को);-होब।
सुनाइब क्रि० स० सुनाना; प्रे०-नवाइब, वै० -उब।
सुन्न सं० पुं० शून्य; एक रोग जिसमें चमड़ा कड़ा हो जाता है।
सुन्नर वि० पुं० सुन्दर; स्त्री०-रि, भा०-नरई; (२) क्रि० वि० अच्छी तरह; सं० सुन्दर; कहा० पहिरि ओढ़ि कै सुन्नरि भई छोरि छिदिस कुसुन्नरि भई।
सुन्नी सं०पुं० मुसलमानों की एक उपजाति; सीया-, शीया एवं सुन्नी।
सुपनेखा सं० स्त्री० शूर्पणखा; रावण की बहिन; कुरूप स्त्री।
सुपारी सं० स्त्री० सुपाड़ी; लिंग का मुँह;-देब, -बाँटब, निमंत्रण देना; वै० सो-।
सुपास सं० पुं० आराम, सुविधा;-देब,-करब,-होब, -रहब।
सुफल सं० पुं० तीर्थ (विशेषकर गया) का मुख्य फल;-बोलब, पंडे का प्रसन्न होकर पितरों को तारने का फल देना;-बोलाइब।
सुबरात सं० पुं० प्रसिद्ध मुसलिम त्योहार, शबेबरात; वै०-ति।
सुबहा सं० पुं० संदेह;-करब,-होब; फा० शुबह:।
सुबिस्ता सं० पुं० सुविधा;-होब,-लागब,-खाब-सुविधा मिलना;-पाइब।
सुभ वि० शुभ;-असुभ, शुभाशुभ;-मानब,-मनाइब; सं०।
सुभई सं० स्त्री० विवाह के पूर्व का एक रस्म;-आब, -पठइब,-आइब; सं० शुभ।
सुभरा सं० पुं० संदेह, व्यर्थ की आशा।
सुमई सं० स्त्री० कंजूसी; दे० सूम;-करब; वै० -मढ़ई।
सुमिरन सं० पुं० स्मरण;-करब; सं०।
सुमिरनी सं० स्त्री० भजन करने की माला का बड़ा दाना; सं०।
सुमेर सं० पुं० प्रसिद्ध पर्वत सुमेरु; सं०।
सुर सं० पुं० स्वर, राग;-भरब।

सुरऊ सं० पुं० अंधा व्यक्ति; दे० सूर (जिसका यह आ० रूप है)।

सुरकब क्रि० स० हाथ से दानों को एकत्र खींच लेना; जोर से द्रव पदार्थ को मुँह से खींचना; मु० सब खा डालना; वै०-रु-, प्रे०-काइब,-उब।

सुरका वि० (चूड़ा) जो हाथ से तोड़े या सुरके हुए जड़हन का बना हो।

सुरखी सं० स्त्री० लाल रोशनाई, पिसी हुई लाल मिट्टी जो जुड़ाई में लगती है।

सुरति सं० स्त्री० स्मृति;-करब,-बिसारब; वै०-ता।

सुरती सं० स्त्री० खाने का तंबाकू; वि०-तिहा, सुर्ती खाने का अभ्यस्त।

सुरमई सं० पुं० एक प्रकार का कपड़ा जो सुरमे के रंग का होता है; सुरमे का रंग।

सुरमा सं० पुं० सुर्मा;-देब,-लगाइब;-दानी, सुर्मा रखने की डिबिया; वि०-महा, सुर्मावाला।

सुरवा सं० पुं० अंधा व्यक्ति; 'सूर' का घृ० रूप।

सुरसा सं० स्त्री० रामायण की प्रसिद्ध राक्षसी।

सुरहा सं० स्त्री० एक प्रकार की गाय;-गाय; वै० -ही।

सुराख सं० स्त्री० छेद, सूराख;-करब।

सुराग सं० पुं० पता, गुप्तचरों द्वारा चोरी आदि का भेद;-लेब,-लागब,-लगाइब।

सुराज सं० पुं० स्वराज।

सुराही सं० स्त्री० पानी ठंढा करने का बर्तन।

सुरिआ सं० स्त्री० अंधी स्त्री; सूरि (दे०) का घृ०।

सुरुआ सं० पुं० शोरबा, मांस आदि का रस।

सुरुज सं० पुं० सूर्य; वै० सुर्ज।

सुरू सं० पुं० प्रारम्भ;-करब,-होब; शुरुअ।

सुरेमनि सं० पुं० परमप्रिय पदार्थ;-होब, अलभ्य होना; सं० शिरोमणि।

सुर्र सं० पुं० कबड्डी की तरह का एक खेल; इसमें "सुर्र-सुर्र" बोलते हैं; क्रि०-रोंइब, "सुर्र" कहकर दौड़ना।

सुलगब क्रि० अ० धीरे धीरे जलना, सुलगना; प्रे०-गाइब,-उब।

सुलझब क्रि० अ० सुलझना; प्रे०-झाइब,-उब।

सुलतान सं० पुं० शासक;-नी, राजा की (आज्ञा); अस्मानी-सुलतानी बादि, दैवयोग या राजाज्ञा को छोड़ कर; कभी कभी इसी अर्थ में "दैवराजा बादि" कहते हैं।

सुलफा सं० पुं० एक प्रकार का नशा जो चिलम पर रखकर पिया जाता है;-पियब।

सुलभ दे० सलफ।

सुलह सं० स्त्री० शांति;-करब,-होब, प्र०-सलह;-सपाटा, समझौता।

सुलाखब क्रि० स० किसी को लक्ष्य करके व्यंग कहना।

सुलुफ दे० सबदा।

सुवर सं० पुं० सूअर; स्त्री०-रि, भा०-ई,-पन, सूअर का सा व्यवहार, नीचता;-बारा, सूअर का घर; प्र० सू-; सं० शूकर।

सुवरा सं० पुं० एक घास जिसका बीज कपड़ों में चिपक कर घुस जाता है; वै०-अरा।

सुसकब क्रि० अ० सिसकना: प्रे०-काइब।

सुसुरी सं० स्त्री० नाक और गले में पानी चढ़ जाने से बोलने में बाधा;-चढ़ब; वै०-रसुरी।

सुहराइब क्रि० स० हाथ से धीरे धीरे सहलाना; नूनी-, पेल्हर-, खुशामद करना; प्रे०-रवाइब।

सुहाग दे० सोहाग।

सूँघब क्रि० स० सूँघना, भाँप लेना, मजा पा जाना, प्रे० सुँघाइब,-उब; सं० घ्रा।

सूँड़ सं० पुं० सूँड़; सं० शुंड।

सूँड़ी सं० स्त्री० एक बालदार कीड़ा जिसके छूने से शरीर में खुजली हो जाती है;-लागब।

सूई सं० स्त्री० सुई; सं० सूची।

सूक सं० पुं० शुक्रवार; सं०।

सूखब क्रि० अ० सूखना; प्रे० सुखाइब, सुखवाइब।

सूखा सं० पुं० पानी न बरसने का अकाल;-दाहा, सूखा तथा अति वृष्टिवाला अकाल;-परब।

सूजब क्रि० अ० सूजना।

सूजा सं० पुं० लंबी मोटी सूई जिससे बोरा आदि सीते हैं; प्र० सुज्जा।

सूजी सं० स्त्री० सूजी जिसका हलवा बनता है।

सूझ सं० स्त्री० दृष्टि, समझ-बूझ; वै०-झि।

सूझब क्रि० स० सूझना, दिखाई पड़ना;-बूझब; प्रे० सुझाइब,-झवाइब,-उब।

सूट-बूट सं० पुं० ठाट बाट;-लगाइब,-पहिरब।

सूटर सं० पुं० गर्म बनियान; स्वेटर;-बीनब,-पहिरब; अं०।

सूत सं० पुं० धागा;-कातब; सूतै-, एक एक सूत; सं० सूत्र; (२) सूद, ब्याज;-लेब,-देब; फा०।

सूतब क्रि० अ० सोना, निद्रा में आना; प्रे० सुताइब; सं० सुप्त।

सूती वि० रुई का; ऊनी नहीं;-कपड़ा।

सूथनि सं० स्त्री० पाजामा; पुं० सुथना।

सूद सं० पुं० शूद्र;-बाबर, नीची जाति का व्यक्ति; स्त्री०-दिनि, भा० सुदई; कहा० गगरी भ दाना सूद उताना; सं०।

सूदक सं० पुं० परिवार का वह समय जब उसमें किसी के मरणोपरांत १३ दिन तक अशुद्धि रहती है।

सूधि वि० स्त्री० सीधी (गाय, भैंस आदि, पुं० -ध), जो आदमी को मारने न दौड़े या ठीक से दूध दे); भा० सुधाई; सं० शुद्ध।

सून वि० पुं० सूना; स्त्री०-नि,-लागब;-होब, समाप्त हो जाना;-सराय,-सान; सं० शून्य।

सूना-सराय सं० परम निर्जन स्थान; वै०-नी-।

सूप सं० पुं० पछोरने का सूप, कहा० सूप हँसै त हँसै चलनी कस हँसै जेकरे बहत्तरि छेद ?

सूबा सं० पुं० प्रांत; (२) प्रांत-पति; बड़ा व्यक्ति ।
सूबेदार सं० पुं० फौज का एक कर्मचारी; भा०-री, स्त्री०-रिनि; सूबः (प्रदेश) + दार ।
सूम सं० पुं० कंजूस व्यक्ति; स्त्री०-मि,-मिनि; (२) वि० कंजूस; भा० सुमई; घृ० सूमड़ा ।
सूर सं० पुं० अंधा मनुष्य; स्त्री०-री; (२) वि० अंधा; स्त्री०-रि; भा०-दास,-रा, घृ० सुरवा, सुरिया ।
सूरी सं० स्त्री० सूली;-फाँसी:-चढ़ाइब ।
सूल सं० पुं० दर्द; बाय-,वायु का दर्द (पेट में); -उठब,-पकरब,-होब; क्रि० हूलब (दे०) ।
सूवर दे० सुअर ।
सूस सं० पुं० पानी का एक बड़ा जानवर; वै०सूँ-।
सेंक सं० पुं० सेंकने की क्रिया;-करब,-देब ।
सेंकब क्रि० स० सेकना; मु० आँखि-, प्रेम या काम वासना की दृष्टि से देखना; प्रे०-काइब, भा० सेंक,-काई ।
सेंगा-पोका सं० पुं० बहुत सा सामान;-लिहें, सब कुछ लादे; दे० पोका; कभी कभी "सेकड़ी-पोकड़ी" भी बोलते हैं ।
सेंठा सं० पुं० सरपत या मूज के भीतर की लकड़ी, सन का डंठल ।
सेइब क्रि० स० सेवा करना, रक्षा करना; प्रे० -वाइब,-उब; वै०-उब; सं० सेव् ।
सेई सं० स्त्री० सेर भर के लगभग की एक तौल; इस तौल का एक लकड़ी का बर्तन; यक-; दुइ-।
सेउकाई दे० सेवक ।
सेखी सं० स्त्री० गर्व, गर्वीली बातें;-करब,-बघारब सेख (ऊँची कोटि का मुसलिम) ।
सेखुआ सं० पुं० साखू; स्त्री०-ई, छोटा या हलके प्रकार का साखू ।
सेज सं० स्त्री० बिस्तर; वै०-जि; गीतों में-रिया; सं० शय्या ।
सेत-मेत क्रि० वि० मुफ्त, बिना कुछ दिये; प्र०-ती-ती; वै०-ति-ति ।
सेना सं० स्त्री० फौज ।
सेनुर सं० पुं० सिंदूर;-देब,-लगाइब;-दान, विवाह; सं० ।
सेन्हा सं० पुं० सेंधा नमक; सं० सैंधव; वै०-नोन, -लोन ।
सेन्हि सं० स्त्री० सेंध;-काटब;-फोरब; सं० संधि ।
सेन्हिहा सं० पुं० सेंध काटने वाला; (२) वि० इस प्रकार का (चोर) ।
सेबरी दे० सबरी ।
सेबरी सं०-स्त्री० प्रसिद्ध भक्त भीलनी; सं० शबरी ।
सेम सं० स्त्री० प्रसिद्ध तरकारी; पुं०-मा, बड़ी फली वाली सेम; वै०-मि ।
सेमर सं० पुं० सेमल; कहा० सेमर सेइ सुवा पछिताले; सं० शाल्मली ।
सेमरुआ सं० पुं० मूसल का वह भाग जो लोहे का बना होता है; वै० सामि (दे०) ।
सेमा सं० पुं० सेम का एक प्रकार जिसकी फली तथा दाने बहुत बड़े होते हैं; दे० सेम ।
सेर सं० पुं० चार पाव की तौल; (२) वि० शेर, बहादुर; क्रि० वि०-न, सेरों, अधिक मात्रा में ।
सेरकी सं० स्त्री०; पानी में होनेवाले एक घास की जड़ ।
सेरख वि० घमंडी; स्त्री०-खि; क्रि०-खाब, घमंड करना, अकड़ना, बात न सुनना; भा०-ई, वै० -खराब ।
सेरवाइब क्रि० स० ठंडा करना (भोजन, दूध आदि) ।
सेराब क्रि० अ० ठंडा होना (भोजन आदि का); मु० पुराना हो जाना या ठंडा पड़ जाना (मामले का) ।
सेलहब क्रि० अ० अकस्मात् मर जाना ।
सेल्हा सं० पुं० फल या फूल का समूह जो छेद करके रस्सी या लकड़ी में लटकाये हों; यक-, दुइ-।
सेवँई सं० स्त्री० सिवँई;-पूरब, सिवँई बनाना ।
सेवक सं० पुं० सेवा करनेवाला; नौकर; भा० -काई; तुल० नाथ हमारि यहै सेवकाई; सं० ।
सेवर वि० ।
सेवा सं० स्त्री० सेवा;-करब,-होब;-सुस्रूखा; कहा० जे करै सेवा ते खाय मेवा; सं० ।
सेवाय वि० अधिक;-होब; (२) अव्य० सिवाय; बनके-, यकरे-।
सेवार सं० पुं० पानी में होनेवाली घास;-री सक्कर, एक प्रकार की शक्कर जिसे इस घास में दबाकर फिर कूटते है । सं० ।
सेसनाग सं० पुं० शेषनाग;-महराज; सं० ।
सेहरी सं०स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली; तुल० पात भरी सेहरी सकल सुत बारे बारे ।
सेहा सं० पुं० स्याहा, हिसाब की समाप्ति;-करब; फ़ा० स्याह (काली=मुहर) ।
सेहुँआ सं० पुं० चमड़े के ऊपर चित्तीदार चिन्ह; -होब ।
सेहुँड़ सं० पुं० एक जंगली काँटेदार पेड़ जिसमें से दूध निकलता है ।
सैकड़ा सं० पुं० सैकड़ा; यक-,दुइ-;-न, सैकड़ों ।
सैका दे० सइका ।
सैगर दे० सयगर ।
सैतान सं० पुं० शैतान; भा०-तनई,-तानी; (२) वि० पुं० बदमाश; स्त्री०-नि; अर० शैतान ।
सैनि दे० सइनि ।
सैर सं० पुं० सैर;-करब;-सपाटा, यात्रा, मनोरंजन वै०-ल; फ़ा० ।
सैराठ दे० सयराठ ।

सैल सं० पुं० मौज;-करब; वि०-लानी; वै०-र।
सैलानी वि० मौजी;-जिउ, मौजी या मनमौजी व्यक्ति।
सैहरन दे० सयहरन।
सोंटा सं० पुं० डंडा, स्त्री०-टी; क्रि०-टहरब, सोंटे से मारना।
सोंठि सं० स्त्री० सोंठ;-ठउरा, गुड़, घी तथा सोंठ का बना लड्डू जो बच्चा होने पर बाँटा जाता और जच्चा को खिलाया जाता है। सं० शुंठि।
सोंथ सं० पुं० सूजन;-होब; क्रि०-ब; दे० फूलब-सोंथब।
सोइँठा वि० पुं० अकड़ा हुआ; स्त्री०-ठी, क्रि० -ब, कड़ा हो जाना, अकड़ जाना (किसी वस्तु का)।
सोइ वि० वही; प्र०-ई।
सोइब क्रि० अ० सोना; प्रे०-वाइब,-उब; वै०-उब; सं० स्वप्।
सोई सं० स्त्री० भूमि जिसमें धान की खेती हो।
सोऊ सर्व० वह भी; वि० वह भी; वै० सोउ।
सोक सं० पुं० खाट की बिनावट का छेद;-कै सोक, एक-एक छेद में, प्रत्येक स्थान पर।
सोकन वि० पुं०थोड़े-थोड़े काले बालोंवाला (बैल) स्त्री०-नि।
सोकाड़ा सं० पुं० कुएँ के किनारे का वह स्थान जहाँ ढेकली चलाते समय पानी गिरता है।
सोखब क्रि० स० सोखना, शोषण करना; प्रे० -खाइब,-उब; सं० शोष्।
सोखा सं० पुं० भूत, पिशाच आदि के प्रकोप का पता लगानेवाला व्यक्ति; भा०-ई, इस प्रकार की खोज का काम या पेशा;-ई करब, ऐसी खोज करना।
सोग सं० पुं० शोक;-करब,-होब; क्रि०-गाब।
सोगहग वि० पुं० पूरा-पूरा, सीधा, समूचा; प्र० -गै, स्त्री०-गि।
सोगाब क्रि० अ० शोक पाना, दुःखी होना; वि० -न।
सोच सं० पुं० फिक्र, चिंता;-करब,-होब;-बिचार, -फिकिर; सं० शुच्।
सोचब क्रि० स० सोचना, विचार करना;-बिचारब।
सोझ वि० पुं० सीधा; स्त्री०-झि; क्रि० वि०-झै, सीधे-सीधे, साफ-साफ; क्रि० सोझाव,-झवाइब, -उब; सं०।
सोझवा-साही वि० सीधा-सादा; सीधा-सच्चा।
सोझाब क्रि० अ० सीधा होना, प्रसन्न होना; प्रे० -झवाइब,-उब, सीधा करना।
सोड़ा सं० पुं० सोडा;-लगाइब; (कपड़े में) सोडा लगाना;-साबुन, अं० सोडा।
सोता सं० पुं० सोता, श्रोत; स्त्री०-ती, नदी की शाखा; क्रि०-तिआइब, सोते का पता लगा लेना (कुँआ खोदते समय); सं० श्रोत।
सोध सं० पुं० पता;-लगाइब;-बोध, पता ठिकाना, समस्या का हल; सं० शोध+बोध।
सोधब क्रि० स० विचार करना, ढूँढ़ना (मुहूर्त); साइति-, मुहूर्त निकालना; प्रे०-धाइब,-धवाइब, -उब; सं० शोध।
सोन सं० पुं० सोना;-हुला, सोने का बना; सौ सोने क, बहुत अच्छा; सं० स्वर्ण।
सोनार सं० पुं० सुनार; भा०-नरई,-नरपन; स्त्री० -रिनि; सं० स्वर्णकार।
सोन्ह वि० पुं० सोंधा;-लागब,-करब; मुँह (जीभि) -करब, स्वाद लेना; स्त्री०-न्हि, भा०-न्हाई।
सोन्हिआर सं० पुं० एक जंगली जानवर जो पेड़ों पर चढ़ जाता और प्रायः रात को फसलों पर आक्रमण करता है।-यस, काला-कलूटा।
सोन्हौला वि० पुं० सुनहला; सं० सोने के बने आभूषण; वै० सोनहुला; सं० स्वर्ण।
सोपारी दे० सुपारी।
सोफियाना वि० पुं० बढ़िया; ऐसा जो बड़े लोगों को शोभा दे (कपड़ा, आभूषण आदि); स्त्री०-नी, फा० सूफियानः।
सोभब क्रि० अ० शोभा देना, अच्छा लगना (देखने में); सं० शोभ्।
सोभा सं० स्त्री० शोभा;-देब, अच्छा दिखना।
सोम सं० पुं० सोमवार; वै०-म्मार, सुम्मार; सं०।
सोय सर्व० वही; दे० सोई; (२) क्रि० सोकर;-कै सो करके; सं० स्वप्।
सोर सं० पुं० शोर;-करब,-होब, प्रसिद्ध हो जाना; फा० शोर।
सोरह वि० सोलह;-आना, पूरा-पूरा।
सोरहिया सं० पुं० मछली मारनेवाली एक जाति; वै०-आ।
सोरहौ सं० पुं० मृत्यु के उपरान्त का एक संस्कार जिसमें महाब्राह्मण को प्रत्येक वस्तु १६ की संख्या में दान दी जाती है;-करब,-देब, ऐसा दान देना; सं० षोडश।
सोरा सं० पुं० शोरा;-होब, ठंढक से ठिठुर जाना; शोरः।
सोरि सं० स्त्री० जड़;-खोदब,-उखारब, हानि करना; -साखा, चिन्ह, शेष, ध्वंसावशेष (परिवार आदि का)।
सोलख वि० हल्का, कम (बीमारी);-होब।
सोलहवाइब क्रि० अ० मीठी-मीठी बातें करके खुश करने की कोशिश करना; ऐसा करनेवाले को "सोलहा" कहते हैं।
सोवता सं० पुं० सोने का समय, घोर निद्रा का समय;-परब, देर हो जाना; सं० स्वप्।
सोवनार सं० पुं० सोने का स्थान।
सोवा सं० पुं० सोया;-मेथी,-पालक।
सोवाइब क्रि० स० सुलाना; व्यं० मारकर गिरा देना।

सोसइटी सं० स्त्री० सहकारी संघ; अं० सुसायटी।
सोहगइली सं० स्त्री०सधवा स्त्री; सुहागवाली स्त्री; सं० सौभाग्य।
सोहब क्रि० अ० अच्छा लगना; प्राय: गीतों में; सं० शोभ्।
सोहबति सं० स्त्री० साथ;-करब; शोभा,-लागब; फा० सोहबत।
सोहर सं० पुं० जन्मोत्सव पर गाया जानेवाला गीत;-गाइब,-होब।
सोहरति सं० स्त्री० प्रसिद्धि, नाम;-करब,-होब; फा० शुहरत।
सोहारी सं० स्त्री० बड़ी-बड़ी पतली पूड़ी;-तर-कारी।
सोहिना दे० सहिना।
सौक दे० सउक।
सौति सं० स्त्री० सौत;-या डाह; दे० सवति; सं०।
सौदा दे० सवदा।
सौ-सौ वि० सैकड़ों;-गारी,-बाति; सं० शत।

# ह

हँकवा सं० पुं० शिकार के पहले जंगल में जानवरों को एक ओर हाँक देने का क्रम;-हँकाइब, इस प्रकार पशुओं को निकालना।
हँड़कोली सं० स्त्री० छोटी-छोटी हाँड़ी; पुं०-ला (घृ०); दे० पतकोली; सं० भाण्ड-हंड-हँड़।
हँड़वाई सं०स्त्री० भोजन बनाने के बर्तन जो किसी भले आदमी के साथ अलग चलते हैं; हंड (भांड) + वाई।
हँढ़वाइब क्रि० स० मरवाना; स्त्री का पुरुष-प्रसंग कराना।
हँसब क्रि० अ० हँसना; सं० उपहास करना; प्रे० -साइब,-सवाइब।
हँसमुसना वि० पुं० जो हँस-हँसकर बात टाल दे; जो कुछ करे न, केवल बात करे; स्त्री०-नी; हँसब + मूसब (मूस का सा व्यवहार करना)।
हँसमुसनी सं० स्त्री० हँस-हँसकर बात टालने की आदत;-करब।
हँसारति दे० हँसी।
हँसिआ सं० पुं० हँसिया; वै०-सुआ; कहा० हँसिया लास कि परोसिन क नेकुरा?
हँसी सं० स्त्री० हास्य, उपहास;-करब,-होब;-हँसा-रति; उपहास; सं० हस्।
हँसुआ सं० पुं० दे०-सिआ।
हँसुली सं० स्त्री० गले में पहनने का गोल छल्ला; हँसुली।
हँसोड़ वि० पुं० जिसे हँसी करने का शौक हो; स्त्री०-ड़ि।
हँसौआ सं० पुं० मज़ाक;-करब; वै०-सउआ; सं० हस्।
ह! अव्य० हाय!;-ह!, हाय, हाय!
हइँचनी सं०स्त्री० लकड़ी जिससे रस्सी खींची जाय; वै० अ-।
हइँचब क्रि० स० खींचना; प्रे०-चाइब; वै० अइँ-।
हइँसि सं० स्त्री० एक जंगली मोटी बेल जिसकी जड़ फोड़ों पर गर्म करके बाँधी जाती है।
हइजहा वि० पुं० जहाँ हैजा पड़ा हो (गाँव); स्त्री० -ही।
हइजा दे० हयजा।
हइबी-दइबी सं० स्त्री० आकस्मिक घटना, आपत्ति; -परब,-आइब; सं० दैवी।
हइमस सं० पुं० द्वेष;-करब,-होब; वि०-हा,-ही, वै०-य-।
हइलाइब क्रि० स० (बकरी) भगाना, हाँकना; इस जानवर को खदेरते समय "हइले-हइले" कहा जाता है।
हइवारी दे० हयवारी।
हइहाइब क्रि० स० ज़ोर से डाँटना, खदेड़ना; कई जनों का मिलकर किसी को डाँटना; दे० हउहा-इब।
हई सं० स्त्री० हानि, दूसरे के खेत या पेड़ से नाज, फल आदि की चोरी;-करब,-होब।
हई वि० यह, यही; प्र०-इहै,-हौ।
हउँकब क्रि० स० पंखा हाँकना (आग सुलगाने के लिए); मारने का प्रयत्न करना (जानवर का); प्रे० -काइब; वै० हौं-।
हउँकी-बउँकी दे० अउँकी-बउँकी।
हउकि-हउकि क्रि० वि० जल्दी-जल्दी और अधिक मात्रा में (पानी पीना)।
हउचियाब क्रि० अ० घबरा जाना, दंग रह जाना।
हउद सं० पुं० हौज।
हउदा सं० पुं० हाथी का हौदा; वै०-द-।
हउदी सं० स्त्री० नाँद; एक-, दुइ-, पूरा भरा नाँद; -यस, मोटा पर छोटा (व्यक्ति); हौज।
हउफा सं० पुं० जनश्रुति;-करब,-होब;-उड़ाइब।
हउलाति सं० स्त्री० हवालात;-करब,-होब,-रहब।
हउलू वि० जो अपना काम बेढंगे हिसाब से करे; फूहड़; भा०-पन।
हउवा सं०पुं० एक काल्पनिक व्यक्ति जिसका स्मरण बच्चों को डराने के लिए कराया जाता है; वै० -आ।

हउसिला सं०पुं० उत्साह, महत्वाकांक्षा;-रहब,-होब, -करब; वै०-व- ।

हउहाब क्रि० स० डाँट लेना; अ० जल्दी करना, घबराकर कुछ कर डालना; कहा० हउहानि कोहाइनि चुतरे पर आँवा (दे०); प्रे० प्र०-इब ।

हउहार सं० पुं० जोर की हवा;-बहब,-चलब; वै० हौ- ।

हउहै वि० वही ।

हऊ वि० वह; प्र०-उहै ।

हक सं० पुं० अधिकार; प्र०-वक;-दार; जिसका हक हो ।

हकतलफ सं०पुं० अधिकार का ह्रास;-होब,-पाइब; अहक+तलफ (फटना); भा०-फी ।

हकदार दे० हक ।

हकलाब क्रि० अ० हकलाना ।

हकसफा सं० पुं० मुकदमा जिसमें प्रथमाधिकार का निश्चय हो; अर० हक्कशफा:;-करब,-होब ।

हक्का-बक्का वि० पुं० चकित;-होब; स्त्री०-क्की-क्की ।

हगनउरी सं० स्त्री० गुदा; वै०-नौरी; 'हगब' से= हगने का स्थान ।

हगना वि० पुं० बहुत हगनेवाला (लड़का); स्त्री० -नी ।

हगब क्रि०अ० हगना, टट्टी फिरना; व्यं० खूब रुपया देना; प्रे०-गाइब,-गवाइब; भा० हगाई ।

हगाई सं०स्त्री० हगने का क्रम, हगने की आदत; प्रे० -गवाई ।

हगासि सं० स्त्री० हगने की इच्छा;-लागब ।

हग्गी सं० स्त्री० हगने की क्रिया;-करब; यह शब्द बच्चों के ही लिए प्रयुक्त होता है ।

हचकब क्रि०अ० हचका लगना, हचका देना (गाड़ी या पहिये का); प्रे०-काइब ।

हचका सं०पुं० पहिये में धक्का;-लागब,-देब; क्रि० -इब ।

हचकिचाब क्रि० अ० हिचकना, आपत्ति करना; वै० हि- ।

हचर-हचर सं० पुं० पहिये के ढीले होने का शब्द; -करब,-होब ।

हचहचाब क्रि० अ० हचहच करना; ढीले होने की आवाज करना ।

हच्चा सं०पुं० पहिये को गड्ढे में से धक्का;-लागब, -खाब ।

हजम सं० पुं० पाचन;-करब,-होब, बेईमानी से ले लेना या खाया जाना ।

हजरत सं० पुं० चालाक व्यक्ति; भा०-ई ।

हजार सं० पुं० सहस्र;-न, असंख्य, बहुत से;-खाँड, दो चार सौ ।

हजूर सर्व० आप; ऊँचे अफसर या बहुत संभ्रांत व्यक्ति को संबोधित करने का शब्द; फ़ा० हुजूर (सम्मुख) ।

हजूरें क्रि० वि० सामने, सम्मुख;-होब,-आइब, सामने आना ।

हज्ज सं० पुं० मक्का मदीना की यात्रा; तीर्थयात्रा; -करब; कहा० सात सै मूस खाय कै बिलारि चलीं हज्ज करै ।

हज्जाम सं० पुं० नाई; भा० हजामति; कहा० नाऊ देखें हजामति बाढ़ै ।

हटब क्रि० अ० हटना; प्रे०-टाइब,-टवाइब ।

हट्टा-कट्टा वि० पुं० हृष्ट-पुष्ट; स्त्री०-ट्टी-ट्टी ।

हठ सं० पुं० जिद;-करब; वि०-ठी,-ठील ।

हडुहा वि० पुं० जिसकी हड्डियाँ निकली हों; स्त्री० -ही ।

हडुाब क्रि० अ० मांसहीन हो जाना; हड्डियां प्रदर्शित करना ।

हड़कंप सं० पुं० अधिक भय;-करब,-होब,-नाधब, -डारब,-परब; हाड़ (हड्डी)+कंप (काँपना)=डर के मारे हड्डी काँप उठना ।

हड़गर वि० पुं० जिसकी हड्डियाँ मोटी हों; स्त्री० -रि; हाड़+फा० गर ।

हड़ताल दे० हरताल ।

हड़हा सं० पुं० पशु; हड़ (हड्डी)+हा (वाले); प० अ० ।

हड़ाइब क्रि० स० "हड़े-हड़े" कहना; (कौए को) उड़ाना; दे० "हड़े-हड़े" ।

हड़ावरि सं० स्त्री० हड्डियों का ढेर ।

हतक सं० स्त्री० अपमान;-करब,-होब ।

हतना वि० पुं० इतना; स्त्री०-नी ।

हतब क्रि० स० मार डालना; सं० हन; दे० हनब ।

हथउड़ी सं० स्त्री० हथौड़ी; पुं०-ड़ा ।

हथपोई वि० स्त्री० हाथ की बनाई हुई (रोटी) ।

हथवड़ सं० पुं० हत्था (जाँत आदि का); वै०-थि ।

हथार वि० पुं० हाथवाला;-गोड़ार; हाथ पैरवाला, अपने ऊपर निर्भर रहनेवाला (प्रायः बड़े बच्चों के लिए); सं० हस्त ।

हथिआइब क्रि० स० दे० हाथा ।

हथिआर सं० पुं० हथियार; लिंग ।

हथिवान सं० पुं० पीलवान; सं० हस्ती; दे० हाथी ।

हथिहा वि० पुं० हाथीवाला ।

हदबंदी सं० स्त्री० सीमा का निर्धारण;-करब; हद +बंद (सं० बंध, फा०) ।

हदस सं० पुं० डर, भय;-खाब,-करब; क्रि०-ब; प्रे० -साइब, डराना ।

हदहद वि०पुं० छोटा (व्यक्ति), छोटे कद का; स्त्री० -दि; वै० हुदहुद ।

हद्द सं० पुं० सीमा;-करब,-होब, पराकाष्ठा को पहुँचाना; हद; दे० सरहद; दु-मै, जा भला आदमी, तूने हद कर दी !

हनब क्रि० स० मारना; प्रे०-नाइब; सं० हन ।

हन्नहवा सं० पुं० तीन तारों का समूह जो एक

सीध में रहते और देहात के लिए रात में घड़ी का काम देते हैं।
हुन्ना सं० पुं० हिरन; स्त्री०-न्नी ।
हुपता सं० पुं० सप्ताह; बै०-फ्ता; वि०-वारी; सं० सप्ताह, फा० हफ़्त: ।
हुफर-हुफर क्रि० वि० जल्दी-जल्दी साँस ले-लेकर, हाँफते हुए ।
हुवस सं० स्त्री० उत्कट इच्छा; फा० हवस;-करब, -होब ।
हुबहुबाब क्रि० अ० जल्दी करना, अनावश्यक शीघ्रता से काम खराब करना; तु० अं० हवब ।
हुम सर्व० हम,-को, मुझे; प्र०-म्मैं ।
हुमजोली सं० पुं० साथी ।
हुमला सं० पुं० आक्रमण;-करब ।
हुमार सर्व० पुं० मेरा, हमारा; स्त्री०-रि ।
हुमासुमा सं० पुं० सर्व साधारण; हम जैसे लोग फा० शुमा, आप ।
हुमेसाँ क्रि० वि० सदा; प्र०-सैं; हर-हमेस, सदा ही।
हुयकड़ वि० पुं० मज़बूत, प्रभावशाली; स्त्री०-ड़ि, भा०-ई ।
हुयचड़ वि० पुं० कठिन काम करनेवाला; सहनशील; भा०-ई; स्त्री०-ड़ि ।
हुयजा सं० पुं० हैजा;-माई, हैजा का देवता ।
हुयमस दे० हहमस ।
हुयराठिया वि० सब कुछ सहन करनेवाला; भा० -रठई ।
हुयवारी सं० स्त्री० फ़सल को पशुओं द्वारा हानि पहुँचाने की आदत;-करब,-होब ।
हुया सं० स्त्री० लज्जा; बे-; निर्लज्ज ।
हुर सं० पुं० हल;-नाधब,-चलाइब;-जोतब; गदहा क- नाधब, ऊधम मचाना; सं० हल ।
हुरउटी सं० स्त्री० हल के साथ रहने का क्रम ।
हुरउति दे० हरवति ।
हुरकब क्रि० स० मना करना; प्रे०-काइब,-कवाइब ।
हुरक्कति सं० स्त्री० हर्ज, बाधा;-करब,-होब ।
हुरख सं० पुं० आनंद, हर्ष; सं०; क्रि०-खाब, प्रसन्न होना ।
हुरदी सं० स्त्री० हल्दी; उतरें-लागब, ब्याह होना; सं० हरिद्रा ।
हुरजा सं० पुं० हानि;-करब,-होब; हैजा; दे० हयजा;-बै०-जवा ।
हुरजाई वि० स्त्री० पुंश्चली, परपुरुषगामी; वेश्यावृत्ति करनेवाली; फा० हर (प्रत्येक)+जा (स्थान)+ई (वाली) जो कहीं भी या किसी पुरुष के पास जा सके; भा०-जैपन ।
हुरजाना सं० पुं० दण्ड; किसी का हर्ज करने का दण्ड;-देब,-लेब,-पाइब; फा० हर्ज ।
हुरब क्रि० स० हर लेना; ले लेना; अपहरण ।

हरबा-हथियार सं० पुं० अस्त्र-शस्त्र; अर०-हर्ब: ।
हरसा सं० पुं० हल या कोल्हू की लंबी लकड़ी ।
हरहट वि० पुं० बदमाश (पशु); भागनेवाला, तुरानेवाला; स्त्री०-टि, भा०-ई ।
हरवाह सं० पुं० हल चलानेवाला; भा०-ही ।
हराँस सं० पुं० ज्वर का ताप;-धरब ।
हराइब क्रि० स० हराना; प्रे०-रवाइब, बै० -उब ।
हराम सं० पुं० बिना परिश्रम का धन; वि०-कै, -खोर, हराम का खानेवाला;-रमई, हरामखोरी ।
हरामी वि० जो अपने बाप का न हो ।
हरारति सं० स्त्री० गर्मी; ज्वर ।
हरावनि सं० स्त्री० मजबूरी;-परब,-बारब ।
हरवति सं० स्त्री० हल चलाने का मुहूर्त;-करब ।
हरसि सं० स्त्री० हल की लंबी लकड़ी जिसमें जुआठा (दे०) बाँधा जाता है । बै०-र्सि ।
हरिअर वि० पुं० हरा; स्त्री०-रि; बै०-यर; तुल० मुनिहिं हरिअरे सूझ; सं०; हरा सरसों आदि का पौदा जो खेत से उखाड़कर लाया जाय (पशुओं को खिलाने के लिए) ।
हरिअरा सं० पुं० सोंठ, गुड़ आदि का द्रव हलवा जो प्राय: प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है । बै०-य-,-रेरा; सं० हरित ।
हरिअराब क्रि० अ० हरा हो जाना; बै०-आब; "तुलसी बिरवा राम के पर्वत पर हरिआयँ"; बै०-य-, सं० हरित ।
हरिअरी सं० स्त्री० हरियाली; बै०-य-, सं० हरित ।
हरी सं० स्त्री० असामी का अपना हलबैल ले जाकर जमींदार का खेत मुफ़्त जोतने की पद्धति; -देब;-बेगारी (दे०); सं० हल ।
हरेरा दे० हरिअरा; सं० ।
हरौं सं० पुं० संतोष, सहन;-करब ।
हर्य सं० स्त्री० हड़, सं० हरीतकी; बै०-रैं ।
हर्रा सं० पुं० बड़ी हड़; कहा० न हर्रा लागै न फिटकिरी;-बहेर्रा ।
हलइब क्रि० स० हलाना; बै०-ला-, प्रे०-वाइब ।
हलका सं० पुं० क्षेत्र, मंडल; अर० हल्क: ।
हलकानि वि० तकलीफ़ में; बै०-ला-;-होब,-करब ।
हलकोरा सं० पुं० पानी का टक्कर;-लागब, बै० हि-।
हलकोरब क्रि० स० (पानी को) हटाकर साफ़ करना; अ० पानी का उठना या टक्कर मारना भा०-रा, लहर;-मारब ।
हलचल सं० स्त्री० आन्दोलन ।
हलफ सं० स्त्री० गङ्गाजल अथवा अन्य पवित्र वस्तु उठाकर शपथ खाने का नियम;-उठाइब, -लेब ।
हलानि सं० स्त्री० नदी या तालाब में पाँव-पाँव चलने की संभावना ।

हलब क्रि० अ० घुसना; प्रे०-लाइब ।
हलब्बी वि० बढ़िया;-सीसा; मोटा अच्छा दर्पण ।
हलर-हलर क्रि० वि० काँपता हुआ;-करब ।
हलवाई सं० पुं० मिठाई का काम करनेवाला; वै० -लु-; भा०-वैपन ।
हलसाइब क्रि० स० हिलाकर उखाड़ने की कोशिश करना ।
हलाइब क्रि० स० घुसेड़ना; वै०-उब, भा०-ई ।
हलाल वि० मरा, मारा, परेशान;-करब;-होब; भा० -ली, मृत्यु ।
हलालखोर वि० मांसाहारी, बदमाश; प्राय: स्त्रियों द्वारा गाली की भाँति प्रयुक्त; फ़ा० हलाल (किया हुआ) (मांस)+खोर, खानेवाला ।
हलुक वि० पुं० हल्का; स्त्री०-कि; प्र०-ल्लु-, भा० -ई, दु०-हर, क्रि०-काब ।
हलैया सं० पुं० हलनेवाला; प्रे०-लवैया; वै० -आ ।
हलोरब क्रि० स० सूप में धीरे-धीरे साफ करना; मु० मुनाफ़ा उठाना, कमाना; प्रे०-रवाइब;-पछो-रब ।
हलोरा सं० पुं० पानी की लहर;-लेब, खूब आनंद से नहाना ।
हलोहल्ल वि० पुं० बहुत अधिक (फ़सल, पानी आदि); वै०-ला-।
हल्ला सं०पुं०शोर;-गुल्ला;-करब, अफ़वाह उड़ाना ।
हल्लोक सं० पुं० संसार,-परलोक, हरलोक-परलोक; -लागब, अपराध या पाप लगना;-लगाइब ।
हवदा दे० हउदा ।
हवफा दे० हउफा ।
हवलदार सं० पुं० पुलिस तथा फौज का एक छोटा अफ़सर ।
हवलदिल वि० जिसकी मस्तिष्क फिर गया हो; जो अनाप-शनाप बातें करता हो; वै० हौल-; हौल +दिल ।
हवसिला दे० हउसिला ।
हवा सं० स्त्री० वायु, रङ्ग ढङ्ग; वि०-ई, व्यर्थ, आधार-हीन;-पानी, जलवायु;-खाब, बेवकूफ़ बन जाना ।
हहक सं० पुं० स्नेहपूर्ण उत्साह; वियोग-जनित इच्छा; क्रि०-ब, ऐसी भावना करना ।
हहरब क्रि० अ० उत्कट इच्छा करना; किसी बात के लिए लालायित होना; वि०-री, खाने-पीने में सदा असंतुष्ट रहनेवाला ।
हहान-खहान सं० पुं० शोकाकुल स्थिति;-परब, ऐसी स्थिति हो जाना ।
हहाब क्रि० अ० 'हा हा' करना; दे० हिंहिआब ।
हाँक सं० पुं० रोब, प्रभाव;-मर्जाद, इकबाल; दे० साक, साका ।
हाँकब क्रि० स० हाँकना; प्रे० हँकाइब,-कवाइब, -उब ।
हाँड़ी सं० स्त्री० हंडी; मिट्टी की बड़ी पतीली; यक-,दुइ-,-भर; सं० भाँड ।
हाँफब क्रि० अ० हाँफना; प्रे० हँफाइब,-फवाइब; -डाँफब, थक जाना; शीघ्र ऊब या घबरा जाना ।
हाँफा सं० पुं० साँस फूलने की अवस्था;-आइब, -लागब ।
हाँसि सं० स्त्री० हँसी, उपहास;-होब ।
हाँहाँ सं० पुं० स्वीकृति;-भरब ।
हाट सं० पुं० बाजार;-बजार, बजार- ।
हाड़ सं० पुं० हड्डी; हाड़े-, एक-एक हड्डी; मु० पुरानी शत्रुता; वंश परंपरागत वैर;-परब, ऐसी शत्रुता होना ।
हाड़ा सं० पुं० ततैया, बरैया; स्त्री०-ड़ी;-पाका, ऐसा फोड़ा जो हड्डी तक पहुँच गया हो या अच्छा न होता हो; ।
हाड़ी सं० स्त्री० कटहल के भीतर की लम्बी लकड़ी जिसकी तरकारी बनती है ।
हाथ सं० पुं० हाथ; दो बित्ते की नाप; यक-; दुइ-, -भर; सं० हस्त; क्रि० वि०-न, अपने हाथों (देना, लेना) ।
हाथा सं० पुं० लकड़ी का बर्तन जिसमें लंबा हत्था लगा रहता है और जिससे सिंचाई होती है;-मारब, हाथे से पानी देना; क्रि० हथिआइब, इस प्रकार सींचना ।
हाथी सं० स्त्री० प्रसिद्ध जानवर; पुं०-था, नर हाथी;-नसीन, जिसके पास हाथी हो;-वान, पील-वान, महावत; दे० हथिवान ।
हादिक सं० पुं० औषध करनेवाला; जिसे रोगों का ज्ञान हो वि० होशियार ।
हानि सं० स्त्री० चिंता;-करब,-होब ।
हाबब क्रि० अ० घबरा जाना ।
हामी सं० स्त्री० स्वीकृति; हाँ में हाँ मिलाने की बात;-भरब, हाँ में हाँ मिलाना ।
हाय सं० स्त्री० दुःख की साँस; "जाकी मोटी हाय"-कबीर ।
हाय विस्म० हाय !-हाय, हाय हाय !
हायल वि० बीता हुआ;-होब, समाप्त हो जाना, थक जाना; का० (मियाद ... होब) ।
हार सं० पुं० नुकसान, घाटा;-परब; (२) गले में पहिनने का आभूषण; हार जाने की स्थिति; -जीति ।
हारब क्रि० अ० हारना; प्रे० हराइब,-रवाइब; -जीतब; थक जाना, मजबूर हो जाना ।
हारिल सं० पुं० एक प्रसिद्ध चिड़िया जिसके संबंध में सूरदास ने लिखा है-"हमारे हरि हारिल की लकड़ी" ।
हारे-खाड़े क्रि० वि० विशेष आवश्यकता पड़ने पर; कहा० राम रसोइया दुइ जने,-तीनि जने, चउ-पटा चारि जने । मै० हरले-खड़ले ।

ह्ाल सं० स्त्री० समाचार;-चाल ।

ह्ालति सं० स्त्री० दशा ।

ह्ालब क्रि० अ० हिलना; प्रे० हलाइब ।

ह्ालर वि० पुं० हिलने या काँपनेवाला; प्रायः गीतों में प्रयुक्त; "हालर मोतिया" नामक एक गीत भी है। दे० हलर हलर; भो० ।

ह्ालि सं० स्त्री० लकड़ी के पहिए पर चढ़ा हुआ लोहे का छल्ला ।

ह्ाली क्रि० वि० शीघ्र;-हाली, जल्दी जल्दी; वै० -लीं ।

ह्ाव-भाव सं० पुं० शरीर के लक्षण तथा मन के भाव;-देखाइब; सं० ।

ह्ाहा सं० पुं० खाने पीने की जल्दी तथा लालच; -परब ।

ह्िंवार वि० ठंडा; बहुत ठंडा; वै० हें-; सं० हिम ।

ह्िंस्सा सं० पुं० भाग;-हँसिया, अंश;-पाती; -लेब,-करब,-पाइब; वै० हींसा; अर० हिस्सः ।

ह्िआव सं० पुं० हिम्मत;-करब,-धरब; वै०-या-।

ह्िआरी सं० स्त्री० स्मृति;-मँ बइठब; याद रहना; वै०-रौ,-या-; सं० हृद् ।

ह्िकना वि० पुं० निर्लज्ज; स्त्री०-नी, भा०-नई ।

ह्िगरब क्रि० अ० स्पष्ट होना, अलग होना; प्रे० -गारब,-गरवाइब, भा०-गार ।

ह्िचकब क्रि० अ० हिचकना ।

ह्िच्छा सं० स्त्री० इच्छा;-भर,-माफिक, पूरा पूरा क्रि० हिनछब (दे०); वै० इ-(दे०) ।

ह्िजरा वि० पुं० जिसमें स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का चिह्न न हो, भा०-रपन,-रई ।

ह्ित सं० पुं० कल्याण; मित्र; भा०-तापन,-ताई; -तैपन; क्रि०-ताब, अच्छा लगना;-मीत,-मित्र ।

ह्िनछब क्रि० स० कोई बुरी इच्छा करना; भविष्य के संबंध में दुर्भावना करना ।

ह्िनमिनहा वि० पुं० छोटा तथा दुबला पतला; स्त्री०-ही; सं० हीन+फा० मिनहा (शेष, घटा हुआ) ।

ह्िनवता सं० स्त्री० नम्रता;-करब ।

ह्िनह्िनाब क्रि० अ० घोड़े का बोलना ।

ह्िनाई सं० स्त्री० छोटापन, हीनता;-करब, -देखाइब; सं० हीन ।

ह्िब्बा सं० पुं० दान;-नामा, दानपत्र;-लिखब, -करब ।

ह्िम्मत सं० स्त्री० हिम्मत; वि०-वर,-ती;-करब, -होब ।

ह्ियाँ क्रि० वि० यहाँ; प्र०-यैं,-औं ।

ह्ियाव सं० स्त्री० हिम्मत; वि०-दार;-करब ।

ह्िरइब क्रि० स० पास में रखना (व्यक्ति को); आदत डालना;प्रे०-राइब,-रवाइब ।

ह्िरकब क्रि० अ० लालच के कारण दूसरे के पास डटे रहना; प्रे०-काइब, किसी वस्तु को ऐसे रख देना कि जल्दी वह हट न सके।

ह्िरदै सं० पुं० मन, चित्त;-मँ आइब,-मँ बसब, -मँ धरब; सं० हृदय ।

ह्िरास सं० पुं० कमी;-होब,-रहब ।

ह्िरोंह सं० पुं० कै करने की इच्छा;-लागब, ऐसी इच्छा होना ।

ह्िलब क्रि० अ० हिलना, हट जाना ।

ह्िलवाइब क्रि० स० हिलाना; गिराना (फल आदि); भा०-ई, वै०-उब ।

ह्िलाइब क्रि० स० हिलाना; वै०-उब; प्रे०-वाइब ।

ह्िल्ला सं पुं० संबंध, सिलसिला; बहाना;-करब, -मिलब,-पाइब;-हवाला; वै० हीला;-लैं लागब, व्यय हो जाना, लग जाना ।

ह्िसका-दाँजी सं० पुं० प्रतिस्पर्धा;-करब,-होब; फा० रश्क+दाँज (दे०) ।

ह्िसाब सं० पुं० लेखा-जोखा;-देब,-करब,-लेब;-किताब; वि०-बी ।

ह्िहिआब क्रि० अ० हँसना; हीं हीं करना; वै० -याब ।

ह्ीकि सं० स्त्री० हींक; गंध जो अच्छी न लगे; -आइब,-देब ।

ह्ीअव ! अव्य० बछड़े या गाय को बुलाने का शब्द; वै०-यो; प्रयोग में "हीअव बाछा !" बोलते हैं ।

ह्ीक सं० स्त्री० पूरी इच्छा;-भर, खूब ।

ह्ीकब क्रि० स० मारना; खूब पीटना; प्रे० हिकाइब,-कवाइब ।

ह्ीकाबोर क्रि० वि० जितनी इच्छा हो ।

ह्ीन वि० पुं० नीच, छोटा, दुबला-पतला, कमजोर, स्त्री०-नि, भा० हिनाई, हिनौता;- हियाती, जीवन भरका ।

ह्ीबा सं० पुं० दान पत्र;-करब,-लिखब; वै० हि-, हिब्बा;-नामा,-दार (जिसको हिबा लिखा जाय); अर० ।

ह्ीर सं० पुं० असली या बहुमूल्य भाग ।

ह्ीरा सं० पुं० हीरा; वि० बढ़िया, प्रशंसनीय ।

ह्ीरामन सं० पुं० प्रसिद्ध तोता जो कई लोकगीतों में आता है । वै० हि-।

ह्ीलब क्रि० अ० हिलना, हटना; बहुत डर जाना; प्रे० हिलाइब,-लवाइब ।

ह्ीला सं० पुं० बहाना, सिलसिला;-हवाला, टालमटूल;-करब ।

ह्ीसा सं० पुं० हिस्सा;-बखरा,-हसिया, अधिकार; -दार;-लेब,-देब,-माँगब; वै० हीं-, प्र० हिस्सा; हिस्सः ।

हुँआब क्रि० अ० रोना, चिल्लाना; हुँआ हुँआ करना, सियारों की भाँति बोलना ।

हुँकरब क्रि० अ० "हुँ हुँ" शब्द करना; चिल्लाना (पशुओं का); सं० हुंकार ।

हुँड़ार सं० पुं० पानी में रहनेवाला एक प्रकार के साँप या मछली जो प्रायः कुंड में ऊपर मुँह करके

कूदते तथा तैरते रहते हैं।-करब, ऊधम मचाना; -मचाइब,-मचब; वि०-री, ऊधमी।
हुड़हाइब क्रि० स० खदेड़ना, भगाना; वै० हड़-।
हुकुर-पुकुर क्रि० वि० धक-धक (काँपना);-करब, -होब; वै० थुकुर-।
हुकुम सं० पुं० आज्ञा;-देब,-होब; क्रि०-माइब, वि०-मी;-मी बंदा, केवल नौकर (जिसकी बात न चले)-हाकिम, निश्चय, फैसला (मुकदमे का)।
हुक्क सं० पुं० कोट में लगाने का हुक; अं०।
हुक्का सं० पुं० तंबाकू पीने का बर्तन;-यस (मुँह), खुला हुआ, चुपचाप;-पानी, आदर सत्कार;-बंद करब, त्याग देना, कहा० धन नाते-पोसाक नाते चिलम।
हुड़कब क्रि० अ० किसी की याद में विकल होना; प्रे०-काइब।
हुड़का सं० पुं० हाथ से बजाने का एक छोटा बाजा जिस पर चमड़ा लगा रहता है;-जोड़ी; "हुड़का जोड़ी बाज थै, चमारे क लरिका नाच थै।" -गीत।
हुड़दंगा सं० पुं० व्यर्थ का शोर-गुल; मस्ती भरा झगड़ा,-मचाइब,-करब; वै०-र-।
हुदहुद वि० पुं० छोटा (बच्चा); नासमझ।
हुदा सं० पुं० पद, उहदा; अर० उहदः।
हुनर सं० पुं० हुनर, ढङ्ग; वि०-री।
हुमना वि० पुं० इधर-उधर घूमनेवाला; बेकार; स्त्री० -नी; भा०-नई।
हुमासब क्रि० स० उभाड़ना; खोदकर निकालना; प्रे०।
हुम्मी-हुम्मा सं० पुं० एक दूसरे को खूब मारने की प्रतिस्पर्धा;-करब,-होब।
हुरदंगा दे० हुड़दंगा।
हुरपेटब क्रि० स० डाँटकर या डराकर किनारे कर देना।
हुरफब क्रि० स० डाँटना, फटकारना;-गुरफब (दे०)।
हुरब क्रि० स० मिट्टी से भरना, दबाना;मारना; खूब खाना; प्रे०-राइब,-रवाइब; दे० हूरा।
हुरमति सं० स्त्री० इज्जत; इज्जति-; अर० हुरमत; वि० -हा।
हुरहुर सं० पुं० एक जंगली पौदा जिसके बीज, पत्ते आदि दवा में काम आते हैं।
हुराइब क्रि० स० कूट-कूटकर भराना या भरना; खिलाना; प्रे० हुरवाइब; वै०-उब।
हुराह वि० तंग, कोताह, कम;-पाइब, कम पड़ना।
हुरिआइब क्रि० स० बाध्य करना, ढकेलना; दे० हूरा, भो०।
हुर्र वि० गायब, लुप्त;-होब,-करब, उड़ जाना या उड़ा देना।
हुलसब क्रि० अ० प्रसन्न होना; प्रे०-साइब; सं० उल्लास।
हुलास सं० पुं० प्रसन्नता, उल्लास; सं०।
हुलिआ सं० पुं० व्यक्तिगत चिह्न;-जाड़ी, पुलिस द्वारा हुलिया की विज्ञप्ति; वै० हो-।
हुलुम-दुलुम्मा सं० पुं० आन्दोलन, विप्लव; -मचाइब,-मचब।
हुलुर-हुलुर क्रि० वि० बार-बार (काँपना), धीरे धीरे; प्र०-लुर-लुर।
हुसिआर वि० पुं० होशियार; स्त्री०-रि, भा०-री,- -अरई,-पन; फा० होशियार।
हुस्स सं० पुं० दे० हूस।
हुहुआब क्रि० अ० हू-हू करना (ठंड या दर्द के मारे)।
हूँचा सं० पुं० कुहनी का धक्का;-मारब,-देब; क्रि० हुँचिआइब।
हूँसब क्रि० स० बार-बार और धीरे-धीरे डाँटना; हुँसवाइब।
हूक सं० पुं० दर्द जो झट से उठे और बंद होकर फिर उठे;-उठब।
हूरा सं० पुं० किनारा; क्रि० हुरिआइब, लकड़ी की नोक से किसी को उठाना, मजबूर करना; कहा० "न सौ पूरा चरन न यक हूरा चरन।"
हूल सं० पुं० झटके का दर्द;-मारब; क्रि०-ब, दर्द करना; सं० शूल; भो०।
हूस सं० पुं० उजड्ड, बेढङ्गा; प्र० हुस्स।
हूही सं० स्त्री० अफ़वाह, झूठी खबर;-उड़ब,-उड़ा-इब;-झूही; पुं०-हा।
हेंढ़ा वि० पुं० उजड्ड, बेढङ्गा; भा०-ढ़ई।
हेंगा सं० पुं० जुते खेत की मिट्टी बराबर करने का लम्बा लकड़ी का टुकड़ा; क्रि०-इब, ऐसी लकड़ी से खेत बराबर करना; वै० सरावन।
हेत सं० पुं० प्रेम; अव्य० वास्ते, लिए।
हेई वि० यह, यही; प्र०-ही,-इहै।
हेऊ वि० यह भी।
हेकड़ी सं० स्त्री० गर्व, अकड़।
हेठ वि० पुं० नीचा; स्त्री०-ठि, भा०-ठी, निचाई, क्रि० वि०-ठें, क्रि०-ठाब, नीचे चला जाना (पानी का)।
हेर-फेर सं० पुं० परिवर्तन;-करब,-होब।
हेरब क्रि० स० खोजना; प्रे०-राइब,-वाइब, भा० -राई।
हेराब क्रि० अ० खो जाना, प्रे०-रवाइब।
हेलवाई सं० पुं० हलवाई; स्त्री०-इनि; भा०-वैपन।
हेल वि० जिसकी कोई चिंता न करे; निराश्रित; -होब।
हेला सं० पुं० मेहतर; स्त्री०-लिनि; भा०-लैपन।
हेलुआ सं० पुं० हलुवा।
हेवँत सं० पुं० कठोर जाड़ा;-परब; वि०-तहा, ठंड का मारा हुआ; सं० हेमंत।
हेहर क्रि० वि० इधर; 'येहर' का प्र० रूप; प्र०-रै,-रौ।
हैंचल वि० पुं० जो कष्ट सह सके; स्त्री०-लि, वै० हहँ-।

हैकड़ वि० पुं० शक्तिशाली, परिश्रमी; दुःख या विरोध का सामना करनेवाला; स्त्री०-ड़ि; भा० -पन,-ई,-ड़ी।

हैकड़ी सं० स्त्री० गर्व, गर्वीली बात।

हैकल सं० स्त्री० हवेल (दे०) के बीच की बड़ी चौकी।

हैजा सं० पुं० प्रसिद्ध बीमारी; वि०-जहा,-ही।

हैबति सं० स्त्री० आश्चर्य की बात, अद्भुत घटना।

हैबी-दैबी दे० हइबी।

हैरठपन सं० पुं० हैराठिया (दे०) होने का गुण; वै०-ठई।

हैरति सं० स्त्री० आश्चर्य;-करब,-होब।

हैराठिया वि० पुं० जो कठिन से कठिन कार्य कर सके, भा०-रठपन,-ठई।

हैरान वि० पुं० परेशान, चकित; स्त्री०-नि, भा० -नी।

हैवान सं० पुं० पशु; भा०-वनपन।

हैहँस सं० पुं० निरंतर पर छोटे-छोटे कष्ट; वै० खइ-, हइ-।

होंठ दे० ओंठ।

होंफब क्रि० स० डाँटते रहना, निरंतर भय में रखना; प्रे०-फाइब,-फवाइब, भो०।

होकर वि० पुं० उसका; स्त्री०-रि, वै० ओ-; 'वोकर' का प्र० रूप।

होनहर वि० पुं० होनहार, अच्छा; स्त्री०-रि, भा०-ई; कहा० होनहर बिरवा क चिक्कन पात।

होनहार सं० पुं० होनेवाली बात।

होनी सं० स्त्री० भवितव्यता;-होब,-रहब।

होब क्रि० अ० होना;-जाब, जन्म-मरण; प्रे० -वाइब।

होम सं० स्त्री० हवन;-अगियारि, होम एवं हवन, पूजा अथवा धार्मिक कृत्य; मु०-होब, मर जाना; त्याग करना।

होरसा सं० पुं० छोटी पत्थर की चौकी जिस पर चन्दन घिसा जाय; वै० हु-,-ड़-; भो०।

होरहा सं० पुं० होला, चने का भुट्टा; मु०-होब, परेशान होना, धूप में थकना; वै० हूव-; भो० मै० ओ-।

होलिका सं० स्त्री० जलनेवाली होली;-माई, जिसके चारों ओर जलते समय बच्चे घूम-घूमकर कहते हैं-"होलिका माता देव असीस, लरिकै जीयें लाख बरीस;" सं०; वै० हु-।

होवाई सं० स्त्री० होने की क्रिया।

होस सं० स्त्री० चेतना; स्मृति;-करब, याद करना, -आइब,-होब; क्रि०-साब, वि०-गर, बे-; वै०-सि; फ़ा० होश।

होहर क्रि० वि० उधर, उस ओर; 'ओहर' प्र० रूप वै० हु-; वै० ओम-।

हौंकब दे० हउँकब।

हौज सं० पुं० पानी का भंडार; वै० हउद (दे०)।

हौदी दे० हउदी।

हौहाब दे० हउहाब।

हौहार दे० हउहार।

# परिशिष्ट

## छूटे हुए शब्द तथा अर्थ

### अ

अंक सं० पुं० संख्या का चिह्न; दे० आँक;-लगाइब, -मारब ।

अँकाइब साँड़ दगाना या कनगुर (दे०) गोंठना ।

अंकार सं० पुं० चिह्न, चेहरे का एक सा होना; सूचना;-देखब,-देखाब; 'अंक' से;-नाहीं छपत, किसी का चेहरा छिपा नहीं रहता अर्थात् प्रत्येक की असलियत देखने से ही स्पष्ट हो जाती है ।

अंकुस सं० पुं० रोक,-राखब, नियंत्रण रखना; सं० अंकुश ।

अँकोर... वि०-रिहा; सी० घूस-, वै०-क्वार ।

अंखा-पंखा, सं० पुं० काजल के चिह्न जो छोटे बच्चों को शृंगार के पश्चात् मत्थे पर दोनों ओर इसलिए लगा दिये जाते हैं कि नजर (दे०) न लगे।

अंग-अंग क्रि० वि० प्रत्येक अंग; प्रत्येक अवयव में; प्र०-गैअंग, सारे अवयव । वै०-गें-गें; देहें-अंगें, शरीर के लिए;-लागब, लाभ करना (किसी खाद्य का) ।

अंग-भंग सं० पुं० किसी अवयव का टूट जाना;-करब,-होब; तुल० अंग-भंग करि पठवहु बंदर ।

अंगुर सं० पुं० एक अंगुल;-भर, जरा सा; सं० अंगुलि; दे० अङ्गुरा,-री ।

अंजल सं० पुं० दे० अनजल;-होब, बदा होना, भाग्य में होना; सं० अन्न + जल ।

अंजहा वि० पुं० दे० अनजहा ।

अंजाद सं० पुं० दे० अनजाद; वि०-दू, अनुमान पर निर्भर;-मामिला,-बाति; फ़ा० ।

अँजुरी... खलियान में पुण्यार्थ निकाला अन्न; -काढ़िब,-काढ़ब,-निकारब ।

अंट-बंट सं० पुं० उलटे-सीधे शब्द; अपशब्द; वै० अंड-बंड, अट्ट-पट्ट,-संट;-कहब,-बोलब,-बक्कब ।

अंटी सं० स्त्री० धोती का वह एँठा हुआ भाग जो कमर के ऊपर चारों ओर बँधा हो; रुपया रखने का स्थान; कोष (क्योंकि देहाती प्रायः इसी स्थान पर नक़द रुपये-पैसे रखते हैं)-खोलब, रुपया निकालना ।

अंझी सं० पुं० एक प्रकार का चावल ।

अंड-बंड सं० पुं० व्यर्थ या अनुपयुक्त बात;-करब, -बक्कब ।

अंडा सं० पुं० अंडा; अंडकोष के भीतर की गोली; बे-, वह अंडा जिसमें से बच्चा न निकले; सं०-ड ।

अंडा सं० पुं०-बच्चा, सारा परिवार;-बंडा, उलटा-पलटा; वै० अंड-बंड, अंट-बंट,-संट;-देब,-सेइब (ये दोनों मुहावरे काहिलों के लिए प्रयुक्त होते हैं उ० घर माँ बइठ-सेवत (देत) हौ, घरमें बैठे-बैठे अंडे से (या दे) रहे हो ?)

अँड़सठि... साठ और आठ;-वाँ,-ईं, ६८वाँ भाग ।

अँड़सब क्रि० अ० फँस जाना, ठूँस उठना; प्रे० -साइब,-उब ।

अँड़ोरब क्रि० स० उँड़ेलना; प्रे०-रवाइब,-उब; दे० उँड़ेलब ।

अंत सं० पुं० अंतिम भाग;-देब,-पाइब,-लेब, भीतरी बात या रहस्य खोलना, ज्ञात करना अथवा पता लगाना; सं०; वै० अंतर, अंत्र ।

अंतर सं० पुं० भीतरी भाग; रहस्य;-देब,-पाइब, -लेब;-दोखी, जो भीतर या हृदय का साफ़ न हो; -छली; सं० ।

अंदाजब क्रि० अ० स० पता लगाना, अनुमान करना, अनुमान से कहना । विपर्यय से कभी-कभी 'अंजादब' भी कहते हैं । फ़ा० अंदाज़ ।

अंदाजू वि० अनुमान पर निर्भर, अनिश्चित; लग-भग; फ़ा० अंदाज़ ।

अंधाधुंध क्रि० वि० बिना सोचे समझे; अनियंत्रित रूप से; सं० अंध ।

अंस सं० पुं० भाग; भाग्य;-दार, भाग्यवान्;-इत, अंश या भाग्यवाला,-हीन, अभागा;-हा, नक्षत्रवाला; दे० अनसइत; वै०-सा (उ०-के अंसा कै,-के भाग्य का); सं० अंश ।

अंसोहाति सं० स्त्री० जो बात अच्छी न लगे; वै० अनसुहाति; अन + सोह (ब); दे० सोहब; उ० -बोलेव न, ऐसी बात न कहना जो किसी को बुरी लगे; प्र०-तै,-तिहि ।

अइया.. ह० में माता के लिए प्रयुक्त ।

अउँघाई... वि०-न,-सा,-सी (नींद में) ।

अउन्हाइब क्रि० स० उलटकर रखना (बर्तन); ढक देना ।

अउलाई... सी० डुबकाई ।

अकहत्थी . वै० एकहाते ।

अकिलि...-गुम्म होब, बुद्धि काम न करना ।

अकोल... वै०-कोहरू (सी० ह०) ।

अखनी.. सी० पँचई ।

अखरा... वै०-वा (सी०); सी० खलियान में रखा नाज या भूसे का निरर्थक अंश ।

अखोर... फ़ा० आख़ोर (लीद) ।

अगंत सं० पुं० अगला जन्म;-बिगाड़ब ।

अगउरा सं० पुं० गन्ने का ऊपरी भाग (सी०)।
अगरदब्ब वि० (गाड़ी) जो आगे दबी हो।
अगरदाबाद वि० ऊधमवाली (स्थिति);-करब, -उठब,-उठाइब।
अगहर वि० पुं० आगे (फसल आदि); स्त्री०-रि।
अगाड़ी...वै०-री (सी० ह०)।
अगिआइब...(सी० ह०) आग में तपाना (बर्तन)।
अगियारि...वै०-री,-ग्यारि (सी० ह०)।
अङहर सं० पुं० रुई का टुकड़ा (घाव आदि पोंछने को)।
अङुठा...(सी०) अँगूठे का आभूषण; अनवट।
अङ्गेअङ्ग क्रि० वि० प्रत्येक अंग में; सं०।
अङ्ङड़-खङ्खड़ सं० पुं० व्यर्थ का सामान।
अचला सं० पुं० साधुओं के पहनने का कपड़ा जिसे धोती की भाँति ऊपर छाती तक लपेट लेते हैं।
अच्छत सं० पुं० बिना टूटा चावल; यक-न, कुछ भी (अन्न) नहीं; सं० अक्षत; दे० आखत।
अच्छर...-रै-एक-एक अक्षर।
अच्छा...(२) हाँ।
अठवारा सं० पुं० आठ दिन का अवसर; यक-, दुइ-; सं० अष्ट।
अठवाल सं० स्त्री० पालकी जो आठ कहारों से उठे।
अठुर.. क्रि०-राब, अकड़ना।
अठुली सं० स्त्री० नवांकुरित कुच; केवल इस कहावत में प्रयुक्त "-अठारह आना, खड़ी चूँची बारह आना, लतरी अढ़ाई आना।"
अड़बंग...वै०-गम्म।
अड़ाब...सी० डारिब (दूसरे अर्थ में)।
अड़ार...सी० ह० बरारी।
अतरि-खोतरि...सी०-रे-दुतरे।
अताताई वि० पुं० अत्याचारी, दुष्ट; सं० आततायी।
अत्तौ वि० बराबर (हिसाब);-करब,-होब; फा० अदा ?
अथक्क...(२) बहुत थका हुआ (सी० ह०)।
अदरइबो क्रि० स० विशेष आदर करना (सी० ह०)।
अद्धा...(२) छोटी बैलगाड़ी जिसमें एक बैल जुतता है (सी० ह० ल०)।
अधउरवा...छोटी टोकरी (सी० ह०)।
अनदाज सं० पुं० अनुमान;-लगाइब; क्रि०-ब, पता लगाना, अनुमान करना; वै०-जा; फा०।
अनबंतु सं० पुं० बिगाड़; सी० ह०; अन+बनब (बनना)।
अनवासब...सं० अनु+वस्।
अन्हिआर...तुल० निहार (जनुनिहार महँ दिनमनि दुरा)-तं०।
अन्होरी...म० घमौरी,-धौ-; सं० घर्म (धूप)।
अपूरी...सं० आ+पूर; निरर्थक अ ?
अमरख सं० पुं० प्रेमहीनता का अनुभव करके अपने ही जनों पर अप्रसन्न होने का भाव; क्रि० -ब, सं० आ+मर्ष,-करब।
अमलोस वि० पुं० कुछ खट्टा;-लागब।
अमावट...सी०-मउट,-त, अँबाउट्ठ।
अमिरथा वि० व्यर्थ;-जाब,-होब; दोनों लिंगों में एक ही रूप।
अमिल सं० पुं० जादू, टोना;-करब; सी०।
अमिलतास...सं० अम्लवेतस्।
अरगासन सं० पुं० गऊ आदि के लिए पहले से निकाला भोजन;-निकारब; सं० अग्र+अशन।
अरबजब क्रि० अ० भिड़ना, लड़ जाना; प्रे० -जाइब।
अरवा...सी०-रिया।
अरहरि...सी०-र्ही, वि०-हिहा।
अरूस...वै० रूसाहु (सी० ह०)।
अरोरव दे० हलोरब (सी० ह०)।
अलगोजा सं० पुं० दुहरी बाँसुरी;-बजाइब।
अललाब क्रि० अ० जोर-जोर से चिल्लाना; कहा० घिउ देत बाभन अललाय।
अलहिदा दे० इलहिदा।
अवाहि क्रि० वि० गहरा (जोतना); उ० सेव (दे०) दे० आकर।
असरमकखी वि० सब कुछ खानेवाला, बहुत खानेवाला; सं० सर्वभक्षी।
असीस सं० पुं० आशीर्वाद,-देब,-लेब; क्रि०-ब।
अस्त वि० समाप्त, डूबा;-होब, डूब जाना; वै० -हत।
अहटियाइब क्रि० स० पता लगाना, खोजना; आहट से।
अहथूल वि० स्थूल, निश्चित;-करब,-होब; सं० स्थूल।
अहरी...बाँ० चरही।
अहिवात...सी० ह०-उहात,-ती।

## आ

आछत क्रि० वि० रहते हुए; कविता में "अछत।"
आढ़ति...सी० ह० बाधा, अड़चन;-डारब।
आना सं० पुं० ढेहरी का मुँह; दे० ढेहरा; सं० आनन ?
आमाम्भोर क्रि० वि० जोर-जोर से (वायु अथवा युद्ध के लिए); सं० आम्र+झोरब, अर्थात् ऐसे वेग से जिसमें आम पेड़ से टूटकर गिरें।
आलम सं० पुं० संसार; बड़ी भीड़; अर०।
आलस सं० पुं० आलस्य; वि०-सी, अरसील (सी० ह० ल०); वै०-रसु (सी० ह० ल०)।
आव-बाव सं० पुं० उलटी-सीधी बात;-बकब।

आवाँ सं० पुं० मिट्टी के बर्तनों का ढेर जो एकत्र पकाये जायँ;-लागव,-लगाइब।
आवा-गवा सं० पुं० अतिथि, आगंतुक।

## इ

इमान...धरम, धरम-।
इहाँ...वै० हियाँ (दे०)।
इहै...जा० ताकर-सो खाना पियना (पद्० ४)।

## ई

इटा सं० पुं० ईंट, स्त्री०-टि; दे० इटकोह।

## उ

उअब..."नजवौं आसु..." के स्थान में "न जनौं..." पढ़ें।
उगिलब क्रि० स० उगलना, इच्छा विरुद्ध देना; प्रे० -लाइब,-लवाइब।
उठम्मू वि० जिसका कोई निश्चित स्थान न हो; जो एक स्थान से उठकर दूसरे को जाता रहे; प्र० -म्हू।
उड़उआ सं० पुं० उड़ान; कहा० तीनि-म तित्तिर नाहीं।
उतशा सं० पुं० कान के ऊपरी भाग में पहनने का छल्ला।
उताहिल वि० पुं० शीघ्रता करनेवाला; स्त्री० -लि।
उतिन्न वि० मुक्त (ऋण, उपकार आदि से),-होब, -करब; सं० उत्तीर्ण; दे० उरिन।
उतिनब क्रि० स० उतारना, उधेड़ना;-पतिनब, प्रे० -नाइब।
उत्तिम वि० उत्तम।
उद्दिम सं० पुं० काम, परिश्रम; बुरा काम; सं० उद्यम।
उनइब...प्रे०-वनाइब; सं० उत्+नम्।
उपरसंसी सं० स्त्री० रोग जिसमें ऊपर से साँस नीचे आने में कष्ट हो; सं० उपरि+श्वास।
उपरोहित सं० पुं० पुरोहित; भा०-ती; सं०।
उलका वि० पुं० उतावला; स्त्री०-की; कहा० उलकी धेरिया उलको दमाद, नाचै धेरिया गावै (बाखै) दमाद; सी० ह०।
उलार वि० पुं० (गाड़ी) जो पीछे दबी हो; स्त्री० -रि।
उलारा सं० पुं० छोटा-सा गीत जो अंत में गाया जाता है।
उसकिना...सी ह०-जूना।
उसिनब...सी० ह०-स्याइब,-से-।

## ऊ

ऊकड़-बाकड़...सी० ह०-ख-।
ऊम-डाम सं० पुं० दिखावा, उत्साह;-करब; सं० आडंबर।

## ओ

ओंका-बोंका...सी० ह० अक्कू-बक्कू।
ओंड़ा.. वै० ठावाँ (सी० ह०)।
ओकलाई...वै० उबकाई, उकाई (सी० ह०)।
ओगरब क्रि० अ० धीरे-धीरे चूना, बूँद-बूँद गिरना; प्रे०-गारब, व-, भा० ओगार, वगार।
ओझरी सं० स्त्री० आँत आदि का ढेर;-निकरब, -फेंकब; सी० ह०; पूर्वी अवधी में इसे खेड़ी (दे०) कहते हैं।
ओझा प्रथम अर्थ में वै० नाउत (सी० ह०)।
ओझाई...वै० ..नउताय,-ई।
ओदी...(२) भीगी धोती पहनने से हुई दाद की सी बीमारी (सी० ह० ल०)।
ओनम सं० पुं० वर्णमाला;-पढ़ब,-पढ़ाइब; ओनामासी का संक्षिप्त रूप; कहा० ओनामासी धम बाप पढ़े ना हम। (पाँड़े क चुटिया तं, बाप पूतनक्) सी० ह० यह शब्द ओं नमः शिवाय से बना है।
ओनाइब क्रि० स० बोने के पूर्व तैयार खेत को पटेला, सरावनि या हेंगा (दे०) से बराबर कर देना (सी० ह०)।
ओनान...क्रि०-ब, आज्ञा मानना।
ओर...-सीर, एक किनारे से दूसरे किनारे तक।
ओरउनी ..वै०-ती (सी० ह०)।
ओरहन सं० पुं० उलाहना;-देब,-करब; क्रि० वि० -नें, उलाहना देने के लिए।

## क

कंगा...वै० (सी० ह०)-संगा।
कंडउरा...वै० (सी० ह०)-री।
कँड़िया...सी० ह० गाली।
कंतरी सं० स्त्री० एक मिठाई जिसे-रिया भी कहते हैं; प० अ०।
कंस...वि०...कउँखो (सी० ह०), मकसी।
कउँची...वै०-इती (सी० ह०)।
कउँड़िल्ला सं० पुं० एक जंगली लता और उसका फल;-यस, छोटा सा (बच्चा); कउड़ी से, क्योंकि यह फल कउड़ी जैसा होता है।
कउआ...(२) गले के भीतर का भाग जिसे घाँटी (दे०) भी कहते हैं।
कउरब...वै०-हलब (सी० ह०)।

ककनिआइब...वै० बटिआइब।
कक्कू...वै०-कुआ (सी०)।
कखडरी...वै० अढ़उली, बद (सी० ह०)
कचहिल वि० पुं० थोड़ा कच्चा, अनुभवहीन, सुस्त।
कछनी...पं० कच्छा।
कजरवटा...कहा० आँखि हइयै न-नवठूँ।
कजरी...सावन भादों का प्रसिद्ध गीत कजली; -गाइब।
कटलासी सं० स्त्री० फटा हुआ आम।
कटार...इसकी दूसरी पंक्ति "कटारी" शब्द से संबद्ध है।
कटारि सं० स्त्री० एक जंगली फल जिसके पेड़ में बहुत काँटे होते हैं।
कठबइठी सं० स्त्री० पेचीदा हिसाब या पहेली जो बिना लिखे "बैठा" लिया जाय; काठ+बइठब (काठ की भांति बैठने या लगनेवाला)।
कटौ-कट्ट सं० पुं० कलह;-करब,-होब।
कठुला...-पहुँची, दो गहने जो बच्चे पहनते हैं।
कठेठ...वै०-ट्टा,-ट्टी।
कड़बड़ाब क्रि० अ० शोर करना, शिकायत करना।
कड़े-कड़े...वै० हवा-हवा,-वे- (सी० ह०)।
कढ़ायन वि० अनुपयोगी, व्यर्थ (व्यक्ति); वै०-ल (काढ़ब से=निकाला हुआ)।
कतवार...सी० ह० पत-, पतावरि।
कथरी...कहा० केकर-केकर लेई नाँव, कथरी ओढ़े सज्जै गांव (ब० फै०); बड़े जाड़ बड़े पाला, कथरी ओढ़े मरिगे लाला (सी० ह०)।
कदराब...तुल० तात प्रेम बस जनि कदराहू (रा० अ०)।
कनइल...प्र० कंडैल (दे०)।
कनगुर सं० पुं० कान के नीचे की फुड़िया जिसे रवि तथा मङ्गलवार को कायस्थ के कलम से सेंकाते या गोंठते हैं; सी० ह० ल०।
कनटरोल सं० पुं० खाद्य द्रव्य, वस्त्र आदि का नियंत्रण; अं० कंट्रोल।
कनापोटी सं० पुं० कनकौआ नामक एक घास जिसके पत्तों की पकौड़ी बनती है; वै० का-।
कन्हावरि...सु० रा० ब० ह० साराजोरी, सी० लइगुजवा।
कबड्डी सं० स्त्री० प्रसिद्ध खेल; सी० ह०; ग-।
कबिरा...प्र० दास कबीरा (दास कबीरा कहि गये...)।
कबुली...वै०-लढ़िया।
कबूतर...प्र०-बुत्तर।
कमोन...तैयार किया हुआ खेत।
कमासुत वै०-(ह०)-मे-।
कमोरा...वै० करसा,-सी (सं० कलश), मउना, -नी (सी० ह०)।

करइली दे० करैला; यह शब्द सावन के गीतों में यों ही प्रयुक्त होता है।
करकच्ची सं० स्त्री० एक कीड़ा जो प्राय: गीली भूमि में रहता है।
करकर वि० पुं० कुछ हृष्ट पुष्ट; प्र०-ड़-ड़; भा० -ई।
करकराब क्रि० अ० जोर-जोर से बोलना; लड़ना।
करकोलब क्रि० स० खोखला कर देना, हाथ से खोद लेना; सं० कर (हाथ) ?
करजा ..-काढ़ब, ऋण लेना;-कुआम, किसी प्रकार प्राप्त किया हुआ धन।
करतब सं० पुं० पेंच; तरकीब, चालाकी; वि०-बी, -ब्बी; सं० कर्तव्य।
करम सं० पुं०;काम, मृतक की तेरहवीं; किरिया-, -करब,-होब।
करवँट सं० पुं० करवट;-लेब; कासी-।
करसी सं० स्त्री० कंडे का टूटा बारीक भाग; नीक-टारब, अच्छे भाग्य का होना; पुं०-सा, वि० -सिहा।
करा...सी० ह० पूँजा।
करिन्दा सं० पुं० कारिंदा, प्रतिनिधि; भा०-ग्रई; फा० कारिंदः।
करिया...-करिंगन, खूब काला-काला।
करुआसन वि० कटु, कर्यांकटु;-लागब,-करब; सं० कटु।
करू वि० कड़ुआ;-तेल,-लागब; सं० कटु; क्रि० -रुआब।
करेज...-माठा करब, परेशान करना।
करेर...-करब, तकाज़ा करना; क्रि० वि०- रें, जोर से।
करैब क्रि० स० रगड़ना, पीसना (दांत); दे० दँत-करौं।
कलक ..निराशा, दु:ख; वि० सा० "पर इक कलक होति बड़ि ताता, कुसमय भये राम बिनु भ्राता" (पृ० ४७७)।
कलिकानि सं० स्त्री० दु:खदायी स्थिति;-करब, परेशान करना।
कल्ला...सं० कलह (तीसरे अर्थ में)।
कल्लें क्रि० वि० धीरे से;-कल्लें; धीरे धीरे।
कवरा...-राही करब, इधर उधर माँग कर खाते रहना।
कसीदा सं० पुं० बेल बूटा;-काढ़ब; फा० कशीदन (खींचना)।
कातरि...कतरी, काँ-।
कानागोई सं० पुं० कानूनगो; वै०-नगोइ।
कानाफूसी सं० स्त्री० कान में कही गुप्त बात; -करब; सं० कर्ण+फुसफुसाब (दे०)।
किंगिरी...कहा० अपनी-अपनी-अपना अपना राग (सी० ह०)।

किनराब क्रि० अ० किनारे जाना, निकट आना; प्रे०-राइब ।

किनारा सं० पुं० किनारा; स्त्री०-री; वै०-र; -काटब, अलग हो जाना;-रँ, यक-रीदार, किनारी सहित (कपड़ा; धोती) ।

किलहँटा सं० पुं० मैना जाति का पक्षी; स्त्री०-टी; अवाचा-होब, किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाना ।

किसमति सं० स्त्री० भाग्य; नाई के सामान का छोटा बक्स;-दार, भाग्यशाली ।

किसमिस सं० स्त्री० किशमिश ।

किसिम सं० स्त्री० प्रकार;-किसिम कै, कई प्रकार के ।

किसुली सं० स्त्री० गुठली; यक-, दुइ-, एक पेड़, दो पेड़ (आम); वै० जिबली ।

कुकुरउँछी सं० स्त्री० कुत्तों को काटनेवाली मक्खी; सं० कुक्कुरमक्षिका ।

कुकुर-झौंझौं सं० स्त्री० झिकझिक;-करब, -होब ।

कुकसब...वै० पकु-।

कुंचं सं० पुं० एँड़ी के ऊपर की नस; कहा० कुच कट खटिया बतकट जोय ।

कुट्ट...वै० खु-(गों०), खुट्टी (सी०) ।

कुढ़ सं० पुं० हल का वह भाग जो जोतनेवाला हाथ से पकड़ता है; वै०-रह;-फार ।

कुदिन सं० पुं० दुर्भाग्य का दिन; वर्षा का वह दिन जब पानी के मारे आना जाना न हो सके;-करब, -घेरब ।

कनमुनाब क्रि० अ० जग जाना, होश में आना ।

कुँनाई.. (२) बुरादा (गों०) ।

कुबेरी बेरिया सं० स्त्री० गोधूली; इसे कहीं कहीं सँझवतिया और गोरुवारी भी कहते हैं; सी० ह० ।

करइब...मु० झट से खूब दे देना, बहुत देना (द्रव्य) ।

कुरकुर वि० पुं० भुरभुरा; स्त्री०-रि; क्रि०-राब ।

करंब क्रि० अ० कोसना; दाँत-, दाँत पीसना; (२) हंस या सारस का बोलना; वै० करंब (पहले अर्थ में) ।

कुल...-खूँट, कुल परंपरा ।

कूटि...वै० कूठ (सी०) ।

केतत...प्र०-त्तत ।

केवड्याँ सं० पं० एक पौदा और उसका फल जो आग के जले पर दवा का काम देता है; इसके पत्तों का साग भी खाते हैं ।

कोंहरगड्डा सं० पुं० वह स्थान जहाँ से कुम्हार अपने बर्तन बनाने की मिट्टी ले;-क माटी, ऐसे स्थान की मिट्टी, अच्छी मिट्टी; सं० कुंभकार+गड्ढा ।

कोइआँ सं० पुं० कुमुदिनी; मुँह-होब, चेहरा फीका पड़ जाना; वै०-इँ ।

कोइड़ार सं० पुं० कोइरी (दे०) का काम, खेत आदि;-करब,-होब ।

कोम्हिलाब क्रि० अ० कुम्हलाना; मुँह-, मुँह सूखना ।

कोरचा...सी० ह०-ल-।

## ख

खँचिआ सं० स्त्री० छोटी टोकरी; लघु० खँचोला, -चुली, दे० खाँची,-चा ।

खँड़खैंचा सं० पुं० खंजन; वै०-रैचा, खिरखिदा; सी० ह०; दे० खिड़रिचि ।

खटमिट्ठा वि० पुं० कुछ खट्टा, कुछ मीठा; स्त्री० -ट्ठी ।

खदुआ-बरहना सं० पुं० कोई भी साधारण व्यक्ति; फा० बरहनः (नंगा) ।

खबीस..."किलकैं खबीस दसबीस आसपास बैल बेझत देवाल भौन कौन को बिगारौगे ?"-बेनी कवि ।

खभार सं० पुं० चिंता, खलबली;-मँ परब; सुनि रावन मन परेउ खभारा-वि० सा० (पृ० ५७८) ।

खर...-ओखधवा, जंगली जड़ी बूटी की दवा ।

खरर-खरर क्रि० वि० खर खर आवाज के साथ; -खजुआइब ।

खराई...सी० ह०-फूटब, नाक से खून गिरना ।

खरिआ ..(२) गँजिआ (सी० ह०) दे०; क्रि० -आइब, कमा लेना, बटोर लेना ।

खरीता...सी० ह०-लित्ता ।

खर्रा सं० पुं० लंबा पत्र,-लिखब,-पठइब ।

खलङ्गा...सी० ह० ग्वाँड़ा ।

खवही...सी० ह० ल० नजर ।

खारुआँ...वँ०-याँ; सं० खदिरक ।

खियाइब क्रि० स० खिलाना;-पियाइब; खलाना पिलाना, खाब-; वै०-उब ।

खुटुर-खुटुर क्रि० वि० खुट खुट आवाज के साथ ।

खुदुर-बुदुर सं० पुं० छोटा मोटा काम;-करब ।

खुद्दर सं० पुं० कचड़ा; खर-; घास आदि का टुकड़ा ।

खुरिहारब क्रि० स० खुर से खुरचना, मिट्टी निकालना; सं० खुर ।

खूँटा...यक खूँटी बाँस, बाँस का एक पेड़ ।

खूड़ सं० पुं० गन्ना, ईख; सं० इक्षु→ईखि→उखुड़ि (दे०)→खुड़ि→खूँड़ दे० ईखि; यह शब्द केवल सी० ह० में बोला जाता है ।

खून...-खच्चर,-खराबा, मार-काट;-होब,-करब ।

खूसट...इस नाम का एक पक्षी होता है जो उल्लू का एक प्रकार है ।

खेलब...-खाब, मौज करना ।

खोड...खोड्डिल-बाड्डिल, टेढ़ा-मेढ़ा, टूटा-फूटा; यह मनुष्यों तथा पशुओं के लिए भी प्रयुक्त होता है।

## ग

गंगनधूरि सं० स्त्री० भुइँफोर (दे०) की राख जो उसे सुखा कर बनाई और जले की दवा के काम में लाई जाती है; सी० ह० जहाँ भुइँफोर को धरती का फूल कहते हैं।

गँड़-उघरा वि० पुं० बेशरम; स्त्री०-री; गाँड़+उघार (खुला), जिस की गांड़ खुली हो; प्रायः गाली के लिए प्रयुक्त।

गँड़-खोदउअलि सं० स्त्री० छिद्रान्वेषण; एक दूसरे की गांड़ खोदने की आदत; मनोमालिन्य; -करब।

गँड़-खोल्ला वि० पुं० निर्लज्ज; जिसके गुप्तांग खुले हों; भा०-ल्लई।

गड्हा...वि०-उम्मेदार, बढ़िया (सी० ह०)।

गड़िपेलई सं० स्त्री० दूसरे की बात न मानने की आदत;-करब; गाड़+पेलब (दे०)।

गदोरी...सी० ह०-देरिया।

गन्हौरा...वै०-म्हउरा।

गबच्छू...वै०-छू (-ह नहीं)।

गरदबवा सं०पुं० बीमारी जिसमें पशुओं का गला सूज जाता है (सी० ह०); गर+दाबब (दे०)।

गरमसब क्रि० अ० (मौसम का) गर्म होना।

गरह...-दसा, ग्रहों की स्थिति, भाग्य।

गलफा...सं० जल्प।

गल्लई सं० स्त्री० अधिआ (दे०) पर देने की प्रणाली;-पर देब।

गवँ सं० स्त्री० दाँव, मौका;-ताकब,-पाइब; गवँ-, धीरे धीरे, चतुरतापूर्वक।

गहदी...सी० ह० (२) हथेली के किनारे का ऊँचा भाग।

गाँव...-गिरावँ।

गाँस...डाँट-, डाँट फटकार।

गाँसब...सीमित करना।

गाटा...सी० ह० गहूँठा, गदर-गहना।

गाड़ब क्रि० स० गाड़ना; प्रे० गड़ाइब।

गाड़ा...-करब,-डारब (जादू डालना) सी० ह०; -बंदी, रास्ते रोक कर आक्रमण करने का क्रम; वै० गां-।

गादुर...वै० खा-(सी० ह०)।

गिंजाई ..(२) लिखली चोंथी (दे०) सी० ह० ल।

गिमटी सं० स्त्री० रेल की लाइन पर बना कमरा जिसमें चौकीदार रहे; वै० गु-।

गिरँव सं० स्त्री० गिरवीं;-धरब,-होब।

गिरई सं० स्त्री० एक छोटी मछली।

गिरगिटान सं० पुं० गिरगिट;-चढ़ब, दुर्भाग्य घेरना।

गिरब क्रि० अ० गिरब, चूक जाना; प्रे०-राइब, -रवाइब।

गिलटी सं० स्त्री० गिल्टी;-निकरब,-फूटब; वि० -टिहा।

गुच्चा वि० पुं० छोटा, मोटा और मजबूत, स्त्री० -ची।

गुमेचब क्रि० स० लपेटना, प्रे०-चवाइब।

गुर...क्रि०-बधब, पकने लगना (फल का),-गोंइठा होब, सब काम बिगड़ जाना।

गुरगा सं० पुं० छोटा बच्चा, संदेश वाहक; दरिद्र व्यक्ति; फा० गुर्ग: ?

गुरगुराब क्रि० अ० काँपना।

गुरफब क्रि० अ० डांटना, चिल्लाना।

गुरम्ही सं० स्त्री० फोड़े की भांति की गोल गांठ; -परब; क्रि०-म्हिआब।

गुर्चि सं० स्त्री० प्रसिद्ध औषधि जिसकी बेल चलती है; क्रि०-आब, गांठ पड़ जाना; सं० गुडुचि।

गुर्राब क्रि० अ० गुर्राना।

गुल्ली...(२) गले में पहनने का चांदी या सोने का आभूषण।

गूँड़ा सं० पं० घोड़े की पीठ पर रखने का सामान जो जीन के नीचे रहता है; वै० गुँड़ि का (सी० ह० ल०)।

गेंगटा सं० पुं० केकड़ा (सी० ह०)।

गेरावँ...वै० ..-रैयां, गरियैयां (सी० ह०)।

गोंयड़ सं० पुं० गांव का पड़ोस; क्रि० त्रि०-ड़े; कहा० जब-ड़े आय बरात त समधिनि के लागि हगासि।

गोजई सं० स्त्री० गेहूँ और जौ का मिश्रण; सं० गोधूम+यव।

गोड़वारी सं० स्त्री० खाट का वह भाग जो पैर की ओर रहे, उल० मुड़वारी।

गोदा सी० ह० गदिया।

गोरसी सं० स्त्री० अँगीठी जिस पर दूध गरम हो; वै० गव-।

गोसयाँ सं० पुं० मालिक; घर-, उत्तरदायी व्यक्ति; स्त्री०-इनि, सं० गोस्वामी।

गोसाईं ..स्त्री०-सांइनि।

गोहिया...वै०...वर्त (सी० ह०) (२) एक जाति जो पत्थर, रस्सी आदि का काम करती है (सी० ह०)।

## घ

घंता-मंता...सी० ह० खंती-मंती।

घन...(२) सं० पुं० लुहार का घन।

घवदि ..प्र०-दा (सी० ह०),-रि (ह०)।

घाला...सी० ह०-ता, हँक (ह०)।

घिग्घी सं० स्त्री० गले के रुँध जाने की स्थिति; -बन्हब।

घुघुआ सं० पुं० उल्लू, वै०-घ्घू।
घुच्ची...सी० ह० टेडँटी।
घुड़कब...भा०-की।
घुमची सं० स्त्री० गुंजा।
घंटा . वै० घैंटा।
घोड़तैयाँ सं० पुं० किसी बच्चे या व्यक्ति को घोड़े की भाँति पीठ पर ले चलने की स्थिति;-लेब,-लादब; वै०-ईयाँ, सी० ह० कँधैयाँ; सं० घोटक।

## च

चउरिआर वि० पुं० जो स्वाद में कच्चे चावल की भाँति हो;-लागब; 'चाउर' से।
चउरेंठा सं० पुं० चावल का आटा।
चनइनी सं० स्त्री० प्रसिद्ध लोकगीत और उसकी नायिका जिसे चनवा या चँदवा भी कहते हैं। यह गीत कथानक के रूप में कई दिन तक गाया जाता है और इसके नायक लोरिक के नाम पर इसे भोजपुरी में लोरिकायन भी कहते हैं; वै०-नैनी।
चभका सं० पुं० पशुओं के मुँह की एक बीमारी (सी० ह०)।
चवन्हा सं० पुं० दृष्टि, हिम्मत;-खुलब।
चवन्हिआब क्रि० अ० चकाचौंध में पड़ जाना; वै० -उ-।
चसका...-लागब,-परब।
चिउँटहरि सं० स्त्री० चींटों के रहने का स्थान।
चिउँटा सं०पुं० चींटा;-माटा, स्त्री०-टी;-टिआ चाल, धीरे-धीरे।
चिकनाइब क्रि०स० बराबर करना, चिकना बनाना; मीठी बातों से दूसरों को भुलावा देना; सं० चिक्कण।
चिक्कन वि० पुं० चिकना, स्त्री०-नि;-मुक्कन, सुंदर, भा०-कनई।
चिनगी सं० स्त्री० चिनगारी।
चिरई...-चिरगुन,-चुनगुन (लख०) छोटे-छोटे जीव।
चिरउरी...कहा० कंवर पर जब परै पिछौरी ज्ञाइ बेचारा करै चिरउरी।
चिरकब क्रि० स० जरा छिड़क देना; प्रे०-काइब।
चिरुआ...(२) चुल्लू; यक-,-भर।
चिल्हकब क्रि० अ० रह-रह कर दर्द करना।
चीजु...-बिक्खय, सामान।
चीलर...वै० चिलुआ (सी० ह०)।
चील्हि...वै० चिल्हरि (सी० ह०)।
चुटकी...हँसी,-लेब; थोड़ा आटा, चावल आदि; -माँगब,-देब।
चुनब...मु० आराम से खाना।
चुन्ना सं० पुं० पेट का पतला सफेद कीड़ा;-परब, -काटब।
चुम्मा...कहा० पहिलें-ओंठ टेढ़।
चुहिल वि० उत्साहवर्धक (स्थान, वायुमंडल); -लागब।
चूर...वै० चूल;-बैठब,-बइठाइब।
चेफ...वै०-चिफुरी, चीफुर (लख०)।
चोंकरब...दे० भोंकरब।
चोंड़ा...सी० ह० चूहा।
चोकर.. कहा० जे खाय चुनी चोकर मोटाय होय धोकर।

## छ

छंटा...कहा० छंटा घोड़ी सूद क जोय पहिलेइ बेंत म चउपट होय।
छछुअरा सं० पुं० झूठा अपयश;-छोड़ब, -छूटब।
छछन्न सं० पुं० चालाकी; वि०-न्नी;-आइब,-करब; सं० छंद।
छछुँका सं० पुं० प्यास की अतृप्ति;-लागब।
छछुअरि सं० स्त्री० छछूँदर; कहा० पहिरि ओढ़ि कै सुअरि भई छोरि लिहिस-भई।
छठई सं० स्त्री० छठवाँ भाग; सं० षष्ठ।
छड़बढुआ वि० पुं० जो छोड़ देने से खराब हो गया हो; स्त्री०-ई।
छत्तुर सं० पुं० देवी देवताओं को चढ़ाने की छोटी चाँदी आदि की छतरी; सं० छत्र।
छन्न सं० पुं० घी, तेल या पानी के गरम बर्तन पर गिरने का शब्द;-से, छना-।
छपछप...मुँह-, पन-, मुंह या ऊपर तक (भरा पानी आदि)।
छरङब दे० करङहा।
छाड़न सं०पुं० त्याग की हुई वस्तु; अपवाद; लीन-, परंपरागत बातें।
छाड़ सं० पुं० जीभ का प्रसिद्ध रोग;-होब।
छिउँकाब क्रि० अ० डाल का चींटों द्वारा रुग्ण हो जाना; वै०-कियाब।
छिउँकी सं० स्त्री० एक प्रकार की चींटी।
छिछिला...(२) सं० पुं० आम के छिले हुए टुकड़ों का अचार;-डारब; पहले अर्थ में स्त्री०-ली; दे० छीछिल।
छिटकब...बिटकब।
छिनरझप्प सं० पुं० नखरा, दोनों ओर की बातें; -करब,-आइब।
छिबुलकी...आ०-कौ।
छिरकब...छुअब,-दान पुण्य करना।
छुच्छा सं० पुं० नरकुल (दे०); स्त्री०-छी, नाक का एक आभूषण।
छुछुआब क्रि० अ० अतृप्त होकर मारे-मारे फिरना, दु:खी रहना।
छुटब क्रि०अ० छूटना; प्र० छु-, प्रे० छोड़ब,-ड़ाइब, -ड़वाइब।

छुटहर वि० पुं० जो पति या पत्नी से बहुत दिन तक अलग रहा हो; स्त्री०-रि ।
छूँछ...प्र०-छुँच्छै;-मूँछ ।
छूटन सं० पुं० छूटा हुआ भाग;-छाटन, अवशिष्ट, उच्छिष्ट ।
छोकलाई सं० स्त्री० छिलका ।
छोड़ब...-छाड़ब ।
छोहारा सं० पुं० छुहारा ।
छौना...प्रिय पुत्र; तुल० ।

## ज

जठेर सं० पुं० बड़ा भाई; व्यं० में प्रयुक्त ।
जड़हन...वि० नाऊ ही ।
जब...-तब, (अब-तब) लागब, मरणासन्न होना; सं० यदा ।
जबोर वि० पुं० प्रभावशाली, हृष्ट-पुष्ट; स्त्री०-रि; दे० जाबिर ।
जमुना सं० स्त्री० यमुना;-मैया,-जी; सं० ।
जमोग सं० पुं० आश्वासन, जमानत;-देब, क्रि० -ब ।
जमोगा सं० पुं० बच्चों की एक बीमारी;-धरब ।
जरखुराही...वि०-रहा,-ही ।
जरवा सं० पुं० वह अंश जो जल जाय;-जाब, -निकरब ।
जरि...-पेवना, आदि, मूल ।
जरीवाना...वै०-रि, जुल-, फा० जुर्म ।
जरूर...प्र०-रै,-लागब,-परब ।
जलै क्रि० वि० जब तक; वै० जौलै ।
जवाइनि सं० स्त्री० अजवायन ।
जहता सं० पुं० जस्ता ।
जहो-बिहो वि० छिन्नभिन्न;-होब,-करब ।
जाँयड़ सं० पुं० (पशु की) संतति ।
जाखि...सी० चाक जो कंडी के रूप में होता है; क्रि० चाकब, अन्न की राशि पर उलटे खाली टोकरे से थापना ।
जागा सं० स्त्री० भीख माँगनेवाली एक जाति जिसके पुरुष प्रायः प्रशंसा के गीत सुनाते हैं । सी० ह० ।
जाड...पाला; कहा० बड़े जाड़ बड़े पाला कथरी ओढ़े मरिगे लाला ।
जाबा...सी० ह० मुसक्का ।
जायँ...-बेजाय,-बेजाहिं ।
जायल...दे० हायल ।
जायाँ...अर० जायः ।
जालिआ...अर० जअल ।
जिउ...छुकवाइब ।
जितली सं० स्त्री० जीत की स्थिति;-चढ़ब; सं० जी ।
जिनि क्रि० वि० मत ।
जिरवानी...सं० जीरक ।
जुआँर सं० स्त्री० बैलगाड़ी का जुआठा(दे०) सी० ह० ।
जुइ...सी० ह० हेव ।
जुगुर-जुगुर क्रि० वि० धीरे-धीरे (जलना); कहा० -दिया बरै मूस लैगा बाती ।
जुज वि० थोड़ा, थोड़ा सा (काम, भोजन) सी० ह०; फा० जुज़ ।
जुड़पित्ती सं० स्त्री० ठंडक के कारण शरीर पर पड़े दाने;-होब,-उछरब ।
जुड़वनिया सं० स्त्री० ठंडक, ठंड का आनंद;-लेब, -पाइब ।
जुरका...बूड़त कै-, अंतिम सहारा ।
जुरति...वि०-ती, हिम्मती; अर० ।
जुलुम...जोर-, अधिकार ।
जुवान...जहील, हृष्ट-पुष्ट ।
जूड़...जूड़े-जूड़े, ठंडक में ।
जेठीमधु...सी० ह० मौरेठी ।
जोगाड़ सं० पुं० तरकीब, उपक्रम;-करब,-लगाइब; सं० योज् ।
जोगें क्रि० वि० योग्य,-के-,-के उपयुक्त; सं० ।
जोठा...सी० ह० माची ।
जोतानि...सी० ह० बहुँठि ।
जोर...तोर, प्र०-ड़, वि०-दार ।
जोरती सं० स्त्री० गणना, मुजरा;-करब,-होब ।
जोरब...पानी जोराइब, पानी चलाने का प्रबंध करना बीरा-, पान लगाना ।
जोलहा...सी० ह०-लाह,-हिनि ।
जोवा...सी० ह० डेवढ़ा, ग्वैया ।
जोसन सं० पुं० बाँह पर पहनने का एक आभूषण; -बाजू ।
जौलै क्रि० वि० जब तक ।

## झ

झँकाब क्रि० अ० बुरी गंध देना ।
झँकोर ..क्रि०-ब ।
झँटिहा...वै०-टु-(मूर्ख) सी० ह०
झकझोरब क्रि० स० पकड़कर हिलाना; वै०-रा-।
झक्क सं० पुं० सनक, वि०-क्की; वै०-क्कि ।
झड़ी...वर्षा या दस्तों...;-होब ।
झनझन सं० पुं० झन की आवाज; प्र०-ना-न; क्रि०-नाब ।
झराब क्रि० अ० उत्कट गंध देना ।
झापस सं० पुं० बादल घिरे रहने और पानी धीरे धीरे बरसने का मौसम;-करब,-होब ।
झाम...बहू, एक काल्पनिक स्त्री जिसके संबंध में कहावत है—सदा क गोरसही झाम बहू !
झारब...फटकारना;-झूरब,-पोंछब ।
झिटकचआ वि० पुं० चोरी का (माल) ।

तन्नु सं० स्त्री० आवश्यकता.-लागब,-परब ।
तपोभूमि...प्र०-भूम्मि,-म्हि ।
तबीज...अर० तावीज़ ।
तमाकू...सं० तमाखु ।
तमून...अर० ताऊन ।
तय...-तमाम, समाप्त, ठीक ।
तरकी...दे० कनफूल, ब्र० तरौना ।
तरकुल...सं० ताल ।
तरपासब क्रि० स० डाँटना; गाँसब-, फटकारना ।
तरहँत वि० कम, नीचे;-परब,-होब, हलका पड़ना; क्रि० वि०-तें;दे० तर; सं० तल ।
तलफब...तड़पना ।
तले क्रि० वि० तब तक; वै०-लै, प्र०-ल्लै,-ल्ले ।
तवँकब क्रि० अ० गर्मी में ताव खा जाना; प्रे० -काइब, वै०-उँ-।
तवर...पूरे-से, भली भाँति; अर० ।
तवहीन सं० स्त्री० अपमान,-करब,-होब; वै०-नी; अर०; दे० तौ-।
तवान...फा० तावान ।
तसफीहा सं० पुं० निश्चय,-करब,-होब,-देब; फा० -ह: ।
तहदिल वि० निश्चित,-होब,-करब; क्रि० वि०-लें, निश्चिंत होकर, भा०-ई ।
तहबह वि० शांत (झगड़ा, व्यक्ति आदि);-करब, -होब ।
तहलका सं० पुं० घबराहट, अशांति;-मचब, -मचाइब ।
तात...कान-करब, धमकाना, सावधान करना; (२) प्रिय; तुल० प्राय: संबो० में प्रयुक्त ।
ताव...वि० तवगर, जिसे आवश्यकता हो;-बावला (होब) घबराया हुआ; फा० तहो-बाला (ऊपर नीचे, अस्तव्यस्त) ।
तिरकोआ वि० पुं० जिसमें तीन कोने हों; स्त्री० -की, वै० ति- ।
तिरछा...-कोनी, जो कोनों की ओर तिरछा हो ।
तिरपुछ वि० पुं० थोड़ा सा तिरछा, स्त्री०-छि ।
तिरिन सं० स्त्री० तृण, कुछ भी; यक-नाहीं, कुछ भी नहीं ।
तिलंगा सं० पुं० सिपाही; यह शब्द शायद ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास की स्मृति है, क्योंकि तेलंगी भाषा-भाषी सिपाही उस कंपनी ने उत्तर भारत को भेजे होंगे ।
तिलक...-फलदान ।
तिवराइब क्रि० स० मटकाना (सी० ह०) वै० -उ-।
तिहाई...-पात, अन्न की उपज ।
तीकटि सं० स्त्री० प्राय: "तीन-" रूप में प्रयुक्त; कहा० तीन-मद्धा तीकट, अर्थात् तीन व्यक्ति एक साथ जायँ तो कार्य ठीक न हो ।
तीत...भा० तिताई ।
तुक्का...कहा० लागै त तीर नाहीं तुक्का ।
तुम्मी...सी० ह० तोंबी ।
तुरही...वै०-रु-; अर० तूर ।
तुरुक.. कहा० तिल गुर भोजन-मिताई, आगे मीत पाछे पछिताई ।
तेल...तेलवानि,(सी० ह०-वाह) ।
तोबा...अर० तोब: ।

## थ

थनिहा सं० स्त्री० पेड़ (बाँस का), यक-, दुइ-, दे० खूँटा,-टी; सी० ह० ।
थवना...सी० ह० नेहुया ।
थाल्हा सं० पुं० छोटे पौदे के चारों ओर बनाया घेरा ।
थुवा...छिआ-, फजीता ।
थोरि...अपमान, हेठी ।

## द

दँतकरौं सं० स्त्री० ईर्ष्या, दाँत पीसने की बात; दाँत+करब (दे०) ।
दँतब क्रि० अ० डट जाना; प्रे०-ताइब, (लकड़ी, डंडा आदि) दबाना ।
दकहिआ क्रि० वि० न जाने कब; प्र० दौ-।
दगधि सं० स्त्री० (शव) जलाने की क्रिया;-देब; सं० दह ।
दगाइब क्रि० स० दागब का प्रे० ।
दरसन...कहा० नाँव बड़ा-थोर ।
दरि...क्रि०-याब, अपने लिये किसी प्रकार स्थान बनाकर खड़ा होना या बैठना; फा० दर (स्थान) ।
दरी...सी० ह०-रवा ।
दरौंइब..."मतुआ-दर" कहकर बढ़हार (दे०) के दिन वर के घर, पर स्त्रियाँ एक दूसरे को दरौंती हैं ।
दल...-बादर, बड़ा शामियाना ।
दवँरी...सी० ह० मँड़नी ।
दस्तावेज...दस्त+आवेख्तन (लिखना) ।
दहाइब...खापब (दे०)-किसी प्रकार काम चलाना (व्यय का) ।
दाइँब...सी० ह० माड़ब ।
दाखिल अर० दख़्ल ।
दादनी सं० स्त्री० सरकारी सहायता जो अफीम की खेती आदि के लिए किसानों को मिलती थी ।
दाहिन वि० दायाँ; बायँ-, दाहिना बायाँ;-दयाल, परम कृपालु;-चलब, (बैल का) दहिने ओर चलना; सं० दक्षिण ।

दिउँका...सी० ह०-यँक।
दिउठी...सी० ह०-यट,-टा।
दिउल सं० पुं० चने की दाल; वै० दील (सी० ह०) स्त्री०-ली, चने की भुनी दाल।
दिउली.. वै०-अ-; सं० दीप।
दिक्क...सी० ह० क्रुद्ध, रुष्ट; क्रि०-क्काब, रुष्ट होना।
दिखचआा...सी० ह०-नी।
दिहात...फा० देह।
दीदा...फा० दीदन (देखना)।
दुमना...सी० ह० हलना,-नी।
दुर्रे...सी० ह० धुत्तू।
दूना वि० पुं० दुगना, स्त्री०-नी।
देखवार...सी० ह० बियहुआ, दे० बरदेखा।
देसवरिआ...सी० ह० झरि कोलहा।
दोना...सी० ह० उरई-दुनइया।
दोहा...(२) वह ब्याह जिसमें दूल्हे की पहली स्त्री मर चुकी हो; सं० द्वि।

## ध

धउँजब क्रि० स० कोंदना (दे० कोंदब), पीटना, मारकर बेकार कर देना; प्रे०-जाइब।
धनिया...सी० ह०-ना।
धनुख ..इंद्रधनुष; कहा० सांझे-बिहाने पानी, यदि शाम को इंद्रधनुष दिखे तो प्रातःकाल वर्षा अवश्य होगी।
धन्नहा .कहा० न बल चलै न-नै।
धरउआ...सी० ह०-नो,-वु,-राउनु (करच)।
धरनि . सी० ह०-सी।
धरिकार...वै० धानुक, धनुकिनि।
धवँका सं० पुं० गर्म हवा का झोंका; -लागब।
धवलागिरि सं० पुं० प्रसिद्ध पहाड़ जो उत्तर में है।
धिरइब...सं० धृ।
धिरकार सं० पुं० धिक्कार, क्रि०-ब, धिक्कारना।
धिरिष्टब क्रि० स० डाँटना, धिक्कारना; प्रे० -वाइब।
धुआँठब...सी० ह०-आब।
धुइँहर...सी० ह०-आर।
धुनकी...दूसरे अर्थ में सी० ह० गदरगैयां।
धुरकुल्ली सं० स्त्री० गाड़ी के धुरे का किनारा; पुं० -ल्ला।
धुरस...सी० ह० हुरसु।
धौकरकसा...सी० ह० मौंतेरवा (जिसके मुँह से आग निकलती है)।
धोवन...चुरिया क-, घर का बना भोजन (जिसमें स्त्री की चूड़ी का धुलना आवश्यक है)।

## न

नंगा...सी० ह०-ग।
नगरवट सं० पुं० तालाब में होनेवाली लंबी घास जिसकी जड़ में सुगंध होती और डंठल से रस्सी बनती है।
नचना...सी० ह०-चाई।
नटई...सी० ह०-ट्टी, नरी।
नटिआ सं० पुं० छोटा नाटा बैल; वै०-टुई (सी० ह०)।
नथिआ...वै०-थुनी।
नरकट सं० पुं० लंबी घास जिसके डंठल का कलम बनता है। दे०-कुल।
नरी...(२) गले के सामने का भाग (सी० ह० ल०)।
नरी सं० पुं० सिंचाई का एक प्रकार जिसमें बिना कोहा (दे०) कटाये पानी दिया जाता है।
नरोह.. सी० ह० नरो।
नव...डीगर, गड़बड़;-उमिरि, युवक,-बेर, जवान, -हड़िया, जो दूसरे के घर अपने हाथ से भोजन बनाये।
नवधुआ वि० पुं० नया (छोटा पेड़)।
नसीब सं० पुं० भाग्य;-दार, भाग्यवान्;-फूटब, -चमकब।
नसुहा...वै० रुइआ (सी० ह०); दे० नेसुहा।
नहनह...-टांड़ना (ताड़ना) होब।
नाहीं ..उल० हां-हां (दे०)।
निछल वि० पुं० बिरछल, स्त्री०-लि।

## प

पइती...सं० पवित्री।
पक्कन...(दिन या मौसम)।
पतील...वै० पतुल।
पियादा..,सं० पद फा० पा (पांव)।
पीठी...सं० पिष् (पीसना)।
पेम...कलम (कमल नहीं)।

## फ

फकना...कफन (अर०)...।
फरिआब क्रि० अ० स्पष्ट होना, शुभ होना; प्रे० -वाइब (स्पष्ट करना)।
फार...यस, लंबा और तेज दिखाई पड़ना।

## ब

बकाइब...सी० ह० हँसी करना, छेड़ना।

बड़उखा सं० पुं० एक प्रकार का लंबा पर सख्त गन्ना; बड़+ऊखि (दे०)।
बराइब . (२) परहेज करना, बचाना; इस अर्थ में वै० बे-, भा० बराव एवं बेराव।
बहेंड़ आ वि० पुं० अनियंत्रित, आवारा; कहा० एकहि पुतवा-एकहि धेरिया छिनारि।
बिचकुलब क्रि० अ० मोच आना।
बिचलब क्रि० अ० स्थान छोड़ देना, प्रे०-लाइब।
बियहा वि० पुं० ब्याहा, स्त्री०-ही-धरी, विवाह संबंध।
बियहुता सं० पुं० ब्याह का कपड़ा; वि० ब्याह का;-ती सारी, ब्याह में आई साड़ी।
बियाकुल वि० पुं० ब्याकुल, स्त्री०-लि;-होब, -रहब।
बियान सं०पुं० संतति; आपन-, निज के पुत्रादि।
बीछब क्रि० स० चुनना; प्रे० बिछाइब,-छवाइब; वि० बीछा, बिच्छा,-छी।
बीग...भभूति,प्रसाद (देवता का)।
बूड़ब...मु०-उतिराब...।
बेझब क्रि० स० जानबूझकर किनारे हटा रहना, छोड़ने का प्रयत्न करना; सं० विध्।
बेसहूर...फ़ा०बे+शऊर।

## भ

भउर दे० आगि।
भठब...भठ...सं० भ्रष्ट।
भतार...-काटी,-गाड़ी,-भूजी, स्त्रियों के गाली देने के शब्द।
भवानी...दे० भक्खर।
भाता सं० पुं० हलवाही करने की वह पद्धति जिसके अनुसार उसे पूरी उपज का $\frac{1}{?}$ मिलता है, नकद नहीं। दे० भतहत।
भार...(२) भाड़।
भुइँ...-फोर,-वर्षा में निकला छत्राक जिसका साग खाते हैं।

## म

मटकोरब क्रि० स० बैठे-बैठे खाना; मजे से खाते रहना।
मटुका सं० पुं० मटका; स्त्री०-की; गीतों में-क (दधि मोर खायो मटुक मोर फोरयो)।
मडुहा...मडुहा नहीं।
मनजहकी वि० जो मन में आई बात कर डाले; दोनों लिंगों में एक रूप।
मनफेर सं० पुं० मनबहलाव;-करब।
मनबढ़ वि० पुं० जिसकी हिम्मत बढ़ गई हो; स्त्री०-ढ़ि, भा०-ई।
मनसेधू सं० पुं० पुरुष, मर्द, पति; वै०-सोधी।
ममिआससुर...पति या पत्नी...।
मरगज वि० पुं० बहुत मैला (कपड़ा); प्र० मरगजे चीर (बिहारी);-होब,-करब।
मलेपंज वि० अशक्य,थका; जिसका पंजा टूट गया हो।
मिजाँ...अर० मीजान।
मुला अव्य० परन्तु, वै०-दा।
मुसकी...व्यं० प्र०-क्का।
मेलहा...(ब्राह्मण) जो बिना निमंत्रण के ही भीड़ में खाने आ जाय।
मोट...-हन, कुछ मोटा,-टट, थोड़ा और मोटा।
मोटहो वि० बहुत परिमाण में, अधिक (वर्षा आदि)।
मौरुसी वि० पैत्रिक; अर०।

## य

यपहर..."यहपर" का विपर्यय।

## र

रुसबति...फ़ा० रिश्वत।
रोवनउक वि०पुं० रोने की स्थिति में;-होब; स्त्री० -कि।
रौहाल...दे० रवहाल।

## ल

लङ्गोट...सं० लिङ्ग+ओट? प्र०-टा;-टिया, बचपन का साथी।
लचलच वि० पुं० नरम, ढीला; स्त्री०-चि।

## व

वनइस...वनइस-बीस, थोड़ा सा अंतर।

## स

सहूर सं० पुं० ढंग, अर० शऊर।

## ह

हियारी सं० स्त्री० स्मृति, समझ;-में आइब, बैठब; -सं० हृदय?

# जाब (जाना) क्रिया के भिन्न रूप

## पुंल्लिग

### (१) वर्तमान

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| अन्यपुरुष ऊ जात है (अहै),-जाथै, जातबा (बाय), -बाटै | वै जात हैं, जाथैं, जात अहैं,-बाटैं,-बाटेन |
| मध्यम पुरुष तैं जात हये,-जाथये,-जात अहे,-बाटे, तूँ जात हया,-हौ, -अहौ, आपु जात हैं (अहैं), -जाथैं, -थिन | तोन्हन जात हये (जाथ्य),-जात बाट्य<br>तूँसब (तूँ सभैं) जात हया,-बाट्य,-जाथया,-जात अहा,-हव,-हउअ (जौ०)।<br>आपु लोग जात हैं (अहैं),-जाथैं,-जाथिन<br>,, लोगे, -गै ,, ,,—,, ,, |
| उत्तम पुरुष मैं जात हौं (जाथौं),-अहौं,-जात बाटेउँ, -अ्यों | हम जाइत है (जाइथै),-जातबाटी,-जाथई; हम जात हई,-अही; हमसब,-सबै,-सभैं<br>हम लोग,-पंचन। |

### (२) भूत

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| अ० पु० ऊ गा, गै, गय, गवा, ग रहा, गवा रहा | वय (वे) गइन, गे, गये, ग रहे |
| म० पु० तैं गये, गे, गइसु, गै (गय) रहे, तूँ गयव, गयो, (रामा० गयऊ) आप,-पु गयन, गयेव, -यौं,-यो। | तोन्हन गये (गे), गयव,-येव, ग रहेव. तोहरे सब, तूँ सब, तोहरे सभैं, गयेव, गयय, ग रहेय, आप, -पु सब, सभैं,-मै, लोग,-गे,-गन,-गै गयेव, ग रहेन |
| उ० पु० मैं गयों (प्र० महुँ गयों), ग रह्यों,-रहेउँ। | हम सब,पचन, -पंचन, -सभैं, गयन, ग रहेन, गेन, गे रहन,-गवा रहेन |

### (३) भविष्य

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| अ० पु० ऊ जाई,-जाये (प्र० जइहै, जइहै जाई, जाये)। | वै, वन्हन, जइहैं,-हयँ |
| म० पु० तैं जाबे, तूँ जाब्य,-बौ (प्र० जइहैं,-हौं...) आपु,-पे जइहैं, जाबै,-जाबौ (प्र० आपुइ,-पू,-पौ जइहैं, जाबै, जाबै) | तोन्हन, तोरे सभैं जाबे,-ब्य; तूँ सब,-भैं तोन्हने जाब्य, आप,-पु लोग,-गे, जइहैं, जाबै, जैहैं (प्र० आपुइ,-पै,-पौ ..) आप पचन,-पंचन, सब,-सभैं (रा० ब० आप हरे) जाबौ, जइहैं, जैहैं, हौ, जइबौ |
| उ० पु० मैं जाबौं, जइहौं, जावूँ (प्र० महुँ,-हीं...) (शु०) | हम जाब, हम सब,-सबै,-सभैं,-सभै, (जइबा, जु०) जाब,-जाबै,-जाबइ |

## स्त्रीलिंग

### वर्तमान

**एकवचन**

ऊ जाति है (अहै), बाय; बाटै, बा

तैं जाति हये (अहे),-आथये,-जाति बाटे, तूँ जाति हौ (अहौ),-आथिउ,-बाटिउ

आपु जाति हइउ,-आथिउ,-जाति बाटिउ
" " अहिउ,-जाति हईं,-आथईं

मैं जाति हौं,-अहिउँ,-हइउँ,-बाटिउँ
" आथइउँ,-आथिउँ

**बहुवचन**

वै जाति हईं,-आथईं,-जाति बाटीं,-जाथीं

तोन्हहि जाति हईं,-बाटी,-जाथी, तूँ सभें जाति हौ (अहौ),-आथिउ,-जाति बाटिउ

आपु सब,-सभें,-लोग जाति हैं (अहैं)
" " " जाथीं, जाति बाटी,
-बाटिउ,-बाटू (औ०)

हम जाइति है (जाईथै),-जाति अहेन,
" जाति बाटी,-अही ।

### भूत

**एकवचन**

ऊ गइ, गय, गै

तैं गये, गे, गइसु, गै (गय) रहे, तूँ गइव, गइउ, ग रहिउ

आप,-पु गयन, गईं, ग रहेन,-रहिन,-उ, गैन, गइन

मैं गइउँ,-ग रहिउँ ।

**बहुवचन**

वइ (उइ), तै, वय, गईं

तूँ सब, तूँ लोग, तूँ पचन (तोहरे पचन) गइउ, -इव, तोहरे सब, तोहरे पचन,-पंचन, गइउ,-ग रहिउ, आप,-पु सब,-लोग,-पचन,-सभें, गईं, -गइव, गयन, ग रहेन

हम गयन,-गयेन,-गे रहेन, गयी रहीं, गई रहीं ।

### भविष्य

**एकवचन**

ऊ जाई,-जाये

तैं जाबे,-तहूँ (प्र०) तुहूँ, आप,-पु,-पौ,-पुइ (प्र०) जइहैं, जाबै ।

मैं (प्र० हूँ,-महीं) जाबौं,-बिउँ ।

**बहुवचन**

वन्हन,-नि जइहैं,-न्हे (प्र०-नै), वै, उइ, जइहैं

तोन्हन (प्र०-नै,-नौ) नि,-ने, जाब्य,-बिउ,-ब्यू -न्हन,-नि, सब जाब्य, -बिउ, -ब्यू

आप,-पु लोग, -सब,-सबै,-सभै,-पचन जैहैं, जइहैं

हम,-सब,-पचन, पंचन,-सबै,-सभें,-लोगै,-लोगनि जाब, जाबै,-बइ (जइबा, ल०)

## पाठ्य-सामग्री

१—सर जार्ज ग्रियर्सन, लिंग्विस्टिक सर्वे आव इंडिया
२—डा० आर० एल० टर्नर, नैपाली-अंग्रेजी कोष
३—डा० बाबूराम सक्सेना, एवोल्यूशन ऑव अवधी (इंडियन प्रेस, प्रयाग)
४— ,, ,, लखीमपुरी। ए डायलेक्ट ऑव अवधी
५—श्री रामाज्ञा द्विवेदी, अवधी के नामधातु तथा प्रत्यय (हिंदुस्तानी, १९३१)
६— ,, ,, अवधी की कुछ प्रवृत्तियाँ। (हिंदुस्तानी, १९३३)
७— ,, ,, अवधी की कुछ पहेलियाँ (हिंदुस्तानी, १९३४)
८— ,, ,, देहात की हानाई (सम्मेलन-पत्रिका, १९३०)
९— ,, ,, अवधी तथा मैथिली में साम्य (माधुरी, १९४२)
१०— ,, ,, अवधी की कुछ कहावतें तथा लोरियाँ (वीणा, सं० १९९२)
११—डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, अवधी भाषा और साहित्य